UNIVERSAL
LIBRARY

OU_180500

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H83 J75A Accession No. H3419

Author जोशी, सुमिला

Title अंकुर

This book should be returned on or before the date last marked below

अंकुर

[जगत्प्रसिद्ध युगान्तरकारी उपन्यास]

लेखक
एमिल जोला

भाषान्तरकार
रमेशचन्द्र जोशी

सपादक
श्रीकृष्ण दास



मित्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद ।
१९६२

प्रकाशक :
मित्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड,
इलाहाबाद ।

मूल्य १० रुपये

मुद्रक :
श्री वीरेन्द्रनाथ घोष
माया प्रेस प्राइवेट लिमिटेड,
इलाहाबाद ।

यह उपन्यास

१८८५ में एमिल जोला कृत 'जरमिनल' का प्रकाशन हुआ। उसके बाद १८९४ में हेवेलाक एलिस ने इसका अँग्रेजी में अनुवाद किया। हेवेलाक एलिस के ही शब्दों में, '१८९३ में परलोकवासी ए० तेक्सेरा द मत्तो जोला के कुछ मुख्य उपन्यासों का निजी प्रकाशन करने की व्यवस्था कर रहे थे। उन्होंने 'जरमिनल' का अनुवाद करने के लिये मेरे सामने प्रस्ताव रखा।.....तब समुद्र तट पर स्थित छोटे से कार्मिग काटेज में १८९८ के आरम्भिक महीनों में 'जरमिनल' के अनुवाद का कार्य शुरू हुआ। मैं बोलता जाता था और मेरी स्त्री मेरी भाषा का सुधार करती हुई लिखती जाती थी।.....यह संयुक्त प्रयास अब भी मेरे लिये एक आह्लादकारी संस्मरण बना हुआ है। मुझे यह जान कर संतोष होता है कि इस आश्चर्यजनक ग्रंथ के सम्पूर्ण अनुवाद के लिये मैं ही जिम्मेदार हूँ। जोला स्वयं इसे 'विराट भिति-चित्र' कहा करते थे। यह एक विशाल गद्य काव्य है जिसकी तुलना संसार के महान् प्राचीन महाकाव्यों से की जा सकती है।'

प्रकाशित होते ही इस उपन्यास ने अपने लिये पाठकों एवं आलोचकों के हृदय में स्थान बना लिया। सचमुच यह एमिल जोला की सर्वोत्कृष्ट रचना है। यह उपन्यास कोयले की खान में काम करने वाले मजदूरों के संघर्ष-पूर्ण रक्त-स्वेद-अश्रु से लथ-पथ जीवन का ऐसा महान् दृश्य उपस्थित करता है जिसमें भाग लेने वाला प्रत्येक नर-नारी, वृद्ध-युवा और बालक अपने चरित्र की सारी सुन्दरता और कुघड़ता एवं कुरूपता के साथ अपने नग्नतन रूप में सामने आ जाता है।

निराशा और आशा, जय और पराजय, संघर्ष और पलायन, शृंगार और व्यभिचार, संयमशीलता और मर्यादाहीनता, समझौता और विद्रोह, क्रान्ति और आतंक, निर्माण और विध्वंस, प्रगति और प्रतिगति के चटख, रंगीन चित्र इस उपन्यास के कैन्वेस पर एक-एक कर के आते हैं और हमें प्रभावित करते है, आन्दोलित करते हैं, चमत्कृत करते हैं, स्तम्भित कर देते हैं। कभी वितृष्णा, अवसाद और निराशा के घनीभूत अंधकार में ज्योति की एक किरण को भी ढूंढना मुश्किल

१

रात्रि के दो बजे थे। आसमान मे काले-काले बादल छाये थे। हाथ को हाथ नहीं सूझता था। मार्सेनीज से मोंटसू जाने वाली दस किलोमीटर की वीरान सड़क पर एक व्यक्ति अकेला लम्बे-लम्बे डग भरता चला जा रहा था। मार्च की तीखी, सर्द हवा के चलने वाले तेज झोंके रह-रह कर उसकी हड्डियों को कँपाये डाल रहे थे। चुकन्दर के खेतों को चीरती हुई यह सड़क अंधकार के इस सीमाहीन फैलाव के बीच एक सेतुबंध की तरह चली गई थी। राही को आस-पास की काली जमीन तक न दिखाई देती थी। उसे आस-पास खुले मैदान का अहसास सिर्फ समुद्र में चलने वाली झंझा के समान तेज सर्द झोंकों से हो रहा था।

वह कुछ देर पहले मार्सेनीज से रवाना हुआ था। फटी-पुरानी जाकेट और कॉटराय की ब्रिचिस पहने वह काँप रहा था। चारखाने के एक रूमाल में बंधा हुआ एक छोटा बंडल उसके लिए अति कष्टकर बना हुआ था। वह कभी उसे इस काँख में दबाता कभी उस काँख में, ताकि अपने खून चुआते सुन्न हाथों को बला की सर्दी के थपेड़ों से बचाने के लिए वह उन्हें पारी-पारी अपनी जेब में डाल सके। एक ही विचार रह-रहकर उस बेरोजगार निराश्रित मजदूर के दिमाग में आ रहा था कि सूरज निकलने के बाद ठंढक का तीखापन कुछ कम अवश्य हो जायगा। लगातार एक घंटा इस प्रकार रास्ता तै करने के बाद उसे मोंटसू से दो किलो-मीटर की दूरी पर अपने बाईं ओर लाल लपटें दिखाई दीं। तीन भट्टियाँ एक ऊँचे खुले स्थान पर धधक रही थीं जो यकायक विलुप्त-सी हो गईं। पहले वह झिझका और थोड़ा भयभीत भी हुआ। फिर एक क्षण को अपने हाथ सेंकने के अनिवार्य लोभ को न रोक सका।

सड़क गहरे ढाल की ओर चली गई थी और हर चीज उसके सामने से अदृश्य हो गई। उसने अपने दाँई ओर एक बाड़ा बना देखा। पुराने तख्तों की एक दीवार से एक रेलवे लाइन बंद कर दी गई थी। उधर बाँई ओर घास और लतरों से आच्छादित ढाल के ऊपर किसी गाँव के बसे होने का आभास मिलता था, जिसकी एक कतार में बनी नीची छतों की अस्पष्ट झलक दिखाई देती थी। वह लगभग दो सौ कदम और आगे बढ़ा। यकायक, सड़क के मोड़ पर उसे आग अपने और करीब दिखाई दी। वह समझ नहीं पा रहा था कि ये ज्वालायें इतने ऊँचे अधर में, धुआँ देने वाले चाँद की तरह कैसे जल रही है? समतल जमीन पर उसे दूसरा ही दृश्य दीखा। ऊँची-नीची इमारतों के एक जमघट के बीच कारखाने की एक चिमनी की धुंधली छाया-सी उठी हुई थी, मैल और धूल भरी खिड़कियों से कभी-कभी चमक-सी दिखाई दे रही थी। पाँच या छः लैम्प बाहर काली लकड़ी के ऊपर बनाये गये फ्रेमों में टँगे जल रहे थे। उनकी रोशनी में भीमकाय मचानों की बाह्य प्रतिच्छाया दिखाई दे रही थी और धुध तथा रात्रि की कालिमा में डूबी प्रेत-छायाओं के बीच वाष्प-निकास की एक मात्र भोंड़ी, लम्बी साँस लेने की कर्ण-कटु आवाज कहीं अदृश्य से आ रही थी।

तब उस व्यक्ति ने जाना कि यह एक खान है। उसकी निराशा लौट आई। यहाँ आना भी बेकार ही रहा! यहाँ भी कोई काम न होगा! इमारतों की ओर बढ़ने की अपेक्षा उसने खान के कगार पर चढ़ने का निश्चय किया, जहाँ कि तीन लौह-पिटकों पर कोयले की आँच काम करने के लिए रोशनी और गरमी प्रदान करने के निमित्त जल रही थी। कटानों में मजदूर देर तक काम करते रहे होंगे क्योंकि अब भी कूड़ा बाहर फेंका जा रहा था। अब उसने ठेला-मजदूरों को मचानों पर वेगन धकेलते सुना। प्रत्येक पिटक के पास ट्रामों और टबों पर झुकी मानव आकृतियों को वह स्पष्ट पहचान पा रहा था।

एक पिटक के पास पहुँचते हुए उसने अभिवादन किया, 'गुड डे।'

अंगीठी की ओर पीठ फेर कर कोचवान सीधा खड़ा हो गया। वह एक बुड्ढा व्यक्ति था और बेंगनी रंग की बुनी हुई ऊनी जाकेट पहने हुए था। उसका कद्दावर घोड़ा पास ही पत्थर की तरह निश्चल खड़ा था और ठेला मजदूर उन छः ट्रामों से कोयला खाली कर रहे थे जिन्हें वह खींच कर लाया था। भारवाहक झूले पर झूरे बालों वाला कृशकाय व्यक्ति इस प्रकार लीवर दबा रहा था मानो उसके नींद से बोझिल हाथों को काम की कोई जल्दी न हो। ऊपर, आसमान में हवा और तेज हो गई थी। उत्तरी बर्फीली हवा के झोंके हँसिये की तेज धार के समान रुक-रुककर गुजर रहे थे।

बुड्ढे ने उत्तर दिया, 'गुड डे।'

बातचीत का सिलसिला यहीं समाप्त हो गया। आगन्तुक को लगा कि उसे संदेह की दृष्टि से देखा जा रहा है, उसने तत्काल अपना परिचय दिया।

'मुझे एतीन लॉतिये कहते हैं। मैं इंजन ड्राइवर हूँ, मेरे लायक कोई काम मिल सकेगा ?'

अँगीठी में ज्वाला धधकी। उसके प्रकाश मे लॉतिये की आकृति स्पष्ट नजर आई। लगभग इक्कीस वर्ष का, छरहरे शरीर और सुघड़ आकृति का यह नवयुवक दुबले-पतले हाथ-पाँव वाला होने पर भी शक्तिशाली प्रतीत होता था।

कोचवान ने पुनः आश्वस्त हो अपना सिर हिलाया—'इंजन ड्राइवर के लिए काम ! नहीं, नहीं। कल ही दो आदमी वापस लौट गये। कोई काम ही नही है।'

हवा के तेज झोंके से उनकी बातचीत का सिलसिला टूट गया। लॉतिये ने मचानों की जड़ पर बनी काली इमारतों के समूह की ओर संकेत करते हुए पूछा, 'यह खान है ?'

इस बार बुड्ढा उत्तर न दे पाया। उसे खाँसी का दौरा उठ आया था। अंत में कफ छँटने के बाद जब उसने बलगम थूका तो उससे भुरभुरी मिट्टी में काला-सा दाग पड़ गया।

'हाँ, यह बोरो खान है। बस्ती करीब ही है। वहाँ !' और उसने हाथ के संकेत से रात्रि के अँधेरे मे डूबे उस गाँव की ओर इशारा किया जिसकी अस्पष्ट झलक युवक रास्ते में देख आया था। ट्रामे खाली हो चुकी थी। बुड्ढा अपना चाबुक हिलाये बगैर घोड़े के पीछे पीछे चल दिया। उसकी टाँगें गठिया से सख्त पड़ गई थीं, उसका कद्दावर पीला घोड़ा यंत्रचालित-सा, मालिक के आदेश का इन्तजार न कर उसके मनोभावों को समझता हुआ हवा के तेज झोंको का सामना करता रेल-पथ पर दौड़ा चला जा रहा था और उसके घने बाल हवा मे फरफरा रहे थे।

अब कुछ कुछ उजाला हो चला था और बोरो खान धुंध और कुहासे से उभरती प्रतीत होती थी। लॉतिये अब तक खून चुवाते अपने सुर्ख एवं ठंढे हाथों को सेंकते हुए अपने आपको भूल सा गया था। अब उसने चारो ओर नजर डाली। खान का प्रत्येक भाग उसे दीखने लगा था : ओसारा रस्सों से बँटा था, खान का प्रवेश द्वार, संदाम-चालक-मशीन का बड़ा कमरा, जल-निकास पंप का बड़ा चौकोर कंगूरा, सभी कुछ उसे स्पष्ट नजर आ रहा था। जमीन के खोखले मे बनाई गई यह खान, ईटों की बनी उँची-नीची इमारतों का समूह और उसके बीच भयावह सींग के समान आकाश मे उठी हुई भीमकाय चिमनी,

यह सब एक पेटू जानवर की भाँति लग रहा था, जो सारी दुनिया को निगलने के लिए दुबका बैठा हो। सब तरफ नजर डालता वह अपने अतीत के बारे में सोच रहा था : किस तरह पिछले आठ दिनों से उसे नौकरी की खोज में दर-दर भटकना पड़ा है। पिछली बातें चलचित्र की भाँति उसके स्मृति-पटल से गुजर रही थीं। वह अपनी रेलवे-वर्कशाप में फोरमैन से कहा-सुनी हो जाने पर उसे पीट रहा है, उसे लिली से निकाल दिया गया। सब जगह उसे दुत्कार मिली। शनिवार को वह मार्सेनीज पहुँचा था जहाँ उसे लोगों से खबर मिली कि फोर्सेज में काम है। वह फोर्सेज गया, सोनविले भटका। रविवार की रात उसने एक गाड़ीवान के अहाते में छिपकर गुजारी और दो बजे रात में चौकीदार ने उसे वहाँ से भी भगा दिया था। उसके पास एक पेनी भी नहीं थी। तब वह क्या करे ? निरुद्देश्य इधर-उधर भटकता फिरे, उसके लिए कोई ऐसा स्थान भी नहीं है जहाँ उसे आश्रय मिल सके।

यकायक वह कल्पनालोक से भौतिक जगत मे आया। निःसंदेह यह खान है। यदा-कदा लैंपों की रोशनी दीखने लगी थी। अचानक द्वार खुला और अन्दर बड़ी-बड़ी भट्टियों में जलने वाली आँच स्पष्ट दिखाई देने लगी। पंप की भोंडी आवाज अब अधिक स्पष्ट हो चली थी। कामगार ने झूले के सहारे अपनी कमर सीधी की। लाँतिये की ओर उसने आँख तक नहीं उठाई। लाँतिये ने जमीन पर पड़ा बंडल उठा लिया। वह चलने का इरादा ही कर रहा था कि पीछे से खाँसने के शब्द ने गाड़ीवान के लौटने की सूचना दी। कोयला भरी छः ट्रामें खींचता हुआ उसका घोड़ा और गाड़ीवान, दोनों ही अंधकार से उजाले में आये।

'मोंटसू मे कई कारखाने हैं ?' युवक ने पूछा।

'कारखानों की कमी थोड़े ही है,' बलगम थूकते हुए गाड़ीवान ने उत्तर दिया—'तीन चार वर्ष पहले कुछ और ही बात थी। हर चीज अपने जोश पर थी। मजदूर ज्यादा नहीं थे। परन्तु इस तरह का वेतन तो कभी नहीं था। अब फिर हमे पेट पर पट्टी बाँधनी पड़ रही है। देश में तबाही-ही-तबाही है। दुख, तकलीफ, विपत्ति और कष्ट के अलावा कुछ है ही नहीं। परन्तु शायद, सम्राट इसका दोषी नहीं है। लेकिन सवाल यह है कि वह अमेरिका में जाकर क्यों लड़े ? लोग तो लोग जानवर तक हैजे से मरने लगे हैं।'

तब संक्षिप्त वाक्यों और उड़ते हुए शब्दों में दोनों का वार्तालाप शुरू हुआ। लाँतिये ने अपने पिछले सप्ताह की निष्फल आवारागर्दी की बात सुनाई—'तब क्या हम लोग भूखों मर जाँय ? ऐसा ही रहा तो सड़कें जल्दी ही भिखारियों मे भर जायँगी।'

बुड्ढे ने कहा , 'हाँ ! इसका नतीजा अच्छा नहीं होगा। जीसस को यह गवारा नहीं कि इतने क्रिश्चियन सड़कों पर फेंक दिए जाँय।'

'हमें खाने के लिए रोज गोश्त नहीं मिल पाता।'

'अगर रोटी ही मिल जाय तो भी पर्याप्त है।'

'सच है , काश कि रोटी भर नसीब हो जाती !'

हवा के तूफानी झोंकों से उनकी बातचीत का सिलसिला भंग हो गया।

दक्षिण की ओर हाथ से संकेत करते हुए कोचवान ने बताया : 'वहाँ, नीचे मोंटमू है।' अंधकार में अदृष्य स्थानों की ओर वह संकेत करता जाता था : 'नीचे, मोंटमू में फावीले चीनी मिल अब भी चालू है लेकिन होटाँ चीनी मिल में छटनी हो रही है। दाँते आटा मिल और खान के लिए रस्सी बँटने वाले ब्लूजे कारखाने में किसी तरह काम चल रहा है।' क्षितिज के उत्तरार्ध की ओर अंगुली उठाते हुए कोचवान बोला : 'सोनविले में पहले की अपेक्षा एक तिहाई आर्डर भी नहीं आते, मार्सेनीज के लोहे के तीन भाष्ट्रों में दो चालू हैं। गागेवां शीशा कारखाने में वेतन कटौती की चर्चा है, वहाँ हड़ताल की आशंका है।'

बुड्ढे की प्रत्येक बात का नवयुवक समर्थन करता जाता था। 'हाँ ! मैं जानता हूँ, हाँ ! हाँ ! मैं वहाँ गया था।'

'हमारे यहाँ की यही स्थिति है। खानों ने उत्पादन कम कर दिया है। सामने विक्टियोरे खान की ओर देखो, वहाँ सिर्फ दो भाष्ट्र जल रहे है।'

उसने एक बार फिर जमीन पर थूका और अपने ऊँघते हुए घोड़े का पट्टा कस लेने के बाद उसके पीछे-पीछे चल दिया।

अब समूचे देश का नक़शा लाँतिये के सामने था। अंधकार पूर्ववत् बना था। कोचवान ने देश की संकटपूर्ण स्थिति का जो ब्यौरा पेश किया था उससे युवक को अनायास-ही ऐसा अहसास हुआ कि उसके चारों ओर एक निस्सीम खाई है। इस उजाड़ मैदान मे बहने वाली मार्च की बरछी के समान तीखी हवा दुर्भिक्ष का रुदन तो नहीं है ? झोंके बड़े जबरदस्त थे। वे मजदूरों के लिए मौत का पैगाम प्रतीत होते थे। दुर्भिक्ष इंसान को मार डालेगा। भयभीत हो उसने ओसारे में घुसने की कोशिश की। हर वस्तु रात्रि के अंधकार मे डूबी थी। दूर, बहुत दूर लोहा गलाने के भाष्ट्र और कोयले के धधकते चूल्हे नजर आ रहे थे। चूल्हों की चिमनियों से निकलने वाली लपटें लाल ज्वालाओं की कतार-सी बनाती थीं और बाईं ओर, उससे हटकर, दो बुर्जियों पर खुले में जलने वाली नीली रोशनी, भीमकाय टार्च-सी लगती थी। लोहा-इस्पात और कोयलें के इस मुल्क में यह सब नरकाग्नि के समान प्रतीत होता था। इसके अलावा आसमान मे और कोई नक्षत्र नजर न आता था।

'शायद तुम बेल्जियम के रहने वाले हो ?' कोचवान लौट आया था और लाँतिये की ओर उसकी पीठ थी।

इस बार वह सिर्फ तीन ट्रामें भर लाया था। तब तक कम से कम इन्हीं को खाली किया जाय। कटघरे का एक स्क्रू-नट टूट गया था। लगभग पन्द्रह-बीस मिनट के लिए काम रुक गया था। नीचे, खान में पूर्ण निस्तब्धता थी। अब ठेला-मजदूरों के ट्रामें खींचने से कान के पर्दे फाड़ने वाली खड़खड़ाहट रुकी हुई थी। खान के भीतर, कहीं दूर किसी लोहे की चादर पर हथौड़ी चलाये जाने की आवाज आ रही थी।

युवक ने उत्तर दिया : 'नहीं, मैं दक्षिण का रहने वाला हूँ।'

कामगार ट्रामें खाली कर जमीन पर बैठ गया। दुर्घटना में वह खुश था लेकिन उसकी मनहूस चुप्पी बरकरार रही। उसने सिर्फ अपनी उदास-सी बोझिल आँखें उठाकर इस प्रकार कोचवान की ओर देखा मानो वह उसके बहुत बकवास करने पर नाखुश हो। वास्तव में कोचवान कभी भी इतनी ज्यादा बातचीत नहीं करता था। उस अनजान परदेशी की सूरत में निस्संदेह उसे खुशी हुई होगी कि उसकी परेशानियाँ व्यक्त करने के लिए कोई विश्वासपात्र है। यही बात कभी-कभी वृद्ध व्यक्तियों को, अकेले में भी, जोर से बड़बड़ाते हुए उनके मनोभाव प्रकट करने की प्रेरणा देती है।

'मैं मोटमू का रहने वाला हूँ। मुझे 'बोने माँ' कहते हैं।' कोचवान बोला।

लाँतिये ने आश्चर्य जाहिर किया : 'यह तुम्हारा तखल्लुस है ?'

वृद्ध ने संतोषजनक मुद्रा में बोरों की ओर इशारा किया 'हाँ ! मुझे तीन बार यहाँ से निकाला गया। मैं मरते मरते बचा हूँ। एकबार मेरे सारे बाल झुलस गए, फिर दुबारा मेरे आमाशय में मिट्टी भर गई और तीसरी बार पानी भरने से मेरा पेट मेढक की तरह फूल गया, और जब देखा गया कि मैं आसानी से मरने वाला नहीं हूँ तो लोग मजाक में मुझे बोने माँ कहने लगे।'

बुरी तरह ग्रीज में पुती पुरानी चरखी की कड़कड़ाहट की भाँति उसकी खुशी भी बढ़ गई थी जो खाँसी के एक तेज दौर पर समाप्त हुई। अँगीठी की आँच के प्रकाश में उसकी आकृति स्पष्ट हुई। उसके सिर पर यहाँ-वहाँ थोड़े से सफेद बाल बचे थे। पीले चेहरे पर चोट के नीले धब्बे, कद छोटा होने पर भी गर्दन की असाधारण लम्बाई, कंधों से जुड़े हुए-से खुरदुरे हाथ, गठिया से सख्त पतली-पतली टाँगें स्पष्ट नजर आ रही थीं। अन्य बातों में वह अपने घोड़े के समान-ही निश्चल और बर्फ की सर्दी से अप्रभावित प्रस्तर-मूर्ति मालूम पड़ता था। ऐसा प्रतीत होता था कि सीटी-सी बजाते हुए उसके कानों के पास से गुजरने वाले हवा के तेज झोंकों का

अहसास-ही उसे नहीं होता। खाँसने के बाद उसके गले से फटे बाँस-सी आवाज निकली और अँगीठी के पास उसके बलगम से मिट्टी काली हो गई।

लॉतिये कभी उसकी ओर देखता, कभी कफ से गीली जमीन की ओर।

'क्या तुम्हें खान में लम्बा अर्सा हो गया है ?'

बोने माँ ने अपनी दोनों बाँहें फैला दी—'जमाना बीत गया है। कम से कम, जहाँ तक मुझे याद है, मैं खान में उतरते समय आठ वर्ष का भी नहीं हुआ था और अब मेरी उम्र अट्ठावन वर्ष की है। इसे गिन लो। हर किस्म का काम खान में मैंने किया है। पहले मैं ट्रामर रहा, फिर पुटर और जब मैं जवान हुआ तो अठारह वर्ष पर्यन्त मलकट्टे का काम करता रहा। चूंकि, एक दुर्घटना में मेरे पाँव कुचल गए थे इसलिए मुझे मिट्टी काटने और यहाँ-वहाँ थूम बाँधने का काम दिया गया। परन्तु जब डाक्टरों ने सलाह दी कि नीचे मेरी कब्र बन जायगी तो मुझे ऊपर लाया गया और पन्द्रह वर्ष से मैं कोचवान हूँ। मैंने अपने खान के जीवन के पचास से अधिक वर्षों में पैंतालीस वर्ष नीचे बिताये है।'

बोने माँ के बोलते समय यदा-कदा कोयला चटक कर अँगीठी के बाहर छिटक पड़ता था जिसकी लौ में उसका चेहरा दमक उठता था।

उसकी बातों का सिलसिला जारी रहा, 'कम्पनी मुझे आराम करने को कहती है। इतना बेवकूफ मैं नहीं कि उसकी बातों में आ जाऊं। दो वर्ष मैं और खींच सकता हूं। साठ वर्ष में मुझे इकट्ठा एक सौ अस्सी फ्रैंक पेंशन मिलेगी। वे बहुत चालाक बनते हैं, भिखारी कहीं के। मेरे पाँव काम नहीं देते, बाकी मैं पूर्णरूप से स्वस्थ हूं। जरा हाथ लगा कर तो देखो कि कटानों में निरंतर झरने वाले पानी से मैं किस कदर भीगा रहता हूँ। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि मैं बिना सहारे एक कदम भी नहीं बढ़ पाता।'

खाँसी के दौर ने फिर बाधा पहुँचाई। लॉतिये बोला, 'इसीलिए तुम्हें इस कदर खाँसी है।'

झटके से सिर हिलाने के बाद बुड्ढा पुनः बोलने की स्थिति में आ गया। 'नहीं, नहीं, ठंढ तो मुझे पिछले एक महीने से लगी है, पहले मुझे कभी खाँसी नहीं हुई और अब इससे छुटकारा पाना मुश्किल हो गया है। लेकिन विचित्र बात यह है कि जब मैं थूकता हूँ, जब मैं थूकता हूँ .....।'

उसके गले से पुनः खरखराहट की आवाज निकली और फिर काला बलगम निकला।

लॉतिये ने साहस से पूछा, 'क्या खून निकलता है ?' बोने माँ ने धीरे से अपनी हथेली के पृष्ठ भाग से अपना मुंह पोंछा, 'यह कोयला है। मेरी हड्डियों में मुझे

मरने तक गरमी पहुँचाने के लिए पर्याप्त कोयला जमा है। पाँच वर्षों से मैंने नीचे कदम नहीं रखा। ऐसा मालूम पड़ता है कि अनजाने मे ही यह मेरे पेट में जमा हो गया, यह हमें जिन्दा रखे हुए है।'

वहाँ फिर चुप्पी छा गई। दूर, खान में निरंतर हथौड़ी चलाये जाने की आवाज आ रही थी। हवा उसी रफ्तार से कराहती हुई बह रही थी, मानो रात्रि की गहराई से भुखमरी और थकान का क्रंदन उठ रहा हो। लपटों के पास वृद्ध धीमे स्वर मे बड़बड़ाता हुआ अपनी पुरानी स्मृतियों को ताजा कर रहा था। आह, निस्संदेह, अभी कल की ही बात मालूम पड़ती है जब कि उसने संधि मे गैंती चलानी शुरू की थी। मोंटसू कम्पनी के प्रारंभ मे ही यह परिवार यहाँ काम करने लगा था और उसकी स्थापना हुए अब एक सौ छः वर्षों का लम्बा अर्सा गुजर चुका था। उसके दादा गुइलाँ माहे ने, जो उस समय पन्द्रह वर्ष का छोकरा था, कम्पनी की पहली खान रिक्वीलाँ में बढ़िया किस्म के कोयले का पता लगाया था, जो कि अब फाविले चीनी मिल के पास एक परित्यक्त पुरानी खान थी। सभी लोग इस बात को जानते थे और इसके सबूत के रूप मे यह संधि 'गुइलाँ संधि' के नाम से पुकारी जाने लगी। उसने अपने दादा को नहीं देखा; परन्तु कहा जाता था कि वह बड़ा हट्टा-कट्टा और बड़े डील-डौल वाला व्यक्ति था, जो साठ वर्ष का बुड्ढा होकर मरा था। तब उसका पिता निकोलस माहे, जो कि लाँरोग कहलाता था, मुश्किल से चालीस वर्ष का होगा जब कि खान मे ही उसकी मृत्यु हो गई। उस समय खान मे खुदाई का काम चल रहा था; जमीन धँसने से चट्टान उसका रक्त पी गई और उसकी हड्डियों को निगल गई। उसके दो चाचा और तीन भाई भी, बाद मे वहीं मरे। यह विनसाँ माहे भी स्वयं जब खान से बाहर निकाला गया तो उसके पाँव कुछ लड़खड़ाने लगे थे और लोग उसे बड़ी इज्जत से देखते थे। लेकिन वह करता भी क्या? उसकी पीढ़ी-दर-पीढ़ी, बाप से लेकर पुत्र तक यहाँ काम करती चली आ रही थी। उसका लड़का तुसा माहे नीचे, मौत से जूझता हुआ काम करता था। उसके पोते भी यहीं थे। उसका परिवार खान के सामने बस्ती मे रहता था। एक सौ छः वर्षों के खान का जीवन, बुड्ढों के बाद युवा, उसी मालिक के लिए काम करते थे। आह! बहुत से अभिजात वर्गीय ऐसे भी होंगे जो अपना इतिहास अच्छी तरह न जानते हों।

'कुछ भी हो, यदि खाने भर को पर्याप्त मिलता रहे!' लाँतिये पुनः बड़-बड़ाया।

'यही मैं भी कहता हूँ। जब तक किसी को रोटी मिलती रहे वह जिन्दा रह सकता है।'

बोनेमॉ चुप हो गया। उसकी निगाहें बस्ती की ओर गईं जहाँ से एक के बाद एक प्रकाश की किरणें टिमटिमाती नजर आ रही थीं।

'क्या तुम्हारी कंपनी मालदार है?' लांतिये ने पूछा।

बुड्ढे ने अपने कंधे उचकाये और उन्हें फिर इस प्रकार ढीला छोड़ दिया मानो वह सोने के शिलाखंड के नीचे दबकर बेचैनी अनुभव कर रहा हो।

'ओ! हाँ! ओ! हाँ! शायद उतनी धनी नहीं जितनी कि इसकी पड़ोसी अंजिन कम्पनी है। लेकिन लखपति लखपति सब बराबर है। वे उसे गिन तो सकते नहीं। उन्नीस खानें, तेरह में काम चालू है। बोरो, विक्टियोरे, मिराओ, सेंट टामस, मेडेलेन, फ्यूट्री-कॅटल तथा और बहुतेरी, रिक्वीला की तरह सवातन या पानी निकालने के लिए छः खाने। दस हजार काम करने वाले मजदूर, मरमठ कम्यूनों से अधिक कमीशन, पाँच हजार टन प्रतिदिन उत्पादन, सभी खानों को जोड़ने वाली एक रेलवे लाइन और कारखाने, फैक्ट्रियां! ओह! हां, दौलत ही दौलत भरी पड़ी है।'

मचानों पर ट्रामों की खड़खड़ाहट से घोड़े ने कान खड़े किये। नीचे, कटघरे की मरम्मत की जा चुकी थी और ठेला-मजदूर पुनः काम पर जुट गए थे। नीचे उतरने के लिये जब वह अपने घोड़े को फिर से कस रहा था तो उसने बड़े प्रेम से घोड़े को सम्बोधित करते हुए कहा—

'गप्पबाजी से काम नहीं चलेगा, सुस्त, निकम्मा। अगर हनेब्यू को मालूम पड़ जाय कि तुम किस तरह अपना समय जाया करते हो...!'

लांतिये ने विचारमग्न हो अंधकार की ओर देखा।

उसने पूछा—'तब मोशिये हनेब्यू खान के मालिक हैं?'

'नहीं', वृद्ध ने सफाई दी, 'मोशिये हनेब्यू सिर्फ जनरल-मैनेजर हैं. उन्हें हमारी ही भांति वेतन मिलता है।'

लांतिये ने अंधकार की ओर संकेत करते हुए पूछा—

'तब, यह सब किसका है?'

लेकिन बोनेमॉ को कुछ क्षण के लिए खांसी का इतना तेज दौरा उठा कि वह सांस तक न ले सका। फिर, बलगम थूक कर अपने होठों की काली परत को पोंछने के बाद उसने तूफान के तेज झोंके के बीच उत्तर दिया—

'ओह! यह सब किसका है? कोई नहीं जानता: उन लोगों को और अपने

हाथ से उसने अंधकार में अस्पष्ट, अज्ञात और निर्जन स्थान की ओर संकेत किया जिसमें वे लोग रहते थे, जिनके लिए मोह परिवार एक शताब्दी से भी अधिक समय से संधि में गँती चला रहा था। उसकी आवाज में एक धार्मिक भय था। ऐसा प्रतीत होता था कि वह किसी अगम्य देवमंडप मे बैठे हुए जल्दी ही कुपित हो जाने वाले देवता की बात कह रहा है जिसे वे अपना हाड़-मांस चढ़ाते चले आ रहे हैं और जिसे उन्होंने कभी नहीं देखा।

'जो कुछ भी हो, अगर खाने भर को रोटी मिल जाय', लाँतिये ने तीसरी बार दुहराया।

'सच कहते हो, वास्तव मे, अगर हमे हमेशा रोटी भर मिलती रहे तो कितना अच्छा हो।'

घोड़ा खानी हो चुका था और कोयलवान भी उसी के साथ अदृश्य हो गया। भारवाहक झूले के पास कारीगर पूर्ववत् बैठा था, वह गुड़ीमुड़ी होकर अपनी टांगों के बीच अपनी ठुड्डी डाले अपनी बोझिल आँखों से शून्य की ओर टकटकी लगाये था।

अपना बडल जमीन से उठाये लाँतिये अभी वहीं खड़ा था। उसने महसूस किया कि ठंढ से उसकी पीठ जमी जा रही है जब कि उसका सीना सामने जलती हुई आंच से जला जा रहा था। शायद, जो कुछ भी हो, खान मे पूछताछ कर लेना बेहतर होगा। संभव है बुड्ढे को मालूम न हो। फिर वह सोचने लगा कि वह जो भी काम मिले स्वीकार कर लेगा। वह कहाँ जाय, इस काम के अकाल मे पीड़ित मुल्क मे उसका क्या होगा? एक भटकने वाले आवारा कुत्ते की तरह क्या उसे किसी दीवार के सहारे अपना प्राण त्याग देना पड़ेगा? लेकिन एक संशय उसे परेशान किये था, इस चौरस मैदान के मध्य मे बसे एवं प्रगाढ अंधकार मे डूबे बोरो का भय। आने वाला हवा का प्रत्येक झोंका उसे निस्सीम क्षितिज से उठता प्रतीत होता था। गहन-गंभीर आसमान मे उसे कहीं भी ऊषा काल की सफेदी नजर न आती थी। सिर्फ लौह भ्राट्टों मे ज्वालायें उठ रही थीं, और कोयले की भट्ठियां अंधकार को प्रदीप्त किये बिना अंधेरे को रक्तिम बना रही थीं। धरती के खोखले-पोले स्थान मे बनी हुई बोरो खान किसी कुरूप और भयावने जानवर के दुबके बैठे रहने की स्थिति मे धीरे-धीरे और गहरी सांसें ले रही थी मानो मनुष्य के गोश्त के अपच से उसे दर्द महसूस हो रहा हो।

२

गेहूँ और चुकन्दर के खेतों के बीच ड्यू-सॉ-क्वारां बस्ती सघन अंधकार मे डूबी सोई थी। लम्बान में दूर तक फैले बस्ती के छोटे-छोटे घर एक दूसरे के आमने-सामने चार ब्लाकों के रूप में बारिकों या अस्पताल के क्वार्टरों की भांति समानान्तर और त्रिभुजाकर बने थे। और प्रत्येक क्वार्टर के सामने एक छोटा सा बगीचा था। बस्ती के ऊसर मैदान में, घेरे की टूटी हुई जालियों से, हवा के मनहूस झोंके का रुदन-मात्र सुनाई दे रहा था।

दूसरे ब्लाक के सोलह नम्बर मकान में सब अचेत पड़े हुए थे। पहली मंजिल पर बना एक मात्र कमरा प्रगाढ अंधकार मे डूबा हुआ था। ऐसा प्रतीत होता था कि वह अपने बोझ से, थकान से चूर-चूर, खुले मुंह सोने वाले इस घर के सदस्यों को विह्वल बनाये है। बाहर कड़ाके की ठंढ के बावजूद कमरे की पशुवत मानवों की सांसों से निकली बोझिल हवा में सुखद गरमी थी।

नीचे के कमरे में टंगी घड़ी ने सुबह के चार बजाये, लेकिन कोई नहीं जागा। सोने वालों की गहरी सांस लेने की मोटी-सी आवाज के साथ-साथ दो के खुर्राटे भरने का स्वर भी सुनाई दे रहा था। यकायक कैथराइन जागी। हमेशा की तरह, थकान मे, उसने चार का घंटा बिस्तर पर ही सुना था और अभी वह उठने के लिए पूर्ण शक्ति सचित नहीं कर पाई थी। तब, पाँव चादर से बाहर निकाल कर, उसने इधर-उधर टटोला और फिर एक माचिस जला कर मोमबत्ती जला ली। वह अभी वहीं बैठी थी, उसका सिर इतना भारी मालूम हो रहा था कि वह बाहों के बीच सर दिये तकिये के सहारे झुक गई।

बत्ती से कमरे मे प्रकाश हुआ। चौकोर कमरा जिसमे दो खिड़कियां थीं, तीन बिस्तरों से भर गया था। एक अलमारी, एक मेज और दो अखरोट की लकड़ी की पुरानी कुर्सियां, जिनकी नोकों से दीवारों में खुरचन आगई थी, हल्की पीले रंग से पुती दीवार के सहारे लगी थी। खूटियों पर लटके कपड़ों, फर्शपर रखे हुए एक जग और हाथ-मुंह धोने के काम मे लाये जाने वाले एक लाल रंग के तसले के अलावा कमरा खाली था। बिस्तर पर, बाईं ओर सबसे बड़ा लड़का जाचरे, जिसकी उम्र इक्कीस वर्ष की थी अपने ग्यारह वर्ष के छोटे भाई जॉली के साथ सोया था। दाईं ओर दो बच्चे लीनोरी और हेनरी, जिनकी उम्र कमशः छः तथा चार की थी, एक-दूसरे के गलबहियाँ डाले पडे थे। तीसरे बिस्तर पर कैथराइन अपनी छोटी बहिन अल्जिरे के साथ सोती थी। अल्जिरे नौ वर्ष की होने पर भी इतनी दुबली-पतली और छोटी थी कि अगर उसका कूबड़ कैथराइन को न चुभता होता तो उसे उसका

अस्तित्व ही महसूस न होता। काँच के एक दरवाजे से पृथक प्रकोष्ठ में बच्चों के माँ-बाप चौथे बिस्तर पर सोते थे और उनकी खटिया से सटे एक पालने पर नवजात एस्टीली, जिसकी उम्र मुश्किल से तीन महीने की होगी, सुलाई जाती थी।

कैथराइन ने उठने का एक निष्फल प्रयत्न किया। उसने अँगड़ाई लेते हुए अपने दोनों हाथों को अपने माथे और गर्दन पर झुकी भूरी लटों पर फेरा। पन्द्रह वर्ष की होने पर भी अभी वह बहुत छोटी थी, उसकी तंग जांघिया के बाहर निकले अवयवों में कोयले से खाये हुए उसके नीले रंग के पांव, दूधिया पतली-पतली बाँहें दिखाई दे रही थीं जो लगातार काले साबुन के प्रयोग से खराब हुए उसके हल्के पीले चेहरे से मेल नहीं खाती थीं। उसने एक जम्हाई ली और उसके काले मसूड़ों पर सफेद दंत-पंक्ति चमकने लगी। उसकी नीली आंखें नींद से झगड़ती हुई परेशान थी और कष्टदायक परेशानी तथा थकन, ऐसा प्रतीत होता था मानों उसके समस्त नग्न-शरीर में फैली हो।

प्रकोष्ठ से मोह की मोटी गुर्राहट की आवाज आई—'इसे शैतान ले जाय! समय हो गया। क्या तुम रोशनी जला रही हो, कैथराइन?'

'हाँ फादर; अभी-अभी नीचे घंटा बजा है।'

'तब जल्दी कर काहिल। अगर तू रविवार को कम नाचती तो हमें जल्दी उठा सकती थी। क्या बेहतरीन काहिली की जिन्दगी है!'

वह बड़बड़ा रहा था, लेकिन नींद ने उसे भी धर दबाया! उसका उलाहना अस्पष्ट होता गया और फिर खुर्राटों की आवाज में बिलकुल ही खो गया।

लड़की अपनी चोली पहने नंगे पाँव फर्श पर इधर-उधर आने-जाने लगी। जब वह लीनोरी और हेनरी के बिस्तर के पास से गुजरी तो उसने उनके ऊपर से खिसकी हुई चादर उन्हें फिर से ओढ़ा दी। दोनों ही बचपन की अलमस्त नींद में थे। अलसाये आँखें खोलकर बगैर बातचीत किये अपनी बहिन के गरम स्थान में खिसक गई थी।

'मैंने कहा, जाचरे···और तुम भी जॉली; उठो! उठो!', कैथराइन अपने दोनों भाइयों को उठा रही थी और वे तकियों में अपनी नाक गड़ाये सोये हुए थे।

उसने अपने बड़े भाई का कंधा पकड़ कर उसे झकझोर दिया और वह गालियाँ बकने लगा। कैथराइन को सूझा कि वह उनकी चादर खींच ले और उन्हें नंगा कर दे। इस विनोद से जब उसने देखा कि दोनों लड़के नंगे पाँवों से एक दूसरे से झगड़ रहे हैं तो वह हँसने लगी।

जाचरे उठ बैठा और क्रोधित स्वर में बोला—'बेवकूफ, मुझे अकेला छोड़ दे। मैं ठठोली पसंद नहीं करता। हे ईश्वर! क्या उठने का समय हो गया?'

वह दुबला पतला और गुरबत में पला था। उसके लम्बे चेहरे की ठोड़ी में दाढ़ी उगने के चिन्ह नजर आने लगे थे। उसके बाल भूरे थे और शरीर पर परिवार भर मे फैले पीलिया के लक्षण थे।

उसकी कमीज उसके पेट तक सरक गई थी और उसने शर्म से नहीं अपितु ठंढ लगने की वजह से उसे नीचा किया।

कैथराइन ने दुहराया, 'नीचे घंटा बोला है, चलो! उठो! फादर बिगड़ रहा है।'

जॉली ने पुनः चादर ओढ़ ली और आँखे बंद किये हुए कहा—'जाओ, तुम लोग मरो; मैं तो सोता हूँ।'

वह फिर मुस्कराने लगी। एक अच्छी लड़की की तरह उसने दुबले-पतले और ठिगने जॉली को गोद मे उठा लिया। वह लात चलाता हुआ छटपटाने लगा। उसके बंदर से पीले और झुर्रीदार चेहरे, नीली आँखो तथा बड़े-बड़े कानो के पीछे कमजोरी के गुस्से से पीलापन छा गया। उसने कुछ न कह कर उसके दाँये उरोज मे काट खाया।

'जानवर कहीं का।' वह बड़बड़ाई और उसने चीख रोकते हुए उसे जमीन पर लिटा दिया।

अलिजे अपनी ढोडी के नीचे तक चादर ओढे पड़ी-पड़ी चुपचाप यह सब देख रही थी। उसकी चतुर बच्चे की आँखें अपनी बहिन और भाइयो को कपडा पहनते देख रही थी। दूसरी बार झगड़ा तसले के इर्द-गिर्द हुआ, लड़के अपनी बहिन को धकिया रहे थे क्योंकि वह बड़ी देर से हाथ-मुँह धो रही थी। कमीजें इधर-उधर पटकी गईं, अर्धनिद्रित स्थिति मे ही उन्होंने नंगे होकर कपडे पहने। बिना किसी प्रकार की शर्म के उनके अन्दर साथ-साथ पलने वाले पिल्लों का सा निश्छल संतोष था। कैथराइन सबसे पहले तैयार हो गई। उसने खनिकों की ब्रिजिस पहनी, उसके ऊपर किरमिच की जाकेट, अपने गुंथे हुए बालों मे नीली टोपी लगाई। सोमवार के इन साफ-सुथरे कपड़ों मे वह एक नन्हे मरद-सी लग रही थी। उसके कूल्हों के हल्के घिराव के अलावा और किसी अन्य रूप से उसके महिला-जाति के होने का भान नहीं होता था।

जाचरे ने शरारत भरे लहजे में कहा—'जब बुड्ढा लौटेगा तो वह चाहेगा कि बिस्तर लिपटा मिले। मैं कह दूँगा कि तुमने ऐसा नहीं किया।'

वृद्ध इन बच्चों का दादा बोनेमॉ था जो रात को खान में काम करता और दिन में सोता था। इसलिए बिस्तर कभी ठंडा नहीं होता था और कोई-न-कोई उस पर पड़ा खुर्राटे लिया करता था। बगैर कोई उत्तर दिये कैथराइन ने बिस्तर

ठीक कर उसकी तह बना दी। उनके बाहर निकलने से पूर्व कमरे की दीवार के पीछे पड़ोसी के घर में कुछ खटपट सुनाई दी। कम्पनी द्वारा बहुत कंजूसी से बनाई गई ईंट की दीवारें इतनी पतली थीं कि उनसे पड़ोसी एक दूसरे के घर में साँस की आवाज तक सुन सकते थे। इनमें रहने वाले एक छोर से दूसरे छोर तक इतने सटे हुए रहते थे कि बच्चों तक से पारिवारिक जीवन की कोई गोपनीयता छिपी न रहती थी। किसी के भारी कदमों के नीचे लकड़ी की बनी सीढ़ी चरमराई, हल्का सा धमाका हुआ और फिर किसी के गहरी संतोष की सास लेने का शब्द हुआ।

'अच्छा!' कैथराइन बोली। 'लेवक्यू चला गया है और बाउटलोप उसकी औरत के पास सोने आया है।'

जॉली ने खीस निपोरे; यहाँ तक कि अल्जिरे की आँखें भी चमकने लगी। नित्य प्रति सुबह वे अपने पड़ोसी, इन तीनों का मजाक उड़ाते थे। यह मजदूर कटान के एक अन्य मजदूर को अपने घर पर टिकाये था और ऐसी व्यवस्था बनाई हुई थी कि एक औरत के दो मरद रहे,एक रात में और दूसरा दिन में।

थोड़ी देर कान लगाकर सुनने के बाद कैथराइन बोली—'फिलोमीन खांस रही है।'

वह लेवक्यू की सब से बड़ी लड़की की बात कह रही थी, जो उन्नीस वर्ष की जवान लड़की थी और जाचरे की प्रेमिका थी। इससे उसके दो बच्चे भी पैदा हो चुके थे; उसकी छाती इतनी नाजुक थी कि वह कभी भी नीचे काम नहीं कर पाई थी; वह खान में एक 'शिफ्टर' मात्र थी।

'फूहड़! फिलोमीना!' जाचरे ने उत्तर दिया, 'वह अपनी बड़ी हिफाजत रखती है, वह सोयी होगी। छः बजे तक सोये रहना गंदी आदत है।'

जब वह ब्रिजिस पहन रहा था तो एक विचार उसके दिमाग में आया और उसने खिड़की खोल दी। बाहर अंधेरे में बस्ती जाग रही थी, रोशनदान के पट्टों से एक के बाद एक रोशनी झलमला रही थी। यहाँ दूसरा विवाद उठ खड़ा हुआ। वह इसलिए नीचे झुका कि शायद उनके सामने रहने वाले पेरी के मकान से बोरो का कप्तान निकलता दिखाई दे जिसके बारे में कहा जाता था कि वह पेरी की औरत का यार है; लेकिन बहिन का यह कहना था कि चूंकि परसों से पेरी की खान में दिन की ड्यूटी हो गई है इसलिए इसमें जरा भी शक नहीं कि डेनार्ट रात को वहाँ नहीं सो सकता। बर्फीली हवा खिड़की से अन्दर आ रही थी लेकिन दोनों ही अपनी सूचना की सत्यता पर अड़े हुए थे और अन्त में चिल्लाहट और रोना-धोना मच गया। रोने वाली एस्टीली थी जो पालने में पड़ी ठंड के मारे चीखने लगी थी।

माहे यकायक जाग उठा। इसे क्या हो गया ? वह एक निकम्मे की तरह फिर सोने जा रहा था और वह इतने जोरों से बड़बड़ाने लगा कि बच्ची चुप हो गई। जाचरे और जॉली ने थकान के मारे धीरे-धीरे हाथ-मुंह धोया, अल्जिरे, अपनी बड़ी बड़ी आँखें खोले बराबर उनकी ओर ताक रही थी। दोनों छोटे बच्चे—लीनोरी और हेनरी- एक दूसरे के गले में बाँहें डाले, हल्ले-गुल्ले के बावजूद उसी तरह गहरी नींद में मस्त थे।

माहे ने पुकारा—"कैथराइन, मुझे रोशनी दो।"

उसने अपनी जाकेट के बटन लगाये तथा बत्ती को प्रकोष्ठ में ले गई और अपने दोनों भाइयों को वहीं छोड़ गई जो कि दरवाजे से आने वाली रोशनी में अपने कपड़े टटोल रहे थे। उसका पिता बिस्तर से बाहर कूद पड़ा। वह वहाँ ठहरी नहीं, अपने पुराने ऊनी जुर्राब पहने; रास्ता टटोलती हुई सीढ़ियों से नीचे उतर गई। वहाँ उसने दूसरी मोमबत्ती जला ली और काफी तैयार करने लगी। परिवार भर के जूते रसोई घर में आले के नीचे रहते थे।

एस्टीला फिर चीखने लगी थी और उसकी चीखों से क्रोधित हो माहे चिल्लाया—'चुप भी रहेगी शैतान ?'

वह अपने पिता बोनेमां की ही तरह ठिगना था। उसका मजबूत सिर, चौड़ा, पीला चेहरा और सिर पर कटे हुए छोटे-छोटे बाल बुड्ढे से मिलते-जुलते थे। अपने को गठीले लम्बे हाथों में पाकर डर के मारे लड़की और भी बुरी तरह चीखने-चिल्लाने लगी।

'उसे अकेली छोड़ दो; तुम्हें मालूम है वह चुप न होगी'। उसकी पत्नी ने बिस्तर के बीचों बीच सरकते हुए कहा।

वह भी जाग उठी थी और शिकायत कर रही थी कि यह कितनी बुरी बात है कि वह कभी भी पूरी रात नहीं सो पायी। तुम लोग चुपचाप काम पर नहीं जा सकते हो ? ओढ़ने के वस्त्र से ढँके उसके शरीर में उसका लम्बा मुँह दिखाई दे रहा था और ऐसा लगता था कि वह कभी खूबसूरत रही होगी। जलालत और गुरबत की जिन्दगी के उन्तालीस वर्षों में सात बच्चों की माँ बनने के बाद उसका चेहरा विकृत हो चला था। छत की ओर ताकती हुई वह धीरे-धीरे बातें कर रही थी और उसका मरद कपड़े पहन रहा था; बच्ची रोते-रोते थक कर सुबकियाँ ले रही थी। उन दोनों में से किसी ने भी उसकी ओर ध्यान नहीं दिया।

वह बोली—'तुम जानते हो कि मेरे पास एक पेनी भी नहीं है और अभी सिर्फ सोमवार है। पखवारा बीतने में अभी छः दिन बाकी है। इस प्रकार नहीं चल

सकता। तुम, तुम सभी नौ फ्रेंक ला कर देते हो। तुम किस तरह उम्मीद करते हो कि मैं चला पाऊँगी ? हम घर में दस प्राणी हैं।'

'ओह ! नौ फ्रेंक !' माहे ने कहा। मैं तथा जाचरे तीन-तीन फ्रेंक लाये ; छः हो गए, कैथराइन और फादर के दो-दो इस प्रकार चार यह हुए; चार और छः दस और जॉली एक, कुल ग्यारह हुए।'

'हाँ, ग्यारह, लेकिन बीच में रविवार और अवकाश के दिन पड़े। कभी भी नौ फ्रेंक से ज्यादा नहीं आया, जानते हो !'

'हमें शिकायत नहीं करनी चाहिए। अभी मैं पूर्ण स्वस्थ हूँ। बहुत से ऐसे भी हैं कि बयालीस वर्ष की उम्र में ही उन्हें सहारा लगाने की जरूरत पड़ने लगी है।'

'हो सकता है, लेकिन इससे तो हमें रोटी नहीं मिल जाती। मुझे वह कहाँ से मिले ? तुम्हारे पास कुछ नहीं है ?'

'मेरे पास दो कापर हैं।'

'उन्हें आधा पिंट के लिए रखो। हे ईश्वर अब मैं कहाँ से उसे पाऊँगी ? छः दिन ! वे कभी खत्म न होंगे। हमें साठ फ्रेंक माइग्रेट का देना है, उसने परसों मुझे दूकान से भगा दिया था। लेकिन इससे मेरा उसके पास दुबारा जाना थोड़े ही रुकेगा। लेकिन अगर वह इन्कार ही करता गया तो —'

माहे कोई उत्तर न देकर जमीन में अपनी चमड़े की पेटी ढूंढने लगा और माहेदी अपनी उदास आवाज में बड़बड़ाती रही। उसका सिर पूर्ववत था और वह कभी-कभी बत्ती के मद्धिम प्रकाश में अपनी आँखें मूंद लेती थी। वह बोली— 'आटा खाली पड़ा है, बच्चे रोटी और मक्खन माँगते हैं, काफी भी चुक गई है। खाली पानी से पेट दर्द करने लगता है और उबले हुए करमकल्ले के पत्ते खाकर भूख को भुलावा देने में लम्बे दिन बीत जाते हैं।' धीरे-धीरे उसका स्वर ऊँचा उठता गया क्योंकि एस्टीली की चीखों में उसकी आवाज दब गई थी। यह चीखें असह्य हो गई थीं। माहे ने, मानो यकायक उस चीख को सुना हो, लड़की को पालने से उठाकर उसकी माँ के पास बिस्तर में पटक दिया और गुस्से में काँपता हुआ बोला—'लो ! सम्भालो इसे; मैं इसे मार डालूंगा। लड़की है कि शैतान ! बेकार चिल्लाती है; चूसती रहती है फिर भी सबसे ज्यादा चिल्लाती है।'

एस्टीली वास्तव में दूध पीने लगी थी। कपड़ों में छिपी हुई, बिस्तर की गरमी पाकर, उसकी चीखें उसके लालची होठों के स्तनपान की हल्की आवाज में बदल गई थीं।

कुछ देर की चुप्पी के बाद पिता बोला—'क्या पायोलेन के लोगों ने तुम्हें उनसे मिलने को नहीं बुलाया ?'

माँ ने निरुत्साहयुक्त सन्देह में अपना होठ काटा। 'हाँ, वे मुझे मिले थे। वे गरीब बच्चों के लिए कपड़ा ले जा रहे थे। मैं आज ही सुबह लीनोरी और हेनरी को लेकर जाऊँगी; अगर वे मुझे कुछ पेन्स दे दें तो...।'

वहाँ पुनः चुप्पी छा गई।

माहे तैयार हो चुका था। वह एक क्षण को स्थिर खड़ा रहा, फिर अपनी मायूस आवाज में बोला—'बेकार कलपने से क्या फायदा ? जैसा चल रहा है चलने दो और सूप की चिन्ता करो। बातों से क्या होगा, बेहतर है कि नीचे काम किया जाय।'

माहेदी बोली—'ठीक कहते हो। बत्ती बुझाते जाना। अपने विचारों के स्वरूप को देखने के लिए मुझे इसकी जरूरत नहीं।'

उसने मोमबत्ती बुझा दी। जाचरे और जॉली नीचे उतर रहे थे, वह भी उनके पीछे-पीछे गया और उसके ऊनी जुराब पहने वजनी पावों के नीचे लकड़ी की सीढ़ियां चरमराने लगीं। उनके पीछे प्रकोष्ठ और कमरे में पुनः अंधेरा हो गया। बच्चे सो रहे थे, अल्जिरे की आँखें भी बंद हो चुकी थीं, लेकिन माँ अंधेरे में आँखें खोले पड़ी थी और उसकी छाती से चिपकी हुई एस्टोली बिल्ली के बच्चों की भाँति गुरगुरा रही थी।

नीचे, रसोई घर में कैथराइन ने पहले आँच तेज की जो कि दो चूल्हों से-युक्त एक झर्झरी में जलती रहती थी। कम्पनी हर महीने प्रत्येक परिवार को मार्गों से बटोरा गया मलबा और मलेटी किस्म का आठ हेक्टोलीटर कोयला देती थी जो बहुत धीरे-धीरे जलता था। लड़की हर रात उन्हें झर्झरी में चुन दिया करती थी और सुबह सावधानी से बीने गये कुछ बढ़िया कोयले के टुकड़े उसमें डालकर उसे अधिक तेज करना होता था।

समूचे निचले तल को घेरे हुए यह कमरा काफी बड़ा था। गहरे रंग से पुते इस कमरे में धुंधली सफाई थी। फर्श धोकर उसमें चूना डाला गया था। वार्निश किये गये रैक के अलावा कमरे में फर्नीचर के नाम पर एक टेबल और उसी लकड़ी की कुर्सियां थी। दीवारों पर कम्पनी द्वारा दी गई सम्राट-समाज्ञी की चटकीले रंग की सुनहरी काम की गई तसवीरें, संतो और सैनिकों के चंद चित्र थे जो कमरे की सादगी और रीतेपन से मेल नहीं खा रहे थे। आले पर रखे हुए एक गुलाबी रंग के शृंगारदान और धुंधले पड़ गए डाइल की घड़ी के अलावा कोई प्रसाधन सामग्री वहां नहीं थी। दीवाल घड़ी की टिक-टिक उस स्थान की रिक्तता की पूर्ति करती प्रतीत होती थी। सीढ़ी के पास के दरवाजे से दूसरा दरवाजा गोदाम को

था। सफाई के बावजूद, पकाये हुए प्याज की गंध पिछली रात से बंद होने की वजह से कोयले की गैस से मिलकर कमरे की गरम हवा को विषाक्त बनाये रहती थी।

कैथराइन आले के सामने खड़ी कुछ सोच रही थी। रोटी का सिर्फ एक टुकड़ा बचा था और पनीर पर्याप्त मात्रा में थी; एक अंश मक्खन का भी बचा था और उसे चार जनों में उसे बांटना था। आखीर में उसने कुछ निश्चय-सा करते हुए हुए रोटी के स्लाइस काटे और एक को उठाकर उसमें पनीर लगाया, दूसरे में मक्खन और फिर दोनों टुकड़ों को मिला दिया। यह पनीर और मक्खन लगी रोटी प्रतिदिन प्रातःकाल नाश्ते के लिए खाने में ले जाई जाती थी। उसने चार टुकड़े काट कर एक कतार में उन्हें मेज पर सजा दिया और उन्हें इस न्याय के साथ काटा गया था कि फादर से लेकर छोटे जॉली तक बड़े को बड़ा और छोटे को छोटा हिस्सा मिल जाय।

कैथराइन अपने घरेलू काम-काज में व्यस्त प्रतीत हो रही थी; लेकिन वह बड़े कप्तान और पेरी की औरत के गुप्त सम्बन्धों के बारे में जाचरे द्वारा बतलाई गई बातों के बारे में सोच रही थी। इसी उद्देश्य से उसने सामने का दरवाजा अध-खुला छोड़ रखा था और कभी-कभी उधर भी एक नजर देख लिया करती थी। हवा अब भी सनसनाती हुई बह रही थी। बस्ती के कतारबार मकानों के सामने रोशनी के कई बिन्दु चमक रहे थे, जिनसे बस्ती के जाग उठने का एक अस्पष्ट कोलाहल-सा उठ रहा था। द्वार बंद होने लगे थे और मजदूरों की काली आकृतियां अंधेरे में गुजरती मालूम होती थीं। ठंड खाना उसकी बेवकूफी थी क्यों कि खान के पेंदे पर काम करने वाला कुली निश्चित ही सोया हुआ था, उसकी ड्यूटी छः बजे बदलने वाली थी। फिर भी वह वहीं खड़ी रही और बगीचे के दूसरी ओर बने मकान की ओर ताकती रही। दरवाजा खुला और उसकी उन्मुकता और भी बढ़ गई। लेकिन वह और कोई न होकर पेरी परिवार की छोटी लायडी थी, जो खान को रवाना हो रही थी।

पानी के खौलने का शब्द सुनकर वह मुड़ी। दरवाजा बंद किया और फिर जल्दी करने लगी; पानी खौलता हुआ छलक कर आग बुझाये डाल रहा था। घर में काफी नहीं थी। उसे रात की बची तलछट में ही और पानी डाल कर संतोष कर लेना पड़ा, फिर उसने उसमें चीनी मिलाई। इसी क्षण उसका पिता और दोनों भाई नीचे उतर आये।

'विश्वास करो!' जाचरे ने अपने प्याले के करीब नाक ले जाते हुए कहा,

'यह ऐसी वाहियात है कि इसे कोई पी नहीं सकता।'

'बको मत ! यह गरम है और अच्छी भी बनी है।' माहे ने बात को खत्म करने का प्रयास किया।

जॉली ने रोटी के गिरे हुए टुकड़े बटोर कर उनका सूप बना डाला। काफी पीने के बाद कैथराइन ने काफी के बर्तन को कनस्तर में उलट दिया। चारों ने, मोमबत्ती के धूमिल प्रकाश में खड़े-खड़े अपना नाश्ता निगला। 'क्या हम नाश्ता खत्म कर रहे है ?' पिता बोला, 'वाह लोग भी कहेंगे होंगे कि हम लोग सम्पन्न हैं।'

सीढ़ियों के ऊपर गलियारे से, जिसका दरवाजा वे खुला छोड़ आये थे, आवाज आई। वह माहेदी थी जो पुकार कर कह रही थी—

'सब रोटी तुम लोग ले लो, मैंने बच्चों के लिए कुछ सेंवई रख छोड़ी है।'

'अच्छा, अच्छा,' कैथराइन ने उत्तर दिया।

उसने आँच बटोरी। सूप की तलछट बचे बर्तन को झर्झरी के किनारे पर रख दिया ताकि छः बजे काम से लौटने पर बोनेमां उसे पा सके। हर एक ने आले के नीचे से अपना बूट निकाला, अपने काफी वाले टिन के डोरे कंधे से लटकाये और अपनी रोटी को अपनी कमीज और जाकेट के बीच अपनी पीठ से बाँध लिया। फिर वे सब बाहर निकल आये। पहले पिता और लड़के निकले, बाद में लड़की मोमबत्ती बुझा कर दरवाजे को बन्द करती हुई बाहर आई और घर में पुनः अंधेरा छा गया।

दूसरे मकान में दरवाजा बंद करते हुए एक अन्य व्यक्ति बोला, 'ओह ! हम साथ साथ निकल रहे है।'

यह लेवस्यू था जो अपने बारह वर्ष के छोकरे बीवर्ट के साथ निकल रहा था। जॉली और बीवर्ट में गहरी दोस्ती थी। कैथराइन ने आश्चर्य चकित-सी होकर हँसते हुए जाचरे के कान में कहा--

'क्यों, बाउटलोप लेवस्यू के निकल जाने तक भी इन्तजार नहीं कर सकता ?'

अब बस्ती की बत्तियां बुझने लगी थी और आखिरी द्वार भी बन्द हुआ। समूची बस्ती फिर सो गई। औरतें और बच्चे अधिक चौड़े बिस्तरों में अधिक आराम से खुर्राटे लेने लगे थे। इस नीरव गांव से घोड़ों के कलरव तक, सन-सनाती हवा के बीच, छायाकृतियों की एक कतार गुजर रही थी। खनिक कंधे झुकाये, अपनी बाँहों को बचाने की चेष्टा करते हुए काम पर जा रहे थे और उनकी पीठ से बँधी रोटी प्रत्येक के कूबड़ की भाँति नजर आती थी। अपनी पतली जाकेटों में वे शीत से काँप रहे थे लेकिन इस सब के बावजूद जल्दबाजी किये बगैर वे झुंड की भाँति धीरे-धीरे सड़क से गुजर रहे थे।

३

आखीरकार लॉतिये ने मंच से उतर कर बोरो मे प्रवेश किया। रास्ते में मिलने वाले प्रत्येक व्यक्ति से वह काम के बारे में पूछता जाता था और सभी नकारात्मक रूप से सिर हिलाते हुए कप्तान का इन्तजार करने की सलाह उसे देते थे। धूमिल प्रकाश वाली, काले छेदों से भरी और भूल-भुलैया मे डालने वाली मंजिलों और कमरों के बीच उन्होंने उसे निर्बाध रूप से घूमने को छोड़ दिया था। एक अंधेरी और अर्ध-नष्ट सीढ़ी चढ़ने के उपरान्त उसे एक हिलता हुआ लकड़ी का पुल मिला, फिर वह गहन अंधकार मे डूबे सफाई ओसारे (स्क्रीनिंग शेड) को पार करने लगा। अँधेरा इतना अधिक था कि उसे हिफाजत के लिए अपने दोनों हाथ आगे कर चलना पड़ा। यकायक दो बड़ी-बड़ी पीली आँखें अंधकार को चीरती हुई उसके सामने आई। वह खान के मुँह के नीचे, रिसीवर के कमरे मे, कूपक-उद्गार तक पहुँच गया था।

फादर रिचोम नामक एक कप्तान, जो एक लम्बे कद और बड़े डील-डौल वाला हँसमुख स्वभाव का अधिकारी था, उसी क्षण रिसीवर के कमरे की ओर जा रहा था। 'क्या यहा किसी प्रकार के काम के लिए मजदूरो की जरूरत तो नहीं है ?' लॉतिये ने फिर पूछा।

'मोशिये डेनार्ट, बड़े कप्तान का इन्तजार करो।' रिचोम ने जाते-जाते अन्य लोगों की भांति ही उत्तर दिया।

चार लैंप वहाँ रखे हुए थे और प्रतिक्षेपकों मे, जिनकी सारी रोशनी कूपक पर पड़ती थी, लोहे की अरगनी, सकेतको और छड़ो के रंभे, निर्देशको की धरन, जिनके सहारे दो कटघरे फिसला करते थे, बड़े जोरो से चमक रहे थे। कमरे का शेष भाग गिरजे के समान खाली और शून्य, बड़ी बड़ी तैरती हुई प्रति-छायाओं से भरा हुआ था। दूर एक कोने मे लैंप-केबिन चमक रही थी जब कि रिसीवर के कार्यालय मे एक छोटा-सा लैंप अस्त होते तारे के समान प्रतीत होता था। काम शुरू होने ही वाला था। लोहे के फर्श पर कोयले की ट्रामो के लगातार लुढकाये जाने से बिजली की कड़क-सा गर्जन हो रहा था और ठेला मजदूरों की लम्बी और कमर झुकाये काम करने वाली आकृतियाँ इन काली और शोर मचाने वाली वस्तुओं की गतिविधि के बीच पहचान मे नहीं आ रही थी।

एक क्षण को लॉतिये बहरा और अंधा-सा किंकर्तव्य विमूढ़ हो खड़ा रहा। वह हर तरफ से आने वाले हवा के तेज झोंकों से जकड़ा-सा महसूस कर रहा था। तब वह तार लपेटने वाले इंजन से आकर्षित-सा होकर, जिसका इस्पात

और तांबा चमक रहा था, कुछ कदम आगे बढ़ा। यह इंजन कूपक से पश्चीस मीटर परे, एक एकान्त कोने में ईंटों के एक मजबूत चबूतरे पर बैठाया गया था। चार सौ अश्व-शक्ति के इंजन के पूरी रफ्तार से चलने, भीमकाय धुरे की गतिविधि, चिकनाई लगी फिसलन के साथ उसके नीचे गिरने और ऊपर उठने से दीवारों में कोई कंपन नहीं होता था। इंजन-मैन अपने स्थान पर खड़ा संकेतकों की घंटी सुन-रहा था और उसकी निगाह उस निदेशक से एकक्षण को भी नहीं हटती थी जहाँ कूपक के विभिन्न तत्वों के चिन्ह अंकित थे और उनसे सम्पर्क स्थापित रखने के लिए प्रतिनिधि-व-सूचक डोरियों में गोलियां वहाँ लटकी हुई थीं। हर डोरी एक कटघरे का प्रतिनिधित्व करती थी। कटघरे के पाताल-पुरी में उतरते समय प्रत्येक बार जब मशीन चालू होती थी तो उसके पांच मीटर व्यासवाले दो विशालकाय चक्के, जिनके सहारे लोहे के तार खुलते और लिपटते रहते थे, इस तेजी से घूमते थे कि वे भूरे बुरादे के मानिंद प्रतीत होते थे।

एक बड़ी सीढ़ी को खींचने वाले तीन ठेला मजदूर चिल्लाये: 'सावधान, बचो।'

लाँतिये कुचलने से बाल-बाल बच गया। उसकी आँखें फिर वहीं जम गईं। वह फिर तारों को हवा में घूमते हुए देखने में तल्लीन हो गया। तीस मीटर से अधिक फौलादी-रिबन घिरनियों पर से गुजरता हुआ सीधे कूपक में गिरने लगा था, जहाँ वह कटघरे से जुड़ा हुआ था। एक लोहे की चौखट, घंटाघर की ऊँची मचान की तरह, घिरनियों को सहारा दिये थी। तेरह हजार किलोग्राम भार उठाने की क्षमता वाले वजनी रस्सों के लगातार दस मीटर प्रति सेकंड की रफ्तार से निर्बाध रूप से बगैर शोर के आना-जाना ऐसा प्रतीत होता था जैसे कोई पक्षी गोता लगा रहा हो।

'ईश्वर के लिए, हट जाओ।' ठेला-मजदूर पुनः चिल्लाये। अब की बार वे बायें हाथ के दांतेदार घूमने वाले पहिये पर चढ़ने के लिए सीढ़ी दूसरी ओर घसीटे जा रहे थे। धीरे से लांतिये रिसीवर के कमरे में लौट आया। अपने सिर के ऊपर यह भयानक सिलसिला देखकर वह घबरा गया था। हवा के झोंके के बीच थरथराता हुआ वह कटघरों की गतिविधि देख रहा था और उसके कान ट्रामों की गड़गड़ाहट से बहरे हुए जा रहे थे। कूपक के पास संकेतक काम कर रहा था, एक भारी रंभे वाला हथौड़ा नीचे से रस्सी द्वारा खिंचने पर एक खंड पर चोट करता था। एक प्रहार रुकने, दो प्रहार नीचे जाने और तीन प्रहार ऊपर उठने का संकेत था। भारी प्रहार से कोलाहल पैदा करने वाली चोटें निरंतर पड़ रही थीं और उनके साथ-साथ घंटी की स्पष्ट आवाज आ रही थी। इस कोलाहल के बीच ठेला-मजदूर तुरही द्वारा इंजन-मैन को आदेश देते हुए कोलाहल को और भी बढ़ा रहे थे। कूपक के बीच

की पोली जगह में कटघरे प्रकट और अदृश्य हो रहे थे, भरे तथा खाली किये जा रहे थे और लॉतिये इस जटिल कार्य प्रणाली को समझने में अपने को असमर्थ पा रहा था।

एक बात वह बखूबी समझ रहा था कि कूपक एक बार में बीस या तीस व्यक्तियों को इस आसानी से निगल रहा कि उसे किसी चीज के नीचे उतरने का अहसास ही नहीं हो रहा था। चार बजे सुबह से खनिकों के नीचे उतरने का सिलसिला शुरू हुआ था। वे छोटे-छोटे गोलों में नंगे पाँव, हाथों में लैंप लिये ओसारे में आते थे और पर्याप्त संख्या होने तक इन्तजार करते थे। बिना शब्द किये, किसी आदमखोर जानवर की भाँति लोहे का कटघरा अंधकार से उठता हुआ स्वतः अर्गला से जा लगता था। उसके चारो खानों में प्रत्येक में दो ट्रामें कोयले से भरी ऊपर आती थी। विभिन्न मचानों पर खड़े ठेला-मजदूर ट्रामें बाहर निकालते और उनके स्थानों पर खाली या भरी हुई ट्रामें लगा देते थे और इन खाली ट्रामों में मजदूर एक में पाँच के हिसाब से चालीस की संख्या तक ठूंस दिये जाते थे। जब सभी खाने भर जाते तो तुरही द्वारा आदेश मिलता था, एक आवाज होती, नीचे से चार बार संकेतक रस्सी खींचकर 'मानव-मांस से लदे कटघरे के नीचे उतरने की चेतावनी दी जाती और फिर एक हल्की-सी कुदान देकर कटघरा चुपचाप पत्थर की भाँति नीचे गिरने लगता था और अपने पीछे हवा में आवाज करते तार को तेजी से घूमते हुए छोड़ जाता था।

अपने पास खड़े ऊँघते हुए एक खनिक से लॉतिये ने पूछा—'क्या यह गहरा है?'

'पाँच सौ चौवन मीटर', उसने उत्तर दिया। 'लेकिन इसके चार तल हैं, पहला तीन सौ बीस मीटर पर है।'

दोनों चुप हो गए और घूमते हुए मोटे तारों की ओर देखने लगे। लॉतिये ने फिर पूछा—

'और अगर यह टूट जाय?'

'आह! अगर यह टूट जाय—!'

खनिक ने भाव-भंगिमा से वाक्य पूरा किया। उसकी पारी आ गई थी; अपनी अथक और स्वाभाविक गति से कटघरा फिर प्रकट हुआ था। वह अपने चंद साथियों के साथ उसमें सिकुड़ कर बैठ गया; कटघरा नीचे कूदा और चार मिनट से भी कम समय में आदमियों के दूसरे बोझ को निगलने के लिए ऊपर आ गया। इस क्रम से कटघरा आधा घंटे तक निगलता चला गया। तलों की गहराई के हिसाब से उसका निवाला अधिक या कम लालच भरा होता था। लेकिन वह बगैर विश्राम लिए, हमेशा मरभूखों की तरह मनुष्यों को निगलता ही चला जा रहा

था और उसके विशाल उदर में एक समूचे राष्ट्र को पचाने की क्षमता प्रतीत होती थी। वह उसे भरता ही जा रहा था जब कि अंधकार पूर्ववत बना था। कटघरा शून्य से सी गहरी चुप्पी के साथ गिरता था।

लॉतिये ने आखीरकार वही निराशा महसूस की जिसका अनुभव उसे खान-किनारे हुआ था। आखिर यहां विलम्ब करने में क्या लाभ ? यह बड़ा कप्तान भी अन्य लोगों की ही भांति उसे भगा देगा। एक अज्ञात भय से उसने कुछ निश्चय-सा किया और फिर लौटता हुआ इंजन के कमरे की इमारत के सामने ठहर गया। चौड़े, खुले दरवाजे से सात बायलर और दो भ्राष्ट्र नजर आ रहे थे। नवयुवक वहाँ की गर्मी में प्रसन्न होता हुआ बढ़ ही रहा था कि उसे खान में पहुँचने वाला खनिकों का नया गोल मिला। यह माहे और लेवक्यू का सेट था। जब उसने आगे-आगे मर्दानी पोशाक में कैथराइन को देखा तो एक बार फिर पूछने का खतरा उठाने की उसकी इच्छा हुई—

"मैंने कहा, सुनो, साथी ! किसी प्रकार के काम के लिए कोई मजदूर तो नहीं चाहिये ?'

उसने छाया से यकायक निकलने वाली इस आवाज से घबराकर आश्चर्य से उसकी ओर देखा। लेकिन माहे ने, जो उसके पीछे था उसकी बात सुन ली थी और उसने एक क्षण लॉतिये से बातें करते हुए उत्तर दिया—'नहीं, किसी की जरूरत नहीं है।' इस रास्ता भटके व्यक्ति के प्रति वह आकर्षित-सा हो गया था। जब वह आगे बढ़ा तो माहे ने अन्य साथियों से कहा—

'ओह ! हर किसी की ऐसी हालत हो सकती है। हमें शिकायत न होनी चाहिए, हर एक को मृत्यु पर्यन्त काम करने का मौका नहीं मिलता।'

यह गोल सीधा ओसारे में चला गया, जो कि तख्तों के बाड़ से घिरा एक बड़ा कमरा था और वहां तालाबंद कई आले चारों ओर बने थे। मध्य में एक लोहे की अंगीठी में इतना अधिक कोयला भरा था कि उसके जलते हुए लाल टुकड़े चटख कर फर्श पर लुढ़क पड़ते थे। बड़े हाल में रोशनी का मात्र साधन झर्झरी थी जिसकी रक्तिम आभा में काली प्रतिछायायें तेल से चिकनी लकड़ी की दीवारों से काली धूल जमी छत तक नाचती थी। माहे का सेट जब आँच के करीब पहुँचा तो वहां उन्हें कहकहे सुनाई दिये। लगभग तीस मजदूर आग की ओर पीठ किये हँसी-मजाक कर रहे थे। नीचे उतरने से पहले वे अपने शरीर और हाथ-पांव सेंकने के लिए यहां पर इकट्ठा हुआ करते थे ताकि वे खान की नमी का मुकाबला कर सकें। उस दिन सुबह काफी चुहलबाजी हो रही थी। वे अठारह वर्षीया पुटर माकेटी का मजाक उड़ा रहे थे जिसके वृहद उरोज और नितम्ब उसकी जाकेट

और ब्रिजिस से बाहर फूटे पड़ रहे थ। वह रिक्वीलां मे अपने पिता माउक्यू, जो कि खान में घोड़ों का साईस था और अपने भाई माक्यूट, जो ठेला मजदूर था, के साथ रहती थी; उनके काम के घंटे अलग-अलग थे और वह गर्मियों मे गेहूँ के खेतों के बीच और जाड़ों में किसी दीवार के सहारे अपने उस सप्ताह के प्रेमी के साथ मजा किया करती थी। खान मे सभी की पारी आती थी; भावी परिणाम सोचे बगैर क्रमानुसार लगातार उसके साथियों की पारी चलती रहती थी। एक दिन जब मार्सेनीज के एक कील-कांटा बनाने वाले के बारे मे उसका मजाक उड़ाया गया तो वह बेहद नाराज हो उठी और बोली—'मेरी भी कोई इज्जत है। अगर कोई साबित करदे उसने खनिक को छोड़कर किसी अन्य के साथ मुझे देखा है तो मै अपनी बांह काट डालूँ।'

एक खनिक ने सिगूफा छोड़ा—'अब बड़े चवाल की पारी है? उस बेचारे ठिगने व्यक्ति को सीढ़ी का जरूरत पड़ती होगी। मैंने तुम्हें रिक्वीलां के पीछे देखा था। उसका सबूत यह है कि वह एक मोल के पत्थर पर खड़ा था।'

'अच्छा,' माकेटी ने मजाकिया लहजे मे कहा, 'तुझे इससे क्या लेना-देना है? तुझसे तो धक्का लगाने को नहीं कहा गया।'

और इस मजाक से खनिकों के कहकहे बढ गए, वे अपनी बाँहे फैलाते हुए झर्झरी की आंच के सामने हँसी से लोट-पोट होने लगे और वह स्वयं हंसते-हंसते बड़े भद्दे तरीके से अपने उभरे हुए मांसपिंडों को सँभालती हुई हास्यास्पद घबराहट का परिचय दे रही थी।

लेकिन यह हंसी-मजाक शीघ्र ही खत्म हो गया। माकेटी ने माहे को बताया कि फ्लोरेंस, बड़ी फ्लोरेंस, अब कभी काम पर नहीं आ पायेगी। वह पिछली रात अपने बिस्तर मे मरी पाई गई। कुछ लोगों का कहना है कि उसे दिल का दौरा आया और अन्य लोगों का मत है कि 'जिन' के एक पिंट को जल्दी गटक जाने से यह हुआ। माहे मायूस हो गया, यह दुर्भाग्य की दूसरी घटना हुई। उसकी एक बेहतरीन काम करने वाली पुटर तत्काल स्थान-पूर्ति का मौका दिये बगैर चली गई। वह एक सेट के रूप मे काम करता था। उसकी कटानों मे चार मलकट्टे—जाचरे, लेवक्यू, चवाल और वह स्वयं थे। अगर वे कोयला पहुँचने के लिए अकेली कैथराइन को छोड़ दें तो काम में बाधा पड़ेगी।

यकायक उसने पुकारा : 'ख्याल आया! वहाँ वह आदमी काम की तलाश करता मिला था।'

उसी क्षण डेनार्ट ओसारे के सामने से गुजरा। माहे ने उसे सारी बात बताई और उस व्यक्ति को रख लेने लिए उसकी अनुमति माँगी। उसके अंजिन कम्पनी

की भांति औरत के स्थान पर पुरुषों के रखे जाने की कम्पनी की इच्छा पर जोर दिया। पहले तो बड़ा कप्तान मुस्कराया क्योंकि खानों मे औरतों को अलग कर देने की योजना का खनिक विरोध करते थे। उन्हें नैतिकता और स्वास्थ्य की चिन्ता किये बगैर अपनी लड़कियों के निकाल दिये जाने की परेशानी थी। लेकिन कुछ झिझक के बाद उसने अनुमति दे दी और उसकी पुष्टि इंजीनियर निग्रीन से करा लेने को कहा।

'बहुत बढिया !' जाचरे बोला, 'अब तक तो वह व्यक्ति चला गया होगा।'

'नहीं', कैथराइन बोली। 'मैंने उसे बायलरों के पास ठहरते देखा है।'

'तब जा उसे बुला ला, सुस्त छोकरी।' माहे चिल्लाया।

लड़की आगे दौड़ी और खनिकों का गोल अन्य लोगों के लिए स्थान रिक्त करता हुआ कूपक की ओर बढा।

जॉली अपने पिता की राह देखे बगैर उस बडे बेवकूफ लड़के बीवर्ट और दस वर्षीया लायडी के साथ अपना लैंप लेने चला गया था। उनके सामने खड़ी माकेटी ने उन्हें अधियारे गलियारे में बुलाया और उन्हें 'गंदे चमगादड़' की गाली देते हुए धमकाया कि यदि उन्होंने उसे तंग किया तो वह उनके कान उमेठ लेगी।

लॉतिये, वास्तव में, बायलर वाली इमारत मे कोयला झोंकने वाले से बातें कर रहा था। जिस ठंड भरी रात में उसे लौटना पडेगा उसके विचार से वह बड़ा कष्ट-सा अनुभव कर रहा था। वह निकलने का इरादा ही कर रहा था कि उसने अपने कंधे पर किसी अजनबी हाथ को महसूस किया।

'आओ,' कैथराइन बोली; 'तुम्हारे लिए खुशखबरी है।'

पहले तो वह समझ नहीं पाया। फिर उसने अत्यधिक खुशी महसूस की और जोरों से उसने लड़की का हांथ दबाया।

'धन्यवाद, साथी। ओह ! तुम अच्छे लड़के हो, बडे अच्छे !'

आंच की रक्ताभ रोशनी मे, जिसमे वे दिखाई देते थे, वह उसकी ओर देखती हुई हँसने लगी। वह उसकी इस गलतफहमी का मजा ले रही थी कि वह उसे लड़का समझे है। उसके बालों की लट उसकी टोपी के नीचे छिपी थी। नवयुवक भी उसे देखता हुआ सन्तोष की हँसी हँस रहा था और एक क्षण को वे दोनो एक दूसरे को देखते हुए मुस्कराते रहे और आंच उनके चेहरों को सुर्ख बना रही थी।

माहे ओसारे में अपने बक्स के सामने बैठा हुआ अपने बूट और पुराने ऊनी मोजे उतार रहा था। लॉतिये के वहाँ पहुँचने पर तीन-चार शब्दों में ही बात तय हो गई : तीस सूज प्रति दिन मिलेंगे, मेहनत से काम करना होगा, काम वह आसानी से सीख सकेगा। मलकट्टे ने उसे अपने जूते रखने की सलाह देते हुए

उसके सिर के बचाव के लिए एक चमडे की टोपी उधार दी। यह एक बचाव था जिससे सभी, बाप से लेकर पुत्र तक, अपनी रक्षा करते थे। पेटी से औजार निकालते गए, वहीं फ्लोरेस का फावड़ा भी मिल गया। माहे उन लोगों के जूते-जुराब और लॉतिये का बंडल बन्द करने के बाद यकायक अधीर-सा हो उठा—

'वह गधा चवाल क्या कर रहा होगा? क्या पत्थरों के ढेर में दूसरी कोई लड़की मिल गई है? आज हमे आधा घंटा विलम्ब हो गया है।'

जाचरे और लेवक्यू चुपचाप अपने कंधे सेंक रहे थे। अगला अन्त में बोला—

'क्या तुम चवाल के लिए ठहरे हुए हो? वह हममे पहले आकर सीधे नीचे उतर गया।'

'क्या! तुम्हे यह मालूम था और तुमने बताया भी नहीं? चलो, चलो, जल्दी करो।'

अपने हाथो को सेंकती हुई कैथराइन को भी उनके पीछे-पीछे चलना पडा। लॉतिये ने उसे आगे जाने दिया और स्वयं पीछे हो लिया। पुनः उसे दुर्गम सीढियो और अंधकारपूर्ण गलियारो से गुजरना पड़ा जिसमे उसके नंगे पांव चलने मे पुराने स्लीपरों सी हल्की आवाज उत्पन्न हो रही थी। लैम्प-केबिन उजाले मे चमक रही थी। यह एक कांच का बना कमरा था जिसमे हुकों की कतारें बनी हुई थी। खान मे ले जाये जाने वाले डेवी-संरक्षण लेम्प पिछली रात से साफ कर, जाँच के बाद सैकड़ों की तादाद मे गिरजे की मोमबत्तियों की भाँति जल रहे थे। बाड़े मे खड़ा होकर प्रत्येक मजदूर अपने नम्बर लगे लैम्प को स्वयं उठाता, उसकी जाँच करता और पुनः उसे बन्द करता था जब कि एक टेबल के पास बैठा हुआ मार्कर रजिस्टर मे खान मे उतरने का समय दर्ज करता था। माहे को अपने नये पुटर के लिए लेम्प प्राप्त करने को रुकना पड़ा, दूसरी सावधानी यह भी बरती जाती थी कि मजदूरों को लाइन से एक जाँचकर्ता के सामने से गुजरना पड़ता था जो भली-भाँति देख लेता था कि सभी के लैम्प अच्छी तरह बन्द है।

कैथराइन बड़बड़ाई—'मार डाला! बला की ठंड है यहाँ।' वह काँप रही थी।

लॉतिये ने महज सिर हिलाकर ही सन्तोष किया। वह हवा के निरन्तर चलने वाले झोंकों मे भरे हाल के बीचों बीच कूपक के सामने था। वह अपने को हिम्मत वाला समझता था लेकिन ट्रमों की इस गड़गड़ाहट, संकेतकों की पोली चोटों, तुरही की गलाघोंट चीख, पूरी रफ्तार मे चलने वाले इंजन के चक्कों में तारों का निरन्तर लिपटना-खुलना और ऊपर-नीचे आना-जाना उसके दिल में अजीब-सी बेचैनी पैदा कर रहा था। रात्रिचर हिंस पशु की भाँति विचरण करते-से कटघरे प्रकट और अदृष्य होते थे। उनके गले के छेद मे हमेशा वे मनुष्यों को निगलते प्रतीत होते

थे। अब उनकी पारी थी। वह बहुत ठंडक महसूस कर रहा था लेकिन वह चुप्पी धारण किये रहा, इस पर जाचरे और लेवक्यू खीस निपोरने लगे। वे दोनों ही इस अज्ञात व्यक्ति का रख लिया जाना पसन्द नहीं करते थे, लेवक्यू विशेषकर इसलिए नाराज था कि उसकी सलाह नहीं ली गई थी। कैथराइन खुश थी कि उनका पिता नवयुवक को इस पेचीदा कार्यप्रणाली के बारे में समझा रहा है।

'देखो। कटघरे के ऊपर लोहे के दाँतों वाली छतरी लगी है जो टूटने की स्थिति में निदेशकों में फँस जाती है।'

'क्या यह काम करता है ?'

'ओह, हमेशा नहीं। हाँ, कूपक तीन भागों में विभाजित है : ऊपर से लेकर नीचे तक तख्तों से बंद; बीच में कटघरे, बाँई ओर सीढ़ियों के लिए मार्ग—'

उसके स्वतः बड़बड़ाने से बातचीत में बाधा पड़ी, वह बराबर यह ध्यान रखता था कि आवाज जोरों से न हो।

'हमें यहाँ क्यों रोका गया है ? इस प्रकार हमें ठंढ में मारने का उन्हें क्या अधिकार है ?'

कप्तान रिचोम ने जो स्वयं नीचे जा रहा था और जिसका खुला लैम्प कील से उसके टोप में जड़ा हुआ था, उसकी बात सुन ली।

'सावधान ! दीवारों के भी कान होते हैं।' उसने पैतृक प्रेम से कहा। वह पुराना खनिक था और साथियों के प्रति प्रेम भाव रखता था। 'मजदूरों को, जो कर सकते हैं अवश्य करना चाहिए। लो ! तैयार हो जाओ; अपने साथियों को लेकर बैठो।'

लोहे की छड़ों और छोटे-छोटे जाली के काम से युक्त कटघरा अर्गला में उनका इन्तजार कर रहा था। माहे, जाचरे और कैथराइन नीचे वाली ट्राम में बैठ गए। चूँकि पाँच को उसमें बैठना था, अपनी पारी आने पर लॉतिये ने देखा कि अच्छी जगहें सब भर चुकी हैं। उसे लड़की के बगल में सिकुड़ कर बैठ जाना पड़ा और जगह तनी कम थी कि लड़की की कोहनी उसके पेट में धँसी जा रही थी। उसके लैंप से उसे परेशानी हो रही थी और उन्होंने उसे अपनी जाकेट के बटन वाले छेद से बाँध लेने की सलाह दी। उनकी बात न सुन वह बेढंगे तौर से उसे हाथ में पकड़े था। ऊपर-नीचे जानवरों की तरह ट्रामों से खनिकों का ठूँसा जाना जारी था। अभी वे रवाना नहीं हुए थे। क्यों विलम्ब हो रहा है ? ऐसा प्रतीत होता था कि उसे इन्तजार करते बड़ी देर हो गई है। अन्तः में उसे एक झटका-सा लगा, रोशनी मद्धिम हो गई, उसे आसपास की हर चीज उड़ती-सी दिखाई दी और तेजी से नीचे गिरने की वजह से उसके पेट में अजीब-सी बेचैनी हो रही थी। यह सिलसिला तब तक रहा जब तक कि उसे रोशनी दिखाई देती थी। ऊपरी दो मंजिलें पार करने

के बाद हर चीज खान के अंधकार में डूब गई। वह अपने स्नायु और ज्ञानतन्तुओं से इस अनुभव का कोई स्पष्ट-सा अहसास नहीं कर पा रहा था और हक्का-बक्का रह गया था।

'अब हम रवाना हुए हैं', माहे ने धीरे से कहा।

सभी लोग आराम से बैठे हुए थे। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह ऊपर जा रहा है कि नीचे। जब कटघरा निदेशकों को छूए बगैर सीधा गिरता था तब तो ऐसा प्रतीत होता था कि वह स्थिर खड़ा है लेकिन समय-समय पर लगने वाले झटकों से जब कटघरा घरनों के बीच नाचता-सा था तब उसे किसी दुर्घटना का भय लगता था। वह जाली के काम के पीछे कूपक की दीवारों को नहीं देख पाता था। लैंप उसके पाँवों के पास बैठे मजदूरों को रोशनी पहुँचा रहे थे। सिर्फ पड़ोस में दूसरी ट्राम में बैठे कप्तान के खुले लैंप की रोशनी प्रकाश-स्तम्भ की भांति चमक रही थी।

'इसका व्यास चार मीटर है', माहे ने उसे बताया। 'पानी के निकास के लिए बने पीपों में मरम्मत की जरूरत हो गई है क्योंकि चारों ओर से पानी झर रहा है। सुनो! हम तल पर पहुँच रहे है। तुम्हें कुछ सुनाई देता है?'

वास्तव में, लॉतिये की समझ में इस तरह पानी के गिरने का रहस्य नहीं आ रहा था। पहले-पहल कटघरे की छत पर वर्षा के शुरू होने की भाँति चंद बूंदें गिरने की आवाज हुई। फिर वर्षा बढ़ गई और छत से पानी नीचे गिरने लगा था। छत में जरूर छेद होंगे क्योंकि पानी की एक लीक उसके कंधे पर चू कर उसके शरीर को भिगो रही थी। ठंड बर्फीली हो चली थी और वे इस काली आर्द्रता में दबे जा रहे थे। यकायक क्षणिक प्रकाश में लोगों का एक कारवाँ-सा गुजरता दीखा और पुनः सघन अंधकार छा गया।

माहे बोला—'यह पहला मुख्य तल है। हम तीन सौ बीस मीटर पर हैं। जरा रफ्तार तो देखो।'

उसने अपना लैंप ऊंचा करते हुए निदेशिका की बल्ली दिखाई जो पूरी रफ्तार से चलने वाली ट्रेन के नीचे से भागती नजर आ रही थी और उसके परे, पहले की ही तरह, अंधकार ही अंधकार था। प्रकाश की एक झलक के साथ उन्होंने तीन तल और पार किये। बहरा बना देने वाली वर्षा की आवाज निरंतर अंधकार से आ रही थी।

'कितना गहरा होगा यह?' लॉतिये बुदबुदाया।

ऐसा महसूस हो रहा था कि वह घंटों से गिरता चला आ रहा है। वह सिकुड़ कर तकलीफदेह स्थिति में बैठा हिलने-डुलने का साहस न कर पा रहा था, कैथ-

राइन की कोहनी से उसे विशेष असुविधा हो रही थी। वह एक शब्द भी न बोली; वह उसे अपनी बगल में महसूस कर रहा था और इससे उसे गरमी मिल रही थी। आखीरकार कटघरा पाँच सौ चौवन मीटर की गहराई पर पेंदे पर, रुका। उसे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि नीचे उतरने में ठीक एक मिनट लगा था। अर्गलाओं के शब्द से वे स्थिर हो गए, नीचे किसी ठोस वस्तु के एहसास से वह यकायक प्रफुल्लित हो उठा। उसने कैथराइन से मजाक किया—

'तुम्हारे शरीर में ऐसी वस्तु क्या है जो इतनी गरम है ? तुम्हारी कोहनी मेरे पेट से धँसी हुई थी।'

वह भी ठहाका मार कर हँस पड़ी। कितना बेवकूफ है। यह उसे लड़का समझे है ! इसके आँखे नहीं हैं क्या ?

'तुम्हारी आँख में मेरी कोहनी धँसी हुई थी !' वह बोली, फिर जोरों से हँस पड़ी।

कटघरे ने मजदूरों का बोझ उतारा और वे चट्टान को काट कर बनाये गए बड़े हाल से गुजरे जिसमें शहतीर की लकड़ी के तीन मेहराब बनाये गए थे। यहाँ तीन बड़े लैंपों से रोशनी की गई थी। लोहे के फर्श पर कुली भरी हुई ट्रामें लुढ़काते हुए बेहद शोर मचाये हुए थे। दीवारों से निकलने वाली शोरे की गंध के साथ आसपास अस्तबल की बदबू मिली हुई थी। यहाँ से चार गलियारों को रास्ता फटता था।

'इस ओर' माहे ने लॉतिये से कहा—'अभी हम नहीं पहुँचे। अभी दो किलोमीटर और चलना होगा।'

मजदूर सब जुदा-जुदा होकर टुकड़ियों में इन काले छेदों की गहराइयों में खो गए। लगभग पन्द्रह का गोल बाईं ओर चला गया और लॉतिये सब से आखीर में माहे के पीछे-पीछे चला और उसके आगे कैथराइन, जाचरे और लेवक्यू थे। यह वैगनों के लिए ठोस चट्टान को काट कर बनाया गया एक बड़ा गलियारा था, जिसमें यहाँ-वहाँ कुछ मरम्मत की जरूरत थी। एक कतार में वगैर बोले-चाले वे अपने छोटे से लैंपों के प्रकाश में बढ़े जा रहे थे। नवयुवक प्रत्येक कदम पर ठोकर खाता और पटरियों में अपने पाँव फँसा लेता था। एक क्षण को, कहीं दूर आने वाले तूफान की भाँति एक आवाज से उसे हैरत हुई; आवाज तेज होती जा रही थी। ऐसा प्रतीत होता था कि वह धरती की आँतों से आ रही है। तब क्या यह जमीन धँसने की कड़क है जो कि उन्हें प्रकाश से वंचित करने वाले विशाल शिलाखंड को उनके सिर पर गिरा देगी ? एक चमक सी अँधेरे को चीरती हुई दिखाई दी। उसे महसूस हुआ कि चट्टान

काँप रही है और जब वह अपने साथियों की ही तरह दीवार से लग गया तो उसने अपने चेहरे के पास वैगनों की एक ट्रेन खींचते हुए एक कद्दावर सफेद घोड़े को देखा। पहली वैगन में, रास पकड़े हुए बीचर्ट बैठा था जब कि जॉली आखिरी वैगन के किनारे से हाथ बाँधे नंगे पाँव पीछे दौड़ रहा था।

उन्होंने ने फिर चलना शुरू किया। कुछ दूर बढ़ने पर एक चौराहा मिला जहाँ दो नये गलियारे खोले गये थे और मजदूर फिर बंट गए। खनिक धीरे-धीरे सभी गलियारों के स्टालों में प्रविष्ठ हो रहे थे।

अब वैगन वाला गलियारा लकड़ी का बना था। लट्ठों के थूम छत को सहारा दिये थे और काटी गई चट्टान मचानों का एक स्क्रीन मालूम पड़ती थी। जिसके पीछे अभ्रक की चमकीली परतें और खुरदुरे बालुआ पत्थर के घच्चे दिखाई देते थे। खाली या भरे हुए टबों की ट्रेनें बिजली की कड़क का सा शब्द करती हुई एक दूसरे के पास से गुजर रही थीं और उन्हे खींचने वाले जानवरों की धुंधली छाया प्रेतों की तरह लगती थी। शंटिंग लाइन के दूहरे रेलपथ पर एक ट्रेन खड़ी थी और हाँपते हुए घोड़े की दुमची छत से गिरे एक शिलाखंड की भाँति लगती थी। संवातन के लिए बने द्वार धीरे-धीरे खुलते और बन्द होते थे। ज्यों-ज्यों वे आगे बढ़ते गये गलियारा अधिक सँकरा और नीचा होता गया। असंबद्ध छत के कारण उन्हे बराबर गर्दन और पीठ झुकाये रहना पड़ता था।

लॉतिये का सिर जोरों से टकराया और यदि टोपी न होती तो उसका भेजा खुल जाता। वह बड़े ध्यान से माहे की छोटी-छोटी बात का अनुकरण कर रहा था, जिसकी धुंधली छाया लैम्पों की टिमटिमाहट में दिखाई देती थी। किसी के भी चोट नहीं आई क्योंकि हर मजदूर प्रत्येक घुच्चे, लकड़ी की हर गाँठ या चट्टान के प्रत्येक उभार से परिचित था। युवक को फिसलन वाली मिट्टी से भी परेशानी हो रही थी और वहां की नमी बराबर बढ़ती जाती थी। कभी-कभी कीचड़ मिलती थी जिसका अहसास उसको पाँव के छपाके से होता था। उसे सबसे अधिक हैरत यकायक तापमान के बदलाव से थी। कूपक के पेंदे पर ताजगी थी, वैगन गलियारे, में जहाँ से खान की तमाम हवा गुजरती थी, संकरी दीवारों के बीच तूफान की गति से बर्फीली हवा चलती थी। बाद में जब वे अन्य मार्गों से गहरे घुसते चले जाते थे गर्मी बढ़ती जाती थी और यह उमस वाली गर्मी बेचैनी पैदा करती थी।

माहे चुपचाप दाँई ओर दूसरे गलियारे की ओर मुड़ा और उसने पीछे देखे बगैर लॉतिये से कहा—

'गुइलॉ संधि।'

यह वह संधि थी जहाँ उनकी कटान थी। पहले ही कदम में लॉतिये के सिर

और कोहनी में चोट आई। ढालवाँ छत इतनी नीची हो गई थी कि बीस या तीस किलोमीटर तक उसे लगातार उकड़ूं चलना पड़ा। पानी उसके टखनों तक चढ़ आया था। इसके दो सौ मीटर बाद उसने सामने खुली एक दरार में लेवक्यू, जाचरे और कैथराइन को इस प्रकार अदृश्य होते देखा, मानो वे उड़ गए हों।

'हमें चढ़ना है,' माहे बोला। 'अपना लैंप बटन के छेद में बाँध लो और भूल जाओ।' वह स्वतः गायब हो गया था और लॉतिये को उसके पीछे जाने की मजबूरी थी। संधि की बाँई ओर यह चिमनी-मार्ग खनिकों के लिए रिजर्व था जो सभी उप-मार्गों को जाता था। यह मुश्किल से साठ सेंटीमीटर होगा। सौभाग्य से युवक दुबला पतला था। क्योंकि अभी नया होने पर भी वह पुट्ठों को फैलाता, कलाइयों पर वजन देता तख्तों पर झूलने लगा। पन्द्रह मीटर ऊपर वे पहले उप-मार्ग पर आये लेकिन उन्हें और आगे बढ़ना था क्योंकि माहे की कटान और उसके साथी छठे उप-मार्ग पर थे जिसे वे 'नरक' की संज्ञा देते थे। हर पन्द्रह मीटर पर उप-मार्ग एक दूसरे के ऊपर कभी समाप्त न होने वाली चढ़ाई पर थे। लॉतिये कराहा मानो चट्टानों के वजन ने उसके अवयवों को कुचल डाला हो। जख्मी हाथों और खुरचे हुए पाँवों में वह भी हवा की कमी से घुटन महसूस कर रहा था। ऐसा प्रतीत होता था कि खून उसकी धमनियों से फूट पड़ेगा। उसने अस्पष्ट रूप से एक उप-मार्ग में दो झुके हुए जानवरों को—एक बड़ा एक छोटा—काम पर जुटे देखा। वे कोई और न होकर लायडी और माकेटी थे। उसे दो कटानों की चढ़ाई और तय करनी थी। पसीने से वह बुरी तरह पस्त था। उसे चट्टान के पास से किसी की आवाज सुनाई दी।

'चले आओ!' यह कैथराइन की आवाज थी। वह, दर असल, पहुँच गया था। नीचे वाली कटान से एक दूसरी आवाज आई —

'अच्छा, साथियों से व्यवहार का यही तरीका है? मैं मोंटसू से दो किलोमीटर पैदल आया फिर भी सबसे पहले मैं यहाँ पहुँचा।' यह चवाल था। वह पच्चीस वर्ष का लम्बा, दुबला - पतला और बलिष्ठ चेहरे-मोहरे वाला व्यक्ति था। इन्तजारी की वजह से वह खीझा हुआ था। लॉतिये को देख घृणायुक्त आश्चर्य में उसने पूछा—'यह कौन है?'

जब माहे ने सारी बात बताई तो वह बड़बड़ाया—'यह लोग लड़कियों की रोटी छीन रहे है।'

दोनों की देखा-देखी हुई और अनायास ही उत्पन्न होने वाली घृणा से दोनों भर उठे। बात समझे बगैर ही लॉतिये अपनी बेइज्जती महसूस कर रहा था। समस्त कटानें भर चुकी थीं। हर तल में प्रत्येक मार्ग, उप-मार्ग के सिरे पर काम

चालू हो चला था। कूपक अपनी दैनिक खुराक पा चुका था। लगभग सात सौ हाथ इस विशाल बांबी को खोद रहे थे। वे हर जगह धरती में छेद बनाते हुए घुन की खाई पुरानी लकड़ी की भांति उसे खुरच रहे थे। गहरी खामोशी में किसी चट्टान से कान लगा कर सुनने पर मजदूरों के काम करने, संदासों के ऊपर-नीचे आने-जाने, स्टालों के छोर पर में औजारों द्वारा कोयला काटने की आवाजें सुनाई देती थीं। लॉतिये ने घूमने पर अपने को कैथराइन की बगल मे पाया। उसने कैथराइन के विकसित होने वाले उरोजों के घिराव की झलक देख ली थी और यकायक उसकी समझ में उस गरमी का मतलब आया।

'तब तुम लड़की हो,' वह बोला।

'निस्संदेह, तुम्हें यह समझने में समय लगा।' कैथराइन अपने सहज स्वभाव से बोली।

४

चारों मलकट्टे एक दूसरे के ऊपर समूची कटान मे फैल चुके थे। गिरे हुए कोयले को रोकने के लिए बनाई गई तख्तों की आड़ मे प्रत्येक चार मीटर संधि (सीम) घेरे हुए थी और इस स्थान पर जहाँ वे खोद रहे थे सधि की मोटाई बमुश्किल पचास सेंटीमीटर थी। दीवारों और छत के बीच लम्बे लेटे हुए वे कुहनियों और घुटनो के बल सरक रहे थे। कोयला काटने के लिए उन्हे एक करवट लेट कर अपने हाथ उठाने होते थे और ढाल की दिशा मे वे अपनी छोटे हत्थों वाली छेनिया चला रहे थे।

सब से निचली मंजिल पर जाचरे था। उसके बाद की मंजिलो पर क्रम से लेवक्यू और चवान। उपरी सिरे पर माहे काम लगाये हुए था। हर एक अपनी छेनी से सलेटी कोयला काट-काट कर गिरा रहा था। कोयला अच्छे किस्म का था। जब भी उसका कोई खड कटता तो उसके छोटे-छोटे टुकडे उनके पेट और जांघों पर आ गिरते थे। जब तख्तों की आड़से घिरे स्थान पर कोयले के छोटे-बड़े टुकड़ोंका ढेर लग जाता तो छेनी चलाने वाले सँकरी सुरंगों के बीच दबे अदृष्य हो जाते थे।

उपरी सिरे पर माहे की कटान का तापमान पैंतीस डिग्री था और यहां हवा मे इतनी घुटन थी कि उसे काम मे बड़ी असुविधा महसूस हो रही थी। वह भली भांति देख सके इसलिए उसने एक कील के सहारे अपने लैंप को अपने सिर के पास टांग दिया था जो उसे और भी गरमी पहुँचा रहा था। परन्तु नमी की वजह से उसको राहत मिल रही थी। उपर, उसके मुँह से कुछ ही सेंटीमीटर दूर चट्टान मे पानी की धारा गुजरती थी और उसकी बड़ी-बड़ी बूदें टप-टप की आवाज करती

हुई एक निर्दिष्ट स्थान पर गिरा करती थीं। अपने चेहरे को बूंदों से बचाने के लिए इधर-उधर फेरना या गर्दन घुमाना उसके लिए व्यर्थ था। बड़ी-बड़ी बूंदें लगातार उसके चेहरे पर गिर रही थी और पन्द्रह मिनट में ही वह पानी और पसीने से सराबोर किसी लांड्री से निकलने वाली भाप के सदृश्य दीख रहा था। आज प्रातःकाल उसकी आँख में एक किरकरी गिर जाने से उसकी आँख दुखने लगी थी। वह पूरे जोर से छेनी चला रहा था जिससे वह चोट करते समय समूचा हिल उठता था। उसकी हालत दो चट्टानों की इस सँकरी परत के बीच ठीक वैसी ही थी जैसी कि किताब के दो पन्नों के बीच पकड़े गए किसी पंतिंगे की, जिसे बराबर पिस जाने का डर बना रहता है।

सभी चुपचाप छेनियाँ चला रहे थे। हवा के दबाव से कोयले की परत पर पड़ने वाली छेनी की असंबद्ध चोटों की आवाज रह-रह कर सुनाई दे रही थी जिसकी कोई भी प्रतिध्वनि हवा में नहीं गूंजती थी। ऐसा प्रतीत होता था कि उड़ते हुए कोयले की धूल का घनत्व आँखों पर दबाव डालने वाली गैस में मिलकर अंधकार को और भी गहरी कालिमा का रूप दे रहा हो। उनके टोपों के सिरे पर बने धातु के जाल के नीचे उसके लैंप की रोशनी सिर्फ एक लाल निशान के रूप में दिखाई दे रही थी। यह कटान एक बड़ी चिमनी की भाँति सपाट और तिरछी काटी गई थी जिसमें दस वर्षों की कालिख ने गहन रात्रि बना रखी थी। अस्पष्ट प्रेत-छायायें इसमें इधर-उधर घूम रही थीं और रोशनी की झलक में उनके घिरावदार कूल्हों, मजबूत बाह, ठोस सिर की झलक कभी-कभी दिखाई देती थी तब ऐसा प्रतीत होता था कि वे किसी जघन्य अपराध के लिए तुले हुए हों। कभी-कभी कोयले के बड़े-बड़े टुकड़े शिलाखंड से अलग होते समय एक चमक दिखाते, उसके बाद पुनः सभी कुछ अंधकार में डूब जाता। छेनियों से बड़ी-बड़ी चोटें की जा रही थीं और इस घुटन और पानी की बौछार के बीच कभी-कभी किसी के कराहने, किसी के असुविधा की शिकायत करने और किसी के थकान के स्वरों के अलावा सर्वत्र मरघट की शांति थी।

जाचरे ने पिछली रात के नाच रंग से थके होने के कारण इस बहाने काम छोड़ दिया कि और तख्ते लगाना जरूरी हो गया है। वह छाया में आराम करते हुए सीटी बजाने लगा। उसके पीछे लगभग तीन मीटर संधि एकदम साफ थी और अभी तक उन्होंने उसमें थूम बाधने का रक्षात्मक कदम नहीं उठाया था क्योंकि वे खतरे के प्रति लापरवाह और समय के कंजूस हो गए थे।

नवयुवक ने लाँतिये को संबोधित करते हुए कहा, 'सुनो! कुछ तख्ते तो उठा लाओ।'

लॉतिये कैथराइन से फावड़ा सम्भालना सीख रहा था। उसे कटान के लिए कुछ तख्ते उठाने पड़े। पिछली रात से वहाँ थोड़ी लकड़ी बची थी क्योंकि प्रतिदिन सुबह कटान में लगाने के लिए तख्ते काटकर नीचे भेजे जाते थे।

जाचरे चिल्लाया—'बेवकूफ जल्दी कर,' क्योंकि वह देख रहा था कि नया मजदूर ओक की लकड़ी की चार शहतीरें अपने हाथों में लिए असमंजस की स्थिति मे कोयले के ढेर के बीच खड़ा है।

उसने अपनी छेनी से एक छेद छत मे बनाया और दूसरा दीवार में और शहतीर के दो छोरों को उसमें फंसा कर चट्टान को आड़ लगा दी। दोपहर मे जमीन काटने वाले मजदूरों ने गलियारे मे मलकट्टे द्वारा इकट्ठा किये गए कूड़े को साफ कर संधि के उस हिस्से को साफ कर दिया था जहां से कोयला निकाला जा चुका था, परन्तु इस सफाई मे उन्होंने कर्षण की ऊपरी और निचली सड़कों का ही ध्यान रखा था और लकड़ी को नष्ट कर डाला था।

माहे का कराहना बंद हुआ। अन्त मे उसने कोयले के एक बड़े टुकड़े को चट्टान से अलग कर डाला और वह पसीने से लतपथ अपने चेहरे को अपनी बांह से पोंछ रहा था। उसे परेशानी हो रही थी कि जाचरे उसके पीछे क्या कर रहा है।

उसने पुकारा—'इसे रहने दो। दोपहर के भोजन के बाद देखा जायगा। अगर ट्राम भरना चाहते हो तो बेहतर होगा कि कोयला तोड़ने जाओ।'

'इसलिए यह सब कर रहा हूँ कि यह धंस रहा है।' नवयुवक ने उत्तर दिया। 'देखो, वहाँ दरार आगई है। चट्टान कभी भी धँस सकती है।'

'आह! बेवकूफी!' बाप ने नाराजी से कंधे उचकाये। 'और अगर ऐसा हो भी गया तो क्या यह पहली बार होगा; हम सब सही-सलामत इससे निकल आयेंगे।' अन्त मे उसने नाराज होकर अपने लड़के को कटान के आगे वाले हिस्से मे भेज दिया।

अब सभी मलकट्टे लम्बे लेट कर काम कर रहे थे। लेवक्यू अपनी पीठ के बल लेटा गालियाँ बक रहा था क्योंकि बालुआ पत्थर के एक टुकड़े के उसके बायें अँगूठे पर गिर जाने से उसे चोट आ गई थी। चवाल ने गुस्से मे अपनी कमीज उतार फेंकी थी और वह ठंडक पाने के निमित्त नंग-धड़ंग काम कर रहा था। वे सभी कोयले से काले हो गए थे। नीचे की मंजिल मे माहे अपने सिर के ऊपर की चट्टान को तोड़ने के लिए हथौड़ी चला रहा था। अब बूंदें उसके माथे पर इतनी तेजी से गिर रही थीं कि उसे वह उसके भेजे की हड्डियों मे छेद करती प्रतीत होती थीं।

कैथराइन ने लॉतिये से हमदर्दी जाहिर की—'तुम्हें इनकी परवाह नहीं करनी चाहिये। यह लोग हमेशा भौंकते रहते हैं।'

एक अच्छे स्वभाव की लड़की की तरह वह अपना काम करती रही। हर भरी हुई ट्राम उसी हालत में कटान के सिरे पर पहुँचाई गई जैसी वह कटान में भरी गई थी। उसमें एक विशेष धातु का विशेष निशान अंकित था ताकि रिसीवर उसे भरने वाले स्टाल का उत्पादन दर्ज कर सके। इसलिए यह और भी जरूरी समझा जाता था कि उसे सावधानी से चुन-चुनकर साफ कोयले से भरा जाय अन्यथा रिसीवर-कार्यालय में उसे लेन में इन्कार कर दिया जाता था।

नवयुवक ने, जिसकी आँखें अब अंधेरे में अभ्यस्त हो चली थीं, लड़की की ओर देखा जो अब भी पीलिया के पैतृक रोग के बावजूद गोरी लग रही थी। वह उसकी उम्र का अन्दाजा नहीं लगा पा रहा था और उसका ख्याल था कि वह बारह वर्ष से ज्यादा की नहीं होगी क्योंकि वह देखने में वैसी ही लग रही थी। परन्तु बाद में उसे लगा कि उसकी उम्र ज्यादा है। .उसकी लड़कों-सी स्वतंत्रता से लॉतिये को कुछ हिचक सी हो रही थी। लड़की की ओर उसका स्वभावगत आकर्षण नहीं हुआ। उसके पीले चेहरे में वह रोगिणी सी लग रही थी। सबसे अधिक आश्चर्य उसे इस लड़की की शक्ति को देखकर हुआ जिसमें शक्ति के साथ-साथ कौशल भी था। वह अपनी ट्राम लॉतिये से भी फुरती से भर ले रही थी और बाद में उसे एक ही धक्के में धीरे से धकेलती हुई बिना हिचक के सहज ही निचली चट्टानों के नीचे से निकाल ले जाती थी जब कि वह बेतहाशा ताकत लगा रहा था जिससे बार-बार ट्राम पटरी से नीचे उतर जाती थी और वह परेशान हो गया था।

निस्सन्देह मार्ग सुगम नहीं था। कटान से ऊपर के लिए माल पहुँचाने के स्थान तक साठ मीटर का फासला था और रास्ते को जमीन काटने वाले मजदूरों ने अभी चौड़ा नहीं किया था। रास्ता महज एक लम्बी नली के माफिक था जिसमें जगह-जगह घुच्चे उठे हुए थे और उसकी छत स्थान-स्थान पर फूली हुई थी। कई स्थानों पर तो सिर्फ भरी ट्राम ही गुजर सकती थी; पुटर को सिर की चोट बचाने के लिए घुटनों के बल रेंगना पड़ता था। अलावा इसके छत की लकड़ी भी झुक गई थी और जवाब दे रही थी। इधर से गुजरने में बड़ी सावधानी बरतनी पड़ती थी, अन्यथा कभी भी उससे कुचल जाने का भय बना रहता था।

कैथराइन हँसते हुए बोली—'फिर'।

अबकी बार लातिये की ट्राम एक पेचीदा स्थान पर पटरी से उतर गई थी। वह नम जमीन में डूबी पटरियों पर सीधे ट्राम नहीं चला पा रहा था। उसे गुस्सा चढ़ आया और वह बड़बड़ाता हुआ पहियों से उलझ गया परन्तु भरसक कोशिश के बावजूद वह उन्हें स्थान पर न ला सका।

लड़की बोली—'थोड़ा ठहरो, अगर तुम गुस्से में काम करोगे तो यह कभी ठीक न हो पायेगा। कुशलतापूर्वक वह ट्राम के नीचे चली गई और उसने अपने कूल्हों पर जोर डालते हुए उठाने की कोशिश की। इस कोशिश से ट्राम पुनः पटरी पर आ गई। इसका वजन सात सौ किलोमीटर था। आश्चर्य और शर्मिन्दगी जाहिर करते हुए वह बहाना बनाने लगा।

लड़की ने उसे बताया कि गलियारे के दोनों ओर तख्तों का सहारा लेने के लिए वह किस प्रकार अपनी टाँगें चलाये, किस प्रकार वह शरीर को झुकाये और किस प्रकार हाथों और कूल्हों पर जोर डालते हुए ट्राम धकेले। इस खेप (दौर) में वह बड़ी तवज्जो के साथ लड़की के काम का तरीका देखता गया और उसका अनुसरण करता गया। लड़की अपनी मुट्ठियाँ बाँधे इतनी झुक गई थी कि वह सरकस के जानवरों की भाँति अपने चारों हाथ-पाँवों से रेंगती मालूम पड़ रही थी। परिश्रम से उसे पसीना छूट रहा था, उसके जोड़ चटख रहे थे, परन्तु उसके मुँह पर शिकायत का शब्द नहीं था। वह इस प्रकार काम कर रही थी मानो दुहरे होकर काम करना यहां का सामान्य नियम हो। परन्तु लॉतिये उतना काम करने में समर्थ न हो सका। उसका पाँव उसे तकलीफ़ दे रहा था, बराबर सिर झुकाये इस प्रकार चलते रहने से उसे शरीर टूटता मालूम हो रहा था। कुछ मिनटों के बाद यह स्थिति उसे असहय पीड़ाजनक बन गई। उसे इतना कष्ट हो रहा था कि वह एक क्षण के लिए सुस्ताने और कमर सीधी करने के लिए खड़ा हो गया।

ऊपरी भाग में और भी काम था। लड़की ने उसे जल्दी ट्राम भरना सिखाया। इस झुके हुए चौरस जमीन के सिरे और तल में एक ब्रेकमैन ऊपर और रिसीवर नीचे रहता था। और बारह से पन्द्रह वर्ष की उम्र तक के यह ट्रामर छोकरे-छोकरियाँ एक-दूसरे को जोर-जोर से भद्दी गलियाँ बका करते थे। उन्हें सचेत करने के लिए यह जरूरी होता था कि और जोर-जोर से चिल्लाया जाय। तब ज्योंही एक ट्राम वापस भेजने के लिए खाली हो जाती थी तो रिसीवर सिगनल देता था और पुटर लड़की अपनी ट्राम चढ़ाती थी जिसके भार से ब्रेकमैन के ब्रेक ढीला करने पर दूसरी चढ़ती थी। नीचे, तल वाले गलियारे में ट्रामों की ट्रेन लगती थी जिसे घोड़े खींचकर कूपक तक ले जाते थे।

चढ़ाई का रास्ता तय करते हुए लगभग सौ मीटर लम्बे तख्तों के रास्ते में कैथराइन ने आवाज दी 'दुष्ट, शैतानो तुम कहां हो ?'

ट्रामर जरूर कहीं आराम ले रहे होंगे क्योंकि उनमें से किसी ने भी प्रत्युत्तर नहीं दिया। सभी तल्लों में कर्षण बंद हो गया था। अन्त में एक लड़की की तीखी आवाज आई, जरूर उनमें से एक माकेटी पर सवार होगा।

वहाँ जोरों से कहकहे लगे और उस संधि के समस्त पुटरों ने अपने कंधे उचकाये।

लॉतिये ने कैथराइन से पूछा—'यह कौन है ?'

इसका नाम लायडी था जो इस छोटी-सी उम्र में ही बहुत-कुछ जानने लगी थी। अपनी गुड़िया जैसे हाथों से वह एक युवती की भाँति मजबूती से अपनी ट्राम खींचती थी। जहाँ तक माकेटी का सवाल था वह दोनों ट्रामरों को एक साथ सम्भालने की क्षमता रखती थी।

माल चढ़ाने के लिए रिमीवर चिल्लाया। नीचे इसी समय एक कप्तान गुजर रहा था; सभी नौ लेवलों में पुनः कर्षण शुरू हो गया। ट्रामरों के लगातार पुकारने की आवाजों, पुटरों के हाँफते हुए ट्रामों को धकेलते हुए चौरस ज़मीन तक पहुँचाने के शब्द के अलावा और कुछ भी नहीं सुनाई देता था। यह पुटर ज्यादा बोझ से लदी घोड़ी की तरह पसीने से तर रहती थीं। यह खान के पशुवत जीवन का एक सामान्य अंग था कि जब कभी कोई पुरुष इन लड़कियों में से किसी को भी देखता, जो कि अपने पार्श्व के माँसल भाग को ऊंचा उठाये हुए अपने चारों हाथ-पावों से रेंगतीं और जिनके नितम्ब उनकी लड़कों वाली जाँघिये के बाहर निकले पड़ते थे, तो उसका पौरुष जाग उठता था।

प्रत्येक स्तर में लॉतिये ने कटान की घुटन में छेनियों की पोली और मंदी आवाजें, काम के दौरान में मलकट्टों के कराहने और लम्बी साँसें लेने के शब्द सुने। चारों मलकट्टे एड़ी-चोटी तक कोयले और पसीने से सराबोर नग-धड़ंग काम कर रहे थे। एक मौके पर माहे को, जो कि बुरी तरह हाँफ रहा था, तख्ते हटा कर छुड़ाना आवश्यक हो गया था ताकि कोयला उसके ऊपर न आ कर मार्ग में गिरे। जाचरे और लेवक्यू गुस्से में भरे हुए कोयला काट रहे थे क्योंकि अब सस्त चट्टान मिलने लगी थी और कम काम होने से उनका नुकसान था। चवाल एक क्षण के लिए लेटे-लेटे मुड़ा और लॉतिये को, जिसकी उपस्थिति उसे उत्तेजित कर रही थी, कोस रहा था—'कीड़ा कहीं का, एक लड़की के बराबर भी दम नहीं है। अपना टब क्यों नहीं भरता ? अगर तेरी वजह से एक भी ट्राम इन्कार की गई और हमारा दस सू का नुकसान हुआ तो फिर देखना।'

लॉतिये प्रत्युत्तर नहीं देना चाहता था। वह खुश था कि उसे दण्डित अपराधी का सा यह काम मिला है और एक मास्टर-मजदूर द्वारा एक मजदूर के प्रति इस प्रकार का निर्दयतापूर्ण व्यवहार उसे मंजूर था। वह अधिक चलने में असमर्थ था, उसके पाँवों से खून निकल रहा था और उसके अवयव बहुत ज्यादा थक गये थे, उसका शरीर एक लोहे के पिंजरे में कसा मालूम पड़ रहा था। सौभाग्यवश प्रातः

काल दस बजे का समय हो गया था और उस स्टाल के मजदूरों ने नाश्ता करने का निश्चय किया।

माहे के पास घड़ी थी परन्तु उसने उसे देखा भी नहीं। इस गुफा की तारा-विहीन रात्रि से वह कभी भी पाँच मिनट को बाहर नहीं निकलता था। सभी ने अपनी कमीज और जाकेट पहन ली। तब, कटानों मे नीचे उतरते हुए वे अपनी कुहनियाँ अलग-बगल डाले और नितम्बों को टखनों के बल टिकाये बैठ गये। इस प्रकार बैठने के यह खनिक इतने अभ्यस्त हो गये थे कि खान के बाहर भी वे ऐसा ही करते थे और वे बैठने के लिए किसी पत्थर या लकड़ी के लट्ठे की जरूरत नहीं समझते थे। उन लोगों ने अपना-अपना नाश्ता निकाल लिया और रोटी के मोटे-मोटे टुकड़ों को गंभीरता के साथ चबाने लगे। यदा-कदा वे प्रातःकाल के काम के बारे में बातें भी करते जाते थे। कैथराइन अब तक खड़ी थी। अन्त मे वह भी लॉतिये के पास आकर बैठ गई जो उस झुंड मे कुछ दूरी पर रेल की पटरी के पार तख्तों के सहारे अपनी कमर के बल लेटा हुआ था। वह स्थान लगभग सूखा था।

अपनी रोटी हाथ मे लेकर उसे मुँह मे काटते हुए कैथराइन ने पूछा—'तुम नहीं खाओगे?' तब उसे स्मरण आया कि यह युवक बगैर एक 'सू' के रात्रि में भटकता रहा है। शायद है उसके पास रोटी का एक टुकड़ा भी न हो।

'क्या तुम मेरे साथ हिस्सा बटाओगे?'

और नवयुवक ने यह कह कर कि मुझे भूख नही है हिस्सा बँटाने से इन्कार कर दिया जब कि उसका स्वर भूख की ज्वाला से काँप रहा था। प्रसन्न मुद्रा में वह बोली—'आह! तुम्हें मनाना कठिन मालूम पड़ता है। लेकिन अगर तुम चाहो तो मैंने सिर्फ इस ओर से काटा है। मैं इस दूसरी ओर का तुम्हे दूँगी।'

वह अपनी रोटी और मक्खन दो हिस्से से बाँट चुकी थी। नवयुवक ने अपना आधा हिस्सा लेते हुए उसे एकदम निगल जाने से अपने आप को रोका और अपनी बाँहे अपनी जाँघों मे रख लीं ताकि वह उसका कंपन न देख सके। अच्छे कामगार साथी के भाव से वह पेट के बल उसकी बगल मे लेट गई और एक हथेली ठोड़ी के नीचे लगाते हुए दूसरे हाथ से धीरे-धीरे रोटी खाने लगी। उन दोनों के बीच मे रखे हुए उनके लैंप उनके चेहरों पर प्रकाश डाल रहे थे।

कैथराइन एक क्षण के लिए चुपचाप उसकी ओर निहारती रही। उसके नाजुक चेहरे और काली मूँछों में युवक उसे चित्ताकर्षक प्रतीत हुआ और वह खुशी से मुस्कराई।

'तब तुम एक इंजन-ड्राइवर हो, और उन्होंने तुम्हे तुम्हारी रेलवे से निकाल दिया। लेकिन क्यों?'

'क्योंकि मैंने अपने बड़े अधिकारी को मारा।'

वह आश्चर्य चकित और स्तब्ध हो गई क्योंकि उसके विचार पीढ़ी दर पीढ़ी हुक्म की पाबंदी और बिना किसी शिकायत के दूसरों के मातहत काम करने के थे।

वह बतलाने लगा—'मैं पीता था और जब मैं पी लेता हूँ तो पागल हो जाता हूँ। उस समय मैं अपने को निगल सकता हूँ और दूसरों को भी निगल सकता हूँ। हाँ; और मैं अगर दो छोटे ग्लास भी पी लूँ तो मेरी इच्छा किसी को मार डालने की होती है। तब मैं दो दिन बीमार पड़ जाता हूँ।'

वह संजीदगी से बोली—'तब तुम्हें नहीं पीना चाहिए।'

'आह, घबराओ नहीं, मैं अपने को जानता हूँ।'

और उसने अपना सिर हिलाया। वह पियक्कड़ों की पीढ़ी के आखिरी बच्चे की भाँति ब्रांडी से नफरत करता था। अलकोहल में डूबे हुए, पागल उसके वंशजों ने उसके शरीर में वह नशा भर दिया था कि थोड़ी सी शराब उसके लिए जहर का काम करती थी।

'अपनी माँ की वजह से मैं दर-दर भटकना नहीं चाहता'—वह बोला और फिर उसने रोटी का एक निवाला मुँह में भरा। 'माँ की हालत अच्छी नहीं है। यदा-कदा मैं उसे पांच फ्रेंक भेज दिया करता हूँ।'

'तुम्हारी माँ कहाँ है?'

'पेरिस में रुई-डे-ला-गोटेडोर में धोबिन का काम करती है।'

फिर दोनों मौन हो गये। जब वह अपने पिछले जीवन की बातें सोचने लगा तो उसकी काली आखों में एक भय का संचार हुआ। एक क्षण के लिए वह अपने बचपन की भूलों को याद करता हुआ खान के अंधकार और की आंखें गड़ाये रहा और धरती के नीचे इस घुटन और गहराई के बीच उसे अपना बचपन याद आया। उसकी मां तब खूबसूरत और जवान थी। उसे पिता द्वारा अवहेलना किये जाने पर उसने दूसरे व्यक्ति से शादी कर ली परन्तु इसी बीच उसके बाप ने फिर उसे बुला लिया। दो व्यक्तियों के साथ की जिन्दगी ने उसे बरबाद कर दिया, वह उनके साथ शराब और इत्र-फुलेल में डूबी गटर में पड़ी रहती थी। शराब-खोरी से सारा घर गंधाता था और जबड़ा-तोड़ घूंसेबाजी होती थी।

उसने धीमी आवाज में पुनः कहना शुरू किया—'अब मेरे पास तीस सूज भी नहीं है कि मैं उसे कोई तोहफा भेज सकूं। मुझे यकीन है कि वह दुःख में ही मर जायगी।'

उसने निराशा में अपने कंधे उचकाये और पुनः अपनी रोटी और मक्खन को दाँत से काटा।

अपना टिन खोलते हुए कैथराइन ने पूछा—'क्या तुम पियोगे ? ओह, यह काफी है, इससे तुम्हें नुकसान नहीं होगा। जब कोई इस प्रकार पिये तो वह बुत हो ही जायगा।'

लेकिन उसने इन्कार किया। उसकी आधी रोटी ले लेना क्या काफी नहीं है ? फिर भी अच्छे स्वभाव की लड़की की भांति वह बराबर हठ करती रही और अंत मे बोली—'चूंकि तुम इतने विनम्र हो इसलिए तुम्हारे पेश्तर मै पिऊँगी। अब तुम इन्कार नहीं कर सकते। यह ज्यादती होगी।'

उसने अपना टिन युवक को थमा दिया। वह अपने घुटनों के बल बैठ गई और दो लैंपों की रोशनी मे उसने उसे अपने करीब पाया। उसे वह बदसूरत क्यों लगी ? अब वह काली लगती थी। उसका चेहरा कोयले की धूल से भरा था परन्तु वह अब उसे अत्यन्त सुन्दर लग रही थी। छाया से घिरे हुए उसके चेहरे पर सुन्दर दंत-पंक्ति चमक रही थी और उसकी बड़ी-बड़ी आँखें बिल्ली की आँखों की तरह हरी प्रतिछाया से चमक रही थी। उसके सुनहरे बालों की एक लट उसके टोप से निकल कर कान के पास लटक रही थी। वह अब उतनी कमसिन नही लगती थी, उसकी उम्र चौदह वर्ष के लगभग जँचती थी।

उसने टिन मे से काफी पीते हुए कहा—'तुम्हारी खुशी के लिए' और फिर टिन लड़की की ओर बढा दिया।

लड़की ने एक दूसरी घूंट ली और उसे भी हिस्सा बँटाने की नीयत से एक और लेने को मजबूर किया। इस प्रकार वह टिन एक मुंह से दूसरे मुँह तक आता-जाता रहा जिससे उनका मनोविनोद भी हुआ। युवक ने यकायक सोचा कि क्यों न वह उसे गोद मे उठाकर उसके ओठों का चुम्बन ले ले। उसके हल्के गुलाबी रंग के ओंठ, जो कोयले से और भी स्पष्ट हो गए थे, उसकी इस इच्छा को और भी प्रबल बना रहे थे। लेकिन वह लड़की से घबरा कर ऐसा करने का साहस नहीं कर पा रहा था क्योंकि वह सिर्फ सिली की सड़कों पर फिरने वाली निम्न दर्जे की लड़कियों को जानता था और नही जानता था कि एक काम करने वाली लड़की के साथ, जो कि अपने माता-पिता के पास रह रही हो किस तरह से वर्ताव किया जाय।

पुनः उसने अपनी रोटी उठाते हुए पूछा—'तब तुम्हारी उम्र लगभग चौदह के होगी ?'

उसे आश्चर्य हुआ और नाराजी भी हुई—'क्या कहा ? चौदह वर्ष ! लेकिन मैं पंद्रहवें में हूँ। यह सही है कि मेरा कद बढ़ा नहीं है। हम लोगों में लड़कियां जल्दी बढ़ नहीं पातीं।'

वह उससे प्रश्न पूछता गया और लड़की बिना किसी शर्म या साहस के उसे सब बताती गई। वह पुरुष और स्त्री के सम्बन्धों से अपरिचित नहीं थी गोकि लॉतिये का ख्याल था कि वह अभी अक्षत है और उसका कौमार्य दूषित हवा और थकान के इस वातावरण में, जिसमें वह रहती है, अभी जातीय प्रौढ़ता तक नहीं पहुँच पाया है। जब उसे छेड़ने की नीयत से उसने माकेटी के बारे में पूछा तो उसने बड़ी दिलचस्पी के साथ सामान्य ढंग से उसके बड़े-बड़े किस्से बताये। आह! वह कुछ बड़े मजेदार काम करती है। और जब उसने पूछा कि तुम्हारा कोई प्रेमी नहीं है तो उसने मजाकिया ढंग से उत्तर दिया कि मैं अपनी माँ को कष्ट पहुँचाना नहीं चाहती परन्तु एक न एक दिन ऐसा होना ही है। उसके कंधे झुके हुए थे। पसीने में भीगे हुए उसके कपड़ों से उसे कुछ सिरहन-सी महसूस हो रही थी और ऐसा प्रतीत होता था कि वह वस्तु-स्थिति और पुरुष के आगे आत्मसमर्पण को तैयार है।

'जब सभी लोग साथ रहते है तो लोग प्रेमी पा सकते है, क्या ऐसा नहीं है?'

'निस्संदेह!'

'और तब इससे किसी को कष्ट भी नहीं पहुँचता। कोई पादरी से नहीं कहता।'

'ओह! पादरी। मैं उसकी परवाह नहीं करती। परन्तु 'ब्लैक मैन' सब जानता है।'

'ब्लैक मैन? क्या?'

पुराना खनिक, जो खान में वापस आता है और नटखट लड़कियों के कान उमेठता है।'

उसने गौर से लड़की को देखा। वह डर रहा था कि कहीं लड़की उसका मज़ाक तो नहीं उड़ा रही है।

'क्या तुम इन बेवकूफी की बातों पर विश्वास रखती हो? अगर ऐसा है तो तुम कुछ नहीं जानती।'

'हाँ, मैं जानती हूँ। मैं पढ़-लिख सकती हूँ। हम लोगों में यह मुफीद समझा जाता है। मेरे माता-पिता के जमाने में उन्होंने कुछ भी नहीं सीखा।'

वह वास्तव में बहुत प्यारी लड़की थी। जब वह अपनी रोटी और मक्खन समाप्त कर चुकेगी वह उसे उठा लेगा, उसके बड़े गुलाबी होंठों को चूम लेगा। यह एक भयपूर्ण निश्चय था, और जबरदस्ती करने का यह विचार उसकी आवाज को

दबा रहा था। लड़की के शरीर पर लड़कों के कपड़े, उसकी जाकेट और उसकी ब्रिजिस—उसे उत्तेजित और परेशान कर रहे थे। उसने टिन मुँह से लगाया और उसे खाली करने के लिए लड़की की ओर बढ़ा दिया। अब उसके मनोविचारों को मूर्तरूप देने का समय आ गया था। उसने दूरी पर बैठे हुए खनिकों पर एक बेचैनी की नज़र डाली। परन्तु इसी बीच एक छाया ने गलियारे को घेर लिया।

एक क्षण के लिए चवाल खड़ा दूर से उन्हें देखता रहा और और जब उसे यकीन हो गया कि माहे उसे नहीं देख सकता तो वह आगे बढ़ा। चूंकि कैथराइन जमीन पर बैठी थी उसने उसे कंधों से पकड़ लिया और उसका सिर पीछे की ओर खींचते हुए एक पशुवत् चुम्बन से उसका मुँह कुचल डाला और ऐसा प्रदर्शित किया कि उसने लॉतिये को देखा ही न हो। उसके इस चुम्बन में एकाधिकार और ईर्ष्यापूर्ण निश्चय का पुट था।

लेकिन लड़की को यह सब बड़ा बेहूदा लगा।

'मुझे छोड़ दो, सुना तुमने ?'

वह उसका सिर थामे रहा और उसकी आँखों में आँखें डाल दी। उसके काले चेहरे पर उसकी मूछें और छोटी लाल दाढ़ी चमक रही थी। अन्त में उसने लड़की को छोड़ दिया और बिना एक शब्द बोले वहाँ से चला गया।

एक कँपकँपी ने लॉतिये को जमा दिया। उसका इन्तजार करना बेवकूफी थी। अब वह उसका चुम्बन नहीं ले सकता था क्योंकि तब शायद वह यह ख्याल करती कि वह भी दूसरों की ही भाँति बर्ताव करना चाहता है। अपने घायल अहंकार में उसे वास्तविक निराशा का अनुभव हुआ।

'तुमने झूठ क्यों बोला ?' दबी हुई आवाज में उसने कहा। 'वह तुम्हारा प्रेमी है।'

लड़की चिल्लाई—'नहीं, मैं कसम खाती हूँ। हम दोनों के बीच कोई ऐसी बात नहीं है। कभी-कभी वह इस तरह का मजाक किया करता है। वह यहाँ का रहने वाला भी नहीं है। अभी छह महीने पहले वह पास-डे-कैलिस से आया है।'

दोनों उठ खड़े हुए। काम आरंभ होने वाला था। जब उसने लॉतिये को बेमना पाया तो वह नाराज प्रतीत हुई। निस्संदेह औरों की अपेक्षा उसे लॉतिये ज्यादा अच्छा लगा; और शायद वह उसे पसंद भी करती। नवयुवक को हैरत हुई जब उसने देखा कि उसका लैंप बड़ा पीला घेरा बनाते हुए नीली रोशनी दे रहा है।

लॉतिये को खुश करने के लिए मैत्रीपूर्ण लहजे में वह कहने लगी—'मेरे साथ आओ, मैं तुम्हें एक बात बताऊंगी।' तब वह उसे कटान के तल में ले गई और कोयले की एक दरार की ओर संकेत किया। इस दरार से हल्के बुलबुले उठ रहे थे। जिनसे किसी चिड़िया के कूजने की सी आवाज आ रही थी।

'अपना हाथ वहाँ लगाओ तो तुम्हें हवा निकलती मसमूस होगी। यह कार्बुनेटेड हाइड्रोजन गैस है जो वातावरण की हवा में मिलकर विस्फोट पैदा करती है।'

उसे बड़ा अचम्भा हुआ। यही वह भयंकर वस्तु है जो हर चीज को उड़ा देती है? वह हँसने लगी और बोली—'आज इसकी मात्रा अधिक है जिससे लैंप की लौ इतनी नीली पड़ रही है।'

उधर से माहे ने रूखे स्वर में आवाज लगाई—'अब गपशप बंद करो, सुस्त बदमाशो।'

कैथराइन और लॉतिये जल्दी-जल्दी अपनी ट्रामें भरने लगे और मार्ग में छत के उभार के नीचे से रेंगते हुए ट्रामों को ऊपर जाने के छोर तक ले गए। दूसरी ही खेप के बाद उनके शरीर से पसीना चूने लगा और उनके जोड़ जोर लगने की वजह से चटखने लगे।

मलकट्टों ने कटानों में काम शुरू कर दिया था। यह मजदूर शीतल हो जाने के भय से अक्सर अपने नाश्ते का समय पूरा-पूरा नहीं लेते थे और इस प्रकार सूर्य के प्रकाश से दूर, मौन लोलुपता से चबाई जाने वाली यह रोटी उनके पेट में शीशा भर देती थी। करवट लेटे-लेटे वे जोर-जोर से हथौड़ी चलाते। उनके समक्ष एक ही उद्देश्य रहता था कि अधिकाधिक संख्या में ट्रामें भरी जाँय। इस गाढ़े पसीने की कमाई के पीछे अन्य सभी विचार गायब हो जाते थे। उन्हें इस बात का अहसास तक नहीं होता था कि उनके सिर और शरीर पर चूने वाला पानी उनके अवयवों को खा रहा है। इस मजबूरी की स्थिति और अंधकार की घुटन में वे इस प्रकार पीले पड़ जाते थे जैसे कमरे या किसी बंद स्थान में बोये गये पौधे। ज्यों-ज्यों दिन चढ़ता गया हवा अधिक विषाक्त होती गई और लैंपों के धुएँ से गरमी भी। उनकी साँसों से दूषित हवा निकलने तथा उसके कार्बुलेटेड हाइड्रोजन गैस में मिलने से हवा इतनी बोझिल हो गई थी कि उससे वहाँ काम करने वाले खनिकों की आँखों में मकड़ी के जाले की तरह दबाव पड़ता था। इसे रात्रि में हवा निकाले जाने के बाद ही शुद्ध किया जाता था। छछूँदर की बाँबी के समान खान की इस सतह में, धरती के बोझ के नीचे वे हथौड़ी चलाते जा रहे थे।

५

माहे ने अपनी जाकेट मे पड़ी घड़ी को देखे बिना ही काम बन्द कर दिया और बोला—'एक बज गया है। जाचरे काम खत्म हो गया ?,

नवयुवक अभी-अभी तख्ते बैठा कर पीठ के बल लेटा हुआ स्वप्निल आँखों से पिछली रात के हाकी के खेल के बारे में सोच रहा था। वह जागता सा बोला—'हां, आज का काम चल जायगा ; फिर कल देखा जायगा।' और वह कटान में अपने स्थान पर लौट आया। लेवक्यू और चवाल भी अपनी छेनियाँ एक ओर रख कर आराम कर रहे थे। वे अपनी नंगी बाहों से पसीना पोंछते हुए छत की ओर देख रहे थे जहाँ सिलेटी शिलाखण्डों में दरारें पड़ गई थीं। वे सिर्फ़ अपने काम-काज की बातें कर रहे थे।

चवाल भुनभुनाया—'पोली मिट्टी में धँसने का दूसरा खतरा। वे इसे काम मे शुमार ही नही करते।'

लेवक्यू गुस्से मे बोला—'हरामजादे कही के। वे सिर्फ हमे इसमे दफना देना चाहते हैं।'

जाचरे हँसने लगा। वह काम और आराम की ज्यादा परवाह नही करता था लेकिन उसे कम्पनी को दी जाने वाली गालियाँ सुनने मे मज़ा आता था। अपने संतोषी और शांत तरीके से माहे ने समझाया कि मिट्टी की किस्म हर बीस मीटर पर बदलती है। हम इसे पहले से नहीं जान सकते और हमे अकारण दोषारोपण नही करना चाहिए। परन्तु जब उसके अन्य दोनो साथी मालिकों को दोष देते चले जारहे थे तो उससे न रहा गया और उसने चारो ओर देखा और बोला—'अब चुप हो जाओ, काफी हो चुका।'

अपनी आवाज धीमी करते हुए लेवक्यू बोला—'तुम ठीक कहते हो। यह सब अच्छी बात नहीं है।'

इस गहराई मे भी गुप्तचरों का एक अज्ञात भय उन्हे बराबर सताता रहता था मानों शेयर होल्डरों के इस कोयले के, जोकि अभी संधि मे ही था, कान हो और वह उनकी बातें सुन सकता हो।

चवाल ने अवज्ञा के ढंग से बड़े जोर से कहा—'अगर उस हरामजादे डेनार्ट ने मुझसे उस दिन की तरह बेहूदगी की तो मैं इन बातों से उसके पेट मे एक बल्ली घुसेड़ने से बाज थोड़े ही आऊँगा। मैं उसे गोरे चमड़े वाली खूबसूरत छोकरियाँ खरीदने से रोकना नहीं चाहता और न रोकूंगा।'

इस बार जाचरे ने बड़े जोरों का ठहाका लगाया। बड़े कप्तान और पेरीन का गुप्त सम्बन्ध खान में बराबर एक मजाक का विषय रहा करता था। यहाँ तक कि

कटान के तल में कैथराइन भी अपना फावड़ा टेक कर खड़ी हो गई और उसने चन्द शब्दों में लॉतिये को इस मजाक का रहस्य समझा दिया। माहे अपना भय दबाने में असमर्थ होने के कारण गुस्से में बोला—'अपनी जबान बन्द करो ? और अगर तुम संकट में पड़ना ही चाहते हो तो अकेले होने तक इन्तजार करो।'

उसकी बात अभी खत्म न हो पाई थी कि उपरी गलियारे में पावों की चाप सुनाई दी। उसके तत्काल बाद खान का इंजीनियर 'लिटिल निग्रील', जो मजदूरों में इसी नाम से पुकारा जाता था, कटान के सिरे पर दृष्टिगोचर हुआ और उसके साथ बड़ा कप्तान डेनार्ट भी था।

माहे ने आहिस्ता से कहा—'मैं कहता नहीं था कि हमेशा कोई न कोई कब्र से उठकर-सा आता है।'

मोशिये हेनेब्यू का भतीजा पाल निग्रील घुंघराले बालों और भूरी मूछों वाला छब्बीस वर्ष का गोरा-चिट्टा और सुसभ्य जवान था। उसकी नुकीली नाक और चमकीली आँखें उसकी कुशाग्र बुद्धि की परिचायक थीं जो मजदूरों के साथ व्यवहार-बर्ताव के समय यकायक एक अधिकारपूर्ण रोब में बदल जाती थी। वह उन्हीं की भांति कपड़े पहने हुए कोयले की कालिमा में सराबोर था। मजदूर उसकी इज्जत करें इस दृष्टि से वह अदम्य साहस का परिचय दिया करता था और जब कभी भी कहीं जमीन धँसती या कार्बुलेटेड हाइड्रोजन गैस का विस्फोट होता वह सब से पहिले वहाँ पहुँचता था।

'क्यों डेनार्ट हम पहुँच गये ना ?' उसने पूछा।

सूखे चेहरे के बेलजियन बड़े कप्तान ने, जिसकी नाक उसकी कामुक मनोवृत्ति की परिचायक थी, बड़े विनम्र लहजे में उत्तर दिया—'हाँ, मोशिये निग्रील। यहाँ रहा वह आदमी जिसे आज सुबह काम पर लिया गया है।'

दोनों खिसकते हुए कटान के मध्य तक पहुँच चुके थे। उन्होंने लॉतिये को ऊपर बुलाया। इंजीनियर ने अपना लैंप ऊपर उठाकर बिना कोई प्रश्न पूछे लॉतिये का चेहरा देखा। अन्त में वह बोला—'अच्छा' लेकिन मैं अज्ञात लोगों को सड़क से पकड़ कर लाया जाना पसंद नहीं करता। दुबारा ऐसा न हो।'

उसने कप्तान की कोई कैफियत नहीं सुनी कि काम के लिए भरती जरूरी थी और कर्षण के लिए औरतों के स्थान पर पुरुष भरती किया जाना कम्पनी की इच्छा है इत्यादि...इत्यादि। वह छत का मुआयना करने लगा और मलकट्टे पुनः छेनी चलाने लगे। यकायक वह चिल्लाया—

'मैंने कहा सुनो, माहे; तुम्हें जिन्दगी का जरा मोह नहीं है। हे ईश्वर ! तुम सभी यहां दफन हो जाओगे।'

माहे ने तत्काल उत्तर दिया—'ओह ! यह बिल्कुल ठोस है।'

'क्या कहा ! ठोस है ! लेकिन चट्टान खिसकने लगी है और तुम दो मीटर से भी ज्यादा लम्बान पर खम्भे लगा रहे हो मानो तुम्हें इससे जलन हो। आह ! तुम सभी एक थैली के चट्टे-बट्टे हो। तख्ते लगाने के लिए आवश्यक समय देने के बजाय तुम लोग अपना भेजा खुलवाना ज्यादा पसन्द करते हो। मेरा आदेश है कि इसमें तत्काल खम्भे बाँधो। दुगुने तख्ते लगाओ—समझे ?'

मजदूरों को इस बात पर आपत्ति थी और उनका कहना था कि वे अपनी सुरक्षा की बात ज्यादा अच्छी तरह समझते है। उनकी अनिच्छा देखकर इंजीनियर नाराज हुआ—'काम करो। जब तुम्हारा सर कुचल जायगा तो क्या तुम्हें ही परिणाम भुगतना पड़ेगा ? बिल्कुल नहीं। यह नुकसान कम्पनी को होगा क्योंकि उसे तुम्हें या तुम्हारी पत्नी को पेंशन देनी पड़ेगी। मैं पुनः तुम्हे बता देना चाहता हूँ कि हम लोग तुम्हे अच्छी तरह जानते है, संध्या तक दो अतिरिक्त ट्रामें भरने के लिए तुम अपना चमड़ा तक बेंच सकते हो।'

माहे अपने गुस्से को रोकते हुए और शनैः शनैः उस पर अधिकार जमाता जा रहा था। दृढ़तापूर्वक बोला—'अगर वे हमे अच्छा मेहनताना दें तो हम अच्छी तरह थूम बाँध सकते है।'

इंजीनियर ने बिना कोई प्रत्युत्तर दिये अपने कंधे सिकोड़े। वह कटान से नीचे उतर चुका था और उसने नीचे से ही अपना निर्णयात्मक आदेश दिया—'तुम्हारे पास अभी एक घंटा वक्त है। तुम सभी काम मे जुट जाओ और मैं तुम्हे नोटिस देता हूँ कि स्टाल को तीन फ्रेंक जुर्माना किया जाता है।'

मलकट्टो ने इन शब्दों का गुस्से से भरी परन्तु धीमी गुर्राहट से स्वागत किया। सिर्फ एक अनुशासन उन्हे रोके हुए था, वह सैनिक अनुशासन जो एक ट्राम खीचने वाले से लेकर एक हेड कप्तान तक को एक दूसरे के मातहत रखता था। चवाल और लेवक्यू ने तीव्र विरोधात्मक मुख-मुद्रा बनाई, लेकिन माहे ने आँख के इशारे से उन्हें रोका। जाचरे ने भी क्रोधावेश मे अपने कंधे उचकाये। लेकिन लॉतिये पर शायद सबसे ज्यादा असर पड़ा। जब से वह इस नरककुंड में उतरा था विद्रोह के अंकुर उसके मन मे जम रहे थे। उसने कैथराइन की ओर देखा जो सब कुछ भाग्याधीन छोड़ कर पीठ झुकाये थी। क्या यह सम्भव है कि इस गहन अंधकार में एक व्यक्ति कठोर श्रम कर अपने को मार डाले और उसे अपनी दैनिक रोटी खरीदने के लिए चन्द पेंस तक नसीब न हों ?

थोड़ी देर में निग्रील डेनार्ट के साथ वहाँ से चला गया और कुछ दूरी पर फिर

उनकी आवाज सुनाई दी। वे पुनः रुक कर गलियारे में भीत लगाये जाने का मुआयना कर रहे थे जिसे कटान के पीछे दस मीटर की दूरी तक मलकट्टों को स्वयं लगाना होता था।

इंजीनियर चिल्लाया—'मैं तुमसे कहता न था कि यह लोग किसी बात की परवाह ही नहीं करते ? और तुम ! तुम यह सब क्यों नहीं देखते ?'

हेड कप्तान ने गिड़गिड़ाते हुए कहा—'लेकिन मैं देखता तो हूँ परन्तु एक बात को बार-बार कब तक कहा जाय।'

निग्रील ने जोर से पुकारा—माहे ! माहे !

वे सब नीचे उतर आये। वह कहता गया—'उसे देख रहे हो तुम ? क्या वह ठहरेगा ? वह बल्ली देखो ठीक तरह से जल्दी मे गाड़ी भी नहीं गई है। हे ईश्वर। अब मैं समझा कि क्यों हमें इसकी मरम्मत मे इतना ज्यादा खर्चा पड़ता है। यह तभी तक चलता है जब तक तुम्हें इसकी जरूरत रहती है। बाद में तहस-नहस हो जाता है और कम्पनी को मरम्मत करने वालो की एक पलटन लगा देनी होती है। इसे नीचे तो देखो, यह महज पेवन्द लगाना है।'

चवाल कुछ कहना चाहता था परन्तु इंजीनियर ने उसे रोक दिया।

'नहीं। मैं जानता हूँ तुम क्या कहना चाहते हो। यही न कि वे तुम्हें ज्यादा मजदूरी दें। ठीक है। मैं तुम्हें चेतावनी देता है कि तुम मैनेजरों को कुछ करने के लिए मजबूर करोगे; वे तुम्हें तख्ते बैठाने के लिए अलग से मजदूरी देंगे और उसी अनुपात से ट्राम की कीमत भी घट जायगी। हम देखेंगे कि शायद इस तरीके से तुम्हें फायदा पहुँचे। इसी बीच इनमे नये सिरे से खम्भे लगा डालो। मैं कल इसका मुआयना करूँगा।'

इस धमकी से उत्पन्न भारी भय के बीच मे ही वह चला गया। डेनार्ट, जो अभी तक इतना विनम्र बना हुआ था, मजदूरों को फटकार बताने की नीयत से कुछ क्षण के लिए वहाँ रुक गया—'तुमने मुझे भी गालियाँ खिलवाईं। मैं तुम पर तीन फ्रैंक से भी ज्यादा जुर्माना करूँगा।'

जब वह भी चला गया तब माहे ने अपनी जबान खोली—'भगवान क़सम ! जो न्याय है वह सर्वमान्य है। मैं चाहता हूँ लोग शान्त रहें क्योंकि यही एक मात्र रास्ता निभाव का है। लेकिन वे लोग तो हमें पागल बना देते है। सुना तुमने ? ट्राम का भाड़ा कम कर दिया जायगा और तख्ते बैठाने की मजदूरी अलग से मिलेगी ! हमें कम देने की यह एक चाल है।'

वह अपना गुस्सा उतारने के लिए इधर-उधर देखने लगा। उसने लाँतिये और कैथराइन को देखा जो खड़े-खड़े हाथ हिला रहे थे।

'क्या तुम लोग मुझे कुछ लकड़ी ला दोगे ? इसमें तुम्हारा क्या बिगड़ता है ?'

माहे की गाली की परवाह न करते हुए लॉतिये लकड़ी लाने चला गया। वह भी मालिकों पर इतना क्रुद्ध हो उठा था कि उनके मुकाबले उसने खनिकों को बहुत सहनशील समझा। जहाँ तक औरों का सवाल था चवाल और लेवक्यू कड़ी बात कह कर अपने को सान्त्वना दे चुके थे। वे सभी गुस्से में भरे हुए तख्ते बैठा रहे थे क्योंकि लगभग आधे घंटे तक हथौड़ी की चोट से लकड़ी के तख्ते तोड़ने के अलावा और कोई शब्द वहाँ नहीं सुनाई दिया। उनमें से कोई भी बातचीत नही कर रहा था। चट्टान से क्रुद्ध वे गहरी साँसें ले रहे थे और अगर उनके वश की बात होती तो वे अपने कंधों के जोर से उसे पीछे धकेल दिये होते।

अन्त मे माहे बोला—'बस, काफ़ी हो गया। वह क्रोध और परिश्रम से क्लान्त हो गया था। एक घंटा तीस मिनट ! एक पूरे दिन का काम ! हमे आज पचास सूज भी नहीं मिलेगा। मैं चला। इससे मुझे बड़ी तकलीफ हो रही है।'

गोकि अभी काम का आधा घंटा बाकी था फिर भी उसने अपने कपड़े पहन लिये और दूसरों ने भी उसका अनुसरण किया। कटान की ओर दृष्टिपात मात्र से उसे गुस्सा चढ रहा था। कैथराइन कोयला इकट्ठा करने चली गई थी, उन्होने उसे वापस बुला लिया और छहों अपने हाथों मे अपने औजार लिये वापस दो किलो-मीटर की यात्रा पर रवाना हुए और प्रातःकाल के रास्ते से कूपक तक लौट आये।

रास्ते मे कैथराइन और लॉतिये को विलम्ब हो गया जब कि मलकट्टे नीचे खिसक आये। उन्हें छोटी लायडी मिली जो उन्हे गुजरने का रास्ता देने के लिए गलियारे मे ठहर गई थी। इसने माकेटी के गायब हो जाने की बात उन्हें बताई और कहा कि उसकी नाक से इतना खून बह रहा था कि वह उसे धोने के लिए एक घंटे तक न जाने यहाँ गायब रही। जब वे उसके पास से गुजर गये तो वह फिर अपनी ट्राम खींचने लगी। दुबली, काली चीटी की भाँति अपने दुबले-पतले हाथ-पावों को कड़ा कर वह उस बोझ से जूझ रही थी जो उसके लिए बहुत भारी था। वे पीठ के बल लेटे हुए नीचे उतरे। उनके माथे को चोट से बचाने के लिए वे दोनों हाथ सामने फैलाये हुए थे। स्टालों के पीछे पालिश की गई चट्टान से वे इतने करीब-करीब गुजर रहे थे कि उन्हें समय-समय पर लकड़ी का सहारा लेना पड़ता था ताकि, जैसा वे मजाक मे कहा करते थे, उनके पार्श्व भाग को आग न पकड़ ले।

नीचे उन्होंने अपने को अकेला पाया। दूर मार्ग के मोड़ पर लाल बत्तियां गायब हो चुकी थीं। उनकी प्रफुल्लता गायब हो गई, वे थकावट भरे भारी कदमों से आगे बढ़ने लगे। कैथराइन आगे थी और लॉतिये पीछे। उनके लैंप काले

पड़ गये थे। वह कैथराइन को बमुश्किल देख पा रहा था क्योंकि वह एक प्रकार के धुंध में डूबी हुई थी। वह लड़की है यह विचार उसे परेशान किये हुए था। वह महसूस कर रहा कि उसका आलिंगन न करना उसकी मूर्खता थी लेकिन दूसरे व्यक्ति की स्मृति उसे रोक रही थी। निस्संदेह वह झूठ बोली है; वह व्यक्ति उसका प्रेमी था। वे सलेटी कोयले के उन सभी ढेरों में साथ लेटे है क्योंकि उसकी चाल एक बदचलन औरत की सी है। बिना किसी तर्क के उसने ऐसी धारणा बना ली कि मानो लड़की ने उसे धोखा दिया हो। कैथराइन हर बार पीछे मुड़ कर देख लेती थी और उसे आगे आने वाली रुकावट के प्रति सचेत करती जाती थी। ऐसा प्रतीत होता था कि वह उसे वफादारी के लिए आमंत्रित कर रही है। वे लोग यहां इतने निराले में थे कि अच्छे मित्रों की भाँति खुल कर हँसना उनके लिए आसान होता। अन्त में वे बड़ी कर्पणा गैलरी में प्रविष्ट हुए; यहाँ उसे उस अनिश्चयात्मक स्थिति से छुटकारा पाने की खुशी हुई जिससे वह परेशान था; जब कि कैथराइन की नजरों में पुनः उदासी लौट आई। संभवत यह उस खुशी के प्रति पश्चाताप या जिसे अब वे नहीं पा सकते थे।

अब भूमि के भीतरी भाग का कोलाहलपूर्ण जीवन उनके सामने शुरू हो गया था। कप्तान लगातार उनके सामने से गुजर रहे थे; घोड़ों द्वारा खींची जाने वाली ट्रेनें आ-जा रही थी। हर जगह लैंपों से रात्रि में उजाला किया गया था। मजदूरों और घोड़ों के लिए रास्ता छोड़ने के निमित्त उन्हें चट्टान से चिपक जाना पड़ता था। जॉली नंगे पांव अपनी ट्रेन के पीछे भागता हुआ कुछ शरारत भरे शब्द चिल्लाया, जिसे वे पहियों की गड़गड़ाहट के बीच सुन नहीं पाये। वे अब भी आगे बढ़े जा रहे थे। वह अब चुप थी लॉनिये उन मोड़ों और सड़कों को पहचानने में असमर्थ सा, जिनसे वह सुबह गुजर चुका था. ऐसा महसूस कर रहा था कि वह उसे जमीन में अनन्त गहराई की ओर लिए जा रही है और उसे विशेष कष्ट अब निरंतर बढ़ती हुई ठंडक से हो रहा था जिसे उसने कटान से निकलने पर महसूस किया था और जिसकी वजह से ज्यों-ज्यों वे कूपक करीब पहुँच रहे थे उसकी कँपकँपी बढ़ती चली जा रही थी। संकरी दीवारों के बीच अब हवा तूफान की तेजी से बह रही थी। उसे निराशा हो रही थी कि यह सिलसिला कभी खत्म होने वाला नहीं है तब यकायक उन्होंने अपने को पिट-आई हाल में पाया।

चवाल ने उस पर एक तीखी नजर डाली और संदेह से उसका चेहरा विवीर्ण हो गया था। बर्फीली तरंगों में पसीने से भीगे हुए अन्य सभी वहाँ मौजूद थे। वे भी उसकी ही भाँति चुपचाप खड़े अपने गुस्से को पी रहे थे। वे जल्दी पहुँच

गये थे और आधा घंटे तक उन्हें ऊपर पहुँचाये जाने की कोई उम्मीद नजर नहीं आती थी क्योंकि एक घोड़े को खान में उतारने की जटिल प्रक्रिया चल रही थी। ठेला-मजदूरों द्वारा ट्राम में खींचे जाने का सिलसिला जारी था जिनकी खड़खड़ाहट कानों को बहरा बनाये डाल रही थी। कटघरे का ऊपर उठ कर इस कालिमा की मीनार से बराबर झरने वाले पानी के बीच, गायब होने का सिलसिला जारी था। नीचे, एक दस मीटर गहरा परनाला इस पानी के लिए बना था जो कीचड़ के साथ-साथ आस-पास के वातावरण को नम बनाये हुए था। लोग लगातार कूपक के इर्द-गिर्द घूमते हुए सिगनल की डोरियाँ खींच रहे थे, लीवरों के हत्थों को दबा रहे थे और आस-पास के इस छिड़काव से उनके कपड़े भीगे जा रहे थे। तीन खुले लैंपों की लाल रोशनी हिलती-डोलती बड़ी-बड़ी छायाकृतियाँ बना रही थी और भूमिगत इस हाल को किसी झरने या सोते के पास किन्हीं चोर-सुरंगों के अड्डे का रूप दे रही थी।

माहे ने एक आखिरी प्रयास किया। वह पेरी के पास पहुँचा जो पाँच बजे सुबह से ड्यूटी पर आ गया था।

'सुनो! तुम हमें भी ऊपर जाने दो।'

लेकिन इस पोर्टर ने, जो कि मजबूत अवयवों वाला सुन्दर व्यक्ति था, डरी हुई मुद्रा में ऐसा करने से इन्कार किया—'असंभव! कप्तान से पूछो। वे मुझ पर जुर्माना कर देंगे।'

इस पर पुनः लोग क्रोध में गुर्राये। कैथराइन ने आगे झुक कर लातिये के कान में कहा—'तब आओ और अस्तबल देखो। यह आरामदेह स्थान है।'

और वे सब की नजरें बचाकर वहाँ से निकल गये। अस्तबल बाईं ओर एक छोटे गलियारे के सिरे पर था जिसकी लम्बाई पचीस मीटर और ऊँचाई चार मीटर थी। चट्टान को काटकर ईंटों से चिन गए इस अस्तबल में बीस घोड़ों के बँधने की जगह थी। निसंदेह, यहाँ आराम था। यहाँ रहने वाले जानवरों की गरमी और एक स्थान पर जमा किये गये भूसों के ढेर में काफी आराम था। एक लैंप रात्रि के अंधकार में मंदी रोशनी फेंक रहा था। यहाँ घोड़े आराम कर रहे थे। आदमियों को देखकर उन्होंने अपनी बड़ी-बड़ी आँखों से उनकी ओर देखा और फिर सामने पड़े हुए भूसे को खाने लगे।

जब कैथराइन जिंक की प्लेटों पर लिखे हुए उनके नामों को जोर-जोर से पढ़ रही थी तो अपने सम्मुख किसी आकृति को यकायक उठते देखकर वह धीरे से चीखी। यह माकेटी थी जो भयभीत होकर पुवाल से उठ खड़ी हुई थी जिसमें वह सो रही थी। अपने रविवार के नाच-रंग से अत्यधिक थकी हुई जब वह सोमवार

को काम पर आई तो उसने स्वयं अपनी नाक पर एक जोरों का मुक्का मारा और पानी ढूँढ़ने के बहाने कटान छोड़कर घोड़ों के साथ यहाँ सुखद गरमी में आकर सो गई। उसका बाप भी उसके प्यार के मारे कुछ बोल नहीं पाता था और संकट के खतरे को सिर पर लेते हुए उसने उसे इजाजत दे दी थी।

उसी समय माकेटी के पिता माक्यू ने वहाँ प्रवेश किया। वह पचास वर्ष का जीर्णकाय, ठिगना और गंजी खोपड़ी वाला तन्दुरुस्त व्यक्ति था। ऐसी सिफत बुड्ढे खनिकों में बहुत कम पाई जाती है। जब से वह सईस बना दिया गया था वह इतना अधिक दाँतों में चबाने लगा था कि उसके काले मुँह में मसूड़ों से खून निकलता था। अपनी लड़की के साथ दो अन्य लोगों को देखकर वह नाराज हुआ—

'तुम सब यहाँ क्या कर रहे हो? ऊपर आओ! लड़कियाँ अपने साथ यहाँ एक मरद लाई है। यह अच्छा रहा कि तुम लोग यहाँ आकर मेरे पुआल में अपनी गंदी हरकतें करो।'

माकेटी ने इसे मनोरंजक मजाक समझते हुए अपने कूल्हे हिलाये। लेकिन लाँतिये को नागवार लगा और वह चला गया जबकि कैयराइन उस पर हँसने लगी। ज्योंही तीनों 'पिट-आई' पर, पहुँचे बीवर्ट और जॉली भी टबों की ट्रेन लेकर वहाँ पहुँच गये। कटघरे की स्थिति बदलने के लिए वह बंद था और लड़की अपने घोड़े के पास पहुँच कर उसे पुचकारने लगी और उसके शरीर पर हाथ फेरती हुई अपने साथी से उसके बाबत बताने लगी। यह बेटली था। पिछले दस वर्षों से नीचे खान में काम करने वाला यह सफेद, कद्दावर घोड़ा खान का पुराना सदस्य था। इस सुरंग में रहते हुए इन दस वर्षों में वह अस्तबल में एक ही स्थान पर बँधता और दिन के प्रकाश से दूर काले गलियारों में वहीं काम करता चला आ रहा था। चमकीली बालों वाली त्वचा वाला यह मोटा घोड़ा सीधे स्वभाव का था और ऐसा प्रतीत होता था कि ऊपरी दुनिया की बुराइयों से दूर वह यहाँ पनाह लेता हुआ संत का जीवन व्यतीत कर रहा है। इस अंधकार में भी वह बहुत चतुर हो गया था। जिस मार्ग से वह आता जाता था वह उससे इतना अधिक परिचित हो गया था कि हवा के दरवाजों को वह स्वयं अपने सिर से खोल लेता था और संकरे स्थानों में चोट से बचने के लिए झुक जाया करता था; और बिना किसी संदेह के वह अपने फेरे भी गिना करता था क्योंकि जब वह अपनी खेप पूरी कर लेता था तो फिर वह आगे बढ़ने से इन्कार कर देता और उसे अस्तबल में रखवाले के पास ले जाना पड़ता था। अब चूंकि वह बुड्ढा होने लगा था उसकी बिल्ली की सी आँखें कभी-कभी उदासी से भर आती थीं। शायद वह अपने अस्पष्ट स्वप्नों की गहराई में पुनः देखता था। वही मार्सेनीज के पास वाली

मिल, जहाँ वह पैदा हुआ; वह लम्बे चौड़े खेत, जहाँ हमेशा ताजी हवा बहती थी। वहां हवा में कोई चीज जला करती थी, एक बड़ा सा चिराग, जिसकी स्पष्ट तसवीर उसकी पशु-स्मृति से उतर गई थी। और वह अपने पाँवों पर काँपता हुआ खड़ा होकर गर्दन झुका लेता था; मानो वह सूरज को बुलाने का असफल प्रयास कर रहा हो।

इसी बीच कूपक में व्यवस्था का काम चल रहा था, निर्देशन हथौड़ी से चार चोटें मारी गईं और घोड़े को नीचे उतारा जा रहा था, ऐसे समय पर वहाँ हमेशा कौतूहल रहता था क्योंकि कभी-कभी ऐसा भी होता था कि जानवर जब उतारा जाता था तो वह भय से मरा पाया जाता था। ऊपर जब उसे जाल में डाला गया तो वह बुरी तरह छटपटाया था परन्तु जब उसने महसूस किया कि उसके पाँवों के नीचे धरती नहीं रही तो वह जड़वत् बन गया था और बड़ी-बड़ी स्थिर आँखों से एकटक देखता हुआ बगैर हिले-डुले गायब हो गया था। नियामकों (गाइडस्) के बीच से गुजरने के लिए वह जानवर काफी बड़ा होने की वजह से उसे कटघरे के नीचे हुक से लटकाते वक्त यह जरूरी हो गया था कि उसके पीछे और सिर को बाँध उसे कटघरे के किनारे से जोड़ दिया जाय। तीन मिनट तक घोड़े को उतारने का यह सिलसिला जारी रहा। सावधानी के लिए इंजन को धीरे-धीरे चलाया जा रहा था। नीचे उत्तेजना बढ़ रही थी। तब क्या उसे अंधकार में लटकते हुए सड़क पर छोड़ दिया जायगा? अन्त में वह अपनी पत्थर की सी निश्चलता के साथ प्रकट हुआ। उसकी आँखें भय से पथरा सी गई थी और एक ही स्थान पर स्थिर थीं। यह घोड़ा, जिसका नाम ट्रोम्पेटी था, मुश्किल से तीन साल का होगा।

'सावधान!' फादर माक्यू चिल्लाया। उसका काम घोड़े को अपने संरक्षण में लेने का था। 'उसे यहाँ ले आओ। अभी उसे खोलना नहीं।'

ट्रोम्पेटी तत्काल एक माँस के लोथड़े के रूप में धातु के फर्श पर डाल दिया गया। अभी भी वह हिला डुला नहीं था। इस अंधेरे तल में वह अब भी बेहोश मालूम पड़ता था। जब वे उसे खोल रहे थे तो बेटली वहाँ लाया गया और उसने जमीन पर पड़े अपने साथी की सूँघने के लिये अपनी गर्दन आगे बढ़ाई। मजदूरों ने एक दूसरे से मजाक करते हुए घोड़े के चारों ओर घेरा और भी बड़ा बना लिया। सुनो! क्या सुखद गंध उसे इसकी मिली होगी? लेकिन बेटली विडंबना से बहरा चेतन-सा हो गया था। शायद उसने अपने साथी में खुली हवा का ताजा सुवास पाया हो और यकायक वह बड़े जोरों से हिनहिनाया। उसकी इस हिनहिनाहट में खुशी का संगीत और भावुकता की सुबकियाँ दोनों ही मिली-जुली मालूम पड़ती थीं। यह एक प्रकार का स्वागत, उन पुरानी चीजों के प्रति खुशी थी जिसका एक झोंका

उस तक पहुँचा था और एक नये कैदी के आ जाने की उदासी थी जो अब मृत्यु पर्यन्त फिर ऊपर न जा सकेगा।

'आह ! बेचारा बेटली !' कामगार आपस में बोले—'वह अपने साथी से बातें कर रहा है।'

ट्रोम्पेटी खोल दिया गया था लेकिन अभी वह हिला-डुला नहीं था। वह वैसे ही पड़ा था मानो वह अब भी जाल का बंधन महसूस कर रहा हो। अन्त में वह एक चाबुक पड़ने पर उठ खड़ा हुआ और उसके अवयव अब भी काँप रहे थे। और फादर माक्यू दोनों की रास एक साथ पकड़ कर उन्हें साथ-साथ अस्तबल की ओर ले गया।

माहे ने पूछा—'गुनो ! अभी वह तैयार नहीं हुआ ?' कटघरे की सफाई जरूरी थी और अलावा इसके अभी ऊपर जाने में दस मिनट की देरी थी। शनैः शनैः स्टाल खाली हो गये और सभी गलियारों से खनिक लौट आये थे। यहाँ लगभग पाँच सौ के करीब लोग जमा हो गए थे जो भीगे हुए थे और ठंड से काँप रहे थे। पेरी अपनी लड़की लायड़ी को पकड़ कर इसलिए पीट रहा थी कि वह समय से पेश्तर स्टाल छोड़कर आई थी। जाचरे ने धीरे से माकेटी के चिकोटी ली और और उसे भी गरमाहट पहुँचाने का मजाक किया। लेकिन असंतोष बढ़ चला था, चवाल और लेवक्यू ने इंजीनियर की धमकी की बात लोगों को बतलाई। ट्रामों का भाड़ा कम कर दिया जायगा, तख्ते बैठाने की मजदूरी अलग से मिला करेगी। और कम्पनी की इस योजना का स्वागत लोगों ने विरोधात्मक गर्जन से किया। जमीन के भीतर लगभग छः सौ मीटर की गहराई में इस छोटे से कोने में विद्रोह के अंकुर उग रहे थे। शीघ्र ही वे अपने को संयत नहीं रख सके; कोयले से सने हुए और विलम्ब होने से ठिठुरे हुए कामगार कम्पनी को कोस रहे थे कि उसने आधों को तो खान की सतह से मार डाला है और शेष आधों को भूखों मार डालना चाहती है। लाँतिये काँपते हुए सब सुन रहा था।

'जल्दी करो, जल्दी करो !' कप्तान रिचोम ने पोर्टरों को अपना आदेश दुहराया।

वह मजदूरों के प्रति सख्ती का बर्ताव न करने की नीयत से उनकी बातें न सुनने का बहाना बनाते हुए ऊपर जाने की तैयारी में जल्दी मचा रहा था। परन्तु खनिकों का असंतोष इतना तीव्र हो गया था कि उसे मजबूरन उनकी ओर मुखातिब होना पड़ा। उसके पीठ-पीछे वे चिल्ला रहे थे कि ऐसा अधिक दिन नहीं चलेगा और एक न एक दिन सब तहस-नहस कर दिया जायगा।

उसने माहे से कहा—'तुम तो समझदार हो माहे ! उनसे कहो कि वे अपनी

जबान रोकें। अगर कोई अधिकार सम्पन्न नहीं है तो उसे कुछ अकल तो होनी चाहिए।'

लेकिन माहे को, जो अब शांत हो रहा था और कुछ-कुछ चिन्तित भी था, हस्तक्षेप की जरूरत नहीं पड़ी। यकायक सब चुप हो गए; निग्रील और डेनार्ट अपने मुआयने से लौटते हुए एक गलियारे से बाहर निकले। दोनों पसीने में सराबोर थे। अनुशासन की आदत के मुताबिक लोग कतारों में खड़े हो गये और इंजीनियर बिना एक शब्द बोले उनके सामने से गुजर गया। एक ट्राम में वह बैठा और दूसरी में हेड कप्तान। पाँच बार सिगनल की आवाज आई और मनहूस खामोशी में कटघरा हवा में उड़ चला।

६

जब चार अन्य मजदूरों के साथ सिकुड़ कर लॉतिये कटघरे में बैठा तो उसने निश्चय सा कर लिया था कि वह सड़कों में भटक कर भूखा मर जायगा क्योंकि इस नरककुंड में, जहाँ पेट भर रोटी जुटा पाना तक असम्भव है, घुल-घुलकर मरने की अपेक्षा तत्काल मर जाना बेहतर है। उसके ऊपर वाली ट्राम में बैठी कैथराइन अब सुखद गरमी पहुँचाने के लिए उसके बगल में नहीं थी और वह इन बेवकूफी के विचारों को भुलाकर चला जाना चाहता था क्योंकि उन लोगों से ज्यादा शिक्षित होने की वजह से वह इन लोगों की तरह भेड़ बनकर नहीं रह सकता और इसका अन्त मालिकों में से किसी एक का गला घोंट कर ही होगा!

यकायक वह चौंधिया सा गया। कटघरा इतनी तेजी से ऊपर आया था कि दिन के प्रकाश में वह भौचक्का-सा हो गया। चमक से उसकी पलकें टिमटिमाने लगी थीं क्योंकि वह चमक से अनभ्यस्त-सा हो उठा था। कटघरे की छड़ों से लगता देखकर उसे बड़ी तसल्ली हुई। एक ठेला-मजदूर ने दरवाजा खोला और मजदूरों का झुंड ट्रामों से बाहर कूद पड़ा।

जाचरे ने ठेला-मजदूर माक्यूट के कान में कहा—'सुनो, क्या हम आज रात वोल्कन जा रहे हैं?'

वोल्कन मोंटमू में एक केफ और नाच घर था। माक्यूट ने हल्की हँसी से अपनी बाईं आँख दबाई। वह भी अपने पिता की भाँति ठिगना और गठीला था। उसका चेहरा उस लापरवाह व्यक्ति का सा था जो कल की चिन्ता किये बगैर आज ही सब खा डालता है। तभी माकेटी अपनी ट्राम से बाहर कूदी और उसने पितृवत् स्नेह से उसके पार्श्व के मांसल भाग में एक धप जमाई।

लॉतिये उस गिरजे के समान ऊँची गुम्बज वाले रिसीवर-हॉल को, जिसे उसने

पहली बार लैंपों के अस्पष्ट प्रकाश में देखा था, बमुश्किल पहचान पाया। हाल सूना सूना और मैला लग रहा था, धूल जमी खिड़कियों से हल्की रोशनी आ रही थी। कोने में एकमात्र इंजन का ताँबा चमक रहा था; जिसके अच्छी तरह ग्रीज लगे इस्पात के रस्से स्याही में डूबे रिबनों की भाँति आ-जा रहे थे। ऊपर घिरनियाँ, उन्हें सहारा देने वाली भीमकाय मचान, कटघरे, ट्रामें और लोहे इत्यादि का तमाम सामान इस हाल को और भी मनहूस बना रहा था। अविश्रान्त गति से चलने वाले चक्कों से धातु का बना फर्श काँप रहा था और कोयले से महीन पाउडर-सा निकल कर काली मिट्टी, दीवारों और यहाँ तक कि बल्लियों तक को काला कर रहा था।

लेकिन चवाल रिसीवर के छोटे से शीशे लगे कार्यालय में काउन्टर की टेबल में झाँकने के बाद क्रुद्ध होकर लौटा। उसे मालूम पड़ गया था कि उनकी दो ट्रामें अस्वीकार कर दी गई है, एक इसलिए कि उसमें नियम के मुताबिक वजन नहीं था और दूसरी इसलिए कि उसका कोयला साफ नहीं था।

'आज का दिन भी चौपट हुआ,' वह चिल्लाया। 'फिर बीस मूज कट गए।' यह इसलिए कि हम सुस्त पाजियों को काम पर ले लेते है जो सुअर की दुम की की तरह बाहें हिलाते है और उसने लाँतिये पर एक तीखी नजर से अपना विचार समाप्त किया।

लाँतिये इसका उत्तर घूंसे से देना चाहता था परन्तु फिर उसने मन ही मन सोचा कि जब वह जा ही रहा है तो इस सब से क्या फायदा? इससे वह फिर शांत हो गया।

बखेड़ा शांत करने की गरज से माहे बोला—'पहले ही दिन से हर काम ठीक-ठीक कर पाना सभव नहीं है। तुम कल आज से भी अच्छा काम करने लगोगे।'

वे सभी खिन्न थे और इस नये झगड़े से परेशान। जब वे अपने लैंप जमा करने लैंप-केबिन से गुजरे तो लेवक्यू लैंप साफ करने वाले को लैंप अच्छी तरह साफ न करने के लिए बुरा-भला कहने लगा। वे ओसारे के पास थोड़ा रुके जहां अब भी आग जल रही थी। उसमें ढेर से कोयले डाल दिये गये थे क्योंकि भट्टी से काफी आँच आ रही थी जिसमें वह बगैर खिड़की वाला बड़ा कमरा इस कदर रक्तिम हो उठा था कि दीवारों पर पड़ने वाली प्रतिच्छाया भी लाल नजर आती थी। वहाँ हँसी-मजाक के कहकहे लग रहे थे और सभी आँच की ओर पीठ किये तब तक अंगों को सेंक रहे थे जब तक कि सूप की तरह उनसे भाफ न निकले। जब उसके पार्श्व का मांसल हिस्सा जलने लगता तो वे पेट की तरफ सेंकते थे। अपने अन्दर की जाँघिया सुखाने के लिए माकेटी ने अपनी ब्रिजिस नीचे कर

ली थी। कुछ छोकरे उसका मजाक उड़ा रहे थे और जब उसने खोलकर अपना गुप्तांग उन्हें दिखा दिया तो वे खिलखिलाकर हँस पड़े।

बक्स में अपने औजार बंद करने के बाद चवाल बोला—'मैं चला।'

सिर्फ माकेटी को छोड़ कर बाकी सब वहीं रहे। माकेटी यह बहाना बनाकर खिसकी कि वे दोनों मोंटसू वापस जा रहे हैं। लेकिन अन्य लोग मजाक कर रहे थे क्योंकि वे जानते थे कि उसका अब माकेटी से कोई वास्ता नहीं।

कैथराइन, जो व्यस्त मालूम पड़ती थी, धीमे स्वर अपने पिता से बातें कर रही थी। माहे को पहले तो आश्चर्य हुआ। बाद में उसने सिर हिलाते हुए रजामंदी जाहिर की और लॉतिये का बडल वापस करने को उसे पुकारा—'सुनो, तुम्हारे पास एक दमड़ी भी नहीं है; एक पखवारे तक तुम भूखों मर जाओगे. क्या मैं तुम्हारे लिए कहीं ले उधार का इन्तजाम करूँ?'

युवक एक क्षण के लिए अनिश्चित सा खड़ा रहा। वह अभी-अभी अपने तीस सूज माँग कर जाने का इरादा कर रहा था लेकिन लड़की के सामने लज्जा ने उसे रोका। वह एक नजर उसकी ओर देख रही थी; शायद वह सोचती होगी कि वह कामचोर है।

माहे कहता गया—'तुम जानते हो, मैं तुम्हें कोई वायदा नहीं कर सकता। वे हमें इन्कार भी कर सकते हैं।'

तब लॉतिये को संतोष हुआ—वे इन्कार करेंगे ही। तब उसे कोई बंदिश नहीं रहेगी। कुछ खा लेने के बाद वह तब भी जा सकता है। इस पर कैथराइन की खुशी, उसकी दोस्ताना नजर और उसकी हँसी देखकर लॉतिये को अफसोस हुआ कि क्यों उसने इन्कार नहीं किया। आखिर इस सबसे फायदा क्या?

जब वे अपने बूट पहन चुके और बक्से बंद कर दिये गये तो माहे ने सब से पहले ओसारा छोड़ा और फिर उसके साथियों ने उसका अनुसरण किया। लॉतिये सब से पीछे था। लेवक्यू और उसके बच्चे भी उस झुंड में शामिल हो लिये। जब वे स्क्रीन शेड से गुजरे तो उन्होंने वहां झगड़ा होते देखा।

यह एक बड़ा ओसारा था जिसकी बल्लियां कोयले की धूल से काली पड़ गई थीं और उसके बड़े-बड़े झापों से लगातार तेज हवा बहा करती थी। रिसीवर के दफ्तर से कोयले की ट्रामें सीधे यहाँ पहुँचाई जाती थीं और उन्हें भारवाहक झूले द्वारा लम्बी लोहे की फिसलनों में गिराया जाता था और उनके दायें-बायें सीढ़ियों में खड़े मजदूर फावड़ों और हेंगी की मदद से साफ कोयला बटोरते थे जिसे बाद में फिसलनुमा मार्ग से ओसारे के नीचे खड़ी रेलवे बेगनों में गिराया जाता था।

दुबली पतली और पीतवर्ण की लड़की फिलोमिना लेवक्यू, जो नीले ऊनी टुकड़े से अपना सर बाँधे थी और जिसके हाथ तथा बाहें कुहनियों तक काली थीं पेरीन की माँ ब्रूली की दबोच में, जिसकी आँखें भयानक और उल्लू की सी थी और मुँह कंजूस के बटुवे की भाँति सिकुड़ा हुआ था, कराह रही थी। दोनों एक दूसरे को गालियाँ दे रही थीं। लड़की बुढ़िया पर आरोप लगा रही थी कि वह उसके पत्थर समेटे लेती है ताकि वह दस मिनट में एक टोकरी न भर सके। उन्हें टोकरी के हिसाब से मजदूरी मिलती थी और उनका झगड़ा बढ़ता ही जा रहा था। दोनों के बाल उड़ रहे थे और सुर्ख चेहरों पर थप्पड़ों से काले निशान बन रहे थे।

जाचरे ने ऊपर से अपनी प्रेमिका से चिल्ला कर कहा—'इस बुढ़िया को अच्छा सबक दो।'

सभी मजदूर हँसने लगे। लेकिन बुढ़िया तेजी से नवयुवक की ओर मुखातिब हुई।

'अब तू आया है, घिनौने जानवर! पहले अपने उन दो पिल्लों को तो सम्भाल जिन्हें तूने इसके पेट से पैदा किया है। इसकी ओर तो देखो! अठारह वर्ष की लड़की सीधी तो खड़ी नहीं हो सकती।'

माहे को अपने लड़के को नीचे उतरने से रोकना पड़ा क्योंकि वह कह रहा था कि मैं इस ककान को देखना चाहता हूँ।

एक फोरमैन ऊपर आया और हेगी चलाने वाले पुनः कोयला गिराने लगे। कोयला गिराने के इस यंत्र-पात्र के पीछे औरतों के पार्श्व का घेर दिखाई दे रहा था। ये हमेशा पत्थरों के लिए लड़ा करती थीं।

बाहर हवा यकायक थम गई थी और भूरे आसमान से नमी लिए हुए ठंड गिर रही थी। खनिकों ने अपने कंधे ऊँचे किये, अपनी बाँहें फैलाईं और बेतरतीब लुढ़कती चाल से रवाना हुए। उनकी चाल से उनकी हड्डियाँ उनकी पतली वर्दियों के बाहर दिखाई दे रही थी। दिन की रोशनी में वे मिट्टी में सने हुए नीग्रो लोगों के झुंड के समान लगते थे। उनमें से कुछ ने अपनी पूरी रोटी नहीं खाई थी और कमीज और जाकेट के बीच बँधी रोटी का बण्डल उनके कूबड़-सा लगता था।

जाचरे ने खीस निपोरते हुए पूछा—'हैलो! वह बाउटलोप जा रहा है।'

लेवक्यू ने बिना रुके अपने साथ रहने वाले इस व्यक्ति से दो बातें कीं। बाउटलोप एक मोटा और पैंतीस वर्ष का भूरे बालों वाला व्यक्ति था जिसके चेहरे से ईमानदारी टपकती थी।

'सूप तैयार हो गया है, लुइस?'

'मैं सोचता हूँ तैयार है।'

'तब तो आज श्रीमती प्रसन्न मालूम पड़ती हैं।'

'हाँ, मेरा भी यही ख्याल है। वह खुश है।'

जमीन काटने वाले अन्य खनिक ऊपर आये। खनिकों को नये पहुँचने वाले झुंडों को एक-एक करके खान निगल रही थी। तीन बजे की खान में उतरने की पाली शुरू हो गई है। ये खनिक नीचे गलियारों में अन्य छुट्टी पाने वाले मलकट्टों का स्थान ग्रहण करते थे। खान में दिन-रात काम चलता रहता था और चुकन्दर के खेतों के नीचे छः सौ मीटर की गहराई में ये कीटवत् मानव चट्टान खोदते रहते थे।

छोटे बच्चे आगे बढ़ गये थे। जॉली ने बीचर्ट को चार सूज का तम्बाकू उधार लेने की एक गुप्त योजना समझाई; जब कि लायडी बड़े अदब से कुछ दूरी कायम रखे हुए उनके पीछे-पीछे जा रही थी। कैथराइन जाचरे और लॉतिये के साथ जा रही थी। वे सभी चुप थे। एवेन्टेज सराय के पास माहे और लेवक्यू पुनः उन लोगों के साथ हो लिये।

माहे ने लॉतिये से कहा—'हम आ गये है। क्या तुम अन्दर चलोगे?'

वे पुनः बँट गए। कैथराइन एक क्षण स्थिर खड़ी हो गई। उसने एक बार अपनी बड़ी-बड़ी आँखों से बड़े मोहक तरीके से नवयुवक की ओर निहारा और फिर हँसती हुई अन्य लोगों के साथ बस्ती की ओर जाने वाली सड़क मे गायब हो गई।

यह सराय दो सड़कों के चौराहे पर गाँव और खान के बीच मे बनी थी। यह दुमंजिला ईंट की बनी हुई इमारत थी जिसे सफेदी से पोत दिया गया था और इसके दरवाजे पर पीले अक्षरों से लिखा हुआ एक साइनबोर्ड कील से जड़ा हुआ था। जिसमे 'एल एवेन्टेज; लाइसेंसदार—रसेन्योर' लिखा था। इसके पीछे झाड़ियों से घिरा खेल का मैदान था। कम्पनी अपने विस्तृत क्षेत्र के बीच मे अवस्थित इस संपत्ति को खरीदने की हर तरह कोशिश कर हार गई थी। वह बोरो के प्रवेश द्वार पर बनी इस सराय से बहुत परेशान थी।

माहे ने लॉतिये से कहा—'अन्दर जाओ।'

छोटा सा बैठका सफेद पुता था लेकिन उस समय वहाँ कोई नहीं था। उसमे तीन टेबलें और एक दर्जन कुर्सियाँ थीं। रसोई घर के खाना पकाने की बराबर जगह पर एक काउंटर भी वहाँ बना था जिसके ऊपर लगभग एक दर्जन गिलास, तीन शराब की बोतलें, एक शराब उड़ेलने का पात्र और एक छोटा सा जस्ते का बक्स, जिसमें पकड़ने का एक हत्था लगा हुआ था, रखा था। इसके अलावा कमरे में अन्य कोई लेवल या कोई खेल का सामान नहीं था। आँच जलाने के धातु के बने

पालिशदार और चमकीले स्थान पर आँच धीरे-धीरे जल ही थी। दीवारों और फर्श के जोड़ पर चारों ओर सफेद बालू की पतली परत पड़ी थी जो इस सीलन वाली जमीन की नमी सोखती थी।

'एक गिलास देना' माहे ने वहां खड़ी एक लड़की को, जो पड़ोस की लड़की थी और कभी-कभी यहाँ काम करने आया करती थी आदेश दिया और पूछा—'क्या रसेन्योर अन्दर है ?'

लड़की ने नल खोलते हुए उत्तर दिया कि मालिक संभवतः जल्दी ही लौटें। माहे ने धीरे-धीरे लेकिन एक बारगी आधा गिलास खाली कर दिया ताकि उसके गले में भरी हुई धूल साफ हो जाय। उनके अपने साथी के लिए कुछ नहीं मँगाया। एक दूसरा ग्राहक, जो कि एक उदास चेहरे वाला खलिक था, धीरे-धीरे चुपचाप अपनी टेबल पर बियर पी रहा था। एक अन्य ग्राहक आया और उसने संकेत से शराब माँगी जिसे पीने के बाद वह भुगतान कर बिना एक शब्द बोले वहाँ से निकल गया।

अब एक अड़तीस वर्ष का हट्टा-कट्टा, गोल तथा शेव किये चेहरे वाला हँसमुख व्यक्ति वहाँ आया। यही रसेन्योर था, जो पहले एक मलकट्टा था और जिसे कम्पनी ने तीन बरस पहले एक हड़ताल के सिलसिले में निकाल दिया था। वह एक कुशल कामगार और अच्छा वक्ता था जो हर विरोध में सब की अगुवाई करता था। अन्त में वह असंतुष्ट लोगों का नेता बन गया। उसकी पत्नी के नाम पहले से ही लाइसेंस था और जब वह नौकरी से निकाल दिया गया तो वह स्वयं सराय-मालिक बन गया; कुछ रुपया पा जाने पर उसने कम्पनी को बराबर परेशान करने के उद्देश्य से बोरो के सामने अपनी सराय खोल ली। अब उसकी अच्छी चलने लगी थी; वह केन्द्र स्थान बन गई थी और अपने पुराने साथियों के दिलो-दिमाग में धीरे-धीरे कम्पनी के खिलाफ विद्वेष की भावना भर कर वह सम्पन्न बन गया था।

माहे ने उसे देखते ही कहा—'इस नवयुवक को आज सुबह मैंने काम पर लिया है। क्या तुम्हारे दो कमरों में से एक खाली है, और क्या तुम इसे एक पखवारे तक उधार खिला सकोगे ?'

रसेन्योर के चौड़े मुंह में यकायक संदेह का भाव आया। उसने एक नजर लॉतिये की ओर देखकर उसे आँका और बिना कोई लाचारी जाहिर किये बोला—'मेरे दोनों कमरे भरे हैं। मैं नहीं दे सकता।'

नवयुवक इस अस्वीकृति की उम्मीद ही करता था परन्तु इस इन्कारी से उसे तकलीफ पहुँची और उसे चले जाने के विचार से उत्पन्न होने वाले आकस्मिक

दुख के अनुभव से आश्चर्य हुआ। कोई बात नहीं; जब वह अपने तीस सूज पा जायगा तो वह चला जायगा। दूसरी टेबल पर बैठा पीने वाला खनिक जा चुका था। दूसरे लोग एक-एक कर अपना गला साफ करने आते और पुनः उसी ढुलकती गति से सड़क पर निकल जाते थे। यह बिना हर्ष और विषाद के आवश्यकता की साधारण पूर्ति मात्र थी।

रसेन्योर ने एक खास लहजे में माहे से पूछा—'तब कोई नई खबर नहीं है ?' माहे छोटे-छोटे घूंट मे अपनी बीयर खत्म कर रहा था। उसने अपना सिर घुमाया और देखा कि सिर्फ लॉतिये ही उसके करीब है।

'हाँ, तख्ते बैठाने के प्रश्न को लेकर पहले से अधिक गुल-गपाड़ा मचा है।'

तब उसने उसे सारी दास्तान सुनाई। भावातिरेक से सराय-मालिक का चेहरा लाल हो उठा और उसकी आँखों से ज्वाला सी निकलने लगी। अन्त में उससे न रहा गया—

'ठीक है, ठीक है। अगर उन्होंने ट्राम की मजदूरी घटाई तो वे कहीं के नहीं रहेंगे।'

लॉतिये ने उसे टोंका लेकिन वह उसकी ओर घूर-घूर कर देखता हुआ बोलता चला गया। वह बगैर किसी का नाम गिनाये मैनेजर मोशिये हेनेब्यू, उसकी पत्नी, उसके भतीजे लिटिल निग्रोल की बातें करता हुआ बार-बार दुहरा रहा था कि ऐसा अधिक दिन नहीं चल सकता। किसी दिन सब ध्वस्त हो जायगा। दुख:-दैन्य बहुत बढ़ गया है; और उसने बताया कि कारखाने बंद होते जा रहे है; मजदूर काम पर से हटाये जा रहे हैं। पिछले महीने मे मैंने छः पौण्ड से ज्यादा पाव रोटी एक ही दिन मे बाँटी है। परसो परले रोज मैंने सुना था कि मोशिये डेन्यूलिन की पड़ोसी खान मे भी काम बमुश्किल चला पा रहे हैं। मुझे लिली से भी चिन्ताजनक विवरण से भरे खत मिले हैं।

उसने धीरे से कहा—'तुम जानते हो खत उसके पास से आये हैं जो एक दिन माँझ को यहाँ आया था।'

यकायक वह बोलते-बोलते रुक गया। कमरे में एक दुबली-पतली, लम्बी नाक तथा गुलाबी गालों वाली लम्बे कद की महिला ने प्रवेश किया। यह रसोन्योर की पत्नी थी जो अपने पति की अपेक्षा अधिक क्रान्तिकारी राजनीतिक विचार रखती थी।

वह बोली—'प्लूचर्ट का पत्र। आह! अगर यह व्यक्ति मालिक होता तो स्थिति जल्दी ही सुधर जाती।'

लॉतिये एक क्षण के लिये सुनता रहा; वह समझ गया और भुखमरी तथा

बदले की भावना के इन विचारों ने उसे उत्तेजित कर दिया। यकायक इस नाम ने उसे चौंका दिया। उसने जोरों से इस प्रकार कहा मानो स्वतः से बातें कर रहा हो—'प्लूचर्ड, मैं उसे जानता हूँ।'

वे सभी उसकी ओर देखने लगे। उसे कहना पड़ा—

'हाँ मैं एक इंजनमैन हूँ। लिली में वह मेरा फोरमैन था। बड़ा योग्य आदमी है वह। अक्सर मेरी उससे बातचीत होती थी।'

रसोन्योर ने पुनः बड़े गौर से उसे आँकने की कोशिश की और उसके चेहरे में तेजी से परिवर्तन आया जो यकायक सहानुभूति का था। अन्त में उसने अपनी पत्नी से कहा—

'माहे इसे मेरे पास लाया है; यह माहे के साथ पुटर है। यह जानना चाहता है कि ऊपर इसके लिए कोई कमरा खाली है और क्या हम इसे एक पखवारे के लिये उधार खिला सकेंगे?'

तब चार वाक्यों में बात तय हो गई। ऊपर एक कमरा खाली था; उसका किरायेदार सुबह खाली कर चला गया था। सराय मालिक, जो बहुत ही उत्तेजित था, अधिक खुलकर बातें करने लगा था। वह बारबार दुहरा रहा था कि अन्य लोगों की तरह बिना कोई माँग रखे मैं मालिकों से क्या संभव है यह पूछता हूँ? क्योंकि मैं जानता हूँ कि माँगों का पूरा होना बहुत कठिन है। उसकी पत्नी उससे असहमत थी, वह न्याय और विवेकपूर्ण न्याय की बात कह रही थी।

माहे ने बीच में बात काटते हुए कहा—'अच्छा, गुड ईवनिंग। परन्तु इस सबसे लोगों का नीचे खान में जाना नहीं रुकता और जब तक लोग वहाँ जाते हैं उन्हें वहाँ मर कर भी काम करना होगा। अपने को ही देख लो। इन तीन वर्षों में, जब से तुम बाहर हो, कितने स्वस्थ नजर आते हो।'

रसेन्योर ने संतोष के साथ उत्तर दिया, 'निस्संदेह मैं बहुत अच्छा हो गया हूँ।'

लॉतिये माहे को धन्यवाद देता हुआ उसे पहुँचाने दरवाजे तक गया। माहे ने बिना बोले-चाले सर हिला दिया। नवयुवक उसे कष्ट के साथ सड़क से बस्ती तक चढ़ कर जाता देखता रहा। मदाम रसेन्योर ग्राहकों को सामान पहुँचाने में व्यस्त थी इसलिए उसने लॉतिये से कुछ देर इन्तजार करने को कहा ताकि खाली होने पर वह उसे कमरा दिखा सके और युवक अपनी सफाई कर सके। क्या उसे ठहरना चाहिए? उसने पुनः एक प्रकार की झिझक और परेशानी महसूस की जिसमें उसे खुली ऊँची-नीची सड़कों की स्वच्छन्दता, दिन में सूर्य की किरणों के नीचे की भूख और स्वयं अपने मालिक होने की खुशी के खत्म हो जाने का अफसोस हुआ।

उसे ऐसा प्रतीत हो रहा था कि उसे खान में पहुँचे और काम करते-करते मुद्दत गुजर गई है। वह फिर से शुरू से स्थिति के विवेचन में डूब गया : यह बहुत ही अन्याय और कष्ट साध्य है। उसका मानवीय गौरव एक पददलित और अंधे जानवर का सा जीवन बिताने के विचार का विरोध कर रहा था।

जब कि लॉतिये इस तर्क-वितर्क मे डूबा हुआ था उसकी आँखें सामने फैले हुए विस्तृत मैदान में भटक रही थीं, जहाँ अब धीरे-धीरे हर वस्तु स्पष्ट नजर आने लगी थी। उसे आश्चर्य हुआ कि जब बुड्ढे बोनेमॉ ने अंधकार की ओर इशारा करते हुए उसे बताया था तब उसने कल्पना तक नही की थी कि क्षितिज इस प्रकार का होगा। अपने सामने उसने वोरो को जमीन के एक टुकड़े मे बसा देखा। उसकी लकड़ी और ईंट की इमारतें, काला स्क्रीन शेड, सलेटी पत्थर से ढंकी बुरजी, इंजन का कमरा और लम्बी, लाल चिमनी वहां एक साथ दिखाई-दे रहे थे। लेकिन इन इमारतों के इर्द-गिर्द जो खाली जमीन फैली थी, उसकी उसे कल्पना नहीं थी कि इतनी अधिक होगी। वह हवा के साथ कोयले का चूर गिरते रहने से स्याही के गहरे समुद्र सी लगती थी और उसमें फुट-ब्रिजों तक जाने वाली रेलवे लाइन बड़े-बड़े बाँधों की तरह चमकती थी। एक कोने में जमा किये गये लकड़ी के तख्ते जंगल में सूखी घास की ढेर के समान प्रतीत होते थे। खान का दायाँ किनारा यहां से अदृष्य था। फिर गेहूँ और चुकन्दर के खेतों का अटूट सिलसिला शुरू होता था और इस समय कोई भी फसल उनमे नहीं बोई गई थी। कही-कही पानी वाली जगहों मे मामूली हरियाली थी। बहुत दूरी पर छोटे पीले धब्बों के रूप मे उत्तर में मार्सेनीज, दक्षिण मे मोंटसू और पूर्व मे क्षितिज से लगा-सा बरडामे का जंगल था जिसमे आजकल पतझड़ था और सब पेड़ ठूंठ से खड़े दिखाई देते थे। इस जाड़े की दोपहर की पीली धूप और नीले आसमान के नीचे ऐसा मालूम पड़ता था कि वोरो की तमाम कालिमा, उसकी तमाम उड़ती हुई कोयले की धूल इस मैदान मे गिरी है और उसने पेड़ों, सड़कों और मिट्टी को अपने मे सराबोर कर लिया है।

लॉतिये को खाई के भीतर काटी गई नहर की धारा को देख कर आश्चर्य हो रहा था जो रात्रि मे उसे नही दीखी थी। वोरो से मार्सेनीज तक यह नहर सीधी एक सफेद रिबन की भाँति दो लीग लम्बी चली गई थी और उसके किनारे-किनारे हरी-भरी निचली जमीन पर लम्बे पेड़ों की कतारें थीं और उसके पानी में सेंदूर की रेखा की भांति नावें तैर रही थीं। एक खान के पास एक घाट बना हुआ था जहां फुट-ब्रिज के पास से ट्रामों से लदी नावें रुका करती थीं। बाद मे नहर ने मोड़ ले लिया था और दलदल की ओर ढाल बन गया था। इस समूचे चौरस

मैदान का तत्व रेखांकित इस नहर में प्रतीत होता था जो उसे एक चौड़ी सड़क के रूप में काटती कोयला और लोहा ढोती थी।

लॉतिये की निगाह नहर से ऊँचाई पर बसी हुई बस्ती पर गई जिसकी लाल खपरैलें वह पहचान सका था। तब उसकी निगाह पुनः बोरों की ओर चूने के ढालवाँ कगार पर गई जहाँ दो बड़े-बड़े ईंट बनाने के भट्टे जल रहे थे। कम्पनी की रेलवे लाइन की एक शाखा, खान के प्रयोग के लिये नहर के एक बाड़े के पीछे से गुजरी थी। वे जरूर बुड्ढे खनिकों को जमीन काटने को भेजते होंगे। मजदूरों द्वारा खींची जाने वाली एक ट्रक से सिर्फ एक बार चीख की सी आवाज आई। अब अज्ञात अंधकार, अस्पष्ट बिजली की सी कड़क और रहस्यमय नक्षत्रों का जलना कोई विचित्र नहीं मालूम पड़ रहा था। दूर, लोहा गलाने वाली भट्टियां और कोयले के भट्टे पीले नजर आरहे थे। पानी निकालने वाले पंप की गहरी साँस लेने की भोंडी आवाज सुनाई दे रही थी जिसकी भूरे रंग की भाफ वह देख सकता था।

लॉतिये ने यकायक कोई निश्चय-सा किया। शायद उसने बस्ती के प्रवेश द्वार पर कैथराइन की स्पष्ट आँखों को पुनः देख लिया हो या शायद बोरों से विद्रोह की हवा का झोंका आया हो। वह नहीं जानता था। लेकिन उसकी इच्छा हुई कि वह खान में नीचे पुनः उतरे, कष्ट उठाये और संघर्ष करे। उसने मन ही मन क्रोधित होकर उन लोगों के बारे में सोचा जिनके बारे में बोनेमाँ ने बताया था कि वे दबके हुए दानव देवताओं की तरह बैठाये गये हैं जिनको दस हजार भूखे मजदूर अपना रक्त-माँस चढ़ाते है परन्तु वे उन्हे कभी देख नही पाते।

दूसरा भाग

१

मोंटसू से दो किलोमीटर पूर्व में, जैसली रोड पर ग्रीगोरे की जमींदारी पायोलेन अवस्थित थी। इस जमींदारी मे बना हुआ बंगला बिना किसी स्टाइल का एक बड़ी चौकोर इमारत थी जो पिछली शताब्दी के प्रारंभ में बनी थी। पहले इस जमींदारी की बहुत बड़ी सम्पत्ति मे से अब लगभग तीस हेक्टर जमीन बच गई थी, जो चारों ओर से दीवारों मे घिरी थी और जिसकी रेख-देख आसानी से हो सकती थी। इसके बाग और रसोई वाले बगीचे की, उसके बेहतरीन फलों और शाक-सब्जी के लिए सर्वत्र चर्चा थी। शेष मे कोई बगीचा नहीं था, सिर्फ एक छोटा सा जंगल था। दरवाजे से बरामदे की बरसाती तक तीन सौ मीटर के रास्ते में नींबू के पुराने पेड़ों की कतारें थी जो मार्सेनीज से ब्यूगनीज तक फैले इस मैदान की एक खास वस्तु थी।

उस दिन ग्रीगोरे परिवार प्रातःकाल आठ बजे उठा। आमतौर से यह लोग कभी भी नौ बजे से पहले नहीं उठते थे परन्तु पिछली रात के तूफान ने उनके आराम में खलल डाला था। ग्रीगोरे तो उठते ही यह देखने चला गया था कि पिछली रात की हवा ने उनका ज्यादा नुकसान तो नहीं किया और मदाम ग्रीगोरे अपने स्लीपर और फलालेन का ड्रेसिंग गाउन पहने नीचे रसोई-घर में चली गई वह अट्ठावन वर्ष की एक नाटी परन्तु तन्दुरुस्त महिला थी परन्तु उसके चमकीले सफेद बालों के नीचे अब भी उसका चौड़ा, गुड़िया का सा मुँह दीखता था।

उसने रसोई बनाने वाली नौकरानी को आवाज दी—'मलानो, मैं सोचती हूँ तुम ब्रीओश (एक प्रकार का केक) आज सुबह के लिए बनाने जा रही हो क्योंकि गुंधा हुआ आटा तैयार है। मदाम ओसली अभी आधे घंटे से पहले तो उठेंगी नहीं और वह इसे अपने चाकलेट के साथ खा सकेगी। ओह ? बड़ा अचम्भा होगा उसे।

रसोई बनाने वाली एक दुबली पतली बुढ़िया औरत थी जिसे इन लोगों के यहाँ नौकरी करते तीस वर्ष हो गए थे। वह हँसी और बोली कि निस्संदेह, मदाम को बड़ा ताज्जुब होगा। स्टोव जल चुका है और भट्टी गरम हो गई होगी; और फिर होनोरीन भी थोड़ा बहुत मेरी मदद करेगी।

होरोरीन, जो बीस वर्ष की उम्र की लड़की थी, बचपन से इन्हीं लोगों के साथ पली थी और वह घर में नौकरानी का काम करती थी। इन दो औरतों के अलावा एक मात्र अन्य नौकर एक कोचवान था जिसका नाम फ्रेंसिस था और उससे भारी काम भी लिया जाता था। एक माली और उसकी औरत बगीचे में शाक-सब्जी, फल-फूल और मुर्गी पालन का काम देखते थे। और यहाँ नौकरी पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही थी। इसलिए इस नन्हीं-सी दुनिया में यह लोग एक बड़े परिवार की भाँति प्रेम भाव से रहते थे।

मदाम ग्रीगोरे ने ब्रीओश की यह योजना बिस्तर पर पड़े-पड़े ही बना ली थी, वह गुधे आटे को भट्टी में चढ़ाते देखने के लिए रुकी रही। रसोई घर बहुत बड़ा था और उसकी सफाई तथा यहाँ भरे रखे हुए बड़े-बड़े मटके, बर्तन तथा सौसपेन इत्यादि का भंडार देखकर सहज ही यह अनुमान लगाया जा सकता था कि यह महत्वपूर्ण कमरा है। प्रचुर मात्रा में रसद सामग्री हुकों में टँगी या आलों में रखी हुई थी।

'और इसे खूब मुर्ख होने देना,' मदाम ग्रीगोरी ने भोजन के कमरे में प्रवेश करते हुए कहा।

समूचे मकान में गरमी पहुँचाने के लिए गरम हवा के स्टोव के अलावा, इस कमरे को कोयले की आँच अधिक सुखद बना रही थी। इसमें एक बड़ी मेज, कुर्सियाँ, एक महोगनी की लकड़ी का साइन बोर्ड तथा दो आराम कुर्सियों के अलावा, जिसमें यह दम्पति आराम से बैठे हुए घंटों गुजारा करते थे, कोई तड़क-भड़क और ऐश का सामान नहीं था। वे ड्राइंग रूम में कभी नहीं जाते थे और यहीं पारिवारिक वतावरण में बैठना पसंद करते थे।

इसी बीच मोशियो ग्रीगोरे एक मोटी ऊनी जाकेट पहने लौट आया। वह साठ वर्ष का स्वस्थ, हँसमुख स्वभाव का ईमानदार और अच्छे नाक-नक्शे वाला व्यक्ति था तथा उसके बाल भी घुंघराले और सफेद थे। वह कोचवान और माली से मिला था; कोई उल्लेखनीय नुकसान उनका नहीं हुआ था; सिर्फ एक चिमनी का बर्तन गिर गया था। प्रतिदिन वह 'पायोलेन' जमींदारी का एक चक्कर काटना पसंद करता था। वह इतनी ज्यादा बड़ी भी

नहीं थी कि उसे ज्यादा चिन्तित होना पड़े और साथ ही उसे उससे उसके मालिक होने की खुशी प्राप्त होती थी।

'और सीसिल ?' उसने पूछा—'वह अभी उठी नहीं ?'

'मैं बता नहीं सकती,' उसकी पत्नी ने उत्तर दिया 'मेरा ख्याल है कि मैंने उसे घूमते सुना है।'

मेज लगा दी गई थी, सफेद कपड़े पर तीन कप रखे हुए थे। उन्होंने होनोरीन को यह देखने भेजा कि मदाम ओसली क्या कर रही है ? लेकिन वह तत्काल लौट आई। अपनी हँसी रोकते हुए और अपनी आवाज को गंभीर बनाते हुए, मानो वह ऊपरी कमरे से जोर से पुकार रही हो, उसने कहा—'ओह ! अगर मोशिये और मदाम ओसली को देखने की कृपा करें कि वह कैसे सो रही है, ओह ! देवदूत की तरह सो रही है। कोई इसकी कल्पना नहीं कर सकता ! उसे देख कर तबियत खुश हो गई।'

ग्रीगोरे दम्पति ने एक दूसरे की ओर बड़ी भोली नजर से देखा। ग्रीगोरे ने हँसते हुए कहा—

'तुम भी चलो, देखोगी ?'

'बेचारी, नन्ही, भोली बच्ची !' वह बोली—'मैं आ रही हूँ।'

और वे दोनों साथ-साथ ऊपर गये। यह कमरा इस घर में एकमात्र प्रसाधन सम्पन्न कमरा था। उसके परदे नीले सिल्क के थे और फर्नीचर दूधिया सफेद, जिसमें नीला बोर्डर था। यह एक बिगड़े हुए बच्चे की जिद थी जिसे उसके माँ-बाप पूरा करते थे। बिस्तर पर पड़ी सफेद चादर में, जिसमें अब पर्दा हटा दिये जाने से आधी रोशनी हो गई थी, एक नवयुवती अपनी नंगी बांह में अपना गाल टिकाये सो रही थी। वह खूबसूरत नहीं थी लेकिन अठारह वर्ष की उम्र में पूर्ण विकसित और काफी तन्दुरुस्त थी। उसकी ओढ़नी नीचे को खिसक गई थी और वह इतने हल्के-हल्के साँस ले रही थी कि उसके साँस लेने और साँस छोड़ने से उसकी छाती में किसी प्रकार की प्रक्रिया होती मालूम नहीं देती थी।

माँ धीरे से बोली—'उस भयंकर आँधी से बेचारी अपनी पलक तक न झपका पाई होगी।'

पिता ने भाव-भंगिमा से पत्नी को चुप रहने को कहा। दोनों ने बड़े प्यार से झुक कर लड़की का नग्न कौमार्य देखा जिसे वे अब तक चाहते थे परन्तु जब उन्हें इसकी कोई आशा नहीं रह गई थी तब वह आयी थी। उन्होंने उसे पूर्ण स्वस्थ पाया, वह ज्यादा मोटी भी नहीं हुई थी, उन्हें हमेशा इस बात का मलाल रहता था कि वे उसे अच्छी तरह नहीं खिला पाते हैं। लड़की उनको अपने पास

महसूस किये बिना प्रगाढ़ निन्द्रा में थी। लेकिन जरा सी आवाज से उसके भाव रहित चेहरे में परिवर्तन आया। वे डरे कि कहीं वह जाग न जाय और दबे पाँव कमरे से बाहर आ गए।

मोशिये ग्रीगोरे ने दरवाजे पर आकर कहा, 'चुप ! अगर वह सोई नहीं तो हमें उसे सोने देना चाहिए।'

'जब तक वह चाहे, प्यारी बच्ची,' मदाम ग्रीगोरे ने सहमति प्रकट की। 'हम इन्तजार करेंगे।'

वे नीचे चले गये और डाइनिंग रूम में आराम कुर्सियों पर बैठ गये; जबकि नौकरानियाँ मदाम ओसली की गहरी नीद पर हंसती हुई बिना किसी प्रकार की शिकायत के चाकलेट को स्टोव पर चढ़ा कर बैठ गई। ग्रीगोरे एक अखबार लेकर पढ़ने लगा और मदाम एक बड़े ऊनी शाल को बुनने लगी। वहाँ काफी गरमी थी और शांत समूचे घर में एक शब्द भी नहीं सुनाई दे रहा था।

ग्रीगोरे की समस्त पूँजी, जिसकी आमदनी लगभग चालीस हजार फ्रेंक प्रति वर्ष थी, मोंटसू खानों के एक शेयर में लगी हुई थी। वे आसानी से इस पूंजी के प्रादुर्भाव और कम्पनी के निर्माण की तिथि बता सकते थे।

पिछली शताब्दी के अन्त में लिली और वेलेंसिनीज के बीच कोयले की खानों की खोज के पीछे लोग पागल थे। उन लोगों की सफलता ने, जिन्होंने बाद में अंजिन कम्पनी बनाई, लोगों को दीवाना बना दिया। हर क्षेत्र में जमीन का निरीक्षण होने लगा। रातों-रात सोसाइटियाँ बनने लगीं। परन्तु सभी हठी खोज करने वालों में वेरन डेसरुमेक्स ने अपनी बहादुरी और बुद्धि से सर्वाधिक ख्याति प्राप्त की। लगभग चालीस वर्ष तक वह बिना हिम्मत हारे संघर्ष करता रहा जब कि बड़ी-बड़ी विघ्न बाधायें उसके सामने आई। प्रारंभिक खोजें असफल रहीं, महीनों काम के बाद नयी खानें बन्द कर देनी पड़ीं, जमीन धँसने से बोरिंग भर गई, यकायक पानी भर जाने से मजदूर डूब गये, हजारों-लाखों फ्रेंक मिट्टी में मिल गये; फिर प्रबन्धकों के आपस के झगड़े, शेयर होल्डरों का पलायन, जमीन के मालिकों के साथ संघर्ष की कठिनाइयाँ आई। वे लोग पहले उनके साथ संधि किये बिना शाही एकाधिकार मानने को तैयार नहीं थे। अन्त में उसने 'डेसरुमेक्स फुकेनिक्स एण्ड कम्पनी' की स्थापना की ताकि मोंटसू की खानों का फायदा उठाया जाय। प्रारंभ में खानों से बहुत थोड़ा लाभ मिला जब कि 'कोमट डे कॉज' और 'कोर्नील एण्ड जेनार्ड कम्पनी' नामक दो पड़ोसी कम्पनियों ने उन्हें तीव्र प्रतियोगिता के नीचे दबा मारा। सौभाग्यवश २५ अगस्त १७६० को तीनों कम्पनियों में एक संधि हो गई और वे एक इकाई के रूप में आ गयीं। मोंटसू माइनिंग कम्पनी का

निर्माण किया गया जो अब तक वैसे ही चला आ रहा है। उन्होंने सम्पूर्ण संपत्ति को, उस समय सिक्के के आधार पर चौबीस सूज में विभाजित कर लिया और प्रत्येक सू को बारह दीनारों में विभाजित किया गया। इस प्रकार दो सौ अठासी दीनार बनें, चूँकि एक दीनार दस हजार फ्रेंक की पूँजी का प्रतिनिधित्व करता था इस प्रकार लगभग तीस लाख फ्रेंक की पूँजी बनी। डेसरुमेक्स मर रहा था, लेकिन वह विजयी हुआ और उसे छः सूज तथा तीन दीनार हिस्से में मिले।

उन दिनों बेरन 'पायोलेन' का मालिक था और उसकी जमींदारी के अन्तर्गत तीन सौ ट्रेक्टर जमीन थी। उसके कारिंदे के रूप में सीसिल के बाप लियोन ग्रीगोरे का परदादा हेनरी ग्रीगोरे वहाँ नौकर था। जब मोरमू संधि हुई तो हेनरी के पास पचास हजार फ्रेंक की पूंजी जमा थी और उसने डरते-डरते अपने मालिक के अटूट विश्वास के आगे झुकते हुए दस हजार फ्रेंक का एक दीनार खरीद लिया गोकि उसे फिर भी डर था कि वह अपने बच्चों को इस रकम से वंचित कर रहा है। वस्तुतः उसके लड़के एगीन को बहुत कम लाभांश मिला और चूंकि वह भी बुर्जुआ बन गया था और अपनी पैतृक सम्पत्ति का चालीस हजार फ्रेंक एक अन्य कम्पनी में लगा कर खो चुका था इसलिए उसे गरीबी में जीवन बिताना पड़ा। परन्तु दीनारों का ब्याज शनैः शनैः बढ़ता गया। फीलिमीन के जमाने में उनका भाग्य चेता और उसने अपने दादा के बचपन के स्वप्न को 'पायोलेन' जमीदारी खरीद कर मूर्त रूप दिया। फिर बुरे दिन आये। क्रांतिकारी संकट के अन्त तक इन्तजार जरूरी था। और बाद में नेपोलियन के पतन के बाद लीओन ग्रीगोरे को अपने पितरों की छोटी सी पूँजी का असाधारण लाभ मिलने लगा। कम्पनी की समृद्धि के साथ-साथ यह दस हजार फ्रेंक भी कई गुना बढ़ गए। १८२० में उनसे शत प्रतिशत दस हजार फ्रेंक लाभ मिलने लगा। १८४४ में उनमें बीस हजार और १८५० में चालीस हजार फ्रेंक मिले। पिछले दो वर्षों में लाभांश पचास हजार फ्रेंक तक पहुँच गया था। दीनार की कीमत एक शताब्दी में तीन सौ गुना हो गई थी जो लिली में दस लाख फ्रेंक आँकी जाती थी।

जब दीनार की कीमत दस लाख फ्रेंक पहुँच गई तो ग्रीगोरे को उसे बेच देने की सलाह दी गई परन्तु उसने अपने बाप-दादा की भाँति ही हँस कर उसे टाल दिया। छः महीने बाद एक औद्योगिक संकट आया, दीनार की कीमत छः लाख फ्रेंक तक गिर गई लेकिन वह फिर भी हँसता रहा क्योंकि उस परिवार में उनकी खानों के बारे में अटल विश्वास था। पुनः कीमत बढ़ेगी; ईश्वर स्वयं अटल नहीं है। उसके इस धार्मिक विश्वास के साथ उस पूँजी के प्रति आभार

प्रदर्शन की भावना थी जिसने इस परिवार को एक शताब्दी तक बगैर कोई काम-काज किये खिलाया था। यह एक प्रकार की उनकी आराधना थी जिसे पिता से लेकर पुत्र तक करते चले आ रहे थे। भाग्य पर अविश्वास कर उसे क्यों अप्रसन्न किया जाय ? उनकी इस पैतृक विरासत की तह में एक प्रकार का अंधविश्वास और भय छिपा था कि अगर अपना शेयर बेच कर उसको ड्राअर में छिपाया तो वे हजारों-लाखों दीनार गल जायंगे। वह उन्हें खान में ही ज्यादा सुरक्षित मालूम पड़ते थे जहाँ से भूखे खनिकों की पीढ़ी दर पीढ़ी उनकी आवश्यकता के अनुसार रोज थोड़ा-थोड़ा उनके लिए उन्हें निकालती थी।

अलावा इसके घर में खुशी बरसती थी। मोशिये ग्रीगोरे ने बहुत छुटपन में ही मार्सेनीज के एक दवाफरोश की गरीब लड़की से शादी कर ली थी जिसे उसने खूब सजा-सँवार कर रखा और बदले में उसने उसे खुशी दी। उसने अपने को घरेलू काम-काज में ही डुबा लिया और अपने पति की पूजा में रहने लगी क्योंकि उसके अलावा वह और कोई वस्तु नहीं चाहती थी। अभिरुचि की विभिन्नता ने उन्हें कभी जुदा नहीं किया, उनकी इच्छायें अधिकाधिक आराम के एक विचार में केन्द्रित थीं; और वे प्रेम-पूर्वक एक दूसरे की सेवा करते हुए चालीस वर्षों से एक साथ रह रहे थे, चालीस हजार फ्रेंक बड़ी शांति से खर्च किये जाते थे, उनका जीवन नियमित था। बाद में बचत सीसिल में खर्च होने लगी जिसके पैदा होने से कुछ समय के लिए बजट गड़बड़ा गया था। वे अब भी हर इच्छा को पूरा करते थे—एक दूसरा घोड़ा, दो और गाड़ियाँ ले ली गई थीं और प्रसाधन सामग्री पेरिस से भेजी जाती थी। इसमें उन्हें एक खुशी और मिलती थी; वे अपनी लड़की के लिए हर चीज जरूरी समझते थे। गोकि उन्हें प्रदर्शन का इतना भय था कि वे स्वयं अपनी जवानी के फैशन में अपने को सीमित रखते थे। हर अलाभकर खर्च उन्हें बेवकूफी मालूम पड़ती थी।

यकायक दरवाजा खुला; और किसी ने जोर से पुकारा 'हैलो ! अब क्या कर रहे है ? बिना मेरे ही नाश्ता कर लिया !'

यह सीसिल थी जो सीधे बिस्तर से उतर कर चली आ रही थी, उसकी पलकें नींद से भारी थीं। उसने सिर्फ अपने बाल ठीक किये थे और एक ऊनी ड्रेसिंग-गाउन पहना था।

'नहीं-नहीं !' माँ ने कहा—'तुम देख रही हो हम सब इन्तजार कर रहे है। क्या रात में तूफान से तुम्हें नींद आई, बेचारी बच्ची ?'

लड़की ने अपनी माँ की ओर बड़े आश्चर्य से देखा।

'क्या हवा चली थी ? मैं इस बारे में कुछ भी नहीं जानती। मैं सोती ही रही।'

तब उन्होंने उसकी बात को मजाक समझा और वे सब हँसने लगे। नाश्ता लाने वाली नौकरानियाँ भी खिलखिला कर हँस पड़ी। मदाम ओसली बारह घंटे लगातार सोती रही इस विचार से समूचा घर बहुत मुदित था। ब्रीओस को देख कर उनके चेहरे और भी खिल गये।

'क्या ! यह पका भी लिया गया ?' सीसिल बोली—'यह मेरे लिए वस्तुतः आश्चर्य है ! चाकलेट के साथ गरम-गरम खाने मे बड़ा मजा आयेगा।'

गरम-गरम चाकलेट की प्लेटों पर वे लोग जुट गए। बड़ी देर तक ब्रीओस की तारीफ रही। मलानी और होनोरीन उसे पकाने की विधि के बारे मे विस्तार पूर्वक उन्हें समझाती रही और कहने लगी कि जब मालिक इतने चाव से खाते हों तभी केक बनाने मे मज़ा है।

लेकिन बाहर कुत्ते जोरों से भूंकने लगे। शायद मार्सनीज वाली संगीत शिक्षिका हो, जो हर सोमवार और शुक्र को आती थी। साहित्य का एक प्रोफेसर भी पढ़ाने आता था। इस नवयुवती की समस्त शिक्षा-दीक्षा पायेलेन मे उसके बचपन की इच्छाओं और दुनिया की अनभिज्ञता के बीच चल रही थी। जब कभी किताबें उसे परेशान करतीं तो वह उन्हें खिड़की मे बाहर भी फेंक दिया करती थी।

होनोरीन ने लौट कर बताया कि मोशिये डेन्यूलिन आये हैं।

उसके पीछे ग्रीगोरे का रिश्ते का चचेरा भाई डेन्यूलिन भी बिना किसी रस्म अदायगी के कमरे में आया। अपनी तेज आवाज और रोबीले चेहरे से वह पुरानी पैदल सेना का अफसर जँचता था। पचास वर्ष मे ऊपर होने पर भी अभी उसके छोटे-छोटे बाल और घनी मूछें काली थीं।

'हाँ ! मैं आया हूँ। गुड डे ! आप लोग उठने की तकलीफ न कीजिये।'

परिवार के अभिवादन के बीच वह बैठ गया। वे लोग अपना चाकलेट खाने लगे।

मोशिये ग्रीगोरे ने पूछा—'तुम्हें मुझसे कुछ कहना है ?'

डेन्यूलिन ने जल्दी मे जवाब दिया—'नहीं ! कुछ भी नहीं। मैं जरा टहलने घोड़े पर चला आया था और आपके दरवाजे मे गुजरने पर मैंने सोचा देख लूँ।'

सीसिल ने उससे उसकी लड़कियों, जेनी और लूसी के बारे मे प्रश्न किया। 'वे बहुत मजे में हैं। छोटी हमेशा चित्रकला मे मशगूल रहती है और बड़ी सुबह से रात तक पियानो पर गाना गाती रहती है।' पर उसकी आवाज में प्रसन्नता के पीछे छिपा हुआ एक असंतोष का भाव था।

ग्रीगोरे ने पुनः पूछा—'खान में तो सब ठीक चल रहा है।'

मैं इस बेहूदे संकट से तंग आ गया हूँ। आह! हम उन खुशहाल वर्षों का मुआवजा भुगत रहे हैं। उन्होंने बहुत से कारखाने, बहुत सी रेलवे लाइनें बनवाईं हैं और अच्छी रकम लौटने की उम्मीद में बड़ी पूँजी लगाई गई है और आज सब रकम पड़ी हुई है। सौभाग्य से अभी स्थिति इतनी निराशाजनक नहीं है, मैं किसी न किसी समय इस संकट से उभरूँगा, ऐसी मुझे उम्मीद है।

अपने भाई की तरह उसका भी मोंटसू खानों में एक दीनार का हिस्सा लगा हुआ था। लेकिन एक साहसी और उद्यमी इंजीनियर होने की वजह से जब दीनार का दाम दस लाख फ्रेंक तक पहुँच गया तो खान मालिक बनने की इच्छा से उसने उसे बेंच दिया। उसकी पत्नी को अपने चाचा से वरुडामे की थोड़ी जमीन मिली थी जिसमें सिर्फ दो खानें जीम-बर्ट और गेस्टनमेरी थीं, जिन्हें लगभग छोड़ दिया गया था क्योंकि उनमें सामान इतना खराब था कि उत्पादन से मुश्किल से कीमत निकल पाती थी। अब यह जीन-बर्ट की मरम्मत के काम में लगा था, मशीनें बदली जा रही थीं और कूपत को, नीचे उतरने में अधिक सुविधा के उद्देश्य से, और चौड़ा किया जा रहा था और गेस्टनमेरी को सिर्फ हवा निकालने के उद्देश्य से रखा गया था। वह कहा करता था कि वे वहाँ से सोना निकालेंगे। विचार बहुत ठोस था। सिर्फ दस लाख फ्रेंक इसमें लगाये गये थे। लेकिन ठीक उसी समय यह मनहूस औद्योगिक संकट टूटा जब कि बड़े भारी मुनाफे से सिद्ध हो जाता कि वह ठीक कहता था। अलावा इसके वह अच्छा व्यवस्थापक भी नहीं था, अपने मजदूरों के प्रति उसकी रूखी उदारता थी, और पत्नी की मृत्यु के बाद उसने अपने को लुटने दिया और घर की बागडोर अपनी लड़कियों को सौंप दी थी जिसमें बड़ी स्टेज में जाने की बात करती थी और छोटी तीन बार ठोकर खा चुकी थी। दोनों इस पतन में खुश थीं और गरीबी में घर की सुव्यवस्था की क्षमता का परिचय देती थीं।

वह झिझकती आवाज में बोला। 'तुम देखते हो लिओन, तुमने उस समय शेयर न बेचकर, जैसा कि मैंने किया, गलती की; अब हर चीज का भाव गिर रहा है। तुम खतरा उठा रहे हो, और अगर तुमने अपना रुपया मुझे दिया होता तो तुम देखते कि हम वरुडामे की अपनी खान में क्या कर देते!'

ग्रीगोरे ने धीरे-धीरे अपना चाकलेट समाप्त किया। उसने शांति से उत्तर दिया—'कभी नहीं! तुम जानते हो कि मैं सट्टा खेलना नहीं चाहता। मैं शांति के साथ रहता हूँ और व्यापार के मामलों में सर खपाना बहुत बड़ी बेवकूफी होगी। जहाँ तक मोंटसू का सवाल है उसका दाम लगातार गिरता ही चला जाय तब भी

हमें उससे हमेशा हमारी रोटी मिलती रहेगी। इतना अधिक लालच भी ठीक नहीं! और सुनो, एक दिन तुम ही गच्चा खाओगे, क्योंकि मोंटसू पुनः उठेगा और सीसिल के बच्चों के बच्चे उससे अपनी रोटी पाते रहेंगे।

डेन्यूलिन ने एक व्यंग भरी मुस्कराहट के साथ कहा 'तब, अगर मैं तुमसे दस लाख फ्रेंक अपने कारोबार मे लगाने को कहूँ तो तुम इन्कार कर दोगे?'

परन्तु ग्रीगोरे का चेहरा देखकर उसे खेद हुआ कि वह बहुत दूर चला गया; उसने अपने कर्ज लेने के विचार को तब तक के लिए स्थगित कर दिया जब तक उसे लेना अनिवार्य ही न हो जाय।

'ओह! मेरा मतलब यह नहीं था! यह तो सिर्फ एक मजाक था। शायद तुम्हारा कहना ठीक है क्योंकि जो धन दूसरे लोग तुम्हारे लिए कमाकर लायें वही तुम्हें मोटा बनाने के लिए सबसे बेहतर है।'

उनकी बातचीत का विषय बदला। सीसिल ने पुनः अपनी बहिनों की चर्चा छेड़ी, जिनकी अभिरुचि दिलचस्प थी परन्तु साथ ही साथ उसे उनसे सदमा भी पहुँचा था। मदाम ग्रीगोरे ने वायदा किया कि वह जब भी मौसम साफ होगा अपनी लड़की को उन्हे देखने ले जायगी। ग्रीगोरे को उनकी बातों मे दिलचस्पी नहीं थी। इसलिए वह बातचीत का सिलसिला नहीं समझ पाया।

उसने स्वर ऊँचा करते हुए कहा—'अगर मै तुम्हारी जगह होता तो मैं ज्यादा हठ नहीं करता, मै मोंटसू से संधि कर लेता। वे भी चाहते है और तुम्हे तुम्हारा रुपया वापस हो जायगा।'

वह मोंटसू और वरुडामे के बीच पुरानी दुश्मनी की बात कह रहा था जो तब भी मौजूद थी। डेन्यूलिन की जरा सी तरक्की देखकर उसका शक्तिशाली पड़ोसी जल उठता था और मोंटसू के शेयर-होल्डरों ने दूसरी पड़ोसी की खान को खत्म करने का असफल षड्यंत्र करने के बाद गिरती हुई हालत मे उसे बहुत कम कीमत पर खरीदने की भी हरचंद कोशिश की थी। दोनों के बीच बिना संधि के संघर्ष जारी था। हर पार्टी ने एक दूसरे से दो सौ मीटर दूर गलियारे बंद कर दिये थे, यह रक्त की अन्तिम बूंद तक एक द्वन्द्वयुद्ध था गोकि मैनेजर और इंजीनियर एक दूसरे से राजनैतिक सम्बन्ध रखते थे।

डेन्यूलिन की आँखों मे क्रोध झलकने लगा वह बोला—'कभी नहीं, जब तक मैं जिन्दा हूँ मोंटसू को वरुडामे नहीं मिलेगा। गुरुवार को मैंने हेनब्यू के घर पर भोजन किया था और मैंने देखा कि वह मुझ पर डोरे डालना चाहता है। पिछले पतझड़ में, जब बडे लोग एडमिनिस्ट्रेशन बिल्डिंग मे आये थे तो वे मुझसे हर प्रकार के एडवांस का प्रस्ताव रख रहे थे। हाँ, हाँ, मैं उन्हें जानता हूँ—वे मार-

क्विस और ड्यूक, और जनरल तथा मंत्री—सब लुटेरे हैं। जंगल के एक कोने में लेजाकर वे तुम्हारी कमीज तक उतार लेंगे।'

वह बोलता चला गया। अलावा इसके ग्रीगोरे ने मोंटमू के प्रशासकों (संचालकों) के पक्ष में कोई बात नहीं कही। पायोलेन के जमींदार का यह मत था कि यह संचालक कभी-कभी दौलत के प्रति अगाध प्रेम में ज्यादती भी कर बैठते है। ग्रीगोरे स्वयं न्यायसगत विचार रखता था।

मलानी मेज साफ करने आई। बाहर कुत्ते पुनः भूंकने लगे थे और होनोरीन दरवाजे की तरफ जा रही थी कि सीसिल गरमी और भोजन से तृप्त होकर टेबुल से उठ गई। 'नहीं, कोई बात नही! यह मेरे लिए सबक है।' यह कहकर डेन्यूलिन भी उठ गया। उसने युवती को बाहर जाते देखा और फिर मुस्कराते हुए पूछा—'हाँ, लिटिल निग्रीन के साथ शादी की बात का क्या हुआ?'

'कोई बात तय नही हुई है।' मदाम ग्रीगोरे बोलीं; 'यह तो एक सुझाव मात्र है। हमें इसकी प्रतिक्रिया देखनी चाहिए।'

'इसमें क्या संदेह है!' वह हँसते हुए बोला। 'मेरा विश्वास है कि चाची और भतीजा——मेरी परेशानी यही है कि मदाम हेनब्यू कहीं सीमिल के गले की फाँसी न बन जायें।'

लेकिन ग्रीगोरे को यह बात बुरी लगी: 'इतनी प्रतिष्ठित महिला और नवयुवक से चौदह वर्ष बडी! यह बहुत बुरी बात है। मैं ऐसे विषयों पर मजाक पसंद नही करता।' डेन्यूलिन ने फिर भी हँसते हुए उससे हाथ मिलाया और वहां से बाहर निकल गया।

'अभी नहीं आई' सीमिल ने लौटकर कहा, 'बाहर वह महिला आई है जिसके साथ दो बच्चे है। तुम तो जानती हो मामा, मलकट्टे की औरत जिसे हम मिले थे। क्या उन्हें यहाँ आने को कह दूँ?'

वे झिझके—'क्या वे बहुत गंदे है?'

'नही, बहुत ज्यादा नही, और वे अपने जूते बारादरी मे ही छोड़ कर आयेंगे।' दोनों पति-पत्नी अपनी लम्बी आराम कुर्सियों की गहराई मे फैलकर बैठ गये थे। वे वहाँ भोजन पचा रहे थे। हवा में परिवर्तन के भय से उन्होने कहा—'होनोरीन, उन लोगों को यहाँ ले आओ।'

जब ठिठुरते हुए और भूखे माहेंदी तथा उसके छोटे-छोटे बच्चे अन्दर घुसे तो वे गरमी और ब्रीओस की खुशबू से भरे इस कमरे मे अपने को पाकर डर से गये।

२

कमरा बंद ही था। रोशनदानों से छन कर आने वाली सूरज की किरणों से फर्श पर एक गोल घेरा सा बन रहा था। बंद कमरे की बोझिल हवा उन्हें भ्रम में डाले थी कि वे रात समझ कर सोते रहें। लीनोरी और हेनरी एक दूसरे के गल-हियाँ डाले पड़े थे, अलजीरे उकड़ूं सोई थी; फादर बोनेमाँ, जाचरे और जांली वाले बिस्तरे पर खुले मुंह खुर्राटे ले रहा था। गलियारे मे माहेदी एस्टीली को दूध पिलाती हुई फिर से सो गई थी और उसकी छाती एक ओर लटक आई थी। उसके पेट में सोई बच्ची भी उसकी छातियों के बीच के गुदगुदे भाग मे चिपकी पड़ी थी।

नीचे घड़ी ने छः बजाये। बस्ती के सामने वाले हिस्से मे दरवाजों के खुलने और फिर फुटपाथों मे जूतों की चरमराहट की आवाजें सुनाई दीं; पत्थर बीनने वाली औरतें खान में जा रही थीं। फिर सात बजे तक सुनसान रहा। फिर झिल-मिली खुलने लगी और घरों के अन्दर खाँसने, अँगड़ाई लेने के शब्द आने लगे। काफी अर्से तक एक काफी मिल में कोई वस्तु रगड़ी जाती रही, लेकिन कमरे में अभी कोई नहीं जागा था।

यकायक दूर से मारपीट और चिल्लाहट की आवाज से अलजीरे की नींद खुली। उसे समय का ख्याल था इस लिए वह अपनी माँ को उठाने नंगे पाँव दौड़ पड़ी।

'माँ, माँ, बहुत देर हो गई! तुम्हें बाहर जाना है। देखो, तुम एस्टीली को दबाये डाल रही हो।'

और उसने बड़े-बड़े मांस-पिण्डों के नीचे दबी जा रही बच्ची को उठा लिया।

माहेदी हकबका कर आँखें मलती हुई उठी, 'हे भगवान! मैं इतनी कमजोर हो गई हूँ कि दिन भर सो सकती हूँ। लीनोरी और हेनरी को जल्दी तैयार कर दो, मैं उन्हें अपने साथ ले जाऊँगी; और तुम एस्टीली को सम्भालना; मैं इस खराब मौसम मे उसे अपने साथ घसीट कर बीमार करना नहीं चाहती।'

उसने जल्दी मे मुंह-हाथ धोया और पुरानी नीली कुरती और सबसे अधिक साफ भूरी, ऊनी पोशाक, जिसमे उसने पिछली रात दो पैबंद लगाये थे, पहनी।

'और सूप! हे भगवान!' वह पुनः झुंझलाई।

जल्दी मे चीजों को इधर-उधर बिखेर कर जब उसकी माँ नीचे चली गई तो रोती हुई एस्टीली को लेकर अलजीरे पुनः कमरे मे चली गई। वह छोटे

बच्चों के गुस्से से परिचित थी और आठ वर्ष की उम्र में ही उसे किसी भी माँ की तरह बच्ची को मनाने और चुप करने की कला आ गई थी। उसने धीरे से उसे उसके गरम बिस्तर में लिटा दिया और चूमने के लिए उसके मुंह में अंगुली देकर उसे फिर सुला दिया। वहाँ फिर एक दूसरी समस्या आ गई थी। लीनोरी और हेनरी उठने के बाद आपस में लड़ने लगे थे और उसे बीच बचाव करना पड़ा। इन दोनों बच्चों की, सोने के अलावा जब कि ये गलबहियाँ डाले सोते थे, आपस में एक मिनट भी नहीं बनती थी। लड़की जो कि छः वर्ष की थी उठते ही अपने भाई को, जो उससे दो वर्ष बड़ा था, मुक्के-मुक्के पीट रही थी और वह चुपचाप उन्हें सहन कर रहा था। दोनों का सिर एक समान था और उनका बड़ा सिर उनके शरीर के अनुपात में मेल नहीं खाता था। अलजीरे ने टांग पकड़ कर अपनी बहिन को छुड़ाया और उसे झगड़ा करने पर मार डालने की धमकी दी। फिर हाथ मुंह धोने और कपड़ा पहनने के समय प्रत्येक पोशाक के लिए हाथापाई हुई। खिड़कियां बंद ही रखी गई ताकि फादर बोनेमॉ की नींद में खलल न पड़े। बच्चों की चिल्ल-पों के बीच वह खुरपटे लेता रहा।

'सब तैयार है। तुम यहां आ रही हो क्या ?' माँ चिल्लाई।

उसने राख हटाई और आग जलाते हुए उसमें कुछ कोयले के टुकड़े और डाले। उसे उम्मीद थी कि बुड्ढे ने सारा सूप न पिया होगा लेकिन उसे बर्तन खाली मिला। तब उसने एक मुट्ठी सेवई, जिसे वह तीन दिन से सुरक्षित रखे थी, पका डाली। उसे सभी पानी के साथ निगल डालेंगे क्योंकि पिछले दिन से मक्खन या अन्य कोई चीज नहीं बची थी और उसे यह देख कर अचम्भा हुआ कि कैथराइन ने पाव रोटी में मक्खन लगाने के बाद एक अखरोट के दाने के बराबर मक्खन बचाया है। इधर आले में कोई वस्तु नहीं बची थी, अगर माइग्रेट ने पिछला कर्ज चुकता करने की बात कह कर कुछ भी उधार न दिया तो फिर क्या होगा ? और पायोलेन के जमींदार ने भी पाव फेंक न दिये तो ? जब वे लोग खान से लौटेंगे तो उन्हें भूख लगी होगी, वे खाना मांगेंगे, क्योंकि दुर्भाग्य से अभी तक यह पता नहीं लग सका है कि बगैर भोजन किये जीवित रहा जा सकता है।

उसने तेज क्रुद्ध स्वर में पुकारा—'नीचे आओ, तुम लोग वहाँ क्या कर रहे हो। मुझे अब तक निकल जाना चाहिए था।'

जब बच्चे और अलजीरे वहाँ आये तो उसने सेंवई को तीन छोटे-छोटे हिस्सों में बाँटा। वह बोली—'मुझे भूख नहीं है। कैथराइन पिछले दिन से बची काफी की तलछट में पानी डालकर उसे बना चुकी थी। उसने फिर उसमें पानी डाला और

उसके दो बड़े गिलास, जो गंदले पानी के मानिंद लगते थे, पी गई। उससे उसे कुछ सहारा रहेगा।

वह अलजीरे से बोली, 'सुन, अपने दादा को सोने देना और देखना कि एस्टीली लुढक न जाय; अगर वह जागे या बहुत रोने लगे तो यह ले चीनी का एक टुकड़ा, इसे घोल लेना और चम्मच से पिला देना। मै जानती हूँ तू समझदार लड़की है और इसे खुद नही खायेगी।'

'और स्कूल, माँ ?'

'स्कूल ! स्कूल कल जाना, आज मुझे तेरी जरूरत है।'

'और सूप ? अगर तुम देर मे लौटी तो मै उसे तैयार कर रखूं ?'

'सूप, सूप; नहीं मेरे आने तक ठहरना।'

अलजीरे इस कम उम्र मे असाधारण चतुर थी और बढिया सूप तैयार कर लेती थी। वह शायद समझ गई थी इसलिए उसने जिद नही की। अब बस्ती के सभी लोग जाग गये थे। बच्चो के गोल स्कूल जा रहे थे और उनके जूतों की खटर-पटर की आवाज आ रही थी। आठ बजा और बांई ओर लेवस्यू के घर से आपसी बातचीत के शब्द सुनाई दे रहे थे। औरतें काफी से शुरू कर दैनिक कामकाज शुरू कर रही थीं। वे कमर मे हाथ लगाये चक्की के पाट की तरह बराबर जबान चला रही थीं। एक मुरझाये चेहरे, चौड़ी नाक और मोटे होंठ वाली औरत ने खिड़की के कांच से मुँह सटाये आवाज दी—

'कोई नयी बात ? थोड़ा ठहरो।'

'नहीं,नहीं ! बाद मे' माहेदी ने उत्तर दिया। 'मुझे बाहर जाना है।'

वह डर रही थी कि गरम काफी के एक गिलास के प्रस्ताव पर वह फिसल न पड़े। लीनोरी और हेनरी को आगे धकेलती वह रवाना हुई। ऊपर फादर बोनेमॉ अब भी खुर्राटे भर रहा था जिससे सारा घर गूँज रहा था।

बाहर निकल कर माहेदी को आश्चर्य हुआ कि हवा थम गई थी। मौसम मे यकायक कुछ उमस आ गई थी। आसमान का रंग मटमैला हो चला था और हरे रंग की आइना मे दीवारें चिपचिपी हो गई थी। सड़कें लावे के समान कीचड़ मे डूबी थीं, जो कि कोयले के क्षेत्र की एक विशेषता है। ऐसे कीचड़ मे जूते से चलना एक परेशानी होती है। यकायक उसने लीनोरी के कान उमेठे क्योंकि वह फावड़े के समान अपनी फ्राक मे मिट्टी उठाये खेल रही थी। बस्ती से निकल कर उसने खान के किनारे नहर वाली सड़क पकड़ी। इधर से फासला कुछ कम हो जाता था और टूटे हुए टट्टर के बाड़ों, ओसारों, लम्बी-चौड़ी कारखानों की इमारतों, कालिख उगलने

वाली चिमनियों को पीछे छोड़ती हुई पुरानी रिक्वीलाँ खान के पास पहुँची। यहाँ से दाँये मुड़ने पर उसे चढ़ाई मिली।

'रुक, रुक, गंदे सूअर! मैं तुझे अभी ठीक करती हूँ।'

अब हेनरी की बारी थी जो दोनों हाथों में मिट्टी उठाये उसे रौंद रहा था। दोनों बच्चों के कान उमेठे जाने के बाद उसने उनके कपड़े झाड़े। बच्चे खड़े-खड़े कनखियों से अपने बनाये हुए मिट्टी के खिलौनों को देख रहे थे। हर कदम पर अपने जूतों को कीचड़ से निकालने के प्रयास से थक जाने पर वे आगे घिसटते जा रहे थे।

मार्सेनीज की ओर सड़क दो लीग तक सीधी गाड़ी के ग्रीज से सने रिबन की भाँति भुरभुरी मिट्टी वाले खेतों को चीरती चली गई थी और दूसरी ओर यही सड़क एक जूड़े की भाँति एक बड़े मैदान के ढाल पर बसे हुए मोंटसू के बीच से जाती थी। नौर्ड की यह सड़कें, शनैः शनैः बनने वाले औद्योगिक कस्बों के बीच तागे की भाँति कहीं हल्का सा मोड़, कहीं थोड़ा उतार लिये समूचे क्षेत्र को एक श्रमिक शहर का रूप देती थीं। सड़क के किनारे-किनारे बने हुए ईंटों के छोटे-छोटे मकान कुछ पीले, कुछ नीले और काले रंगों से पुते हुए सर्पाकार गति से दाँये-बाँये घूमते हुए ढाल की सतह तक चले गये थे। कल-कारखानों के अधिकारियों के बंद दो मंजिले विला, इन तरतीबवार बने मकानों के बीच छेद से बनाये थे। ईंटों से बना एक गिरजाघर, जिसकी बुरजी उड़ते हुए कोयले की धूल से काली पड़ गई थी, एक बड़ी भट्टी के नये नमूने के मानिन्द लगता था। और चीनी के कारखानों, रस्से के कारखानों और आटा मिलों के बीच नाचघर, रेस्टोरॉं और शराब की दूकानें इतनी ज्यादा थीं कि हर हजार घरों के लिए पाच सौ से अधिक सरायें थीं।

जब वह कम्पनी के हाते के करीब पहुँची, जहाँ बहुत से स्टोर घर और कारखाने बने हुए थे, तो उसने हेनरी तथा लनोरी को हाथ पकड़ कर दाँये-बाँये ले लिया। इसके बाद डाइरेक्टर मोशिये हनेब्यू का मकान पड़ता था जो स्विस गडरियों द्वारा गर्मियों में आल्पस में बनाये जाने वाले झोपड़ों की भाँति, एक बड़ा सा मकान था जिसे घेर कर सडक से पृथक किया गया था और फिर एक बगीचा था जिसमें कुछ पतले पेड़ लगाये गये थे। ठीक उसी समय दरवाजे के पास एक बग्घी आकर रुकी और उसमें से तड़क-भड़क वाले कपड़े पहने हुए एक पुरुष और फर लगा फाक कोट पहने एक महिला उतरी। यह मुलाकाती लोग अभी-अभी पेरिस से मार्सेनीज स्टेशन पहुँचे थे और मदाम हेनेब्यू, जो बारादरी की छाया में खड़ी दिखाई दी गी, उन्हें देख कर आश्चर्य और खुशी जाहिर कर रही थीं।

माहेदी ने मिट्टी में खड़े अपने बच्चों को खीचते हुए कहा—'चलो, चलते क्यों नहीं ?'

माइग्रेट की दूकान मे पहुँचने पर वह काफी उद्विग्न हो गई थी। माइग्रेट मैनेजर के पड़ोस मे रहता था। उसके घर और मैनेजर के बगीचे के बीच एक दीवार का फासला था। उसका छोटा सा मकान एक माल गोदाम के रूप मे बनी लम्बी-इमारत के रूप से लबेसड़क बना था और उसमे बारादरी इत्यादि नही बनी थी। उसकी दूकान मे ग्रोसरी, पोर्क, फल, डबल रोटी, बियर और बर्तन, सभी कुछ रहता था। वह पहले बोरो मे एक ओवरसियर था और उसने एक छोटी सी कैंटीन रूप में इसे खोला था परन्तु उसके बडे अधिकारियों के संरक्षण मे उसका व्यापार चमक उठा था और उसने शनैः शनैः मोंटमू के फुटकर व्यापार को खत्म सा कर कर डाला था। वह बिसाते का माल ज्यादा रखता था और उसे औरों से सस्ता और लम्बे अर्से तक उधार देने की सुविधा थी। अलावा इसके वह कम्पनी के हाथों मे था और उन्होने उसे एक छोटासा मकान और दूकान भी बनवा दी थी।

उसे अपने घर के दरवाजे के सामने खड़ा देख कर माहेदी ने अपने विनम्र लहजे में कहा—'मोशिये माइग्रेट, मै फिर आ गई हूँ।'

उसने कोई उत्तर दिये बिना उसकी ओर देखा। वह सस्त, रूखा और चापलूस आदमी था और उसे इस बात का घमण्ड था कि वह अपना विचार कभी नही बदलता।

'अब तुम मुझे कल की तरह निराश न करोगे। हमे अब से शनिवार तक के लिए रोटी चाहिए। इसमें संदेह नही कि इन दो वर्षों मे हमे तुम्हारे साठ फ्रैंक की देनदारी है।'

वह छोटे दुखपूर्ण वाक्यो मे अपनी हालत समझा रही थी। यह एक पुराना कर्जा था जो पिछली हड़ताल मे चढ गया था। बीसियो वायदे उन्होने इसे चुकाने के किये थे, लेकिन वे इसे दे नही पाये थे। वे किसी भी पखवारे मे चालीस सूज भी नहीं चुका पा रहे थे। फिर यह दुर्भाग्य दो दिन पहले टूट पड़ा था। उसे बीस फ्रैंक एक जूता बनाने वाले को देने को मजबूर होना पड़ा था क्योकि उसने उनका सामान कुर्क कराने की धमकी दी थी। यही वजह थी कि उनके पास एक 'सू' भी नहीं था। अन्यथा वे भी दूसरों की ही तरह शनिवार तक काम चलाते।

माइग्रेट तोद निकाले, दोनों हाथ बाँधे उसकी हर बात पर सिर हिला रहा था।

'सिर्फ दो रोटियाँ, मोशिये माइग्रेट। मै यथोचित ही माँगूंगी। मै काफी की माँग न करूँगी। सिर्फ दो-तीन पौण्ड रोटी प्रतिदिन।'

'नहीं,' अन्त में वह बड़े तीखे स्वर से चिल्लाया।

उसकी औरत भी वहाँ आ गई। उसकी हालत वास्तव में दयनीय थी जो खाताबही में झुकी अपने दिन गुजारा करती थी और उसकी हिम्मत कभी सर उठाने तक की न होती थी। इस अभागी औरत को अपनी ओर टुकर-टुकर ताकते देखकर वह वहाँ से डरकर चली गई। यह मशहूर था कि वह अपने ग्राहकों में किसी भी पुटर लड़की के साथ अपने पति के अनुचित सम्बन्ध का कोई प्रतिरोध नहीं कर पाती। यह प्रचलित बात हो गई थी कि जब किसी भी खनिक को अपना कर्जे का समय बढाना हो तो वह अपनी लड़की या पत्नी को, चाहे वह खूबसूरत हो अथवा सामान्य हो, उसके पास भेज दे।

माहेदी अब भी अपनी नजर से माइग्रेट की चिरौरी कर रही थी परन्तु उसकी छोटी-छोटी आँखों की पैनी निगाह के सामने वह अपने को नंगी महसूस कर रही थी और उसे बड़ी बेचैनीसी हो रही थी। इस पर उसे बड़ा क्रोध आया; उसे वह तभी से जानने लगी थी जब वह नवयुवती थी और मात बच्चों की मां नहीं बनी थी। और वह लीनोरी और हेनरी को क्रोध से घसीटती हुई यह कह कर तेजी से निकल गई कि 'मोशिये माइग्रेट, इसमें तुम्हारी भलाई नहीं है। याद रखना।'

अब सिर्फ पायोलेन परिवार रह गया था। अगर उन्होंने भी उसे पांच फ्रैंक का टुकड़ा नहीं फेंका तो उसका वहीं पड़ कर मर जाना बेहतर होगा। उनके बाईं ओर जेसली रोड का रास्ता पकड़ा। सड़क के कोने पर एडमिनिस्ट्रेशन बिल्डिंग थी। ईंटों के बने इस महल में हर पतझड़ में पेरिस और प्रान्त के बड़े-बड़े लोग, प्रिंस, जनरल, सरकारी सदस्य आया करते थे और बड़ी-बड़ी पार्टियाँ हुआ करती थीं। चलते-चलते उसने पाँच फ्रैंक के खर्चे के मनसूबे भी बाँध लिए थे। पहले रोटी, काफी, एक चौथाई मक्खन खरीदने के बाद सुबह के सूप के लिये एक बुशल आलू और अन्त में फादर के लिए एक टुकड़ा सूअर का गोश्त खरीदेगी।

मोंटसू का क्यूरी, आबी जोइरे अपना लम्बा चोगा पकड़े उधर से गुजर रहा था। उसके चलने का ढंग एक मोटी, आराम में पली बिल्ली के समान था जो अपने बाल भींगने के डर से संभल-संभल कर चल रही हो।

'गुड डे, मोशिये ला क्यूरी।'

वह रुके बिना बच्चों को देख कर मुस्कराया और उसे सड़क के बीच जड़वत् खड़ा छोड़ कर आगे बढ़ गया।

और फिर काली, चिपचिपी मिट्टी से होकर यात्रा शुरू हुई। अभी दो किलो-मीटर और चलना था और यह जरूरी था कि बच्चों को और घसीटा जाय क्योंकि वे डर गये थे और उन्हें अब चलना अच्छा नहीं लग रहा था। सड़क के दायें-बायें

जहां तक नजर जाती थी ट्रूर के बाड़े से घिरी हुई धुएं और कोयले से काली कारखानों की इमारतें और उनके मध्य मे उठी हुई कुरूप चिमनियां दिखाई देती थीं जिनके बाद भूरे बादलों के समान सूखे खेतों का सिलसिला था, जिनमे एक भी पेड़ नहीं था। उसके पास बरडामे जंगल की एक धुंधली रेखा नजर आती थी।

'मुझे गोद मे ले चलो, मां।'

वह उन्हे एक के बाद एक गोद मे उठाये चलने लगी। रास्ते मे कीचड़ के गड्ढे बन गये थे। उसने कपड़े ऊपर को समेट लिये ताकि वह पहुँचते-पहुँचते बहुत गंदी न हो जाय। सड़क इतनी चिकनी और फिसलन वाली हो गई थी कि तीन बार वह गिरते-गिरते बची। और जब वह अंत मे ड्योढ़ी पर पहुँची तो दो बड़े कद्दावर कुत्ते उन पर टूट पडे, वे इतनी जोर से भोंक रहे थे कि बच्चे डर के मारे चीखने लगे। कोचवान ने कुत्तो को चाबुक से भगाया।

होनोरीन ने दुहराया, 'अपने जूते यहीं उतार दो और अन्दर चले आओ।'

डाइनिंग रूम मे मां और बच्चे यकायक गरमी और आराम कुर्सियों पर पड़े हुए ग्रीगोरे दम्पति की नजरो से, सहमेमे निश्चल खडे रहे।

'सीसिल,' मा ने पुकारा। 'अपना छोटा सा कर्तव्य पूरा करो।'

ग्रीगोरे दम्पति ने अपने दान-पुण्य का भार सीसिल को सौंप रखा था। यह अच्छी शिक्षा के उनके अपने विचार का एक अंग था कि उन्हे दानशील होना चाहिए। वे आपस मे कहा करते थे कि उनका घर देवगृह है। अलावा इसके वे अपनी तारीफ स्वय किया करते थे कि वे बुद्धिमानी से दान देते है और उन्हे बराबर यह डर रहता था कि कोई उन्हे ठग न ले जिससे धूर्तता को प्रोत्साहन मिलेगा। इसलिये वे कभी भी धन नही देते थे; एक सू भी नही। क्योंकि यह जाहिर बात थी कि ज्यों ही एक गरीब आदमी दो सू पा जायेगा वह उनकी शराब पी जायगा। उनका दान हमेशा किसी वस्तु के रूप मे होता था और वे जाड़ों मे गरम कपड़े जरूरतमंद बच्चो को विशेष रूप से बांटते थे।

'ओह! बेचारे प्यारे बच्चे!' सीसिल बोली, 'ठंढ से ये कितने पीले पड़ गये है! होनोरीन, जाओ और कपबोर्ड से पार्सल तो ले आओ।'

नौकरानियां भी इन गरीबो के मारे बच्चों को दया की दृष्टि से देख रही थीं क्योंकि उन्हें अपनी रोटी की कोई चिन्ता नही करनी पड़ती थी। होनोरीन के ऊपर चले जाने पर मलानी अपना काम भूल सी गई और शेष श्रीप्रोश को मेज पर ही छोड़ कर खाली हाथों को हिलाती वहीं खड़ी रही।

सीसिल ने बातचीत जारी रखी, 'मेरे पास अब भी दो गरम पोशाकें और कुछ गुलूबंद बचे है। तुम देखोगी कि इन बेचारे बच्चो को वे कितनी गरमी पहुँचायेंगी।'

तब माहेदी को जबान खोलने की हिम्मत हुई और वह बोली—'धन्यवाद मदाम ओमली। आप सब लोग बहुत ही दयावान है।'

उसकी आँखों मे आँसू भर आये थे। उसे पांच फ्रैंक मिलने का पक्का यकीन हो चला था और वह इसी पशोपेश मे थी कि अगर वे लोग स्वयं उसे नही देते तो किस तरीके से उनसे माँग की जाय। नौकरानी अभी नही लौटी थी और एक क्षण के लिए वहां चुप्पी छा गई। अपनी मां की गोद मे सर निकाल कर बच्चे लोलुप दृष्टि से ब्रीओश की ओर नजर गड़ाये थे।

खामोशी भग करने के उद्देश्य से मदाम ग्रीगोरे ने पूछा, 'क्या तुम्हारे सिर्फ यही दो बच्चे है।'

'ओह, मैडम! मेरे सात बच्चे हैं।'

ग्रीगोरे ने, जो अखबार पढ रहा था अकचका कर कहा, 'सात बच्चे! लेकिन क्यों? गुड गॉड!'

'यह ज्यादती है,' बुढ़िया बोली।

माहेदी ने क्षमा-याचना की एक अस्पष्ट भगिमा बनाई। 'आप क्या कर सकते है? कोई इस बारे मे सोचता ही नही, यह तो कुदरतन पैदा होते है। और तब, जब ये बड़े हो जाते है तो कुछ कमाने लगते है जिससे घर-गिरस्ती चलती है। हमारा ही देख लो। दो लड़के, एक लड़की, इन बच्चो का दादा और इनका पिता काम पर जाते है; तब इन बच्चो की, जो कुछ भी नही कमाते, परवरिश होती है।'

'तब, मदाम', ग्रीगोरे ने पूछा, 'तुमने भी खान मे लम्बे अर्से तक काम किया होगा?'

एक मुग्ध हँसी ने माहेदी के पीले चेहरे को खिला दिया। 'ओ, हां: ओ, हां! मैं जब तक बीस वर्ष की नही हुई खान मे नीचे जाती थी। दूसरा बच्चा मेरे पेट मे था जब डाक्टर ने सलाह दी कि मै नीचे काम पर न जाऊँ। ऐसा प्रतीत होता है कि उन्हे मेरे जिस्म मे कोई खराबी मिली। अलावा इसके मेरी शादी हो गई थी और मुझे घर पर ही बहुत काम रहता था। लेकिन, जहां तक मेरे पति का सवाल है वे सदियों से वहा जा रहे है और दादा से लेकर उसके दादा तक, कोई नही जानता कितने वर्षों से, यह सिलसिला चला ही आ रहा है। इसकी शुरूआत पहले-पहल तब से हुई जब रिक्वीलां मे सर्वप्रथम उन्होने छेनी हाथ मे ली थी।

मोशिये ग्रीगोरे बडी गंभीरता से इस औरत के और इन दयनीय बच्चो के बारे मे विचार कर रहा था। उनका चिपचिपा शरीर, रूखे-सूखे अस्त-व्यस्त बाल,

पीलिया से पीड़ित उनकी पीढ़ी दर पीढ़ी और भुखमरी के बारे मे वह सोच रहा था। वहाँ पुनः खामोशी छा गई थी। कभी-कभी सिर्फ कोयले के चटखने की आवाज आ रही थी और उससे गैस की एक ज्वाला निकलती थी। इस नम कमरे में आराम की वह व्यवस्था थी जिसमे हमारे मध्यम वर्ग की खुशी सोती थी।

'न जाने वह क्या कर रही है ?' यकायक सीसिल ने अधैर्य के साथ कहा, 'मलानी, ऊपर जाओ और उसे बताओ कि पार्सल आले में सबसे नीचे बाई ओर है।'

इसी बीच इन भुखमरों को देखने से जो प्रतिक्रिया ग्रीगोरे पर हुई उससे प्रेरित होकर उसने ऊंचे स्वर में कहना शुरू किया—'इस दुनिया मे बुराई है, यह नितान्त सच है; लेकिन ऐ भली औरत, यह भी सच है कि मजदूर वर्ग कभी भी मितव्ययी नहीं होता। इसलिए, हमारे पुरखों की तरह थोड़ा-थोड़ा बचाने की अपेक्षा खनिक शराब पी जाते है, कर्जदार बन जाते है और अपने परिवारों के भरण-पोषण के लिए पर्याप्त न जुटा पाने पर खत्म हो जाते हैं।'

'मोशिये ठीक कहते हैं' माहेदी ने दृढ़ता के साथ उत्तर दिया। 'वे हमेशा सही रास्ता नहीं अपनाते। जब हमारे ऐसे पड़ोसी शिकायत करते है तो मैं भी उनसे हमेशा यही बात कहती हूँ। इस मामले मे मै भाग्यशाली हूँ कि मेरा मर्द शराब नही पीता। कभी-कदा तीज-त्योहार पर पी ली तो दूसरी बात है परन्तु वह इससे आगे नहीं बढ़ता। मेरी शादी से पहले तो वह सूअर की तरह पीता था परन्तु उसके इतने समझदार होने पर भी हमारा काम नही चलता। ऐसे भी दिन आते है, जैसा आज का दिन है जब कि घर मे सारे ड्राअर टटोलने पर एक फार्दिंग भी नहीं निकलता।'

वह उनके सामने पाँच फ्रेंक की छोटी सी रकम का सुझाव रखना चाहती थी। वह धीमी आवाज मे बताती गई कि किस प्रकार उन पर कर्जे का बोझ लदा। पहले थोड़ा सा, बाद मे बढ़ जाने पर कभी न चुकने वाला। कई पखवारे वे बराबर चुकाते रहे लेकिन एक बार वे पिछड़ गये तो फिर वे दे ही नहीं पाये। अब तो खाई बन गई है और लोग इस काम मे भी उकता गये है क्योंकि उससे उन्हे खाने भर को भी नही जुट पाता। चाहे वे जितना भी काम करें, मृत्युपर्यन्त दिक्कतों, कठिनाइयों के अलावा और कुछ भी नही है। अलावा इसके यह जरूरी हो जाता है कि एक खनिक अपने गले की धूल साफ करने के लिए एक गिलास ले ! एक बार शुरू हो गया तो जब भी परेशानियाँ आती है वह हमेशा सराय मे चला जाता है। यह शिकायत नही, वस्तु स्थिति है कि मजदूरों को उतना नहीं मिलता जितना वास्तव में मिलना चाहिए।

मदाम ग्रीगोरे बोलीं—'मेरा ख्याल है कि कम्पनी तुम्हें रहने को मकान और जलाने को कोयला देती है।'

माहेदी ने बगल में भट्टी में जलने वाली आँच की ओर निगाह डाली।

'हाँ, वे हमें कोयला देते जरूर है, पर बहुत अच्छा नहीं, किसी तरह जल जरूर जाता है। जहाँ तक रहने का सवाल है वे एक महीने में छः फ्रैंक के हिसाब से किराया लेते है। यह सुनने में नगण्य सा लगता है परन्तु कभी-कभी इसे देना बड़ा कठिन हो जाता है। आज अगर वे मेरे टुकड़े-टुकड़े भी कर डालें तो उन्हें दो सूज भी नहीं मिल सकते। जहाँ कुछ भी नहीं है वहाँ आयेगा कहाँ से।'

पति-पत्नी, दोनों मौन हो गये। इस दैन्य और गरीबी के प्रदर्शन से वे धीरे-धीरे खिन्न और दुखी हो उठे थे। उसे भय हुआ कि उसने उन्हें ठेस तो नहीं पहुँचाई। फिर वह एक उदासीन और व्यवहार-कुशल महिला की भाँति बोली—'ओह! मैं शिकायत नहीं करती। वस्तुस्थिति ऐसी है और एक आदमी को उसके अनुसार चलना होता है; और संघर्ष से भी कोई फायदा नहीं क्योंकि हमें कोई स्थिति बदलनी नहीं चाहिए। बेहतर यही है कि जिस स्थिति में ईश्वर ने हमें रखा है उसी में ईमानदारी से रहें, क्यों है न यही बात?'

मोशिये ग्रीगोरे ने जोरों से सिर हिलाकर उसकी बातों की पुष्टि की।

'अगर एक आदमी इस प्रकार की भावना रखता हो तो उसके ऊपर कभी संकट नहीं आ सकता।'

होनोरीन और मलानी पार्सल ले आयी थीं।

सीसिल ने उसे खोला और उसमें से दो पोशाकें निकालीं। उसने उनके साथ गुलूबन्द, जुराब और दस्ताने भी दिये। उनकी सिलाई बढ़िया थी। उसने नौकरानियों से जल्दी वे कपड़े बच्चों को पहनाने को कहा क्योंकि संगीत-अध्यापिका आ चुकी थी और उसने माँ और बच्चों को दरवाजे की ओर जाने का संकेत किया।

माहेदी ने बड़ी आजिजी से कहा—'हम बहुत तंग हैं। अगर हमें सिर्फ पाँच फ्रैंक भी मिल जाते तो...'

वाक्य पूरा करने में पहले ही माहेदी की जबान रुक गई क्योंकि उन्हें इस बात का घमंड था कि उन्होंने कभी भीख नहीं माँगी! सीसिल ने बेचैनी से अपने पिता की ओर देखा; लेकिन उसने दृढ़तापूर्वक इससे इन्कार कर दिया।

माँ के व्यग्र चेहरे से प्रेरित होकर नवयुवती चाहती थी कि वह बच्चों को यथासम्भव मदद दे। वे अब भी ब्रीओश की ओर नजर गड़ाये थे, उसने उसे दो हिस्सों में काट कर उन्हें दे दिया।

'लो! यह तुम्हारे लिए है।'

फिर टुकड़ों को वापस लेते हुए उसने एक पुराना अखबार माँगा, 'ठहरो, तुम्हें अपने भाई-बहिनों का हिस्सा भी करना चाहिए।

और अपने माता-पिता को बड़े स्नेह के साथ उस ओर देखते हुए पाकर उसने उन्हें कमरे से बाहर कर दिया। अपने नन्हें-नन्हें हाथों में ब्रीओश की पुड़िया पकड़े वे गरीबी और भूख से पीड़ित बच्चे बाहर निकल आये।

माहेदी सड़क पर बच्चों को तेजी से घसीटती लिये जा रही थी। वहाँ की काली मिट्टी, खाली खेत और धुंधले आसमान का उसे जरा भी भान नहीं हो रहा था। मोंटसू से गुजरते हुए वह दृढ़तापूर्वक माइग्रेट की दूकान में घुसी और उसके सामने तब तक गिड़गिड़ाती रही जब तक कि वह उसे उधार देना मंजूर न कर ले और अन्त में दो रोटियां, काफी, मक्खन और पाँच फ्रैंक उधार ले ही गई। माइग्रेट सप्ताह के अन्त तक के लिए रकम भी उधार दिया करता था। यह सब वह उसके लिए नहीं, कैथराइन के लिए कर रहा था; क्योंकि जब उसने उसे कैथराइन को राशन के लिए भेजने की सलाह दी तभी वह इस बात को समझ गई थी। इस सम्बन्ध में देखा जायगा। अगर उसने कैथराइन को छेड़ने की कोशिश की तो कैथराइन उसके कान उमेठ देगी।

३

ड्यूसेट क्वारेंटे बस्ती के छोटे से गिरजे की घड़ी ने ग्यारह बजाये। वह गिरजा ईंटों का बना था जिसमें आधी जोड़ें हर रविवार को सामूहिक प्रार्थना (मास प्रेयर) में आता था। उससे लगे हुए स्कूल से, बाहर ठंढ गिरने के कारण खिड़कियां बंद होने पर भी बच्चों का कोलाहल सुनाई दे रहा था। चार ब्लाकों की लम्बी दरों के सामने छोटे बगीचों में बाँटे गये चौड़े मार्ग सुनसान थे, और यह बगीचे इस कड़ाके की सर्दी में उजाड़ हो गये थे, उनमें बोई गई आखरी सब्जी की फसल के डंठलों और चिकनी मिट्टी के अलावा वहां कुछ नहीं था। चिमनियों से धुआं निकल रहा था और सूप तैयार हो रहा था। कोई औरत कभी-कभी घरों के सामने दिखाई देती थी फिर वह दरवाजा खोलकर गायब हो जाती थी। एक छोर से लेकर दूसरे छोर तक छत से लगे पाइप टबों में टपटपा रहे थे। गोकि अब बारिश बंद थी फिर भी पूरा आसमान नमी से भरा था।

जब माहेदी लौटी तो वह रास्ते में दूसरी ओर एक ओवरसीयर की पत्नी से आलू खरीदने चली गई। चिनार के पेड़ों के समूह के पीछे, जो इन चौरस क्षेत्रों के एक मात्र पेड़ थे, बस्ती से अलग चार मकान एक साथ बने थे और बगीचों से घिरे थे। चूंकि कम्पनी ने इस नये परीक्षण को कप्तानों के लिए रिजर्व रखा था,

मजदूर इस कोने को बास-डे सोये (रेशम सा मुलायम) और अपनी दरिद्रता के लिए अपनी बस्ती को मजाक में पेई-टेम-डेटेस कहते थे।

'ओह ! हम आ गये', माहेदी ने कहा। वह पार्सलों से लदी थी और कीचड़ से सने तथा थके हुए लीनोरी और हेनरी को अन्दर धकेल रही थी।

आग के पास अलजीरे की बाहों में झूलती एम्टली चीख रही थी। अलजीरे को चीनी खत्म हो जाने पर जब उसे चुप रहने का कोई उपाय न सूझा तो उसने उसे अपनी छाती से लगाकर झुठलाना चाहा। यह तरकीब कभी-कभी सफल हुई परन्तु इस बार अपनी छाती खोलकर अपने अविकसित उरोजबिन्दु को उसके मुंह से लगाने का उसका प्रयास असफल रहा, नन्ही बच्ची मास काटने और उससे कुछ न पाने के कारण क्रुद्ध हो उठी थी।

माँ ने अपना बोझ उतारने के बाद चिल्लाकर कहा 'इसे मुझे दे दो, यह हमें यह एक शब्द भी बोलने देगी।'

जब उसने अपनी बाँडी खोलकर चमड़े की बोतल के बराबर अपने एक स्तन को उसके मुंह में लगाया तो वह यकायक चुप हो गई और अब वे आपस में बातचीत कर सकते थे। हर चीज करीने से लगा दी गई थी। इस छोटी सी गृहिणी ने आग जला, झाड़ू लगा हर चीज सजा दी थी। खामोशी में उन्हें पहली मंजिल से दादा के खुर्राटे भरने की आवाज सुनाई दे रही थी जो एक क्षण को भी नहीं रुकी थी।

सामान को देख खुशी जाहिर करते हुए अलजीरे ने कहा, 'बहुत सा सामान है। अगर तुम कहो तो माँ मैं सूप तैयार करूं।'

मेज पर सामान भरा था: कपड़ों का एक पार्सल, दो रोटियाँ, आलू, मक्खन काफी, चिकोरी और आधा पौंड सूअर का गोश्त।

'ओह ! सूप' माहेदी ने थकी आवाज में कहा—'हमें कुछ शाक और लहसुन उखाड़ लेना चाहिए। नहीं ! मैं ही बाद में मरदों के लिए कुछ बनाऊँगी। कुछ आलू उबालने को चढ़ा दो, हम उन्हें थोड़े से मक्खन और काफी के साथ खा लेंगे, क्यों ? काफी मत भूलना !'

लेकिन यकायक उसे ब्रीओश की याद आई। उसने लीनोरी और हेनरी के के खाली हाथों की ओर देखा, जो आराम करने के बाद पुनः चंगे होकर फर्श पर लड़ रहे थे। इन भुक्खड़ों ने ब्रीओश को रास्ते में ही साफ कर दिया। उसने उनके कान उमेठे, जबकि अलजीरे ने, जो सौसपेन चूल्हे पर चढ़ा रही थी, उसे शांत करने की कोशिश की।

'इन्हें छोड़ दो, माँ। अगर वह मेरे लिए थी तो तुम जानती हो ब्रीओश

मेरे लिए कोई महत्व नहीं रखती। इतनी दूर चलने मे ये भूखे थे।'

बारह बजा। बच्चों का स्कूल मे घर आना उन्होंने सुना। आलू उबल चुके थे। और काफी को आधी चिकोरी से गाढी कर आग मे चढ़ा दिया गया था। मेज का एक कोना खाली था, जहाँ सिर्फ माँ खा रही थी और तीनों बच्चे घुटनों के बल बैठे थे और बार-बार छोटा लड़का, बगैर कुछ बोले चिकने कागज मे उत्तेजित-सा सुअर के गोश्त की ओर देख रहा था।

माहेदी छोटी-छोटी घूंट मे अपनी काफी पी रही थी और हाथों को गरम करने की नीयत से बार-बार उन्हे गिलास के चारों ओर फिरा रही थी। इतने मे फादर बोनेमॉ नीचे उतरा। आम तौर मे वह देर मे उठता था और उसका नाश्ता चूल्हे मे रखा रहता था। परतु आज सूर न होने से वह बडबडाने लगा। लेकिन जब उसकी पतोहू ने उसे बताया कि हर एक हमेशा अपनी मनचाही नहीं कर सकता तो वह चुप बैठा आलू खाने लगा। समय-समय पर वह उठकर सफाई की दृष्टि से राख में थूकने जाता था और अपनी कुर्सी पर आकर सर झुकाये बोझिल आँखों से अपना खाना चबाता था।

'ओह ! मैं भूली, माँ', अलजीरे ने कहा, 'पड़ोसिन आई थी ...'

माहेदी ने बीच ही मे उसे टोकते हुए कहा—'वह मुझे परेशान करती है।' इसमें लेवक्यू की औरत के प्रति गहरे विद्वेष की भावना छिपी हुई थी क्योंकि परसों, परले रोज, उसने कोई चीज वह उधार न ले जाय इसलिये अपनी गरीबी जाहिर की थी जबकि वह जानती है कि वह औरत इधर मजे मे है क्योंकि उसका किरायेदार बाउटलोप एक पखवारे का खर्च एडवांस दे चुका है। बस्ती मे गृहणियाँ आमतौर मे एक दूसरे को सामान उधार देने मे कतराती थीं।

'सुनो ! तुमने अच्छी याद दिलाई', माहेदी बोली 'एक पुडिया मे माप मे काफी बाँध दो, पेरीन को लौटानी है, परसों उससे उधार लाई थी।'

जब लड़की पुड़िया बाँध चुकी तो वह बोली, 'मैं उन लोगों का सूप चूल्हे में चढ़ाने के लिए जल्दी ही लौट आऊँगी' और एस्टीली को गोद मे लिये बाहर निकल गई। बुड्ढा बोनेमॉ वहीं बैठा हुआ धीरे-धीरे आलू चबा रहा था और लीनोरी तथा हेनरी नीचे गिरे हुए टुकड़ों के लिए झगड़ रहे थे।

लेवक्यू की औरत उसे न बुला ले इस डर से वह चक्कर काट कर जाने के बजाय सीधे बगीचे से निकल गई। उसका बगीचा पेरीन के सामने पड़ता था और इन दोनों के बीच एक टूटी हुई दीवार खड़ी थी जिसमे दोनों के आपसी राह-रस्म के लिए एक छेद बना हुआ था। चार परिवारों के प्रयोग के लिए वहाँ एक कुँआ बना था जिसके बगल मे बकाइन की एक कमजोर लतर के पीछे एक ओसारा बना

था जिसमें पुराने औजारों से भरी एक नीची झोपड़ी में खरगोश पाले जाते थे और इन्हें त्योहार के दिन पकाया जाता था। खान में जमीन काटने का काम करनेवाला एक खनिक, खान मे उतरने के समय का इन्तजार करता हुआ, अपने बगीचे में सर झुका शाक-भाजी बोने के लिए जमीन खोद रहा था। ज्यों ही माहेदी इमारतों के दूसरे ब्लाक के पास पहुँची तो उसे गिरजे के सामने एक सम्भ्रान्त पुरुष और दो महिलाओं को देखकर आश्चर्य हुआ। वह एक क्षण को रुकी और उसने पहचान लिया कि मदाम ह्नेब्यू अपने उन अतिथियों को लेकर आई है जो आज सुबह उसे दीखे थे।

माहेदी के काफी की पुड़िया लौटाने पर पेरीन बोली–'ओह! तुमने अभी कष्ट क्यों किया? कोई जल्दी नहीं थी।'

वह अट्ठाइस वर्ष की थी और बस्ती मे सुंदरतम गिनी जाती थी। उसकी बड़ी-बड़ी आंखें, कम चौड़ा माथा, लम्बा मुंह, उसकी सुघड़ता-सफाई और अंगों की सुडौलता उसकी सुन्दरता के अंग थे। उसके कोई बच्चा भी नहीं था। उसकी माँ ब्रूली, एक मलकट्टे की विधवा थी जो खान मे दबकर मरा था। वह अपनी लड़की को एक कारखाने में काम पर भेजने के बाद कसमे खाती थी कि उसे किसी खनिक से शादी न करनी चाहिए। परन्तु उसके एक विधुर पेरी से, जिसकी आठ वर्ष की एक लड़की भी थी, शादी कर लेने के बाद ब्रूली का गुस्सा कभी शांत न हुआ था। कुछ भी हो पति के दब्बूपन और पत्नी के प्रेमियों की चर्चा के बीच यह परिवार मज़े में रहता था; हफ़्ते मे दो बार गोश्त बनता था और घर मे इतनी सफाई रहती थी कि बर्तन चमकते थे। अलावा इसके उनके सौभाग्य से कम्पनी ने उसे बिस्कुट तथा मिठाइयां बेचने का अधिकार दे रखा था। जिसके जार, दो-तीन लकड़ी की रेकों मे रखे हुए खिड़की के शीशों के पीछे सजाये रखे हुए थे। इससे दिन भर में छः या सात सूज का मुनाफा होता था और कभी-कभी रविवार को बारह सूज भी मिल जाते थे। मदर ब्रूली इस सब खुशी मे अभिशाप के रूप मे थी, जो एक पुराने क्रांतिकारी की भांति मालिकों के खिलाफ जहर उगलती रहती थी और अपने पति की मौत का बदला लेने की शपथ खाती थी और लिटिल लायडी अक्सर घूसों और थप्पड़ों के रूप मे सारे परिवार के कोप का भाजन रहती थी।

पेरीन ने एस्टीली पर बनावटी हंसी हँसते हुए कहा, 'यह काफी बड़ी हो गई है।'

'ओह! यह इतना परेशान करती है कि न पूछो!' माहेदी ने कहा, 'तुम तकदीर वाली हो कि तुम्हारे बच्चा नहीं है। कम से कम तुम सफाई तो रख सकती हो।'

गोकि उसके घर में सब ठीक था, वह हर शनिवार को घर पोंछती थी, उसने इस साफ कमरे में, जहाँ बर्तन, आइना इत्यादि सब करीने से सजाये गये थे एक ईर्ष्यालु गृहिणी की नज़र डाली।

पेरीन के परिवार के सभी व्यक्ति खान मे होने की वजह से वह अकेली काफी पीने बैठी थी।

'अब तुम भी मेरे साथ एक गिलास पियो!' वह बोली।

'नही, धन्यवाद; मैं अभी-अभी पीकर आई हूं।'

'इससे क्या बिगड़ता है?'

वास्तव मे इसमे कोई हर्ज भी नही था। दोनो धीरे-धीरे पीने लगीं। बिस्कुटों और मिठाइयों के जारों के बीच से उनकी आँखें सामने वाले मकान मे जा टिकीं। लेबबयू की खिड़कियों के पर्दे बहुत गंदे थे मानो उनसे बर्तनों का तला पोंछा गया हो।

पेरीन बोली—'न जाने लोग इतने गंदे कैसे रह लेते है।'

तब माहेदी बोली और कहती चली गई। 'आह! अगर मेरे यहाँ बाउटलोप जैसा किरायेदार होता तो मेरी गृहस्थी मजे मे चल जाती। अगर कोई जानता हो तो किरायेदार रखना बहुत अच्छा है। सिर्फ उसके साथ सोना नही चाहिए। और उसका मर्द तो पीने लगा है। वह अपनी औरत को पीटता है और मोटमू के नाच घरों की गायिकाओं के पीछे भागता है।

पेरीन ने बड़ी नफरत का भाव व्यक्त किया। 'इन गायिकाओ को हर तरह की बीमारियाँ होती है। जेमली मे एक ऐसी ही थी जिसने समूची खान में बीमारी फैला दी थी। मुझे आश्चर्य तो इस बात का है कि तुम अपने लड़के को उनकी लड़कीयों के साथ जाने देती हो।'

'आह! हाँ, परन्तु इसे रोको! उनका बगीचा हमारे बगल मे है। जाड़े गर्मियों मे हमेशा वहाँ बकाइन की लतरों के पीछे फिलोमीना को लिए पड़ा रहता है और वे ओसारे से बाहर ही नही निकलते, उन्हे देखे बगैर कोई कुएँ से पानी नहीं खींच सकता।'

बस्ती भर मे सर्वत्र यही हाल था। लड़के-लड़कियाँ ओसारे की ढालवाँ छत पर द्वाभा के समय मिलते और शादी-ब्याह से पहले ही बिगड़ जाते थे। जब कोई पुटर लड़की रिक्वीन्नां या किसी गेहूं के खेत मे जाने का कष्ट गवारा नही करती तो उसका पहला बच्चा भी यहीं जना जाता था। इसका कोई परिणाम नहीं निकलता था क्योंकि शादी तो वे बाद मे करते ही थे, सिर्फ माताएँ अपने बच्चों पर नाराज

हुआ करती थीं कि वे इतनी जल्दी यह खुराफातें करने लगे हैं क्योंकि जो लड़का शादी कर लेता था वह फिर परिवार को कुछ नहीं दे पाता था।

'तुम्हारी जगह मैं होती तो मैं यह सब बरदाश्त न करती,' पेरीन ने बड़ी समझदारी से कहा। 'तुम्हारा जाचरे उसके दो बच्चे पैदा कर चुका है और ऐसा करते-करते शादी कर लेंगे। कुछ भी हो, पैसा तो जाता रहा।'

माहेदी बिगड़ खड़ी हुई और दोनों हाथ उठाते हुए बोली—'इस बात को सुन लो, अगर उन्होंने शादी की तो मैं उन्हें शाप दूँगी। क्या जाचरे हमारी जरा भी इज्जत नहीं करता? उसे पालने से हमारा भी कुछ लगा नहीं क्या? बहुत अच्छा! उसके गले पत्नी मढ़े जाने से पहले ही मुझे इसका इन्तजाम कर लेना चाहिए। अगर हमारे बच्चे तत्काल दूसरों के लिए काम करना शुरू कर दें तो हमारा क्या होगा?'

धीरे-धीरे वह शांत हुई।

'मैं तो सामान्य बात कह रही थी; हम इसे बाद में देखेंगे। तुम्हारी काफी तेज और अच्छी बनी है, तुम इसे ठीक ढंग से बनाती हो।'

और पन्द्रह मिनट तक अन्य विषयों पर बातचीत के बाद वह जल्दी में यह कहती हुई भागी कि उन लोगों के लिए सूप अभी नहीं बना है। बाहर, बच्चे फिर स्कूल की ओर जा रहे थे, कुछ औरतें अपने दरवाजों पर खड़ी मदाम हनेब्यू को देख रही थीं जो अँगुलियाँ उठा-उठाकर अतिथियों को बस्ती के बारे में बता रही थी। इस निरीक्षण से बस्ती में हलचलसी आ गई थी। मिट्टी काटने वाले खनिक ने एक क्षण के लिए खोदना बंद किया और दो मुर्गियाँ भयभीत होकर बगीचे में भागीं।

लौटती बेर माहेदी का लेवक्यू की औरत से सामना हुआ, जो कम्पनी के एक ठिगने, अधिक काम से परेशान और जल्दबाज डाक्टर वण्डरहेगन को रोकने बाहर निकली थी। वह चलते-चलते उसे सलाह देता जाता था।

'सर,' वह बोली, 'मैं सो नहीं पाती; मेरा सारा बदन दुखता है। मैं अपनी सब शिकायत बता रही हूँ।'

वह उन सब से बड़ी आत्मीयता से बातें करता था। बिना रुके उसने कहा—'जाओ, मुझे अकेला छोड़ दो; तुम बहुत ज्यादा काफ़ी पीती हो।'

माहेदी बोल उठी 'और सर, मेरे मर्द के बारे में, तुम्हें आकर उसे देखना चाहिए। हमेशा उसके पावों में दर्द रहता है।'

'इसका कारण तुम हो जो हमेशा उससे बहुत ज्यादा ताकत खींचती हो। मुझे जाने दो!'

दोनों औरतें उनके सामने जाते हुए डाक्टर को देखती ही रह गईं।

'अन्दर आ जाओ।' लेवक्यू पत्नी ने अपनी पड़ोसिन पर एक सरसरी नजर डालते हुए कहा। 'तुम्हें मालूम है, कुछ नयी बात हुई है। और तुम थोड़ी सी काफी तो लोगी, अभी ताजा बनाई है।'

माहेदी ने इन्कार तो किया पर उसमें दृढ़ता नहीं थी, 'अच्छा थोड़ी सी दो।' वह अपनी पड़ोसिन का तिरस्कार करना नहीं चाहती थी और वह कमरे में दाखिल हुई।

कमरा धूल से काला हो गया था, दीवारों और फर्श पर जगह-जगह चिकनाहट के दाग थे। आला और मेज मैल से चिपचिपे थे और जगह-जगह थूक और कफ पड़ा था। आँच के पास कुहनियाँ मेज पर टिकाये और सामने प्लेट रखे हुए बाउटलोप, जो अभी पैंतीस वर्ष का युवक था, उबले हुए गोश्त का बचा हुआ हिस्सा खत्म कर रहा था और उसके सामने फिलोमिना का पहला बच्चा आचिली जो तीन वर्ष का था, भुक्खड़ जानवर की तरह चुपचाप उसकी ओर देख रहा था। किरायेदार, जो दयालु स्वभाव का था कभी-कदा कोई गोश्त का टुकड़ा उसके मुंह मे भी दे देता था।

'ठहरो! जरा चीनी डाल दूं।' यह कह कर लेवक्यू की पत्नी ने काफी के बर्तन मे पहले से ही थोड़ी भूरी चीनी डाली।

उससे उम्र मे छः वर्ष बड़ी वह शरीर और आकृति मे विकृत हो चली थी। उसकी छातियाँ पेट तक और पेट नीचे की ओर लटक आया था। उसके थूथुन चौड़े और भद्दे थे तथा भूरे बाल बिना कंघी किये अस्त-व्यस्त बिखरे थे। उसने भी इस औरत को उसी तरह स्वीकार कर लिया था जिस तरह वह बिना किसी प्रकार के चुनाव के अपना सूप, जिसमें उसे बाल इत्यादि पड़े मिलते थे, या अपना बिस्तर, जिसमें चादरें तीन महीने से अधिक नहीं चलती थीं, स्वीकार किये था। वह उसकी किरायेदारी का एक अंग थी और लेवक्यू यह दुहराना पसंद करता था कि साफ हिसाब-किताब अच्छे मित्र बनाता है।

'मैं तुम्हें बताने जा रही थी कि कल पेरीन बास-डे के आस-पास चक्कर काट रही थी', वह बोली 'और उस आदमी को तो तुम जानती ही हो। वह रसे-न्योर की सराय के पीछे उसका इन्तजार कर रहा था। वे दोनों नहर की ओर साथ-साथ गये। यह एक बड़ी अच्छी बात है। क्यों, नहीं है? एक विवाहित औरत!'

'वाह खूब!' माहेदी बोली, 'शादी से पेश्तर पेरी, कप्तान को खरगोश दिया करता था; अब उसे अपनी पत्नी देने में कम कीमत चुकानी पड़ती होगी।'

बाऊटलोप बड़े जोरों से हँस पड़ा और उसने सौस लगी रोटी का एक टुकड़ा आचिली के मुंह में डाला। दोनों औरतें पेरोन के बारे में बातें करती हुई अपनी तसल्ली करती गईं—'नखरैल कही की, औरों से ज्यादा खूबसूरत तो नहीं है परन्तु हमेशा शरीर की हर झुर्री देखने और पावडर लगाने मे व्यस्त रहती है। खैर, वह जाने उसका मर्द जाने। अगर वह ऐसा ही चाहता हो तो ? ऐसे-ऐसे भी महत्वाकांक्षी लोग हैं कि मालिकों से धन्यवाद सुनने को उनके तलुवे चाटें।' पड़ोसिन के फिलोमिना के नौ महीने के बच्चे डिसेरी को लेकर कमरे में आने से उनकी बातचीत का सिलसिला खत्म हुआ। फिलोमिना अपना नाश्ता स्क्रीन शेड में ही लेती थी और उसने ऐसा इन्तजाम कर रखा था कि वे उसके बच्चे को वहीं ले जाँय, जहाँ वह कुछ देर कोयले मे बैठी उसे दूध पिला देती थी।

'मैं अपनी बच्ची को एक मिनट नही छोड़ सकती। यह चिल्लाने लगती है', माहेदी बोली और एस्टीली की ओर देखने लगी जो उसकी बाँहों में ही सो गई थी।

परन्तु वह आपसी घरेलू मामलों में बातचीत टालने मे समर्थ न हो सकी जिसे कि उसने अपनी पड़ोसिन की आँखों मे पढ़ लिया था।

'मैं कहती हूँ अब हमे मामला तय कर लेना चाहिये।'

पहले दोनों माताएँ, इस सम्बन्ध में बातचीत की आवश्यकता समझे बिना, इस बात पर राजी थीं कि शादी न की जाय। अगर जाचरे की माँ, जब तक संभव हो सके अपने लड़के की पगार चाहती थी तो फिलोमीना की माँ भी इस विचार पर कम नाराज नहीं थी कि वह अपनी लड़की का वेतन छोड़ दे। कोई जल्दी नहीं थी क्योंकि फिलमिना की माँ ने तो जब तक एक बच्चा था उसके बच्चे को भी अपने पास रखना पसंद किया था; लेकिन जब वह बड़ा हुआ और खाने लगा तो दूसरा भी आ गया। उसने देखा कि वह घाटे में है और जल्दी ही शादी के लिए जोर बाँधा। यह ठीक उस औरत की भाँति हुआ जो अपने धन को बड़े जतन से रखती है।

'जाचरे के दो बच्चे हो गये हैं और मार्ग मे कोई रुकावट भी नहीं है।' वह बोली, 'तो वह कब होगी ?'

'अच्छा मौसम आने तक ठहरो', माहेदी ने रोकते हुये कहा, 'यह बातें वाहियात है ! जैसे मानो वे साथ-साथ होने से पहले शादी के लिये ठहर नहीं सकते थे। मैं शपथ खाकर कहती हूँ कि अगर मैं जान लूं कि कैथराइन ऐसा करने वाली है तो मैं उसका गला घोंट दूँ।'

दूसरी औरत ने अपने कंधे उचकाये।

'देख लेना ! वह भी दूसरों की ही तरह करेगी ।'

बाउटलोप ने घर में रहने वाले व्यक्ति की तरह जल्दी से रोटी के लिए दराज टटोली । लेवक्यू के सूप के लिये सब्जी, आलू और बीन, मेज के एक कोने में पड़े थे । वे उन्हें आधा छील चुकी थी और उसने बातचीत के दौरान में कई बार उन्हें छोड़ दिया था । वह उन्हें छीलने ही वाली थी कि उसने फिर उन्हें रख दिया और खिड़की के पास खड़ी हो गई ।

'वहाँ क्या हो रहा है ? क्यों, वहाँ मदाम हनेब्यू कुछ लोगों के साथ है ! वे पेरीन के घर में घुस रहे हैं ।'

तत्काल वे दोनों फिर पेरीन के बारे मे बातें करने लगी । 'ओह ! जब कभी कम्पनी के कोई मेहमान बस्ती में आते हैं तो वे सीधे उसके यहाँ जाने में कभी नहीं चूकते क्योंकि वहाँ सफाई रहती है । निस्संदेह वे उन्हें हेड कप्तान वाली बातें थोड़े ही बताते होंगे । कोई भी ही, जिसके प्रेमी तीन हजार फ्रेंक कमाते हों और जिसे उसके प्रेमियों से बहुत मदद मिलती हो वह साफ न रहेगा तो कौन रहेगा ? अगर वह बाहर से साफ है तो अन्दर से नहीं है ।' और जब तक मुलाकाती वहाँ रहे वे आपस मे बातें करती गईं ।

अन्त मे लेवक्यू की पत्नी बोली—'वे बाहर आ रहे है । वे बस्ती का चक्कर लगायेंगे । क्यों, देखो—मेरा ख्याल है वे तुम्हारे यहाँ जा रहे है ?'

माहेदी भयभीत हो उठी । कौन जाने अलजीरे ने टेबल को स्पंज से साफ किया हो ? और उसका सूप भी अभी तैयार नही है ! वह 'गुड डे' कह कर बिना उधर-उधर ताके तेजी से घर की तरफ भागी ।

लेकिन हर चीज चमक रही थी । अलजीरे, बड़ी होशियारी से, अपने आगे एक कपड़ा लिये, अपनी माँ को लौटती न देखकर सूप बनाने की तैयारी कर रही थी । उसने बगीचे से लहसुन की आखिरी गाँठें उखाड़ डाली थी और कुछ अम्ल-बेंत इकट्ठा कर सब्जी साफ कर रही थी । अंगीठी की आंच मे एक बड़ी केतली मे स्नान से लौटने वालों के नहाने के लिए पानी गरम हो रहा था । हेनरी और लीनोरी अच्छे बच्चों की तरह बैठे थे और एक पुराना पंचांग फाड़ने मे व्यस्त थे । फादर बोनेमाँ चुपचाप अपना पाइप भी रहा था । माहेदी आकर सुस्ता ही रही थी कि मदाम हनेब्यू ने दरवाजा खटखटाया ।

'क्या तुम मुझे आने दोगी ?'

चालीस वर्ष की अधेड़, लम्बे कद और साफ रंग की महिला सामने खड़ी बड़े मिलनसार ढंग से मुस्करा रही थी ।

'अन्दर आइये, अन्दर आ जाइये', उसने अतिथियों से कहा । 'हमारे आने से

किसी काम में खलल नहीं पड़ रहा है। देखिये, यहाँ सफाई नहीं है और इस भली औरत के सात बच्चे हैं! हमारे सभी परिवार इसी सफाई से रहते हैं। मैं आप लोगों को स्पष्ट कर दूँ कि कम्पनी इन्हें छः फ्रैंक प्रति माह के हिसाब से मकान किराये पर देती है। निचली मंजिल पर एक बड़ा कमरा, दो कमरे पहली मंजिल पर, एक गलियारा और एक बगीचा हर मकान में है।'

सजे हुए कपड़े पहने नवयुवक और फर का कोट पहने नवयुवती ने, जो आज सुबह पेरिस से पहुँचे थे, आँखों और चेहरे से इन सब, उनके लिए नयी, बातों पर विस्मय जाहिर किया।

आगन्तुक महिला ने दुहराया, 'और एक बगीचा भी! इसमें तो गुजर हो सकती है। यह वास्तव में बहुत अच्छा है।'

मदाम हनेब्यू बताती जा रही थी—'हम इन्हें जरूरत से ज्यादा जलाने को कोयला देते हैं। एक डाक्टर सप्ताह में दो बार बस्ती का निरीक्षण करता है। और जब ये वृद्ध हो जाते है तो इन्हे पेंशन मिलती है जोकि इनकी मजदूरी से कुछ काट कर जमा नही किया जाता।'

'यह तो स्वर्गपुरी है! मधु और दूध की वास्तविक भूमि!' आगन्तुक अतिथि प्रसन्नता से बोला।

माहेदी ने जल्दी से कुर्सियाँ बढ़ाईं लेकिन महिलाओं ने इन्कार कर दिया। मदाम हनेब्यू थक चुकी थीं लेकिन वह अपनी कैद की सी इस बंदिश की थकान को जानवरों को नचाने वाले के रूप में प्रदर्शित कर खुश हो रही थी। लेकिन तत्काल उन्होंने यहाँ की गंदगी की बदबू से ऊब कर, गोकि कमरा विशेष रूप से साफ था, हटने की कोशिश की। अलावा इसके वह चंद छिटपुट बातें ही बता पा रही रही थी जिन्हे उसने औरों से सुना था, क्योंकि उसे उसके इर्द-गिर्द काम करने वाले इन मजदूरों की जमात के बारे मे ज्यादा जानने का कष्ट गवारा न था।।

अतिथि महिला ने बच्चों की तारीफ की और माहेदी को उनकी उम्र बतानी पड़ी; उन्होंने शिष्टाचार वश एस्टीली के बारे में प्रश्न पूछे। फादर बोनेमॉ ने उन्हें इज्जत देते हुए अपने मुँह से पाइप हटा लिया लेकिन वह कम परेशानी का कारण नहीं था। चालीस वर्ष खान के अन्दर काम करने से वह प्रत्येक अंग से शिथिल हो गया था, उसके जोड़-जोड़ गठिया से सख्त हो गये थे, शरीर की आकृति बिगड़ गई थी और चेहरे का रंग फक पड़ गया था। जब उसे खाँसी का तेज दौर आया तो उसने उठकर बाहर जाकर थूकना इस विचार से उचित समझा कि उसके काले कफ से यहाँ आये मेहमानों को बेचैनी होगी।

अलजीरे की सभी ने तारीफ की। अपने को छोटे से कपड़े में लपेटे क्या ही

बेहतरीन गृहिणी यह लग रही है। उन्होंने माँ को मुबारकबादी दी कि इतनी छोटी उम्र की इतनी समझदार लड़की उसे मिली है। किसी ने भी कूबड़ की चर्चा नहीं उठाई।

'अब ?' अन्त में मदाम हनेब्यू ने कहा, 'अगर वे लोग पेरिस में तुमसे हमारी बस्ती के बारे में पूछें तो तुम जानते हो तुम्हें क्या जवाब देना होगा ? इससे ज्यादा कभी शोर-गुल नहीं, शिष्ट तौर-तरीके, सभी खुश और खाते-पीते, जैसा आप देख रहे हैं। यह ऐसा स्थान है जिसका स्वस्थ वातावरण और मेलमिलाप देखकर शायद आप लोग थोड़े से लोगोंको भरती करने आयें।'

अतिथि ने उत्साह के अतिरेक में कहा—'यह वास्तव में बेहतरीन है, बहुत अच्छा है।'

वे वहाँ से इस प्रकार के मनोभाव बना कर गये जैसे लोग एक मेले में किसी बूथ से निकलने पर बना लेते हैं। और माहेदी, जो उनके पीछे-पीछे चल रही थी, दरवाजे पर ही ठहर गई और वे आपस मे जोर से बातचीत करते हुए धीरे-धीरे निकल गये। उनके बस्ती में आने की खबर से आकर्षित होकर सभी लोग घरों से बाहर निकल आये थे। सड़कें लोगों से भरी हुई थीं और उन्हे औरतों के कई झुण्डों के करीब से गुजरना पड़ा।

तभी, लेवक्यू पत्नी ने अपने दरवाजे के सामने पेरीन को रोक लिया था, जो उत्सुकतावश वहाँ चली आई थी। दोनो को एक दुखपूर्ण आश्चर्य हुआ। अब क्या ? क्या यह लोग माहे के यहाँ सोने जा रहे हैं ? परन्तु वह तो कोई ऐसी बढ़िया जगह नहीं है।

'इतना सब लोग कमाते हैं फिर भी वे हमेशा भिखमंगे बने रहते है ! हे भगवान ! कब लोग पाप छोड़ेंगे !'

'मैंने अभी-अभी सुना है कि वह आज सुबह पायोलेन में माँगने गई थी और माइग्रेट ने, जिसने उन्हें रोटी देने से इन्कार कर दिया था, उन्हे कुछ दिया है। हम जानती हैं कि माइग्रेट किस तरह उधार वसूलता है।'

'ओ, उसके लिए ? ओह नहीं ! उसके लिए कुछ हिम्मत चाहिए। वह तो कैथराइन के पीछे पड़ा हुआ है।'

'क्यों, उसे अभी-अभी यह कहते जरा भी लाज न आई कि अगर कैथराइन ने ऐसा किया तो वह कैथराइन का गला घोंट देगी ? मानो बड़े चवाल ने अब तक उसे किसी ओसारे में लिटाया ही न हो।'

'चुप ! वे लोग आ रहे हैं।'

तब लेवक्यू पत्नी और पेरीन, बड़ी गम्भीरता और विनम्र उत्सुकता से कनखियों

से मेहमानों की ओर देखते रहे। तब उन्होंने इशारे से जल्दी माहेदी को बुलाया, जो अब भी एस्टीली को बाहों में लिये हुए थी और वे तीनों वहीं खड़ी मेहमानों को आँखों से ओझल होने तक देखती रहीं। जब वे लगभग तीस कदम आगे बढ़ गए तो दुगुनी तेजी से इधर-उधर की फिर शुरू हुई।

'उनके शरीर में मूल्यवान वस्तुएँ थीं, शायद उनसे भी ज्यादा कीमती।'

'आह, जरूर! मैं दूसरी को तो नहीं जानती परन्तु पहली जो यहीं की है, उसके तो मैं चार सूज भी न दूँ, मोटी कितनी है वह। वे इसके किस्से..."

'ओह? कैसे किस्से?'

'क्यों, वह प्रेमी रखती है। पहला, वह इंजीनियर!'

'वह दुबला-पतला छोटा सा जन्तु! ओह, वह बहुत ही छोटा है। वह तो चादरों में ही खो जायगा।'

'इससे क्या होता है, अगर वह उसे खुश कर सके तो? मैं ऐसी औरत से नफरत करती हूँ जो इतनी धंगड़ी हो और जिस स्थिति में हो उसमें कभी खुश-नजर न आती हो। देखो वह अपने नितम्ब कैसे मटका रही है मानो वह हम सभी लोगों का तिरस्कार कर रही हो। क्या यह अच्छी बात है?'

अतिथि अब भी उसी रफ्तार में बातें करते हुए जा रहे थे। उसी समय एक बग्घी सड़क पर गिरजे के सामने आकर रुकी। लगभग अड़तालीस वर्ष का एक पुरुष उसमें से उतरा। वह साँवले रंग का, रोबीले चेहरे वाला था और काला फ्राक कोट पहने था।

लेवक्यू पत्नी ने धीमी आवाज में कहा, 'उसका पति है।' उसकी आवाज ऐसी थी जैसे मानो वह सुन रहा हो और उसमें वह अज्ञात भय छिपा हुआ था, जो मैनेजर अपने दस हजार मजदूरों पर गालिब किये हुए था।

अब समूची बस्ती बाहर आ गई थी। औरतों की उत्सुकता और बढ़ी। छोटे-छोटे झुंड एक दूसरे तक पहुँचने लगे और वे एक भीड़ के रूप में इकट्ठा हो गये; और छोटे-छोटे बच्चे, जिनकी नाक बह रही थी और मुंह गन्दे थे, फुटपाथ पर जमा हो गए थे। एक क्षण के लिए स्कूल-मास्टर का पीला सिर स्कूल-भवन की झाड़ी के पीछे दिखाई दिया। बगीचों में, खोदने वाला व्यक्ति भी अपनी आँखें घुमाता हुआ अपने फावडे के बेंट पर पाँव टिकाये खड़ा था। आपसी बातचीत की आवाज बढ़ रही थी और सूखी पत्तियों के बीच हवा के एक तेज झोंके से पैदा होने वाली खड़खड़ाहट का सा शब्द उत्पन्न कर रही थी।

लेवक्यू के दरवाजे पर विशेष जमाव था। पहले दो थीं, फिर दस हुईं और फिर बीस हो गईं। चूँकि बीस सुनने वाले थे इसलिए पेरीन चुप थी। माहेदी,

जो कि बहुत ही विवेकशील मानी जाती थी, देखते-देखते उकता सी गई थी; और एस्टीली को, जो जाग जाने से रो रही थी, चुप करने के लिए अपने जानवरों के समान लटकने वाले स्थान से दूध पिला रही थी। जब मोशिये हनेव्यू महिलाओं को गाड़ी में बैठा चुका तो वह मार्सेनीज की दिशा मे रवाना हुई। वहाँ आपस मे बातें करने वाली औरतों की बातों का एक अन्तिम विस्फोट हुआ। वे एक दूसरे के सामने ऐसे बातें कर रही थीं मानो किसी मधुमक्खियों के छत्ते में क्रान्ति आ गई हो।

तीन बज चुका था। जमीन काटने वाला मजदूर, वाउटलोप तथा अन्य लोग काम पर जाने के लिए बाहर निकल आये थे। यकायक गिरजा के पास खान से लौटने वाले कुलियों का पहला झुंड चेहरे काले किये हुए, गीले कपड़े पहने, हाथों और कमर को सीधा करता आता नजर आया। तब औरतों मे हड़बड़ी मची और वे एक गृहिणी की जिम्मेदारी के भय का अनुभव करती हुई अपने घरों की तरफ भागी और वहाँ इसके सिवाय और कुछ नही सुनाई दे रहा था—

'हे ईश्वर, और मेरा सूप ! और मेरा सूप अभी तक तैयार ही नही है !'

४

लाँतिये को रसेन्योर को सराय में छोड़ने के बाद माहे ने घर लौटने पर पाया कि कैथराइन, जाचरे और जॉली मेज पर बैठे अपना सूप खत्म कर रहे हैं। खान से लौटने के बाद वे इतने भूखे होते थे कि अपने गीले कपड़ों में ही बगैर सफाई किये खाने बैठ जाते थे और किसी का इन्तजार नहीं किया जाता था। मेज सुबह से रात तक लगी रहती थी। काम के समय में परिवर्तन के आधार पर वहाँ हर समय कोई न कोई अपना हिस्सा खाता नजर आता था।

अन्दर घुसते ही माहे की निगाह सामान पर पड़ी। उसने कहा कुछ नहीं परन्तु उसका चिन्तित चेहरा खिल उठा। सुबह से ही आलों का रीतापन, घर में काफी और मक्खन के अभाव का विचार उसे परेशान किये था; खान की सतह में छेनी चलाते हुए भी उसे इसका स्मरण हो आया था जिससे उसे बेहद मायूसी का अनुभव हुआ था। उसकी पत्नी क्या करेगी ? अगर उसे रीते हाथ लौटना पड़ा तो उन लोगों का क्या होगा ? लेकिन अब, यहाँ हर सामान था ! वह बाद में इस विषय में उसे बतायेगी। वह संतोष की हँसी हँसा।

कैथराइन और जॉली उठ चुके थे और खड़े खड़े अपनी काफी पी रहे थे जब कि जाचरे, सूप से तृप्त न होकर एक बड़ा टुकड़ा रोटी का काट उस पर मक्खन लगा रहा था। गोकि वह एक प्लेट में सूअर का गोश्त देख चुका था लेकिन उसने

उसे नहीं छुआ क्योंकि वह सिर्फ एक आदमी के लिए था और वह उसके पिता के लिए रख छोड़ा गया था। उन्होंने खूब पानी पीकर अपने सूप को गले के नीचे उतार लिया था।

'बियर तो मुझे मिली नहीं,' माहेड्यू ने माहे के कुर्सी पर बैठ जाने पर कहा। 'मैं कुछ पैसा बचाये रखना चाहती हूँ। लेकिन अगर तुम्हें थोड़ी सी जरूरत हो तो जाओ एक पाइंट ले आओ।'

उसने अचम्भे से पत्नी की ओर देखा। क्या उसके पास पैसा भी है!

'नहीं, नहीं,' उसने कहा, 'मैंने एक गिलास पिया है, बस इतना काफी है।'

और माहे रोटी, आलू, लहसुन और प्याज के इस गाढ़े घोल को अपने प्याले में भर कर, जो उसकी प्लेट का काम कर रहा था, धीरे-धीरे चम्मच से पीने लगा। माहेदी एस्टीली को गोद में लिये हुए अलजीरे को, जो वह चाहता उसे देने में मदद कर रही थी। माहेड्यू ने मक्खन और गोश्त उसके पास बढ़ा दिया और काफ़ी गरम रहे इसलिए उसे आँच पर चढ़ा दिया।

इसी दर्मियान वे लोग चूल्हे की बगल में एक पीपे के आधे टुकड़े में, जिससे टब का काम लिया जाता था, नहाने लगे। कैथराइन ने, जिसकी पारी पहले थी, उसे गरम पानी से भरा और जल्दी-जल्दी अपने सब कपड़े उतार कर उसमें घुस गई। वह आठ वर्ष की उम्र से लेकर इसमें कोई बुराई न समझते हुए इतनी बड़ी हुई थी। सिर्फ उसने अपना धड़ आग की ओर कर लिया था और काले साबुन को अपने शरीर से रगड़ रही थी। किसी ने उसकी ओर गौर नहीं किया और उसका शरीर कैसा बना है इसे देखने की लोनोरी और हेनरी तक की उत्सुकता खत्म हो चुकी थी। जब वह नहा चुकी तो अपनी गीली जांघिया और अन्य कपड़ों को वहीं फर्श पर ढेर कर नंगी ही ऊपर चली गई। लेकिन दोनों भाइयों के बीच झगड़ा हो गया। जॉली जल्दी ही, यह बहाना बना कर कि जाचरे अभी खा रहा है, टब में कूद पड़ा था; और जाचरे अपनी पारी का दावा करते हुए उसे धकिया रहा था और चिल्ला रहा था कि कैथराइन को पहले नहाने देना मेरी भलमनसाहत थी परन्तु मैं छोटों का इस प्रकार मुँह लगना पसन्द नहीं करता। उन दोनों का झगड़ा साथ-साथ नहा कर खत्म हुआ। वे आग की ओर मुँह फेर कर एक दूसरे की पीठ मल कर सहायता पहुँचा रहे थे। तब वे भी अपनी बहिन की ही भाँति नंगे ही सीढ़ियों से ऊपर जाकर गायब हो गये।

उनके कपड़ों को सूखने के लिये डालते हुए माहेदी बड़बड़ाई, 'क्या फिसलन ये लोग बना देते है! अलजीरे, जरा इसे सुखा तो डालो।'

लेकिन दीवार की दूसरी ओर कुछ लड़ाई-झगड़े की आवाज से वह चुप हो

गई। वहां किसी पुरुष के कसमें खाने और औरत के चिल्लाने और उसके बाद मुक्कों की चोट से किसी खोखले कद्दू के गिरने का सा शब्द हुआ।

'लेवक्यू की औरत लड़ रही है; माहे ने शांति के साथ अपने प्याले में बचे सूप की तलछट को चम्मच से निकालते हुए कहा। 'बड़े ताज्जुब की बात है, बाउट-लोप तो कह रहा था कि सूप तैयार है।'

चिल्लाहट दुगुनी हो गई और फिर एक तेज धक्का-सा लगा जिससे दीवार हिल उठी और पुनः पूर्ण खामोशी छा गई। तब माहे ने आखिरी चम्मच खत्म करते हुए शांत विवेकशील भाव से कहा—'अगर सूप तैयार न हो तो फिर उसकी बात समझ में आ सकती है।'

और फिर एक पूरा गिलास पानी पीने के बाद वह सूअर के गोश्त पर टूट पड़ा। उसने उसके चौकोर टुकड़े काट लिये और उन्हें अपनी रोटी में रख कर चाकू की नोक से ही उन्हें उठा-उठा कर खाने लगा। उसके खाना खाते समय कोई बात चीत नहीं हुई। वह स्वयं इतना भूखा था कि उसे माइग्रेट के यहां के सामान का हमेशा का जायका तक मालूम नहीं पड़ा। उसने सोचा यह जरूर कहीं अन्यत्र से आया होगा, फिर भी उसने अपनी पत्नी से कोई प्रश्न नहीं किया। उसने सिर्फ इतना ही पूछा कि क्या बूढ़ा अब भी ऊपर सोया है। 'नहीं, ग्रेण्डफादर अपने रोजमर्रा की तरह घूमने निकल गया है।' फिर वहाँ खामोशी छा गई।

लेकिन गोश्त की खुशबू पाकर लीनोरी और हेनरी ने जमीन से अपना सर उठाया जहाँ वे फैले हुए पानी की नाली-सी काट कर खेल रहे थे। दोनों आये और अपने पिता के सामने खड़े हो गये, हेनरी आगे था। उनकी आँखें बराबर गोश्त का टुकड़ा प्लेट से उठाये जाने से लेकर उसे निगले जाने तक उसमें जमी रहती थीं। अन्त में पिता ने उनकी लालची इच्छा को ताड़ लिया, जो उनके चेहरे को पीला बनाये थी और उनके मुँह में पानी भर आ रहा था।

'क्या बच्चों को इसमें से कुछ दिया है, उसने पूछा?' और उसकी औरत के हिचकिचाने पर वह बोला, 'तुम जानती हो मैं अन्याय पसन्द नहीं करता। जब मैं इन्हें यहाँ टुकड़े माँगते खड़े देखता हूँ तो मेरी भूख खत्म हो जाती है।'

वह गुस्से से बोली, 'लेकिन यह तो इसमें से कुछ पा चुके हैं। अगर तुम इनकी सुनने लगो तो तुम अपना तथा औरों का भी हिस्सा दे दोगे और ये तो पेट फटने तक खाते ही चले जायेंगे। क्या यह सही नहीं है अलजीरे कि हम सब कुछ ले चुके हैं।?

'यकीनन! माँ,' छोटी कुबड़ी बोली, जो ऐसी परिस्थितियों में बड़े इतमीनान से बड़े व्यक्ति की भाँति झूठ बोल सकती थी।

लीनोरी और हेनरी इस प्रकार की झूठ से बड़े दुखी और विद्रोही-से वहाँ स्थिर खड़े रहे। उन्हें दुख हो रहा था कि उन्हें सच न बोलने पर कोड़े पड़ने हैं। उनके नन्हें दिल भर आये और वे विरोध में कहना चाहते थे कि जब औरों को हिस्सा मिला वे यहाँ नहीं थे।

'चले जाओ यहाँ से,' माँ ने उन्हें कमरे के दूसरे छोर तक खदेड़ते हुए कहा। 'तुम्हें हमेशा अपने पिता की प्लेट पर ताकने हुए शर्म आनी चाहिये, और अगर मान लो वह अकेला भी खा रहा है तो क्या वह काम नहीं करता, जब कि तुम सब निकम्मे हो। कुछ कर नहीं सकते सिवाय खर्च के।'

माहे ने उन्हें वापस बुला लिया। उसने लीनोरी को अपनी बाईं जांघ पर और हेनरी को दाईं पर बैठाया; फिर भोजन के समय उनके साथ खेल करते हुए अपना गोश्त समाप्त किया। उसने उसके छोटे-छोटे टुकड़े बनाये और प्रत्येक को उसका हिस्सा दिया। बच्चों ने खुश होकर उसे खाया।

जब वह खा चुका तो उसने अपनी पत्नी से कहा, 'नहीं, मुझे अभी काफ़ी मत देना। पहले मैं नहा लूं; और इस गंदे पानी को फेंकने मे मुझे मदद करो।'

उन्होंने टब को हेण्डल से पकड़ कर दरवाजे के पास नाली में उड़ेल दिया। तभी जॉली सूखी ब्रिजिश, ऊनी ब्लाउज पहन कर जो कि उसके बड़े भाई की थी और उसके लिए बड़ी पड़ती थी, नीचे आया और धीरे से खिसक कर निकलना चाहता था कि माँ ने उसे रोक लिया :

'कहाँ जा रहे हो ?'

'वहाँ।'

'कहाँ ?'

'कह दिया बस, वहाँ !'

'सुनो। जाओ और आज शाम के लिए कुछ सरसों का सलाद इकट्ठा कर लाओ। समझे ? अगर सलाद लेकर तुम नहीं लौटे तो फिर तुम्हें मुझसे भुगतना पड़ेगा।'

'बहुत अच्छा !'

जॉली अपनी जेबों में हाथ डाले, कंधे झुकाये और बूटों से भारी कदम रखता हुआ एक बुड्ढे खनिक की भाँति चला जा रहा था। बाद में जाचरे नीचे उतरा। वह ज्यादा सुघड़ता से कपड़े पहिने था। उसका शरीर बुनी हुई काली ऊनी जाकेट से ढँका था जिसमें नीली धारियाँ पड़ी थीं। उसके पिता ने उसे देर में न लौटने की हिदायत दी और वह अपना पाइप दांतों के बीच दबाये, बिना कुछ उत्तर दिये सर हिलाता हुआ निकल गया। टब पुनः गरम पानी से भर दिया गया था। माहेदी धीरे-धीरे उसकी जाकेट उतार रही थी। अलजीरे की ओर देखते ही वह

लीनोरी और हेनरी को बाहर खेलने ले गई। माहे सब बच्चों के सामने, जैसा कि बस्ती के कई घरों में होता था, नंगे नहाना पसंद नहीं करता था। वह किसी को दोष नहीं देता था; परन्तु वह सिर्फ यही कहता था कि बच्चों के लिए एक साथ नहाना अच्छा है।

'तुम ऊपर क्या कर रही हो?' माहेदी चिल्लाई।

'मैं अपनी पोशाक सी रही हूँ जो कल फट गई थी,' कैथराइन ने उत्तर दिया।

'अच्छा, ठीक। नीचे न आना, तुम्हारा पिता नहा रहा है।'

जब माहे, माहेदी अकेले रह गये तो माहेदी ने एस्टीली को कुर्सी पर लिटाने का निश्चय किया, और लड़की अपने को आग के पास पा कर रोई नहीं और अपने माता-पिता की ओर एकटक ताकती रही। वह नंगा टब के सामने झुका हुआ था। पहले उसने काले साबुन से रगड़-रगड़ कर सिर धोया। इसके निरंतर प्रयोग से उनके बाल रंगतहीन और उनकी पीढ़ी के बाल पीले पड़ गये थे। बाद में वह पानी में उतरा और दोनों हाथों से रगड़-रगड़ कर उसने अपना सीना, पेट, बाहें और रानें मलीं। उसकी औरत बगल में खड़ी उसे देखती रही।

वह बोली, 'जब तुम आये तो मैंने तुम्हारी आँखों को देख लिया था। तुम परेशान थे, क्यों? और सामान देख कर तुम्हें तसल्ली हुई। अजीब बात है! पायोलेन वालों ने मुझे एक सू भी नहीं दिया। ओह! वे बड़े मेहरबान है, उन्होंने बच्चों को कपड़े दिये और मुझे उनसे माँगते हुए शर्म आई; क्योंकि माँगते मेरे से बनता नहीं।'

एस्टीली कुर्सी से करवट लेकर लुढ़क न जाय इसलिये उसे सँभालने को एक क्षण वह रुकी। माहे अपना शरीर रगड़ता रहा। वह इस वार्ता में दिलचस्पी रखते हुए भी प्रश्न पूछने की जल्दबाजी न कर धैर्य के साथ रोशनी का इन्तजार करता रहा।

'हाँ, मैं बता रही थी कि माइग्रेट ने मुझे बिल्कुल इन्कार कर दिया जैसे कोई कुत्ते को लात मार कर घर से बाहर कर देता है। सोचो अगर मैं भी तैश में आ जाती! ये ऊनी कपड़े तुम्हें गरम तो रखते हैं परन्तु ये तुम्हारे पेट में तो कुछ नहीं डालते!'

उसने चुपचाप अपना सर उठाया। पायोलेन में कुछ नहीं मिला, माइग्रेट के यहाँ कुछ नहीं मिला, फिर यह कहाँ से आया? लेकिन, हमेशा की तरह उसने उसकी पीठ और उन अंगों को, जहाँ उसका हाथ नहीं पहुँच पाता था, रगड़ने के लिए अपनी कुरती की आस्तीनें मोड़ीं। अलावा इसके वह उसके हाथ से साबुन लगवाना और जब तक उसकी कलाई न दुखने लगे अपने अंगों को रगड़वाना

पसंद करता था। उसने साबुन उठा कर उसके कंधों पर मलना शुरू किया और वह धक्के को बरदाश्त करने के लिये अकड़ कर बैठ गया।

'तब मैं माइग्रेट के पास दुबारा लौटी और उससे कहा, आह! मैंने उससे कोई बात कही। और मैं सोचती हूँ इन लोगों के दिल नहीं होता और अगर कहीं न्याय है तो उसका नाश अवश्य होगा। इससे उसे परेशानी हुई, उसने अपनी निगाह फेर ली और चाहा कि मैं चली जाऊँ।'

पीठ से वह नीचे नितम्बों तक पहुँच चुकी थी और रगोटों पर साबुन लगा रही थी। शरीर का कोई भी अंग ऐसा नहीं था जिस पर वह हाथ न फिरा रही हो। वह उसे इस प्रकार चमकाना चाहती थी जिस प्रकार वह शनिवार को अपने तीनों बर्तनों को, घर की सफाई के बाद, चमकाती थी। अपनी बाहों की इस कसरत से उसे पसीना आ गया था और उसकी साँस फूलने लगी थी जिससे उसके शब्द रुक गये थे।

'अन्त में उसने मुझे पुरानी खुराफाती कहा। हमें शनिवार तक रोटी उधार मिलेगी और अच्छी बात तो यह हुई कि उसने मुझे पांच फ्रैंक उधार दे दिये। मैं मक्खन, काफी और चिकोरी तो उससे लाई। मैं तो गोश्त और आलू भी वहीं से ला रही थी परन्तु मैंने देखा कि वह भुनभुना रहा है। सात सूज का सूअर का गोश्त मिला और आठ सूज के आलू। मेरे पास अब तीन फ्रैंक पचहत्तर सूज चटपटी, मसालेदार तरकारी और गोश्तदार सूप के लिये बचे हैं। मैं नहीं सोचती कि मेरी आज की सुबह बेकार गई!'

अब वह उसे पोंछ रही थी और तौलिया से भीगे अंगों को रगड़ रही थी। शरीर में ताजगी महसूस कर भावी कर्ज की चिन्ता किये बिना वह हँस पड़ा और उसने उसे बाहों में उठा लिया।

'छोड़ दो मुझे, बेवकूफ! तुम गीले हो और मुझे भी भिगो रहे हो। सिर्फ मैं डर इस बात से रही हूँ कि माइग्रेट का विचार—'

वह बैथराइन का नाम लेने ही वाली थी परन्तु रुक गई। इसे परेशानी में डालने से फायदा ही क्या? इससे एक अन्तहीन विवाद उठ खड़ा होगा।

'क्या विचार?' उसने पूछा।

'क्यों, हमें लूटने के विचार। बैथराइन को बिल की सावधानी से जाँच करनी होगी।'

उसने पुनः उसे बाहों में उठा लिया और इस बार उसे छोड़ा नहीं। स्नान हमेशा ही इस प्रकार समाप्त होता था, उसकी तेज रगड़ने उसे उत्तेजित कर दिया

था और फिर तौलिया से रगड़ कर उसकी बाहों और सीने के बालों को ताजगी दी थी। अलावा इसके बस्ती के उसके सभी साथियों के लिए यह बेवकूफी की घड़ी थी जब कि इच्छा न होते हुए भी और बच्चे पैदा किये जाते थे। रात को तो पूरा परिवार वहाँ होता था ! उसने उसे मेज की ओर धकेला ! वह इसे अपना मनोरंजन कहता था, ऐसा मनोरंजन जिसमें कोई खर्च नहीं होता। अपने शिथिल शरीर और लटकी हुई छातियों से वह मजाक के तौर पर थोड़ा-बहुत प्रतिरोध कर रही थी।

'तुम बेवकूफ हो ! हे भगवान ! तुम कैसे बुद्धू हो ! देखो, वहाँ एस्टीली हमें देख रही है। ठहरो, मैं उसका सिर दूसरी ओर घुमा आऊँ।'

'ओह, बेकार ! तीन महीने की ही तो है ! वह क्या समझती है !'

जब वह उठा तो माहे ने सिर्फ एक सूखी ब्रिजिस पहनी। जब वह साफ रहता और अपनी औरत के साथ आनंद कर चुका होता तो वह कुछ देर के लिए नंगा रहना पसंद करता था। पीलिया वाली लड़की के समान ही उसके गोरे शरीर पर कोयले की खरोचें और खत्ते, जिन्हें खनिक तोहफा कहते थे, उसकी मजबूत बाहों और सीने में थे, जिन्हे दिखाने में वह गर्व का अनुभव करता था। ग्रीष्म मे सभी खनिक अपने दरवाजों पर इसी स्थिति में नजर आते थे। इस खराब मौसम में भी वह एक क्षण के लिए वहाँ गया और बगीचे की दूसरी ओर अपनी ही स्थिति में खड़े एक दूसरे खनिक को आवाज लगा कर गंदा मजाक करने लगा। और लोग भी अपने दरवाजों पर आ गये और फुटपाथ पर खेलने वाले बच्चों ने भी अपने सिर उठाये और खनिकों के थके शरीर के इस प्रकार के खुले प्रदर्शन से वे भी खुश होकर हँसने लगे।

उसने अभी अपनी कमीज नहीं पहनी थी और इसी स्थिति मे काफ़ी पीते हुए माहे ने अपनी पत्नी को तख्ते बैठाने के बारे में इंजीनियर की नाराजी की बात बताई। वह शांति और दृढ़ता से हर बात पर स्वीकृति-सूचक सिर हिलाते हुए अपनी औरत की सलाह सुनने लगा जो ऐसे मामलों में अधिक कुशलता का परिचय देती थी। वह हमेशा उससे कहा करती थी कि कम्पनी से लड़ने से कोई लाभ नहीं हो सकता। बाद मे उसने उसे मदाम हनेब्यू के बस्ती मे आने की बात बताई। मन ही मन में दोनों को इस बात का गर्व था।

'क्या मैं नीचे आ आ सकती हूँ ?' सीढ़ियों के सिरे पर खड़ी कैथराइन ने पूछा।

'हाँ, हाँ; तुम्हारा पिता शरीर सुखा रहा है।'

नवयुवती रविवार की पोशाक में एक पुराना, नीला पापलीन का फ्राक, जो

तह पर कई जगह फीका पड़ गया था, पहने थी। और काली ट्वली की साधारण टोपी उसके सिर पर थी।

'हलो ! तुम कपड़े पहने हो। कहाँ जाने की तैयारी है ?'

'मैं अपनी टोपी के लिए रिबन खरीदने मोंटसू जा रही हूँ। पुराना मैंने निकाल फेंका है; बहुत गंदा हो गया था।'

'तुम्हारे पास नामा है ?'

'नहीं, लेकिन माकेटी ने मुझे आधा फ्रैंक उधार देने का वायदा किया है।'

माँ ने उसे इजाजत दे दी, लेकिन दरवाजे पर उसने उसे वापस बुलाया।

'सुनो, माइग्रेट के यहाँ मत जाना और न रिबन ही खरीदना। वह तुम्हें लूट लेगा और समझेगा कि हम लोगों ने बहुत पैसा जमा किया है।'

अपने कंधों और गर्दन को जल्दी सुखाने के लिए आँच पर झुके पिता ने यह कह कर संतोष किया—'रात को सड़कों पर बेकार घूमना नहीं।'

फिर माहे ने बगीचे का काम किया। वह वहाँ आलू, सोयाबीन और मटर बो चुका था और अब कल रात से खुले में रखे गये करमकल्ले और चुकन्दर की पौध लगा रहा था। एक छोटा-सा बगीचा उनके पास था जिसमें आलू तो कभी भी ज्यादा नहीं हुए परन्तु अन्य शाक-सब्जी मिल जाया करती थी। वह बागवानी अच्छी जानता था और हाथोचक, जो कि आसपास के लिए दुर्लभ था, भी उगा लेता था। उसके क्यारी बनाते समय लेवक्यू भी पाइप पीने के लिए अपने घर के आँगन में आया और चुकन्दर के पौधों को देखने लगा जिन्हें उसके किरायेदार बाउटलोप ने सुबह खोद कर रोप दिया था और बगीचों के बीच लकड़ी की जाली के बारे में दोनों की बातचीत शुरू हुई। लेवक्यू अपनी औरत को पीटने के बाद कुछ उत्तेजित था और उसने माहे को रसेन्योर तक तक ले जाने की असफल चेष्टा की—'क्या, तुम एक गिलास भी पीने में घबरा रहे हो ? थोड़ी देर स्कीट्ल खेलने के बाद साथियों से गप लड़ाना और फिर भोजन के लिए वापस आ जाना।' खान छोड़ने के बाद उन लोगों का इसी प्रकार का जीवन था। निस्सदेह, इसमें कोई हर्ज तो नहीं है, लेकिन माहे जाने को राजी नहीं था क्योंकि अगर उसने आज चुकन्दर की पौध न लगायी तो कल तक वे मुरझा जायेंगे। वस्तुतः उसने सुविचार से ही इन्कार किया क्योंकि पाँच फ्रैंक की चेञ्ज में से वह अपनी औरत से एक फार्दिंग भी नहीं माँगना चाहता था।

पाँच बज चुका था और पेरीन यह जानने वहाँ आई कि उनकी लायडी तो जॉली के साथ नहीं गई। लेवक्यू ने जवाब दिया कि शायद उसका अनुमान ठीक

हो क्योंकि वीचर्ट भी गायब है और ये तीनों शैतान मटरगश्ती को इकट्ठे ही निकलते हैं। जब माहेदी ने उन्हें सरसों के सलाद की बात कहकर चुप किया तो वे दोनों खनिक उस औरत के लड़की के प्रति सख्त होने का मजाक उड़ाने लगे। वह क्रुद्ध हुई लेकिन वहाँ से नहीं गई। वस्तुतः वह उनके कड़े शब्दों से कमर में हाथ टिकाये चीखने-सी लगी थी। एक दुबली औरत गुस्से मे दाँत पीसती, मुर्गी के समान कुड़कुड़ाती उसकी मदद को दौड़ी। अन्य लोग अपने घरों के दरवाजों पर खड़े तमाशा देख रहे थे। अब स्कूल बंद हो चला था; और सभी बच्चे इधर-उधर दौड़ रहे थे। बच्चों की चिल्ल-पों, हो-हल्ले का शोर हो रहा था और उनके अभिभावक, जो होटलों मे नहीं गये थे, तीन-तीन, चार-चार के गोल में, खान की ही तरह चूनड़ों को एड़ियो से टिकाये, पाइप पीते गप-शप लड़ा रहे थे। जब लेवक्यू ने कहा कि उसकी रानें मजबूत है या वह नही उसे देखना चाहता है तो पेरीन गुस्से मे आग-बबूला होकर चली गई। चूंकि माहे अभी पौध लगा रहा था इसलिए लेवक्यू ने अकेले रसेन्योर के यहाँ जाने का निश्चय किया।

साँझ घिर आई थी, माहेदी ने लैंप जलाया। वह झल्लाई हुई थी कि लड़की और लड़कों मे से कोई भी वापस नही आया है। उसने इतना अन्दाजा तो लगा ही लिया था कि वे कभी-भी एक साथ मेज पर नही जुट पाते जब कि उनके लिए दिन के एक समय के भोजन के समय यह संभव हो सकता है। फिर वह सलाद का इन्तजार भी कर रही थी। मदी आँच मे पकने वाली आलू, अम्लबेंत, लहसुन की प्याज मे भूंजी गई तरकारी के साथ सलाद बहुत ही लज्जत देगा। समूचा घर प्याज के छौंक से महक रहा था।

माहे ने रात हो जाने पर जब बगीचा छोड़ा तो वह तत्काल कुर्सी पर लद गया और उसने दीवार के सहारे सिर टिका दिया। घड़ी ने सात बजाये। लीनोरी और हेनरी ने अलजीरे को मदद करने की जिद करते हुए एक प्लेट तोड़ डाली थी जो कि मेज पर पड़ी थी। जब फादर बोनेमाँ सब से पहले बाहर से घर मे घुसा तो उसे खाने की जल्दी थी। तब माहेदी ने माहे को जगाया।

'आओ, खाना खा लो। जब देखो यही हाल है, अब वे इतने बड़े हो गये हैं कि अपने लिए घर खोज लें। मुसीबत और परेशानी की जड़ तो सलाद रहा।'

५

रसेन्योर में अपना सूप समाप्त कर लॉतिये छत के नीचे अपने उस छोटे से कमरे में चला गया जिसमें वह रह रहा था और जिसका मुख वोरो की ओर था। वह थकान से चूर-चूर था इसलिए जो कपड़े वह पहने था उन्हीं समेत बिस्तर पर जा लेटा। पिछले दो दिनों में वह सिर्फ चार घंटा सोया था। साँझ के झुटपुटे में जब वह जागा तो एक क्षण वह अपने आसपास की स्थिति को पहचान नहीं पाया और घबड़ा-सा गया कि वह कहाँ आ गया है; उसे इतनी बेचैनी और सिर में इतना भारीपन महसूस हो रहा था कि वह रात्रि के भोजन से पहले ताजी हवा में घूमने की नीयत से बड़े कष्ट से उठा ताकि वह भोजन के बाद सो जाय।

बाहर, मौसम कुछ सुधर गया था। काला आसमान ताम्रवर्ण का होने लगा था। हवा में भारीपन और नमी से वर्षा होने का आभास मिलता था। रात्रि रूपी घने कुहासे से सुदूरवर्ती मैदान अंधकार के आवरण में डूबने-से लगे थे। हल्की लाल मिट्टी के इस सागर में आसमान काली धूल में धुलता सा प्रतीत होता था। वाता-वरण में घुटन और दाह-संस्कार की सी उदासी थी।

लॉतिये बिना किसी लक्ष्य के सीधा घूमने निकल पड़ा। उसका उद्देश्य ज्वर को दूर भगाना था। जब वह वोरो में गुजरा तो उसकी तलहटी में कुछ-कुछ अँधेरा हो चला था परन्तु अभी वहाँ लालटेन नहीं टाँगी गई थी। वह एक क्षण रुक कर दिन की पाली के मजदूरों का गुजरना देखता रहा। निस्संदेह छः बज चुका था। धुंधलके में खान के लैण्डर, पोर्टर और घोड़ों के सईस स्क्रीनिंग में काम करने वाली छोकरियों के साथ हँसी-मजाक करते झुंडों के रूप में घरों को जा रहे थे।

सबसे पहले पेरी और उसकी सास ब्रूली थे। ब्रूली पेरी को बुरा-भला कह रही थी कि उसने पत्थरों की गिनती में ओवरसीयर के साथ हुए उसके झगड़े में उसका पक्ष नहीं लिया।

'हट जा! निकम्मा कहीं का! उन जानवरों के सामने, जो हमें निगल रहे है, इस प्रकार नीचे झुकने वाला, तू अपने को मर्द कहता है!'

पेरी शांति के साथ बिना उत्तर दिये उसके पीछे-पीछे जा रहा था। अन्त में वह बोला—'मैं सोचता हूँ मुझे अपने अफसर पर कूद पड़ना चाहिए था? किस प्रकार झगड़े में फँसा जाता है यह बताने के लिए धन्यवाद!'

'तुम, उनके सामने अपने नितम्ब झुकाओ,' वह चिल्लाई। 'बाई गाड, अगर मेरी लड़की ने मेरी मानी होती। बुड्ढे को मार डालना उनके लिए काफी

नहीं था। तुम शायद मेरा यह कहना पसंद करो, 'धन्यवाद'। नहीं, मैं पहले उनकी खाल खींचूंगी।'

धीरे-धीरे उनका बोलना दूर से सुनाई नहीं पड़ा। लॉतिये ने देखा कि वह अपनी चील-सी नाक, सफेद उड़ते हुए बालों, लम्बी दुबली-पतली बाहों को क्रोध से हिलाती हुई गायब हो गई। उनके पीछे आने वाले दो युवकों की बातचीत की ओर वह आकर्षित हुआ। वह जाचरे को पहचान गया जो अपने मित्र माक्यूट के लिए वहाँ रुका हुआ था।

'तुम यहाँ हो ?' दूसरे ने कहा। 'हम कुछ खाने के बाद बोल्कन चलेंगे।'

'सीधे चलो। मुझे कुछ काम है।'

'वह क्या ?'

ठेला मजदूर मुड़ा और उसने फिलोमिना को स्क्रीनिंग शेड से निकलते देखा। उसने सोचा वह समझ गया।

'बहुत अच्छा, अगर ऐसी बात है। तब मैं आगे जाता हूँ।'

'हाँ, मैं तुम्हें पकड़ लूंगा।'

जब वह आगे बढा तो माक्यूट अपने बुड्ढे पिता माक्यू से मिला। वह भी वोरो से आ रहा था। दोनों ने सिर्फ एक दूसरे को 'गुड इवनिंग' कहा और लड़का मेन रोड से तथा उसका पिता नहर के किनारे के रास्ते से गया।

जाचरे उस सुनसान रास्ते में, फिलोमिना के प्रतिरोध के बावजूद उसे धकेल रहा था। वह जल्दी में थी इसलिये फिर कभी; और दोनों ने एक दूसरे के गलबैयां डाल दी। सिर्फ एक दूसरे को घर के बाहर देखते रहने में तो कोई आनन्द नहीं था, विशेष कर जाड़ों में, जब कि धरती नम रहती थी और लेटने के लिए गेहूँ के खेत भी नहीं थे।

'नहीं, नहीं, वह बात नहीं,' वह उसके कान में बोला, 'मुझे तुमसे कुछ कहना है।' वह धीरे से उसकी कमर में अपनी बांह डाले चलने लगा। तब, जब वे खान की छाया में पहुँचे तो उसने पूछा 'क्या तुम्हारे पास कुछ नामा है ?'

'काहे के लिए ?' वह बोली।

तब वह जरा झिझका, फिर उसने दो फ्रैंक के कर्ज की बात गढी और कहा कि इससे उसका परिवार संकट में है।

'चुप रहो। मैंने माक्यूट को देखा है, तुम फिर उसके साथ बोल्कन जा रहे हो, जहाँ वे गंदी गानेवालियाँ हैं।'

उसने अपना बचाव किया, क़सम खाते हुए अपनी छाती ठोंकी। तब, जब उसने संदेह में अपने कंधे उचकाये तो वह यकायक बोला—'अगर तुम्हें अच्छा लगे

तो तुम भी हमारे साथ आओ। तुम मुझे कभी मना नहीं करतीं। मुझे उन गायिकाओं से लेना ही क्या है ? तुम आ रही हो ?'

'और छोटे बच्चे ?' वह बोली। 'कोई भी एक हमेशा चिल्लाने वाले बच्चे को लिये कब तक खड़ा रह सकता हैं ? मुझे जाने दो, मेरा ख्याल है वे घर में परेशान होंगे।'

लेकिन वह उसे रोके रहा और मनाता रहा। 'देखो ! यह सिर्फ माक्यूट के सामने बुद्धू बनने की ही बात नहीं है जिससे मैंने वायदा किया हैं। एक पुरुष चिड़ियों की भाँति हर साँझ को चुपचाप जाकर बिस्तर पर लेट जाय यह संभव नहीं।' वह मान गई और उसने अपने गाउन को ऊपर उठाया तथा अपने नाखून से वहाँ की सीवन तोड़कर कुछ आधे फ्रैंक के सिक्के अपनी मगजी से निकाले। उसकी माँ न चुरा ले इस डर से वह खान में ओवर टाइम का अर्जित धन वहाँ छिपाया करती थी।

'मेरे पास पाँच हैं, तुम देखते हो,' उसने कहा, 'मैं तुम्हें तीन दूँगी। सिर्फ तुम कसम खाओ कि तुम अपनी माँ को हमारी शादी के लिए राजी करोगे। हमें इस तरह काफी अर्सा बीत चुका है और माँ हर समय मुझे खाने के लिए कोसती रहती है। पहले कसम खाओ।'

वह एक बड़ी नाजुक युवती की भांति बगैर आवेग के मुलायम शब्दों में बोल रही थी। वह जिन्दगी से थक चुकी थी। उसने कसम खाई और कहा कि यह एक पवित्र प्रतिज्ञा है; तब, जब उसे तीन आधे फ्रैंक मिल गये तो उसने उसका चुम्बन लिया, बुदबुदाया और उसे हँसने के लिए बाध्य किया। अगर उसने यह कह कर इन्कार न किया होता कि वह इस काम में कोई आनंद नहीं पा सकती तो वह खान के किनारे इस कोने में, जो उनकी काम-केलि का शिशिर-कालीन आवास था, उसके साथ रति का भी आनंद लिये होता। वह अकेली बस्ती में वापस चली गई और वह अपने साथी को पकड़ने के लिए खेतों के बीच होता हुआ लपका।

लॉतिये दूर से ही मंत्रमुग्ध-सा उनका अनुसरण कर रहा था और इसे साधारण समागम का स्थान समझते हुए समझ नहीं पा रहा था कि क्या बात है। खानों में काम करने वाली लड़कियाँ समय से पहले ही परिपक्व हो जाती थीं; उसे लिली की मजदूरिनों का स्मरण हो आया जिनका वह कारखानों के पीछे इन्तजार किया करता था। लड़कियों के ये गोल अपनी गरीबी की वजह से चौदह वर्ष की उम्र से ही व्यभिचार में लिप्त रहते थे। लेकिन एक दूसरी गोष्ठी ने उसे और भी हैरत में डाल दिया। वह ठहर गया।

खान के किनारे एक खोखले में, जो बड़े-बड़े पत्थरों के खिसकने से बन गया था, जॉली एक पत्थर पर बैठा, बीवर्ट और लायडी को अपनी अगल-बगल में बैठाये बुरी तरह उन पर बिगड़ रहा था।

'क्या बकते हो तुम ? समझे ? अगर तुममें से किसी ने भी ज्यादा मांगा तो मैं तुम दोनों को झाँपड़ मारूंगा। किसने पहले यह सुझाया था ?'

वस्तुतः सूझ जॉली की थी। खेतों में इधर-उधर भटकने के बाद, नहर के किनारे अन्य दोनों साथियों के साथ सलाद इकट्ठा करते हुए उसने विचारा कि इस सलाद के ढेर को घरवाले एक साथ नहीं खा सकते; और घर जाने के बजाय वह मोंटसू चला गया। वहाँ उसने बीवर्ट को तो सलाद की निगरानी पर बैठाया और लायडी से कहा कि वह घरों में जा-जाकर उसे बेचे। उसे इस बात का तजुर्बा था, क्योंकि वह कहा करता था कि लड़कियाँ जो चाहें बेच सकती है। व्यापार की इस धुन में सलाद का ढेर गायब हो गया परन्तु लड़की को ग्यारह सूज मिले और अब खाली-हाथ वे तीनों लाभांश बाँट रहे थे।

बीवर्ट बोला—'यह न्याय नहीं है ! तीन-तीन बँटने चाहिए। अगर तुम सात सूज रख लोगे तो हमें सिर्फ दो-दो मिलेंगे।'

'क्या कहा ? न्याय नहीं है !' जॉली ने गुर्राते हुए जवाब दिया। 'मैंने सबसे पहले ज्यादा इकट्ठा कर लिया था।'

बीवर्ट उससे बड़ा और मजबूत होने के बावजूद अपने डरपोक और दब्बू स्वभाव के कारण आमतौर से उसकी बात मान लिया करता था, ठगा जाता था और मार खा लेता था। परन्तु इस बार सामने पड़े धन ने उसे विद्रोह के लिए उत्तेजित किया।

'यह हमें ठग रहा है, लायडी, क्यों है ना ? अगर यह हिस्सा नहीं देता तो हम इसकी माँ से कह देंगे।'

जॉली ने तत्काल उसकी नाक में एक घूसा जमाया। 'दुबारा तो कहो ! मैं जाता हूँ और तुम्हारे घर पर कहूँगा कि तुमने मेरी माँ का सलाद बेंच डाला। और फिर, जंगली जानवर, मैं कैसे ग्यारह सूज को तीनों में बाँट सकता हूँ ? अगर तुम इतने चतुर हो तो तुम्हीं कोशिश कर देखो। यह रहे तुम दोनों के दो-दो सूज। जल्दी करो और इन्हें उठा लो वरना इन्हें मैं अपनी जेब में डाल लूंगा।'

बीवर्ट का विद्रोह ठंडा पड़ गया और उसने सूज दो मंजूर कर लिए। लायडी ने, जो काँप रही थी, कुछ भी नहीं कहा क्योंकि जॉली के सामने वह डर और एक पिटी हुई पत्नी की सी असमर्थता महसूस करती थी। जब उसने दो सूज उसकी

ओर बढ़ाये तो उसने डरते हुए हँसकर अपना हाथ आगे बढ़ाया। लेकिन यकायक उसने विचार बदल दिया।

'ऐंह! इस सब को लेकर तुम क्या करोगी? तुम्हारी माँ उन्हें छीन लेगी क्योंकि तुम उन्हें छिपाना नहीं जानतीं। अच्छा यही होगा कि उन्हें मैं ही तुम्हारे लिए रखे रहूँ। जब तुम्हें जरूरत पड़े मुझसे माँग लेना।'

और नौ सूज गायब हो गये। उसके मुंह बंद करने के लिए उसने अपनी बाँहें उसके गले में डाल दीं और उसके साथ खान के किनारे लुढकने लगा। वह उसकी औरत थी और अंधेरे कोनों में वे दोनों उसी प्रकार एक-दूसरे को प्यार करने की कोशिश करते थे जैसा वे सुनते या पर्दों के पीछे से अथवा दरवाजों की दरारों से अपने घरों में देखते थे। वे जानते हर चीज थे परन्तु वे अभी इतने छोटे थे कि कुछ कर सकने में असमर्थ थे। घंटों वे कुत्ते के पिल्लों की तरह फूहड़पन के खेल खेलते थे। वह इसे 'पापा और मामा का खेल' कहता था। जब वह उसका पीछा करता तो वह भाग जाती और बड़ी नजाकत से फिर स्वयं पकड़ाई में आती। कभी कभी नाराज भी होती लेकिन फिर किसी सुख की उम्मीद में आत्मसमर्पण कर देती थी। परन्तु वह सुख उसे नहीं मिल पाता था।

चूंकि बीवर्ट ऐसे खेलों में शामिल नहीं किया जाता था और हमेशा जब भी लायडी को छूने की कोशिश करता घूंसे खाता था इसलिए वह हमेशा कुढ़ा करता था और जब कभी वे उसकी उपस्थिति में इस प्रकार का खेल खेलते तो उसे बेचैनी सी होती, क्रोध आता। इसलिए उसका एक विचार उन्हें यह कह कर डराने का रहता था कि कोई उन्हें देख सकता है।

'उठो, जल्दी भागो! वहाँ, एक आदमी देख रहा है।' इस बार उसने सच कहा; वह लॉतिये था और घूमना जारी रखने के निश्चय से आगे बढ़ा था। बच्चे कूद कर खड़े हुए और भाग निकले और वह चक्कर काट कर नहर के किनारे-किनारे उधर से गुजरा। इन नन्हें शैतानों का भय देख कर वह मन ही मन हंसा। इसमें संदेह नहीं कि उनकी उम्र के लिहाज से यह सब करना-कराना बहुत ही जल्दी थी। परन्तु वे इतना देख-सुन चुके थे कि उन्हें रोकने का एक मात्र रास्ता उन्हें बाँध कर रखना था। लॉतिये उदास हो गया।

सौ कदम और आगे बढ़ने पर उसे और जोड़े मिले। वह रिक्वीलॉ पहुँच चुका था, और वहां, खान के खंडहरों के इर्द-गिर्द मोंटसू की सभी लड़कियां अपने प्रेमियों के साथ काम-केलि किया करती थीं। यह मिलने-जुलने का सामूहिक स्थान था, एकान्त और सुनसान स्थल, जहां कोयला भरने वाली (पुटर) लड़कियां, जिन्हें ओसरे में बच्चा जनने में खतरा मालूम पड़ता था, अपना पहला बच्चा जनने आती

थीं। टूटे हुए टट्टर के बाड़े से पुराना यार्ड सब के लिए खुला था जो अब एक बदनाम जगह बन गई थी। इसमे पुराने दो ओसारों के टूट कर गिरने तथा आधार स्तम्भों के ढांचों से छिपने की गुप्त जगहे स्वतः बन गई थीं। टूटी हुई ट्रामे चारों ओर बिखरी थी और पुरानी लकड़ी के ढेरों के आसपास घास तथा छोटे-छोटे पेड़ उग आये थे। हर लड़की यहां बेफिकी महसूस करती थी; सब के लिए छिपने के गुप्त स्थान थे; उनके प्रेमी उन्हे लतरों पर, लकड़ी के ढेरो के पीछे, ट्रामों मे लिटाते थे; वे कभी-कभी एक दूसरे की परवाह किये बगैर इतने करीब-करीब अपनी प्रेमिकाओं को लेकर पड़े रहते थे कि एक जोड़ा दूसरे जोड़े की सॉस लेने की आवाज सुन सकता था। और ऐसा प्रतीत होता था कि इस नष्टप्रायः इंजन के इर्द-गिर्द उन्मुक्त प्रेम में सृष्टि से बदला लिया जा रहा है और कामुकता के चाबुक के नीचे इन लड़कियों के, उदर मे जो अभी युवती नही बन पाई थीं, बच्चो का बीजारोपण किया जाता था।

फिर भी वहाँ एक रखवाला, ओल्ड माक्यू रहता था जिसे कम्पनी ने लगभग नष्ट एक बुरजी के नीचे दो कमरे दिये हुए थे जिनकी अन्तिम दीवारों के गिरने से उनके नष्ट होने का खतरा हमेशा बना रहता था। उसने छत के एक हिस्से की मरम्मत करली थी और वह आराम से अपने परिवार सहित यहाँ रहता था, वह और माक्यूट एक कमरे मे और माकेटी दूसरे मे। चूंकि खिड़कियों में अब एक भी शीशा नहीं बचा था इसलिए उनमे तख्ते लगाकर कीलों से जड़ दिया गया था; इन कमरो मे अच्छी तरह दिखाई भी नहीं पड़ता था। परन्तु यहाँ गरमी जरूर थी। अलावा इसके इस रखवाले को कोई चिन्ता भी नही थी, वह बोरो मे अपने घोड़ों की देख-रेख के लिए जाया करता करता था और उसे रिक्वलॉ के खंडहरों के बारे में, जिनमें एक मात्र कूपक इसलिए सुरक्षित रखा गया था कि वह पड़ोसी खान के रोशनदान की चिमनी का काम दे सके, कभी कोई चिन्ता नहीं रहती थी।

इस प्रकार फादर माक्यू उन्मुक्त प्रेम के बीच अपने बुढ़ापे के अन्तिम दिन गुजार रहा था। अपनी दस वर्ष की उम्र से माकेटी लगभग सभी खंडहरों के हर कोने में लेट आई थी। डरपोक और नन्हीं बच्ची लायडी की तरह नहीं बल्कि एक वयस्क लड़की की तरह और उसका जोड़ीदार कोई दाढ़ी-मूंछ वाला लड़का हुआ करता था। उसका बाप उससे कुछ न कहता था क्योंकि वह दूरदर्शी थी और कभी भी अपने किसी प्रेमी का घर में परिचय नहीं कराती थी। अब वह भी इस प्रकार की घटनाओं का अभ्यस्त हो गया था। जब वह बोरो जाता, जब वहाँ से वापस आता, जब कभी वह अपने कमरे से बाहर निकलता उसे कोई न कोई जोड़ा घास में पड़ा दीखता था और अगर कहीं उसे अपना सूप गरम करने के लिए लकड़ी

इकट्ठा करनी होती या खरगोश के लिए घास लाने को बाड़े के दूसरे छोर तक जाना पड़ता तो और बुरा होता। तब उसे एक-एक करके अपने चारों ओर मोंटसू की लड़कियों की विषय-सुख लोलुप नाकें उठी हुई दिखाई देती थीं और उसे सावधान रहना पड़ता था कि कहीं वह पगडंडी में चित लेटे प्रेमियों के अवयवों से टकराकर गिर न पड़े। अलावा इसके इस प्रकार की मुलाकातों से उसको तथा उन लड़कियों को होने वाली परेशानी शनैः शनैः खत्म सी हो चली थी और वह उन्हें उनका काम समाप्त करने की अनुमति देता हुआ धीरे-धीरे कदम बढ़ाता उस भले आदमी की भाँति सामने से गुजर जाता था जिसका प्रकृति के तौर-तरीकों से कोई झगड़ा न हो। जैसे नासपाती के बगीचे में पेड़ों के बीच प्रणयलीला में रत नील-कंठ पक्षी के जोड़े को कोई भी पहचान लेता है इसी प्रकार वह उनको और अन्त में वे उसे पहचानने लगे थे। ओह! जवानी! जवानी! कैसी है यह जवानी! मदहोश जवानी! कभी-कभी वह अँधेरे में जोरों की साँसें भरने वाले जोड़े की आवाज से विचलित-सा मौन दुख से अपनी ठुड्डी हिलाने लगता था। एक बात से वह बहुत नाराज था कि दो प्रेमियों को उसकी दीवार के बाहर आलिंगन की खराब आदत पड़ गई थी। इसलिए नहीं कि इससे उसकी नींद में खलल पड़ता था अपितु इसलिए कि वे दीवार के सहारे इस बुरी तरह खड़े होते थे कि अन्त में उन्होंने उसे क्षति भी पहुँचा डाली थी।

हर संध्या को उसका पुराना दोस्त फादर बोनेमाँ उससे मिलने आता था और नियमित रूप से रात्रि के भोजन से पहले उसी मार्ग से घूमकर निकल जाता था। दोनों वृद्ध बहुत कम बोलते थे, वे साथ-साथ बिताये जाने वाले आधे घंटे के समय में मुश्किल से आपस में दस-बारह शब्द बोलते थे। परन्तु इस प्रकार बीते हुए दिनों की स्मृति को ताजा करने और बिना बातचीत किये उन्हें मानसपटल पर उतारने में उन्हें बड़ा सुख मिलता था। रिक्वलाँ में वे एक बल्ली के ऊपर पास-पास बैठ जाते थे और फिर एक दो-शब्द कहने के बाद जमीन की ओर अपना मुँह झुकाये मधुर स्वप्नों में डूब जाते थे। निस्सदेह वे पुनः जवान हो रहे थे। उनके चारों ओर प्रेमी अपनी प्रेमिकाओं के साथ अठखेलियाँ करते थे, चुम्बनों और खिलखिलाहट की ध्वनि के साथ कुचली हुई घास की ताजगी में लड़कियों के शरीर की सुखद सुवास उठती थी। इस बात को तैंतालिस वर्ष गुजर चुके थे जब कि फादर बोनेमाँ ने एक पुटर को अपनी पत्नी बनाया था। वह इतनी छोटी थी कि आसानी से आलिंगन करने के लिए उसने उसे एक ट्राम में बैठा दिया था। आह! वे बड़े सुन्दर दिन थे। और दोनों बुड्ढों ने, अपने सिर हिलाते हुए, एक दूसरे से विदा ली। कभी कभी वे एक दूसरे को अभिवादन करना तक भूल जाते थे।

उस संध्या को, जब लॉतिये वहाँ पहुँचा, फादर बोनेमॉ ने बस्ती मे लौटने के उद्देश्य से बल्ली पर से उठते हुए माक्यू से कहा: 'गुडनाइट, ओल्डमैन। मैंने कहा, तुम रूसी को तो जानते हो ?'

माक्यू एक क्षण को अपने कंधे हिलाता हुआ चुप रहा, तब घर की ओर लौटता हुआ बोला 'गुडनाइट,गुडनाइट, ओल्डमैन'।

उनके चले जाने के बाद लॉतिये आकर उस बल्ली पर बैठ गया। उसकी उदासी बढ़ रही थी, गोकि वह स्वयं नहीं समझ पा रहा था ऐसा क्यों है ? और उस वृद्ध की आँखों से ओझल होने वाली पीठ को देखता हुआ वह सुबह की वे बातें याद कर रहा था जो उसने तीर-सी चुभने वाली हवा के झोंके के बीच अपने मौनी स्वभाव मे कही थी। कैसी दीनता है ! और ये लड़किया थकान मे चूर-चूर होने पर भी संध्या समय बच्चे पैदा करने की बेवकूफी करती है, इसका कहीं अन्त नहीं है। क्या यह बेहतर न होगा कि दुर्भाग्यपूर्ण घडी आने पर वे अपने पेट बंद कर लें और अपनी रानों को भींच ले ? शायद ये उदासीन विचार उसके मन मे अस्तव्यस्त रूप मे इसलिये भी पैदा हो रहे थे कि अन्य लोग इस सध्या समय जोड़ो के रूप मे इधर-उधर घूम रहे थे और मजा ले रहे थे। नम मौसम मे वह घुटन भी महसूस कर रहा था। कभी-कभी वर्षा की बूंदे उसके ज्वराक्रांत हाथों मे गिर रही थीं। हाँ, वे सभी यही करते है; यह तर्क मे भी कोई सबल वस्तु है।

तभी जब लॉतिये छाया मे निश्चल बैठा था, एक जोड़ा उसे देखे बगैर उसके पास से गुजर कर रिक्वीलॉ की ऊँची-नीची भूमि मे प्रविष्ट हुआ। लड़की जो निश्चित कुँवारी थी, कानाफूसी की आवाज मे अपने को छुड़ाती हुई विरोध प्रकट कर रही थी और लड़का उसे ओसारे के एक कोने मे अंधेरे की ओर खींच रहा था। यह कैथराइन और चवाल थे। लेकिन लॉतिये, जब वे उसके पास से गुजरे, उन्हे नही पहचान पाया था और उसकी आँखें बराबर उनका पीछा कर रही थी। वह भी कामुक उत्सुकता से प्रेरित-सा कहानी का अन्त देखना चाहता था और उसके विचारों का प्रवाह बदल चुका था। वह क्यों खलल डाले ? जब लड़कियाँ इन्कार करती हैं तो इसलिए कि वे पहले जबरदस्ती चाहती है।

ड्यू-सेंट-क्वारेंटे की बस्ती से निकल कर कैथराइन सड़क के रास्ते मोंटसू गई थी। दस वर्ष की उम्र से ही वह खान में अपनी रोजी कमाने लगी थी और वह खनक परिवारों की पूर्ण आजादी से अकेली सब जगह घूमाकरती थी; और अगर पन्द्रह वर्ष की होने पर भी किसी पुरुष ने उसे नहीं अपनाया था तो इसका कारण उसके युवती होने मे विलम्ब था; वह समय अभी नहीं आया था। जब वह कम्पनी के यार्ड के सामने पहुँची तो वह सड़क पारकर एक धोबिन के यहाँ घुस गई

जहां उसे माकेटी के मिलने की उम्मीद थी, क्योंकि यहाँ माकेटी सुबह से लेकर शाम तक रहती थी और औरतें यहाँ दिन भर काफी पिया-पिलाया करती थी। परन्तु उसे निराशा हुई; माकेटी उस समय अपनी पारी में वहाँ औरतों को काफी पिलाने में अपने सभी पैसे खर्च कर चुकी थी और वह अपना वायदा पूरा नहीं कर सकी। उसे सान्त्वना देने के लिए उन्होंने गरम काफी का एक गिलास पिलाने का असफल प्रयास किया। वह यह भी नहीं चाहती थी कि उसकी सहेली किसी दूसरी औरत से उधार ले। किफायतशारी का एक विचार उसके मन में आया, एक प्रकार का अंधविश्वास उभरा कि अभी अगर उसने रिबन खरीदा तो वह उसके लिये अशुभ होगा।

वह बस्ती की ओर जाने वाली सड़क में पहुँचने के लिए जल्दी-जल्दी चलने लगी और वह मोटमू के अन्तिम मकानों तक पहुँचने ही वाली थी कि पिक्यूटी एस्टेमिनेट के दरवाजे पर एक पुरुष ने उसे पुकारा—

'ओ ! कैथराइन ! इतनी तेजी से कहाँ चली ?'

वह लेंकी चवाल था। वह कुछ झुंझलाई, इसलिए नहीं कि उससे वह नाखुश थी बल्कि इसलिए कि वह मजाक के लिए तैयार नहीं थी।

'अन्दर आओ और कुछ पियो। एक छोटा गिलास शर्बत का, क्या तुम नहीं लोगी ?'

उसने विनम्रता से इन्कार किया; रात हो रही है, वे घरवाले उसका इन्तजार करते होंगे। वह बढ चुका था और दबी जबान से उसे सड़क के बीच से रोके था। बहुत समय से उसका इरादा था कि वह उसे पिक्यूटी एस्टेमिनेट से किराये के अपने कमरे में आने को मजबूर करे। पहली मंजिल पर बना यह कमरा एक गृहस्थी के लिए मजे का था, इसमें एक चौड़ा बिस्तर बिछा था। 'क्या मुझसे तुम्हें डर लगता है कि तुम हमेशा इन्कार कर देती हो ?' वह हँसमुख स्वभाव से हँसी और बोली, 'मैं कभी ऐसे दिन आऊँगी जिस दिन बच्चे पैदा न होते हों।' तब एक के बाद एक चर्चा के दौरान में उसने बताया कि वह एक नीला रिबन चाहती है परन्तु उसे खरीदने में असमर्थ है।

वह बोला 'मैं, उसका दाम दूँगा।'

यह महसूस करते हुए कि उससे इन्कार कर देना ही बेहतर होगा वह कुछ शरमाई लेकिन फिर रिबन लेने की तीव्र इच्छा ने उसे धर दबाया। उधार लेने का विचार उसके दिमाग में आया और अन्त में उसने इस शर्त पर उसे स्वीकार किया कि जो कुछ वह उस पर खर्च करेगा वह उसे लौटा देगी। वे फिर मजाक करने लगे; यह तय हो गया कि अगर वह उसके साथ नहीं सोयेगी तो वह उसका

दाम लौटा देगी। परन्तु जब उसने माइग्रेट के यहाँ चलने की बात कही तो वहाँ एक दिक्कत और आई।

'नहीं, माइग्रेट के यहाँ नहीं; माँ मुझे छोड़ेगी नहीं।'

'क्यों? क्या यह बताने की जरूरत है कि तुम कहाँ गई थीं? उसके पास मोंटमू मे सबसे बढ़िया रिबन है।'

जब माइग्रेट ने देखा कि लेंकी चवाल और कैथराइन अपनी सगाई के तोहफे खरीदने वाले प्रेमियों के जोड़े की भाँति उसकी दूकान मे आये हैं तो वह गुस्से मे लाल हो गया और उसने नीले रिबन के टुकडे उस व्यक्ति की भाँति कुढ़ते हुए दिखाये जिसका मजाक उड़ाया जा रहा रहा हो। तब, जब वह उन्हें सामान दे चुका तो उन्हे अपने दरवाजे पर खड़ा होकर अँधेरे मे लुप्त होते देखता रहा और जब उसकी औरत डरी हुई आवाज मे उससे कुछ पूछने आई तो उस पर नाराज होकर गालियाँ बकने लगा और बोला,' कभी न कभी उन्हे पछताना होगा, घिनौने कीडे कही के, उन्हे जरा भी शरम नहीं है, उन्हे जमीन पर गिराकर तलवे न चटाये तो।'

लेंकी चवाल कैथराइन के साथ-साथ सड़क पर जा रहा था। वह उसकी बगल में अपनी बाँहे हिला रहा था, कभी-कभी वह उसके नितम्बों पर हाथ फेर लेता था और उसे सड़क से एक ओर ले जाना चाहता था, साथ ही वह ऐसा भी दिखला रहा था कि अनायास ही यह सब हो रहा है। यकायक लड़की ने महसूस किया कि वह उसे फुटपाथ से अलग ले जा चुका है और वे तंग रिक्वीलाँ सड़क पर बढ़ रहे हैं। अब उसका नाराजी जाहिर करना बेकार था; उसकी बाँह उसकी कमर के चारों ओर पड़ चुकी थी और वह लगातार मीठी-मीठी बातो से उसे उत्तेजित कर रहा था। 'तुम डर कर कितनी बेवकूफी करती हो। क्या मैं तुम जैसी नन्ही प्रेमिका को, जो रेशम से भी मुलायम हो कभी नुकसान पहुँचाने की सोचूंगा?' और वह उसके कान के पीछे, उसकी गर्दन के पास अपना मुँह लाकर इस प्रकार चुम्बन लेने लगा कि उसके सारे शरीर मे एक बिजली सी दौड़ गई। उसने दबाव-सा महसूस किया और कोई उत्तर न दे सकी। यह सच था कि वह उसे प्यार करने लगा था। शनिवार की शाम को मोमबत्ती बुझाने के बाद वह सोचने लगी थी कि अगर वह इस प्रकार उसे अपना ले तो क्या होगा? और फिर सो जाने पर उसने स्वप्न देखा कि अत्यन्त आनन्द प्राप्त कर वह इन्कार न कर सकी थी। फिर क्यों, आज, उस विचार से वह अनमनी सी और खेद जैसा महसूस कर रही है? जब वह उसकी गर्दन पर अपनी मूँछों को हल्के-हल्के फिरा रहा था तो वह आँखें बन्द किये थी,

उसकी बन्द पलकों के अँधेरे में उसके सामने से एक अन्य नवयुवक की छाया-सी गुजरी जिसे आज प्रातःकाल उसने खान में देखा था।

कैथराइन ने यकायक अपने चारों ओर नजर डाली। चवाल उसे रिक्वीलाँ के खंडहरों की ओर ले जा रहा था और वह झिझकती हुई गिरे हुए ओसारे के अंधकार से काँप रही थी।

'ओ! नहीं! ओ! नहीं!' वह धीरे से बोली, 'कृपया मुझे जाने दो।' पुरुष का भय उस पर छा गया था। ऐसा भय जो कि लड़कियों की इच्छा होते हुए और पुरुष की अवश्यभावी विजय को महसूस करते हुए भी प्रतिरक्षा की भावना से उनकी मांसपेशियों को सबल बना देता है। उसको कौमार्य भंग होने और अज्ञात घाव से पीड़ा का भय हुआ।

'नहीं, नहीं! मैं नहीं चाहती! मै तुम्हें बताऊँ मैं बहुत छोटी हूँ, यह सच है! फिर कभी, जब मैं पूर्ण युवती हो जाऊँगी।'

वह धीमी आवाज मे गुर्राया : 'बेवकूफ! इसमें डर की कोई बात नहीं। इसमें बिगड़ता ही क्या है?'

लेकिन अधिक बोले बगैर उसने उसे मजबूती से पकड़ कर ओसारे के नीचे धकेल दिया था, और वह पीठ के बल पुरानी रस्सियों पर जा गिरी, उसने विरोध बंदकर समय से पहले ही पुरुष की इच्छा के आगे आत्मसमर्पण कर दिया था, उसमें परम्परागत भाव था जो उसकी जाति की हर लड़की को करना पड़ता था। उसकी भयपूर्ण कंपकंपी कम हो चली थी और पुरुष की कामुक साँसों का स्वर सुनाई दे रहा था।

लॉतिये ने वहाँ से हिले बगैर सब बातें सुनी थीं। और अब वह सुखान्त का उपसंहार देख चुका था। एक ईर्ष्यापूर्ण उत्तेजना से, जिसमे क्रोध का भी पुट था, छटपटाता से बेचैनी से उठ खड़ा हुआ। वह अपने आप को अधिक न रोक सका। वह बल्लियों से नीचे उतरा, क्योंकि वे दोनो रति मे इतने व्यस्त थे कि उनको विघ्न का कोई आभास नहीं हुआ। जब वह रास्ते मे लगभग सौ कदम आगे बढ़ चुका था तो उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि वे खड़े हो चुके थे और ऐसा प्रतीत होता था कि वे भी, उसी की भाँति, बस्ती की ओर लौटने वाले है। पुरुष ने पुनः लड़की की कमर मे अपनी बाँह डाल दी थी और वह उसके प्रति कृतज्ञता सी जाहिर करता हुआ उसकी गर्दन से मुँह सटा कर बोल रहा था और लड़की जल्दी ही लौटने के लिए उतावली-सी इस विलम्ब से नाराज-सी प्रतीत होती थी।

तब लॉतिये को उनके चेहरे देखने की तीव्र इच्छा हुई। यह बेवकूफी थी और इस इच्छा के वशीभूत न होने के लिए वह तेजी से कदम बढ़ाने लगा, परन्तु

उसकी चाल स्वतः धीमी पड़ गई और पहले लैंप-पोस्ट के पास वह छाया में छिप गया। जब उसने लेंकी चवाल और कैथराइन को पहचाना तो वह हक्का-बक्का रह गया। पहले तो वह झिझका—क्या यह वही थी, वही जो पुरानी, नीली पोशाक और टोपी पहने थी ? क्या यह वही छोकरी थी जिसे उसने ब्रिजिस और सिर मे केनवास की टोपी पहने देखा था। यही कारण था कि इतने पास से गुजर जाने पर भी वह उसे पहचान न सका। पस्नु अब उमे संदेह न रह गया था, उसने पुनः उसकी आँखों को फिर से देखा था, जिनमे झरने के पानी की सी स्वच्छता और गहराई थी।

कैथराइन और चवाल धीरे से उसके पास से गुजरे। उन्हें गुमान तक नहीं था कि कोई उन्हें देख रहा है। उमके कान के पीछे चुम्बन के लिए उसने उसे रोका और उसके आलिंगन—चुम्बन मे उसके कदम भी धीमे पड़ गये जिससे वह हँस पड़ी। पीछे छूट जाने पर लॉतिये भी उनके पीछे-पीछे चला। वह खीझा था कि वे रास्ता रोके खड़े थे और क्रुद्ध था कि उसे ऐसी बातें देखनी-सुननी पड़ रही है। तब, उसने आज सुबह कसम खाकर जो बात कही थी सच थी, वह किसी की पत्नी नहीं थी, और उसने उसका विश्वास न करते हुए उसके साथ उस दूसरे पुरुष की तरह व्यवहार न कर अपने को उससे वंचित कर लिया था। इससे वह पगला सा गया ! उसने अपनी मुट्ठियाँ बाँधी और हत्या के आवेग मे, जिसमे उसे हर वस्तु लाल दिखाई देती थी, वह उस दूसरे आदमी को निगल जाना चाहता था।

आधा घंटा चलने के बाद जब चवाल और कैथराइन वोरो के करीब पहुँचे तो उसकी चाल और धीमी पड़ गई। वे दो बार नहर के किनारे, तीन बार खान के किनारे रुके। वे बहुत खुश थे और एक दूसरे से छेड़खानी मे व्यस्त थे। जाहिर हो जाने के भय से लांतिये को भी उनके रुकने पर रुकने को बाध्य होना पड़ता था। वह एक पश्चाताप की आग मे जल रहा था कि अच्छे संस्कारों की वजह से वह लड़कियों के साथ किस तरह का व्यवहार किया जाय सीख नहीं पाया है। अब, वोरो मे गुजरने पर वह रसेन्योर मे जाकर खाना खाने को स्वतंत्र था, लेकिन वह बराबर उनका पीछा करता रहा। बस्ती तक जाने के बाद वह पन्द्रह मिनट तक छाया में खड़ा-खड़ा चवाल के कैथराइन को उसके द्वार तक छोड़ने का इन्तजार करता रहा, और जब वह आश्वस्त हो गया कि वे दोनों साथ नहीं रहे तो वह फिर घूमने निकल पड़ा और मार्सनीज़ रोड पर बहुत दूर तक निकल गया।। वह कुछ सोच नहीं पा रहा था; वह इतनी घुटन और उदासी महसूस कर रहा था कि उसका कमरे में बन्द रहना असंभव था।

लगभग एक घंटे बाद, नौ बजे करीब, वह फिर एक बार बस्ती मे गुजरा और मन ही मन मे सोच रहा था कि अगर उसे चार बजे सुबह उठना है तो उसे अब खा-पीकर सो जाना चाहिए। गाँव मे सब लोग सो गये थे और रात्रि की कालिमा वहाँ छाई थी। बंद झरोखों मे कहीं भी प्रकाश नहीं दीख रहा था। मकानों के अगले हिस्सों मे गहरी नींद सोने वालों के खर्राटे सुनाई दे रहे थे। वीरान बगीचों से सिर्फ एक बिल्ली गुजरी। दिन खत्म हो चुका था और थकान मे चूर, मजदूर भोजन के बाद टेबलो से उठकर बिस्तरों मे जा गिरे थे।

रसेन्योर में, एक प्रकाशित कमरे मे, एक इंजनमैन और दो मजदूर पी रहे थे। लेकिन अन्दर जाने से पूर्व लॉतिये ने अंधकार मे आखिरी नजर डाली। उसे प्रातः काल की भाँति, जब वह वहाँ पहुँचा था, वही कालिमा ही कालिमा नजर आई। उसके सामने दुष्ट दानव की भाँति घोरो दुबकी खड़ी थी और चंद लालटेनों की रोशनी मे उसका धुँधला स्वरूप दीख रहा था। तीन रक्तिम चाँद मे अधर मे लटके जल रहे थे और उनके प्रकाश मे फादर बोनेमॉ और उसके कद्दावर घोड़े की प्रतिछाया यदा-कदा दिखाई देती थी और उसके बाद, चौरस मैदान में मोटसू, मार्सेनीज, वण्डामे का जगल और चुकन्दर तथा गेहूँ के खेतो का विस्तृत सागर, हर वस्तु अँधेरे मे डूब गई थी। इसमे सिर्फ लोहा गलाने की भट्टियों की नीली रोशनी और कोयले के चूल्हों की लाल रोशनी दूरस्थ प्रकाशस्तम्भों की भाँति चमक रही थी। धीरे-धीरे रात रंग जमाने लगी थी, धीमी-धीमी वर्षा भी शुरू हो गई थी। रात्रि के इस आवरण मे एकमात्र आवाज, पंपिंग इंजन की लम्बी सांस लेने की सी कर्णकटु ध्वनि, सुनाई दे रही थी।

*

तीसरा भाग

१

दूसरे दिन और उसके बाद लांतिये लगातार खान में काम करता रहा। वह अब इस नये काम का आदी हो गया और इस श्रम और नयी आदतों से, जो पहले उसे मुश्किल लगती थीं, उसका अस्तित्व नियमित हो गया था। सिर्फ एक घटना से पहले पखवारे की एकरसता भंग हुई। हल्के ज्वर से वह अड़तालीस घंटे बिस्तर पर पड़ा रहा, उसके जोड़-जोड़ दुख रहे थे और सिर में जोरों से पीड़ा थी। इस अर्ध-चेतन अवस्था में वह स्वप्न देख रहा था कि एक गलियारे में वह ट्राम खींच रहा है, वह इतना सँकरा है कि उसका शरीर उससे निकल नहीं रहा है। यह सिर्फ काम में नये होने से थकान की अधिकता मात्र थी जिससे वह जल्दी ही अच्छा हो गया।

इसके बाद दिन, सप्ताह और महीने गुजरते जा रहे थे। अब अपने साथियों की भाँति वह भी सुबह तीन बजे उठता और काफ़ी पीकर पिछली संध्या से मदाम रसेन्योर द्वारा तैयार किये गये डबलरोटी के दो स्लाइस और मक्खन अपने साथ ले जाता। सुबह जब वह खान में पहुँचता तो नियमित रूप से उसे बोनेमाँ सोने के लिये घर जाता मिलता और लौटते समय उसकी भेंट बाउटलोप से काम पर जाते हुए होती। उसकी अपनी टोपी, ब्रिजिस और केनवास की जाकेट थी और वह काँपता हुआ ओसारे के नीचे आँच के सामने अपनी पीठ गरम करता था। फिर वह नंगे पाँव रिसीविंग रूम में इन्तजार करता, जहाँ कि तेज हवा के झोंके चला करते थे। लेकिन वह बड़े इस्पाती अवयवों वाला इंजन और उसकी ताँबे की चमकने वाली पट्टियाँ अब उसे आकर्षित नहीं करती थीं; वह तार, वह कटघरे और सिगनलों की आवाज, चिल्ला कर दिये जाने वाले आदेश, धातु के फर्श को हिलाने वाली ट्रामें अब उसे प्रभावित नहीं कर पाती थी। उसका लेंप

बुरी तरह जला करता था। उस लैंपमैन ने उसे ठीक तरह साफ नहीं किया था और वह तभी बदला गया जब कि माक्यूट ने उनको एक साथ बाँधकर भेज दिया और दुष्टता के साथ लड़की के चूतड़ों मे लात मारी। कटघरा खोला गया और वह छेद की सतह मे पत्थर की भाँति गिरने लगा और लाँतिये ने सिर उठाकर दिन के प्रकाश को गायब होते देखने तक का कष्ट नहीं किया। उसे गिरने का कभी खतरा नहीं हुआ। वहाँ वर्षा की तरह चूने वाले पानी में अंधकार में डूबता हुआ वह बड़े इत्मीनान से बैठा रहता था। नीचे 'पिट आई' पर जब पेरी उन्हे पाखण्ड पूर्ण विनम्रता से उन्हें उतारता तो वे भेड़ों के झुंड की भाँति लड़खड़ाते हुए अपनी कटान की तरफ भागते थे। अब वह मोंटसू की सड़कों मे भी अच्छी तरह खान के गलियारों को पहचानने लगा था। वह जानता था कहाँ मुड़ना है, कहाँ रुकना है, और कहाँ उसे उभार से अपने को बचाना है। जमीन के भीतर इस दो किलोमीटर के क्षेत्र से वह इतनी अच्छी तरह परिचित हो गया था कि वह अपनी जेबों मे हाथ डाले, बिना लैंप के इधर-उधर आ-जा सकता था। हर बार एक सा तरीका बंध गया था : एक कमान गुजरते हुए मजदूरों के चेहरों पर रोशनी फेंकता, फादर माक्यू किसी घोड़े को ले जाता, बीवर्ट हिनहिनाते बेटली को हाँकता, जाली हवा के दरवाजे को बंद करने के लिये ट्रेन के पीछे दौड़ता और माकेटी तथा लायडी अपनी ट्रामों को धकेलती होतीं।

कुछ समय बाद लाँतिये को भी कटान की घुटन और नमी का असर पहले से कम मालूम पड़ने लगा। चिमनी या चढ़ाई का मार्ग ऊपर चढ़ने के लिए उसे अधिक सुविधाजनक लगता था। ऐसा मालूम पड़ता था कि जहाँ वह पहले हाथ डालने की हिम्मत न करता वहाँ वह पिघल कर दरारों के बीच से गुजर सकता है। कोयले की धूल मे साँस लेने मे उसे कोई दिक्कत नही होती थी और वह अपने शरीर पर सुबह से लेकर रात तक गीले कपड़ों को पहने रहने का अभ्यस्त हो गया था तथा उस धुंध मे स्पष्ट देख सकता था। अलावा इसके वह अपनी शक्ति अनावश्यक रूप से खर्च न करता था। वह इतनी जल्दी अपने काम मे माहिर हो गया था कि समूचे स्टाल को उस पर आश्चर्य हुआ। तीन हफ्तों मे ही वह खान के सब से कुशल कोयला भरने वालों मे गिना जाने लगा; ऊपर कटघरे के पास तक कोई भी व्यक्ति उससे जल्दी ट्राम नहीं पहुँचा सकता था और न उसके समान तेजी से सही-सही माल ही भर सकता था। अपने छरहरे शरीर से वह सर्वत्र आ-जा सकता था। गोकि उसकी बाँहे एक नाजुक महिला के समान मुलायम थी परन्तु अपने मुलायम जिस्म के अन्दर वह फौलाद का बना मालूम होता था। उसने कभी भी थका होने की शिकायत नही की, गोकि यह उसका दंभ था और वह कभी-

कभी इतना थक जाता था कि वह कराहने लगता था। उसमें बस एक ही खराबी थी कि वह मजाक सहन नहीं कर सकता था और जब कभी कोई उसको छेड़ता तो वह नाराज हो जाया करता था। अलावा इसके अन्य बातों से वह एक वास्तविक खनिक लगता था जो इस आदत के नीचे दबा शनैः शनैः एक मशीन बन गया हो।

माहे लॉतिये के प्रति विशेष स्नेह रखता था क्योंकि वह अच्छे कामगार की इज्जत करता था। फिर, अन्य लोगों की भाँति उसने भी महसूस किया कि यह छोकरा उससे ज्यादा पढ़ा-लिखा है। उसने उसे पढते-लिखते और छोटी-छोटी योजनायें बनाते देखा; उसे ऐसी बातें कहते सुना जिनके अस्तित्व का उसे स्वयं पता नही था। इससे उसे आश्चर्य नही हुआ, क्योंकि खनिक इंजन-मैनों की अपेक्षा मोटी बुद्धि के होते है, लेकिन उसे इस छोकरे के साहस पर आश्चर्य होता था कि किस प्रकार उसने भूखो मरने से बचने के लिए कोयले का काम सीखा था। उसे कोई भी ऐसा कामगार नहीं मिला था जो इतनी जल्दी काम का अभ्यस्त हो गया हो। इसलिए जब टुकड़ा करना जरूरी होता और वह किसी मलकट्टे को काम पर से बुलाना नही चाहता तो वह लकड़ी बैठाने का काम नवयुवक को दे दिया करता था और उसे काम की सफाई और पुख्ता होने का पूरा-पूरा भरोसा रहता था। अधिकारी उसे तख्ते के बैठाने के प्रश्न पर हमेशा परेशान किये रहते थे और वह हर समय डरता रहता था कि इंजीनियर निग्रोल डेनार्द के साथ चिल्लाता, बहस करता और हर चीज को फिर से करने का आदेश देता हुआ न पहुँच जाय और उसका कहना था कि इन अधिकारियों को नवयुवक के तख्ते बैठाने से बड़ा संतोष था गोकि वे आदतन कभी संतुष्ट नही होते थे और हमेशा इस बात को दुहराया करते थे कि कभी न कभी कम्पनी को कोई क्रांतिकारी कदम उठाना ही होगा। समय गुजरता गया, एक गहरा असतोष धीरे-धीरे खनिकों मे छा रहा था और माहे स्वभावतः शांत होते हुए अपनी मुट्ठियाँ बाँधने लगा था।

पहले-पहले लॉतिये और जाचरे के बीच कुछ रंजिश रही और एक साँझ को तो उनमें हाथापाई की नौबत आ गई। परन्तु जाचरे एक अच्छा लड़का था और वह अपनी शौक-मौज के अलावा अन्य सभी बातों के प्रति लापरवाह होने की वजह से शीघ्र ही एक गिलास साथ पीने के प्रस्ताव पर संतुष्ट हो गया और शीघ्र ही उसने लॉतिये की प्रधानता को स्वीकार कर लिया। लेवक्यू के साथ भी उसके सम्बन्ध अच्छे थे। कोयला भरने वाले के साथ राजनीतिक बातें करते हुए वह कहा करता था कि मेरे भी अपने विचार हैं। सिर्फ एक आदमी से उसकी गहरी दुश्मनी थी, वह था चवाल: इसलिए नहीं कि वे एक दूसरे के प्रति उदासीन थे, इसके उल्टे वे साथी बन गये थे, परन्तु जब वे मजाक करते थे तो उनकी आँखें एक दूसरे को

निगलती प्रतीत होती थीं। कैथराइन, जिन्दगी से थकी, उदासीन लड़की की भाँति कमर झुकाये, ट्राम खींचती, अपने साथी के प्रति हमेशा मेहरबान और अपने प्रेमी की इच्छा पर हमेशा आत्मसमर्पण करती हुई उन दोनों के बीच में थी। चवाल अब खुलेआम उसका आलिंगन करने लगा था। यह एक स्वीकृत परिस्थिति थी; एक मान्यता प्राप्त घरेलू मामला था जिसके प्रति उसके परिवार के लोगों ने भी इस हद तक आँखें मूँद ली थीं कि चवाल हर रोज संध्या को उसे खान के किनारे तक ले जाता और फिर उसे उसके मा-बाप के दरवाजे तक छोड़ आता था। विदा होने से पूर्व वह समूची बस्ती के सामने उसका आलिंगन करता था। लॉतिये, जो यह सोचता था कि उसने अपने को परिस्थिति के अनुरूप बना लिया है, अक्सर लड़की को घूमने जाने के बारे में खिझाया करता था, मजाक के रूप में कड़े व्यंग कसा करता था; और वह उसी लहजे में जवाब दिया करती थी कि उसके प्रेमी ने उसके साथ क्या किया. परन्तु जब कभी नवयुवक से उसकी आँखें मिलतीं तो वह घबरा कर पीली पड़ जाती थी। फिर दोनों ही अपने सिर फिरा लेते थे और एक दूसरे से घंटों बात नहीं करते थे। तब ऐसा प्रतीत होता था कि वे एक दूसरे से घृणा करते हैं क्योंकि कोई बात उनके दिलों में दबी पड़ी है जिसे वे एक दूसरे के सामने खोल नहीं सकते।

बसंत आ गया था। खान से निकलने पर एक दिन लॉतिये को अप्रैल की सुखद बयार का अहसास हुआ। जमीन की सोंधी-सोंधी खुशबू, नरम हरियाली, भीनी-भीनी महक बसंत के द्योतक थे और अब, जितनी बार वह ऊपर आता उसे बसंत अधिकाधिक सुखद और मनोहर लगता क्योंकि वह दस घंटे खान के तल में, जहाँ सदा-सर्वदा रात्रि रहती और हमेशा के जाड़े में, जिस पर किसी भी ऋतु का कोई असर नहीं पड़ता, नमी में काम किया करता था। दिन अब अधिक लम्बे-बड़े हो चले थे। अन्त में, मई में वह सूर्योदय के समय जब कि सेंदूरी रंग का आसमान ऊषाकाल में बोरों को चमका देता था और पंपिंग-इंजन की भाप गुलाबी रंग की बन जाती थी, खान में उतरा करता था। अब कँपकँपी खत्म हो चली थी, एक मृदु-गरम हवा मैदान में चला करती थी और ऊँचे आसमान में लार्क चिड़िया का गाना सुनाई देता था। तब, तीन बजे शाम को वह आग उगलते हुए शिनिज की ओर बढ़ने वाले सूर्य की रोशनी में चकाचौंध हो जाता था। जून में गेहूँ के पौधे काफी ऊँचे हो चले थे और उनके हरेपन तथा चुकन्दर के कालेपन में असमानता रहती थी। यह लहलहाते पौधों का एक अथाह सागर था जो हवा के हल्के झोंके के साथ लहरें लेता था। लॉतिये दिन ब दिन उसे बढ़ता देखता और उसे कभी कभी आश्चर्य सा होता था कि मुबह तो यह बहुत छोटे थे अब संध्या को यकायक

इतने बड़े कैसे हो गये ? नदी किनारे के चिनार के पेड़ नयी हरी कोपलों और पत्तियों से भर गए थे। खान के कगारों को घास आच्छादित कर रही थी, खेतों में फूल खिल रहे थे। इस धरती से जीवन अंकुरित होकर बाहर फूटता नजर आता था जिसके नीचे वह दुख-दैन्य और कष्ट से कराह रहा था।

अब, जब लॉतिये संध्या समय घूमने निकलता तो खान के किनारे प्रेमी-प्रेमिकाओं के जोड़े उससे चौंकते नही थे। वह अब गेहूँ के खेतों तक उनके पद चिन्हों के सहारे पहुँच सकता था जहाँ वे बालों के बीच चिड़ियों की तरह घोंसला बनाये हुए पड़े होते थे। जाचरे और फिलोमिना अब पुरानी आदत के अनुसार यहीं आते थे। मांबूली, हमेशा लायडी को खोजती जॉली को ढूँढ़ा करती थी, वे दोनों खेल में इतने अलमस्त रहते थे कि उन्हे तन-बदन की सुध नही रहती थी। और माकेटी जहाँ चाहती वहाँ लेटी रहती थी— खेतों को पार करते समय वह सिर नीचा किये कोहनियों के बल लेटी नजर आती थी और पूरी लम्बान मे लेटी होने के कारण उसके पाँव मात्र नजर आते थे। परन्तु वे सब स्वतंत्र थे। नव युवक को संध्या समय कैथराइन और चवाल से मिलने के अलावा और किसी बात में कोई दोष नहीं दीखता था। उसने दो बार उन्हे एक खेत के बीच लेटते देखा था, जहाँ अम्थिर डंठल बाद में स्थिर हो गए थे। दूसरी बार जब वह सँकरे मार्ग से गुजर रहा था, कैथराइन की, गेहूँ के पौधों के समानान्तर, उससे आँखें चार हुई थीं और फिर तत्काल वह छुप गई थी। तब यह विस्तृत मैदान उसे बहुत छोटा लगा और उसने अपनी संध्या रसेन्योर में ही बिताना बेहतर समझा।

'मुझे एक गिलास देना, मदाम रसेन्योर। आज रात मैं बाहर नहीं जाऊँगा, मेरे पाँव बहुत थके है।'

और वह एक कामरेड की ओर मुखातिब हुआ जो हमेशा एक कोने वाली मेज मे दीवार से सिर लगाये बैठा करता था।

'सोवरायन तुम, नहीं लोगे क्या ?'

'नहीं, कुछ नहीं, धन्यवाद।'

अगल-बगल मे रहने की वजह से लॉतिये सोवरायन से परिचित हो गया था। वह बोरो मे एक इंजनमैन था और दूमंजले मे उसके बगल के एक कमरे में रहता था। वह लगभग तीस वर्ष का होगा। वह छरहरे बदन का गोरे और नाजुक चेहरे वाला व्यक्ति था और उसके सिर पर घने बाल, चेहरे मे हल्की सी दाढ़ी थी। उसके सफेद नुकीले दाँत, लम्बा मुँह और पतली नाक, उसके चेहरे का गुलाबी रंग उसे एक लड़की का सा रूप देते थे। परन्तु उसमे एक कुछ ऐसी क्रांतिकारी दृढ़ता थी जो उसकी आँखों मे क्रूरता की चिनगारी सी फेंकती थी। उस

गरीब मजदूर के कमरे में कागजों के एक बक्स और किताबों के अलावा और कुछ भी नहीं था। वह एक रूसी था और उसने अपने बारे में कभी भी किसी से कुछ नहीं बताया, इसलिए उसके बारे में तरह-तरह की बातें लोग करते थे। खनिक जो अजनबी लोगों के प्रति बड़े संदिग्ध होते हैं, उसके छोटे, मध्यमवर्ग के लोगों के से हाथों को देखकर अनुमान लगाते थे कि वह दूसरे वर्ग का है और किसी रोमांस या कत्ल के सिलसिले में सजा पाने के डर से भागा हुआ है। परन्तु उसने, बिना किसी प्रकार के घमंड के, उन लोगों के साथ ऐसा विनम्र व्यवहार किया कि वे उसे 'राजनैतिक शरणार्थी' मानने लगे थे। वह बस्ती के बच्चों को अपनी जेब के तमाम सूज बाँट दिया करता था।

पहले सप्ताहों में लाँतिये को वह डरपोक और कम मिलनसार लगा, परन्तु बाद में उसे उसके इतिहास का पता चला। सोवरायन तोला सरकार के एक नोबुल घराने का सब से छोटा लड़का था। सेंट पीटर्सबर्ग में, जहाँ वह डाक्टरी पढ़ रहा था, उस समय के रूसी नवयुवकों में फैली सामाजिक क्रांति की लहर में वह भी बह गया और उसने कोई हाथ का काम, मेकेनिक का काम, सीखने का निश्चय किया ताकि वह आसानी से लोगों में मिलकर उन्हें जान सके और एक भाई की भाँति उन्हें मदद कर सके। और इसी हुनर की बदौलत, जारशाही को पलटने के असफल प्रयत्न के बाद भागने पर वह अपनी आजीविका चला रहा था। एक महीने तक वह एक फल बेचने वाले की दूकान के नीचे सड़क के नीचे तक सुरंग खोदता और बमों का परीक्षण करता रहा। वहाँ इस बात का खतरा हमेशा बना रहता था कि वह कभी भी स्वयं मकान सहित उड़ न जाय। उसके परिवार ने उसका परित्याग कर दिया था। और वह कौड़ी-कौड़ी के लिए मोहताज, जासूस होने के संदेह में फ्रांस के सभी कारखानों द्वारा काम देने से इन्कार कर दिये जाने पर भूखा मर रहा था जब कि मोंटसू कम्पनी को उस समय ऐसे कारीगर की तात्कालिक जरूरत होने पर उसे रख लेना पड़ा था। एक वर्ष में वह वहाँ एक अच्छे, गंभीर, चुपचाप अपना काम करने वाले कामगार की भाँति एक हफ्ता दिन और एक हफ्ता रात की ड्यूटी करता था। वह काम पर इतना नियमित था कि अफसर वर्ग दूसरों के सामने उसका उदाहरण पेश करता था।

'क्या तुम्हें कभी प्यास नहीं लगती ?' लाँतिये ने हँसते हुए उससे पूछा।

और उसने किसी पदांश पर दबाव दिये बिना अपनी मधुर वाणी में उत्तर दिया, 'मुझे प्यास लगती है जब मैं खाना खाता हूँ।'

उसके साथी ने उससे लड़कियों के बारे में मजाक करते हुए कहा : 'मैंने तुम्हें बास-डे-सोये की ओर गेहूँ के खेत में एक पुटर के साथ देखा है।' उसने बड़े उदा-

सीन भाव से अपने कंधे सिकोड़े और कहा, 'मुझे पुटर से करना क्या है ?' औरत, यदि वह मित्रवत भावना और पुरुष का साहस रखती है तो उसके लिए एक पुरुष के समान साथी थी। किसी के साथ कोई कायरता का कार्य कर अपने अंतःकरण को क्यों कलुषित किया जाय ? उसकी किसी औरत या किसी दोस्त की इच्छा नहीं थी; वह अपने तथा दूसरों के जीवन का स्वामी खुद था।

हर रोज, नौ बजे शाम के लगभग, जब सराय खाली होने लगती लॉतिये सोवरायन के साथ बैठा बातें करता होता था। वह छोटे-छोटे घूंट में अपनी बियर पीता और इंजनमैन लगातार एक के बाद दूसरी सिगरेट पीता होता था। सिगरेट के तम्बाकू से उनकी नाजुक अँगुलियाँ लाल पड़ गई थीं। उसकी चपल गहन आँखें किसी स्वप्न के बीच सिगरेट के धुंए को देखती रहती थीं और वह अपने बाँये हाथ को बराबर धीरे-धीरे मसलता रहता था और यह सिलसिला अक्सर एक पालतू मादा खरगोश को, जो घर में आजादी से घूमती रहती थी, गोद में बिठाकर उसके ऊपर हाथ फिराने में खत्म होता था। यह मादा खरगोश, जिसे उसने पौलैण्ड नाम दे रखा था, उसकी आराधना करने लगी थी। वह आकर उसका पायजामा सूंघती और पंजों के बल खड़ी होकर नाखूनों और अगले पंजों से तब तक उसे कुरेदती रहती थी जब तक कि वह उसे बच्चे की तरह उठा कर गोद में न ले ले। फिर वह आँखें बंद कर उसकी गोद में पड़ी रहती थी और उसका हाथ अनायास ही उसके भूरे, मखमली बालों को सहलाता रहता था।

'तुम्हें मालूम है, मुझे प्लूचर्ड का एक खत मिला है।' एक दिन संध्या को लॉतिये ने बताया।

सिर्फ रसेन्योर वहाँ था और आखिरी ग्राहक बस्ती को, सोने के लिए, रवाना हो चुका था।

'आह !' रसेन्योर ने अपने दोनों किरायेदारों के सामने खड़े होकर पूछा, 'वहाँ क्या हाल है प्लूचर्ड का ?'

पिछले दो महीने से लॉतिये की लिली के इस मेकेनिक के साथ बराबर खतो-किताबत चल रही थी। लॉतिये ने उसे मोंटमू की स्थिति के बारे में लिखा था और प्लूचर्ड, खनिकों में किस प्रकार का प्रचार किया जाय इसकी हिदायतें बराबर उसे भेज रहा था।

'संघ अच्छा चल रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि सभी जगह से मजदूर उसमें शामिल हो रहे है।'

'तुम्हारी उनकी सोसायटी के बारे में क्या राय है ?' रसेन्योर ने सोवरायन से पूछा।

सोवरायन ने, जो धीरे से पोलैण्ड के सिर पर हाथ फेर रहा था, सिगरेट का एक कश लेने के बाद धुंआ बाहर फेंकते हुए कहा, 'और बेवकूफी !'

लेकिन लॉतिये श्रम और पूंजी के संघर्ष में अपनी अनभिज्ञता के प्रथम इन्द्रजाल में विद्रोह की बात सोचता हुआ उत्साह जाहिर कर रहा था। वे मजदूरों के उस अन्तर्राष्ट्रीय संघ की चर्चा कर रहे थे जिसकी हाल में लंदन में स्थापना हुई थी। क्या वह एक बेहतरीन प्रयास, एक आन्दोलन नहीं है जिसमें अन्ततोगत्वा न्याय विजयी होगा ? सीमाओं के बंधन टूट जायेंगे। तमाम दुनिया के मजदूर एक होकर जाग रहे है मजदूरों के लिए, आजीविका की सुरक्षा के लिए, रोटी के लिए जिसे वे कमाते है। कितना सरल और महान् संगठन है ! इसकी शाखाएँ कम्पनियों में बंटी है, उसके ऊपर एक ही प्रान्त की कई शाखाओं के समुदाय का संघ है और अन्त में एक जनरल कौसिल बनी है जिसमें एक सेक्रेटरी के रूप में हर राष्ट्र का प्रतिनिधि है। छः महीने में ही यह दुनिया फतह कर लेगा और मालिकों को, जो हठी सिद्ध होंगे, कानून सिखा सकेगी।

'क्या बेवकूफी है !' सोवरायन ने दुहराया। 'तुम्हारा कार्लमार्क्स अब भी प्राकृतिक शक्तियों के काम करने देने की बात सोच रहा है। कोई राजनीति नहीं, कोई षड्यंत्र नहीं, क्या ऐसा नहीं है ? हर काम दिन की रोशनी में और महज वेतन वृद्धि के लिए हो। अपने क्रमिक विकास के सिद्धान्त से मुझे परेशान मत करो। शहर के चारों कोनों में आग लगा दो, लोगों को घास की तरह काट डालो, हर चीज को समतल कर दो और जब इस सड़ी-गली दुनिया में कोई चीज खड़ी न रह जाय, तब शायद है उसके स्थान पर अच्छे अंकुर उगें।'

लॉतिये हँसने लगा। वह हमेशा अपने साथी की बातों का, उसके विनाश के सिद्धान्तों का मजाक उड़ाता था। रसेन्योर, जो ज्यादा व्यावहारिक था, एक ठोस मुलझे व्यक्ति की भाँति उत्तेजित नहीं हुआ। वह सिर्फ स्थिति का और स्पष्टीकरण करना चाहता था।

'तब फिर ? क्या तुम मोंटसू में भी एक शाखा खोलने की कोशिश करना चाहते हो ?'

संघ की नार्ड शाखा के सेक्रेटरी प्लूचर्ड की भी यही इच्छा थी। वह विशेष रूप से मजदूरों की हड़ताल की स्थिति में संगठन द्वारा की जानेवाली सेवाओं पर जोर दे रहा था। लॉतिये का विश्वास था कि हड़ताल अवश्य होगी, यह तख्ते बैठाने वाला प्रश्न बुरी तरह उभड़ेगा; कम्पनी की ओर से और कोई नियम बनाये जाने से सभी खानों में विद्रोह हो जायगा।

रसेन्योर ने न्यायकर्त्ता के स्वर में कहा, 'यह चंदे वाली बात बेहूदी है। जन-

रल फंड के लिए आधा फ्रैंक वार्षिक चंदा और क्षेत्रीय शाखा के लिए दो फ्रैंक; यह देखने में बड़ी छोटी रकम है; परन्तु मेरा दावा है कि बहुत से लोग इसे देने से इन्कार करेंगे।'

'अलावा इसके,' लॉतिये बोला, 'हमारा यहाँ प्राविडेन्ट फंड भी होना चाहिए जिसे हम जरूरत पड़ने पर संकटकालीन कोष के रूप मे इस्तेमाल कर सकें। कोई बात नहीं, इन बातों के बारे में सोचने का अभी समय है। अगर और लोग तैयार हों तो मैं भी राजी हूँ।'

फिर वहाँ खामोशी छा गई। काउन्टर पर पेट्रोलियम लैंप धुआँ फेंक रहा था। चौड़े खुले दरवाजे से उन्हें वोरो मे इंजन ठीक करने के लिए उस पर पड़ने वाली हथौड़े की चोटों की अस्पष्ट आवाज सुनाई दे रही थी।

उनकी बातचीत के दौरान में कमरे मे आकर खड़ी-खड़ी सुन रही मदाम रसेन्योर ने चुप्पी तोड़ते हुए कहा, 'हर चीज इतनी मंहगी है कि अगर मै तुमसे कहूँ कि मैंने अंडों के बाईस सूज दिये है तो तुम उछल पड़ो।'

तीनों पुरुष उस समय यही राय रखते थे। वे निराशापूर्ण स्वर मे अपनी शिकायतें व्यक्त कर रहे थे। मजदूरों की बड़ी मुसीबत है, इस क्रांति ने उसके दुख-दैन्य को और भी बढ़ा दिया है, '८६ सन् मे सिर्फ बुर्जुआ पनपे है। वे इतने लालची हो गये हैं कि प्लेटों में चाटने को तलछट तक नहीं छोड़ते। क्या कोई कह सकता है कि पिछले सौ वर्षों में दौलत और आराम के प्रसाधनों मे जो अभा-धारण वृद्धि हुई है उसमे मजदूरों को न्यायोचित हिस्सा मिला है? उन्हें स्वतंत्र घोषित कर उन्होंने उनका मजाक उड़ाया है। हाँ, भूखो मरने के लिए स्वतंत्र; ऐसी स्वतंत्रता जिसका वे पूरा-पूरा फायदा उठाते है। उन सभ्य कहलाने वाले लोगो को जो वोट पाने के बाद उन गरीब मतदाताओं की अपने पुराने बूटो से अधिक परवाह नहीं करते और पेरिस मे जाकर शौक-मौज मे मस्त रहते है, वोट देने से किसी को रोटी तो नहीं मिल जाती। नहीं! किसी न किसी रूप मे इसका अन्त होगा ही, चाहे जल्दी ही कानूनों द्वारा आपसी सद्भावना और भाईचारे से हो अथवा जंगलियों की भाँति हर चीज को नष्ट करते हुए एक दूसरे को निगलने से हो। चाहे यह उनके जमाने मे न हो, उनके बच्चो के समय मे अवश्य होगी क्योंकि यह शताब्दी क्रांति के बगैर खत्म नहीं हो सकती। इस बार मजदूरों की इस आम बगावत से समाज नीचे से ऊपर तक साफ हो जायगा और अधिक सुथरे और न्यायपूर्ण समाज की स्थापना होगी।

'बगावत का झंडा बुलंद करना ही होगा,' मदाम रसेन्योर ने जोश मे आकर कहा।

'हाँ, हाँ,' वे तीनों बोल पड़े। उसको करना ही पड़ेगा। सोवरायन पोलेएड के कान मल रहा था और वह खेल में नाक हिला रही थी। उसने धीमी आवाज में भाववाचक दृष्टि से ताकते हुए इस प्रकार कहा मानो वह अपने से बोल रहा हो।

'वेतन बढ़ाओ – कैसे तुम कर सकते हो ? छोटी से छोटी रकम के लिए तुम सख्त कानून से बँधे हो। मजदूरों को इतना भर मिलेगा कि वे सूखी रोटी खा सकें और बच्चे पैदा करें। अगर वे बहुत कम देते है तो मजदूर मर जायगा और नये आदमियों की माँग से उन्हें मजदूरी बढानी होगी। अगर वे अधिक देते है तो ज्यादा आदमी आयेंगे और उन्हें नुकसान होगा। यह तो भूखे पेटों का संतुलन है, भूख की आजीवन कारावास की सजा है।'

तब वह अपने आपको भूल कर ऐसे प्रश्नों पर बोलने लगा जिससे शिक्षित सोशलिस्ट लॉतिये उत्तेजित हो उठा, और रसेन्योर बेचैनी महसूस करने लगा। वे लोग उसके निराशापूर्ण वक्तव्य से व्यग्र हो उठे थे जिसका वे उत्तर नहीं दे पा रहे थे।

'क्या तुम समझे ?' उसने अपनी हमेशा की शांति के साथ उनकी ओर देखते हुए कहा; 'हमें हर चीज नष्ट कर देनी चाहिए अन्यथा भूख पुनः प्रज्ज्वलित होगी। हाँ, अराजकता और कुछ नहीं, खून से धुली और अग्नि से शुद्ध की गई धरती। तब हम देखेंगे !'

'मोशिये ठीक कह रहे है,' मदाम रसेन्योर ने अपने हमेशा के हिंसात्मक क्रांति के विचारों से विनम्रता पूर्वक कहा।

लॉतिये अपनी अज्ञानता से विवश हो अधिक बहस न कर सका। वह यह कहता हुआ उठ खडा हुआ : 'अब हमें सोना चाहिए। इस सब से तीन बजे सुबह उठना नहीं रुकने का।'

सोवरायन ने अपने होंठो से चिपका सिगरेट का टुकडा फेंक कर खरगोश को पेट के बल धीरे से उठा कर जमीन पर रख दिया। रसेन्योर दरवाजे बन्द कर रहा था। वे चुपचाप एक दूसरे से बिदा हुए चले. लेकिन उनके कान भनभना रहे थे मानों उनके मस्तिष्क उन गंभीर प्रश्नों से भारी हो गये हों जिन पर वे बातचीत कर रहे थे।

हर संध्या को उस खाली कमरे में इसी प्रकार की बहस सिर्फ एक गिलास के दौर पर चलती थी जिसे खाली करने में लॉतिये को एक घंटा लगता था। बिखरे हुए अपुष्ट विचारों का एक पुंज, जो उसके मन में सोता था धीरे-धीरे जाग कर फैल रहा था। लॉतिये ज्ञान-अर्जन की बड़ी आवश्यकता महसूस करता हुआ बड़े दिनों से अपने पड़ोसी से किताबें माँगने में कुछ झिझक महसूस करता था जिसके पास, दुर्भाग्यवश, रूसी और जर्मन भाषा की किताबें थी। अन्त में

उसने सहकारी समितियों के सम्बन्ध में एक फ्रेंच किताब पढ़ने को माँगी—जिसे सोवरायन महज बेवकूफी कहता था। वह नियमित रूप से सोवरायन के पास आने वाला एक समाचार पत्र भी पढ़ा करता था। 'कामब्रेट' नामक यह अनार्किस्ट (अराजकतावादी) समाचार पत्र जेनेवा से प्रकाशित होता था। उनके दैनिक सम्पर्क के अलावा लॉतिये ने उसे अन्य बातों मे बड़ा ही उदासीन पाया मानो उसको जीवन मे कोई रस, कोई भावना और कोई दिलचस्पी न हो।

जुलाई के आरंभ में लॉतिये की स्थिति सुधरने लगी। लगातार एक से चलने वाले नीरस जीवनक्रम के बीच एक घटना घटी। ग्विलोम सधि मे कोयले की परतों में गड़बड़ी आने से उसके खिसकने का खतरा उत्पन्न हो गया था। वास्तव में यह इंजीनियरों की गलती थी क्योंकि उन्हे वहाँ की मिट्टी का ज्ञान नहीं था। इससे खान मे बड़ी सनसनी फैल गई और मिट्टी खिसक कर दब जाने वाली संधि के अलावा और कोई बात ही खान मे नही होती थी। पुराने खनिक कोयले की खोज मे अपने नथुने फुलाने लगे थे। परन्तु इस दर्मियान मलकट्टे हाथ पर हाथ धरे बैठे नहीं रह सकते थे और इश्तहारो मे घोषणा की गई कि कम्पनी नयी कटानों का नीलाम करेगी।

माहे एक दिन काम पर से बाहर निकलते हुए लॉतिये के साथ गया और उससे प्रस्ताव रखा कि वह लेवक्यू की जगह, जो दूसरे गलियारे मे काम पर चला गया है, छेनी चलाने वाले का काम संभाल ले। हेड कमान और इंजीनियर से अनुमति लेकर व्यवस्था कर ली गई थी। वे लोग नवयुवक के काम से बहुत खुश थे। लॉतिये को महज इस तेजी से होने वाली तरक्की की मंजूरी देनी थी और वह माहे द्वारा प्रदत्त इस तरक्की से खुश था।

संध्या को वे लोग साथ ही इश्तेहार पढ़ने खान की तरफ गये। नीलाम होने वाली कटानें वोरो के उत्तरी गलियारे मे फिलोनीरे संधि मे थीं। वे बहुत लाभदायक प्रतीत नहीं होती थीं। नवयुवक के शर्तें पढ़कर सुनते वक्त माहे बराबर सिर हिलाता जा रहा था। दूसरे दिन जब वे खान मे उतरे तो माहे उसे संधि दिखाने ले गया और उन्होंने 'पिट आई' मे उसकी दूरी, मिट्टी की किस्म और कोयले की मोटाई तथा सख्ती का निरीक्षण किया। परन्तु अगर उन्हे जिन्दा रहना है तो काम करना ही होगा। इसलिये उसके बाद के रविवार को वे ओसारे के नीचे होने वाले नीलाम मे गये जिसे खान का इंजीनियर करा रहा था। लगभग पाँच-छः सौ खनिक छोटे से एक मंच के सामने जो एक कोने में बना था, खड़े थे। बोली इतनी तेजी से चल रही थी कि आवाजों की गर्जना और एक के आँकड़े दूसरे के आंकड़ों के नीचे दब जाने के अलावा और कुछ सुनाई नहीं दे रहा था।

एक क्षण को माहे डरा कि उसे कम्पनी द्वारा नीलाम की जाने वाली कटानों में से शायद एक भी न मिल सके। संकट की अफवाहों और तालाबंदी के खतरे से सभी प्रतिद्वन्द्वी ऊँची बोली नहीं बोल रहे थे। निग्रीन और इंजीनियर इस आतंक से भयभीत नहीं थे और धीरज से काम कर रहे थे। वे बोली के आँकड़ों को गिरने देते थे और डेनार्ट बोली बढ़ाने के लिये कटानों की तारीफ में झूठ बोल रहा था। पचास मीटर कटाव का ठेका लेने के लिए माहे अपने एक जिद्दी साथी के मुकाबले में बोली बढ़ा रहा था और ऐसा करने में हर बार वे ट्राम से सेंटिम कम कर रहे थे। अन्त में अगर वह सफल हुआ तो महज इस वजह से कि उसने मजदूरी इस कदर घटा दी कि कप्तान रिचोम, जो उसकी बगल में खड़ा था, अपने दाँतों के बीच बुदबुदाया और उसे कोहनी से ठेलता हुआ नाराजी जाहिर करने लगा कि इस कीमत पर वह कभी काम नहीं कर पायेगा।

जब वे बाहर आये तो लाँतिये नाराज होकर कसमें खा रहा था और वह चवाल के सामने ही, जो कैथराइन के साथ हँसी-मजाक करता हुआ गेहूँ के खेतों से लौट रहा था, उबल पड़ा।

'हे ईश्वर!' वह बोला, 'यह विशुद्ध हत्या है! आज मजदूर ही मजदूर को निगलने के लिए विवश किया जाता है।'

चवाल बहुत क्रुद्ध हुआ, वह इसे बरदाश्त नहीं कर सकता। जाचरे उत्सुकता से वहाँ पहुँच गया था और वह बोला कि वस्तुतः वह बहुत ही बुरा है। परन्तु लाँतिये का भाव-भंगिमा देख कर वे दोनों चुप हो गये।

'कभी न कभी यह खत्म हो जायगा. हम मालिक बनेंगे।' माहे ने जो बोली बोलने के बाद चुप्पा हो गया था, दुहराया 'मास्टर! आह, दुर्भाग्य और यह अच्छा न होगा।'

२

जुलाई का आखिरी रविवार मोंटमू का उत्सव दिवस था। शनिवार को साँझ से ही बस्ती की सद्गृहणियों ने कमरों को पानी से धोकर साफ कर लिया था और फर्श पर सफेद बालू डाल दिये जाने पर भी, जो गरीबों के लिए कीमती चीज थी, वह सूखा नहीं था। दिन में बहुत गर्मी और घुटन थी और अंधड़ आने के लक्षण दिखाई देते थे जो कि गर्मियों में नार्ड के इन मैदानों में अक्सर आया करते थे।

रविवार के उठने के समय में व्यतिक्रम हो जाता था, यहाँ तक कि माहे-परिवार में बाप पाँच-बजे बाद बिस्तर से उकता कर उठ जाता था और बच्चे नौ बजे

तक सोते रहते थे। इस दिन माहे बगीचे मे पाइप पीने चला गया और लौटने पर उसने अकेले ही बच्चों के उठने का इन्तजार करते हुए रोटी खाई। इधर-उधर के काम-में उसकी सुबह गुजरी; उसने चूते हुए टब को ठीक किया, घड़ी के नीचे शाही परिवार की एक राजकुमारी का चित्र, जो बच्चों को मिला था, एक कील के सहारे टाँगा। धीरे-धीरे बच्चे भी एक के बाद एक नीचे आये। फादर बोनेमाँ ने धूप में बैठने के लिए कुर्सी बाहर निकाल ली और अलजीरे अपनी माँ के साथ रसोई के काम मे लग गई। कैथराइन लीनोरी और हेनरी को कपड़े पहना कर उन्हें धकेलती हुई नीचे लाई। सात बज चुका था और आलुओं के साथ उबलने वाले खरगोश के गोश्त की खुशबू घर भर मे फैली थी। अन्त मे जाचरे और जॉली जम्हाई लेते हुए नीचे उतरे, उनकी आँखे सूजी हुई थीं।

उत्सव दिवस की वजह से बस्ती मे चहल-पहल थी। लोगों मे अच्छा भोजन मिलने का उत्साह था और मोटर्स जाने की तैयारी मे जल्दी-जल्दी काम हो रहा था। बच्चों के झुंड इधर-उधर आ जा रहे थे। लोग अपनी आस्तीन चढाये छुट्टी के दिन की बेफिक्री से अपने पुराने जूते चमका रहे थे। खुशनुमा मौसम मे सभी के घरों के दरवाजे और खिड़कियाँ खुली थी जिनमे बैठक के कमरो की कतारें नजर आ रही थीं। वहाँ लोग अपने परिवारों के बीच बैठे हुए गपशप लड़ा रहे थे। आज बस्ती मे एक छोर से लेकर दूसरे छोर तक सभी की रसोई मे खरगोश का गोश्त भूना जा रहा था जिसमें भुने प्याज की खुशबू मिलकर उनके रसोईघरों मे फैली हुई थी।

माहे-परिवार ने दोपहर मे भोजन किया। औरतों के इधर-उधर आने-जाने और इस दौरान में अपने पड़ोस मे किसी से कुछ माँगने या उत्तर देने, बच्चों की तलाश या फिर थप्पड़ मार कर उन्हें घर लाने के कोलाहल के बीच इस घर मे अधिक शान्ति के साथ भोजन किया गया। अलावा इसके जाचरे और फिलोमिना की शादी के प्रश्न को लेकर उनका पिछले दो-तीन सप्ताह मे अपने पड़ोसी लेवस्यू से मनोमालिन्य चल रहा था। मर्द तो एक दूसरे से बात भी कर लेते थे लेकिन औरतें ऐसा जाहिर करती थीं कि वे एक-दूसरे को जानती ही नहीं। इस झगड़े से पेरीन के साथ राह-रस्म बढ गई थी। पेरीन पेरी और लायडी को अपनी माँ ब्रूली के पास छोड़ कर अपनी भतीजी के साथ दिन बिताने के लिए सुबह ही मार्सेनीज चली गई थी, और वे मजाक उड़ा रहे थे क्योंकि वे इस भतीजी को जानते थे जिसकी बड़ी-बड़ी मूछें हैं और वह वोरो में का हेड कप्तान है। माहेदी बोली कि 'रविवार के उत्सव-दिवस के अवसर पर इस प्रकार परिवार को छोड़कर चला जाना उचित नहीं।'

एक महीना बाड़े में पाल कर मोटे किये गये खरगोश से माहेदी ने 'मीट-सूप' और गोश्त दोनों बनाये थे। पखवारे का वेतन कल ही मिला था। उन्हें याद नहीं आया कि इससे पहले कभी इतना लजीज गोश्त मिला हो। यहाँ तक कि पिछले सेंट बारबे दिवस पर, जो खनिकों का खास त्योहार है और जब वे तीन दिन तक कोई काम नहीं करते, खरगोश इतना मोटा और इतना मुलायम नहीं हुआ था। इसलिए दस व्यक्तियों ने—छोटी एस्टीनी से लेकर फादर बोनेमाँ तक—इतनी लज्जत से गोश्त खाया कि उसकी हड्डियाँ तक गायब हो गईं। गोश्त अच्छा था, लेकिन वे इसे अच्छी तरह इत्मीनान से नहीं खा पाते थे क्योंकि उन्हें कभी-कभी यह देखने को मिलता था। उसकी हर चीज गायब हो गई और सिर्फ एक उबली हुई बोटी साँझ के लिए बची थी कि ताकि अगर उन्हें भूख लगे तो वे पावरोटी और मक्खन के साथ उसे ले लें।

सबसे पहले जॉली बाहर निकला। बीवर्ट स्कूल के पीछे उसका इन्तजार कर रहा था। वे बड़ी देर तक लायडी को किसी भी तरह घर से निकाल कर अपने साथ लेने की फिराक में इधर-उधर चक्कर काटते रहे क्योंकि मदर ब्रूनी ने उस दिन संकल्प सा कर रखा था कि वह लायडी को बाहर न भागने देगी। जब उसने देखा कि लड़की भाग चुकी है तो वह बेहद नाराजी के साथ अपनी लम्बी दुबली बाहों को नचा-नचाकर गालियाँ बकने लगी और पेरी इससे खौफ कर एक अच्छे पति की भाँति अपने मनोरंजन की नीयत से धीरे से वहाँ से खिसक गया क्योंकि वह जानता था कि उसकी औरत भी मनोरंजन के लिए निकली है।

बुड्ढा बोनेमा घर से निकलने वालों में आखिरी था और माहे ने थोड़ी ताजी हवा लेने के उद्देश्य से माहेदी से कहा कि वह जा रहा है और क्या वह भी चलना पसंद करेगी? नहीं, वह न जा सकेगी, यह सहज बच्चों को धोखा देना होगा, खैर, देखा जायगा; वे आसानी से एक दूसरे को ढूंढ सकते हैं। वह बाहर निकल कर कुछ झिझका, फिर पड़ोसी के यहाँ यह देखने चला गया कि लेवक्यू तैयार हो गया है। वहाँ उसने जाचरे को पाया जो फिलोमिना का इन्तजार कर रहा था और लेवक्यू पत्नी ने फिर कभी समाप्त न होने वाली शादी की चर्चा छेड़ दी। वह बोली, 'मुझे बेवकूफ बनाया जा रहा है और मैं इस मामले में माहेदी से आखिरी बार फैसला कर लेना चाहती हूँ। यह भी क्या जिन्दगी है कि मैं अपनी लड़की के इन बगैर बाप के बच्चों को देखूँ और वह अपने प्रेमी के साथ मजा मारने चली जाय?' फिलोमिना चुपचाप अपनी टोपी सँवार रही थी और जाचरे उसे लेकर यह कहता हुआ निकल गया कि अगर मेरी माँ सहमत हो तो मैं तैयार हूँ। चूँकि लेवक्यू निकल चुका था इसलिए माहे ने अपनी क्रुद्ध पड़ोसिन से माहेदी

से बात करने को कहा और जल्दी में वहाँ से निकल आया। बाउटलोप, मेज से कोहनी टिकाये पनीर का एक टुकड़ा खत्म कर रहा था। उसने साथी के एक गिलास साथ पीने के प्रस्ताव को ठुकरा दिया कि वह एक वफादार पति की भाँति घर में रहेगा।

शनैः शनैः बस्ती खाली हो गई; सभी पुरुष एक दूसरे के पीछे रवाना हो चुके थे और लड़कियाँ, अपने घरों के दरवाजों से अपने प्रेमियों की बाँह में बाँह डाले दूसरी ओर से निकल रही थीं। जब कैथराइन ने देखा कि उसका बाप चर्च के पास से मुड़ गया है तो उसने चवाल को देखा और उसका साथ करने के लिए तेजी से निकल पड़ी। फिर वे दोनों मोटसू रोड पर चलने लगे। माँ अपने छोटे बच्चों के साथ अकेली घर पर रह गई और उसे कुर्सी से उठने की हिम्मत नहीं हो रही थी, जहाँ वह बैठी-बैठी काफ़ी का दूसरा गिलास ढाल कर धीरे-धीरे उसे पी रही थी। बस्ती में सिर्फ औरतें रह गई थीं, वे काफ़ी की तलछट को खत्म करने के लिए एक दूसरे को आमंत्रित कर रही थीं।

माहे ने अनुमान लगा लिया था कि लेवक्यू एवेन्टेज में होगा इसलिए वह धीरे-धीरे रसेन्योर तक गया। वास्तव में मधुशाला के पीछे, झाड़ियों से घिरे एक छोटे से बगीचे में लेवक्यू कुछ अन्य साथियों के साथ 'स्कीट्ल' खेल रहा था। बगल में दर्शकों के रूप में खड़े फादर बोनेमाँ और बुड्ढा माक्यू गेंद देख रहे थे। देखने में वे इतने मशगूल थे कि वे एक दूसरे से हाथ मिलाना तक भूल गए थे। ऊपर से सूर्य की प्रखर किरणें उन पर समलम्ब पड़ रही थीं और सराय की बगल में छाया का एक-मात्र स्थान था जहाँ लाँतिये एक टेबल के सामने बैठा हुआ अपना गिलास खत्म कर रहा था। वह कुछ-कुछ खिन्न था कि सोवरायन उसे बैठा छोड़कर ऊपर कमरे में चला गया है। करीब-करीब हर रविवार को इंजनमैन अपना कमरा बंद कर लिखने-पढ़ने बैठता था।

'क्या तुम एक गेम खेलोगे ?' लेवक्यू ने माहे से पूछा। माहे ने इन्कार किया कि बेहद गरमी है और वह प्यास से मरा जा रहा है।

'रसेन्योर, लाँतिये ने पुकारा, 'एक गिलास तो ले आओ ?'

फिर वह माहे की तरफ मुखातिब हुआ।

'मैं इसका भुगतान करूँगा, समझे'।

अब वे सब एक दूसरे से बेतकल्लुफ हो गये थे। रसेन्योर ने जल्दी नहीं की और अन्त में मदाम रसेन्योर कुछ गुनगुनी बियर लेकर पहुँची। नवयुवक दबी जबान से खाने-पीने के मामले में शिकायत करने लगा; ये लोग बड़े अच्छे हैं, इनके ख्यालात भी ऊँचे हैं परन्तु यहाँ की बियर तीन कौड़ी की होती है और सूप

तो पेट में दर्द करने लगता है। मैं दसियों बार यहाँ से कमरा बदलने की सोच चुका हूँ। परन्तु मोंटसू से चलकर आने की बात से रुक जाता हूँ। किसी न किसी दिन मुझे बस्ती में जाकर किसी परिवार में रहना पड़ेगा।

'निस्संदेह।' माहे ने धीरे से कहा, 'निस्संदेह, तुम किसी परिवार में अच्छे रहोगे।'

अब वहाँ बड़ा शोर हो रहा था। लेवक्यू ने एक ही चोट में सभी 'स्कीटल' डाल दिये थे। माउक्यू और बोनेमां खेल के उन्मादात्मक कोलाहल के बीच अपने सिर जमीन की ओर झुकाये मौन प्रसन्नता जाहिर कर रहे थे। इस चोट की खुशी मजाक के शब्दों में व्यक्त हुई और विशेष रूप से इसलिए कि खिलाड़ियों ने झाड़ियों के पीछे माकेटी का सुर्ख चेहरा देख लिया था। वह वहाँ लगभग एक घंटे से चक्कर काट रही थी और हँसी की आवाज सुन कर उसने समीप आने का साहस किया।

'क्या! तुम अकेली हो?' लेवक्यू ने चुटकी ली।' 'तुम्हारे प्रेमीजन कहाँ है?'

'मेरे प्रेमीजन! मैंने उन्हें अस्तबल में बन्द कर दिया है', वह बोली 'मैं एक की तलाश में हूँ।'

उसकी ओर देखते हुए भद्दी तरह मुस्करा कर हर एक ने अपने को प्रस्तावित किया। उसने इशारे से इन्कार किया और एक अच्छी औरत की तरह जोरों से हँस पड़ी। अलावा इसके, उसका पिता गिरे हुए स्कीटलों पर से निगाह उठाये बगैर 'गेम' में मदद दे रहा था।

'आह!' लेवक्यू ने एक निगाह लाँतिये की ओर फेंकते हुए कहा: 'कोई भी बता सकता है कि तुम्हारी यह भेड़ की-सी आँखें किस चोर पर अटकी है, लेकिन तुम्हें उसके साथ जबरदस्ती करनी होगी।'

तब लाँतिये ने विनोद पूर्ण ढंग से उस ओर देखा। यह सच था कि लड़की उसी पर डोरे डालने के लिए उसके इर्द-गिर्द घूम रही थी। उसने इन्कार कर दिया। गोकि इससे उसका मनोविनोद हुआ था परन्तु उसे आत्मसात करने की उसकी जरा भी इच्छा नहीं थी। वह कुछ क्षण और झाड़ी के पीछे खड़ी बड़ी कामुक आँखों से उसकी ओर घूरती रही और फिर यकायक गंभीर होकर, मानो उसका चेहरा धूप में तप गया हो, वहाँ से चल दी।

धीरे स्वर में लाँतिये मोंटसू के खनिकों द्वारा प्रोविडेंट फंड स्थापित किये जाने की बात माहे को समझा रहा था। 'चूंकि कम्पनी ने हमें स्वतंत्र रखने का आश्वासन दिया है इसलिए इसमें डरने की कौन सी बात है?' वह बोला, 'वे

हमें सिर्फ पेंशन ही देते हैं और वह भी अपनी इच्छानुसार उस समय से, जब से हम कोई मजदूरी नहीं पाते। उनकी मर्जी के बाहर आपसी सहयोग का एक संघठन बनाना अच्छा ही होगा क्योंकि तात्कालिक जरूरत पर हम इस पर निर्भर रह सकेंगे।,

और उसने संगठन के बारे में विस्तारपूर्वक समझाते हुए वायदा किया कि वह इसे पूरा करने का काम स्वयं हाथ में लेगा।

'मैं तो रजामंद हूँ', माहे ने अन्त में उसकी बातों से आश्वस्त होकर कहा, 'परन्तु और लोग भी तो है, उन्हें भी राजी करो।'

लेवक्यू जीत गया था और वे लोग अपने गिलास खत्म करने के लिये 'गेम' पर से उठ गये। लेकिन माहे ने दूसरा गिलास पीने से इन्कार किया, 'बाद में देखी जायगी अभी तो सारा दिन पड़ा है।' वह पेरी के बारे में सोच रहा था। वह कहाँ होगा? निम्मदेह लीफेन्ट में होगा और लांतिये और लेवक्यू को राजी करने के बाद तीनों मोंटमू को रवाना हुए। इसी क्षण नये आगन्तुक 'स्कीटल' गेम में जम गये।

रास्ते में उन्हें कमिसीर-बार और फिर एम्टेमिनेट-द-प्रोग्रेस में ठहरना पड़ा। कामरेड उन्हें दरवाजों पर खड़े बुला रहे थे और उनके लिए इन्कार करना कठिन था। हर बार एक गिलास लेना पड़ता और अगर उन्होंने उसके प्रति आदर की भावना दिखाई तो दो भी। वे दस मिनट वहाँ रुके और फिर आगे बढ़ गये। वे जानते थे कि वे कितनी भी बीयर पीयें उन्हें ज्यादा नशा नहीं हो सकता क्योंकि दुबारा पीने के लिए उन्हें पेशाब जाना होगा। लीफेन्ट में उन्हें पेरी मिला जो उस समय दूसरा गिलास चढ़ा रहा था और फिर इन्कार न कर सकने के कारण तीसरा भी गटक गया। उन्हें भी पीनी पड़ी। वे चार हो गये थे, वे जाचेरे को ढूँढ़ने 'तिसोन' की ओर रवाना हुए। वहाँ कोई नहीं था। उन्होंने एक-एक गिलास का आर्डर दिया ताकि वे कुछ देर इन्तजार कर सकें। तब वे सेंट इलोय गए जहाँ उन्हें कप्तान रिचोम का आग्रह स्वीकार करना पड़ा। फिर वे एक बार (मधुशाला) से दूसरी बार, बिना किसी उद्देश्य के, यह कहते हुए कि वे मटर गश्ती कर रहे है, घूमते रहे।

लेवक्यू को कुछ नशा चढ़ रहा था। उसने यकायक उत्तेजित होकर कहा—'हमें वोल्कन जाना चाहिए।' वे सभी हँसने लगे और झिझके भी। तब बढ़ती हुई भीड़ में वे अपने साथी के साथ निकल पड़े। वोल्कन के लम्बान लिये हुए कमरे में एक कोने में बने मंच पर पाँच गायिकाएँ, जो लिली की वेश्याएँ थीं, टहल रही थीं और जब कभी किसी ग्राहक को उन्हें स्टेज के पीछे ले जाने की इच्छा होती तो उसे दस सूज देने पड़ते थे। वहाँ, विशेष रूप से पुटर लड़कियाँ,

लेएडर्स और यहां तक कि चौदह वर्ष ट्राम ढोने वाले, खान के सभी युवा थे जो 'बियर' के बजाय 'जिन' अधिक पी रहे थे। कुछ पुराने अधेड़ खनिक भी वहां थे, जिनके परिवार उनकी इन आदतों से तबाह थे।

ज्योंही यह झुंड एक मेज के इर्द-गिर्द बैठा तो लॉतिये लेवक्यू को पास बैठा कर 'प्राविडेन्ट फंड' की योजना समझाने लगा। नवदीक्षित लोगों की तरह वह भी ढीठ प्रचारवादी हो गया था।

उसने दुहराया, 'हर सदस्य महीने में बीस सूज तो आसानी से दे सकता है। जब यह बीस सूज एक साथ इकट्ठा होंगे तो चौबीस वर्षों में एक अच्छी रकम जमा हो जायगी और जब आदमी के पास पैसा हो तो वह जिस किसी भी काम को करने में ताकत महसूस करता है। इस मामले में तुम्हारा क्या विचार है?'

लेवक्यू ने लापरवाही के ढंग से कहा—'मुझे इसके खिलाफ कुछ कहना नहीं है, हम फिर इसके बारे में बातें करेंगे।'

एक मोटी-ताजी वेश्या को देखकर वह उत्तेजित हो उठा था और उसने इरादा किया कि जब माहे और पेरी अपने गिलास पीकर बाहर निकल जायंगे तो वह पीछे रह जायगा।

बाहर, लॉतिये को, जो उन्हीं लोगों के साथ निकल आया था, माकेटी मिली। ऐसा प्रतीत होता था कि वह उनका पीछा कर रही है। वह बराबर लॉतिये पर नजर गढ़ाये, मन्द-मन्द मुस्करा रही थी माने वह लॉतिये को बुला रही हो। नवयुवक ने मजाक करते हुए नकारात्मक ढंग से कंधे उचकाये और वह वह नाराजी जाहिर करते हुए भीड़ में मिल गई।

पेरी ने पूछा—'आज चवाल कहां गया?'

'अरे हां, सच!' माहे बोला, 'वह जरूर पिक्यूटी में होगा। चलो वहां चला जाय।'

लेकिन जब वे लोग पिक्यूटी होटल में पहुँचे तो झगड़े की आवाज सुन कर दरवाजे पर ही रुक गए; जाचरे एक लोहार के लड़के की ओर घूंसा ताने खड़ा था और चवाल जेब में हाथ डाले उनकी ओर घूर रहा था। 'हैलो! चवाल यहां है।' माहे ने धीरे से कहा; 'वह कैथराइन के साथ है।'

पांच घंटे लगातार लड़की अपने प्रेमी के साथ मोंटसू रोड के मेले में घूमती रही। उसके दोनों ओर बने होटलों में लोग भरे हुए थे, बाहर सड़क के दोनों ओर मेजों पर छोटे-छोटे स्टाल सजाकर दूकानदार लड़कियों के गले के रूमाल और आइने, चाकू, टोपियाँ, मिठाइयाँ और बिस्कुट बेच रहे थे। गिरजे के सामने धनुर्विद्या का खेल चल रहा था। जैसली रोड पर, एडमिनिस्ट्रेशन बिल्डिंग के

बगल में, झाड़ से घिरे एक स्थान पर लोगों की भीड़ मुर्गों की लड़ाई देख रही थी। दो बड़े लाल मुर्गे, जिनके पंजों में तेज धार वाले चाकू बँधे थे, लहू-लुहान होकर लड़ रहे थे। उसके बाद, माइग्रेट की दूकान में बिलियर्ड में लँहगे और पायजामे जीते जा रहे थे और इन सब के बीच एक गहरी खामोशी थी। भीड़ बिना कोलाहल के बियर और भूने आलुओं की खुराक से तृप्त-सी बढ़ती ही जा रही थी और खुले में खाने-पीने के सामान के भूनने की खुशबू और आँच से गरमी और तेज महसूस हो रही थी।

चवाल ने उन्नीस सूज का एक शीशा और तीन फ्रैंक का एक रूमाल खरीदकर कैथराइन को दिया। हर बार उनकी मुलाकात मेले में आये हुए बोनेमाँ और माक्यू से होती थी जो गठिया के बावजूद बड़ी दिलचस्पी से अगल-बगल में चल रहे थे। दूसरी बार की मुलाकात के बाद उन्हें नागवार गुजरा। उन्होंने यह भी देखा कि जॉली बीवर्ड और लायडी को एक कोने में बनाये गये अस्थायी बार से 'जिन' की बोतल चुरा लाने को मजबूर कर रहा है। कैथराइन ने जॉली को पकड़कर उसके कान उमेठे परन्तु लड़की बोतल लेकर पहले ही भाग निकली थी। यह शैतान के बच्चे जरूर जेल जायेंगे। तब, जब वे दूसरी बार के सामने पहुँचे, चवाल को ध्यान आया कि उसे अपनी प्रेमिका को चेफिन्चेज प्रतियोगिता में ले जाना चाहिए, जिसकी घोषणा पिछले सप्ताह की जा चुकी थी। पन्द्रह कील कांटे बनाने वाले, जो मार्सेनीज के एक लोहारखाने में काम करते थे, लगभग एक दर्जन पिंजरे लिये खड़े थे और यह छोटे-छोटे पिंजरे, जिन में अंधे बनाये गये फिन्चेज चुपचाप बैठे थे दालान में टट्टर के बाड़े में बंधे थे। प्रतियोगिता यह थी कि एक घंटे के समय में किस की चिड़िया सबसे अधिक बार अपना गाना दुहराती है। प्रत्येक लुहार अपने पिंजरों के पास एक स्लेट लिये खड़ा था कि वह अपने तथा अपने पड़ोसी के अंकों को गिने। प्रतियोगिता में बड़ा शोर हो रहा था और लगभग सौ व्यक्ति वहाँ तमाशा देख रहे थे।

कैथराइन और चवाल वहाँ थे तभी जाचरे और फिलोमिना वहाँ आये। उन्होंने आपस में हाथ मिलाया और फिर सब वहीं खड़े तमाशा देखने लगे। परन्तु यकायक जाचरे ने जब देखा कि एक लुहार, जो अपने साथियों के साथ तमाशा देखने वहाँ घूम आया था, उसकी बहिन की जांघ में चिकोटी काट रहा है तो वह बिगड़ खड़ा हुआ। कैथराइन शर्मिंदा-सी उसे चुप कराने की कोशिश करने लगी क्योंकि उसे डर था कि अगर वह इस लुहार के चिकोटी काटने में आपत्ति करेगी तो सभी लुहार चवाल पर टूट पड़ेंगे और उसे मार डालेंगे। उसे इस बात का अहसास जरूर हुआ था परन्तु वह मारे शरम के कुछ नहीं बोली थी। उसके प्रेमी

ने महज अपनी मुख-मुद्रा से नाराजी जाहिर की और चूंकि अब वे चारों बाहर निकल चुके थे इसलिए मामला वहीं खत्म हुआ ऐसा लगता था। परन्तु वे एक-एक गिलास पीने को पिक्यूटी में घुसे ही थे कि लुहार फिर दिखाई दिया। वह उनकी मजाक उड़ते हुए, उत्तेजित ढंग से उनके करीब आ रहा था। जाचरे इसे बेइज्जती समझकर उस पर कूद पड़ा।

'यह मेरी बहिन है, सूअर के बच्चे! जरा ठहर जा, अगर मैंने तुझे इसकी इज्जत करना न सिखाया तो मुझ पर लानत है।'

दोनों को छुड़ाने के बाद चवाल शांत स्वर में बोला—'जाने दो। मैं देख लूंगा। मैं तुम्हें बताऊं कि मैं इसकी जरा भी परवाह नहीं करता।'

माहे भी वहाँ अपने साथियों के साथ आ पहुँचा। उन्होंने रोती हुई कैथराइन और फिलोमिना को शांत किया। लुहार गायब हो चुका था और वे सभी लोग हंसने लगे। इस घटना की परिसमाप्ति के लिए चवाल ने, जो यहीं रहता भी था, शराब लाने का आर्डर दिया। लॉतिये ने कैथराइन के गिलास से अपना गिलास छुवाया और वे सब—पिता, पुत्र, लड़की, उसका प्रेमी और लड़के की प्रेमिका-साथ-साथ पीने लगे। वे एक दूसरे से विनम्र शब्दों में 'तुम्हारी सेहत के लिए' कह रहे थे। पेरी ने बाद में और पीने का हठ किया। वे सभी प्रसन्न थे और जाचरे ने अपने साथी माक्यूट को देखकर उसे बुला लिया और यह कहते हुए कि मुझे उस लुहार से निबटना है वहाँ से उठ कर चला गया।

माहे ने भी अपनी ओर से पीने का प्रस्ताव रखा। अगर लड़का अपनी बहिन के अपमान का बदला लेना ही चाहता है तो यह बुरा उदाहरण नहीं है। फिलोमिना भी माक्यूट को देखकर आश्वस्त हो गई थी। निस्संदेह ये दोनों बोल्कन गये होंगे।

भोज-दिवस की सांझ को मेला बोन-जोय के नाच-घर में समाप्त होता था। यह नाच-घर एक विधवा मदाम डीसर का था जो पचास वर्ष की होने पर भी टब की तरह गोल मटोल और मोटी थी। अब भी वह इतनी तगड़ी थी कि उसके छः प्रेमी थे, सप्ताह के प्रत्येक दिन के लिए एक और रविवार को छहों एक साथ। वह सभी खनिकों को अपना बच्चा कहती थी और पिछले तीन वर्षों से वह उनके लिए बियर ढालती आई थी, उसकी उनके प्रति ममता थी। उसका दावा था कि कोई भी पुटर जब तक एक बार उसके यहां टाँग न पसार ले, गर्भवती नहीं हो सकती। बोन जोय सराय में दो कमरे थे, एक में बार था, जिसमें एक काउन्टर और मेजें थी और उसके साथ एक लम्बे गलियारे से जुड़ा हुआ नाचघर था जिसके बीच में सिर्फ लकड़ी थी और इर्द-गिर्द ईंटों का पक्का फर्श। यह कागज के फूलों की एक

दूसरे के ऊपर से गुजरने वाली लड़ियों से सजा हुआ था और उन्हीं फूलों का बीच में क्राउन बना था। दीवारों पर संतों की तस्वीरें थीं जिनके नीचे सेंट इलोइ, सेंट क्रिस्पन, आदि नाम खुदे हुए थे। छत इतनी नीची थी कि मंच पर तीन वाद्य यंत्र बजानेवालों को सिर के छत से टकराकर चोट लगने का डर बना रहता था। जब अँधेरा हो गया तो चार पेट्रोलियम के लैम्पों को कमरे के चारों कोनों में बाँध कर प्रकाश किया गया।

इस रविवार को नाच पाँच ही बजे से, जब कि अभी खिड़कियों से दिन का पूर्ण प्रकाश आ रहा था, शुरू हो गया था। परन्तु कमरा सात बजे से भरना शुरू हुआ। बाहर अंधड़ चल रहा था और आँधी से काली मिट्टी उड़-उड़ कर लोगों की आँखों में घुसती थी और खाने को भूनने वाले बर्तनों के ऊपर बैठती थी। माहे, लॉतिये और पेरी बैठने की नीयत से अन्दर आये और उन्होंने चवाल को कैथराइन के साथ नाचते पाया। फिलोमिना खड़ी-खड़ी देख रही थी। लेवक्यू और जाचरे में से कोई नहीं लौटा था। चूंकि नाच-घर के इर्द-गिर्द बेंचें नहीं थीं इसलिये कैथराइन प्रत्येक नाच के बाद विश्राम के लिए अपने पिता की मेज पर आती थी। उन्होंने फिलोमिना को भी बुलाया लेकिन उसे खड़ा रहना ही पसंद आया। झुटपुटा छा रहा था, तीनों वाद्य-वादक जोरों से गत बजा रहे थे, हाल में बाँहों की गति विधि के बीच नितम्बों और उरोजों के हिलने-डुलने के अलावा और कुछ दिखलाई नहीं दे रहा था। चारों लैम्पों के प्रकाश का कोलाहल के बीच स्वागत किया गया और यकायक हर वस्तु—सुर्ख चेहरे, चिपके हुए बिखरे-बिखरे बाल और पसीने से से सराबोर जोड़ों के शरीर से निकली गंध के बीच उड़ते हुए स्कर्ट—प्रकाश में आ गई। माहे ने लॉतिये से माकेटी की ओर इशारा किया। गोल-मटोल और सुअर की चर्बी की तरह चिकनी वह एक लम्बे, दुबले-पतले लेएडर की बाँहों में लिपटी बुरी तरह चक्कर काट रही थी। उसे एक पुरुष के साथ होने मात्र से ही अपने दिल को बहलाना पड़ रहा था।

अन्त में आठ बजे माहे एस्टीली को छाती से दबाये आती नजर आई और अलजीरे, हेनरी, लीनोरी उसके पीछे थे। वह सीधे अपने पति के पास यहां आई थी। वे खाना बाद में खायेंगे क्योंकि अभी किसी को भूख नहीं थी। उनके पेट काफ़ी में डूबे बियर से भरे हुए थे। दूसरी औरत अन्दर आई और जब उन्होंने माहेदी के पीछे लेवक्यू की औरत को बाउटलोप के साथ घुसते देखा तो उनमें कानाफूसी हुई। वह फिलोमिना के दोनों बच्चों—आचिली और डिसरी, का हाथ थामे आ रही थी। दोनों पड़ोसिनों में मेल-मिलाप नजर आता था क्योंकि पहली दूसरी से बातचीत के लिए मुड़ रही थी। रास्ते में काफी लम्बी-चौड़ी बहस हुई

थी और माहेदी जाचरे की शादी के लिए राजी हो गई थी। परन्तु उसे अपने बड़े लड़के के वेतन से हाथ धो देने का अफसोस था गोकि वह जानती थी कि अगर उसने इसे रोका तो यह अन्याय होगा। इसलिए वह बुरी नहीं बनना चाहती थी। परन्तु उसका दिल डूबा जा रहा था और वह मन ही मन चिन्तित थी कि उसके हाथ में आने वाली रकम का बड़ा हिस्सा इस प्रकार निकल जाने से घर में दो जून रोटी कैसे चलेगी ?

'वहाँ बैठ जाओ पड़ोसिन,' उसने लेवक्यू की औरत को माहे और लॉनिये के पास वाली एक मेज के पास बैठने का संकेत किया।

लेवक्यू पत्नी ने पूछा, 'मेरा मर्द तुम्हारे साथ है ?'

उन्होंने उसे बताया कि वह जल्दी ही लौटेगा। वे सब इकट्ठा एक झुंड के रूप में बैठे थे और शराब के दौर के बीच दोनों मेजें मिला ली गई थीं। बराबर शराब मंगाई जा रही थी। अपनी माँ और बच्चों को देखकर फिलोमिना वहाँ आई और एक कुर्सी पर बैठ गई। उसे यह सुनकर खुशी हुई कि आखिर उसकी शादी कर दी जायगी। चूंकि वे जाचरे को पूछ रहे थे इसलिए उसने धीमे स्वर में कहा: 'मैं उसका इन्तजार कर रही हूं; वह बाहर गया है।'

माहे ने अपनी पत्नी की ओर देखा। तब क्या उसने स्वीकृति दे दी है ? वह गंभीर हो गया और चुपचाप सिगार पीने लगा। बच्चों की इस कृतघ्नता से, जो कि अपने अभिभावकों को संकट में छोड़ कर एक के बाद एक शादी कर लेते थे, वह चिन्तित हो गया था और उसे कल की चिन्ता सताने लगी थी।

नाच अब भी जारी था और नाच के अंत में नाचघर लाल धूल में डूब जाता, दीवारें चटकने-सी लगती और वाद्ययंत्रों से ऐसी तीखी और कर्कश आवाज निकलती थी मानो कोई इंजन संकट में फँसा सीटी बजा रहा हो और जब नाच खत्म हो जाता तो नाचने वाले घोड़ों की तरह पसीने-पसीने हो जाते थे।

चवान्न कैथराइन को उसके परिवार वालों की मेज के पास लाया और उन्होंने माहे के पीछे खड़े होकर अपने गिलास खत्म किये।

लेवक्यू की औरत ने माहेदी के कान में कहा, 'तुम्हे याद है ? तुमने कहा था कि अगर कैथराइन ने कोई इस तरह की बेवकूफी की तो मैं उसका गला घोंट डालूंगी।'

माहेदी ने अधिकार त्यागने के भाव से कहा, 'इस प्रकार की बात तो कही ही जाती है——लेकिन मुझे यकीन है कि उसके बच्चा नहीं होगा। तुम तो जानती हो कि अगर वह गर्भवती हुई और उसे शादी करनी ही पड़ी तो हम अपनी रोटी के लिए क्या करेंगे ?'

अब कंसर्ट में 'पोलका' की गत बज रही थी। और अब फिर कानों को बहरा बनाने वाली आवाज शुरू हो गई थी। माहे ने धीरे से अपनी औरत से अपना एक विचार जाहिर किया। वे क्यों न एक किरायेदार रख लें ? उदाहरण के लिए लॉतिये, वह मकान की तलाश में है ? चूंकि जाचरे छोड़ने जा रहा है इसलिए जगह भी हो जायगी और जो रकम उनके हाथ से निकली जा रही है उसका पूरा नहीं तो बड़ा अंश तो निकल ही आयेगा। माहेदी का चेहरा फुल्लकित हो उठा। निस्सन्देह बड़ा बढ़िया विचार है, इसे तय कर लिया जाना चाहिए। उसे लगा कि वह एक बार फिर भुखमरी से बच गई। उसकी मायूसी इतनी जल्दी खत्म हो गई कि उसने शराब के एक नये दौर का आर्डर दिया।

इस बीच लॉतिये पेरी को प्राविडेन्ट फंड की योजना समझा कर उसे अनुगामी बनाने की कोशिश कर रहा था। अपना वास्तविक उद्देश्य न बताकर उसने उससे इस योजना में अपना चन्दा देने का वायदा करा लिया था।

'और अगर हम हड़ताल करें तो तुम देखोगे कि यह फंड कितना मुफीद सिद्ध होता है। हम कम्पनी पर अपनी अंगुलियाँ गड़ा सकेंगे और हमारे पास उसके खिलाफ लड़ने को कोष होगा। क्या तुम ऐसा नहीं सोचते ?'

पेरी ने निगाह नीची कर ली और भय से पीला पड़ गया। 'मैं इसके बारे में सोचूंगा। अच्छा आचरण, यह सबसे बढ़िया प्रोविडेंड फंड है,' वह बोला।

फिर माहे ने लॉतिये को पकड़ा और एक शरीफ आदमी की तरह, सीधे शब्दों में उसे अपने किरायेदार के रूप में रखने का सुझाव रखा। नवयुवक ने बस्ती में अपने साथियों के और करीब रहने की इच्छा से तत्काल प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। तीन वाक्यों में बात तय हो गई और माहेदी ने एलान किया कि वे अपने बच्चों की शादी का इन्तजार करेंगे।

ठीक उसी समय जाचरे भी माउक्यू और लेवक्यू के साथ वहाँ पहुँचा। उनके मुँह से बोल्कन में पी गई 'जिन' के साथ वहाँ की वेश्याओं द्वारा लगाये जाने वाली सेंट की मिली-जुली गंध आ रही थी। वे काफी नशे में थे और एक-दूसरे को कोहनियों से धकियाते, खीस निपोरते, अपने आप पर प्रसन्न नजर आते थे। जब जाचरे को मालूम हुआ कि आखिरकार उसकी शादी तय हो गई है तो वह इतनी जोर से हँसा कि उसका गला रुँध गया। फिलोमिना ने शांतिपूर्ण ढंग से कहा 'मैं तुम्हें रोने के बजाय हंसते देखना पसंद करती हूँ।' चूंकि वहाँ बैठने को ज्यादा कुर्सियाँ नहीं बची थीं इसलिए बाउटलोप ने खिसककर अपने आधे में लेवक्यू को बैठा लिया और लेवक्यू ने समूचे परिवार को यहाँ उपस्थित पाकर एक दौर बियर और चलाने का आर्डर दिया।

वह बोला—'भगवान कसम ! हम कभी-कभी तो ऐसा अवसर पाते हैं।'

वे लोग वहाँ दस बजे रात्रि तक रहे। औरतें बराबर नाचघर आ रही थीं, या तो नाच में शामिल होने अथवा अपने पतियों को वापस ले जाने; बच्चों के झुंड उनके पीछे-पीछे। माताएँ उनके लिए परेशान नहीं थीं। वे अपने दूध पीते बच्चों को अपने लटकते हुए, जई के बोरों से पीले स्तनों से दूध पिलाती अपनी गोद में चिपकाये थी और जो चलने योग्य हो गये थे वे बियर के नशे में अपने चार हाथ - पावों से टेबल के नीचे पहुँच कर, बिना शर्म - लिहाज के हल्के हो जाते थे। बियर का सागर सा उमड़ रहा था, जो मदाम डीसर के बैरलों से बह कर हर एक के पेट को इतना बड़ा बना देती थी कि वह नाक, आँख और सभी जगह से बहती थी। भीड़ इतनी ज्यादा थी कि हर एक की कोहनी या घुटना अपने पड़ोसी के शरीर में धँसा मालूम देता था। एक दूसरे की कोहनियों का अहसास करते हुए सभी खुश और आनंद-विभोर थे। कानाफूसी में किया जाने वाला मजाक उनके मुँह खुले रखता था। कमरे में भट्ठी की तरह गरमी थी। वे भुने से जा रहे थे, फिर भी वे बहुत सुख अनुभव कर रहे थे। ऐसा प्रतीत होता था कि वे पाइप के धुँए में तैर रहे हों। सिर्फ परेशानी तब होती थी जब कि उन्हें बाहर जाना होता था। समय-समय पर लड़कियाँ उठतीं, दूसरे छोर तक पंप के पास जातीं, अपना कपड़ा उठातीं और फिर वापस चली आतीं। रंग-बिरंगे कागज के फूलों की लड़ियों के बीच नाचने वाले एक दूसरे को नहीं देख पा रहे थे। वे पसीने से बहुत अधिक भीग चुके थे; इससे ट्राम चलाने वालों को पुटर लड़कियों के ऊपर लुढ़क पड़ने का प्रोत्साहन मिलता था। जब कभी कोई लड़की अपने ऊपर पुरुष को लिए लड़खड़ा कर गिरती तो वाद्ययंत्रों को और जोर से बजाया जाता था, मानो वह उन्हें अच्छादित कर रहा हो और लोग नाचते हुए उन्हें चारों ओर से घेर लेते थे मानों 'बॉलनृत्य' ने उनके ऊपर आवरण डाल दिया हो।

किसी पास से गुजरने वाले ने पेरो को बताया कि उसकी लड़की लायडी दरवाजे के पास, फुटपाथ में सो गई है। उसने चुराई गई बोतल का अपना हिस्सा पिया था और नशे में थी। उसे गोद में उठा कर उसे ले जाना पड़ा जबकि जॉली और बीवर्ट, जो ज्यादा समझदार थे, इसे एक बड़ा मजाक समझ कर उसके पीछे-पीछे चले। यह घर जाने का संकेत था। बहुत से परिवार बोन-जोय से बाहर निकल आये। माहे और लेवक्यू परिवारों ने भी बस्ती को लौटना तय किया। उसी दर्मियान बोनेमों और माक्यू भी, उसी चाल में चलते हुए, स्मृतियों में डूबे गंभीर खामोशी से मोंटसू से रवाना हुए। वे सब साथ-साथ अन्त में एक बार फिर मेले से गुजरे जहाँ बर्तनों में अब भी चीजें तली जा रही थीं और होटलों से, आखिरी

गिलासों से, सड़क के मध्य की ओर एक नाला सा बह रहा था। तूफान आने का अंदेशा था और प्रकाशित घर से अंधेरे मैदान की ओर बढ़ने के साथ-साथ उनकी हंसी की आवाजें भी गूंजने लगीं। पकी फसल वाले खेतों से रतिक्रिया में लीन गहरी साँसों की ध्वनि आ रही थी, उस रात वहाँ बहुत बच्चे गर्भ में आ गये होंगे। वे बड़े अस्त-व्यस्त बस्ती मे पहुँचे। लेवक्यू और माहे मे से किसी को भी भूख नहीं थी और माहे परिवार अपने सुबह का बचा उबला गोश्त खा कर सो गया।

लॉतिये एक बार और पीने-पिलाने के लिये चवाल को रसेन्योर ले गया।

जब लॉतिये ने उस प्राविडेंट फंड के बारे मे बताया तो चवाल बोला, 'मै तुम्हारे साथ हूँ। उन सब बातों को भुला दो; तुम बहुत बढ़िया आदमी हो।'

लॉतिये की आँखें शराब पीने के कारण चमकने लगी थी। वह बोला, 'हाँ, अच्छा हाथ मिलाओ। जहाँ तक मेरा प्रश्न है मैं न्याय के लिए सब कुछ न्योछावर कर सकता हूँ, शराब और लड़कियाँ दोनों। सिर्फ एक बात मेरे दिल को तसल्ली पहुँचाती है और वह यह कि हम इन बुर्जुओं को जा रहे है।'

३

अगस्त के मध्य तक लॉतिये माहे परिवार के साथ आकर रहने लगा। जाचरे ने शादी कर ली थी और वह बस्ती में ही कम्पनी मे एक खाली मकान पा कर फिलोमिना और अपने दोनों बच्चों के साथ उसमे रहने लगा था। पहले कुछ दिनों तक नवयुवक को कैथराइन के समक्ष कुछ परेशानी का अनुभव हुआ। वहाँ गहरा परिचय था, क्योंकि वह हर स्थान पर बड़े भाई की स्थानपूर्ति करता था। बड़ी बहिन के सामने जॉली के साथ उसका बिस्तर था। सोने और उठने समय उसे लड़की के सामने ही कपड़े उतारने-पहनने होते थे और वह उसे भी कपड़े-उतारते पहनते देखता था। जब वह आखीर में अपना स्कर्ट उतारती तो वह पारदर्शक हिम की भाँति दूधिया शरीर पर कुछ पीलापन लिये उसके सामने नजर आती थी और वह उसे आत्मसात् करने की इच्छा बराबर महसूस करता था। गोकि उसके हाथ और चेहरा कोयले से खराब हो गये थे। लेकिन उसके टखनों से गर्दन तक वह दूध में नहाई-सी लगती थी। उसके बाद पीले-भूरे रंग की लाइन उसके गले का हार सी प्रतीत होती थी। वह करवट लेने का बहाना करता। परन्तु धीरे-धीरे उसने उसे सम्पूर्ण देख लिया : पहले-पहल आँखें नीची किये पाँव तक, फिर जब वह बिस्तर के अन्दर घुसने लगी तो उसके टखनों की एक झलक, फिर उसका शरीर जिसमें उसके छोटे-छोटे उरोज उजागर हो रहे थे। वह उसकी ओर देखे बिना जल्दी-जल्दी काम करती जाती थी और दस सेकण्ड में कपड़े उतार कर अलजीरे

की बगल में लेटी नजर आती थी। वह मुश्किल से जूते उतार पाता था कि वह बिस्तर मे गायब हो जाती थी। उसका मुंह दूसरी ओर होता था और सिर्फ उसके जूड़े की सख्त गाँठ दिखाई देती थी।

उसमे कभी नाराजी का कोई कारण कैथराइन को नहीं था। जब कैथराइन सोती थी, तो प्रेत-बाधित सी कोई बात उसे उसके शरीर को देखने के लिए मजबूर करती थी परन्तु वह हमेशा नाजुक मजाक और खतरनाक क्षणों को टालना जाता था। माता-पिता वहाँ रहते थे और अलावा इसके उस लड़की के प्रति अब भी उसकी भावनायें आधी मैत्रीपूर्ण और आधी ईर्ष्या की थी, जो उसे उस लड़की के साथ अपने मनकी इच्छा पूरी करने से रोकती थीं। उनके इस कपड़ा पहनने, खाने, काम करने के संयुक्त जीवन मे उनकी कोई भी बात गुप्त नहीं थी, अत्यधिक प्रिय आवश्यकतायें तक नहीं। परिवार की लज्जा दैनिक स्नान के समय लड़की के ऊपर अकेले चले जाने पर ढँक जाती थी और पुरुष नीचे एक के बाद एक स्नान करते थे।

पहले महीने के अन्त में लॉतिये और कैथराइन सिर्फ संध्या समय को छोड़ कर एक दूसरे को देखने के इच्छुक प्रतीत नहीं होते थे। मोमबत्ती बुझाने के बाद वे नंगे कमरे मे इधर-उधर जाते थे। लड़की ने जल्दबाजी छोड़ दी थी और वह अपने बिस्तर के एक कोने पर बैठकर बाल बनाने के पुराने तरीके पर आ गई थी। उसकी बाहें ऊपर उठी रहती थीं जिससे उसकी कुरती उसकी रानों तक आ जाती थी। वह बगैर पायाजामा पहने कभी-कभी उसकी बालों की खोई हुई क्लिप ढूंढने मे उसकी मदद करता था। रहन-सहन के ढंग ने नंगे रहने की शर्म को खत्म कर दिया था। वे इस प्रकार रहना स्वाभाविक समझने लगे थे, क्योंकि वे कोई जुर्म नहीं कर रहे थे और इतने अधिक लोगों के लिए अगर एक ही कमरा था तो यह उनका कसूर नही था। फिर भी कभी-कभी यकायक वे अजीब सी उलझन महसूस करते थे गोकि उनके मन में कोई बुरी बात नहीं होती थी। कुछ रातो के बाद जब कि वह उसके पीलापन लिये हुए शरीर को नहीं देख सका था उसने यकायक उसके गोरे गात को देखा और उसे देखकर वह काँपने सा लगा। कहीं वह उसे पाने की इच्छा के वश में न हो जाय, इस डर से उसने उसकी ओर से मुंह फेर लिया। किसी-किसी संध्या को लड़की लज्जा के वश मे होकर जल्दी-जल्दी अपनी चादर के नीचे खिसक जाती मानो वह नवयुवक के हाथों को अपने को पकड़ते हुए महसूस कर रही हो। तब, जब मोमबत्ती बुझ जाती, वे दोनों जानते थे कि वे सोये नहीं हैं और थकान के बावजूद एक-दूसरे के बारे में सोच रहे हैं। इससे दूसरे दिन वे बेचैन और उदास नजर आते थे; वे उन संध्याओं को बहुत

पसंद करते थे जब कि वे मित्रता के साथ, साथी की भाँति एक-दूसरे से बर्ताव कर सकें।

लॉतिये को जॉली से इस बात की बड़ी शिकायत थी कि वह मुड़ी हुई पिस्तौल की भाँति सोता था। ग्रलजीरे बहुत खामोशी से सोती थी और लीनोरी और हेनरी सुबह एक दूसरे के गले में हाथ डाले पड़े पाये जाते थे। ग्रँधेरे घर में माहे और माहेदी के खर्राटों के ग्रलावा ग्रौर कोई शब्द नहीं सुनाई देता था, जो समय-समय पर भट्टी की धौंकनी के गर्जन मे बदल जाते थे। फिर भी हर मायने मे लॉतिये यहाँ रेसेन्योर से ग्रधिक ग्राराम से था। विस्तर भी सामान्य रूप से ठीक था, चादरें हर महीने बदली जाती थीं; सूप भी ग्रच्छा मिलता था; सिर्फ शिकायत थी तो गोश्त के ग्रभाव की। परन्तु उन सब की एक सी स्थिति थी, ग्रौर पैंतालीस फ्रैंक में वह हर बार भोजन के साथ खरखोश का गोश्त नहीं माँग सकता था। इन पैंतालीस फ्रैंको से परिवार की मदद हो जाती थी ग्रौर वे दो जून रोटी चला सकते थे। गोकि हर बार थोड़ा बहुत कर्ज ग्रौर देनदारी रह ही जाती थी, इसलिए माहे ग्रपने किरायेदार का ग्राभारी था। उसका लिनन धोकर सिया जाता था; उसके बटन टाँके जाते थे ग्रौर उसकी चीजें करीने से रख दी जाती थीं। वस्तुतः वह ग्रपने चारों ग्रोर एक महिला की परवरिश ग्रौर सुघड़ता पाता था।

ऐसे समय लॉतिये उन विचारों को समझने लगा था जो उसके दिमाग मे घूमते रहते थे। ग्रब तक उसने सिर्फ ग्रपने साथियों के ग्रस्पष्ट दिली क्षोभ के बीच स्वाभाविक विद्रोह का ग्रहसास किया था। सभी तरह के गुत्थीपूर्ण प्रश्न उसके सामने ग्राने लगे। कुछ लोग गरीब क्यों हैं? दूसरे धनी क्यों है? गरीब ग्रमीरों के मताहत क्यों काम करते हैं जबकि उन्हें उनका स्थान पाने की जरा भी ग्राशा नहीं है? उसकी पहली सीढ़ी ग्रपनी ग्रज्ञानता को समझना था। एक गुप्त लज्जा, एक छिपा हुग्रा रोष उस समय से उसे जगाने लगा; वह कुछ नही जानता था। वह उस ग्रसंतोष के बारे मे था। सभी मनुष्यों की समानता, ग्रौर ऐसी समानता जो विश्व की दौलत के बराबर वितरण की माँग करती है, जो एक चित्त के ग्रावेग के रूप में काम कर रही थीं, किसी से बात करने की हिम्मत भी नहीं करता इसलिए उसने उस व्यक्ति की भाँति किसी पद्धति के बगैर ग्रध्ययन शुरू किया, जो ग्रज्ञानता में जानकारी की पिपासा महसूस करता है। ग्रब वह प्लूचर्ड से बराबर पत्र व्यवहार रखता था, जोकि उससे ज्यादा पढ़ा-लिखा था ग्रौर सोशलिस्ट ग्रान्दोलन में बहुत ग्रागे बढ़ा हुग्रा था। उसने उससे किताबें मँगवाई थीं ग्रौर उन्हें ग्रच्छी तरह मनन न कर पाने से उसकी दिमागी उत्तेजना ग्रौर भी भड़क उठी थी। चिकित्सा की एक किताब 'हाईजीन दी माइनर' ने उसे ग्रौर भी

उत्तेजित किया था जिसमें बेल्जियम के एक डाक्टर ने उन सभी खराबियों को लिखा था जिनसे कोयला खदानों के खनिक मरते हैं। राजनैतिक अर्थव्यवस्था को समझे बिना, नीरस अराजकतावादी पर्चों ने उसके विचारों में और भी उथल-पुथल मचा दी। कुछ पुराने समाचारपत्र भी उसने सम्भाव्य विवादों के लिए अकाट्य दलीलों के रूप में रख छोड़े थे। सोवरायन भी उसे किताबें देता और सहकारी समितियों के बारे में लेखक पढ़ने पर वह एक महीने तक मुद्रा के माध्यम को खत्म कर, समस्त सामाजिक जीवन को कार्य पर आधारित कर विश्वव्यापी विनिमय के स्वप्न देखा करता था। अपनी अज्ञानता की शरम वह भूल चुका था और अब चूंकि वह सोचने लगा था इसलिए एक प्रकार का घमंड-सा उसे हो चला था।

इन प्रथम महीनों में लॉतिये ने एक नौसिखिये के परम आनन्द को बनाये रखा, उसका दिल अत्याचारियों के खिलाफ घृणा से भर उठा था और वह कुचले जाने वालों की विजय की बात सोचता था। उसने अभी कोई तरीका नहीं निकाला था, उसका अध्ययन बहुत अस्त-व्यस्त था। उसके दिमाग में रसेन्योर की व्यावहरिक माँगों के साथ सोवरायन के हिंसात्मक और विप्लवमक तरीके मिले-जुले थे। जब वह सराय से बाहर निकला, जहां नित्य प्रति वह उनसे कम्पनी के खिलाफ बहस करता था, वह बिना एक शीशा तोड़े या बिना रक्त की एक बूंद बहाये, राष्ट्रों के क्रांतिकारी अभ्युदय के बारे में सोचता हुआ स्वप्नवत स्थिति में चल रहा था। कार्यान्वयन के तरीके अस्पष्ट थे। वह यह सोचना पसन्द करता था कि हर काम ठीक तरह से चले क्योंकि ज्यों ही वह पुनर्निर्माण का कार्यक्रम बनाने की कोशिश करता उसका दिमाग चकरा जाता था। कभी-कभी वह ऐसी बातें कह बैठता था जो तर्कसंगत न होती। वह अक्सर कहता था कि हमें सामाजिक प्रश्न से राजनीति को उड़ा देना चाहिए। इस वाक्य को उसने कहीं पढ़ा था और वह इसे उन कुलियों के बीच जिनके बीच वह रहता था दुहराना फायदेमंद समझता था।

अब प्रतिदिन संध्या को माहे के घर पर लोग आधा घंटा देर से सोते थे। लॉतिये हमेशा वही प्रसंग छेड़ता था। चूंकि उसका स्वभाव अधिक सभ्य बन गया था उसे बस्ती के विभेद से चोट पहुंचती थी। क्या ये इतने पशु हैं कि इन्हें खेतों के बीच इस प्रकार एक साथ बाँध दिया जाय; इतने अधिक तंग जगह कि अपने पड़ोसी को नितम्बों का प्रदर्शन किये बगैर कोई अपनी कमीज तक नहीं बदल सकता? स्वास्थ्य के लिए यह कितना नुकसानदेह है? और लड़कों तथा लड़कियों को साथ-साथ बदचलन बनने को बाध्य किया जाता है!

'लार्ड'! माहे ने उत्तर दिया, 'अगर ज्यादा मुद्रा मिलता तो ज्यादा सुविधा होती। बहरहाल, यह सच है कि इस तरह भेड़ों की सी जिन्दगी किसी के लिये

भी अच्छी नहीं है। इसका अन्त पुरुषों के शराब पीने और लड़कियों के पेट फुलाने में होता है।

और फिर परिवार भर बातें करने लगा। हर एक अपनी बात कहता था, जब कि पेट्रोलियन लैंप से कमरे की हवा दूषित हो रही थी जिनमें भुनी प्याज की गंध का सम्मिश्रण था। नहीं जिन्दगी खिलवाड़ नहीं है। एक पशु की तरह काम करना पड़ता है जो कि किसी समय में सजायाफ्ता लोगों के लिए था। और इस सब के बावजूद शाम को मेज पर गोश्त तक नहीं मिल पाता! निस्संदेह सब अपना-अपना खाते हैं। खाना अवश्य मिलता है लेकिन इतना थोड़ा कि जीवित यातना भोगते रहें, कर्ज से लद जाँय और इस तरह पीछा किया जाय कि मानो उन्होंने रोटी चुराई हो। जब रविवार आता है तो थकान मुला डालती है। एक मात्र मनोरंजन यही है कि पियो और अपनी औरत से बच्चे पैदा करो, तब बियर पेट फुला डालती है और बादं मे, बच्चा तुम्हें मरने के लिए छोड़ देता है। नही, निस्संदेह यह कोई हँसी-खेल नहीं है।

तब माहेदी से न रहा गया, 'परेशानी यह है, तुम देखते हो, जब तुम्हें अपने आपसे कहना पड़ता है कि यह सब बदलेगा नही। जब तुम जवान होते हो तो सोचते हो कि कभी न कभी अच्छे दिन आयेंगे, तुम्हें आशा बंधती है; लेकिन दुख-दैन्य पुनः नये सिरे से आता है और तुम उसी मे बंद हो जाते हो। अब, मैं किसी की बुराई नहीं चाहती, परन्तु कभी-कभी यह अन्याय मुझे पागल बना देता है।'

वहाँ खामोशी छा गई। सब इस बंद कमरे मे बेचैनी-सी महसूस कर रहे थे। बोनेमाँ अगर वह वहाँ होता तो आश्चर्य मे आँखें खोल लेता क्योंकि उसके जमाने मे लोग इन बातों की परवाह नहीं करते थे; वे कोयले मे पैदा होते थे और वगैर ज्यादा माँग कटान मे छेनी चलाते थे; लेकिन अब एक हवा ऐसी बह रही थी जो कुलियों को महत्वाकांक्षी बनाती थी।

वह बोल उठा, 'हर चीज को बुरा कहने से काम नहीं चलेगा। एक अच्छा गिलास अच्छा ही कहलायेगा। जहाँ तक मालिकों का सवाल है, वे अक्सर दुष्ट होते है; परन्तु मालिक तो हमेशा रहेंगे ही; क्यों, है न ऐसा? उन चीजों के बारे में सोच कर माथा फोड़ने से लाभ ही क्या?'

लॉतिये एकदम उत्तेजित हो उठा। क्या? मजदूर को सोचना भी मना है! क्यों! इसलिए कि वस्तु-स्थिति अब बदल जायगी क्योंकि मजदूर सोचने लगा है। बोनेमाँ के जमाने मे खनिक खान में पशुवत् रहता था; वह कोयला निकालने की एक मशीन मात्र था, हमेशा खान की तह में, बाहरी घटनाओं के प्रति आँख और

बात, दोनों बंद किये हुए। इसलिये धनी, जो मालिक थे; उसे खरीदना और बेचना आसान समझते थे और उसका गोश्त तक निचोड़ लेते थे। वह जान भी नहीं पाता था कि यह क्या हो रहा है। लेकिन अब खनिक वहां ऊपर-नीचे चलता है, जमीन में अंकुरित हो रहा है जैसे एक अनाज का दाना अंकुरित होता है; और किसी शुभ दिन वह खेत में फूट पड़ेगा। हाँ, लोग जाग उठेंगे और मजदूरों की एक फौज न्याय की पुनःस्थापना करेगी। क्या यह सच नहीं है कि क्रांति के बाद सभी मनुष्य बराबर हैं क्योंकि वे साथ-साथ वोट देते हैं? क्यों एक मजदूर उस मालिक का गुलाम रहे जो उसे मजदूरी देता है? बड़ी कम्पनियाँ अपनी मशीनों से हर चीज कुचले डाल रही हैं और हमारे पास उनके खिलाफ वह पुराना अस्त्र नहीं है जब कि एक ही धंधे के लोग, एक संगठन के रूप में इकट्ठा होकर, अपना बचाव कर सकते थे। इसलिए, भगवान कसम और किसी अन्य कारण से नहीं, बल्कि इसी कारण एक दिन हर चीज फूट पड़ेगी। इसके लिए शिक्षा का लाख-लाखें शुक्रिया। स्वयं बस्ती की ओर निगाह डालिए; दादा अपना नाम तक नहीं लिख सकता, बाप ऐसा कर सकता है और लड़के स्कूल-मास्टरों की तरह पढ़ते-लिखते हैं। आह! अंकुर फूट रहा है, धीरे-धीरे उठ रही है मनुष्यों की एक सामान्य फसल, जो रोशनी में पकेगी! उस क्षण में, जब कि उनमें से हर एक अपने सम्पूर्ण अस्तित्व के लिए अपनी ही जगह चिपका न रहेगा, और उनकी महत्वाकांक्षा अपने पड़ोसी की जगह लेने की होगी! क्यों न वे अपने घूंसों से उनको मार भगायें और स्वामित्व पाने की कोशिश करें?

माहे का विश्वास डगमगाया परन्तु उसे अब भी भारी संदेह था।

'ज्यों ही तुम हिलोगे वे तुम्हें तुम्हारे सार्टिफिकेट लौटा देंगे' वह बोला, 'फादर का कहना ठीक है; हमेशा खनिक पर ही सब संकट आयेंगे और यदा-कदा उसे इनाम के रूप में गोश्त की एक बोटी का भी मौका नहीं रहेगा।'

माहेदी, जो अब तक खामोश बैठी थी, मानो स्वप्न में जागी हो, 'लेकिन क्या पादरी का कहना सच है कि इस जिन्दगी में गरीब लोग अगले जीवन में धनी होते हैं?'

हँसी के एक कहकहे से वह रुकी। बच्चों ने तक अपने कंधे उचकाये।

'ओह! वाहियात! वे पादरी' माहे बोला, 'अगर वे ऐसा ही विश्वास करते होते तो वे खाते कम और काम ज्यादा करते, ताकि वे वहाँ अपने लिए अच्छी जगह सुरक्षित करवा लेते। नहीं, जब कोई मर जाता है तो फिर वह मर ही गया।'

माहेदी ने गहरी साँस खींची, 'ओह! ईश्वर, ईश्वर!' फिर गहरी निराशा की मुद्रा में उसके हाथ उसके घुटनों में जा गिरे।

'तब, अगर यह सच है, तो हम खत्म हो गये, हम गये।'

वे एक दूसरे की ओर देखने लगे। बोनेमॉ ने अपने रूमाल में थूका; माहे भूला सा अपने मुँह में बुझा हुआ पाइप दबाये बैठा था। अलजीरे लीनोरी और हेनरी के बीच में बैठी, जो मेज के एक कोने में सो गये थे, बातें सुन रही थी। लेकिन कैथराइन अपनी हथेली चिबुक में रखे, अपनी बड़ी-बड़ी आँखों से एक टक लॉतिये की ओर ताक रही थी जो विरोध करता हुआ, अपनी आस्था घोषित करता हुआ, अपने सुमधुर भविष्य के सामाजिक स्वप्न को बतला रहा था। उनके चारों ओर बस्ती सोई हुई थी; यदाकदा किसी बच्चे के रोने की आवाज या किसी देर में आने वाले शराबी की शिकायत के शब्द सुनाई दे जाते थे। दीवार में घड़ी धीरे-धीरे टिक-टिक की आवाज से चल रही थी और घुटी हुई हवा के बावजूद बालू वाले फर्श से नम ताजगी उठ रही थी।

'सुनहरे विचार हैं!' नवयुवक बोला, 'तुम क्यों अपनी खुशी के लिए ईश्वर और उसके स्वर्ग को चाहते हो? क्या तुम्हारे शक्ति नहीं है कि तुम धरती पर ही अपने को खुशहाल बना सको?'

अपनी ओजपूर्ण आवाज में वह बोलता चला जा रहा था। बंद-सा क्षितिज खुल रहा था, इन गरीबों के दुखी जीवन में एक प्रकाश की किरण सी फूट रही थी। फिर-फिर आने वाली जन्म-जन्मान्तर की दीनता, पशुवत श्रम, एक पशु का सौभाग्य जो कि अपना ऊन भी दे देता है और गर्दन भी कटवा लेता है—यह सभी दुर्भाग्य इस प्रकार गायब सा हो गया था मानो सूर्य के तेज प्रकाश मे सब बह गया हो और उसके अन्दर से सुखमय ससार की एक चकाचौध कर देने वाली चमक और न्याय स्वर्ग से उतर आया हो। चूंकि ईश्वर मर गया है, न्याय मानव को खुशहाल बनायेगा और समानता तथा भाईचारे का साम्राज्य होगा। एक दिन में एक नया समाज उठेगा, जैसा कि स्वप्न मे होता है और मृगतृष्णा के विभव की भांति एक विशाल नगर बसेगा जिसमे हर व्यक्ति श्रम की रोटी खायेगा और सामूहिक आनन्द मे अपना हिस्सा पायेगा। पुरानी सड़ी-गली दुनिया धूल मे मिल गई थी; अपने पापों से शुद्ध होकर एक नयी मानवता, मजदूरों का एकमात्र राष्ट्र बन कर उभर रही थी; जिसका आदर्श वाक्य था, 'हर एक के लिए उसके योग्यता-नुसार और हर एक को उसके कार्य के अनुसार' और यह स्वप्न शनैः शनैः बड़ा और अधिक खूबसूरत होता जा रहा था और ज्यों-ज्यों वह असंभव की ओर बढ़ रहा था अधिक प्रभाव जमाता जाता था।

पहले पहल माहेदी ने गहरे भय के कारण उसे सुनने से इन्कार कर दिया। नहीं, नहीं यह आवश्यकता से अधिक खूबसूरत है; इन विचारों को मान लेने से काम नहीं चलेगा, क्योंकि इनसे बाद में जीवन घृणित प्रतीत होने लगेगा और उस खुशी

के प्रयास में मनुष्य हर चीज को नष्ट करने की सोचेगा । जब उसने देखा कि माहे की आँखों में चमक आगई है, वह मंत्रमुग्ध सा प्रभावित हो गया है, तो वह बेचैन हो उठी और उसने बीच मे ही लॉतिये की बात काटते हुए कहा—'तुम इसकी बात पर ध्यान न दो, देखते नहीं यह हमे किस्सा-कहानी सुना रहा है । क्या तुम सोचते हो कि बुर्जुआ लोग हमारी तरह काम करने मे कभी संतोष पायेंगे ?'

लेकिन धीरे-धीरे उस पर भी यह जादू चल चुका था। उसकी कल्पना जाग उठी थी और वह अन्त मे आशा की इस आलीशान नगरी में प्रवेश करके मुस्करा उठी । दुखपूर्ण वास्तविकता को क्षण भर के लिए भुलाने मे कितना सुख मिलता है । जब कि एक व्यक्ति जमीन की ओर सिर झुकाये पशु की सी जिन्दगी बिताता है तो उसे आशाओं का एक कोना भी चाहिए जहाँ वह उन वस्तुओं की कल्पना कर मन के लड्डू फोड़ सके, जिन्हें वह कभी नहीं पा सकता । वह उत्साहित हुई और नव युवक की जिन बातों से सहमत हुई वह था न्याय का विचार ।

वह बोली, 'अब, यहाँ तुम ठीक कहते हो । जब एक बात न्यायोचित है तो उसके लिए मेरे टुकड़े-टुकड़े भी हो जायँ तो मुझे परवाह नहीं है । और यह सच भी है कि एक बार आजमाकर देख लेना हमारे लिये उचित ही होगा ।'

तब माहे को उत्तेजित होने का साहस हुआ । 'इस सबको उड़ा डालो । मैं धनी नहीं हूँ फिर भी मैं इसे देखने के लिए जीवित रहने को पाँच फ्रैंक दूँगा । क्या ऐसा जल्दी ही होगा ? और हम किस तरह इसमे जुट सकते हैं ?'

लॉतिये फिर धाराप्रवाह बोलने लगा । पुराना सामाजिक ढाँचा चरमरा रहा रहा है; यह कुछ महीनो से अधिक नहीं टिक सकता, उसने घुमा-फिराकर इसकी पुष्टि की । कार्यान्वयन के तरीकों पर उसने अस्पष्ट बातें समझाई; अपने अध्ययन के आधार पर वह अज्ञान श्रोताओं के सामने इस बात से डर रहा था कि कहीं वे ऐसे सवाल न पूछ बैठे जिनमे वह स्वयं ही खो जाय । सभी पद्धतियों का हिस्सा उसकी बातों मे था । आसानी से विजय पा जाना निश्चित-सा समझ कर वह मुलायम पड़ते हुए उस विश्वव्यापी चुम्बन की बात कह रहा था जो वर्गवाद को गलतफहमियों का अन्त करा देगा । वह यह नहीं सोच पा रहा था कि मालिकों और बुर्जुआ वर्ग में भी ऐसे अक्खड़ लोग हैं जिन्हें शायद शक्ति से रास्ते में लाना आवश्यक होगा । माहे दम्पत्ति उसकी ओर ऐसे देख रहे थे मानो वे समझ रहे हों । वे नयी आस्था वाले व्यक्ति की भाँति अंधविश्वास पूर्वक अद्भुत उपायों को अंगीकार और स्वीकार कर रहे थे । उनकी हालत ठीक ईसाई धर्म के प्रारंभ में उन ईसाइयों की भाँति थी जो पुरानी दुनिया के ध्वंसावशेषों पर नये समाज के निर्माण का इन्तजार करते थे । छोटी अलजीरे ने कुछ शब्द

पकड़ लिये थे और एक बहुत अच्छे मकान की कल्पना से खुशी महसूस कर रही थी जहाँ बच्चे जब तक चाहे खेल सकेंगे और खा सकेंगे। कैथराइन बिना हिले-डुले अपनी हथेली के ऊपर अपनी ठोड़ी रखे लॉतिये को एकटक देखती रहती थी और जब वह रुकता था तो एक कँपकँपी सी उसके शरीर पर दौड़ जाती थी। वह ऐसी पीली पड़ जाती थी मानो वह ठंड महसूस कर रही हो।

माहेदी ने घड़ी की ओर देखा, 'नौ बज गया! क्या यह संभव है? हम कल कभी नहीं उठ पायेंगे।'

माहे परिवार टेबुल से उठा तो उसका मन निराशा से भरा था। उसे ऐसा लगता था कि वे अभी-अभी धनी थे और फिर यकायक मिट्टी में आ गिरे हैं। बोनेमाँ, काम पर खान के लिए रवाना हो रहा था। वह बोला, 'इस प्रकार के किस्सों से सूप मीठा नहीं होगा!' और लोग कतार में दीवारों की नमी और हवा की घुटन के बीच से गुजरते ऊपर चले जाते थे। उपरी मंजिल पर, बस्ती की गहरी निद्रा के बीच जब अन्त में कैथराइन बिस्तर पर सोने गयी और मोमबत्ती बुझा दी तो लॉतिये ने सोने से पहले उसे बेचैनी से बिस्तर में करवट बदलते सुना।

अक्सर ऐसी बहसों के अवसर पर पड़ोसी आ जाते थे। लेवक्यू आम हिस्सेदारी के विचार पर उत्तेजित हो उठता था और पेरी कम्पनी की आलोचना शुरू होने पर चुपचाप उठकर सोने चला जाता था। काफी अर्से के बाद जाचरे एक क्षण के लिए अन्दर आता था, लेकिन राजनीति के वह उकता जाता था। वह वहाँ से उठकर चले जाना और किसी होटल में एक गिलास पीना पसंद करता था। जहाँ तक चवाल का प्रश्न था वह बहुत ही उग्रतावादी बन जाता था और खून निकालना चाहता था। लगभग हर साँझ वह एक घंटा माहे परिवार के साथ गुजारता था; इस सतर्क निगाह रखने में एक अस्वीकृत ईर्ष्या थी, एक भय था कि कैथराइन उसके हाथ से निकल जायगी। वह लड़की, जिससे वह उकता चुका था उसके लिये कीमती बन गई थी क्योंकि एक अन्य पुरुष रात को उसके पास सोता था और उसे भोग सकता था।

लॉतिये का प्रभाव बढ़ चला था, उसने धीरे-धीरे बस्ती में क्रांति ला दी थी। उसका प्रचार अदृश्य था और अधिक प्रभावशाली भी; क्योंकि सभी की नजरों में उसकी इज्जत बढ़ रही थी। माहेदी एक दूरदर्शी गृहणी की सावधानी बरते बगैर उसके साथ विशेष आदर का बर्ताव करती थी क्योंकि वह नियमित रूप से किराया दे दिया करता था। न तो वह शराब पीता और न जुआ ही खेलता। उसका सिर हमेशा किताबों पर ही झुका रहता था। उसने पड़ोसियों से उसकी तारीफ कर रखी थी कि वह एक शिक्षित युवक है जिसका दुरुपयोग वे उससे अपनी चिट्ठियाँ लिखवा कर करते थे। वह एक प्रकार का व्यापारी था जिसे चिट्ठी-

पत्री का काम सौंपा गया था और कठिनाइयों के समय गृहस्थ लोग उससे सलाह लिया करते थे। इस प्रकार सितम्बर से वह अपनी प्रसिद्ध प्रोविडेंट फंड योजना को कायम कराने में कामयाब हो सका। यह अभी बहुत थोड़ा था और इसमें सिर्फ बस्ती के लोग ही शामिल थे लेकिन उसे उम्मीद थी कि वह सभी खानों के मजदूरों को इसमें शामिल कर सकेगा बशर्ते कम्पनी, जो अब तक इस मामले में उदासीन थी, हस्तक्षेप न करे। उसे संगठन का मंत्री बनाया गया था और क्लर्कों के काम के लिए उसे थोड़ा-सा वेतन भी दिया जाता था। इससे उसने थोड़ी रकम भी बचा ली थी। अगर एक विवाहित खनिक मुश्किल से दो जून रोटी जुटा पाता है तो एक किफायतशार युवक, जिस पर खर्च का कोई बोझ नहीं है, कुछ बचा सकता है।

इस समय से लॉतिये में धीरे-धीरे परिवर्तन भी आने लगा था। उसकी शिष्टता और अधिक आराम से रहने की भावनाएँ, जो गरीबी के कारण सुसुप्त थी, अब प्रकट होने लगी थीं। वह पोशाकें बनवाने लगा और अच्छे बूट का एक जोड़ा भी खरीद लाया। वह बड़ा आदमी बन गया था। समूची बस्ती उसके चारों ओर इकट्ठा होती थी। आत्मप्रेम का संतोष बड़ा सुमधुर होता है। उसे अपनी ख्याति के प्रथम आनंद से नशा सा हो गया था; दूसरों का अगुवा बनने, निर्देश करने का उसे इस छोटी-सी उम्र में अवसर मिला, अभी कल तक वह महज एक मजदूर था। इससे उसे गर्व हो आया और आनेवाली क्रांति का उसका स्वप्न और भी जोर पकड़ने लगा, जिसमें उसे प्रमुख भूमिका अदा करनी थी। उसका चेहरा बदल सा गया। वह गंभीर हो गया और वह बड़ी सौम्यता दिखाता था। उसकी बढ़ती हुई महत्वाकांक्षा ने उसके सिद्धान्तों को प्रज्ज्वलित कर दिया था और उसे हिंसा के विचारों की ओर धकेल दिया था।

अब पतझड़ आ रहा था और अक्तूबर की ठिठुरन में बस्ती के छोटे-छोटे बगीचों को पाला मार गया था। पतली-पतली लतरों के पीछे, ओसारे में अब ट्राम ढोने वाले कोयला भरनेवाली लड़कियों के साथ कामकेलि नहीं करते थे; सिर्फ जाड़े की सब्जियाँ बगीचों में थीं, सफेद पाले से आच्छादित बंदगोभी, लहसुन और सलाद। पुनः लाल छतों पर वर्षा का पानी गिरता था जो टबों से गुजरता हुआ तेज बहने वाले नाले में मिल जाता था। प्रत्येक घर में कोयले से भरी अँगीठी कभी ठंढी नहीं होती थी और बंद कमरे की हवा को हमेशा गंधयुक्त बनाये रहती थी। दुख-दैन्य की पुनः नये सिरे से शुरुआत का यह मौसम था।

अक्तूबर में कड़कड़ाती ठंढ की शुरुआत की एक रात को, लॉतिये नीचे काफी बहस के बाद कुछ बेचैनी से सो नहीं पाया था। उसने कैथराइन को ओढनी के नीचे खिसकते और मोमबत्ती बुझाते देखा। वह भी बहुत थकी मालूम होती थी

और लज्जा के उन मौकों में से ऐसे ही एक मौके से परेशान सी थी जब कि उसे जल्दी करनी पड़ती थी। परन्तु इस जल्दबाजी में वह अपने को ढंकने के बजाय और उघाड़ लेती थी। अंधेरे में वह मरी हुई सी पड़ी थी, लेकिन वह जानता था कि वह सो नहीं पाई है। उसे ऐसा अहसास हुआ कि वह भी उसके बारे में सोच रही है जैसे वह कैथराइन के बारे मे सोच रहा था। उनके अस्तित्व के इस मूक आदान-प्रदान ने उन्हें इससे पहले कभी इतना परेशान नहीं किया था। क्षण-क्षण गुजरता जा रहा था परन्तु उनमे से कोई भी हिला-डुला नहीं, सिर्फ उनकी साँसें उलझ रही थीं गोकि वे सामान्य रीति से साँस लेने की कोशिश कर रहे थे। दो बार वह उठकर उसे भोगने को हुआ। एक दूसरे के प्रति इतनी प्रबल इच्छा रखना और उसे कभी भी संतुष्ट न कर पाना बेवकूफी थी। क्यों वे उस इच्छा की पूर्ति से विरत होते हैं जिसे वे चाहते है ? बच्चे सब सोये हुए थे, वह भी रजामंद थी; उसे यकीन था कि वह उसका इन्तजार कर रही है और चुपचाप वह अपना मुंह बंद कर उसके गले में बांहे डाल देगी। लगभग एक घंटा गुजरा। वह उसे भोगने को नही उठा और वह भी इस भय से उसकी ओर करवट बदल कर नहीं सोई कि कहीं वह उसे पुकार न ले। जितना अधिक वे अगल-बगल मे रह रहे थे उतनी ही अधिक लज्जा, मित्रता की नाजुक-कड़ी और वितृष्णा की दीवारें उनके बीच मे खड़ी हो रही थीं जिसकी कैफियत वे अपने आप को न दे पाते थे।

४

'सुनो !' माहेदी अपने आदमी से बोली, 'जब तुम पगार लेने मोंटसू जाओ तो वापस लौटते हुए मेरे लिए एक पाउण्ड काफी और एक किलो चीनी लेते आना।'

मोची को दाम न देना पड़े इसलिए वह अपने एक जूते की मरम्मत कर रहा था। उसने अपना काम करते हुए धीरे से कहा 'अच्छा।'

'मैं चाहती हूँ तुम कसाई के यहाँ भी चले जाओ। थोड़ा-सा बछड़े का गोश्त ले लेना ? उसे चखे अर्सा गुजर गया।'

इस बार उसने अपना सिर उठाया। 'तब, क्या तुम सोचती हो कि मुझे हजारों मिलने वाले है ? पखवारे की पगार ही बहुत कम होती है, उस पर भी हमेशा काम बंद करने की धमकी।'

वे दोनों चुप हो गये। यह बातचीत अक्तूबर के अन्त में सुबह के नाश्ते के बाद एक रविवार की थी। कम्पनी ने, भुगतान से उत्पन्न अव्यवस्था के बहाने उस दिन, एक बार फिर से सभी खानों मे काम बंद कर दिया था। बढ़ते हुए मौसो-

गिक संकट से त्रस्त होकर, अपने पास पर्याप्त स्टाक को और अधिक बढ़ाने की इच्छा न रखते हुए वे छोटे से छोटे बहाने पर भी अपने दस हजार मजदूरों को काम पर से बैठा कर फायदा उठाते थे।

माहेदी ने फिर बात चलाई, 'तुम्हें मालूम है लॉतिये रसेन्योर में तुम्हारा इन्तजार करता होगा। उसे अपने साथ ले लेना; और अगर उन्होंने तुम्हारे काम के सभी घंटे नहीं लगाये होंगे तो मामले को ठीक करने में वह तुमसे ज्यादा चतुर पड़ेगा।'

माहे ने सिर हिला कर स्वीकृति दी।

'और उन लोगों से अपने पिता के मामले में भी बातचीत कर लेना। डाक्टर के डाइरेक्टरों से अच्छे ताल्लुकात हैं। यह सच है, क्या ऐसा नहीं है?'

'क्यों जी?' उसने बोनेमाँ को सम्बोधित करते हुए कहा, 'डाक्टर गलत कहता है और तुम अब भी काम कर सकते हो?'

दस दिनों से बोनेमाँ गठिया के मारे अपनी कुर्सी पर ही पड़ा रहता था। माहेदी को अपना प्रश्न दुहराना पड़ा और वह क्रुद्ध स्वर में बोला :

'यकीनन, मैं काम कर सकता हूँ। किसी के पाँवों में अगर खराबी आ जाय तो इसका मतलब यह नहीं कि वह काम से गया। वह यह सब कहानियाँ इसलिए गढ़ते हैं कि उन्हें एक सौ अस्सी फ्रैंक पेंशन न देनी पड़े।'

माहेदी बुड्ढे के चालीस सूज की बात सोच रही थी, जिन्हें शायद, वह अब कभी न ला सकेगा और उसके मुँह से निराशा की एक चीख सी निकली।

'ईश्वर कसम! अगर ऐसा ही चलता रहा तो हम सब जल्दी ही मर जायेंगे।'

माहे बोला, 'जब कोई मर जाता है तो फिर उसे भूख नहीं सताती।'

उसने अपने जूतों में कुछ कीलें ठोंकीं और बाहर निकलने को तैयार हुआ।

ड्यू-सेंट-क्वारेंटे बस्ती को चार बजे से पेश्तर तो पगार मिलेगी नहीं। लोग जल्दबाजी में नहीं थे और एक के बाद एक इधर-उधर ठहरते घरों से निकल रहे थे और उनकी स्त्रियाँ उन्हें जल्दी लौटने को कह रही थीं।

रसेन्योर में लॉतिये को खबरें मिल चुकी थीं। चिन्ताजनक अफवाहें चारों ओर फैली थीं। कहा जाता था कि कम्पनी तख्ते बैठाने के मामले में बहुत ज्यादा असंतुष्ट है। वह मजदूरों पर जुर्माने कर उन्हें कुचलना चाहती है और झगड़ा रुकता प्रतीत नहीं होता। परन्तु यह तो सिर्फ एक मामूली झगड़ा है, इसकी तह में इसके गम्भीर और गुप्त कारण हैं।

ज्योंही लॉतिये पहुँचा, एक कामरेड, जो मोंटसू से लौट कर एक गिलास पी

रहा था, बता रहा था कि एक एलान कैशियर के दफ्तर में चिपका हुआ है, परन्तु वह नहीं जानता कि उस एलान में क्या लिखा है। दूसरा आया और फिर तीसरा, हर एक अलग-अलग बात कहता था। कुछ भी हो, यह निश्चित था कि कम्पनी ने कोई फैसला लिया है।

'तुम इसके बारे में क्या कहते हो ?' लॉतिये सोवरायन के समीप एक मेज के पास बैठ गया जिस पर एक तम्बाकू के पैकेट के अलावा और कुछ भी नहीं था।

इंजनमैन ने इत्मीनान से अपनी सिगरेट लपेटी : 'इसे पहले से ही समझना आसान था। वे तुम्हें अन्तिम छोर तक धकेल देना चाहते हैं।'

सिर्फ उसी में यह कुशाग्रबुद्धि थी कि वह स्थिति का विश्लेषण कर सके। 'कम्पनी को अगर अपना अस्तित्व रखना है तो संकट से नुकसान उठाते हुए अपने खर्चे में कटौती करने की मजबूरी है। और यह स्वाभाविक है कि कम्पनी इस या उस बहाने मजदूरों के, जिन्हें अपने पेटों में पट्टी बाँधनी होगी, वेतन में कतर-ब्योत करेगी। दो महीनों से कोयला उनकी खानों के ऊपर पड़ा हुआ है और लग-भग सभी कारखाने बन्द पड़े हैं। चूंकि कम्पनी इस बरबादी वाली निष्क्रियता से भयभीत हो अधिक दिनों तक इस प्रकार काम बन्द नहीं रख सकती इसलिए वे मध्य मार्ग की सोच रहे हैं और शायद वह हड़ताल है जिससे खनिक कुचला हुआ और कम वेतन भोगी निकलेगा। फिर इस नये प्राविडेन्ट फंड ने भी उन्हें परेशान कर रखा है क्योंकि यह भविष्य के लिए खतरा है। इसलिए हड़ताल उन्हें इससे मुक्ति दे देगी क्योंकि यह अभी थोड़े में ही खत्म हो जायगा।'

रसेन्योर लॉतिये के बगल में आ बैठा था और दोनों चिन्तित-से उसकी बातें सुन रहे थे। चूंकि कमरे में, काउन्टर पर बैठी मदाम रसेन्योर के अलावा अब कोई नहीं था इसलिए वे जोर से बोल सकते थे।

'क्या विचार है !' रसेन्योर बोला, 'इससे क्या लाभ होगा ? कम्पनी की हड़ताल में कोई दिलचस्पी नहीं है और न मजदूरों की ही। समझौता ही सब से बेहतर रहेगा।'

बात बड़ी समझदारी की थी। वह हमेशा उचित माँगों के पक्ष में था। जबसे उसके पुराने किरायेदार की ख्याति तेजी से बढ़ी थी वह बराबर न्यायसंगत प्रगति की पद्धति पर जोर देता हुआ कहा करता था कि अगर तुमने सब एक बारगी ही चाहा तो तुम्हें कुछ भी नहीं मिलेगा। उसकी बियर से अच्छे उसके हँसमुख स्वभाव में एक प्रकार की ईर्ष्या पैदा हो रही थी जो उसकी बार के सूनी पड़ जाने से और भी बढ़ गई थी। बोरो के कामगार अब यदाकदा ही यहाँ बियर पीने और उसकी बातें सुनने को आते थे और वह कभी-कभी कम्पनी का पक्ष लेने लगता था और

एक पुराने खनिक की, जो कि निकाल दिया गया है, बदले की भावना भूल जाता था।

मदाम रसेन्योर काउन्टर से ही चिल्लाई, 'तब तुम हड़ताल के विरोध में हो ?'

और जब उसने बड़े उत्साह से उत्तर दिया 'हाँ !' तो उसने उसने जबान बन्द करने को कहा।

'चुप रहो ! तुममें साहस नहीं है ; इन महानुभावों को बोलने दो।'

लॉतिये अपने बियर के उस गिलास पर नजरें गड़ाये, जो मदाम ने उसे ढाल कर दिया था, विचारों में लीन था। अन्त मे उसने अपना सर उठाया।

'मैं यह कहना चाहता हूँ कि जो कुछ हमारे साथी ने कहा है वह सच है और अगर वे इसे हमारे ऊपर लादना चाहते हैं तो हमे इस हड़ताल से विमुख होना चाहिए। हाल मे फ्लूचर्ड ने मुझे बड़ी नेक सलाह इस सम्बन्ध में भेजी है। वह भी हड़ताल के विरुद्ध है क्योंकि हम लोगों को भी उतना ही नुकसान होगा जितना मालिकों का और किसी भी बात का निर्णय नहीं हो पायेगा। सिर्फ उसे यह एक सुनहरा मौका प्रतीत होता है कि हमारे आदमी उसकी बड़ी मशीन के अन्तर्गत आ जाने का फैसला करें। यह चिट्ठी है।'

वास्तव मे फ्लूचर्ड, मोंटसू के खनिकों मे उत्पन्न किये गये इन्टरनेशनल के प्रति संदेह से निराश होकर यह आशा कर रहा था कि अगर उन्हें कम्पनी के खिलाफ लड़ने को मजबूर किया जाता है तो वे सब इकट्ठे ही उसमे प्रविष्ट हों। अपने प्रयासों के बावजूद लॉतिये एक भी व्यक्ति को सदस्य नहीं बना पाया था। और उसने अपने प्राविडेंट फंड मे सारी शक्ति लगा दी थी जिसका कि अच्छा स्वागत लोगों मे हो रहा था। परन्तु यह रकम अभी इतनी कम थी कि वह जल्दी ही खत्म हो जायगी और जैसा कि सोवरायन ने कहा, 'तब हड़ताली अनिवार्य रूप से मजदूरों के संगठन मे शामिल हो जायंगे ताकि हर देश मे उनके भाई उनकी मदद करें।'

रसेन्योर ने पूछा, 'तुम्हारे पास कोष में कितना जमा है ?'

'मुश्किल से तीन हजार फ्रैंक होगा।' लॉतिये बोला, 'और तुम जानते हो कि कल डाइरेक्टरों ने मुझे बुला भेजा था। ओह ! वे बड़े ही विनम्र बने हुए थे। वे बारबार कह रहे थे कि वे अपने आदमियों को रिजर्व फंड बनाने से नहीं रोकेंगे। परन्तु मैं समझता हूँ वे इस पर नियंत्रण करना चाहते हैं। इस पर हमारा संघर्ष अनिवार्य है।'

सराय मालिक ऊपर-नीचे टहल रहा था और अवहेलना के भाव से सीटी बजा रहा था।' 'तीन हजार फ्रैंक ! इससे तुम क्या कर सकते हो ! यह छः दिन भी नहीं चलेगा और अगर कोई अजनबी लोगों पर भरोसा करे, जैसा कि

इंगलैण्ड में हुआ, तो वह तत्काल ही धराशायी हो जायगा। नहीं, यह बड़ी बेवकूफी होगी, यह हड़ताल।'

तब उन दोनों के बीच पहली बार कटु शब्दों का आदान-प्रदान हुआ गोकि वे अक्सर अन्त में एक दूसरे से सहमत हो जाया करते थे क्योंकि वे दोनों ही पूंजीवाद से नफरत करते थे।

'हम देखेंगे! और तुम, तुम इस सम्बन्ध मे क्या कहते हो?' लॉतिये ने सोवरायन की ओर मुखातिब होकर कहा।

सोवरायन अपनी हमेशा की उपेक्षापूर्ण आदत के अनुसार अपने चुने हुए वाक्यों में बोला, 'हड़ताल? बेवकूफी?'

तब, मौन गुस्से के बीच, उसने सामान्य भाव से कहा—'कुछ भी हो, अगर इससे तुम्हें खुशी हो तो मुझे नहीं कहना चाहिए, परन्तु इसमें एक पक्ष की बरबादी है तो दूसरे पक्ष की मौत।' और हमेशा ही इतनी सफाई होती आई है। सिर्फ इस प्रकार दुनिया को नये सिरे से बसाने में हजारों वर्ष लग जायेंगे। उस कारावास को उड़ाने से शुरू करो जहां तुम सब की कब्र खुद रही है।'

अपने नाजुक हाथ से उसने बोरो की ओर संकेत किया जिसकी इमारतें खुले दरवाजे से दिखाई दे रही थी। लेकिन एक न दीखने वाले ड्रामा ने उसकी बातचीत में खलल डाला। उसका पालतू खरगोश, जो बाहर चला गया था, डरा हुआ भागा-भागा आया क्योंकि ट्रामरों का एक दल उस पर ढेले फेंक रहा था। खरगोश भयभीत हो कान नीचे किये और दुम उठाये उसकी टांगों में लिपटता हुआ उसे खुरचने लगा ताकि वह उठाकर उसे गोद में ले ले। जब वह उसके घुटनों मे बैठ गया तो सोवरायन ने उसे अपने दोनों हाथों मे ढंक लिया।

इसी समय माहे अन्दर आया। मदाम रमेन्योर के विनम्र आग्रह के बावजूद उसने इन्कार किया कि वह कुछ भी न पियेगा। मदाम अपनी बियर इस खूबी से बेचती थी मानो वह उसे तोहफे के रूप में भेंट कर रही हो। लॉतिये उठ खड़ा हुआ और वे दोनों मोंटसू की ओर रवाना हो गए।

वेतन दिवस पर कम्पनी के अहाते में, मोंटसू में किसी रविवार के भोज-दिवस की तरह मेला सा लगता था। सभी बस्तियों से खनिकों के झुंड यहां इकट्ठा होते थे। कैशियर का दफ्तर बहुत छोटा होने से वे लोग दरवाजे पर, गोल के रूप में सड़क के किनारे फुटपाथ पर, निरन्तर नयी होने वाली भीड़ का रास्ता रोके खड़े होते थे। फेरी लगाने वाले इस मौके का लाभ उठाते थे और अपने चलते-फिरते ठेलों में बैठे ये मिट्टी के बर्तन और सूअर का गोश्त तक बेचा करते थे। परन्तु होटलों और मयखानों की विशेष बिक्री होती थी क्योंकि खनिक

मजदूरी पाने से पेश्तर इन्तजार के लिए काउण्टरों में जाते थे और जब वे वेतन पा जाते तो फिर होटलों में घुस जाते थे। परन्तु वे बड़े समझदार थे। यह बात दूसरी थी कि वे उसे बोल्कन में खत्म कर आयें। जब लॉतिये और माहे खनिकों के गोलों के बीच से आगे बढ़े तो उन्हें उस दिन गहरे क्षोभ और उत्तेजना का अहसास हुआ। वेतन लेने और उसे होटलों, बारों में खर्च करने की हमेशा की लापरवाही और आज में बड़ा फर्क था। आज घूंसे दिखाये जा रहे थे और बड़े कटु शब्दों का प्रयोग किया जा रहा था।

एस्टेमिनेट पिक्यूटी के पास चवाल मिला और माहे ने पूछा, 'तब क्या यह सच है कि उन्होंने गन्दी हरकत की है ?'

लेकिन चवाल ने एक क्रुद्ध गुर्राहट से लॉतिये पर तिरछी निगाह फेंकी। चूंकि नई कटान पर काम शुरू हुआ था उसने अपने साथी के प्रति नित्य प्रति बढ़ती हुई ईर्ष्या-जलन से दूसरों के साथ काम शुरू कर दिया था। नवागन्तुक का एक मालिकाना ढंग से पेश आना और बस्ती भर के लोगों का उसके तलुवे सहलाना उसे बरदाश्त न था। एक प्रेमी की रक्काबत ने मामले को और भी पेचीदा बना दिया था। अब वह कभी भी कैथराइन को रिवोलीं या खान के किनारे तब तक नहीं ले जाता था जब तक कि वह उस पर अपनी मां के किरायेदार के साथ सोने का आरोप न लगा ले और उसे भद्दी-भद्दी गालियां न दे ले। फिर एक जंगली इच्छा के वशीभूत होकर वह चुम्बनों से उसे बुरी तरह दबा डालता था।

माहे से उससे दूसरा प्रश्न किया—'क्या अब बोरो की बारी है ?'

और जब उसने हामी भरते हुए अपना सिर हिला कर बाद में उनकी ओर से अपना मुंह फेर लिया तो उन्होंने अहाते में घुसने का निश्चय किया।

गिनती-घर एक छोटा चौकोर कमरा था जिसे जाली से दो भागों में बांटा गया था। दीवार के सहारे लाइन में पाँच या छः खनिक इन्तजार कर रहे थे, जब कि कैशियर एक क्लर्क की सहायता से खिड़की के सामने खड़े खनिक को, जो अपनी टोपी हाथ में लिये था, हिसाब गिन कर दे रहा था। लाइन के ऊपर बाईं ओर दीवार के धुंधले भूरे प्लास्टर पर एक इश्तहार चिपका हुआ था और इसके सामने से प्रातःकाल से ही लगातार लोग गुजर रहे थे। वे दो या तीन के गोल में आते, उसके सामने खड़े होते और फिर बगैर एक शब्द बोले वहाँ से इस प्रकार चले जाते मानो उनकी कमर टूट गई हो।

दो खनिक उस समय एलान-पत्र के सामने खड़े थे जिनमें एक चौकोर रूखे बालों वाला युवक और दूसरा आयु से जर्जर एक बहुत दुबला-पतला वृद्ध था। उन दोनों में से पढ़ना कोई नहीं जानता था; नवयुवक अपने होंठ हिलाते हुए हिज्जे कर

रहा था और बुड्ढा सिर्फ एलान-पत्र को देख कर ही सन्तोष कर ले रहा था। बहुत से इस प्रकार बिना कुछ समझ में आये इसे देखने आते थे।

'इसे जरा पढ़ो तो !' माहे ने, जो पढ़ने में बहुत अच्छा न था, अपने साथी से कहा।

तब लॉतिये उसे एलान पढ़ कर सुनाने लगा। यह कम्पनी की ओर से सभी खानों के खनिकों के नाम एक नोटिस थी जिसमें उन्हें सूचित किया गया था कि तख्ते बैठाने में लापरवाही के परिणाम स्वरूप और बेकार जुर्माने से उकता कर कम्पनी ने कोयला निकालने के लिए नये तरीके से भुगतान की प्रणाली लागू करने का निश्चय किया है। आइन्दा वे तख्ते बैठाने के लिए अगल से, नीचे ले जाये गये और प्रयोग किये गये तख्तों के घन मीटर के हिसाब से, मजदूरी चुकायेंगे। भुगतान अच्छे काम के लिए आवश्यक किस्म पर निर्भर करेगा। निकाले गये कोयले के टब की कीमत, लाजमी है कि घट जायगी। कटान की किस्म और दूरी को देखते हुए यह कीमत पचास सेंटिम्स से चालीस सेंटिम्स हो जायगी। और कुछ अस्पष्ट सा हिसाब-किताब यह दिखलाने को दिया गया था कि दस सेंटिम्स की कमी तख्ते बैठाने की मजदूरी से पूरी हो जायगी। कम्पनी ने यह भी कहा था कि हर एक को इस नयी प्रणाली के फायदों के बारे में तसल्ली कर लेने का मौका देने की इच्छा रखते हुए वह इसे सोमवार, १ दिसम्बर तक लागू नहीं करेगी।

कैशियर ने चिल्ला कर कहा 'अगर तुम इतनी जोर से न पढ़ो तो हम यहाँ जो बातें कर रहे हैं सुन सकेंगे।'

लॉतिये ने उसके इस कथन पर कोई ध्यान नहीं दिया और पढ़ना खत्म किया। उसकी आवाज काँप रही थी और जब वह आखीर में पहुँचा तो वे सब एकटक एलान की ओर देखने लगे। बुड्ढे खनिक और नवयुवक ने इस प्रकार देखा मानो वे कुछ और चाहते हों, तब वे मायूस-से वहाँ से चले गये।

'हे ईश्वर !' माहे ने धीरे से कहा।

वह और उसके साथी ख़यालों में डूबे हुए गर्दन झुकाये बैठ गये और जब कि लोगों की कतार उस पीले कागज के सामने से गुजर रही थी, वे हिसाब लगा रहे थे। उन्हें बेवकूफ बनाया जा रहा है ? वे कभी भी ट्राम से कम किये गये दस सेंटिम्स की पूर्ति नहीं कर सकते। ज्यादा से ज्यादा वे आठ सेंटिम्स पूरा कर सकते हैं, इस प्रकार कम्पनी उनके दो सेंटिम्स लूट लेगी और इस सावधानी वाले काम में जो समय खर्च होगा उसका कोई हिसाब ही नहीं। तब, यह मजदूरी घटाने का बहाना है। कम्पनी खनिकों की जेब काट कर मितव्ययिता कर रही है।

'हे ईश्वर ! हे ईश्वर !' माहे ने फिर कहा। अगर इसे स्वीकार करें तो हम भी बेवकूफ के बच्चे हैं।'

लेकिन खिड़की खाली होने पर वह पगार लेने ऊपर चला गया। कटानों के मुखिया ही डेस्क के पास जाया करते थे और फिर समय की बचत के लिए अपने साथियों में हिसाब बाँट लिया करते थे।

'माहे और उसके साथी,' क्लर्क ने आवाज दी, 'फिलोनीरे संधि, कटान नम्बर सात।'

उसने टिकटों की जाँच से, जिसमें कप्तान प्रतिदिन प्रत्येक यार्ड से निकाली गई ट्रामों को दर्ज करते थे। तैयार की गई सूचियों को इधर-उधर और पलटा; फिर दुहराया : माहे और उसके साथी, फिलोनीरे संधि, कटान नम्बर सात, एक सौ पैंतीस फ्रैंक।'

कैशियर ने वेतन गिन दिया।

'क्षमा कीजियेगा, महाशय,' खनिक ने आश्चर्य में पड़ कर आजिजी से कहा, 'क्या आपको यकीन है कि कहीं गलती नहीं हुई ?'

उसने उस थोड़ी-सी रकम को बगैर जेब में डाले एक बार देखा और उसका दिल बैठ गया। यह सच था कि उसे कम रकम मिलने की आशंका थी, परन्तु इतना कम मिलेगा ऐसा उसने नहीं सोचा था; या उसने जरूर गलत जोड़ लगाया होगा। जब उसने जाचरे, लॉतिये और चवाल की जगह पर काम करने वाले साथियों को उनका हिस्सा दे दिया तो उसके पास मुश्किल से पचास फ्रैंक बचे जो उसके, बोनेमॉ,कैथराइन और जॉली, चारों के हिस्से के थे।

'नहीं, नहीं, मैंने भूल नहीं की है,' क्लर्क ने उत्तर दिया। 'दो रविवार और चार अन्य दिन निकल गये, इस प्रकार नौ दिन का काम हुआ।' माहे ने धीमे स्वर में इससे हिसाब बैठाना शुरू किया, नौ दिन का उसे तीस फ्रैंक मिला, अट्ठारह कैथराइन के हो गये, नौ जॉली के। फादर बोनेमॉ का सिर्फ तीन दिन का काम था। कोई बात नहीं, जाचरे और अन्य दो साथियों के नब्बे फ्रैंक जोड़ कर निश्चित ही अधिक रकम बनती है।

क्लर्क बोला, 'और जुर्माने को मत भूलो, खराब ढंग से तख्ते बैठाने का बीस फ्रैंक जुर्माना।'

खनिक ने निराशा की एक मुद्रा बनाई, 'बीस फ्रैंक जुर्माना, चार दिन बेठकी ! इस तरह हिसाब बना। सोचो तो कि वह एक बार एक पखवारे की मजदूरी पूरी एक सौ पचास फ्रैंक ले गया था जब कि फादर बोनेमॉ काम कर रहा था और जाचरे ने घर नहीं बसाया था।'

'अच्छा, क्या तुम इसे उठा रहे हो ?, कैशियर अधैर्य से चिल्लाया, 'यहाँ कोई और भी इन्तजार कर रहा है, यह नहीं देखते ? अगर तुम्हें यह नहीं चाहिये तो ऐसा कहो।'

ज्यों ही माहे ने अपने काँपते हुए लम्बे हाथ से रकम उठानी चाही क्लर्क ने उसे रोका।

'ठहरो, तुम्हारा नाम मेरे पास आया है। तुसां माहे, यही नाम है न ? जनरल सेक्रेटरी तुमसे बात करना चाहते है। चले जाओ अन्दर, वे अकेले हैं।'

घबराया-सा खनिक महोगनी की लड़की से बने फर्नीचर से सज्जित कमरे में जाकर खड़ा हो गया और पाँच मिनट तक वह जनरल सेक्रेटरी की, जो एक लम्बा और दुबला-पतला व्यक्ति था, बातें सुनता रहा जो अपने व्यूरो के कागजों को देखता, बिना उठे उससे बातें कर रहा था; लेकिन अपने कानों की भनभनाहट से वह कुछ सुन नहीं पा रहा था। वह अस्पष्ट रूप से समझ पाया था कि उसके पिता के रिटायर होने के प्रश्न पर उसकी एक सौ पचास फ्रेंक पेंशन को ध्यान मे रखते हुए विचार किया जायगा क्योंकि उसकी पचास वर्ष की उम्र मे पैतालीस वर्षों की सर्विस हो गई है। तब उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि सेक्रेटरी की आवाज सख्त हो हो गई है। वहाँ झिड़की दी जा रही थी, उस पर राजनीति मे भाग लेने का आरोप लगाया जा रहा था; उसके किरायेदार और प्रोविडेंट फंड की ओर संकेत किया गया था और अन्त मे उसे सलाह दी गई कि वह इन बेवकूफियों मे न पड़े क्योंकि वह खान के बेहतरीन काम करने वाले खनिकों मे एक है। वह विरोध करना चाहता था, परन्तु वह अपनी टोपी को अपनी काँपती हुई अँगुलियों के बीच मोड़ता हुआ चंद टूटे-फूटे शब्द ही कह पाया, और काँपता हुआ यह कहकर वहाँ से निकला :

'अवश्य, महाशय—मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ—महाशय—!'

बाहर जब उसने देखा कि लॉतिये उसका इन्तजार कर रहा है तो वह बोल उठा—

'मैं बड़ा बेवकूफ हूँ, मुझे जवाब देना चाहिए था ! रोटी के लिए पर्याप्त रकम तो मिलती नही और ऊपर से बेइज्जती ! हाँ, वह तुम्हारे खिलाफ कह रहा था, उसने मुझसे कहा कि बस्ती मे विष बोया जा रहा है। और किया क्या जाय ? हे ईश्वर ! अपनी गर्दन झुका लो और कहो धन्यवाद ! वह ठीक कहता है, इसी में बुद्धिमानी है।'

यकायक क्रोध और भय से विह्वल हो माहे चुप हो गया। लॉतिये गुमसुम उदास सा कुछ सोच रहा था। वे फिर एक बार सड़क को घेरने वाले खनिकों के

गोल के बीच से गुजरे। रोष बढ़ रहा था, एक शांत वर्ग का रोष, आने वाले तूफान की एक गंभीर चेतावनी, बिना किसी प्रकार की हिंसात्मक भाव-भंगिमा प्रदर्शित किये, ठोस धरती पर, जिसे देखने में भय लगता था। हिसाब समझने वाले चंद व्यक्तियों ने जोड़ लगाया और तख्तों के मामले में कम्पनी के दो सेन्टिम फायदे की बात की चर्चा सर्वत्र होने लगी जिससे बेवकूफ से बेवकूफ भी उत्तेजित हो उठा। परन्तु यह क्रोध विशेष रूप से उस अत्यन्त अल्प वेतन के बारे में था, बेठकी और जुर्माने के खिलाफ भूखी आत्माओं का विद्रोह था। अभी पेट भर भोजन नहीं जुट पाता और अगर वेतन और भी घटा दिया गया तब क्या होगा? होटलों में क्रोध और भी अधिक बढ़ गया था और इस गुस्से ने उनका गला इतना सुखा दिया था कि जो कुछ थोड़ा मिला था वह भी काउण्टरों में चला गया।

मोंटसू से बस्ती तक माहे और लॉतिये आपस में एक शब्द भी नहीं बोले। जब माहे घर में दाखिल हुआ तो माहेदी ने, जो बच्चों के साथ अकेली बैठी थी, देखा कि उसके हाथ खाली थे।

'क्यों जी, तुम बड़े अच्छे आदमी हो,' वह बोली। 'मेरी काफी, चीनी और गोश्त कहाँ है? थोड़ा बछड़े का गोश्त तुम्हें बरबाद तो न कर देता।'

उसने कोई उत्तर नहीं दिया। भावातिरेक से घुटा-सा वह चुप रहने की चेष्टा में था। तब उसका भद्दा चेहरा, जो खान में काम से सख्त बन गया था, निराशा में फूल-सा आया और उसकी आंखों में बड़े-बड़े आंसू वर्षा की ताजी बूंदों की भाँति गिरने लगे। वह कुर्सी पर जा बैठा और पचास फ्रेंक मेज पर फेंक कर बच्चों की भाँति फफक-फफक कर रोने लगा।

'लो,' वह बोला। 'यही मैं तुम्हारे लिए लाया हूँ। यही हम सब के काम की रकम है।'

माहेदी ने लॉतिये की ओर देखा और पाया कि वह चुप तथा चिन्तित है। तब वह भी रोने लगी। किस तरह नौ प्राणी एक पखवारे तक पचास फ्रेंक में पलेंगे? बड़े लड़के ने उन्हें छोड़ दिया है, बुड्ढा बाप पाव तक नहीं हिला सकता। इसका मतलब जल्दी ही मौत है। अलजीरे ने अपनी माँ के गले में बाहें डाल दी, वह उसे रोते देख कर बेचैन हो उठी थी। एस्टीलो चीख रही थी, लीनोरी और हेनरी सुबकियाँ ले रहे थे।

और शीघ्र ही समूची बस्ती से दुर्दान्त निर्धनता की इसी प्रकार की चीखें आने लगीं। पुरुष लौट आये थे, और हर घर में इस बहुत थोड़ी रकम से कुहराम मचा हुआ था। दरवाजे खुले, महिलाएँ बाहर निकलीं मानो शिकायतें इन नीची छतों वाले छोटे-छोटे मकानों में दबी न रह सकती हों। वे बाहर जोरों से चिल्ला

रही थीं। रिमझिम वर्षा गिर रही थी परन्तु वे इसकी परवाह किये बिना फुटपाथ के आरपार से एक दूसरे को पुकार रही थीं और रकम मुट्ठी में दबाये एक-दूसरे को दिखा रही थीं कि यह मिला है।

'देखो, उन्होंने यह दिया है। क्या वे लोगों को बेवकूफ बनाना चाहते हैं ?'

'जरा मेरे पास तो देखो, मेरे पास तो पखवारे की रोटी भर के लिए पर्याप्त वेतन नहीं है।'

'और जरा मेरी रकम तो गिनो ! मुझे अपनी चोली बेचनी पड़ेगी।'

अन्य औरतों की तरह माहेदी भी बाहर आ गई थी। एक गोल लेवक्यू की औरत के इर्दगिर्द जमा था, वह बहुत ज्यादा चिल्ला रही थी क्योंकि उसका शराबी पति अभी लौटा नहीं था और उसे मालूम था कि चाहे बड़ी रकम हो अथवा छोटी, वेतन बोल्कन में चला जाता है। फिलोमिना माहे को देख रही थी ताकि जाचरे पैसा न पा सके। पेरीन ही एक ऐसी थी जो शांत दिखती थी क्योंकि चापलूस पेरी न जाने कैसे सब व्यवस्था कर लिया करता था और कप्तान के टिकट पर अन्य साथियों की अपेक्षा उसके काम के घंटे ज्यादा निकलते थे। लेकिन मदर ब्रूली अपने दामाद को कायर समझती थी; असंतुष्ट औरतों के बीच सीधी खड़ी यह दुबली पतली काया मोंटमू की ओर घूंसा ताने थी।

वह चिल्लाई, 'मैं सोचती हूँ कि आज सुबह उनकी नौकरानी एक बग्घी में जा रही थी।' उसका संकेत हनेब्यू की ओर था गोकि उसने उसका नाम नहीं लिया : 'हाँ, रसोई बनाने वाली दो घोड़ों वाली बग्घी में मार्सेनीज की ओर जा रही थी, जरूर वह मछली खरीदने गई होगी !'

फिर औरतों की चखचख शुरू हो गई और फिर गालियाँ दी जाने लगीं। एक नौकरानी को सफेद कपड़े पहना कर उसके मालिक की बग्घी में पड़ोसी कस्बे के बाजार में ले जाना बुरा समझा गया। जब कि खनिक भूखों मर रहे हैं उन्हें किसी भी कीमत पर मछली चाहिए। शायद वे हमेशा मछली नहीं खा पायेंगे: गरीब लोगों की बारी भी आयेगी। और विद्रोह की इन चीखों में लॉतिये द्वारा लगाया गया बीज उग आया था और बढ़ रहा था। यह आने वाले सुनहरे युग से पूर्व की, जिसका कि वायदा किया गया था, बेकरारी थी। दुख-दैन्य के क्षितिज के परे खुशहाल जीवन का अपना हिस्सा पा जाने की उतावली थी। बहुत बड़ा अन्याय हो रहा है; कम से कम वे अपने अधिकारों की माँग तो जरूर करेंगे क्योंकि रोटी भी उनके मुँह से छीन ली जा रही है। महिलायें विशेष रूप से पसंद करती थीं कि इस प्रगति के आदर्श शहर को, जिसमें दरिद्रता का कोई निशान तक न होगा, एकदम चढ़ाई कर विजित कर लिया जाय। लगभग रात हो चली थी। वर्षा

बढ़ गई थी और बच्चों की चीख-पुकार, रोने-धोने के बीच बस्ती उनके आँसुओं से भर रही थी।

उसी संध्या को एवेन्टेज में हड़ताल का निश्चय किया गया। रमेन्योर ने अब इसका प्रतिरोध नहीं किया और सोवरायन ने भी इसे प्रथम चरण के रूप में स्वीकार किया। लॉतिये ने स्थिति को एक वाक्य में केन्द्रित किया—'अगर कम्पनी वस्तुतः हड़ताल चाहती है, तो अवश्य उसे हड़ताल का सामना करना पड़ेगा।'

५

एक हफ्ता गुजर गया। काम संघर्ष की आशंका से संदेह और उत्साहहीन वातावरण में चलता रहा।

माहे परिवार के लिए यह पखवारा सब से अधिक संकट का नजर आ रहा था। अपने सौम्य और सरल स्वभाव के बावजूद माहेदी चिड़चिड़ी हो गई थी। उसकी लड़की कैथराइन भी रात बाहर ही रह गई थी। दूसरे दिन प्रातःकाल जब वह लौटी तो वह इतनी थकी और बीमार थी कि वह खाने जाने में असमर्थ थी और उसने रोते हुए अपनी माँ को बताया कि यह उसका कसूर नहीं है। चवाल ने जबरन उसे रोके रखा और धमकी दी कि भागने पर वह उसे पीटेगा। ईर्ष्या से वह पागल बनता जा रहा था और उसे लॉतिये के बिस्तर तक लौटने से रोकता था। वह कहता था कि मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि तेरे परिवार वाले तुझे उसके साथ सोने को कहते है। माहेदी को बड़ा क्रोध आया और अपनी लड़की को आइन्दा ऐसे जंगली से न मिलने की हिदायत देते हुए कहा, 'मैं उसके कान उमेठने मोंटसू जाऊंगी।' लेकिन जो कुछ भी हो काम का एक दिन तो मारा ही गया और लड़की भी, अब जब कि उसका एक प्रेमी था, उसे बदलना नहीं चाहती थी।

दो दिन बाद एक दूसरी घटना हुई। सोमवार और मंगलवार को जॉली बीवर्ट और लायडी के साथ मार्सेज और वण्डामे के जंगलों में भाग गया था जब कि सभी यही उम्मीद कर रहे थे कि वह चुपचाप बोरो में अपना काम कर रहा होगा। उसने उन्हें भी फुसला लिया था। कोई नहीं जानता था कि किस लूटमार या बचपन के किन खेलों के लिए वह तीनों गायब हुए है। उसे सख्त सजा मिली; उसकी माँ ने बाहर फुटपाथ पर भयभीत बच्चों के सामने उसे कोड़े मारे। कौन समझ सकता था कि उसके बच्चे ऐसे निकलेंगे, जिन्हें पैदा होने से लेकर अब तक पालने में इतना कष्ट झेलना पड़ा और अब उन्हे कुछ कमा कर घर में लाना चाहिए था? इस चीख में उसके अपने दुख में पले बचपन

और पीढ़ी-दर पीढ़ी चली आने वाली ग़ुरबत की स्मृति थी, जो छोटे-छोटे बच्चों को बाद में रोटी कमाने वालों की सीढ़ी में लाती थी।

उस दिन सुबह जब पुरुष और लड़की खान जाने लगे तो माहेदीं जॉली को समझाने के लिए लड़की के बिस्तर में बैठ गई—'तुम जानते हो कि अगर तुमने फिर ऐसी हरकत की तो मैं तुम्हारी चमड़ी उधेड़ डालूंगी।'

माहे के नये स्टाल मे काम सख्त था। फिलोनीरे संधि के इस हिस्से मे कटान इतनी तंग थी कि छेनी चलाने वालों को दीवार और छत के बीच मे दबते हुए कुहनियों पर जोर देते हुए काम करना पड़ता था। यहाँ नमी भी बहुत ज्यादा बढ़ रही थी और हर क्षण उन्हें पानी का सोता फूट पड़ने का डर बना रहता था। ऐसे स्थानों में यकायक पानी की तेज धारा चट्टानों से फूट कर खनिकों को बहा ले जाया करती थी। इससे एक दिन पेश्तर जब कि लॉतिये जोरो से छेनी मार कर उसे बाहर निकाल रहा था तो पानी की एक बौछार उसके चेहरे पर आई थी, परन्तु यह सिर्फ एक चेतावनी थी; कटान अधिकाधिक नम और अधिक कष्टप्रद होती जारही थी। अलावा इसके वह अब किसी भी सम्भावित दुर्घटना की नहीं सोचता था। वह वहाँ अपने साथियों के साथ अपने आपको भूल सा गया था और दुर्घटना के प्रति लापरवाह हो गया था। वे 'फायरडेंप' के बीच पलकों पर उनके भार को महसूस न करते हुए-से रहते थे जो मकड़ी के जाल की तरह उनकी पुतलियों को घेर लेता था। कभी जब लैंपों की रोशनी सामान्य से अधिक पीली और नीली पड़ जाती तो एक खनिक संधि की दीवार से कान लगा कर गैस की आवाज सुनने की कोशिश करता, हवा के बवूलों की यह आवाज हर दरार से निकला करती थीं। लेकिन हमेशा बना रहने वाला खतरा जमीन धँसने का था; क्योंकि, अपर्याप्त तख्ते बिठाने के अलावा, जो कि हमेशा जल्दबाजी में बैठाये जाते थे, मिट्टी, पानी से गीली रहती थी और अधिक नही ठहर सकती थी।

दिन में तीन बार माहे को कुछ-कुछ तख्ते बिठाते रहना पड़ा। ढाई बज चुका था और शीघ्र ही लोगों को ऊपर चढ़ना होगा। एक करवट लेटे हुए लॉतिये एक कोलखण्ड की कटाई खत्म कर रहा था, जब कि दूसरे से बिजली सी गिरने की कड़क से समूची खान हिल गई।

वह क्या हुआ? अपनी कुल्हाड़ी रखते हुए वह चिल्लाया।

पहले उसने सोचा कि उसके पीछे की ओर का गलियारा धँस रहा है।

लेकिन माहे कटान के ढाल से खिसक चुका था। वह आगे बढ़ता हुआ कहता गया, कहीं जमीन धँसी है। जल्दी, जल्दी!

सभी लड़खड़ाते हुए नीचे की ओर भागे और संकट के नाजुक क्षणों में बेचैन

मे हो उठे। धँसाव के बाद की गहरी सुनसानी में उनके लैम्प उनकी कलाइयों में नाच रहे थे। वे एक कतार में कमर झुकाये गलियारों के मार्ग मे भाग रहे थे, मानों वे चारों, हाथ-पावों से बेतहाशा दौड़ रहे हों। उस रफ्तार को जारी रखते हुए वे एक-दूसरे मे संक्षिप्त प्रश्नोत्तर करते जाते थे : तब यह धमाका कहाँ हुआ ? कटानों मे हुआ हो, शायद। नहीं, नीचे से आवाज आई थी; नहीं, कटघरे वाले स्थान से आई थी। जब वे चिमनी-मार्ग पर पहुँचे तो वे उसमें कूद पड़े और चोट इत्यादि की परवाह किये बिना एक-दूसरे के ऊपर लुढ़कते हुए खिसकने लगे।

जॉली; जिसका चेहरा पिछले दिन के कोड़ों की मार मे अभी सुर्ख पड़ा था, उस दिन खान मे नहीं भागा था। वह नंगे पाँव ट्राम के पीछे भाग रहा था और एक के बाद एक हवा के मार्ग बन्द कर रहा था; जब उसे किसी कप्तान के मिलने का डर नहीं रहा तो वह आखिरी ट्राम में कूद पड़ा। उसे ऐसा करने की मुआनियत थी क्योंकि वह वहाँ सो जाया करता था। लेकिन उसका सबसे बड़ा मनोरंजन यही था कि जहाँ भी ट्रेन, दूसरी को रास्ता देने के लिए एक किनारे लगाई जाती, वह बीवर्ट से मिलने चला जाता था जो कि ट्रामों की ट्रेन के सामने घोड़ों की रास पकड़े होता था। वह चुपचाप बिना लैम्प लिये आता और अपने साथी के जोरों से चिकोटी काटता और बन्दर की तरह नयी-नयी शरारतें ईजाद किया करता था।

दोपहर को मावयू बेटली को लाया था क्योंकि आज उसकी पारी ट्राम खींचने की थी और चूंकि घोड़ा शंटिंग मे हिनहिना रहा था, जॉली ने, जो बीवर्ट के पास चला आया था, उसने पूछा :

'क्या मामला है कि यह बुड्ढा खूसट आज यकायक इस प्रकार रुक जाता है ? यह मेरे पाँव तोड़ रखेगा।'

बीवर्ट उत्तर न दे सका, उसे बेटली को रोके रखना पड़ा। क्योंकि वह दूसरी ट्रेन के आने से चौंक रहा था। घोड़े ने दूर से ही अपने साथी ट्रोम्पेटी को सूंघ लिया था जिसके प्रति खान में उतारे जाने के दिन से ही उसकी गहरी सहानुभूति हो गई थी। यह कहा जा सकता है कि एक पुराने दार्शनिक की अपने एक युवा मित्र के प्रति दयापूर्ण सहानुभूति रही हो और वह उसे अपना सा धैर्य और आत्मत्याग सिखाना चाहता हो, क्योंकि ट्रोम्पेटी ने अभी भी समझौता नहीं किया था। काम के प्रति किसी प्रकार की अभिरुचि दिखलाये बिना, अँधेरे से अंधा-सा हो वह सिर झुकाये ट्राम खींचता था और हमेशा रोशनी के लिए पश्चा-ताप करता रहता था। इसलिए हर बार जब बेटली उसे मिलता तो हिनहिनाता

हुआ वह अपना सिर बाहर निकाल लेता और उत्साहवर्धक चुम्बनों ने उसे आर्द्र बना देता था।

'भगवान कसम।' बीवर्ट बोला, 'वहाँ वे पुनः एक दूसरे का शरीर चाटने लगे हैं।'

तब ,जब ट्रोम्पेटी निकल गया तो उसने बेटली के बारे में जवाब दिया— 'ओ, वह बड़ा चालाक जानवर है। जब वह इस प्रकार रुकता है तो इसलिए कि वह रास्ते मे किसी रुकावट का अंदाजा लगा लेता है, चाहे एक पत्थर हो, चाहे छेद हो और वह हिफाजत कर लेता है। वह अपनी हड्डियाँ तुड़वाना नहीं चाहता। आज मैं नहीं जानता कि दरवाजे के बाद उसके साथ क्या बात हुई है!' उसने उसे धकेला और जमकर खड़ा हो गया। तुम्हें कुछ दिखाई दे रहा है?'

'नहीं,' जॉली बोला, 'वहाँ पानी है, वह मेरे घुटने-घुटने था।'

ट्रेन आगे बढ़ी। और इसके बाद दूसरी स्टेप मे, जब उसने अपने सिर से धकेल कर हवा का द्वार खोल लिया तो बेटली ने पुनः हिनहिनाने और टापें उठाते हुए आगे बढ़ने से इन्कार कर दिया। अन्त मे पता नहीं क्या सोचकर वह सरपट दौड़ निकला।

जॉली दरवाजा बन्द करने को पीछे रह गया था। उनके नीचे झुककर उस मिट्टी को देखा जिस पर वह चल रहा था। तब, लैंप उठाकर उसने देखा कि लगातार पानी मे रहने से लकड़ी के तख्ते सड़ गये है तभी, एक लोक्यू नामक मलकट्टा, जो चिकोट नाम से, पुकारा जाता था, घर जाने की जल्दी में कटान से यहाँ पहुँचा। उसने भी रुककर तख्तों का निरीक्षण किया। और यकायक, जब कि लड़का अपनी ट्रेन की ओर बढ़ रहा था, धमाके की एक जोरदार आवाज हुई और वह आदमी और लड़का ऊपर से गिरने वाली मिट्टी के ढेर मे दब गये।

फिर एक गहरी खामोशी छा गई। जमीन धँसने से हवा ने धूल की जो मोटी तह उड़ाई वह समूचे मार्ग मे छा गई और हर हिस्से से आने वाले खनिकों की आँखों और गले में बैठ गई। हर ओर से खनिक अपने लैंप नचाते हुए दौड़े आये। जब पहला व्यक्ति वहाँ पहुँचा तो उसने अपने साथियों को आवाज दी। दूसरा जत्था नीचे की कटान से आया और उसने देखा कि वे मिट्टी के ढेर की दूसरी ओर रह गये हैं और गलियारा बंद हो गया है। तत्काल देख लिया गया कि छत बमुश्किल बारह मीटर दूरी तक गिरी थी। परन्तु जब मलबे से मृत्युयंत्रणा का स्वर सुनाई दिया तो सभी के दिल बैठ गये।

बीवर्ट अपनी ट्रेन छोड़कर दौड़ा आया और बार बार चिल्लाने लगा, 'जॉली दब गया है। जॉली दब गया है।'

माहे, इसी समय, जाचरे और लॉतिये के साथ रास्ते से आता नजर आया। वह निराशापूर्ण में आवेश में सिर्फ 'इतना ही बोल पाया' 'हे ईश्वर ! हे ईश्वर ! हे ईश्वर !'

कैथराइन, लायडी और माकेटी भी दौड़ कर वहाँ पहुँच चुकी थीं। वे इस भयावह अव्यवस्था मे, जो अंधेरे से और .भी बढ़ गई थी, भयभीत होकर चिल्ला रही थीं और सिसकियाँ ले रही थीं। मर्दों ने उन्हें चुप कराने की कोशिश की और जब-जब मृत्यु यंत्रणा की कराह सुनाई देती थी तब-तब वे जोरों से रोने लगती थीं।

कप्तान रिचोम दुखी-सा दौड़ता हुआ वहाँ आया क्योकि कप्तान निग्रोन्त-और डेनार्ट मे से कोई भी खान में नहीं था। उसने चट्टानों से कान लगा कर सुनने की कोशिश की और अन्त मे कहा कि यह कराह बच्चे की नहीं हो सकती। कोई खनिक वहाँ दबा होगा। माहे बीसियों दफे जॉली को पुकार चुका था। कोई भी आवाज नहीं सुनाई दे रही थी। छोटा बच्चा निश्चित ही कुचल कर खत्म हो गया होगा।

परन्तु फिर भी कराहने की आवाज बराबर आ रही थी वे दबे हुए व्यक्ति के बारे मे बातें करते हुए उसके नाम की पूछताछ कर रहे थे। सिर्फ कराहें प्रत्युत्तर दे रही थीं।

'काम करो !' कप्तान रिचोम ने बचाव के लिए व्यवस्था करने के बाद कहा, 'बातें बाद में भी हो सकती हैं।'

प्रत्येक कोने से खनिको ने छेनियों और फावड़ो से खिसके हुए ढेर पर हमला शुरू कर दिया। चवाल एक शब्द बोले बिना माहे और लॉतिये के साथ काम पर जुटा था जब कि जाचरे मिट्टी हटाने का काम देख रहा था। ऊपर जाने का समय हो गया था, और किसी ने भी भोजन नहीं किया था; परन्तु वे अपने साथियों को मृत्युपथ पर छोड़कर ऊपर अपना सूप खाने नहीं जा सकते थे। उन्होने, यह महसूस किया कि अगर कोई न गया तो बस्ती मे बेचैनी फैल जायगी, इसलिए सुझाव रखा गया कि औरतों को भेज दिया जाय। लेकिन, कैथराइन, माकेटी और यहाँ तक कि लायडी मे कोई भी हटने को तैयार नहीं था। क्या हुआ यह जानने के लिए तथा मदद पहुँचाने को वे वहीं डटी हुई थीं। लेवक्यू को तब बताना पड़ा कि जमीन धँसने की एक साधारण घटना हुई है और मरम्मत को जा रही है। चार बजने के करीब था, एक घंटे से भी कम समय में उन लोगों ने इतना काम कर लिया था जितना साधारणतया वे एक दिन में किया करते थे। अगर ऊपर से अधिक चट्टानें न खिसकीं तो आधी मिट्टी हटाई जा चुकी थी। माहे क्रोधावेश में इस भयंकर तेजी से काम पर जुटा था कि जब एक साथी ने उसे क्षण भर

आराम देने की नीयत से उसे मदद देनी चाही तो उसने क्रोधित मुद्रा में इन्कार कर दिया।

अन्त मे कप्तान रिचोम बोला, 'धीरे-धीरे, हम करीब पहुँच रहे हैं, कहीं हमारी ही छेनी से वे खत्म न हो जाँय।'

वास्तव में कराह अधिकाधिक अस्पष्ट होती जा रही थी। लगातार इससे काम में निर्देशन मिल रहा था, और अब वे उनकी छेनियों के नीचे प्रतीत होते थे। यकायक काम रुक गया।

खामोशी में उन्होंने एक दूसरे की ओर देखा, और अंधकार में मृत्यु की छाया गुजरते हुए महसूस कर वे काँप उठे। पसीने में सराबोर वे खोद रहे थे और उनकी मांशपेशियाँ मशक्कत मे चटखने-सी लगी थीं। एक फुट तक खोदने पर उन्होंने हाथ से मिट्टी हटाना और एक-एक कर दबे हुए व्यक्ति के अवयवों को छुड़ाना आरम्भ किया। सिर मे चोट नहीं आई थी। उन्होंने अपने लैंप के प्रकाश में देखा और चिकोट का नाम सब की जुबान पर था। अभी उसके शरीर मे गरमी थी, परन्तु उसकी रीढ़ की हड्डी एक चट्टान के बोझ से टूट गई थी।

'उसे किसी कपड़े से लपेट लो और एक ट्राम पर रख दो! कप्तान ने आदेश दिया। 'अब बच्चे को निकालो, जल्दी करो।'

माहे ने आखिरी प्रहार किया और दूसरी ओर से मिट्टी हटाने वाले खनिकों से सम्पर्क स्थापित करने के लिए एक रास्ता बनाया गया। उन्होने चिल्लाकर बताया कि उन्होंने अभी जॉली को निकाला है, वह बेहोशी की हालत में है, दोनों पाँव टूट चुके हैं परन्तु अभी साँस चल रही है। माहे ने उसे बाँहों में उठा लिया, वह अपने जबड़े बन्द किये हुए अपना दुख प्रकट करने के लिए बराबर हे ईश्वर! हे ईश्वर! चिल्ला रहा था जब कि कैथराइन और अन्य लड़कियाँ रोने लगीं।

शीघ्र ही इन्तजाम हो गया। बीवर्ट ब्रेटली को वापस ले आया और उसे ट्रामों में जोत दिया गया। पहले चिकोट की लाश थामे लॉतिये बैठा था। बाद में अपनी गोद में जॉली को लिटाये हुए माहे। जॉली अब भी बेहोश था और उसे हवा-द्वार मे एक गरम कपड़े का टुकड़ा फाड़कर लपेट दिया गया था। वे धीरे-धीरे वहाँ से रवाना हुए। प्रत्येक ट्राम मे लाल तारे की तरह एक लैंप जल रहा था। उनके पीछे एक कतार मे लगभग पचास खनिकों की छाया थी। अब वे सभी थकान से चूर-चूर, भारी कदम रख रहे थे और महामारी से आतंकित झुंड की उदासी के साथ कीचड़ में फिसलते हुए चल रहे थे। 'पिटआई' तक पहुँचने में उन्हें लगभग आधा घंटा लगा। जमीन की सतह मे, अंधकार के बीच यह जुलूस विभिन्न कटानों को जाने वाले भागों के बीच कभी खत्म न होने वाला प्रतीत हो रहा था।

'पिट आई' पर रिचोम ने, जो पहले ही वहाँ चला आया था, एक खाली कटघरे को रिजर्व रखने का आदेश दिया था। पेरी ने तत्काल दो ट्रामें लाद लीं। पहली में अपने घायल बच्चे को घुटनों में लिटाये माहे और दूसरी में चिकोट की लाश को अपनी बाँहों का सहारा दिये लॉतिये बैठा। जब लोग अन्य ट्रामों में भेड़ों की तरह लद गये तो कटघरा ऊपर उठा। उसे दो मिनट लगा। कटघरे में निरंतर बहने वाले पानी की बरसात बहुत ठंढी लग रही थी और लोग ऊपर की ओर बड़े अधैर्य से प्रकाश देखने का इन्तजार कर रहे थे।

सौभाग्य से डाक्टर वण्डरहेगन के पास भेजा गया एक ट्रामर डॉक्टर को बुला लाया था। जॉली और उस मृत व्यक्ति को कप्तान के कमरे में लिटाया गया जहाँ वर्ष पर्यन्त हमेशा आग जला करती थी। बालटियों की एक कतार में गरम पानी पाँव धोने को रखा था और फर्श पर दो चटाइयाँ बिछाने के बाद मृतक और बच्चे को उन पर लिटा दिया गया। माहे और लॉतिये ही इस कमरे में आये थे। बाहर, पुटर लड़कियाँ, मलकट्टे और बच्चे इधर-उधर टहलते हुए, गोल के रूप में इकट्ठा हो धीमी आवाज में बातें कर रहे थे।

ज्योंही डाक्टर ने चिकोट को देखा, वह बोला, 'खत्म हो गया है! तुम इसे नहला सकते हो।'

दो ओवरसियरों ने कपड़े उतार कर इस कोयले और श्रम के पसीने से काली तथा गंदी हुई लाश को स्पंज से धोया।

जॉली की चटाई पर झुकते हुए डाक्टर ने फिर कहा, 'सिर में कोई चोट नहीं है और न सीने में ही। आह! टाँगें टूट गई हैं।'

उसने स्वयं बच्चे के कपड़े खोले, टोपी उतारी और एक नर्स की कार्यकुशलता के साथ जाकेट, ब्रिजिस और कमीज उतारी और एक कीड़े का सा उसका दुबला-पतला शरीर काली धूल और पीली मिट्टी से लिपटा हुआ निकला जिसमें कहीं-कहीं खून के धब्बे पड़े हुए थे। स्पंज के नीचे वह और भी दुबला होता प्रतीत होता था, उसका मांस इतना पीला और पारदर्शी था कि हड्डियाँ साफ झलक रही थीं। गुरबत और भुखमरी में पली आखिरी पीढ़ी के इस नमूने को देख कर दया आती थी। जब उसे साफ किया गया तो उसकी रानों में चोट नजर आई, उसके उजले चमड़े पर दो लाल चकत्ते से बन गये थे।

जॉली की बेहोशी टूटी और वह कराहने लगा। चटाई के एक कोने पर खड़ा, हाथ में पट्टी लिये, माहे उसकी ओर देख रहा था और बड़े-बड़े आँसू उसकी आँखों से झरने लगे।

'ओह! तुम पिता हो,' डाक्टर अपना सिर उठाते हुए बोला; 'रोने की कोई

बात नहीं, तुम देख रहे हो यह मरा नहीं है। रोने की अपेक्षा मुझे मदद करो।'

उसे दो साधारण घाव मिले, परन्तु दायें पाँव की हालत से उसे चिन्ता हुई, सम्भवतः इसे काट देना पड़ेगा।

इसी समय इंजीनियर निग्रील और डेनार्ट, जिन्हें सूचित कर दिया गया था, कप्तान रिचोम के साथ वहाँ पहुँचे। निग्रील ने पहले क्रुद्ध भाव से कप्तान का विवरण सुना। फिर बोला : हमेशा यही वाहियात तख्ते बैठाने का काम ? क्या मैंने सैकड़ों बार नहीं दुहराया कि वे लोग अपने साथियों को नीचे मार डालेंगे ? और वे जंगली, अगर उनको अच्छी तरह तख्ते बैठाने को मजबूर किया जाय तो हड़ताल करने की बात करते हैं। सबसे बुरा तो यह है कि कम्पनी को इनको मुआवजा देना होगा। मोशिये हनेब्यू बड़े खुश होंगे !

उसने चादर में लिपटी लाश के सामने चुपचाप खड़े डेनार्ट से पूछा, 'यह कौन है ?'

उसने उत्तर दिया, 'चिकोट। बेहतरीन काम करने वालों में से एक था। बेचारे के तीन बच्चे हैं।'

डाक्टर वरण्डरहेगन ने जॉली को तत्काल उसके माँ-बाप के पास हटाये जाने का आदेश दिया। छः बज चुका था। द्वाभा हो चली थी और उन्होंने लाश को हटाना भी बेहतर समझा। इंजीनियर ने बग्घी जोतने और स्ट्रेचर लाने का आदेश दिया। घायल बच्चे को स्ट्रेचर में लिटा दिया गया और चटाइयाँ तथा लाश गाड़ी में डाल दिये गये।

कुछ पुटर लड़कियाँ अब भी दरवाजे के पास खड़ी कुछ खनिकों से बातें कर रही थीं जो यहाँ आगे क्या होता है यह देखने को ठहरे हुए थे। जब कप्तान का कमरा खुला तो यह गोल चुप हो गया। तब एक नया जुलूस बनाया गया, सबसे आगे गाड़ी थी उसके बाद स्ट्रेचर और फिर लोगों की कतार। वे खान के अहाते से निकल कर धीरे-धीरे सड़क से बस्ती की ओर बढ़े। नवम्बर की पहली ठंढक ने मैदान को नम बना दिया था; और रात अब आसमान से गिरे ओलों की भाँति इस पर अधिकार जमा रही थी।

लौंतिये ने धीरे से माहे को सलाह दी कि वह कैथराइन को माहेदी को सूचित करने के लिए पहले भेज दे ताकि उस पर गिरने वाला प्रहार कुछ कम महसूस हो। घबराये हुए पिता ने सिर हिला कर स्वीकृति दी और चूँकि वे करीब पहुँच चुके थे इसलिए लड़की को दौड़ कर जाना पड़ा। परन्तु लाश की गाड़ी, वह जाना हुआ अशुभ बक्स, दीख चुका था। औरतें पागलों की तरह फुटपाथों पर दौड़ रही थीं, तीन और चार तो चिन्तित होकर बगैर टोपी पहने ही निकल आई थीं।

जल्दी ही वहाँ तीस, फिर पचास औरतें भयातुर इकट्ठा हो गईं। तब, कोई मर गया है? कौन रहा वह? लेवक्यू द्वारा बताई गई बात से पहले उन्हें कुछ ढाढ़स बँधा था लेकिन अब वे अपने प्रियजनों के प्रति अशुभ की कल्पना करने लगी थीं। एक आदमी थोड़े ही है, दस आदमी मरे हैं और उन्हें अब एक के बाद एक गाड़ी से लाया जा रहा है।

कैथराइन ने अपनी माँ को पूर्व कल्पना से चिन्तित पाया; और पहले हिचकिचाहट के साथ कहे गये शब्दों के बीच में माहेदी चिल्ला उठी: 'बाप मर गया है!'

लड़की ने जॉली की बात बताते हुए उसे समझाने का निष्फल प्रयत्न किया। उसकी सुने बगैर माहेदी आगे को दौड़ पड़ी थी और गाड़ी को देखकर, जो चर्च के पास से गुजर रही थी, वह बेहोश-सी होने लगी और पीली पड़ गई। औरतें दरवाजों पर भयभीत, चुपचाप खड़ी झाँक रही थीं और अन्य उसके पीछे-पीछे, डरती हुई जा रही थीं कि न जाने किस दरवाजे पर जाकर यह जुलूस रुकेगा।

गाड़ी निकल जाने पर उसके पीछे माहेदी ने माहे को देखा जो स्ट्रेचर के साथ-साथ आ रहा था। तब, जब उन्होंने स्ट्रेचर को उसके दरवाजे के पास रखा और उसने जॉली को टूटे हुये पाँव लिए जिन्दा पाया तो उसके अन्दर तत्काल ऐसी प्रतिक्रिया हुई कि वह गुस्से से काँपती हुई बोली: अब वे हमारे नन्हें-मुन्नों को कुचलने लगे है! दोनों पाव! हे भगवान! अब वे मुझसे इसका क्या करने को कहते है?

जॉली की परिचर्या के लिए उसके पीछे-पीछे आते हुए डाक्टर वरडरहेगन ने कहा, 'चुप रहो, तब, क्या तुम चाहती थी कि यह नीचे ही रह जाता?'

लेकिन माहेदी अधिक क्रोधित हो उठी। उधर अलजीरे, लीनोरी और हेनरी उसके इर्दगिर्द रो रहे थे। वह घायल बच्चे को ले जाने और डाक्टर को जो सामान चाहिए, देने में मदद देती हुई? भाग्य को कोस रही थी और कह रही थी कि वह कहाँ से इस अपंग को खिलाने के लिए धन पायेगी? बुड्ढा ही काफी नहीं था कि यह दुष्ट भी पाँव तोड़ लाया है? वह बराबर कोस रही थी और पड़ोस के घर से रोने की अधिक दर्दनाक चीखें सुनाई दे रही थीं; चिकोट की औरत और बच्चे उसकी लाश पर रो रहे थे। अब रात हो चली थी, थके हुए खनिक अपना सूप खा रहे थे और बस्ती में मरघट की शांति थी जो कभी-कभी इन चीखों से भंग हो जाती थी।

तीन हफ्ते गुजर गये। टाँग काटना जरूरी नहीं समझा गया। जॉली के दोनों पाँव बदस्तूर रहे लेकिन वह लँगड़ा हो गया। जाँच के बाद कम्पनी ने बमुश्किल

पचास फ्रैंक सहायता मंजूर की और वायदा भी किया कि ज्योंही वह अच्छा हो जायगा उसके लिए खान के ऊपर ही कोई काम ढूंढा जायगा। कुछ भी हो, उनका संकट बढ़ गया था क्योंकि पिता को इतना जबरदस्त सदमा पहुँचा कि वह तेज बुखार से सख्त बीमार हो गया।

गुरुवार से माहे खान मे जाने लगा था और अब रविवार आ गया था। साँझ को लॉतिये ने पहली दिसम्बर के नजदीक आने की बात कही और वह स्वयं इन विचारों में उलझा था कि क्या कम्पनी अपनी धमकी को कार्य रूप देगी? वे कैथराइन का इन्तजार करते हुए दस बजे तक बैठे रहे, उसे जरूर चवाल के साथ विलम्ब हो गया होगा। लेकिन वह नहीं लौटी। माहेदी ने गुस्से में बगैर कुछ कहे दरवाजे में सिटखनी लगा दी। लॉतिये को नींद नहीं आ रही थी। वह उस खाली बिस्तर के विचार पर, जिसमे सिर्फ अलजीरे थोड़ी सी जगह घेरे थी, बेचैनी महसूस कर रहा था।

दूसरे दिन सुबह भी वह गायब रही, और दोपहर बाद खान से लौटने पर माहे को मालूम हुआ कि चवाल कैथराइन को रोके हुए है। उसने कैथराइन के साथ ऐसा वाहियात घरेलू विवाद खड़ा किया था कि उसने उसके साथ ही रहने का फैसला किया। बुरा-भला न सुनना पडे इसलिए चवाल ने यकायक वोरो को छोड़कर जीन-बर्ट मे, डेन्यूलिन के यहाँ नौकरी करली थी और वह भी एक पुटर की तरह उसके साथ थी। नई गृहस्थी अब भी पिक्यूटी में, मोंटसू में ही रहती थी।

पहले माहे ने जाकर उस पुरुष से लड़ने और अपनी लड़की की लातों से पूजा कर उसे वापस लाने की बात कही। परन्तु बाद मे उसने विचार त्याग दिया। आखिर क्या फायदा? हमेशा ऐसा ही होता आया है, कोई किसी लड़की को अपनी मनपसंद पुरुष के साथ रहने से नहीं रोक सकता। अब यह ज्यादा बेहतर होगा कि चुपचाप शादी के लिए इन्तजार किया जाय। परन्तु माहेदी आसानी से बातों को मानने वाली नही थी।

'जब उसने चवाल को पसंद किया तो क्या मैंने उसे पीटा?' वह लॉतिये से चिल्ला कर बातें कर रही थी जो चुपचाप दुखी-सा बातें सुन रहा था। तुम्हीं मुझे बताओ। तुम इतने समझदार आदमी हो। हमने उसे स्वतंत्र छोड़ रखा था, क्या हमने उसे आजादी नहीं दे रखी थी? क्योंकि सबका ऐसा ही होता है। जब मेरी शादी हुई तो मेरे बच्चा होने वाला था लेकिन मैं अपने माँ-बाप के पास से नहीं भागी; और मैं कभी ऐसी गंदी चाल नहीं खेलती कि मैं जो रकम कमाऊं उसे ऐसे आदमी को दूँ जिसे उसकी जरुरत नहीं है। आह! यह बहुत ही घृणित काम है, तुम जानते हो। लोग बच्चों को पैदा करना ही छोड़ देंगे!'

और चूंकि लॉतिये अपना सिर हिलाकर उत्तर दे रहा था वह कहती गई; 'यह लड़की सन्ध्या को जहाँ चाहती जाती थी ! उसके मन में न जाने क्या था ? वह इन्तजार नहीं कर सकती थी कि हमें इस मुसीबत से निकलने में मदद कर दे और उसके बाद मैं उसकी शादी कर दूं ? परन्तु हम जरूरत से ज्यादा भले रहे हैं। हमें उसे घर से निकल कर उस व्यक्ति के साथ मजा लूटने जाने नहीं देना था। किसी को जरा शह दो तो वह सिर पर चढ़ जाता है।'

अलजीरे ने हामी भरते हुए सिर हिलाया। लीनोरी और हेनरी इस भावों के गुबार से भयभीत हो चुपचाप रोने लगे थे और माँ अपने दुर्भाग्य का विवरण दे रही थी; 'पहले जाचरे को शादी करनी पड़ी; फिर, बुड्ढा बोनेमॉ अपने पाँव मोड़े कुर्सी पर पड़ा है; और जॉली दस दिन तक कमरे से नहीं निकल सकता, उसकी हड्डियाँ बुरी तरह जुड़ी हैं; और अब, आखिरी प्रहार के रूप में कैथराइन की बच्ची भी एक आदमी के साथ चली गई है ! सारा परिवार छिन्न-भिन्न हो रहा है। खान में काम करने वाला सिर्फ बच्चों का बाप रह गया है। एस्टीली को छोड़कर सिर्फ तीन फ्रैंक में कैसे सात प्राणियों का काम चलेगा ? अच्छा हो हम सभी एक साथ जाकर नहर में डूब मरें।'

माहे ने धीमे स्वर में कहा, 'इस तरह अपने आपको चिन्ता में डालने से कोई लाभ थोड़े ही होगा, शायद अभी हम किनारे तक नहीं पहुँचे है।'

लॉतिये ने, जो एकटक फर्श की ओर ताक रहा था, अपना सिर उठाया और भविष्य की कल्पना में डूबी आँखों से निहारते हुए बोला—

'आह ! यह समय है ! यह समय है !'

चौथा भाग

१

उस सोमवार को हनेब्यू ने ग्रीगोरे दम्पत्ति और उनकी पुत्री सीसिल को दोपहर के भोजन की दावत दी थी । उन लोगों ने कार्यक्रम बनाया था : मेज से उठने पर पाल निग्रील महिलाओं को सेंट टामस खान ले जायेगा जिसमें बहुत ज्यादा मशीनरी लगाई गई थी। लेकिन वह तो एक बहाना मात्र था; यह निमंत्रण मदाम हनेब्यू की ओर से सीसिल और पाल की शादी जल्द तय करने के उद्देश्य से दिया गया था ।

यकायक उस सोमवार को, प्रातःकाल चार बजे हड़ताल हो गई । जब पहली दिसम्बर को, कम्पनी ने नयी वेतन प्रणाली लागू की थी, खनक शांत रहे । पखवारे के अन्त में, किसी एक ने भी, वेतन के दिन, जरा सा विरोध नही किया । हर व्यक्ति, ऊपर मैनेजर से लेकर नीचे ओवरसीयर तक, सब यही समझे कि मूल्य की सूची मान ली गई है और सुबह संघर्ष की इस घोषणा से उन्हे बड़ा आश्चर्य हुआ ! इसमे एकता ऐसी चतुरता से लाई गई थी कि इससे किसी उत्साही नेतृत्व का आभास मिलता था ।

पाँच बजे डेनार्ट ने मोशिये हनेब्यू को यह सूचित करने के लिए जगाया कि एक भी व्यक्ति वोरो खान में नहीं गया है । ड्यू सेंट-क्वारेंट की बस्ती, जहाँ से वह गुजरा, खिड़कियाँ और दरवाजे बन्द कर गहरी नींद में सोई थी । ज्यो ही मैनेजर बिस्तर से उतरा, उसकी आँखें अब भी नींद से भारी थीं, वह घबरा सा गया । हर पन्द्रह मिनट बाद संदेशवाहक आने लगा और उसकी मेज पर चिट्ठियों का अम्बार-सा लग गया । पहले तो उसे आशा थी कि विद्रोह वोरो तक ही सीमित होगा; लेकिन हर क्षण गंभीर सूचनायें आने लगीं । मिराओ, क्रेवेक्योर

मेंडेलेन, जहाँ सिर्फ सईस आये थे, विक्टियोरे और फ्यूट्री-कॅटल, दो पूर्ण अनुशासित खानों में जहाँ आदमी एक तिहाई घटा दिये गए थे, सब में हड़ताल थी। अकेले सेंट-टामस में पूरी उपस्थिति थी और वह आन्दोलन से अलग प्रतीत होती थी। नौ बजे तक वह सूचनायें बाहर भेजने को लिखवाता रहा। हर दिशा में उसने तार भेजे; लिली के प्रीफेक्ट को, कम्पनी के डाइरेक्टरों को, अधिकारियों को चेतावनी देते हुए और आदेश माँगते हुए। उसने निग्रोल को पड़ोसी खानों में गश्त कर आवश्यक जानकारी के लिए भेज दिया था।

यकायक उसे दावत का स्मरण हो आया और वह कोचवान को ग्रीगोरे के पास यह कहला भेजने वाला था कि दावत स्थगित कर दी गई है परन्तु एक हिचक और आत्मविश्वास की कमी ने उसे रोका—वह यही व्यक्ति था जिसने चन्द संक्षिप्त वाक्यों में अभी-अभी लड़ाई के मैदान के लिए सैनिक तैयारियाँ कर डाली थीं। वह ऊपर मदाम हनेब्यू के पास चला गया जो उस समय अपने ड्रेसिंग रूम मे अपनी नौकारानी से बाल बनवा रही थी।

जब उसने मदाम को बताया तो वह बोली, 'आह! वे लोग हड़ताल कर रहे हैं, लेकिन इसमे हमे क्या करना है? हम तो खाना बन्द नहीं करेंगे, मैं सोचती हूँ?'

वह जिद्दी औरत थी, उसे यह बताना व्यर्थ था कि दावत में खलल पड़ेगा, और सेंट-टामस जाना सम्भव न हो सकेगा। उसे हर चीज का जवाब मिल गया। क्यों भोजन छोड़ा जाय जो कि तैयार हो रहा है? और जहाँ तक खान जाने का ताल्लुक है, अगर चलना वाकई खतरनाक हुआ तो उसे बाद में छोड़ा भी जा सकता है।

जब नौकरानी बाहर चली गई तो वह बोली, 'अलावा इसके, तुम जानते हो, मैं इन भले लोगों से मिलने को उत्सुक हूँ। इस शादी का तुम्हारे खनिकों की बेवकूफियों से ज्यादा असर तुम पर पड़ने वाला है। मैं इसे सम्पन्न कर लेना चाहती हूँ, मेरी बात काटना नहीं।'

हल्के कंपन से उसने मदाम की ओर देखा और इस व्यक्ति के अनुशासित, रोबीले चेहरे में उसके दिल के घावों का गुप्त शोक उभर आया। अधेड़ उम्र की वह औरत अपनी नंगी बाहों के साथ, अब भी अपनी छाती में पतझड़ से हिलने वाले पत्तों की तरह बड़े-बड़े उरोज लिए काम-वासना से भरी रहती थी। एक क्षण को उसकी पाशविक इच्छा जागी कि वह उसे पकड़ कर अपना सिर उसके उरोजों के बीच में डाल दे, जिन्हें वह अपने इस प्राइवेट कमरे में प्रदर्शित कर रही थी। यहाँ एक कामुक औरत का व्यक्तिगत ऐश आराम था और उसके इर्द-गिर्द मुश्क

की तीव्र सुगंध फैली हुई थी, लेकिन वह फिर रुक गया, क्योंकि पिछले दस वर्षों से वे अलग-अलग कमरों में रहते थे।

'अच्छी बात है!' उसने कमरे से निकलते हुए कहा, 'कोई परिवर्तन न करना।'

एम० हनेब्यू आर्डनेस में पैदा हुआ था। अपना प्रारंभिक जीवन उसे पेरिस की सड़कों में फेंक दिये गये एक अनाथ बालक की तरह बड़े कष्ट और मुसीबत में बिताना पड़ा था। इकोले-डी-माइन्स में बड़े कष्ट से अध्ययन के बाद, चौबीस वर्ष की उम्र में सेंट बारवे खान के इंजिनियर के रूप में वह ग्रेण्ड कोम्बे चला गया। वही उसने शादी की और उसके सौभाग्य से लड़की क्राप्स-डी-माइन्स के मालिकों के परिवार की, एरेस मे कताई मिल के एक धनी मालिक की बिटिया थी। पन्द्रह वर्षों तक वे उसी छोटे से कस्बे मे रहे और इस गृहस्थी की एक-स्वरता को भंग करने वाली एक भी घटना नहीं हुई और न कोई बच्चा ही उन लोगों के पैदा हुआ। एक बढ़ता हुआ मानसिक असंतोष मदाम हनेब्यू को उससे अलग कर रहा था क्योंकि वह धनी परिवार मे पली थी और इस पति से असंतुष्ट थी कि वह बड़ी मुश्किल से इतनी कम तनख्वाह कमा पाता है कि वह अपने स्कूली जीवन से पाली गई एक भी इच्छा पूरी न कर पाती। वह बेहद ईमानदार व्यक्ति था और हमेशा आगे की सोचता हुआ अपने कर्तव्य पर सिपाही की भाँति डटा रहता था। विचारों में सामंजस्य न होने से उनका आपसी मनो-मालिन्य बढ़ता ही चला गया। इसमे संदेह नहीं कि वह अपनी पत्नी से प्रेम करता था परन्तु वह लालच भरी कामुक औरत थी। वे एक दूसरे से परितृप्त-से दिल मे दर्द दबाये, अलग-अलग सोने लगे थे। उस समय से मदाम ने एक प्रेमी बना लिया था जिसकी जानकारी उसे न थी। अन्त मे उसने पेरिस मे एक पद पा लेने के बाद पास-डी-केलेस छोड़ दिया। लेकिन पेरिस ने उनके बिलगाव को और भी मजबूत बना दिया। वह पेरिस, जिसकी कल्पना वह होश आने के बाद से किया करती थी, वहाँ उसने अपनी बस्ती की रीति-नीति एक ही सप्ताह मे धो डाली। वह एकदम फेशन की पुतली बन गई और उसने अपने को उस जमाने की ऐय्याशी मे डुबो लिया। दस वर्ष, जो उसने वहाँ बिताये, बड़े भोग-विलास मे गुजारे। एक व्यक्ति के साथ उसके अनुचित सम्बन्ध थे और बाद मे प्रेमी द्वारा उसका परित्याग किये जाने से वह मृतवत् हो गई। इस बार उसका पति अपने को अनभिज्ञ न रख सका और कुछ घृणित दृश्यों के बाद उसने उस औरत का, जिसने उसकी सुख-शांति नष्ट कर डाली थी, धोखा छोड़ दिया। इस सम्बन्ध-त्याग के बाद, जब उसने देखा कि वह दुख से बीमार हो गई है, और चूंकि वह

मोंटसू खानों के व्यवस्थापक का पद स्वीकार कर चुका था, उसे अब भी उम्मीद थी कि सुनसान काले क्षेत्र में पहुँच कर वह सुधर जायगी।

इस गृहस्थी के बीच, जब से वे मोंटसू में रहने थे, उनकी शादी के प्रारंभिक जीवन की कटुता लौट आई थी। पहले पहल इस शांत और सुनसान मैदानी क्षेत्र में उसने सान्त्वना का अहसास किया, वह इसमें ऐसी लिप्त हो गई मानो उसका संसार से कोई वास्ता न हो। उसका दिल टूट गया था और उसे जीवन नीरस लगने लगा था। तब, इस उदासीनता के बीच जीवन के प्रति आसक्ति ने एक बार फिर जोर मारा और छः महीने तक वह मालिकों द्वारा दिये गये बँगले को सजाने और उसमें अपनी अभिरुचि के फर्नीचर इत्यादि की व्यवस्था में अपने को भुलाये रही। उसने अपने मकान को हर कलात्मक वस्तु से सजाया था जिसकी चर्चा लिली तक थी। अब वह देहाती इलाका उसे काटने दौड़ता था, अनन्त तक फैले हुए ऊबड़-खाबड़ खेत, वह काली सड़कें, जिन पर पेड़ों का नामोनिशान नहीं था, उसके किनारे कीड़े-मकोड़ों की तरह बसी हुई आबादी उसे वाहियात और डरावनी लगती थी। कारावास की शिकायतें होने लगी। उसे अपने खाविंद से शिकायत थी कि उसने सिर्फ चालीस हजार फ्रैंक के लिये, जो कि सिर्फ गृहस्थी चलाने भर को ही पर्याप्त होते है, उसकी कुरबानी दे दी है। क्यों वह दूसरों का अनुकरण नहीं करता, अपने लिये भी एक हिस्सा माँगे, कुछ शेयर ले ले, अन्त में कुछ न कुछ हासिल कर सफल बने? और वह बराबर एक उनराधिकारिणी की निर्दयता से, जो उसके लिए अपनी दौलत लाई हो, उस पर जोर डालती रहती थी। वह हमेशा इन्कार करता और व्यवहार कुशल व्यक्ति की भाँति उसे भुलावा देता रहता था। पत्नी के प्रति उसकी आसक्ति बढ़ चली थी,। उसकी यह इच्छा बड़ी तीव्र थी जो उम्र के साथ-साथ बढ़ती है। उसे कभी एक प्रेमी के तरीके से उसका प्यार नही मिला था। वह हमेशा काल्पनिक विचारो से सताया सा रहता था कि जैसे उसने दूसरों को अपनाया है वह एक बार पूर्णरूप से उसकी हो जाय। प्रत्येक सुबह वह मनसूबे बाँधता कि सन्ध्या को वह उसे भोगेगा; तब, जब वह अपनी प्रेमशून्य नजरो से उसकी ओर देखती और वह महसूस करता कि वह किसी भी रूप में उसे नहीं चाहती तो वह उसका हाथ पकड़ने तक का साहस नही कर पाता था। यह लाइलाज वेदना थी जो उसके स्वभाव की कठोरता के नीचे छिपी थी, गुप्त व्यथा की नाजुक किस्म की वह वेदना थी जो पारिवारिक सुख के अभाव में होती है। छः महीनों के आखीर में जब घर हर तरह से सज गया तो मदान हनेब्यू अब उसमें व्यस्त नहीं रह पाती थी, उसे उकताहट महसूस होने लगी, मृत्युपर्यन्त देश निकाला भोगने वाले एक अभियुक्त की भाँति और वह कहा करती थी कि इसी में मरने में उसे सुख होगा।

तभी, पाल निग्रील मोंटसू आया। उसकी माँ, जो एक प्रान्तीय कप्तान की विधवा थी, थोड़ी सी आमदनी पर एविगनोन में दिन काट रही थी और रूखी-सूखी रोटी पर गुजारा चलाकर उसने उसे इकोले पोलीटेक्नीक तक पढ़ाया था। उसके चाचा एम० हनेब्यू ने, उसे बोरो में इंजीनियर की नौकरी दिला दी थी और वह पारिवार का ही एक सदस्य समझा जाता था। वहाँ उसे एक कमरा मिल गया था, उसका खाना वहीं होता था, वह रहता भी वहीं था और इस तरह वह अपनी तीन हजार फ्रेंक तनख्वाह का आधा अपनी माँ को भेज पाता था। इस मेहरबानी को छिपाने के लिये एम० हनेब्यू खान के इंजीनियरों के लिये रिजर्व छोटे से एक बंगले में नवयुवक को कितनी परेशानी उठानी पड़ती इसकी चर्चा किया करता था। मदाम हनेब्यू ने एक मेहरबान चाची की तरह उसे अपनाया और उसकी हर सुविधा का ख्याल रखने लगी। प्रारंभिक महीनों में छोटी-छोटी बातों मे सलाह देकर वह मातृभाव का परिचय देती थी। लेकिन वह बाद में फिसल पड़ी और वह उसके व्यक्तिगत जीवन में आ गया। यह छोकरा इतनी कम उम्र का होने के बावजूद, इतना व्यावहारिक और चालाक था कि प्रेम के बारे मे एक दार्शनिक की भाँति सिद्धान्त बघारता हुआ 'निराशावाद' की प्रफुल्लता से उसका मनोरंजन किया करता था। एक संध्या को जैसा कि स्वाभाविक था उसने मदाम को अपनी बाँहों में पाया और वह मेहरबानी के रूप मे आत्मसमर्पण का भाव प्रदर्शित करते हुए बोली कि उसका दिल अब टूट चुका है, वह सिर्फ उसकी मित्र रहना चाहती है। वास्तव मे उसे ईर्ष्या नहीं थी; वह उससे पुटरों के बारे में मजाक करती थी, जिन्हे वह घिनौनी कहा करता था; और वह उदास सी हो जाती थी क्योंकि उसमें वह साहस नहीं था कि वह उसको विस्तारपूर्वक समझाये। फिर वह उसकी शादी के विचार मे वह गई; वह आत्मत्याग कर उसके लिए एक धनी लड़की खोजने का स्वप्न देखा करती थी। उनके सम्बन्ध एक खेल, एक मनोरंजन के रूप में बने रहे और इसमें उसे दुनिया से ऊबी एक आलसी औरत की आखिरी आत्मतृप्ति मिलती थी।

दो वर्ष गुजर गए। एक रात एम० हनेब्यू ने किसी को नंगे पाँव अपने कमरे के पास से गुजरते सुना तो उसे संदेह हुआ। लेकिन इस नयी कल्पना का उसके मन ने विरोध किया। उसी के घर मे, माँ और बेटे के बीच! और जब कि एक दिन पहले उसकी औरत सीसिल ग्रीगोरे के साथ उसके भतीजे की शादी करने की अपनी इच्छा जाहिर कर चुकी थी। वह इस शादी के मामले में इतनी व्यस्त और व्यग्र थी कि उसे अपनी इस कल्पना पर स्वयं शर्म महसूस हुई। उसने इस नवयुवक के प्रति आभार का अहसास किया क्योंकि उसके आने के बाद से घर में

कम उदासी रहती थी।

जब वह ड्रेसिंग के कमरे से बाहर निकला तो उसने पाल निग्रील को, जो अभी-अभी लौटा था, दालान में पाया। वह इस हड़ताल की कहानी से बड़ा आश्चर्यान्वित प्रतीत होता था।

'क्या हाल है?' चाचा ने पूछा।

'मैं बस्तियों में घूम आया हूं। वे लोग बड़े समझदार प्रतीत होते हैं। मैं सोचता हूं कि वे पहले एक प्रतिनिधिमंडल आपके पास भेजेंगे।'

लेकिन इसी क्षण मदाम हनेब्यू ने पहिली मंजिल से पुकारा : 'क्या तुम हो, पाल? आओ, ऊपर आ जाओ, और मुझे खबर बताओ। बड़ा आश्चर्य है कि ये लोग जो इतने खुशहाल है इस प्रकार की हरकत कर बैठे है!'

और मैनेजर को अधिक जानकारी पाने से वंचित रहना पड़ा क्योंकि उसके संदेशवाहक को उसकी पत्नी ने बुला लिया था। वह आकर अपनी डेस्क के पास पास बैठ गया, जिसमें ताजी डाक का एक नया पैकेट पड़ा था।

ग्यारह बजे ग्रीगोरे परिवार पहुंच गया। उन्हें आश्चर्य हो रहा था कि सन्तरी के रूप में पहरा देने वाले हरकारे हिपोलेट ने सड़क की दोनों ओर चिन्तातुर निगाहें डालते हुए उन्हें जल्दी से अन्दर धकेल दिया था। ड्राइंग रूम में पर्दे पड़े हुए थे और उन्हें तत्काल अध्ययन के कमरे में ले जाया गया, जहाँ एम० हनेब्यू ने उनके इस प्रकार के स्वागत के लिए क्षमा मांगी कि ड्राइंग रूम सड़क से दिखाई देता है और उत्तेजना दिखाना उचित नहीं जँचता।

'क्या आप लोग नहीं जानते?' उन्हें आश्चर्य में पड़े देख उसने पूछा।

जब एम० ग्रीगोरे ने सुना कि आखिर हड़ताल हो ही गई है तो उसने अपने शान्त तरीके से कंधे बिचकाये। वाह! कुछ होने वाला नहीं है, लोग ईमानदार हैं। ठोढी हिलाकर मदाम ग्रीगोरे ने खनिकों के सदा-सर्वदा से अधिकार त्याग पर पूर्ण विश्वास जाहिर किया, जब कि सीसिल, जो उस दिन बहुत खुश नजर आती थी वह महसूस कर रही थी कि वह अपनी नयी पोशाक में भली लग रही है। 'हड़ताल' शब्द पर यह मुस्कराई और उसे बस्तियों में जाकर चीजें बाँटने की याद आई।

मदाम हनेब्यू भी काले सिल्क की पोशाक में वहाँ पहुँच गई। उसके पीछे-पीछे निग्रील था।

दरवाजे पर ही वह बोली, 'आह! यह गुस्सा दिलाने की बात नहीं है! मानो वे लोग इन्तजार ही न कर सकते थे। तुम जानते हो पाल हमें सैंट-टामस ले जाने से इन्कार कर रहा है।'

'हम यहीं रुक जायेंगे,' एम० ग्रीगोरे ने सज्जनता दिखाते हुए कहा। 'हमें कोई तकलीफ नहीं होगी।'

पाल ने सीसिल और मदाम ग्रीगोरे को सलाम करके ही सन्तोष मान लिया था। उसकी इस हरकत से चाची नाराज हुई और उसने आँखों के इशारे से नवयुवक को लड़की के पास जाने को कहा। जब वे दोनों बातें करते हुए हँसने लगे तो उसने मातृवत् निगाह से उन्हें देख सुख माना।

एम० हनेब्यू ने आई हुई डाक देखकर कुछ संक्षिप्त उत्तर लिखाये। वे उसके पास ही बातें कर रहे थे। उसकी औरत बता रही थी कि उसने इस कमरे की ओर ध्यान नहीं दिया है, जिसमें वस्तुतः पुराना रंग उड़ा हुआ लाल-लाल कागज, महोगनी का भारी फर्नीचर और लगातार प्रयोग से खरोंच पड़े हुए कार्ड-बोर्ड के बक्स रखे थे। इस प्रकार पैंतालीस मिनट का समय बीत जाने पर वे खाने की टेबल पर बैठने ही वाले थे कि हरकारे ने डेन्यूलिन के आने की सूचना दी। उसने उत्तेजनात्मक ढंग से प्रवेश कर मदाम हनेब्यू का अभिवादन किया।

ग्रीगोरे परिवार को यहाँ देख वह बोला, 'ओह! आप यहाँ है?' और वह धीरे से मैनेजर से बोला :

'तब, वह बात हो ही गई न? मैंने अभी-अभी अपने इंजीनियर से सुना है। मेरे यहाँ, सभी मजदूर सुबह खान में चले गए थे। लेकिन यह फैल भी सकती है। मुझे शान्ति नहीं है। तुम्हारा क्या हाल है?'

वह घोड़े पर आया था और उसकी लम्बी-चौड़ी बातें, उसकी उत्साहपूर्ण मुद्राओं से, जिससे वह किसी घुड़सवार सेना के रिटायर्ड अफसर की भाँति लगता था, कोई नहीं कह सकता था कि वह चिन्तित है।

एम० हनेब्यू उसे महत्वपूर्ण स्थिति के बारे में बताने ही जा रहा था कि हिपोलेट ने भोजन के कमरे का दरवाजा खोला। तब उसने बात रोक कर कहा, 'हमारे साथ भोजन करो। मैं तुम्हें उसके बाद बहुत सी बातें बताऊँगा।'

'हाँ, जैसी आपकी मर्जी,' डेन्यूलिन ने उत्तर दिया। वह विचारों में इतना डूबा था कि उसने वगैर किसी रस्म-अदायगी के निमंत्रण स्वीकार कर लिया।

फिर उसे अपनी अभद्रता की याद आई और मदाम हनेब्यू की तरफ मुखातिब हो माफी माँगने लगा। वह बहुत प्रसन्न थी। जब उसने सातवीं प्लेट भी लगा ली तब उसने अतिथियों को बैठाया; मदाम ग्रीगोरी और सीसिल को अपने पति के पास, फिर एम० ग्रीगोरे और डेन्यूलिन को अपने दायें-बायें और तब पाल को लड़की और उसके पिता के बीच में। ज्योंही उन्होंने प्लेटों पर हमला किया, वह मुस्करा कर बोली, 'आप लोग मुझे माफ करेंगे; मैं आप लोगों को धोंधा खिलाना

चाहती हूँ। सोमवार को, आप लोग जानते ही हैं कि मार्सेनीज में घोंघे आये थे और मैंने नौकरानी को बग्घी से भेजा, लेकिन वह डर रही थी कि कहीं उस पर पत्थर न पड़ें—'

उन सबों ने कहकहे लगाये और उसकी बात रुक गई। उन्हें यह कहानी बड़ी दिलचस्प मालूम पड़ रही थी।

एम० ह्यूनेब्यू ने खिड़की की ओर देखकर, जहाँ से सड़क नजर आती थी, चिन्तित स्वर में कहा, 'चुप'। हमें सबको बताने की जरूरत नहीं कि आज सुबह हमारे यहाँ दावत थी।'

'अच्छा, यह एक मसाला लगा माँस का टुकड़ा है जिसे वे कभी नहीं पा सकते,' एम० ग्रीगोरे बोला।

फिर कहकहे शुरू हो गए, लेकिन बड़े संयम के साथ। इस सज्जित कमरे में सभी अतिथि आराम से बैठ गए। साइडबोर्डों के शीशों के पीछे चाँदी का सामान सजाया हुआ था। कमरे में गर्मी थी लेकिन बाहर दिसम्बर की तीखी, उत्तर-पूर्वी हवा चल रही थी।

निग्रोन्त ने ग्रीगोरे दम्पत्ति को डरा कर आनन्द लेने के विचार से कहा, 'मान लो हमें पर्दे खींच लेने पड़ें।'

नौकरानी ने, जो हरकारे को मदद कर रही थी, इसे आदेश समझ कर पर्दों में से एक को जाकर लगा दिया। इससे खूब ही मजाक हुआ; कोई भी गिलास या प्लेट सावधानी से न रखे जाने पर टूटने का खतरा था; हर एक प्लेट ऐसे फेंकी गई मानो एक विजित शहर को लूट-मार के बाद त्याग दिया गया हो; और इस जबरदस्ती आनन्द मनाने के पीछे एक खास भय था जो उन्हें जबरन सड़क की ओर ताकने को मजबूर कर रहा था मानो भूखमरों का एक झुंड बाहर से मेज की ओर ताक रहा हो।

अंडो के बाद मछली परोसी गई। बातचीत की धारा औद्योगिक संकट की ओर बदल गई जो पिछले अठारह महीनों में और भी बढ़ चला था।

'यह अनिवार्य था,' डेन्यूलिन बोला, 'पिछले चन्द वर्षों में जरूरत से ज्यादा समृद्धि से यह दिन आना लाजिमी था। जरा उस विशाल पूंजी की सोचो जो डूब गई है, रेलवे, बन्दरगाह और नहरें, सब धन-दौलत पागलपन से सट्टे में दफना दी गयी है। हम लोगों के बीच चीनी मिलें खोली गई है, मानो डिपार्टमेन्ट चुकन्दर की तीन फसलों को खपा सकता हो। आज मुद्रा की कमी है और हमें लगाये गए लाखों के सूद को पाने का इन्तजार करना पड़ेगा इसलिए यह एक घातक घुटन और कारोबार का एक आखिरी बार गला घोंट दिया जाना है।'

एम० हनेब्यू को इस विचारधारा से मतभेद था परन्तु वह इससे सहमत था कि अच्छे वर्षों ने आदमी को बिगाड़ डाला है।

'जब मैं सोचता हूँ,' वह बोला, 'कि हमारी खानों के ये लड़के छः फ्रैंक एक दिन का कमाते थे, जो कि आज की उनकी कमाई का दूना है, वे अच्छी तरह रहते भी थे, अब उनकी आदतें भी खर्चीली हो गई है। आज, यह स्वाभाविक है कि उन्हें अपनी पुरानी आदतों पर वापस जाना कठिन प्रतीत होता है।'

'मोशिये ग्रीगोरे!' मदाम हनेब्यू ने बीच मे टोका, 'मेरा आग्रह है .थोड़ी सी मछली ले लो। बड़ी लज्जतदार है, क्यों है न ?'

मैनेजर ने अपनी बात जारी रखी--'लेकिन, वास्तव मे देखा जाय तो यह हमारी गलती है ? हम भी निर्दयतापूर्वक मारे गए है। जब से कारखाने एक के बाद एक बंद हुए हैं हमें अपना स्टाक साफ करने मे भारी दिक्कत पेश आ रही है, और माँग की निरंतर घटती देखते हुए हमे अपनी कीमत घटाने को मजबूर होना पड़ा है। वस्तुस्थिति तो यह है, परन्तु लोग इसे नहीं समझते।'

वहाँ चुप्पी छा गई। हरकारे ने भुना हुआ चिड़िया का मांस प्रस्तुत किया और नौकरानी ने अतिथियों के लिए चेम्बरटिन (एक प्रकार की शराब) ढालनी शुरू की।

'भारत में अकाल पड़ा है,' डेन्यूलिन ने धीमी आवाज मे कहना शुरू किया मानो वह अपने आप से बोल रहा हो : 'अमेरिका ने इस्पात के आर्डर देना बंद कर हमारे भट्टों पर भारी प्रहार किया है। हर चीज साथ ही आई है, एक हल्का सा धक्का विश्व को हिला देने के लिए काफी है, और इस साम्राज्य, को भी जिसे औद्योगीकरण की होड़ का इतना फख्र था !'

उसने चिड़िया की टाँग चबानी शुरू की। तब, अपनी आवाज ऊँची करते हुए बोला—'सब से बुरा तो कीमत घटाना रहा, हमे, लाजमी है कि ज्यादा उत्पापादन करें अन्यथा इस कटौती का प्रभाव वेतन पर पड़ेगा और मजदूर ठीक ही कहता है कि उसे नुकसान भरना पड़ रहा है।'

इस स्पष्टोक्ति में जो गलती स्वीकार की गई उससे विवाद उत्पन्न हुआ। महिलायें जरा भी दिलचस्पी नहीं ले रही थी। अलावा इसके भूख की प्रथम अभिरुचि में सभी अपनी प्लेटो में जुटे हुए थे। जब हरकारा वापस आया तो वह कुछ कहना था लेकिन कहते हुए हिचक रहा था।

'क्या बात है ?' एम० हेनेब्यू ने पूछा। 'अगर कोई चिट्ठी आई है, तो मुझे दे दो। मैं उत्तरों के इन्तजार में हूँ।'

'नहीं, जनाब। मोशिये डेनार्ट बारादरी में खड़े हैं। लेकिन वे आपके भोजन के समय खलल डालना नहीं चाहते।'

मैनेजर ने बड़े कप्तान को अन्दर बुलाने को कहा। वह आकर टेबुल से कुछ दूर सीधा खड़ा हो गया, वह क्या खबर लाया है यह जानने को उत्सुक सभी उसकी ओर देखने को मुड़े : 'बस्ती में पूरी शांति है। सिर्फ, अब एक प्रतिनिधि मंडल भेजने का निश्चय किया गया है। यह, शायद, कुछ ही मिनटों में यहाँ पहुँचेगा।'

'बहुत अच्छा, धन्यवाद' एम० हनेब्यू ने कहा। 'मैं चाहता हूँ सुबह और शाम रिपोर्ट मिले, समझे।'

डेनार्ट के चले जाने पर वे फिर मजाक करने लगे और जल्दी-जल्दी रूमी सलाद पर हाथ साफ करने लगे और कह रहे थे कि अगर उन्हें इसे खत्म करना है तो एक क्षण भी नहीं खोना चाहिए। उस समय तो हँसी का फ़व्वारा सा फूट पड़ा जब कि निग्रील ने नौकरानी से रोटी माँगी और उसने इस कदर डरे हुए ढंग से 'अच्छा जनाब!' कह कर जवाब दिया मानो उसके पीछे हत्या और बलात्कार के लिए एक फौज खड़ी हो।

मदाम हनेब्यू ने संतोषजनक ढंग से कहा, 'तुम बोल सकती हो, वे अभी यहाँ नहीं पहुँचे है।'

मैनेजर, जिसे अब खत मिल चुके थे, एक को जोरों से पढ़ना चाहता था। यह पेरी की ओर से आया था। उसने विनम्र वाक्यों में इस बात की नोटिस दी थी कि उसके साथ बुरा सलूक न हो इसलिए वह भी अपने साथियों के साथ हड़-ताल करने को मजबूर है और उसने यह भी लिखा था कि वह प्रतिनिधिमंडल में भाग लेने से इन्कार करने में असमर्थ है गोकि वह इस कदम का विरोधी है।

'काम की आजादी के लिए इतना कुछ,' एम० हनेब्यू ने अपनी राय व्यक्त की।

तब वे लोग हड़ताल की बात करने लगे और उससे उसकी राय पूछने लगे : 'ओह!' उसने उत्तर दिया, 'हमने पहले भी बहुत सी देखी हैं। एक सप्ताह या ज्यादा से ज्यादा एक पखवारे की, जैसा कि पिछली बार हुआ था, बेकारी रहेगी। वे होटलों में जाकर कीचड़ में लुढ़केंगे और फिर, जब उन्हें भूख लगेगी वे खानों में वापस चले जायंगे।'

डेन्यूलिन ने अपना सिर हिलाया—'मुझे यकीन नहीं होता, इस बार वे अच्छी तरह संगठित मालूम होते हैं। क्या उनका प्राविडेन्ट फंड नहीं है?'

'हाँ, मुश्किल से तीन हजार फ्रैंक। तुम क्या समझते हो उससे वे चला ले

जायंगे ? मुझे संदेह है एक व्यक्ति जिसका नाम एटीन लॉतिये है, उनका नेता है। वह अच्छा कामगार है; और मुझे उसका सार्टिफिकेट वापस करने का दुख होगा जैसा कि हमें उस मशहूर रसेन्योर के साथ करना पड़ा, जो अब भी अपने विचारों और बियर से वोरो के खिलाफ विष-वमन करता है। कोई बात नहीं, एक सप्ताह में आधे लोग नीचे काम पर चले जायंगे और एक पखवारे मे दस हजार मजदूर नीचे होंगे।'

उसे पूरा विश्वास था। उसकी एक मात्र परेशानी अपनी संभाव्य बदनामी के सम्बन्ध में थी, अगर डाइरेक्टरों ने हड़ताल की जिम्मेदारी उस पर डाली तो। कुछ समय तक उसने महसूस किया कि उसकी प्रतिष्ठा घट रही है। रूसी सलाद का चम्मच भरा हुआ छोड़कर वह पेरिस से आई हुई डाक को दुबारा पढ़ने लगा और प्रत्येक शब्द का रहस्य जानने की कोशिश करने लगा। उसके अतिथियों ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया, भोजन एक सैनिक भोजन बन रहा था ऐसा प्रतीत होता था कि वह लड़ाई के मैदान मे पहली गोली चलने से पेश्तर किया जा रहा है।

तब महिलायें भी बहस मे शामिल हो गईं। मदाम ग्रीगोरे ने मजदूरों के प्रति, जो भूख से परेशान होंगे, दया जाहिर की और सीमिल रोटी और गोश्त बाँटने योजनायें बनाने लगी थी। लेकिन मदाम हनेब्यू मोंटसू के कुलियों की अत्यधिक की गरीबी की बात पर आश्चर्य प्रकट कर रही थी। क्या वे भाग्यशाली नहीं हैं ? वह लोग जिनकी कम्पनी के खर्च मे रहने, ईंधन और देखभाल की समस्या हल होती है ! इस वर्ग के प्रति उदासीनता दिखाते हुए वह सिर्फ उतना ही जानती थी जितना उसने सीखा था और जिसमे उसने पेरिस से आये हुए मेहमानों को आश्चर्य में डाल दिया था। अन्त मे वह उन लोगों की बेवफाई पर कुपित थी।

निग्रोल, इस बीच बराबर ग्रीगोरे दम्पत्ति को भयभीत कर रहा था। सीसिल उसे नाखुश करना नहीं चाहती थी और उसमे शादी के लिए बिल्कुल तैयार थी बशर्ते उसकी चाची को वह मान्य हो, परन्तु वह कोई विशेष उत्सुकता नहीं दिखा रहा था। एक अनुभवी युवक की भांति जो, जैसा कि वह कहता था, अब आसानी मे भावनाओं मे बहता नहीं है। वह अपने को रिपब्लिकन कहता था परन्तु उसकी यह विचारधारा उसे अपने मजदूरों के साथ सख्ती करने या महिलाओं के बीच उनकी खिल्ली उड़ाने मे नहीं रोकती थी।

'न मैं अपने चाचा की तरह बहुत आशावादी ही हूँ,' वह यह बोला, 'और न मुझे यही डर है कि गंभीर गड़बड़ी होगी। इसलिए मैं आपको सलाह देता हूँ मोशिये ग्रीगोरे कि पायोलेन मे ताला डाल दो। वे आपको लूट सकते हैं।'

तब तक अपनी मुस्कान कायम रखते हुए, जो उसके अच्छे स्वभाव की परिचायक थी, ग्रीगोरे खनिकों के प्रति अपनी पितृवत् भावनायें व्यक्त करते हुए अपनी पत्नी से भी आगे बढ़ गया था।

'मुझे लूटेंगे !' स्तब्ध सा वह चिल्लाया 'परन्तु मुझे क्यों लूटेंगे ?'

'क्या आप मोंटपू के शेयर होल्डर नहीं है ? आप कुछ नहीं करते; आप दूसरों की कमाई पर रहते हैं। वस्तुतः आप एक बड़े पूंजीपति है, और यह काफी है। आप यकीन जानिये कि यदि क्रांति सफल हुई तो वह आपको आपकी दौलत एक चोरी के धन के रूप मे रखने को कहेगी।'

यकायक उसकी बच्चों की सी प्रफुल्लता गायब हो गई। क्रोधित हो वह बोला: 'चुराया धन, मेरी दौलत ! क्या मेरे पितामह की मेहनत का धन मूल रूप में इसमे नहीं लगा है ? क्या हमने पूंजी लगाने का सभी खतरा नहीं उठाया और क्या आज भी मैं अपनी आमदनी का कोई बुरा इस्तेमाल करता हूँ ?'

मदाम हनेब्यू, माँ और लड़की को भय से फक पड़ी देख चिन्तित हुई और जल्दी मे हस्तक्षेप करती हुई बोली:

'पाल मजाक कर रहा है, महाशय।'

लेकिन एम० ग्रीगोरे स्वयं भावनाओं मे बह गया था। नौकर केंकड़ा का प्लेट घुमा रहा था। उसने अनजाने मे ही तीन उठा लिये और उनके पंजों को अपने दाँतों से तोड़ने लगा।

'आह ! मैं नहीं कहता कि ऐसे भी शेयर होल्डर हैं जो अपने पद का दुरुपयोग करते है। उदाहरण के लिए, मुझे बताया गया है कि मंत्रियों को कम्पनी का काम करने के बदले में मोंटस्पू के शेयर मिले है। एक ब्यूक को मैं जानता हूँ, जिसका नाम मैं न बताऊँगा। वे हमारी कम्पनी के सब से बडे शेयर होल्डर है लेकिन उनकी जिन्दगी ऐयाशी और फिजूलखर्ची की है; लाखों औरतों के पीछे, दावतों और फिजूल की बातों मे खर्च होते है। परन्तु हम लोग, जो कि अच्छे नागरिकों की भाँति शांति से जिन्दगी बिताते है, सट्टा नहीं खेलते, उसी मे संतुष्ट है जो कि हमे मिलता है, और एक हिस्सा गरीबों को बाँटते है; अगर तुम्हारे मजदूर आकर एक पिन भी हमारे यहाँ से उठाते हैं तो मैं कहूँगा कि वे महज लुटेरे हैं।'

निग्रोल को उसे शांत करना पड़ा गोकि वह उसके क्रोध को देख मन ही मन प्रसन्न हो रहा था। केंकड़े की प्लेट अब भी घुमाई जा रही थी और उसके अवयवों को दाँतों से तोड़ने की कड़-कड़ की आवाज सुनाई दे रही थी। बातचीत का रुख अब राजनीति की ओर बदल गया था। एम० ग्रीगोरे हर बात के बावजूद,

अब भी काँप रहा था। वह अपने को लिबरल कहता था और उसे लुई फिलिप का खेद था। जहाँ तक डेन्यूलिन की बात थी वह शक्तिशाली सरकार के पक्ष में था। उसका मत था कि सम्राट खतरनाक परिणामों के ढलाव की ओर खिसक रहा है।

वह बोला, '८६ को याद करो। यह अभिजात (नोबुल) वर्ग के ही लोग थे जिन्होंने अपनी संकीर्णता और नये कौतुकों से पूर्ण दार्शनिक अभिरुचि के कारण क्रांति को संभव बना दिया था। उसी तरह, आज का मध्यमवर्ग अपने प्रचण्ड मुक्तिवाद, विनाश के प्रति रोष और चाटुकारिता का अपना गंदा खेल खेल रहा है। हाँ, हाँ, आप लोग एक दैत्य के दाँत तेज कर रहे हैं जो हम सब को निगल जायगा। यकीन मानिये, वह हमें निगल जायगा!'

महिलाओं ने उसे चुप कराने की कोशिश की और उससे उसकी लड़कियों की कुशल पूछ कर प्रसंग बदलने का प्रयास किया। लूसी मार्सेनीज में अपने एक दोस्त के साथ गाना गा रही थी और जेनी एक बुड्ढे भिखारी के सिर का चित्र अंकित कर रही थी। लेकिन उसने इस बात को बड़े असम्बद्ध तरीके से बताया। वह बराबर मैनेजर की ओर देख रहा था, जो कि अपनी डाक को पढ़ने में इतना व्यस्त था कि वह अपने अथितियों को भूल-सा गया था। इन पतले पन्नों के पीछे वह पेरिस और डाइरेक्टरों के आदेशों का, जो कि हड़ताल के निर्णायक होंगे, अहसास कर रहा था। अन्त में वह कार्यव्यवस्थता से मुक्त हुआ।

'अच्छा, अब आप लोग क्या करने जा रहे है?' उसने यकायक पूछा।

एम० हनेब्यू चौक सा पड़ा और फिर उसने प्रश्न को अस्पष्ट वाक्य कह कर टाल दिया: 'हम देखेंगे।'

डेन्यूलिन ने सोचते हुए जोरों से कहा: 'निस्सदेह, आप ठोस नींव पर खड़े है, आप इन्तजार कर सकते है, लेकिन अगर हड़ताल वरण्डामे पहुँची तो मैं तो खत्म हो जाऊँगा। मुझे जानबूझ कर बेकार में नया सामान लगाना पड़ेगा। सिर्फ एक खान से तभी काम चल सकता है जब कि लगातार उत्पादन हो। आह! मेरी स्थिति कोई अच्छी नहीं है, इतना मैं तुम्हे विश्वास दिलाऊं!'

यह अनिच्छापूर्वक कही हुई बात एम० हनेब्यू को जँच गई और उसने मन ही मन एक योजना बना ली: अगर हड़ताल ने बुरा रुख लिया तो क्यों न इसका प्रयोग अपने पड़ोसी के बरबाद होने तक किया जाय और फिर, उसकी खान को सस्ते दामों पर खरीद लिया जाय? डाइरेक्टरों का कृपापात्र बनने का यह सटीक बैठने वाला रास्ता है क्योंकि वर्षों से वे वरण्डामे को हथियाने का स्वप्न देख रहे हैं।

'अगर जीनवर्ट से तुम्हें ,कहो।, इतनी परेशानी है', उसने हंसते हुए तड़से तुम हमें क्यों नहीं दे देते ?'

लेकिन डेन्यूलिन स्वयं अपने कथन पर पश्चाताप करने लगा था। उसने जोर देकर कहा : 'नहीं, कभी नहीं।'

वे उसके गुस्से को देख मन ही मन आनन्द ले रहे थे। भोजन के बाद फलों के आने तक वे हड़ताल की बात को भूल से गए थे। मेहमान मेब, नासपाती और अंगूरों पर हाथ साफ करते हुए उनकी तारीफ भी करते जाते थे। इसी दौरान में मीमिल और निग्रील की शादी का प्रसंग छिड़ गया। सभी उत्साह के साथ एक साथ बोल रहे थे और नौकर शेम्पेन के स्थान पर 'राइन-वाइन' ढाल रहा था क्योंकि शेम्पेन ऐसे अवसरों के लिए घटिया शराब समझी जाती थी।

शादी के प्रसंग पर उसकी चाची ने निग्रील की ओर एक भेदभरी नजर डाली और नवयुवक को एम०ग्रीगोरे को खुश करना पड़ा, जो कि लूटे जाने की बात से कुछ मायूस सा हो गया था। एक क्षण को एम० हनेब्यू को चाची और भतीजे के बीच इतनी घनिष्टता देख कर, उनके गुप्त सम्बन्धों के प्रति संदेह जाग्रत हुआ और इन नजरों के मिलने में उसे शारीरिक सम्पर्क का आभास-सा हुआ परन्तु दूसरे ही क्षण शादी के प्रस्ताव ने, जो उसी के सामने किया गया था, उसे आश्वस्त बनाया।

हिपोलेट काफी बना रहा था जब कि नौकरानी ने घबराते हुए प्रवेश किया।

'सर ! सर ! वे लोग आ गए है !'

यह प्रतिनिधियो के लिए कहा गया था। दरवाजे बंद कर दिये गए। आतंक की एक लहर पास के कमरों मे दौड़ रही थी।

'उन्हे ड्राइंग रूम मे बिठा दो,' एम० हनेब्यू ने कहा।

मेज के इर्द-गिर्द मेहमान बेचैनी पूर्ण अनिश्चयात्मक स्थिति मे एक दूसरे की ओर ताक रहे थे। सभी चुप बैठे थे। उन्होंने पुनः मजाक जारी रखने की चेष्टा की। उन्होंने शेष बची चीनी को अपनी जेबों में भरने का बहाना बनाया और प्लेटों को छिपाने की बात कही। लेकिन मैनेजर गंभीर बना रहा; उनके कहकहे समाप्त हो गए और वे धीरे-धीरे फुसफुसाकर बातें करने लगे; जब कि दूसरे कमरे मे, जहाँ प्रतिनिधियों को बैठाया जा रहा था उनके भारी बूटों के कालीन में पड़ने और उनके चरमराने की आवाज आ रही थी।

मदाम हनेब्यू ने आवाज धीमी करते हुए अपने पति से पूछा : "मैं आशा कहतो हूँ तुम काफ़ी तो पियोगे ?'

'अवश्य,' वह बोला, 'उन्हें इन्तजार करने दो।'

वह घबरा सा गया था और प्रत्येक आवाज को सुन रहा था, गोकि बाह्य रूप से वह यह दिखला रहा था कि वह काफी पीने में व्यस्त है।

पाल और सीसिल उठे। पाल ने सीसिल से कहा कि वह चाची वाले छेद से देखे। वे अपनी हंसी रोके हुए धीमे स्वर मे बातें कर रहे थे।

'तुम उन्हे देख रही हो ?'

'हाँ, एक भारी डील-डौल वाला आदमी आगे है, दो दुबले-पतले पीछे।'

'क्या उनके चेहरे बदसूरत नहीं है ?'

'बिलकुल नहीं, वे भले दीख रहे हैं।'

यकायक एम० हर्नेब्यू यह कह कर अपनी कुर्सी से उठा कि काफी बहुत ज्यादा गरम है, वह बाद मे पियेगा। कमरे से बाहर निकलते हुए अपने मुँह पर अँगुली रखते हुए उनसे संयम के साथ रहने की अपील की। वे सभी पुनः बैठ गए और टेबुल के पास ही रहे। उन लोगों मे हिलने तक की हिम्मत नही थी और इन भोंड़ी, मर्दानी आवाजो को वे दूर से ध्यान से सुनने के लिए कान लगाए हुए थे।

२

पिछले दिन रसेन्योर मे हुई बैठक मे एटीन और कुछ अन्य कामगारों ने दूसरे दिन मैनेजर के यहाँ जाने वाले प्रतिनिधियों का चुनाव किया था। जब, संध्या को, माहेदी को मालूम हुआ कि उसका पति भी उनमे से एक है तो वह चिन्तित हो उठी, और उससे पूछने लगी कि क्या वह उन्हे दर-दर का भिखारी बना देना चाहता है। माहे स्वयं बड़ी अनिच्छा से राजी हुआ था। अब, जब कि अन्याय के खिलाफ लड़ने का समय आया, तो वे दोनो ही पीढ़ी दर पीढी चली आने वाली गुलामी की भावना से प्रेरित से, कल की चिन्ता में परेशान पीछे हट रहे थे। वे अब भी समर्थ के आगे झुकना पसंद करते थे। सभी मामलों मे वह अक्सर अपनी पत्नी की, जो कि ठोस सलाह दिया करती थी, बात मान लेता था। इस बार, वह नाराज हो उठा, और शायद इसलिए भी कि वह मन ही मन अपनी पत्नी की भाँति स्वयं भी भयभीत था।

बिस्तर पर लेटते हुए, करवट बदल कर उसने कहा, 'मुझे मेरे हाल पर छोड़ो, साथियों को अब छोड़ना क्या अच्छा होगा ? मैं अपना कर्तव्य निभा रहा हूँ।'

वह भी बिस्तर पर जा लेटी। दोनों चुपचाप पड़े रहे। फिर लम्बी चुप्पी के बाद वह बोली—

'तुम ठीक कहते हो; जाओ। सिर्फ बात यही है कि हम कहीं के नहीं रह गये।'

दोपहर हो चली थी, सब लोग भोजन करने चले क्योंकि सभास्थल एक बजे

रसेन्योर में रखा गया था और वहीं से वे लोग एम० हनेब्यू के पास जाने वाले थे। वे आलू से पेट भर रहे थे। थोड़ा सा मक्खन बच गया था परन्तु किसी ने उसे छुआ नहीं। संध्या को रोटी और मक्खन लेने का उनका इरादा था।

'तुम्हें मालूम है, हमने विश्वास किया है कि तुम ही बोलोगे,' लाँतिये ने यकायक कहा।

माहे भावातिरेक के मारे कुछ बोल न पाया।

'नहीं, नहीं, यह बड़ी ज्यादती है,' माहेदी चिल्लाई। 'मैं पूर्ण सहमत हूँ कि इन्हें वहाँ जाना चाहिए, परन्तु मैं यह कदापि न चाहूँगी कि ये मुखिया रहें। किसी और के बजाय इनसे ही क्यों कहा जाता है ?'

तब लाँतिये, क्रोधित भंगिमा में बताने लगा—माहे खान का बेहतरीन काम करने वाला है, उसे सभी बहुत पसंद करते है और उसकी इन्तजार करते हैं। उसकी समझदारी की सभी तारीफ करते है। उसके मुँह से जो कुछ बातें निकलेंगी वे निश्चय ही वजनी होंगी। पहले लाँतिये ने स्वयं बोलने का इरादा किया था, लेकिन उसे मोंटसू आये अभी थोड़ा ही समय हुआ था। जो यहाँ का रहने वाला है उसकी बातें ज्यादा अच्छी तरह सुना-मानी जायंगी। दर हकीकत कामगार अपना हित सर्वाधिक सुयोग्य व्यक्ति पर छोड़ रहे थे, वह इन्कार नहीं कर सकता, यह कायरतापूर्ण काम होगा।

माहेदी ने निराशा की मुद्रा बनाई—

'जाओ, जाओ; और दूसरों के लिए मारे जाओ। जो कुछ हो, मैं सहमत हूँ।'

'लेकिन मैं ऐसा कदापि न कर पाऊँगा,' माहे ने हिचकते हुए कहा, 'मैं कोई बेवकूफी कर बैठूँगा।'

लाँतिये खुश था कि उसने उसे राजी कर लिया है। उसने उसके कंधे पर हाथ रखा—'जो तुम महसूस करते हो वही कहो, और तुम गलती नहीं करोगे।'

फादर बोनेमाँ, जिसके पाँवों की सूजन अब कम थी मुँह में आलू भरे हुए बातें सुन रहा था और सिर हिला रहा था। वहाँ खामोशी छा गई। जब आलू खाये जा रहे थे तो बच्चों को लालच देकर चुप किया गया था। अपना निवाला निगल लेने के बाद वृद्ध धीरे से बोला—

'जो तुम चाहते हो वही बोलो और ऐसा लगेगा कि तुमने कुछ कहा ही नहीं। आह ! मैंने इन मामलों को बहुत देखा है, मैं उन्हें जानता हूँ ! चालीस वर्ष

पहले उन्होंने हमें मैनेजर के मकान से तलवारें दिखा कर खदेड़ दिया था। अब, शायद वे तुम्हें मिलने दें, लेकिन वे दीवार की तरह तुम्हें कोई उत्तर नहीं देंगे। भगवान् ! उनके पास दौलत है, वे क्यों परवाह करने लगे ?'

पुनः वहाँ चुप्पी छा गयी। माहे और लॉतिये उठे और परिवार को खाली प्लेटों के बीच कष्ट में छोड़ कर चले गए। बाहर निकलने पर उन्होंने पेरी और लेवक्यू को बुलाया और फिर चारों ही रसेन्योर पहुँचे, जहाँ अन्य बस्तियों के प्रतिनिधि भी छोटे-छोटे गोलों में पहुँच रहे थे। जब प्रतिनिधिमंडल के बीस सदस्य वहाँ इकट्ठा हो गए, तो उन्होंने कम्पनी की शर्तों का विरोध करना निश्चित किया और फिर मोंटसू की ओर रवाना हुए। तीखी उत्तर पूर्वी हवा बह रही थी। जब वे पहुँचे तो उस समय दो बजा था।

पहले नौकर ने उनसे इन्तजार को कहा और दरवाजा बंद कर दिया; तब, जब वह वापस लौटा तो उसने उन्हें ड्राइंग रूम मे बैठने को कहा और पर्दे हटा दिये। बाहर से छन कर सूर्य के प्रकाश की हल्की रोशनी कमरे मे आ रही थी और खनिक, जब अकेले रह गए तो संकोचवश बैठने का साहस नही कर पा रहे थे; गोकि वे सभी साफ-सुथरे, उजले कपडे पहन, प्रातःकाल दाढ़ी बना और फिर मूछों तथा पीले बालों को सँवार कर आये थे। वे अपने टोपों को अपनी अंगुलियों के बीच मोड़ते हुए अलग-बगल मे रखे फर्नीचर को देख रहे थे। वहाँ हर पुराने फेशन का फर्नीचर बड़ी अभिरुचि के साथ सजाया गया था, द्वितीय हेनरी आराम कुर्सियाँ, पंचदश लुई कुर्सियाँ, सत्रहवीं शताब्दी की एक इटालियन केबिनेट, पुराने सिल्क की सोने से जड़ी झालरें—यह सब बेशकीमती चर्च का फर्नीचर उन्हे उसकी कद्र के साथ-साथ एक प्रकार की असुविधा मे डाले हुए था। लम्बे ऊनी रेशों वाले पूर्वी देशों के बने कालीन उनके पाँवों को लपेट से लेते थे। लेकिन उन्हें विशेष प्रकार की घुटन यहाँ की गरम हवा, स्टोव की सी गरमी से थी। उन्हे आश्चर्य भी हो रहा था कि सड़क पर तो उनके गालों को जमा देने वाली ठंडी हवा है। पाँच मिनट गुजर गए और इस बेशकीमती सामान से सजे गरम कमरे में उनकी बदहवासी बढ़ गई। अन्त मे सैनिक की भाँति अपना फ्राक कोट पहने और छोटी सी टाई लगाये एम० हनेब्यू ने कमरे में प्रवेश किया। पहले उसी ने बात शुरू की :

'आह ! आप लोग यहाँ हैं ! ऐसा प्रतीत होता है आप लोगों ने बगावत की है।'

फिर कुछ रुक कर उसने विनम्र दृढ़ता से कहा—'बैठ जाओ, मैं

स्थिति पर एक बार फिर से बातचीत करने की अपेक्षा और कोई चीज नहीं समझता।'

खनिक सीटें खोजने को मुड़े। उनमें से कुछ तो साहस कर कुर्सियों में बैठ गए और अन्य लोग कढ़े हुए सिल्क से मढ़े फर्नीचर पर बैठने में संकोच महसूस कर खड़े रहे।

फिर कुछ क्षण कोई बातचीत नहीं हुई। एम० हनेब्यू ने अपनी आरामकुर्सी आग के पास खींच ली और तेजी से उनकी ओर देखता हुआ उनकी सूरतें याद करने की कोशिश करने लगा। उसने पेरी को पहचान लिया था, जो आखिरी कतार में छिपा हुआ था और उसकी निगाह लांतिये पर आकर ठहर गई जो उसके सामने बैठा था। 'अच्छा, आप लोगों को मुझसे क्या कहना है ?' उसने पूछा। उसे उम्मीद थी कि नवयुवक बोलेगा और जब माहे आगे आया तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ और वह यह कहे बगैर न रह सका—

'क्या, तुम भी ! एक बेहतरीन खनिक जो कि हमेशा ही बहुत समझदार रहा है, मोंटसू के पुराने खनिक परिवारों में से एक, जिन्होंने खान में पहली छेनी चलाने के बाद से काम शुरू किया है। आह ! बड़े दुख की बात है, मुझे खेद है कि तुम असंतुष्ट लोगों के अगुआ हो।'

माहे नीचे निगाह किये सुनता रहा। फिर उसने बोलना शुरू किया, पहले धीमी और हिचक भरी आवाज में :

'यह इसलिए कि मैं एक शांत व्यक्ति हूँ, महोदय ! जिसके खिलाफ किसी को कोई द्वेष नहीं है; इसलिए मेरे साथियों ने मुझे चुना है। आपको यह दिखलाने के लिए कि यह आन्दोलन सिर्फ कोलाहली और अशांति फैलाने वाले लोगों का नहीं है। हम सिर्फ न्याय चाहते हैं, हम भुखमरी से तंग आ गए हैं और हमें ऐसा प्रतीत होता है कि वह समय आ गया है जब कि कोई ऐसी व्यवस्था की जाय जिससे हमें, कम से कम, प्रतिदिन रोटी मिल सके।'

उसकी आवाज में दृढ़ता आने लगी। उसने आंख उठाकर मैनेजर की ओर देखा और अपनी बात जारी रखी —

'आप अच्छी तरह जानते हैं कि हम आपकी नयी प्रणाली से सहमत नहीं हो सकते। उनकी शिकायत है कि हम तख्ते अच्छी तरह नहीं बैठाते। यह सच है कि इस काम में हम आवश्यक समय नहीं दे पाते, परन्तु अगर हम समय लगायें तो हमारा दिन का काम और भी थोड़ा होगा और इससे हमारा पेट भर भोजन नहीं जुट पाता। अगर हम वैसा करें तो इसका मतलब होगा हर

चीज का अन्त ! हमें ज्यादा मजदूरी दीजिये और हम अच्छी तरह थूम बाँधेंगे, बजाय इसके कि हम अपनी सारी शक्ति छेनी चलाने में लगायें, जो कि रोटी का एकमात्र सहारा है। हम तख्ते बैठाने में आवश्यक समय खर्च करेंगे। इसके अलावा और कोई दूसरी व्यवस्था संभव नहीं है; अगर काम होना है तो उसकी मजदूरी भी मिलनी चाहिए और इसके बदले आपने क्या नया तरीका खोज निकाला है ? ऐसी व्यवस्था कि जो हमारे दिमाग में बैठ ही नहीं सकती। क्या आप नहीं देखते ? आप ट्राम की कीमत घटाते हैं और फिर बहाना करते हैं कि उसकी पूर्ति थूम बाँधने में अलग से देकर करते हैं ? अगर यह सच भी है तो यह लूटने के ही बराबर है क्योंकि थूम बाँधने और तख्ते बैठाने में हमें और भी समय लगेगा। परन्तु हमें पागल बनाने वाली वस्तु तो यह है कि यह कतई सच नहीं है; कम्पनी किसी भी बात का मुआवजा नहीं देती, वह सिर्फ फ़ी ट्राम दो सेन्टिम अपनी जेब में डालती है, बस।'

एम० हनेब्यू को क्रोध में हस्तक्षेप के लिए उद्यत देख सभी प्रतिनिधि बोल उठे, 'हाँ, हाँ, यही बात है।'

लेकिन माहे ने मेनेजर को बात न कहने दी। अब चूँकि उसकी जुबान खुल चुकी थी, शब्द अनायास ही उसके मुंह से निकले पड़ रहे थे। कभी-कभी वह स्वयं आश्चर्य करता था मानो उसके भीतर से कोई दूसरा व्यक्ति बोल रहा हो। उसके दिल में, सीने में बहुत सी बातें, बहुत से ख्यालात जमा थे, जिन्हें वह स्वयं नहीं जानता था कि वे उसके अन्दर विद्यमान हैं और अब वे उसका हौसला बढ़ जाने से स्वयं बाहर आ रहे हैं। उसने उन लोगों के बीच फैली गरीबी, भुखमरी, सख्त मेहनत, पशुवत् जीवन और घर में भूख से रोती हुई औरतों और बच्चों का जिक्र किया। उसने हाल की घातक मजदूरी का हवाला देते हुए कहा कि जुर्मानों और बैठकी के दिनों की मजदूरी काट लिए जाने से उनके परिवार बिलबिला उठे हैं। क्या उन्हें नष्ट करने का निश्चय ही कर लिया गया है ?

'तब, महोदय !' उसने अन्त में कहा, 'हम आपको यह बताने आये है कि अगर हमको भूखों ही मरना है तो यही अच्छा है कि कुछ काम हम न करें। इससे कुछ कम तकलीफ होगी। हमने खानों में काम बन्द कर दिया है और हम तब तक नीचे नहीं उतरेंगे जब तक कि कम्पनी हमारी माँगें स्वीकार न कर ले। कम्पनी चाहती है कि ट्राम की कीमत घटा दे और तख्ते बैठाने का अलग से भुगतान करे। हमारी माँग है कि स्थिति को पूर्ववत् रहने दिया जाय; और

हमारी यह भी माँग है कि फ़ी ट्राम पाँच सेंटिम बढ़ाया जाय। अब यह आपके देखने की बात है कि आप न्याय और काम के पक्ष में हैं या नहीं।'

कुछ खनिक बोल उठे, 'यही बात है—इसने हमारे दिल की बात कह दी है—हम वही माँगते हैं जो उचित है।'

अन्य, बगैर बोले, अपने सिर हिलाकर अपनी सहमित जाहिर कर रहे थे। बहुमूल्य सामान से सजा हुआ कमरा, उसके सोने की झालर वाले पर्दे, कढ़े हुए फर्नीचर के खोल, उसकी पुरानी वस्तुओं का आश्चर्यजनक संग्रह, सब कुछ उनकी निगाहों से गायब सा हो चुका था, वे अब उनके पांवों के नीचे धंसने वाले कालीन को भी महसूस नहीं कर रहे थे।

अन्त में एम० हनेब्यू ने नाराजी दिखाते हुए कहा, 'अब मुझे जवाब दे लेने दो। पहले तो यह सच नहीं है कि कम्पनी को फ़ी-ट्राम दो सेन्टिम फायदा है। चाहे तो आँकड़े मिला लो।'

इसके बाद एक गड़बड़ी में डालने वाला वाद-विवाद हुआ। मैनेजर ने उनमें आपस में ही मतभेद पैदा करने की कोशिश करते हुए पेरी से अपील की, जो कि काँपता हुआ छिप गया। इसके विपरीत लेवक्यू अधिक उग्र हो गया था, वह गड़बड़ बातें करता हुआ उन तथ्यों को स्वीकार कर रहा था, जिन्हें स्वयं नहीं जानता था। उनके एक साथ बोल उठने की जोरदार मरमराहट घर के समूचे वातावरण में फैल रही थी।

'अगर आप लोग सब एक साथ बोलेंगे तो हम कभी भी किसी समझौते पर नहीं पहुँच पायेंगे।' मैनेजर बोला।

इसी बीच उसने अपनी रूखी विनम्रता, और शांति पुनः प्राप्त कर ली थी। वह एक एजेन्ट था। उसे निर्देशन मिल चुका था और वह उसका पालन जानता था। पहले ही शब्द से उसने लॉतिये पर आंख गड़ा दी थी और वह उसे उसकी हठपूर्ण चुप्पी से बाहर घसीटने की चेष्टा में था। उसने दो सेंटिम के प्रश्न पर विवाद से हटकर उसे और भी व्यापक बना दिया।

'नहीं, यह सत्य तो तुम्हें स्वीकार ही होगा कि आजकल तुम लोग द्वेषभरी उत्तेजना में बह रहे हो। यह एक प्लेग है जो कि सर्वत्र मजदूरों पर हावी होकर अच्छे से अच्छे आदमी को भी खराब बना रहा है। ओह! मुझे जरूरत नहीं कि कोई इसे स्वीकार करे। मैं भलीभांति देख रहा हूँ कि तुम लोग बदल गए हो, तुम जोकि इतने शांत थे। क्या ऐसा नहीं है? तुमसे रोटी से ज्यादा मक्खन मिलने का वायदा किया गया है और तुम्हें बताया गया है कि अब तुम्हारे मालिक होने की बारी है। सच तो यह है कि तुम्हें उस कुख्यात

'इन्टरनेशनल' नाम की लुटेरों की जमात का सदस्य बनाया गया है जो समाज को बरबाद कर देने का स्वप्न देखा करते हैं।'

तब लॉतिये ने उसकी बात का खंडन किया--'आप गलत कह रहे हैं, महोदय! अभी तक मोंटसू का एक भी खनिक सदस्य नहीं बनाया गया; परन्तु अगर उन्हें इस बात के लिए विवश किया गया तो सभी खानें स्वतः ही सदस्य बन जायंगी। यह कम्पनी पर मुनहसर है।'

इस समय से एम० हनेब्यू और लॉतिये के बीच ऐसा वाद-विवाद हुआ कि अन्य खनिकों की उपस्थिति का किसी को मान ही न रहा।

'कम्पनी खनिकों के लिए रहनुमां है, और उसे डराकर तुम गलती कर रहे हो। इस वर्ष उसने बस्तियों की इमारतें बनाने में तीन लाख फ्रेंक खर्च किया है जिसका उसे सिर्फ दो प्रतिशत लौटता है। वह जो पेशनें देती है और जो कोयला तथा दवायें बाँटती है उसकी तो मैं बात ही नहीं करता। तुम, बुद्धिमान प्रतीत होते हो और कुछ ही दिनों में हमारे बेहतरीन कामगारों में से एक हो जाओगे। क्या तुम्हारे लिए यह बेहतर नहीं पड़ेगा कि तुम बदनाम लोगों का साथ छोड़कर इस सत्य का प्रसार-प्रचार करो? हाँ, मेरा मतलब रमेन्योर से है, जिसे हमने हमारी खानों को समाजवादी (सोशलिस्टिक) भ्रष्टाचार से बचाने के लिए निकाल दिया है। तुम बराबर उसके साथ देखे गये हो और यह निश्चित है कि उसी ने तुम्हें प्रोविडेन्ट फंड बनाने के लिए मजबूर किया होगा। यह महज बचत के लिए होता तो हम सहर्ष इसे सह लेते, परन्तु हम महसूस करते हैं कि यह हमारे ही खिलाफ उठाया गया हथियार है, संघर्ष का खर्च वहन करने लिए एक संरक्षित कोष है और इस सम्बन्ध में मैं बताना चाहता हूँ कि कम्पनी इस फंड पर नियंत्रण चाहती है।'

लॉतिये ने एकटक उसकी ओर निगाह रखकर उसे बराबर बोलने दिया और हल्के से कंपन से उसके होंठ हिले। आखरी वाक्य पर वह मुस्कारायां और सामान्य ढंग से बोला :

'तब यह नयी माँग है, क्योंकि अब तक, महोदय! आपने इस पर नियंत्रण के दावे से इन्कार किया है। दुर्भाग्यवश, हम चाहते हैं कि कम्पनी हमारे मामलों में कम दखल दे और हमारी रहनुमाँ बनने के बजाय सिर्फ हमारे साथ उचित बर्ताव करे। वह जो मुनाफा कमाती है उसमें से हमारी मजदूरी हमें दे। क्या यह ईमानदारी है कि जब कभी भी संकट आये शेयर होल्डरों के लाभांश को बचाने के लिए मजदूरों को भूखों मरने को छोड़ दिया जाय? आप जो कुछ भी कहें महोदय! नयी प्रणाली वेतन के छद्मवेष में कटौती है और इसी के खिलाफ हम विद्रोह कर रहें हैं

क्योंकि अगर कम्पनी किफायत करना चाहती है तो सिर्फ मजदूरों पर ही कटौती करना उसकी बड़ी बुरी हरकत है।'

'आह ! यह बात है !' एम० हनेब्यू ने चिल्लाकर कहा, 'मैं इसकी उम्मीद ही कर रहा था। लोगों को भूखा मार कर उनके पसीने की कमाई पर जीने का आरोप ! तुम ऐसी गलत बात कैसे कहते हो ? तुम्हें जिसे जानना चाहिए कि उद्योग में—खान में—पूंजी को कितना बड़ा खतरा उठाना पड़ता है ? उदाहरण के लिए एक अच्छे साधनों से सम्पन्न खान में आजकल पन्द्रह लाख से बीस लाख फ्रैंक तक खर्च बैठता है और इस प्रकार खपाई गई इस भारी पूंजी में सामान्य सूद पाना भी मुश्किल है। फ्रांस की लगभग आधी खान-कम्पनियाँ दीवालिया हो गई हैं। जो इस निर्दयता से बच कर सफल होते हैं उन पर दोषारोपण बेवकूफी है। जब उनके मजदूर नुकसान में होते हैं तो उनका स्वतः नुकसान है। क्या तुम विश्वास करोगे कि इस मौजूदा संकट में जितना तुम्हें भुगतना पड़ रहा है उतना ही ज्यादा नुकसान कम्पनी को हो रहा है ? इसका वेतन से सम्बन्ध नहीं है, यह बरबादी के कष्ट में प्रतियोगिता का अनुसरण है। उसे नहीं, तथ्यों को देखो। परन्तु मुश्किल तो यह है कि तुम सुनना नहीं चाहते, तुम समझना नहीं चाहते।'

'हाँ,' नवयुवक ने कहा, 'हम अच्छी तरह समझते है कि जब तक ऐसी स्थिति रहेगी, जैसी कि अब है, तब तक हम लोगों की जिन्दगी में कोई सुधार नहीं हो सकता और यही कारण है कि किसी न किसी दिन मजदूर संगठित हो इसे खत्म कर डालेंगे और स्थिति बदल जायगी।'

यह वाक्य, जो कहने में इतना सरल था, सामान्य तरीके से कहा गया था, परन्तु उसमें ऐसा आत्म विश्वास, ऐसा गूढ अर्थ छिपा हुआ था कि इसके बाद गहरी चुप्पी छा गई। उस ड्राइंग-रूम में एक प्रकार का आतंक, एक प्रकार का भय-सा छा गया। अन्य प्रतिनिधि, अपने अल्प ज्ञान से, महसूस कर रहे थे कि उनका साथी इस सुख-सुविधा का अपना हिस्सा माँग रहा है और वे लटकने वाली झालरों, आरामदेह कुर्सियों और सजावट तथा आरामदेह इस समस्त सामान पर गौर से निगाह डालने लगे थे जिसका एक छोटा सा टुकड़ा भी मिलने पर उनका महीनों का सूप चल सकता था।

अन्त में एम० हनेब्यू, जो विचारमग्न दीख रहा था, उठ बैठा। यह उसका प्रतिनिधियों से चले जाने को कहने का इशारा था। सभी ने उसका अनुकरण किया। लॉतिये ने धीरे से माहे को कोहनी से ठेला और माहे पुनः दृढ़ता के साथ बोल उठा—

'तब, महोदय, आपका यही सब जवाब है ? हम औरों को बता दें कि आपको हमारी शर्तें नामंजूर हैं।'

'मैं, मेरे अच्छे साथी !' मेनेजर बोला, 'मैं कोई भी बात नामंजूर नहीं करता। मैं भी तुम्हारी तरह वेतन भोगी हूँ। इस मामले में मेरा आपके एक अदना से ट्रामर से ज्यादा अधिकार नहीं है। मुझे आदेश मिलते हैं और मेरा काम यह है कि मैं उनका पालन होते देखूं। जो मैंने सोचा कि मैं तुम्हें कहूँ वह मैं तुम्हें बता चुका हूँ। लेकिन कोई निर्णय लेना मेरे हाथ में नहीं है। तुमने अपनी माँगें मेरे समक्ष रखीं। मैं उन्हें डाइरेक्टरों को बताऊँगा, और फिर वे क्या उत्तर देते हैं वह तुम्हें बताऊँगा।'

वह एक उच्चाधिकारी की तरह, इस मामले में कोई विशेष दिलचस्पी नहीं दिखाना चाहता था और अपने को इस व्यवस्था का एक सामान्य पुर्जा मात्र दिखाता हुआ रूखी विनम्रता दिखा रहा था और खनिक उसकी ओर अविश्वास की दृष्टि से देखते हुए अपने मन ही मन प्रश्न कर रहे थे कि झूठ बोलने मे इसे क्या लाभ होगा और मालिकों और खनिकों के बीच में अपने आपको इस प्रकार रखने से उसे क्या मिलेगा ? शायद, यह व्यक्ति एक जाल रचने वाला है जिसे कि एक मजदूर की ही भाँति वेतन मिलता है परन्तु वह इतने आराम से रहता है !'

लॉतिये ने साहस कर फिर कहा—'यह कितने दुर्भाग्य की बात है महोदय, कि हम अपना मामला व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होकर पेश नहीं कर सकते। हम बहुत सी बातें बता सकते हैं, बहुत से तर्क पेश कर सकते हैं जिनके बारे में आपको कुछ भी नहीं मालूम, अगर हमें मालूम हो जाय कि हमें कहाँ जाना है ?'

एम० हनेब्यू ने जरा भी नाराजी नहीं दिखाई, बल्कि वह मुस्कराया—

'आह, ज्यों ही तुम मेरे ऊपर से विश्वास हटाते हो मामला गुत्थीपूर्ण हो जाता है, तुम्हें वहाँ जाना पड़ेगा।'

प्रतिनिधियों ने उसके हाँथ के उस अस्पष्ट इशारे को देखा जिसे उसने एक खिड़की की ओर किया था। कहाँ था वह, वहाँ ? पेरिस मे, निस्संदेह। लेकिन वे ठीक-ठीक ठिकाना नहीं जानते थे; ऐसा प्रतीत होता था कि रास्ता बहुत कठिन है, उस अगम्य धार्मिक देश का, जहाँ एक अज्ञात देवता अपने पूजामण्डप में क्रोधित सा अपनी गद्दी पर विराजमान है। वे कभी उसे नहीं देख सकते, वे दूर बैठी हुई एक शक्ति के रूप में उसके प्रभाव को महसूस कर सकते हैं जो कि मोंटसू के दस हजार मजदूरों पर छाया हुआ है। और जब डाइरेक्टर बोला तो उसके पीछे वह छिपी हुई शक्ति थी जो भविष्यवाणी करती थी।

वे हतोत्साह हो मायूस हो गए थे; लॉतिये ने अपने कंधे सिकोड़ते हुए यह भावना प्रकट की कि अब चला जाना ही बेहतर है। तब एम० हनेब्यू ने एक

मित्रतापूर्ण तरीके से माहे की बाँह पकड़ी और जॉली की तबियत का हाल पूछा—

'अब, तुम्हें बड़ा सख्त सबक मिला है, और तुम हो कि अच्छी तरह तख्ते बैठाने का विरोध करते हो। तुम्हें सोचना चाहिए! मेरे दोस्त; तुम्हें महसूस करना चाहिए कि हड़ताल सभी के लिए घातक होगी। एक सप्ताह में पेन्तर ही तुम भूखों मरने लगोगे। तब तुम क्या करोगे? मुझे तुम्हारी सद्बुद्धि पर भरोसा है। जो कुछ भी हुआ; मुझे यकीन है कि ज़्यादा से ज़्यादा तुम सोमवार तक खान में जाने लगोगे।'

सभी लोग झुण्ड के रूप में, गर्दन झुकाये ड्राइंग रूम से बाहर निकल आये और उन्होंने उस परित्याग को आशा के प्रत्युत्तर में एक शब्द भी नहीं कहा। मेनेजर ने, जो उनके पीछे-पीछे आ रहा था, अपनी बातचीत जारी रखी। एक ओर कम्पनी की नयी प्रणाली थी और दूसरी ओर मजदूरों की पाँच सेंटिम फ़ी ट्राम बढ़ाने की माँग। उन्हें कोई दुस्सन्देह न रह जाय इसलिए मेनेजर ने उन्हें चेतावनी दी कि, उनकी माँगें, इसमें कोई सन्देह नहीं, डाइरेक्टरों द्वारा ठुकरा दी जायेंगी।'

उनकी चुप्पी से परेशान-सा होकर उसने दोहराया—'कोई बेवकूफी करने से पहले सोच लो।'

ड्योढ़ी में पहुँचने पर पेरी ने बड़े अदब के साथ बहुत नीचे झुक कर सलाम किया और लेवक्यू अपना टोप ठीक करने का बहाना करने लगा। माहे सोच रहा था कि वह जाने से पहले कुछ कहे लेकिन सोच नहीं पा रहा था कि वह क्या कहे? लॉतिये ने पुनः उसकी कोहनी छुई और इस भयप्रद खामोशी के बीच वे सभी रवाना हो गए और दरवाजा एक आवाज के साथ बन्द हो गया।

जब एम० हनेब्यू पुनः भोजन-गृह में प्रविष्ट हुआ तो उसने देखा कि शराब के नशे में अतिथि स्थिर और चुपचाप बैठे है। दो शब्दों में उसने सारी बात डेन्यूलिन को समझा दी। डेन्यूलिन का चेहरा और भी उदास हो गया। तब, जब वह अपनी ठंडी काफी पी रहा था तो वे लोग अन्य विषयों पर बातचीत की कोशिश करने लगे। लेकिन ग्रीगोरे दम्पति ने स्वयं हड़ताल की बात शुरू कर दी। वे आश्चर्य प्रकट कर रहे थे कि मजदूरों को काम छोड़ने से रोकने का कोई क़ानून ही मौजूद नहीं है। पाल ने सीसिल को आश्वासन दिया और कहा कि उन्हें पुलिस के आने की उम्मीद है।

अन्त में मदाम हनेब्यू ने नौकर को आवाज दी—'हिपोलेट, इससे पहले कि हम लोग ड्राइंगरूम में जाँय, जरा खिड़कियाँ तो खोल देना ताकि थोड़ी हवा अन्दर आ सके।'

३

पन्द्रह दिन बीत गये, और तीसरे सप्ताह के सोमवार को जो सूचियाँ मैनेजर को भेजी गईं, उनमें नीचे खान मे जाने वाले मजदूरों की संख्या और भी घट गई थी। उम्मीद की जा रही थी कि उस दिन सुबह से काम शुरू हो जायगा परन्तु खनिकों की मागें न मानने की डाइरेक्टरों की ज़िद ने खनिकों का क्रोध और भी भड़का दिया। हड़ताल बोरो, क्रीवेक्टोर, मिराओ और मेडेलेन खानों में ही नहीं थी अपितु विक्टियारो और फ्यूट्रीकेंटल मे भी एक चौथाई ही मजदूर खान मे उतरे थे। यहाँ तक कि इससे सेंट टामस तक प्रभाव पड़ा था। हड़ताल धीरे-धीरे आम हड़ताल हो रही थी।

बोरो में तो खान के प्रवेश द्वार पर भारी सन्नाटा था। कारखाने में मौत का सन्नाटा था, दालान वीरान पड़े थे और चारों ओर काम सुषुप्त अवस्था मे था। दिसम्बर के भूरे आसमान के नीचे, ऊँचे कोयला गिराने के पुलों में तीन या चार खाली ट्रामें वस्तुस्थिति की मौन उदासी की परिचायक थीं। उसके नीचे, प्लेट-फार्मों पर कोयले का स्टाक खत्म हो रहा था और नीचे सूखी काली जमीन नजर आने लगी थी; लकड़ी की खत्तियों मे पानी की वजह से चित्ती बैठने लगी थी। नहर में घाट पर एक बोझ ले जाने वाली चौरस पेंदी की बड़ी नाव, आधी लदी हुई, स्वच्छ पानी में सुस्ती के साथ पड़ी हुई थी और वीरान खान के किनारे, जिसमें सड़े हुए खनिज-क्षार वर्षा के बावजूद धुआँ फेंका करते थे, एक गाड़ी पड़ी थी जिसके दोनों कसे जाने वाले चूल सीधे आसमान की ओर उठे थे। परन्तु इमारतों की विशेष क्षति हो रही थी, स्क्रीनिंग ओसारे के रोशनदान बंद पड़े थे, रिसीवर के कमरे से, अब कटघरे के तारों के लिपटने का शब्द नहीं सुनाई देता था, मशीन का कमरा ठंढा हुआ जा रहा था, और विशालकाय चिमनी भी कभी-कदा निकलने वाले धुंए के लिए बहुत बड़ी मालूम देती थी। सुबह सिर्फ तार लपेटने वाला इंजन गरम किया जाता था। सईस घोड़ों के लिए भूसा नीचे भेज देते थे और खान की सतह मे सिर्फ कप्तान लोग काम करते थे। वे पुनः मजदूर बन गए थे और गलियारे मे होने वाली क्षति की मरम्मत करते हुए वे उनकी देखभाल किया करते थे। नौ बजे रात के बाद यह काम लेडर ही सम्भालते थे। काली धूल की चादर ओढ़े इन इमारतों के उपर सिर्फ पानी निकालने वाले इंजन की भोंड़ी, कर्णकटु आवाज सुनाई देती थी और खान के प्राण के रूप में यही एक वस्तु थी क्योंकि इसका साँस लेना बंद करने पर पानी खान को ही नष्ट कर डालता।

इसके सामने, दूसरी ओर मैदान में ड्यू सेंट क्वारेंट बस्ती भी निर्जीव प्रतीत होती थी। लिली का राज्याधिकारी जल्दी-जल्दी यहाँ आया था और पुलिस ने सभी सड़कों को रौंद डाला था, परन्तु हड़तालियों को शांत पाकर, राज्याधिकारी और पुलिस, दोनों ही वापस लौटने की सोच रहे थे। इस विस्तृत मैदान में बस्ती ने, कभी भी इस प्रकार का शानदार उदाहरण पेश नहीं किया था। पुरुष वर्ग, होटलों और सरायों में जाना टालने के लिए दिन भर सोया करते थे; महिलायें, काफी बाँटते हुए काफी विवेकशील बन गई थी, अब वे गप्पें मारने और झगड़ने मे विशेष उत्सुकता नहीं दिखाती थीं। यहाँ तक कि बच्चों के गोल तक यह सब समझते प्रतीत होते थे और वे इतने अच्छे हो गए थे कि चुपचाप एक-दूसरे को चिढ़ाते हुए नंगे पाँव इधर-उधर दौड़ा करते थे। आदेश एक के पास से दूसरे के पास पहुँचा करते थे, वे सभी समझदार होने की इच्छा रखते थे।

परन्तु माहे के घर में लोगों का बराबर आना-जाना लगा रहता था। लॉतिये ने सेक्रेटरी होने के नाते, प्राविडेन्ट फंड का तीन हजार फ्रैंक बहुत जरूरतमन्द परिवारों के बीच बाँट दिया था और बाद में कई सौ फ्रैंक चारों ओर से चन्दे और सहायता के रूप मे आये। परन्तु अब उनके सभी साधन चुक गए थे; खनिकों के पास हड़ताल जारी रखने को धन नहीं बचा था और भूख भी उन्हें भयभीत कर रही थी। माइग्रेट ने, एक पखवारे तक उधार देने का वायदा कर, एक सप्ताह के बाद ही अपना विचार यकायक बदल डाला था और रसद देना बन्द कर दिया था। वह आमतौर से कम्पनी से आदेश लिया करता था; शायद कम्पनी बस्ती को भूखा मार कर जल्दी ही मामले का अन्त कर देना चाहती थी। अलावा इसके वह एक कामुक, निष्ठुर बनिया था जो उस लड़की का रूप देखकर, जो कि उसके अभिभावकों द्वारा रसद लेने भेजी जाती थी, रोटी देना स्वीकार या अस्वीकार करता था। उसने माहेदी के लिए, विशेष रूप से अपना दरवाजा बन्द किया था क्योंकि वह उसे इसलिए सजा देना चाहता था कि कैथराइन उसके हाथ नहीं लग पाई थी। जमा देने वाली कड़ाके की ठंढ उनके दुख-दैन्य और कष्टों को और भी बढ़ा रही थी और कोयले का अम्बार चुकता देखकर महिलायें परेशान थीं कि अब क्या होगा जब कि उनके पुरुष काम पर खान मे नहीं जा रहे है और वे कोयला नहीं जुटा सकती हैं? अब तक तो वे भूख से ही मर रहे थे और अब उन्हें ठंढ से भी ठिठुर-ठिठुर कर मरना होगा। माहे परिवार मे हर चीज का अभाव-सा आ गया था। लेवक्यू परिवार तो अब भी बाउटलोप से बीस फ्रैंक उधार लेकर किसी तरह काम चला रहा था। जहाँ तक पेरी का सवाल था, उसके पास हमेशा पैसा रहता था लेकिन इस भय से कि लोग उधार न माँगने लगें,

अपने आपको औरों के समान ही जरूरतमन्द दिखाने के लिए वे माइग्रेट से उधार सौदा लिया करते थे और वह पेरी को भोगने के लिए अपनी दूकान तक उसके कदमों में न्योछावर करने को तैयार था। शनिवार से ही बहुत से घरों में चूल्हा नहीं जला था और आने वाले इन महाकष्टकारी दिनों की शुरुआत के लिए किसी की जुबान पर शिकायत का एक शब्द भी नहीं आया था। सभी लोग आदेश का बड़ी हिम्मत से पालन कर रहे थे। हर कष्ट के बावजूद उन लोगों में पूर्ण विश्वास था, एक धार्मिक आस्था थी और चूंकि न्याय के युग का उन्हें आश्वासन दिया गया था इसलिए सारे संसार की खुशहाली की विजय के लिए वे हर कष्ट झेलने को तैयार थे। अपने गरीबी के कष्टों के बीच जिन लोगों ने एक सीमित दायरे के बाहर कभी सोचा ही न था, भूख से उनके सिर उन्नत हो रहे थे। जब कमजोरी से उनकी आँखें झपकने सी लगतीं तो वे क्षितिज के उस पार अपने स्वप्नों का आदर्श शहर देखा करते थे, जो अब नजदीक आता हुआ और वास्तविक सा प्रतीत होता था; जिसमें सभी भाई-चारे से रहते हुए, श्रम के स्वर्ण युग में, सामूहिक सहभोज की कल्पना वे करते थे। उनके इस विश्वास को कोई हिला नहीं सकता था कि अन्त में वे उस युग में प्रवेश करेंगे। कोष खाली हो चुका था। कम्पनी झुकने को तैयार नहीं थी, प्रति दिन स्थिति खराब होती चली जा रही थी। और फिर भी वे आशा के वशीभूत हो कर वस्तुस्थिति की मुस्कराते हुए अवहेलना करते थे। अगर उनके नीचे की धरती खिसक जाय तो कोई एक अद्भुत-घटना उन्हें बचा लेगी। यह विश्वास, यह आस्था रोटी के स्थान पर उनके शरीर में गर्मी पहुँचाती थी। जब माहे और अन्य लोग निरे पानी से बने हुए सूप को जल्दी-जल्दी निगल कर, कमजोरी से आँखों के आगे अँधेरा छा जाने और चक्कर आने की स्थिति में उठते तो भी बेहतर जिन्दगी का आनन्द बना ही रहता जिसने इन पशुवत मानवों को भी शहीद बना दिया था।

लॉतिये, अब उनका सर्वस्वीकृत नेता था। संध्या समय की बैठकों में वह अपने अध्ययन के आधार पर, जिसने उसे इन पेचीदा मामलों को समझने योग्य बना दिया था, भविष्य की बातें बताया करता था। रात वह अध्ययन और काफी तादाद में आने वाले पत्रों का उत्तर देने में बिताता था। वह बेल्जियन के सोशलिस्ट समाचार पत्र 'वेंगर' का भी ग्राहक था और बस्ती में सर्वप्रथम बार आने वाले इस 'जरनल' ने उसके साथियों में उसकी इज्जत असाधारण रूप से बढ़ा दी थी। उसकी बढ़ती हुई प्रतिष्ठा उसे प्रतिदिन अधिकाधिक गतिशील बना रही थी। बड़ी संख्या में पत्र-व्यवहार, प्रान्त के चारों ओर के मजदूरों के भविष्य की चर्चा, बोरो के खनिकों को सलाह परामर्श देना, हर काम का विशेष केन्द्र

जाना और यह महसूस करना कि दुनिया उसके इर्दगिर्द घूम रही है—इस भूतपूर्व इंजनमैन और काले चिकने हाथों से छेनी चलाने वाले मलकट्टे के अहंकार को और भी बढ़ावा देते थे। वह सीढ़ी चढ़ रहा था; वह उस अभिशप्त अभिजात-वर्ग की ओर बढ़ रहा था और उसे अपनी बुद्धिमानी के प्रति संतोष था। वह उसी की तरह सुख-सुविधायें चाहता था परन्तु उसे वह कबूल नहीं करता था। उसकी एकमात्र परेशानी, अपनी शिक्षा-दीक्षा के प्रति जागरूकता थी और जब कभी भी वह किसी फ्राक कोट पहने, सभ्य कहलाने वाले व्यक्ति के सामने पड़ जाता तो इसी बात से वह घबराहट और डर महसूस करने लगता था। अगर वह हर चीज़ को आत्मसात करता हुआ इसी तरह अपना निर्देशन करता रहा तो तरीका न जानने से समीकरण बहुत धीरे-धीरे होगा और अन्त में ऐसी गड़बड़ी पैदा कर देगा कि समझने से अधिक वह जानने लगेगा। इसलिए जब कभी वह शांतचित्त बैठा होता तो अपने उद्देश्य के प्रति वह बेचैन हो उठता था—

—उसे भय लगता था कि यह उसका काम नहीं है। शायद, इसके लिए एक वकील, एक पढ़ा लिखा व्यक्ति चाहिए जो अपने साथियों से समझौता किये बगैर बोल सके, काम कर सके? लेकिन, अन्तर्मन की आवाज फिर उसे आश्वस्त बनाती। नहीं, नहीं वकीलों की जरूरत नहीं। वे लोग धूर्त होते हैं, वे अपनी योग्यता के बल पर दूसरों को बेवकूफ बनाते हैं और स्वयं मोटे होते हैं। स्थिति जैसी चल रही है उसे चलने दिया जाय, मजदूरों को अपने मामलों को स्वयं ही देखना चाहिए और उसके जनप्रिय नेता बनने के स्वप्न ने उसे ढाढस बंधाया; मोंटसू उसके कदमों पर होगा, पेरिस घुँधलकी दूरी पर, कौन जानता है? किसी दिन चुनावों में, पार्लमेंट के भड़कीले हाल में, सेहरा उसके सिर पर बंधे, जबकि वह एक मजदूर द्वारा सर्वप्रथम पार्लमेंट में दिये गये जोशीले भाषण से वह अभिजात वर्ग की धज्जियाँ उड़ा सकेगा।

पिछले कुछ दिनों से लॉतिये बड़ा परेशान था। हड़तालियों का उत्साह बढ़ाने को प्लूचर्ड मोंटसू आने के लिए बराबर पत्र पर पत्र भेज रहा था। यह एक गुप्त बैठक संगठित करने का सवाल था जिसका सभापतित्व मैंकेनिक करेगा और इस योजना की तह में हड़ताल से अपना स्वार्थ सिद्ध करने का विचार था—इन खनिकों को इन्टरनेशल का सदस्य बनाना जो कि अब तक उसके प्रति संदिग्ध थे। लॉतिये गड़बड़ी के लिए डरता था, लेकिन वह प्लूचर्ड को आने देना चाहता था बशर्ते रसेन्योर, इसका कट्टर विरोधी न बने। अपनी शक्ति के बावजूद वह सराय के मालिक का, जिसकी सेवायें पुरानी थीं और उसको मानने वालों में

रसेन्योर के भी कई अनन्य समर्थक थे, सम्मान करता था। इसलिए वह अब भी झिझक रहा था और समझ नहीं पा रहा था कि क्या उत्तर दे ?

उसी सोमवार को, चार बजे संध्या समय, जबकि लॉतिये निचले कमरे में माहेदी के साथ अकेला बैठा था, लिली से एक खत आया। माहे बैठा-बैठा उकता कर मछली मारने निकल गया था कि शायद सौभाग्य से नहर के सेवार में उसे कोई बड़ी मछली मिल जाय ताकि वे उसे बेच कर रोटी खरीद सकें। बोनेमाँ और जॉली, जिसकी टाँगे अब ठीक हो चली थीं, घूमने निकल गए थे। बच्चे अलजीरे के साथ खान के किनारे चले गए थे। जहाँ वे घंटों राख में से कोयले इकट्ठा करते थे। मन्दी आँच के पास, जिसे अब जलाये रखने की कोई सूरत नजर नही आती थी माहेदी अपनी कमीज के बटन खोले बैठी थी और उसकी एक छाती बाहर लटकी हुई थी, जिससे एस्टीली दूध चूस रही थी।

जब नवयुवक चिट्ठी की तह बनाने लगा तो उसने पूछा, 'क्या खबर अच्छी है ? वे लोग हमें रुपया भेज रहे हैं ?'

उसने अपना सिर हिला दिया और वह कहने लगी—'मैं नहीं जानती कि यह सप्ताह कैसे चलेगा। कुछ भी हो, हमें किसी न किसी तरह चलाना तो होगा ही। जब कोई अधिकार के लिए लड़ता है तो तुम नहीं सोचते कि इससे साहस मिलता है, और सबसे मजबूत होने पर ही सफलता मिलती है ?'

इस समय, वह कुछ न्यायसंगत हद तक, हड़ताल के पक्ष मे थी। बिना काम छोड़े, कम्पनी को न्यायसंगत बनने के लिए मजबूर करना बेहतर पड़ता, परन्तु अब चूँकि वे काम छोड़ चुके हैं इसलिए बिना न्याय पाये अब उन्हे काम पर नहीं जाना चाहिए। इसी प्रश्न को लेकर वह बेचैन थी। जब एक आदमी उचित काम कर रहा है तो अपने को गलती पर दिखाने की अपेक्षा मर जाना बेहतर है।

'आह !' लॉतिये ने निराशापूर्ण स्वर में कहा, 'अगर पुराना हैजा फैल जाय तो हम सबको इन कम्पनी के शोषण करने वालों से मुक्ति मिले।'

'नहीं, नहीं, हमें किसी की मृत्यु की कामना नहीं करनी चाहिये। इससे हमे कोई मदद नहीं मिलेगी, बहुत से और उत्पन्न हो जायंगे। अब, मेरा तो यही कहना है कि उन लोगों के विचार सुधरें। मैं सोचती हूँ उनमे सुविचार आयेगा क्योंकि हर जगह भले आदमी होते हैं। तुम जानते हो कि मुझे तुम्हारी राजनीति में जरा भी दिलचस्पी नहीं है।'

वास्तव में वह हमेशा उसकी हिंसात्मक तकरीरों का विरोध करते हुई उसे आक्रामक समझती थी। यह अच्छा है कि जितने के लायक काम है उतनी मजदूरी उन्हें मिले, परन्तु बुर्जुआ वर्ग और सरकार की तरह उन बातों में अपने को उल-

झाने से क्या लाभ ? दूसरे लोगों के मामलों में हम क्यों टाँग अड़ायें जब कि उससे हमें सख्त ठोकरों के अलावा और कुछ मिलना नहीं है ? परन्तु उसके प्रति उसके दिल में जगह थी क्योंकि वह शराब नहीं पीता था और नियमित रूप से अपने रहने खाने के एवज में पैंतालीस फ्रैंक दिया करता था। जब कोई अच्छा बर्ताव और आचरण रखे तो उसके दोषों के लिए उसे माफ किया जा सकता है।

लॉतिये ने तब रिपब्लिक की बात बताई, जिसमें सबको रोटी मिलेगी। लेकिन माहेदी ने अपना सिर हिला दिया क्योंकि उसे १८४८ के उस मनहूस वर्ष की याद थी जिसने, उनकी शादी के प्रारंभिक काल में, उसे और उसके पति को, बुरी तरह झकझोर कर छोड़ दिया था। उसकी भयंकरता का वर्णन करने मे वह अपने आप को भूल गई; उसकी आँखें अनन्त में खो-सी गई थीं, उसकी छातियाँ खुली थीं, और एस्टीली उसके स्तन को मुँह में दबाये उसके घुटनों तक आकर सो गई थी और लॉतिये भी विचारों मे डूबा उसके बड़े-बड़े स्तनों पर एकटक आँखें गड़ाये था, जिनका कोमल चिट्टापन उसके मटमैले पीले चेहरे के रंग से मेल नहीं खा रहा था।

वह बता रही थी, 'न एक फार्दिंग ही था और न दाँतों के बीच दबाने को कोई चीज ही बची थी। सब खानों में काम बन्द था। लोगों की उसी तरह बर-बादी हो रही थी जिस तरह आज।'

लेकिन इसी क्षण दरवाजा खुला और वे कैथराइन को देखकर, जो तब तक अन्दर आ चुकी थी, आश्चर्य से स्तब्ध रह गए। चवाल के साथ भागने के बाद उसने बस्ती में सूरत नहीं दिखाई थी। वह इतनी भावुक हो चली थी कि काँपती हुई और मौन वह दरवाजा बन्द करना भी भूल गई। उसने उम्मीद की थी कि उसकी माँ अकेली होगी, परन्तु इस नवयुवक की उपस्थिति से वह उन वाक्यों को भूल गई, जिन्हें वह रास्ते मे मन में तैयार कर लाई थी।

'अब तुम यहाँ क्यों आई ?' माहेदी अपनी कुर्सी से हिले बगैर चिल्लाई। 'मैं अब तुमसे कोई सरोकार नहीं रखना चाहती; चली जा यहाँ से ?'

तब कैथराइन ने कुछ बोलने की हिम्मत की— 'माँ, यह कुछ काफी और चीनी है; हाँ, बच्चों के लिए। मुझे उनकी बराबर याद आती थी और मैंने ओवरटाइम कमाया है।'

उसने अपनी जेबों से एक पौण्ड काफी और एक पौण्ड चीनी निकाली और हिम्मत कर उसे मेज पर रख दिया। वोरो की हड़ताल से वह चिन्तित थी, वह जीनबर्ट में काम करती थी और अपने माँ-बाप को थोड़ी सी मदद करने का यही रास्ता सोच पाई थी, जिसे वह बच्चों के बहाने करना चाहती थी। लेकिन उसके

अच्छे स्वभाव से उसकी माँ संतुष्ट नहीं हुई और बोली—'हमें मिठाइयाँ लाने के बदले बेहतर होता कि तू यहाँ रहती और हमें रोटी कमाकर खिलाती।'

उसने उस पर गालियों की बौछार शुरू कर दी। उसने अपनी लड़की से वह सब बातें कह डालीं जिन्हें वह पिछले महीने भर लोगों से कहती फिरी थी। एक आदमी के साथ भाग जाना, सोलह वर्ष की उम्र से ही उसके साथ रहने लगना, जब कि परिवार भूखों मर रहा हो! सिर्फ अधम और दोगले बच्चे ही ऐसा कर सकते है। कोई बेवकूफी का काम हो तो उसे माफ किया जा सकता है; लेकिन कोई माँ इस प्रकार की चालबाजी नहीं भूल सकती। अगर हमने तुझे सख्ती के साथ घर मे ही रोका होता तब भी बहाना हो सकता था, लेकिन नही, तू तो हवा की तरह आजाद थी, और हम तो तुझसे सिर्फ घर मे आकर सोने को ही कहते थे।

'जरा बता तो मुझे, इस उम्र मे, आखिर तेरे दिल मे कौन सी ऐसी बात थी?'

कैथराइन, टेबुल के पास खड़ी, सर झुकाये सुन रही थी। एक कँपकँपी उसके दुबले-पतले शरीर को हिला-सी रही थी, और उसने टूटे-फूटे शब्दो मे उत्तर देने की कोशिश की—'ओह, यह सिर्फ मेरा ही दोष नहीं है, ऐसी बात भी नहीं है कि अकेले मुझे ही आनन्द मिलता है! यह तो उसका दोष है। जो वह चाहता है उसी बात को चाहने के लिए मैं मजबूर हूँ, नहीं हूँ क्या? क्योंकि, तुम जानती हो, वह ताकतवर है। कौन बता सकता है कि स्थिति कैसी होने वाली है? जो कुछ भी हो, जो किया जा चुका है उसे फिर से जैसे का तैसा नहीं बनाया जा सकता; चाहे वह हो या अब कोई और हो। उसे मुझसे शादी करनी ही होगी।'

उसने बगैर किसी जद्दो-जेहद के अपनी सफाई दी, एक लड़की के आत्म-समर्पण की भाँति जो छोटी सी उम्र मे एक पुरुष की अनुगामिनी बन गई हो। क्या सबका यही हाल नहीं था? उसने कभी भी किसी अन्य वस्तु की इच्छा का स्वप्न नहीं देखा था, खान के किनारे बलात्कार, सोलह वर्ष की उम्र में एक बच्चा और फिर अगर उसका प्रेमी उससे शादी करे तो वही कष्ट की जिन्दगी और गृहस्थी। वह शर्म से शरमा नहीं रही थी, वह इस प्रकार इसलिए काँप रही थी कि इस युवक के सामने, जिसकी उपस्थिति उसे निराश बना रही थी, उसके साथ एक दुश्चरित्र औरत का सा व्यवहार किया जा रहा था।

लाँतिये उठ खड़ा हुआ। इस सफाई में वह बाधक न बने इसलिए वह प्रायः बुझी हुई आग को कुरेदने की कोशिश कर रहा था। लेकिन उनकी निगाहें मिलीं उसने देखा कि वह बहुत सुस्त और पीली पड़ गई है। उसके खूबसूरत चेहरे पर

उसकी उज्ज्वल आँखें धंस-सी गई है। उसकी ईर्ष्या गायब हो गई; उसके प्रति उसकी एकमात्र यही भावना जाग्रत हुई कि उसे छोड़कर जिस दूसरे पुरुष को उसने पसन्द किया है उसी के साथ वह सुखी रहे। वह अब भी, उसके प्रति अपना यह कर्तव्य महसूस कर रहा था कि वह मोंटमू जाये और उस आदमी को अपना कर्तव्य निभाने को मजबूर करे। लेकिन वह उसकी मेहरबान निगाहों में सिर्फ दया की भावना देख रही थी; वह जरूर उससे नफरत करता होगा तभी तो वह इस तरह उसकी ओर घूर रहा है। फिर उसका दिल भर आया और गला रुंध-सा गया और वह अपनी सफाई में एक भी शब्द न बोल सकी।

'बस, बस, अपनी जबान बन्द कर,' माहेदी बोली। 'अगर तू रहने के लिए आई है तो रह; अन्यथा अभी यहाँ से चली जा और यह समझ ले कि तेरी किस्मत अच्छी है कि मैं अभी खाली हाथ नहीं हूँ अन्यथा कभी की तेरी हालत दुरुस्त कर देती।'

मानो यह धमकी यकायक साकार हो गई हो, कैथराइन को पीछे से एक जोरदार लात पड़ी। लात इतने जोरों से मारी गई थी कि वह दर्द और आश्चर्य से भौंचक्की रह गई। यह चवाल था जो खुले दरवाजे से अन्दर घुस आया था और उसी ने क्रुद्ध जानवर की भाँति उसे लात मारी थी। एक क्षण को उसने उसे बाहर रुक कर देखा था।

उसने चीखते हुए कहा, 'आह! कमीनी, मैं तेरे पीछे-पीछे था। मैं अच्छी तरह जानता था कि तू इससे—यहाँ आ रही है और तू इसे खर्चा दिया करती है, क्यों? तू मेरे धन से इसे काफी ढालती है!'

माहेदी और लॉतिये स्तब्ध बैठे रहे। एक क्रोधित धक्के से चवाल ने कैथराइन को दरवाजे की ओर धकेला, 'बाहर निकलो, भगवान कसम!'

और जब वह एक कोने में जाकर खड़ी हो गई तो वह माँ की ओर मुखातिब हुआ—'अच्छा धंधा है, जब तुम्हारी लड़की ऊपर वाले कमरे में अपनी टाँग उठाये पड़ी रहे तो तुम घर की चौकसी करो।'

अन्त में उसने कैथराइन की कलाई पकड़ ली और उसे झकझोरता हुआ बाहर की ओर घसीटने लगा। दरवाजे पर वह पुनः माहेदी की ओर मुड़ा जो अपनी कुर्सी पर जड़वत् बैठी थी। वह अपनी छाती के बटन लगाना तक भूल गई थी। एस्टीली सो गई थी और उसका मुँह ऊनी पेटीकोट तक खिसक आया था; उसके बड़े-बड़े स्तन एक अच्छा दूध देने वाली गाय की तरह नग्न लटक रहे थे।

'जब लड़की बुरा काम करवाने लायक नहीं रहती तो माँ अपना जोबन लुट-

वाती है,' चवाल चिल्लाया। 'जाओ, अपना मांस उसी को दिखाओ ! उसे घृणा नहीं लगती—तुम्हारा गंदा किरायेदार।'

इस समय लॉतिये की इच्छा हुई कि वह चवाल को मार डाले। बस्ती के लोगों को मालूम न पड़े इस भय से वह कैथराइन को चवाल के हाथ से छीन लेने से अपने आपको रोके हुए था। परन्तु गुस्सा अब उस पर हावी हो रहा था और दोनों व्यक्ति एक दूसरे के आमने-सामने खड़े थे और क्रोध से उनकी आँखों से चिनगारी सी निकल रही थी।

'जबान संभाल,'' लॉतिये बोला, 'वर्ना यहीं ढेर कर दूंगा।'

'कोशिश कर,' चवाल ने उत्तर दिया।

कुछ क्षणों तक वे एक दूसरे को इसी तरह घूरते रहे, वे इतने करीब आ गये थे कि उनके नथूनों की गरम हवा एक दूसरे के चेहरे को जलाये डाल रही थी। तत्काल कैथराइन ने आकर अपने प्रेमी का हाथ पकड़ लिया और उसे वहाँ से बाहर ले आई। वह उसे बस्ती से बाहर घसीटती हुई भाग-सी रही थी और उसने एक बार भी मुड़कर पीछे नहीं देखा।

'कैसा बेहूदा है।' लॉतिये बुदबुदाया और जोरों से दरवाजा बन्द कर बैठ गया। वह क्रोध से इस कदर पस्त पड़ गया था कि उसे बैठ जाना पड़ा।

सामने, माहेदी पूर्ववत् बैठी थी। उसने एक मायूस और अस्पष्ट मुखमुद्रा बनाई और वहाँ खामोशी रही; ऐसी खामोशी जिसका दुख, जिसकी पीड़ा महसूस करने की वस्तु होती है, कहने की नहीं। बहुत कोशिशों के बावजूद, उसकी निगाह उसकी छाती पर जा अटकी थी, उस लटके हुए गोरे मांस-पिण्ड पर, जिसकी चमक-दमक उसे बेचैन कर रही थी। इसमें संदेह नहीं कि वह चालीस वर्ष की हो चली थी और बहुत से बच्चे पैदा करने से उसकी आकृति भी बिगड़ चली थी, परन्तु अब भी वह तगड़ी और ठोस थी और बहुत से अब भी उसे भोगने की इच्छा रख सकते थे। उसका बड़ा लम्बा चेहरा कभी उसके खूबसूरत होने का परिचायक था। धीरे-धीरे और चुपचाप वह अपनी छाती को दोनों हाथों से ऊपर उठा रही थी। एक गुलाबी कोना अब भी झलक रहा था, उसने अपनी अँगुली से उसे अन्दर धकेला और फिर अपनी कुरती के बटन लगाए। अब वह अपना पुराना गाउन पहने काली और रंगतहीन लगने लगी थी।

'वह बड़ा नारकीय जीव है,' वह बोली। 'एक नारकीय कीड़ा, एक अधम व्यक्ति ही ऐसे विचार रख सकता है। उसके कहने की मुझे जरा भी परवाह नहीं है, यह ध्यान देने लायक बातें ही नहीं है।'

'मैंने भी गलतियाँ की थीं, निस्संदेह, परन्तु इस तरह की नहीं। दो ही माह-

मियों ने मुझे भोगा—बहुत पुरानी बात है, एक कोयला भरने वाले ने, जब मैं पन्द्रह वर्ष की थी और फिर माहे ने। अगर दूसरे की तरह उसने भी मुझे छोड़ दिया होता, तो मैं नहीं जानती कि क्या हुआ होता; मैं इस बात का घमंड नहीं करती कि हमारी शादी के बाद उसके प्रति मेरा आचरण आदर्श रहा है, क्योंकि जब कोई गुमराह नहीं होता तो अक्सर इसलिए कि उसे मौका नहीं मिलता। मैं तो सिर्फ वस्तु स्थिति की बात कहती हूँ और मैं जानती हूँ कि ऐसे भी पड़ोसी है जो इतना भी नहीं कह सकते, क्या तुम ऐसा नही सोचते ?'

'यह बिलकुल सच बात है ?' लॉतिये ने उत्तर दिया।

वह उठ खड़ा हुआ और एस्टीली को दो कुर्सियों के बीच सुलाने के बाद वह भी आग जलाने के इरादे से उठी। अगर फादर को आज मछली मिल गई और बिक गई तो उन्हें कुछ सूप मिलने की व्यवस्था हो सकती है।

बाहर, रात हो चली थी, चिलचिलाती भीगी रात। अंधकारपूर्ण उदासी में डूबा सा लॉतिये गर्दन झुकाये टहल रहा था। उसे अब उस पुरुष के प्रति क्रोध या लड़की के प्रति दयाभाव नहीं था। वहां जंगलीपन का नज्जारा खत्म हो चुका था और वह सब की गरीबी और भुखमरी की बात सोचने लगा था। वह बस्ती में रोटी के अभाव की बात सोच रहा था, वह उन औरतों और बच्चों की बात सोच रहा था जो उस संध्या को भूखे पेट सोये थे। वह खाली-पेट संघर्ष करने वाली इस पीढ़ी की बात सोच रहा था। वह संदेह, जो कभी-कभी पीड़ा पहुँचाता था, इस द्वाभा की भयावह उदासी मे पुनः जाग्रत हो उठा था और इतनी तीव्र बेचैनी पैदा कर रहा था जितनी कि उसने अब तक कभी भी महसूस नहीं की थी। कितनी भयानक जिम्मेदारी उसने अपने ऊपर लाद ली है ! क्या अब भी, जब कि न धन है और न उधार मिलने की गुंजाइश, उसे इन लोगों को हठपूर्ण संघर्ष में प्रवृत्ति रखना चाहिए ? अगर कोई मदद नही पहुँची और भुखमरी ने उनके हौसले को पस्त कर दिया तो इस सबका अन्त क्या होगा ? उसे यकायक सर्वनाश का सा आभास हुआ; मरते हुए बच्चों को लेकर मातायें सिसक रही है, और मजदूर पहले से भी अधिक कृशकाय, पीले और दबे हुए पुनः खान में नीचे उतरे हैं। वह टहलता हुआ आगे बढ़ रहा था, पत्थरों पर उसके पाँव ठोकर खाकर लड़खड़ा रहे थे और यह विचार कि कंपनी उनसे अधिक बलवान सिद्ध होगी और वह अपने साथियों पर आपत्ति लाने वाला सिद्ध होगा, अधिक यंत्रणा पहुँचा रहा था।

जब उसने सिर उठाया तो उसने देखा वह वोरो के सामने खड़ा है। बढ़ते हुए अंधेरे के नीचे इमारतों का यह समूह दबा हुआ और उदास प्रतीत हो रहा था। वीरान अहाता, बड़ी-बड़ी निश्चल छायाकृतियों से भरा सा एक त्याज्य

किले के एक कोने की भाँति प्रतीत होता था। तार लपेटने के इंजन के बन्द होते ही इस स्थान का प्राण ही उड़ चला था। रात्रि के इस प्रहर में वहाँ निर्जीवता छाई हुई थी, न एक लैंप ही जला था और न कोई शब्द ही सुनाई दे रहा था, और पम्प की दूर से आने वाली कराह के समान ध्वनि से यह बतलाना कठिन था कि यह कहाँ से आ रही है।

लॉतिये उसी ओर देख रहा था और उसका दिल बैठा जा रहा था। अगर मजदूर भूखों मर रहे थे तो कम्पनी का भी लाखों पानी में डूब रहा था। श्रम और पूंजी के इस संघर्ष में वह क्यों कर तगड़ी पड़ सकेगी? कुछ भी हो, यह विजय उसे मँहगी पड़ेगी। उन्हें अपनी लाशें गिननी पड़ जायँगी। उसका संघर्ष का क्रोध पुनः जाग उठा, इस दुर्गति को समाप्त करने की प्रबल इच्छा, चाहे इसकी कीमत मृत्यु द्वारा ही चुकानी पड़े। बराबर भुखमरी और अन्याय सहते हुए घुल-घुल कर मरने की अपेक्षा यही अच्छा होगा कि समूची बस्ती एक ही चोट में समाप्त हो जाय। उसका अध्ययन, जिसका वह ठीक से मनन नहीं कर पाया था, उसे उन राष्ट्रों की याद दिलाने लगा जिन्होंने अपने दुश्मनों को गिरफ्तार करने के लिए अपने ही शहर जला डाले थे, माताओं ने अपने बच्चों को गुलामी से बचाने के लिए दीवारों से पटक-पटक कर उन्हें मार डाला था और पुरुषों ने गद्दारी की रोटी खाने की अपेक्षा भूखों रह कर जान दे डाली थी। उसका सिर भन्नाने लगा था, इस निराशावादी मायूसी के बीच एक लाल रोशनी-सी दिखाई दी, उसके संदेहों को खदेड़ती सी वह एक घंटा पहले के इन कारयतापूर्ण विचारों के लिए उसे शर्मिंदा बना रही थी। पुनर्विश्वास की इस जाग्रति में उसका स्वाभिमान पुनः सामने आया जो उसे और भी ऊँचा उड़ा ले गया; नेता होने की खुशी, उसकी आज्ञा मानने, यहाँ तक कि कुर्बानी देने को तैयार रहने का घमंड, उसके सत्यवान बनने के स्वप्न को और भी बड़ा बनाने लगा और वह संध्या उसकी काल्पनिक विजय की संध्या बन गई। वह कल्पना करने लगा उस दृष्य की, उस शानदार अवसर की जब कि उसने अपने हाथ में सत्ता लेने से इन्कार कर दिया है। जब वह मालिक हो जायगा तो अधिकार जनता के हाथों सौंप देगा।

लेकिन वह माहे की आवाज से जाग-सा उठा और उसके साथ चल पड़ा। माहे अपने भाग्य की बात बता रहा था, उसे एक बड़ी मछली मिली थी जिसे उसने तीन सूज में बेच डाला था।

उन्हें सूप मिलेगा। तब उसने अपने साथी का साथ छोड़ दिया और कहा कि वह बाद में आयेगा। वह जाकर सराय में बैठ गया और रसेन्योर के ग्राहक के

जाने की इन्तजार करने लगा ताकि वह उसे निश्चयात्मक रूप से बता सके कि वह प्लूचर्ड को तत्काल आने के लिए लिख रहा है। उसका प्रस्ताव मान लिया गया है, वह एक प्राइवेट बैठक संगठित करेगा और अगर मोंटमू सामूहिक रूप से 'इन्टरनेशनल' में आ जाय तो विजय उसे सुनिश्चित सी लगती है।

४

बोन-जोय में विधवा डीसर के यहाँ गुरुवार को दो बजे गुप्त बैठक की व्यवस्था की गई थी। यह विधवा उसके बच्चों, खनिकों, पर लाद दिये गए इस संकट से बहुत नाराज थी और खास कर इसलिए कि उसकी सराय खाली रहती थी। इस प्रकार की बगैर शराबखोरी की हड़ताल तो कभी नहीं हुई थी; शराबी इस भय से घरों में बंद रहते थे कि आदेश का उल्लंघन होगा। इस प्रकार मोंटमू, जो भोज दिवस पर लोगों की भीड़ में ठसाठस रहता था, मौन और उदासी पूर्ण निर्जनता अपनी सड़कों में प्रदर्शित कर रहा था। काउन्टरों या पेशाव से अब बियर नहीं बहती थी, गटर सूख गए थे। कसिमीर बार और एस्टेमिनेट-द-प्रोजी में सिर्फ मकान मालिकनों के पीले चेहरे, जिज्ञासा की दृष्टि से सड़कें ताकते दिखाई देते थे और स्वयं मोंटमू में एस्टेमिनेट लीफेन्ट से एस्टेमिनेट तिसोन तक सभी बारों में सूनसानी थी, सिर्फ एस्टेमिनेट सेंट-इलोय में, जिसमें अक्सर कप्तान आया करते थे, कभी-कभी गिलास खड़का करते थे; वोल्कन में भी सूनसानी थी और वहाँ की वेश्यायें अपने प्रशंसकों के अभाव में हाथ में हाथ धरे बैठी रहती थीं गोकि समय को देखते हुए उन्होंने भी अपना रेट दस सूज से घटा कर पाँच सूज कर दिया था। समूचे इलाके में मातम की सी गहरी उदासी छाई हुई थी।

'भगवान कसम।' विधवा डीसर ने अपने दोनों हाथ रानों पर मारते हुए कहा, 'यह लुटेरों का कसूर है! वे मुझे मार ही क्यों न डालें, उन्हें मौत खा जाय, यदि वे चाहें तो, परन्तु मैं उनकी बुराई से बाज न आऊँगी।'

उसके लिए सभी अधिकारी और मालिक लुटेरे थे। यह उसके अपने संतोष के लिए उसकी ग्राम बोलचाल की भाषा थी जिसे वह जनता के दुश्मनों के लिए प्रयुक्त करती थी। उसने लॉतिये के अनुरोध का सहर्ष स्वागत किया था, उसका समूचा मकान ही खनिकों का है, वह अपना नाच घर बड़ी उदारता के साथ देगी और वह स्वयं ही निमंत्रण पत्र जारी करेगी क्योंकि कानून ऐसा कहता है। अलावा, इसके अगर कानून इजाजत भी नहीं देता तो और अच्छा है! उन्हें उसके विचारों का आभास तो मिल ही जायगा। पिछले दिन वह नवयुवक लगभग पचास पत्र उससे हस्ताक्षर कराने लाया था; उसने बस्ती के अपने पड़ोसियों से, जो लिखना

जानते थे, उनकी प्रतिलिपियाँ बनवाई थीं, और यह पत्र चारों ओर खानों के प्रतिनिधियों को और उन व्यक्तियों को जिनके आने की उन्हें पूरी उम्मीद थी, भेज दिये गए थे। उस दिन का विचारणीय विषय 'हड़ताल जारी रखने पर विचार' रखा गया था, परन्तु वास्तव में उन्हें प्लूचर्ड के आने की आशा थी और वे विश्वास किये बैठे थे कि वही रहस्य खोलेगा जिसके परिणाम स्वरूप 'इन्टरनेशनल' में सामूहिक रूप से शामिल हुआ जा सकेगा।

गुरुवार की सुबह, अपने पुराने फोरमैन के न आने से लॉतिये कुछ चिन्तित सा हुआ जब कि वह अपने एक पत्र द्वारा बुधवार की शाम को आने का हो वायदा कर चुका था। तब, क्या हो रहा है? वह परेशान था कि बैठक से पहले वह उसके साथ किसी फैसले पर नहीं पहुँच सकेगा। नौ बजे के लगभग वह मोंटसू गया, इस विचार से कि शायद, मैकेनिक वोगे मे रुके बिना सीधे ही वहाँ चला गया है।

'नहीं, मैंने तुम्हारे मित्र को नहीं देखा' विधवा डीसर ने उत्तर दिया। 'लेकिन, हर चीज तैयार है। आओ, देख लो।'

वह उसे नाचघर में ले गई। सजावट वैसी ही थी। कागज के फूलों की लड़ियाँ वैसे ही लटकी थीं, दीवारों पर संतों के चित्र वैसे ही सजे थे, सिर्फ वाद्य-यंत्र बजाने वालों का मंच खाली कर उसके एक कोने मे एक टेबुल और तीन कुर्सियाँ सजा दी गई थीं और कमरे मे फर्श पर कतारवार फर्नीचर था।

'बिल्कुल ठीक है,' लॉतिये ने ताईद की।

'और तुम जानते हो,' विधवा बोली, 'तुम यहाँ बड़े इत्मीनान से रहोगे। जितना चाहो उतना चिल्लाओ। लुटेरों को, यदि वे आये तो पहले मेरी लाश कुचल कर गुजरना होगा!'

अपनी परेशानी के बावजूद लॉतिये मुस्कराये बगैर न रह सका। उसने उसकी ओर देखा, कितनी भीमकाय वह लगती थी, उसकी छातियाँ इतनी बड़ी थी कि अकेले उनका आलिंगन करने के लिए एक आदमी की जरूरत थी। उसके बारे में अब यह कहा जाता था कि काम की वजह से उसे अपने सप्ताह के छः दिनों के प्रेमियों मे से प्रतिदिन दो को भोगना होता है।

परन्तु लॉतिये को रसेन्योर और सोवरायन को प्रवेश करते देख आश्चर्य हुआ; जब विधवा उन तीनों को इस बड़े खाली हाल मे छोड़ कर चली गई तो वह बोला :

'क्या! तुम आ भी गए!'

सोवरायन, रात भर वोरो में काम करने के बाद, वह हड़ताल पर नहीं था,

उत्सुकतावश यहाँ आया था और रसेन्योर, पिछले दो दिनों से कुछ खिचा-खिचा सा प्रतीत होता था; उसके हँसमुख स्वभाव की हंसी उसके चेहरे से गायब हो गई थी।

'प्लूचर्ड नहीं पहुँचा, और मैं चिन्तित हूँ।' लॉतिये बोला।

रसेन्योर ने दूसरी ओर निगाह फेरते हुए धीरे से कहा: 'मुझे आश्चर्य नहीं, मुझे उसके आने की उम्मीद नहीं है।'

'क्या !'

तब उसने मन में कुछ निश्चय-सा करते हुए अपने साथी की ओर बड़ी बहादुरी के साथ देखा : 'मैंने भी उसे खत भेजा है, अगर तुम चाहते हो तो मैं तुम्हें बता रहा हूँ; और मैंने अपने खत मे उससे दरखास्त की है कि वह न आये। हाँ, मैं सोचता हूँ कि हमें अपने मामले स्वयं ही तय करने चाहिए और अजनबी लोगों की ओर नहीं ताकना चाहिए।

लॉतिये ने आत्मसंयम खोते हुए, गुस्से मे काँपते अपने साथी पर निगाह डाली और बोला:

'तुमने ऐसा किया तो नही है, तुमने ऐसा किया तो नही है ?'

'मैंने किया है, निस्संदेह ! और तुम जानते हो मै प्लूचर्ड पर विश्वास करता हूँ; वह जाना हुआ और विश्वसनीय व्यक्ति है, कोई भी उस पर भरोसा कर सकता है। परन्तु तुम्हें मालूम होना चाहिए कि तुम्हारे विचारो से मै जरा भी प्रभावित नही हूँ, तुम मजदूरों के भविष्य को और भी संकटाकीर्ण बना दोगे ! राजनीति, सरकार, और इन सब बातों की मै जरा भी परवाह नहीं करता ! मैं चाहता यह हूँ कि मजदूरों के साथ अच्छा सलूक हो। मैंने बीस वर्षों तक नीचे काम किया है, मैंने दुख और तकलीफ झेलते हुए अपना पसीना बहाया है, और मैंने कसम खाई है कि उन गरीब भिखारियों के लिये, जो अब भी वहाँ काम करते हैं, स्थिति को सहूलियत वाली बनाने की सतत चेष्टा करता रहूँगा, और मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि अपने विचारों से तुम कभी भी कोई चीज नहीं पा सकते। जब वे भूख से प्रताड़ित होकर नीचे जाने को मजबूर हो जायंगे तो वे पहले से अधिक पददलित बन जायंगे; कम्पनी उन्हें हड़ताल के बदले मे कोड़ों से मुआवजा देगी, एक भागे हुए कुत्ते की तरह जिसे मार-मार कर पुनः स्वामिभक्त बना दिया जाता है। इसी को मैं रोकना चाहता हूँ, तुम समझे !'

फिर उसने आवाज ऊँची करते हुए अपना पेट आगे को धकेला और पाँव फैला कर आराम से खड़ा हो गया। उसका धैर्य, न्याय प्रिय व्यक्ति का स्वभाव उसके स्पष्ट वाक्यों से झलक रहा था जो अनायास ही उसके मुंह से निकल रहे

थे। यह विश्वास करना मूर्खता नहीं है कि कोई एक ही बार से दुनिया को बदल देगा, मजदूरों को मालिकों के स्थान पर बैठा देगा और दौलत का बटवारा कर देगा मानो वह कोई सेब का दाना हो ? इसे मूर्तरूप देने में, शायद, सैकड़ों-हजारों वर्ष लग जायंगे। तब, अपने उन चमत्कारों की बकवास बन्द करो ! सब से अधिक समझदारी की योजना तो यह थी कि, अगर कोई अपनी नाक रखना चाहता है तो, सीधे आगे आकर, सभव सुधारों की माँग रखी जाय, संक्षेप में हर अवसर पर मजदूरों के हितो को सुधारा जाय। अब तक कम्पनी को राह पर लाने के लिए, अपने को इस काम में लगा कर, उसने भरसक कोशिश करली है; अगर वह नही जानती तो छोड़ो इसे ! जिद् करने से तो वे ही भूखों मरेंगे।'

लॉतिये ने उसे बोलने दिया, क्रोध के मारे उसने स्वयं बोलना बंद कर दिया था। तब वह चिल्लाया।

'तुम्हारी धमनियों में जरा भी खून नहीं है, बाई गाड ?'

एक क्षण को उसकी इच्छा हुई कि वह उसे मारे लेकिन इसे रोकने के लिए वह लम्बे-लम्बे डग मारता हुआ हाल का चक्कर लगा रहा था और अपना गुस्सा उन बेंचों पर उतार रहा था जिनके बीच वह रास्ता बना रहा था।

'हर सूरत में दरवाजा बंद करो', सोवरायन ने राय दी। 'इसकी कोई जरूरत नहीं कि कोई बातें सुने।'

स्वयं ही दरवाजा बंदकर वह चुपचाप एक कुर्सी पर जा बैठा। उसने एक सिगरेट बनाई और आँकने की दृष्टि से वह उन दोनों की ओर देख रहा था, उसके होंठ मंद मुस्काराहट से खिंच से गए थे।

'क्रोधित होने से तुम्हें कोई लाभ न होगा,' 'रसेन्योर ने न्यायोचित ढंग से कहा। पहले मैं विश्वास करता था कि तुममें समझदारी होगी। साथियों को शांति की सलाह देना, उन्हें घरों में रहने को कहना और अपनी शक्ति का उपयोग व्यवस्था कायम रखने में करना बुद्धिमत्ता होती। लेकिन अब तुम उन्हें संकट की ओर धकेलना चाहते हो।'

प्रत्येक बार बेंचों के बीच घूमकर आने पर लॉतिये रसेन्योर के पास तक जा रहा था और उसका कंधा पकड़ कर उसे झकझोरता हुआ उसके मुँह पर अपने प्रत्युत्तर में चिल्ला रहा था :

'लेकिन, इस सब को दिमाग से निकाल दो ! मैं भी शांति चाहता हूँ। हाँ, मैंने उन पर आदेश लागू किया है ! हाँ, मैं अब भी उन्हें उग्र न बनने की सलाह देता हूँ। परन्तु इस सब के बावजूद खिल्ली उड़ाना तो सहन नहीं होता। तुम

भाग्यशाली हो कि शांत रह सकते हो। अब, कभी-कभी ऐसे क्षण आते हैं जब मैं महसूस करता हूँ कि मैं पागल हो गया हूँ।'

वह अपनी ओर से अपनी गलती कबूल कर रहा था, एक अनुभवहीन नौ सिखिये के रूप में वह अपनी काल्पनिक दुनिया के सागर में गोते खा रहा था : एक ऐसे शहर का उसका धार्मिक स्वप्न था जिसमें न्याय का शासन होगा, सब लोगों में भाई चारा रहेगा। यह अच्छा तरीका है! दुनिया का अन्त होने तक आदमी आदमी को भेड़िये की तरह खाता हुआ देखते रहे और हाथ पर हाथ धरे बैठा रहे। नहीं, हस्तक्षेप करना ही होगा, अन्यथा अन्याय ही सर्वोपरि बन जायगा, और अमीर हमेशा गरीब का खून चूसता रहेगा। इसलिए वह अपनी पहले कही गई इस बात को बेवकूफी मानता है कि राजनीति को सामाजिक प्रश्न से बिल्कुल अलग कर देना चाहिए। तब वह कुछ भी नहीं जानता था, अब वह झूठा दावा करने लगा था कि उनका भी एक तरीका है। वह उन सभी सिद्धातों के संमिश्रण को, जिन्हे उसने पढ़ा और बाद में परित्याग कर दिया था, समझाने की कोशिश कर रहा था गो कि उसके समझाने का ढंग बड़ा बेतरतीब था क्योंकि वह खुद उन्हे भली भाँति नही समझता था। शीर्षस्थ स्थान पर कार्ल-मार्क्स का विचार था : शोषण का परिणाम पूँजी है, श्रम का यह कर्तव्य और विशेषाधिकार है कि वह उस चुराई गई सम्पत्ति को पुनः छीन ले। व्यावहारिक रूप मे पहले उसने प्रूधों की भाँति पारस्परिक ऋण प्रदान करने वाले एक बड़े बैंक की बात सोची, जो बीच के वर्ग को कुचल दे; फिर लसाल की सहकारी समितियों की बात सोची, राज्य द्वारा नियंत्रित होकर शनैः शनैः विश्व को एक बड़े औद्योगिक शहर मे बदल दें। इससे उसका उत्साह बढ़ा था लेकिन अन्त मे इसे नियंत्रित करने की दिक्कतों से झुंझला कर वह हाल मे 'समुदायवाद' (कलेक्टिविज्म) मे पहुँचा था। उसकी माँग थी कि उत्पादन के सभी साधन समुदाय के हाथो मे सौंप दिये जायँ। परन्तु यह अस्पष्ट ही रहा। वह नहीं जानता था कि इन नये स्वप्न को कैसे पूरा करे। अब भी वह तर्क और सद्भावना के कारण कुछ निश्चय था। उसने सिर्फ इतना ही कहा कि सर्व प्रथम सरकार को हाथ में लेने की बात है, बाद में देखा जायगा।

'लेकिन, तुम्हे क्या हो गया? तुम क्यों बुर्जुआ बनते जा रहे हो?' पुनः रसेन्योर के सामने खड़े होकर बड़े जोरों से उसने दलील दी। 'तुम तो खुद कहा करते थे कि एक न एक दिन विस्फोट होगा।'

रसेन्योर थोड़ा सा शरमाया : 'हाँ, मैंने ऐसा कहा था। और अगर विस्फोट हुआ तो तुम देखोगे कि मैं कायरता नहीं दिखाऊँगा। मैं तो सिर्फ उन

लोगों में से नहीं बनना चाहता जो कि अपनी स्थिति बनाने के लिए गड़बड़ी को और भी बढ़ा देते हैं।'

इस बार शरमिंदा होने की लॉतिये की पारी थी। दोनों व्यक्ति अब प्रति-द्वन्द्विता की होड़ में एक दूसरे के प्रति ईर्ष्या और द्वेष मानते हुए चिल्लाना बंद कर चुके थे। उन दोनों के बीच कटुता पैदा हो जाने की तह मे सैद्धांतिक मतभेद था, एक हद दर्जे का क्रांतिकारी था और दूसरा दूरदर्शिता का कायल था। यह विचार धारायें उन्हें उनके सच्चे-सही विचारो से दूर ले जाकर उस घातकता की ओर घसीटे लिए जा रही थीं, जिसे मनुष्य अपने लिए चुनता नही है। और सोवरायन, जो सुन रहा था, अपने पीले, लड़कियों के से चेहरे से तिरस्कार का भाव प्रदर्शित कर रहा था—ऐसे व्यक्ति की भाँति निराशापूर्ण तिरस्कार, जो शहीद की ख्याति की इच्छा के बिना अप्रसिद्धि मे ही अपना जीवन उत्सर्ग करने को तैयार हो।

'तब यह बातें तुम मेरे बारे मे कह रहे हो ?' लॉतिये ने पूछा, 'तुम ईर्ष्या रखते हो !'

'किस बात की ईर्षा?' रमेन्योर ने उत्तर दिया। 'मैं बड़ा आदमी होने का ढोंग नहीं करता। मैं मोंटमू में एक शाखा खोलने की कोशिश नहीं करता ताकि मैं उसका सेक्रेटरी बना दिया जाऊं।'

दूसरे व्यक्ति ने उसे रोकना चाहा लेकिन उसने इतना कहा : 'तुम साफ-साफ क्यों नहीं कहते ? तुम्हें इन्टरनेशनल की जरा भी परवाह नहीं है, तुम्हें जलन इस बात की है कि नार्ड की प्रसिद्ध फेडरल कौसिल से सम्पर्क रखने वाला व्यक्ति तुम्हारा मुखिया बनेगा !'

फिर वहाँ चुप्पी छा गई। लॉतिये काँपता हुआ बोला—'अच्छी बात है। मुझे अपने बारे में कुछ नहीं कहना है। मैं हमेशा तुम्हारी सलाह लेता रहा हूँ क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम मेरे से पहले से यहाँ मोर्चा ले रहे हो। परन्तु तुम किसी को भी अपने साथ निभा नहीं सकते इसलिए मैं भविष्य में अकेले ही काम करूँगा। और सर्वप्रथम मैं तुम्हें चेतावनी देता हूँ कि अगर प्लूचर्ड नहीं भी आता तब भी बैठक होगी और साथी लोग शामिल होंगे।'

'ओह ! शामिल होना !' सराय मालिक ने कहा, 'शामिल होना ही काफी नहीं है, तुम्हें उनसे उनका चंदा भी लेना होगा।'

'बिल्कुल नहीं। इन्टरनेशनल हड़ताली मजदूरों को समय देता है। वह तत्काल हमारी मदद करेगा और हम बाद में देते रहेंगे।'

रमेन्योर आपे से बाहर हो गया।

'अच्छी बात है, हम देखेंगे। मैं भी तुम्हारी इस बैठक में बुलाया गया हूँ

और मैं बोलूंगा। मैं तुम्हें अपने साथियों को गुमराह न करने दूंगा, मैं उन्हें बता दूंगा कि उनका सच्चा हित किस बात में है। हम देखेंगे कि वे किस की बात मानते है मेरी कि, जिसे वे तीस वर्षों से जानते है, या तुम्हारी, जिसने एक वर्ष से कम समय में ही हमारे बीच हर चीज उलट-पलट डाली है। नहीं, नहीं ! इसका फैसला करना ही होगा ! हम देखेंगे कि हममें से कौन दूसरे को कुचलता है।'

और दरवाजे को जोरों से बंद करता हुआ वह बाहर निकल गया। फूलों की मालायें छत की ओर उड़ने लगी और रुपहरी शीलडें दीवारों से टकराने लगीं। फिर उस बड़े कमरे मे गहरी खामोशी छा गई।

टेबुल के समाने बैठा हुआ सोवरायन अपनी आदत के अनुसार शांति मे सिगरेट पी रहा था। चुपचाप कुछ क्षण चहल-कदमी के बाद लॉतिये अपनी भावनाओं को व्यक्त करने लगा। अगर वे मेरे पास आते है और उन्होंने उस मुस्त मोटू को छोड़ दिया है तो क्या यह मेरा कसूर है ? और जनप्रिय बन जाने लिए वह अपनी सफाई देने लगा। वह स्वयं नही जानता कि यह सब कैसे हुआ, बस्ती वालों मे मित्रता, खनिकों का विश्वास पात्र बनना और आज जो ताकत उसके पास है। इस आरोप पर कि उनके अपनी महत्वाकांक्षाओं के आगे हर चीज को गड़बड़ा डाला है,उसे बेहद क्रोध आ रहा था; वह अपनी भाईचारे की भावना को व्यक्त करने के लिए अपना सीना ठोकने लगा।

यकायक वह सोवरायन के आगे रुका और बोला— 'तुम जानते हो, अगर मैंने कभी भी यह सोचा हो कि मेरे स्वार्थ के लिए किसी मित्र का खून बहे और कोई इसे सिद्ध कर दे तो मैं तत्काल सब छोड़ कर अमेरिकां चला जाऊँगा !'

इंजनमैन ने अपने कंधे सिकोड़े, और एक मुस्कराहट उसके होठों में आई।

'ओह, खून', वह बोला। 'इससे क्या फरक पड़ता है ? धरती को इसकी जरूरत है।'

लॉतिये शांत होते हुए एक कुर्सी पर बैठ गया और उसके अपनी कोहनियाँ टेबल पर जमा दीं। उसका साफ चेहरा, स्वप्निल आँखें, जो कभी-कभी लाल रोशनी फेंकती हुई खूंखार बन जाया करती थीं, उसे परेशान किया करती थीं और उसकी इच्छा शक्ति पर एकाधिकार रखती थी। अपने कामरेड की चुप्पी के बावजूद, उस शांति से स्वयं विजित सा वह शनैः शनैः अपने को व्यस्त सा महसूस कर रहा था।

'अच्छा', उसने पूछा, 'तुम मेरी जगह होते तो क्या करते ? क्या जो कुछ मैं कर रहा हूँ सही नहीं कर रहा हूँ ? क्या हमारे लिए इस संगठन में शामिल होना बेहतर नहीं है ?'

सोवरायन ने, धीरे से मुंह से धूंए का गुब्बार छोड़ते हुए अपना प्रिय वाक्य दुहराया।

'ओह ! बेवकूफी ! लेकिन इसके साथ साथ हमेशा ऐसा होता है। अलावा इसके, उनका इन्टरनेशनल जल्दी ही फैसला करा देगा। उसने इसे हाथ में ले लिया है।'

'तब किसने ?'

'उसने !'

उसने यह शब्द धीरे से एक धार्मिक आस्था के साथ, पूर्व की ओर निगाह डालते हुए कहा। वह विनाश के देवता 'बकूनिन' की बात कर रहा था।

'वही अकेला बिजली की सी चपेट दे सकता है,' वह बोलता गया, 'और तुम्हारे यह विद्वान लोग, जो विकासवाद बघारते हैं, महज कायर है। तीन वर्षों से पहले ही, तुम्हारा 'इन्टरनेशनल' उसके आदेश मे, पुरानी दुनिया को कुचल डालेगा।

लॉतिये, चौकन्ना होकर सुनने लगा। वह ज्ञान पिपासुसा, इस विनाश के देवता की पूजा की जानकारी के लिये छटपटा रहा था जिसके बारे में इंजनमैन यदाकदा चंद शब्द कह दिया करता था। ऐसा प्रतीत होता था कि कुछ रहस्य वह अपने आप में छिपाये है।

'अच्छा, जरा मुझे समझाओ तो, तुम्हारा उद्देश्य क्या है ?'

'हर चीज को नष्ट करना। कोई राष्ट्र न रह जाय, कोई सरकार न रहे, कोई दौलत न रहे, न ईश्वर ही रहे और न पूजा ही।'

'मैं अच्छी तरह समझा, इसमे आखिर क्या परिणाम हासिल होगा ?'

'आदिम काल के प्रारंभिक वर्गविहीन कम्यून बनेंगे, नयी दुनिया बसेगी, हर चीज नई होगी।'

'इसे सम्पादन करने का तरीका ? तुम कैसे इसे आरंभ करना चाहते हो ?'

'आग से, विष से और छुरे से। लुटेरा सच्चा वीर है, प्रसिद्ध बदला लेने वाला, काम करने मे क्रांतिकारी है जिसके पास किताबों के कोई वाक्य नहीं हैं। हमें, शक्तिशाली को डराने के लिए लगातार विल्पव करने की जरूरत है, तभी जनता जाग्रत होगी।'

अपनी बातों के दौरान में सोवरायन भयंकर हो उठा था। उत्तेजना से वह कुर्सी से उठ बैठा था, उसकी पीली आँखों से भयंकर लपट सी निकल रही थी और उसके नाजुक दीखने वाले हाथों ने मेज के कोने को ऐसी मजबूती से पकड़ रखा कि ऐसा प्रतीत होता था कि वह टूट जायगी। नवयुवक ने उसकी ओर भयभीत नजरों

से देखा। वह उसके बारे में सुनी गई कहानियों के बारे में सोच रहा था जिसकी एक अस्पष्ट झलक उसने देखी थी। वह कल्पना कर रहा था, जार के महल के नीचे सुरंग बिछाई जा रही है, जंगली सुअरों की तरह पुलिस के प्रधानों के छुरे घुसेड़े जा रहे हैं और उसकी प्रेमिका, जो एकमात्र औरत थी जिसे उसने प्यार किया था, एक सुबह, जबकि वर्षा हो रही थी मास्को में फाँसी पर लटका दी गई है और भीड़ में खड़ा होकर अपनी आँखों से आखिरी बार उसने उसका चुम्बन लिया है।

'नहीं! नहीं!' लॉतिये विह्वल हो उठा, मानो वह अपनी मुखमुद्रा से इन वीभत्स दृश्यों को दूर ठेलना चाह रहा हो। 'अभी हमें यहाँ वह सब नहीं करना है। हत्यायें और आगजनी, कभी नहीं। यह राक्षसी और अन्यायपूर्ण है, सभी साथी उठेंगे और अपराधी का गला घोंट देंगे।'

अलावा इसके वह कुछ समझ नहीं पाया; विश्व के समूल विनाश के इस अंधकारपूर्ण स्वप्न को उसकी पीढ़ी की साधारण बुद्धि स्वीकार नहीं कर सकती कि खेत की घास की तरह सब काट कर बराबर कर दो। तब फिर बाद में वे क्या करेंगे? पुनः राष्ट्रों का उत्थान कैसे होगा? वह इसका उत्तर चाहता था।

'मुझे अपना कार्यक्रम बताओ। हमें जानना चाहिए कि हम कहाँ जा रहे हैं।'

तब सोवरायन ने शांतिपूर्वक, शून्य की ओर ताकते हुए अपनी बात समाप्त की: 'भविष्य के बारे में तर्क करना जुर्म है, क्योंकि यह विशुद्ध विनाश को रोकता और क्रांति की प्रगति में हस्तक्षेप करता है।'

इस पर लॉतिये हँसे बिना न रह सका गोकि एक ठंढी सिरहन-सी उसके शरीर पर दौड़ गई थी। अलावा इसके वह सहर्ष कबूल करता था कि इन विचारों के पीछे कोई ऐसी चीज, ऐसी ताकत है, जो उनकी भयावह सामान्यता की ओर उसे आकर्षित करती है। अगर वह इन बातों को अपने साथियों के सामने दुहराता है तो वह रसेन्योर के हाथों में खेलने लगेगा। व्यावहारिक होना आवश्यक है।

विधवा डीमर ने प्रस्ताव रखा कि उन्हें दोपहर का भोजन कर लेना चाहिए। वे सहमत हो गए और सराय के संलापगृह में चले गए, जो एक हटाये जा सकने वाले पार्टीशन द्वारा नाचघर से विभाजित कर दिया गया था। जब वे आमलेट और पनीर खा चुके तो इजनमैन ने जाने की इच्छा प्रकट की, गोकि लॉतिये ने उसे रोकने का प्रयास किया।

'क्यों? तुम्हारी व्यर्थ की बेवकूफी की बातें सुनने को? मैं यह सब बहुत देख चुका हूँ, गुड डे।'

अपने सामान्य, सौम्य तरीके से वह अपने होठों के बीच सिगरेट दबाये चला गया ।

लॉतिये की चिन्ता बढ़ गई । एक बज चुका था और प्लूचर्ड निश्चय ही अपना वायदा तोड़ रहा था । १॥ बजे प्रतिनिधि भी पहुँचने लगे थे, उसे उनका स्वागत भी करना था क्योंकि वह देखना चाहता था कि कौन आया है । उसे डर था कि कंपनी अपने खुफिया भेज सकती है । उसमे प्रत्येक निमंत्रणपत्र की जाँच की और इस बात को नोट किया कि कौन अन्दर आया है, बहुत से लोग बगैर चिट्ठी के अन्दर आये और उसने उन्हें अन्दर जाने दिया गया क्योंकि वह उन्हें जानता था । दो बजे रेसेन्योर आया और काउन्टर के पास बातें करते हुए इत्मीनान से अपना पाइप खत्म करने लगा । इस उत्तेजना दिलाने वाली चुप्पी से लॉतिये और परेशान हो गया था, और कुछ लोग तो महज तमाशा देखने आये थे—जाचरे, माक्यूट और अन्य, इन लोगों को हड़ताल की कोई चिन्ता नही थी, और निठल्ले बैठे रहने मे बड़ा आनन्द मिलता था, मेजों के पास बैठे अपने आखरी दो सूज शराब में खर्च कर देने के बाद वे खीस निपोर रहे थे और आने-वाले साथियों की खिल्ली उड़ा रहे थे कि वे बेवकूफ बनने चले आये है ।

पन्द्रह मिनट और बीत गए, हाल मे अधैर्य छाने लगा, तब लॉतिये ने निराश होकर कुछ निश्चय-सा किया और वह अन्दर जाने की सोच ही रहा था कि विधवा डीसर ने, अपना सिर निकाल कर बाहर झाँकते हुए सूचना दी ।

'वह आ गया है, तुम्हारा दोस्त !'

वास्तव मे वह प्लूचर्ड ही था । वह एक घोड़ागाड़ी मे बैठकर आया था । तत्काल वह पटरी पर कूद पड़ा । दुबले-पतले और अच्छे चेहरे-मोहरे वाले इस व्यक्ति का माथा बड़ा चौड़ा था । अपने काले रंग के फ्राक कोट मे वह रविवार के सुथरे कपड़े पहने खाता-पीता मजदूर लगता था । पाँच वर्षों मे उसने हथौड़े की एक भी चोट नहीं चलाई थी, वह अपने बनाव-ठनाव के प्रति सतर्क था, विशेष रूप से अपने बाल कंघे से सँवारने मे; मंच पर अपनी सफलताओं का उसे नाज था; लेकिन उसके अवयव अब भी सख्त थे, लोहे मे खाये हुए उसके हाथों की अंगुलियों के नाखून अभी दुबारा नहीं पनपे थे । बड़ा क्रियाशील था । वह अपनी महत्वकांक्षा को कार्यान्वित कर रहा था, अपने विचारों को मजदूरों के सामने रखने के लिए निरंतर अविश्रान्त प्रान्त भर का दौरा कर रहा था ।

'आह ! नाराज न होना,' उसने प्रश्नों और उलाहनों का पहले से ही अनुमान सा लगाते हुए कहा । 'कल, सुबह पूली में भाषण, साँझ को वेलेन्का में बैठक के बाद आज, मार्शेनीज में सुर्वगनेट के साथ दोपहर का भोजन किया, फिर यह घोड़ा

गाड़ी किराये में लेकर आना पड़ा। मैं बहुत थक गया हूँ, यह तो तुम्हें मेरी आवाज़ से ही पता चलता होगा। परन्तु कोई बात नहीं; कुछ भी हो, मैं बोलूँगा।'

जब वह बोन-जोय के करीब था तब उसे याद आया। 'अरे ! मैं तो टिकट भूला जा रहा हूँ, बगैर उनके कैसे काम चलेगा ?'

वह घोड़ागाड़ी तक वापस गया और उसने एक छोटा सा काला ऊन से लपेटा बक्स निकाला, जिसे वह बगल में दबाये रहा।

लॉतिये खुश होकर उसके पीछे-पीछे चलने लगा और रसेन्योर कुछ खिंचाव से उससे हाथ मिलाने की हिम्मत न कर सका। लेकिन अगले व्यक्ति ने जल्दी-जल्दी उसके पत्र के बारे में एक-दो शब्द कहकर उसका हाथ दबा लिया था : 'क्या बेकार का ख्याल रहा, यह बैठक क्यों न की जाय ? जब भी सम्भव हो बैठक करनी ही चाहिए।' बिचवा चीसर ने पूछा कि क्या वह कुछ लेगा ? लेकिन उसने इन्कार कर दिया—'कोई जरूरत नहीं, मैं बगैर पिये ही बोलता हूँ। सिर्फ मुझे जरा जल्दी है और इरादा है कि सन्ध्या तक जसलां पहुँच जाऊं क्योंकि वहाँ मैं चाहता हूँ लेगूजेक्स से किसी समझौते पर पहुँच सकूं।' तब वे सब साथ ही नाचघर में प्रविष्ट हुए। माहे और लेबक्यू भी, जो देर से पहुँचे थे उनके पीछे-पीछे गए। सब लोग इत्मीनान से हो जाँय इसलिए दरवाजा बन्द कर ताला लगा दिया गया। इससे मजाकिये हँसने लगे, जाचरे माक्यूट से बोला कि अब शायद यह सभी लोग यहाँ बच्चे पैदा करेंगे।

लगभग सौ खनक बन्द कमरे में बेंचों में बैठे हुए थे और फर्श से आखरी बार डांस की सुखद गंध-सी उड़ रही थी। आपस में काना-फूसी होने लगी और सभी की निगाहें आगन्तुकों की ओर घूम गईं, जो आकर खाली जगह में बैठ गए थे। वे लिली के इस भद्रपुरुष को देख रहे थे और उसके काले फ्राक-कोट में उन्हें आश्चर्य और बेचैनी सी हो रही थी।

लेकिन लॉतिए के प्रस्ताव पर तत्काल बैठक की कार्रवाई शुरू हो गई। उसने नाम पढ़ कर सुनाए और अन्य लोगों ने हाथ उठा कर उन्हें स्वीकार किया। क्लूचर्ड सभापति चुना गया और माहे तथा लॉतिये सहायक। कुर्सियाँ इधर-उधर हुईं और सभी अपने स्थानों पर बैठ गए; एक क्षण को उन्होंने देखा कि सभापति टेबुल के नीचे झुका जहाँ उसने बक्स को खिसका दिया जिसे उसने बराबर अपने ही पास रखा था। जब वह व्यवस्थित ढंग से बैठ गया तो उसने सब का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के उद्देश्य से मेज पर हल्का सा मुक्का मारा; फिर अपनी मोटी आवाज में बोलना शुरू किया :

'नागरिको !'

थोड़ा सा दरवाजा खुला और वह चुप हो गया। यह विधवा डीसर थी जो रसोई के रास्ते एक ट्रे में छः गिलास रखे चली आ रही थी।

'अपने को कष्ट न दो' वह बोली। 'जब कोई बोलता है तो प्यास लगनी स्वाभाविक है।'

माहे ने उससे ट्रे ले ली और प्लूचर्ड फिर अपनी बात कहने लगा। उसने बताया कि किस प्रकार वह मोटसू के खनकों द्वारा किये गए स्वागत से प्रभावित हुआ है, उसने अपने विलम्ब का कारण बताया, अपनी थकान और अपने गले की खराश का जिक्र किया। फिर उसने नागरिक रसेन्योर का परिचय दिया जो कुछ कहना चाहता था।

रसेन्योर टेबुल के एक किनारे पर गिलासों के पास आकर खड़ा हो गया था, एक कुर्सी का पिछला भाग उसके लिए मंच का काम दे रहा था। वह बहुत उद्विग्न मालूम पड़ता था, फिर गला साफ करने के बाद उसने बुलन्द आवाज में भाषण आरम्भ किया :

'साथियो !'

खान में मजदूरों के ऊपर उसका प्रभाव जमाने वाली चीज उसके भाषण की शैली, उसके हँसमुख स्वभाव का वह तरीका था जिससे वह अपने श्रोताओं से बगैर थकान महसूस किये घंटों बातें किया करता था। वह ज्यादा हाव-भाव न दिखा कर, दीवार की तरह खड़ा मुस्कराता हुआ उन्हें अपने विचारों में डुबो देता था, चकित कर देता था और अंत में वे सब चिल्ला उठते थे; 'हाँ ! हाँ, सच कहा, तुम ठीक कहते हो।' कुछ भी हो, आज, पहले ही शब्द से वह तीव्र विरोध महसूस कर रहा था। इससे उसे सावधानी से आगे बढ़ना पड़ा। उसने सिर्फ हड़ताल के जारी रहने के बारे में अपने विचार प्रकट किये और 'इन्टरनेशनल' की आलोचना से पूर्व समर्थन में तालियों का इन्तजार करता रहा—'इसमें सन्देह नहीं कि प्रतिष्ठा-मर्यादा हमें कम्पनी की माँगों को स्वीकार करने से रोकती है; लेकिन कितना कष्ट होगा ! अगर अधिक दिनों इसे जारी रखना आवश्यक हो गया तो कितना भयानक भविष्य होगा ! और उनसे आत्मसमर्पण को कहे बिना वह उनके उत्साह को भंग कर रहा था। वह उन्हें बता रहा था कि बस्तियों में लोग भूख से मर रहे हैं। वह पूछ रहा था कि किस बूते पर संघर्ष के अगुवा लोग प्रतिरोध पर टिकने की सोच बैठे हैं ? तीन या चार मित्रों ने उसके समर्थन में तालियाँ बजाने की कोशिश भी की, परन्तु बहुमत की विरोधपूर्ण चुप्पी से वह प्रभावहीन बन गई। इससे झुंझलाहट भरी अस्वीकृति ने उसके शब्दों का स्वागत किया। उन पर अपनी बातों का रंग चढ़ता

न देखकर वह क्रोध में वह गया और लगा बकने कि अगर वे अजनबी लोगों के भड़कावे में आ गए तो उनपर दुर्भाग्य टूट पड़ेगा। दो-तिहाई श्रोता जबरन खड़े होकर उसको चुप कराने की कोशिश करने लगे। 'क्या तुम हमें बच्चा समझ कर इस प्रकार का व्यवहार कर रहे हो कि हम कुछ सोच-समझ नहीं सकते, यह हमारी बेइज्जती है ?' परन्तु वह बोलता चला जा रहा था, कोलाहल के बावजूद, बराबर बियर के घूँट मारता हुआ बड़े जोरों से चिल्ला रहा था कि 'मुझे अपने कर्तव्य पालन से रोक सके ऐसा व्यक्ति अभी पैदा नहीं हुआ।'

प्लूचर्ड उठ खड़ा हुआ। चूंकि वहाँ कोई घंटी नहीं थी इसलिए उसने मेज पर घूँसा मारते हुए अपनी मोटी आवाज में दुहराया : 'नागरिको ! नागरिको !'

अन्त में थोड़ा-बहुत शांति हुई और सभा ने, परामर्श के बाद रमेन्योर का भाषण समाप्त करा दिया। प्रतिनिधि, जो मैनेजर से मुलाकात के अवसर पर खानों के प्रतिनिधि बनकर गए थे, अन्य लोगों से राय कर चुके थे। सभी भुखमरी से बोखलाये हुए और नये विचारों से परेशान थे। पहले ही से वोट देने का निश्चय कर लिया गया था।

'तुम्हें जरा भी परवाह नहीं, तुम्हें क्या परेशानी है ? तुम तो भोजन पाते हो !' लेवक्यू चिल्लाया और रमेन्योर की ओर मुक्का तान कर खड़ा हो गया।

माहे को बेहद क्रोध चढ़ आया था और लॉतिये सभापति की कुर्सी के पीछे से झुककर उसे मना कर रहा था। इस चापलूसी वाले भाषण से वह स्वयं असंतुष्ट था।

'नागरिको !' प्लूचर्ड बोला, 'मुझे कुछ कह लेने दो ?' वहाँ गहरी खामोशी छा गई। वह बोला। उसकी आवाज में भारीपन और तकलीफ का आभास था। परन्तु यात्राओं में वह इसका अभ्यस्त था। वह अपने कार्यक्रमों की भूमिका बाँध रहा था। शनैः शनैः उसकी आवाज निखरनी शुरू हुई और वह उससे प्रभाव पैदा कर रहा था। अपने हाव-भाव से, हाथों को हिला-डुला कर, उपदेशक के वाक्-चातुर्य से, धार्मिक तरीके से अपने वाक्यों के अन्त में एक निराशा का पुट वह दे रहा था जिससे अन्त में श्रोता उसकी बातों को हृदयंगम कर रहे थे।

भाषण के बीच में उसने 'इन्टरनेशनल' की महानता और उससे फायदों की बात समझाई; इसी बात को लेकर वह हर नये क्षेत्र में शुरुआत करता था। मजदूर वर्ग के मुक्तिदाता के रूप में उसने इसके उद्देश्यों का ब्यौरा पेश किया। इसका प्रभावशाली ढाँचा इस प्रकार है—सबसे नीचे कम्यून, फिर उससे ऊपर प्रान्त, उससे भी ऊपर राष्ट्र और सबसे ऊपर मानवता। हर स्तर पर उसके हाथ, उसकी बाँहें उठती चली जाती थीं मानो वह भावी दुनिया का विशाल गिरजाघर तैयार कर रहा हो। फिर इसका अन्दरूनी प्रशासन है। उसने नियम पढ़कर सुनाये। कांग्रेस के बारे

में बताया और काम की बढ़ती हुई महत्ता, कार्यक्रम के प्रसार की ओर संकेत किया कि वेतन की चर्चा से आरम्भ कर अब यह सामाजिक उन्मूलन की दिशा में काम कर रहा है जिसमें यह वेतन व्यवस्था ही खत्म हो जायगी। राष्ट्र का कोई बंधन न रहेगा। सारी दुनिया के मजदूर न्याय की समान आवश्यकता से फिर एकता के सूत्र में बंध कर मध्यमवर्ग के अष्टाचार को समाप्त करते हुए, अन्त में, एक स्वतंत्र समाज की स्थापना करेंगे, जिसमें उसे काटने का हक न होगा जिसने बोया नहीं है। वह गरज-सा रहा था, उसकी साँस से निकलने वाली हवा से नीची धुंधली छत से लगी हुई रंगीन फूलों की झालरे काँप-सी रही थी जिससे उनकी आवाज की प्रतिध्वनि-सी आ रही थी।

श्रोताओं मे एक लहर सी उठी। उनमें से कुछ चिल्लाये, 'ठीक है, हम तुम्हारे साथ हैं।'

उसका भाषण जारी था, वह आगे बोला: 'तीन वर्षों से पहले ही दुनिया फतह हो जायगी। उसने विजित राष्ट्रों को गिनाना शुरू कर दिया। चारो ओर से इसके अनुयायियों की वर्षा सी हो रही है। कहीं भी नये धर्म के इतने अनुयायी अब तक नहीं सुने गये। फिर जब वे शक्तिशाली बन जायेंगे तो वे मालिकों से शर्तें मनवा सकेंगे। अपना वक्त आने पर उनका गला हमारे अंगूठों के नीचे होगा।'

'हाँ! हाँ! उन्हे झुकना ही पड़ेगा।'

अपनी मुखमुद्रा से उसने शांति का संकेत किया। अब वह हड़ताल के प्रश्न पर आ रहा था। सिद्धान्त रूप मे वह हड़ताल का पक्षपाती नहीं है, यह एक धीमा तरीका है, जो मजदूरों के कष्ट को बढ़ा देता है। परन्तु अच्छी स्थिति आने से पूर्व जब यह अनिवार्य सा हो जाता है, तो उन्हे इस सम्बन्ध मे अपना विचार तय कर लेना चाहिए, क्योंकि पूंजी को छिन्न-भिन्न करने की सुविधा उनके पास है और इस मामले मे उसने बताया कि हड़तालियों के लिए 'इंटरनेशनल' के पास कोष है। उसने उदाहरण दिया कि पेरिस में काँसा मजदूरों की हड़ताल के दौरान मे इन्टर-नेशनल उन्हें मदद भेज रहा है इस खबर से घबराकर मालिकों ने तत्काल सब कुछ दे दिया। लंदन में अपने खर्चे से एक बेलजियनों से भरे जहाज को, जिन्हें मालिक ले आये थे वापस भेजकर उसने एक कोलयारी के खनिकों को बचाया। इसमें शामिल हुए नहीं कि कम्पनियाँ थर्राने लगती हैं, क्योंकि लोग मजदूरों की उस बड़ी सेना में प्रवेश कर जाते हैं जो पूंजीवादी समाज की दासता मे रहने के बजाय एक दूसरे के लिए मर मिटने को मुस्तैद रहते हैं।

तालियों की गड़गड़ाहट ने उसके धाराप्रवाह भाषण को रोका। उसने अपने माथे को रुमाल से पोंछा और माहे द्वारा बढ़ाये गये एक गिलास को पीने से इंकार

किया। जब वह फिर शुरू कर रहा था तो पुनः तालियों ने उसके भाषण को संक्षिप्त कर दिया।

उसने जल्दी में लॉतिये से कहा, 'बस, इतना काफी है। उन्हें बहुत कुछ मिल गया है। जल्दी! कार्ड दो!'

'नागरिको!' वह कोलाहल पर अधिकार जमाता हुआ चिल्लाया। 'यह रहे सदस्यता के कार्ड। आपके प्रतिनिधि ऊपर आ जायं और मैं इन्हें बाँटने को उन्हें दे दूंगा। बाद में हम हर चीज ठीक कर सकते है।'

रसेन्योर तेजी से आगे बढ़ा और उसने फिर विरोध किया। उसे भाषण करता देख लातिये भी पुनः खिन्न हो उठा। इसके बाद बड़ी गड़बड़ी फैल गई। लॉतिये अपना घूसा तान कर ऊपर कूदा, मानो वह लड़ रहा हो। माहे भी खड़ा होकर बोल रहा था लेकिन कोई भी एक शब्द भी नहीं समझ पा रहा था। इस बढ़ती हुई रौंदा-रौंदी में जमीन से धूल उड़ रही थी, पहले बाल नाचों की तैरती धूल, पुटरों और ट्रामरों के शरीर की तीव्र गंध से हवा को दूषित बनाती हुई।

यकायक छोटा दरवाजा खुला, और विधवा डीमर के पेट और छाती ने उसे घेर सा लिया, वह बिजली की कड़क-सी आवाज से चिल्लाई:

'ईश्वर के लिए! चुप! लुटेरे!'

यह जिले का कमिश्नर था, जो रिपोर्ट तैयार करने और सभा भंग करने देर से पहुँचा था। चार सिपाही उसके साथ थे। पाँच मिनट तक विधवा उन्हें अटकाये रही। वह जवाब दे रही थी कि उसके यहाँ दावत है और उसे पूर्ण अधिकार है कि वह मित्रों को बुलाये। लेकिन उन्होंने धकिया कर उसे हटा दिया और वह अपने बच्चों को सूचित करने दौड़ी आई थी।

'यहाँ से निकल भागना चाहिए', उसने पुनः कहा, 'एक दुष्ट डाकू सामने के द्वार पर खड़ा है। इससे कुछ बिगड़ता नहीं, मेरे छोटे से लकड़ी घर के पीछे से रास्ता है। सब जल्दी करो।'

कमिश्नर अपने मुक्कों से दरवाजा पीट रहा था और चूंकि उसे खोला नहीं गया था, इसलिए वह उसे तोड़ डालने की धमकी दे रहा था। किसी जासूस ने जरूर खबर दी होगी, क्योंकि वह चिल्ला रहा था बैठक अवैध है और बहुत से खनिक वहाँ बगैर निमंत्रण के उपस्थित है।

हाल में गड़बड़ी बढ़ रही थी, वे इस प्रकार बचकर नहीं निकल सकते थे; उन्होंने अभी हड़ताल तोड़ने या जारी रखने के पक्ष में अपना मत नहीं दिया था। सभी एक साथ बोल रहे थे। अन्त में सभापति ने मतदान का सुझाव दिया। हाथ उठ गये और प्रतिनिधियों ने जल्दबाजी में घोषित किया कि उनके अनुपस्थित

साथियों के नाम पर वे शामिल होंगे और इस प्रकार मोंटसू के १० हजार खनिक 'इन्टरनेशनल' के सदस्य हो गए। इसके बाद वहाँ भगदड़ शुरू हुई। सब लोग निकल सकें इस दृष्टि से विधवा डीसर दरवाजे से पीठ लगाकर खड़ी हो गई थी, जिससे सिपाहियों की बंदूकों के कुन्दों की मार उसकी पीठ पर पड़ रही थी। खनिक बेंचों के ऊपर से कूदकर एक के बाद एक रसोईघर और लकड़ीघर से भाग निकले थे। भागने वालों में रसेन्योर सर्वप्रथम था और लेवक्यू उसका अनुसरण कर रहा था, वह अपनी दी हुई गालियाँ भूल चुका था और योजना बना रहा था कि वह कैसे उसके साथ जाकर एक गिलास पीने का प्रस्ताव उससे करवाये। लॉतिये, छोटे से बक्से को पकड़ कर प्लूचर्ड और माहे के साथ, जो कि आखीर में स्थान छोड़ना एक सम्मान का विषय समझ रहे थे, इन्तजार करने लगा। ज्यों ही वे गायब हुए ताला टूट गया और कमिश्नर ने अपने आप को एक विधवा के सामने पाया जिसका पेट और छाती अब भी रुकावट बनी हुई थी।

'मेरे घर की हर चीज तोड़-फोड़ कर तुम्हारा फायदा होने वाला नहीं है' वह बोली। 'तुम देख लो, कोई भी तो यहाँ नहीं है।'

कमिश्नर ने जो कि एक सुस्त आदमी था, महज उसे जेलखाने में बंद करने की धमकी दी और फिर अपने चारों सिपाहियों के साथ रिपोर्ट तैयार करने चला गया। जाचरे और माक्यूट उन लोगों की खिल्ली उड़ाते हुए इस सशस्त्र दस्ते को झाँसा देने में अपने साथियों के कौशल की तारीफ कर रहे थे।

बाहर निकलने के बाद, लॉतिये बक्स से परेशान-सा तेजी से बढ़ रहा था और दोनों उसके पीछे पीछे थे। उसे अचानक पेरी का स्मरण हो आया और उसने पूछा कि पेरी क्यों नहीं आया? माहे ने भी दौड़ते-दौड़ते उत्तर दिया कि वह बीमार है—बीमारी का बहाना है, उसे डर था कि वह भी सहमत हो जायगा। वे चाहते थे कि प्लूचर्ड रुक जाय परन्तु उसने घोषित किया कि उसे तत्काल जैसली रवाना हो जाना चाहिए, वहाँ लेगूजक्स उसके आदेश का इन्तजार करता होगा। तब दौड़ते हुए उन लोगों ने उसकी यात्रा शुभ हो इसकी कामना की और तेजी से भागते हुए मोंटसू पार कर गए। वे हाँफ रहे थे इसलिए चंद शब्द ही वे बोल पाये। लॉतिये और माहे अब अपनी विजय के प्रति पूरा यकीन रखते हुए इत्मीनान से हँस रहे थे। जब 'इन्टरनेशनल' मदद भेजेगा तो कंपनी उनसे काम शुरू करने की भीख माँगेगी और आशा की इस उमंग में, सड़कों के फुटपाथ से गुजरते हुए भारी बूटों के धमाके में वहाँ कुछ और भी वस्तु थी। कोई बड़ी डरावनी-भयानक वस्तु, हिंसा का एक झोंका, जो कि देश के चारों ओर बस्तियों को प्रज्ज्वलित कर देगा।

५

दूसरा पखवारा भी बीत गया। जनवरी का आरंभ था। विस्तृत खुले मैदान में शीत का प्रकोप बढ़ गया था और दुख-दैन्य तो और भी कष्टकारी हो चला था। बढ़ती हुई भुखमरी के नीचे दबी हुई बस्तियों में प्रतिक्षण संकट बढ़ता ही जा रहा था। लंदन में 'इन्टरनेशनल' द्वारा भेजे गए चार हजार फ्रैंक में मुश्किल से तीन दिन की रोटी चली थी और उसके बाद कुछ भी नहीं आया। इस बड़ी मृत आशा ने उनके उत्साह को ढीला कर दिया था। अब किस बात के आसरे वे रहें जब कि उनके भाइयों ने उन्हें छोड़ दिया है? वे अपने आपको दुनिया से पृथक और इस भयानक ठंढ के बीच खोया महसूस करते थे।

मंगलवार को ड्यू-सेंट-क्वारेंट बस्ती में कोई भी साधन बाकी नहीं बचा था। लाँतिये और अन्य प्रतिनिधि अपनी समस्त ताकत लगा चुके थे। पड़ोसी कस्बों और पेरिस में नये सिरे से चंदा वसूला जा रहा था, धन जमा करने के लिए लेक्चरों को संघटित किया जा रहा था। परन्तु इन प्रयासों से कुछ भी हासिल नहीं हुआ। जनमत, जो कि पहले प्रभावित हुआ था, हड़ताल के इतनी लम्बी खिंच जाने से अब उदासीन हो गया था। उसे इसके इतने चुपचाप चलने और कोई नाटकीय घटना न घटने से अब इसमें रस नहीं मिल रहा था। छोटी-मोटी रकमों से मुश्किल से गरीब परिवारों को पूरा पड़ता था और दूसरे लोग अपने कपड़े तथा एक-एक कर घर का सामान बेच कर गुजारा कर रहे थे। हर चीज दलालों के पास जा रही थी, गद्दों की रुई, रसोई के बर्तन और यहाँ तक कि फर्नीचर भी। एक क्षण को वे सोचते थे कि वे बच गए हैं क्योंकि मोंटसू के छोटे-छोटे दूकानदारों ने, जिनका व्यापार माइग्रेट ने चौपट कर दिया था, अपने ग्राहकों को वापस लाने के लिए उधार देना शुरू कर दिया था, और एक सप्ताह तक पनसारी वर्डोनिक और अन्य दो रोटी बनाने वालों ने अपनी दूकानें खोलीं। परन्तु जब उनकी रकम चुक गई तो उन्हें उधार देना बंद कर देना पड़ा। कम्पनी के पिट्ठू खुशी मना रहे थे, इससे खनिकों पर कर्जा चढ़ा था जो कि बहुत अर्से तक उन पर चढ़ा ही रहेगा। कहीं से उधार मिलने की भी कोई गुंजायश न थी और घर में कोई बर्तन भी नहीं बचा था, उनके लिए एक ही रास्ता था कि किसी कोने में जाकर पड़ जाँय और रोगी कुत्ते की तरह छटपटाते हुए मर जाँय।

लाँतिये अपना मांस तक बेचने को तैयार था। उसने अपना वेतन दे डाला था और अपने पायजामे तथा कपड़े का कोट बेचने मोंटसू गया हुआ था, माहे के घर चूल्हा जले इस बात की उसे बेहद खुशी होती थी। सिर्फ उसके बूट रह गए थे

और वह कहता था कि पाँव मजबूती से जमाये रखने के लिये वह इन्हें रोके हुए है। उसे दुख इसी बात का था कि हड़ताल जल्दी ही हो गई थी, उसके प्रोविडेन्ट फंड की काफी अच्छी रकम जमा होने से पेश्तर ही। वह विपत्ति का एक मात्र कारण इसे ही समझता था क्योंकि उसका विश्वास था कि मजदूर उस दिन मालिकों पर अवश्य विजयी होंगे जब उनके पास मुकाबला करने के लिए पर्याप्त धन हो जायगा। और उसे सोवरायन के शब्द याद आये कि कम्पनी फंड को प्रारंभ में ही खत्म करने के लिए हड़ताल की स्थिति जल्दी ला रही है।

बस्तियों के दृष्य और भोजन और गरमी के लिए आग के बगैर इन गरीब लोगों को देखकर वह बहुत दुखी हो उठता था। वह बाहर निकल कर दूर-दूर तक घूम कर अपने को थका लेना पसंद करता था। एक साँझ को, जब कि वह वापस लौटते हुए रिक्वीला से गुजर रहा था, उसे एक बुढ़िया सड़क के किनारे बेहोश मिली। इसमें सदेह नहीं कि वह भूख से मर रही थी; और उसे उठाने के बाद वह एक लड़की को चिल्ला कर पुकारने लगा जो उसे लकड़ी के अम्बार की दूसरी ओर दिखाई दी थी।

'क्यों! तुम हो' माकेटी को पहचानते हुए वह बोला, 'आओ, जरा मेरी मदद करो, हमें इसे कुछ पीने को देना चाहिए।'

माकेटी, आंखों में आंसू भरे, जल्दी में खंडहरों में उसके पिता द्वारा बनाये गए एक स्थान से जिन (शराब विशेष) और एक रोटी का टुकड़ा उठा लाई। जिन पीने से बुढ़िया को होश आया और बगैर कुछ बोले जल्दी-जल्दी रोटी चबाने लगी। वह एक खनिक की माँ थी जो कोजनी की तरफ बस्ती में रहता था और जैसली से लौटते हुए वह वहाँ गिर पड़ी थी जहां वह अपनी बहिन से आधा फ्रैंक उधार माँगने के निष्फल प्रयास को गई थी। जब वह खा चुकी तो लड़खड़ाती हुई वहाँ से रवाना हो गई।

लॉतिये रिक्वीलों के खुले मैदान में खड़ा था जहाँ कंटीली झाड़ियों के नीचे गिरते हुए ओसारे अदृश्य हो रहे थे।

माकेटी बड़ी प्रसन्नता से बोली, 'क्या तुम अन्दर आकर एक छोटा सा गिलास न पियोगे?'

और जब वह झिझका—

'तब तुम अब भी मुझ से कतराते हो?'

उसकी हँसी से विजित सा वह उसके पीछे हो लिया। उसने, जो इतनी दया उसके साथ दिखाई थी, वह प्रभावित हो उठा था। वह उसे अपने पिता के कमरे में न ले जाकर अपने कमरे में ले गई। वहाँ उसने तत्काल दो छोटे गिलासों में

जिन उड़ेली। कमरा बहुत साफ था और इसके लिए उसने उसकी तारीफ की। अलावा इसके, इस परिवार में किसी चीज का अभाव नहीं दीखता था। पिता अब भी बोरो में सईस की ड्यूटी करता था और वह यह कहते हुए कि वह निठल्ले नहीं बैठ सकती, धोबी का काम करने लगी थी, इससे उसे एक दिन का तीस सूज मिल जाता था। कोई भी स्त्री पुरुषों के साथ अपना मनोरंजन कर सकती है। लेकिन इसका अर्थ यह तो नहीं कि वह निठल्ली होकर बैठ जाय।

'मैं कहती हूँ' यकायक उसने आकर उसके गले में बड़े प्यार से बाँहें डाल दीं 'तुम मुझे पसंद क्यों नहीं करते ?'

उसने इसे इस सुन्दर अदा से कहा कि वह हँसे बिना न रह सका।

'लेकिन मैं तुम्हें बेहद पसंद करता हूं।' वह बोला।

'नहीं, नहीं, मेरा मतलब पसंद करने से नहीं है। तुम जानते हो, मैं तुम्हारे लिए मर रही हूँ। तुम जानते हो कि इससे मुझे कितना सुख मिलेगा ?'

दर असल, वह छः महीने से उसे चाहती रही है। वह अब भी उसकी ओर देख रहा था और वह उसके गले में झूल-सी रही थी। वह अपनी दोनों थरथराती बाँहों से उसे दबाती रही। उसका चेहरा कामनामय प्यार से ऐसा उद्दीप्त था कि उसे गहरी सहानुभूति हो उठी। उसके बड़े गोल चेहरे में सुन्दरता न थी, उसमें कोयले से खाया हुआ पीलापन था; लेकिन उसकी आँखें चमक रही थीं, उसके शरीर से उन्माद उठ रहा था, एक प्रबल इच्छा उसे गुलाबी और युवती बनाये थी। इस विनम्र और सहज ही प्राप्त होने वाले उपहार को वह इन्कार न कर सका।

'आह ! तुम राजी हो !' वह खुशी से व्याकुल होकर बोली 'ओह, तुम रजामंद हो !'

और वह एक अक्षतयौवना कन्या की भाँति, जिसने सर्वप्रथम पुरुष के साथ सहवास किया हो, एक अवर्णीत आनन्द से विह्वल-सी होकर उससे संभोग का सुख प्राप्त करने लगी। फिर जब उसने उसे छोड़ा, तो बजाय नवयुवक के वह आभार प्रदर्शन करने लगी और बोली, 'धन्यवाद !' फिर उसने उसके हाथों को चूम लिया।

इस सौभाग्य पर लातिये कुछ शर्मिन्दा-सा हो उठा। माकेटी को भोगना किसी के लिए बड़े घमंड की बात तो थी नहीं। जाते-जाते वह कसमें खा रहा था कि ऐसा फिर दुबारा नहीं होगा। परन्तु उसकी मैत्रीपूर्ण स्मृति को वह सँजोये रहा, वह एक महत्व की लड़की थी।

जब वह बस्ती में लौटा तो उसे गंभीर खबरें मिलीं, जिससे वह इस घटना को भूल गया। अफवाह फैली थी कि कम्पनी, शायद, रियायत देना मंजूर करे

बशर्ते प्रतिनिधि मैनेजर से मिलकर पुनः प्रयास करें। सच्चाई यह थी कि इस संघर्ष मे खनिको से अधिक खान को क्षति पहुँच रही थी। दोनो ओर की जिद्द बरबादी को बढ़ा रही थी: मजदूर (श्रम) भूखों मर रहा था और पूंजी नष्ट हो रही थी। प्रत्येक बेकाम के दिन मे हजारों-लाखों फ्रेंक का नुकसान हो रहा था। हर मशीन रुक जाने पर मृत बन जाती है। काम के औजार तथा और सामान आ सकता है, परन्तु लगी हुई पूंजी बालू मे पानी के समान गायब हो जाती है। चूंकि खानों की सतह पर बचा कोयले का थोड़ा सा स्टाक भी खत्म हो चला था, खरीददार बेलजियम जाने की बातें करते थे क्योंकि भविष्य मे उन्हें इस क्षेत्र से खतरा था। परन्तु कम्पनी विशेष रूप से इसलिए भयभीत थी, गोकि यह मामला बड़ा गोपनीय रखा गया था, कि गलियारों और कटानों की क्षति बढती जा रही थी। कप्तान उतनी मरम्मत कर नहीं पाते थे। भित्ती चारों ओर से गिर रही थी और चट्टानें बराबर खिसक रही थीं। शीघ्र ही इतनी अधिक क्षति हो चुकी थी कि कोयला निकालना शुरू करने से पूर्व महीनों मरम्मत मे ही लग जाते। चारों ओर अफवाहें उड़नी शुरू हो गई थी: क्रेवेक्योर मे तीन सौ मीटर सड़क धँस कर बैठ गई है, मेडेलेन मे माउग्रोटाट संधि नष्ट हो गई और उसमे पानी भर रहा है। प्रबन्धक इसके इन्कार करते थे परन्तु यकायक, एक के बाद एक, दो दुर्घटनाओं ने उन्हें इसे कबूलने को मजबूर किया। एक दिन सुबह, पायोलेन के पास, मिराओ के उत्तरी गलियारे के ऊपर की जमीन धँसी हुई पाई गई जो एक दिन पहले ही धँस चुकी थी, दूसरे दिन बोरो वाली जमीन धँस गई और आसपास का इलाका इस बुरी तरह हिल उठा कि दो मकान तो भूमिसात् हो गए।

लॉतिये और प्रतिनिधि डाइरेक्टरों का इरादा जाने बिना हिचक रहे थे। डेनार्ड, जिनसे उन्होंने प्रश्न किया, उत्तर देना टाल रहा था: निस्संदेह, गलतफहमी उचित नहीं, और समझौते के लिए हरचंद कोशिश की जायगी; परन्तु वह कोई बात निश्चित नही बता पाया था। अन्त में, उन्होंने एम० हनेब्यू के पास जाने का निश्चय किया ताकि नैतिकता उनके पक्ष में रहे और बाद मे उन पर यह आरोप न लगाया जा सके कि उन्होंने कम्पनी को यह मौका नहीं दिया कि वह यह मानने पर मजबूर हो कि गलती उसने की। सिर्फ उन्होंने प्रतिज्ञा की कि वे किसी बात पर झुकेंगे नहीं और किसी भी स्थिति में, जो उचित है उसी पर अडिग रहेंगे।

वार्ता गुरुवार की सुबह हुई, जब कि बस्ती चरम संकट से हतोत्साह हो डूब-सी रही थी। यह पहली मुलाकात से कम मैत्रीपूर्ण थी। इस बार भी माहे ही प्रवक्ता था और उसने बताया कि हमारे साथियों ने हमे यह जानने भेजा है कि इन महानुभावों को कोई नयी बात तो कहनी नहीं है। पहले तो एम० हनेब्यू ने

आश्चर्य प्रकट किया : मेरे पास कोई आदेश नहीं पहुँचा, जब तक खनिक विद्रोह बन्द न करेंगे कुछ भी परिवर्तन नहीं किया जा सकता। परन्तु उसकी इस रुखाई का प्रभाव और भी बुरा पड़ा। अगर प्रतिनिधि समझौते के लिए अपनी शर्तों से इधर-उधर जाने का विचार भी करते होते तो जिस प्रकार का व्यवहार उनसे किया गया उससे वे और भी हठ पकड़ गए। बाद में, मैनेजर ने पारस्परिक रियायतों के आधार पर बातचीत की कोशिश की; अगर मजदूर तख्ते बैठाने के लिए पृथक मजूरी स्वीकार कर लें, तो कम्पनी उस दो सेन्टिम का भुगतान बढ़ा देगी जिसके बारे मे उनका आरोप है कि यह मुनाफा कमा रही है। इसके अलावा उसने कहा कि वह स्वयं यह प्रस्ताव लेकर जायेगा। कोई चीज तय नहीं हुई है परन्तु उसे इतना विश्वास है कि वह पेरिस से इस रियायत को मंजूर करवा सकता है। लेकिन प्रतिनिधियों ने इन्कार किया और अपनी मांग दुहराई कि पुरानी प्रणाली बदस्तूर रहे और फी ट्राफ पाँच सेन्टिम बढ़ाये जाँय। तब उसने स्वीकार किया कि वह तत्काल उनसे समझौता कर सकता है और दलील दी कि उन्हे अपने भूखों मरते स्त्री बच्चो के नाम पर इसे स्वीकार कर लेना चाहिए। लेकिन आँखें जमीन पर गडाये और दृढता के साथ उन्होंने भयावह जोश से कहा, 'नहीं, कदापि नहीं, हरगिज नहीं।' वे बड़ी रुखाई के साथ जुदा हुए। एम० हनेब्यू ने दरवाजा बन्द कर लिया। लॉतिये, माहे और अन्य लोग अपने भारी बूटो से पटरी को रौदते हुए आखिरी छोर तक धकेल दिये जाने की भावना से उत्पन्न मौन क्रोध मे चले जा रहे थे।·दो बजे, दोपहर बाद बस्ती की औरतों ने माइग्रेट से अपील करने का निश्चय किया। क्योंकि उस व्यक्ति को झुकाकर, एक सप्ताह के लिए और उधार पाने की यही एक मात्र आशा थी। यह विचार माहेदी ने सुझाया था, जो आदमी के अच्छे स्वभाव पर कभी-कभी बहुत ज्यादा भरोसा कर बैठती थी। उसने बूली और लेवक्यू की पत्नी को अपने साथ चलने को मजबूर किया, पेरीन को उसने यह कहकर छोड़ दिया कि बीमार पेरी को छोड़ना ठीक नही। अन्य औरतें भी उनके साथ शामिल हो गईं और लगभग बीस औरतों का जत्था बन गया। जब मोन्टसू के निवासियो ने, उन्हे उदास और मुरझाये हुए चेहरों से समूची सड़क की चौड़ाई घेरे हुए आते देखा तो वे चिन्तित हो अपने सिर हिलाने लगे। दरवाजे बन्द कर दिये गए और एक औरत ने तो अपनी प्लेट तक छिपा ली। यह पहला ही मौका था जब कि उन्हे इस प्रकार घर के बाहर देखा गया था, इससे अशुभ और क्या हो सकता है? हर चीज नष्ट हो जायगी जब कि औरतें इसतरह सड़कों मे चक्कर लगायेंगी। माइग्रेट के घर के सामने कारुणिक नज्जारा था। पहले तो उसने उन्हे अन्दर जाने दिया, खीस निपोरते हुए और यह बहाना प्रदर्शित करते हुए कि वे उसका कर्जा अदा

करने आई हैं : यह तो बड़ी अच्छी बात है कि वे इकट्ठा आने को सहमत हुईं और उसका तमाम बकाया चुकाने आई है। तब, जब माहेदी बोलने लगी तो उसने नाराजी का बहाना बनाया : 'क्या तुम लोगों का मजाक बना रही हो ? और कर्ज दो ! तब तुम क्या मुझे भिखारी बना देना चाहती हो ? नहीं, एक दाना आलू तक नहीं, एक टुकड़ा रोटी तक नहीं। और उसने उन्हें पंसारी और नानबाई के पास जाने को कहा, 'जाओ, उनसे तुम्हारा लेन-देन चलता है।' औरतें भयपूर्ण तिरस्कार के साथ सुनती हुई माफी माँग रही थी और बराबर उसकी आँखों की ओर देख रहीं थीं कि शायद उनमें दया दिखाई दे। वह मजाक करने लगा, ब्रूली से वह बोला, 'अगर तुम मुझे प्रेमी के रूप मे अगीकार करो तो मैं तुम्हारे ऊपर दूकान न्योछावर कर दूँ।' वे सब इतनी कायर बन गई थी कि इस पर वे सब हँसने लगीं; और लेवस्यू की औरत ने उसे खुश करने की नीयत से कहा कि वह तैयार है। लेकिन वह तत्काल गाली बकने लगा और उसने उन्हे दरवाजे की ओर धकेला। वे गिड़गिड़ा कर हठ करने लगीं तो एक के साथ वह बड़ी निर्दयता से पेश आया। फुटपाथ पर खड़ी अन्य औरतें चिल्लाने लगीं, वह कपनी के हाथों बिक गया है, जब कि माहेदी हवा मे हाथ हिलाती, अपनी घृणा प्रदर्शित करती हुई चिल्ला रही थी कि वह मर जाय, ऐसे लोगों को जीने का अधिकार ही नही।

मायूस वे सब बस्ती मे लौट आईं। जब पुरुषो ने देखा कि औरतें खाली हाथ लोटी है तो उन्होंने एक बार उनकी ओर देखा और फिर अपने सिर झुका लिये। अब तो कोई चारा नहीं था, आज का दिन बगैर एक चम्मच सूप मुँह मे डाले ही बीतेगा, और आगे आने वाले अति कष्टकर दिनो की छाया उनके सामने से गुजरी, चारों ओर निराशा नजर आ रही थी परन्तु आत्मसमर्पण की बात किसी के मुंह से नहीं सुनाई दी। तकलीफों की यंत्रणा उन्हे और जिद्दी बना रही थी, घिरे हुए जानवरों की तरह खामोश, बाहर आने के बजाय अपनी ही खोह मे मर जाने के लिए कृतसंकल्प। कौन पहले आत्मसमर्पण की बात कहने का साहस करेगा ? उन्होंने अपने साथियों के साथ कसमें खाई थीं कि वे एक साथ रहेंगे। उसी तरह एक रहेंगे जैसे खान में, जब कि उनमे से किसी के जमीन धँसने से उसके भीतर दब जाने पर होते हैं। यह वैसा ही था, जैसा होना चाहिए था; यह धीरे धीरे मिट जाने की कला सीखने का अच्छा शिक्षा-शिविर था। वे एक सप्ताह तक तो इस तरह काट हो सकते हैं, जब कि वे बारह वर्ष की उम्र से पानी और आग निगलते चले आ रहे हैं। उनकी यह लगन, सिपाहियों के आत्माभिमान-सा, अपने पेशे पर गर्व करने वाले उन लोगों की भाँति थी, जो कि प्रति दिन मौत से संघर्ष करते हुए कुरबानी में ही गौरव समझते है।

माहे परिवार के लिए यह संध्या बड़ी विकट थी। कोयले के धुंआ देने वाले टुकड़ों की आंच के सामने बैठे हुए वे सभी मौन थे। थोड़ा-थोड़ा कर गट्ठों को खाली करने के बाद एक दिन पहले उन्होंने तीन फ्रेंक में दीवाल घड़ी को बेचने का निश्चय किया था और अब चूंकि वहां टिक-टिक की आवाज नहीं थी इसलिए कमरा खाली-खाली और मनहूस लगता था। अब सजावट का एक मात्र सामान, साइडबोर्ड के मध्य में, गुलाबी कार्डबोर्ड का बक्स था, जो माहे ने बहुत पहले भेंट की थी और जिसे माहेदी जवाहरात की तरह बड़े जतन से रखती थी। दो अच्छी कुर्सियां बिक चुकी थीं, फादर बोनेमॉ और बच्चे, बगीचे से उठाकर लाई गई एक पुरानी बेंच पर सटे हुए बैठे थे और रक्तिम आभा, जो कमरे में आ रही थी ठंढक को बढ़ाती प्रतीत होती थी।

'क्या किया जाय ?' माहेदी ने चूल्हे के कोने को खुरचते हुए दुहराया।

लॉतिये दीवार पर लगी सम्राट और सम्राज्ञी की तसवीरों को देखता हुआ उठ खड़ा हुआ। अगर इस परिवार ने उन्हें जेवरों की तरह सम्भाल कर सुरक्षित न रखा होता तो वह कभी का उन्हें उतार कर फाड़ दिये होता। इसलिए वह गुस्सा दबाये हुए बोला, 'जरा सोचें तो, इन जाहिलों से, जो कि हमें भूखों मरते देख रहे हम दो सूज तक नहीं पा सकते।'

कुछ हिचक के बाद बहुत दुखी होकर माहेदी बोली--'अगर मैं बक्स ले जाऊं तो ?'

माहे जो पैर नीचे लटकाये मेज के एक किनारे पर बैठा था, सावधान होकर बैठ गया—'नहीं ! मैं वह न होने दूंगा !'

माहेदी कष्ट के साथ उठी और कमरे में टहलने लगी। हे ईश्वर ! यह भी कभी सोचा था कि ऐसे दिन आयेंगे ? आले में रोटी का टुकड़ा तक नहीं, कोई चीज बेचने को नहीं बची, भगवान ही जाने रोटी कहां से मिलेगी ! और आग भी बुझने के करीब पहुँच गई है ! वह अलजीरे पर बिगड़ने लगी, जिसे सुबह उसने खान के किनारे कोयले के टुकड़े बटोरने भेजा था और वह खाली हाथ लौट आई थी और बता रही थी कि कम्पनी इसकी इजाजत नहीं दे रही है। कम्पनी क्या चाहती है, इसकी परवाह करने की क्या जरूरत ? मानो हम गिरे हुए कोयले के टुकड़े उठाकर किसी को लूट रहे हैं ! लड़की ने मायूस होकर बताया कि वह कल जरूर जायगी चाहे उसे मार ही क्यों न पड़े।

'और वह शैतान का बच्चा, जॉली, वह कहां है, मैं जानना चाहती हूं ?' मां बोली। 'उसे सलाद ले आना चाहिए था; कम से कम हम जानवरों की तरह उससे पेट तो भर ही सकते हैं। लेकिन वह आयेगा नहीं। कल भी वह बाहर ही सोया

था। नहीं मालूम वह क्या खाता है ? हमेशा उस शैतान का पेट भरा प्रतीत होता है।'

'शायद', लॉतिये बोला, 'वह सड़क पर भीख माँगता हो।'

यकायक उसने डरावने ढंग से दोनों मुट्ठियाँ ऊपर उठाईं। 'अगर मुझे मालूम पड़े कि मेरे बच्चे भीख माँगते है तो मैं उन्हें भी मार डालूँ और खुद मर जाऊँ।'

माहे फिर टेबल के कोने में बैठ गया था। लीनोरी और हेनरी को अचम्भा हो रहा था कि उनके पास खाने को कुछ नही है। वे भूख से कलपने लगे थे; जब बुड्ढा बोनेमॉ दार्शनिक ढंग मे गुमसुम बैठा भूख को झुठलाने के लिए अपनी जीभ को मुँह के अन्दर चारों ओर घुमा रहा था। अब कोई बातचीत नही हो रही थी, सभी बढ़ती हुई दरिद्रता के पाट के नीचे दबे हुए शून्य मे हो रहे थे, दादा खाँस रहा था और काला कफ थूक रहा था। गठिया का उसका रोग अब जलोदर का रूप धारण कर रहा था। बाप को दमा था और उसके पाँव घुटनों तक पानी से सूज गए थे। बच्चे गण्डमाला और पैतृक पीलिया रोगों से पीड़ित थे। इसमे संदेह नहीं कि जो काम वे करते थे उससे यह रोग हो जाना स्वाभाविक था, परन्तु वे तभी शिकायत करते थे जब भोजन की कमी उन्हे मारे डालती थी और बस्ती मे अब मक्खियों की तरह वे मरने लगे थे। लेकिन रात के भोजन के लिए कोई न कोई व्यवस्था तो करनी ही पड़ेगी। हे ईश्वर! कहा से यह किया जाय, अब क्या किया जाय ?

इस द्वाभा मे, अंधकार की उदासी लिये हुए यह कमरा अधिकाधिक मनहूस प्रतीत हो रहा था। लॉतिये, जो पहले कुछ झिझक-सी महसूस कर रहा था अन्त में कुछ निश्चय-सा कर दिल मे भारी पीड़ा लिए उठा :

'मेरा इन्तजार करना', वह बोला', मै जाता हूं और कही कुछ देखता हूँ।'

और वह बाहर निकल गया। मार्केटी के पास जाने का विचार उसके मन मे आया। निस्संदेह उसके पास रोटी होगी और वह सहर्ष देगी। उसे रिवोलीॉ जाने की मजबूरी खल रही थी, वह लड़की एक स्वामिभक्त नौकर की तरह उसके हाथ चूमेगी। लेकिन मित्रों को संकट मे नहीं छोड़ा जा सकता, अगर जरूरत पड़ी तो वह अब भी लड़की के प्रति मेहरबान होगा।

'मैं भी जाकर कही देखूं', माहेदी बोली, 'यहाँ बैठे रहना बेवकूफी है।'

नवयुवक के जाने के बाद बद किये गए दरवाजे को उसने खोला और फिर जोरों से बंद कर दिया। अन्य लोग अलजीरे द्वारा जलाये गए मोमबत्ती के एक बचे टुकड़े की मंद रोशनी मे निश्चल और गुमसुम बैठे थे। बाहर वह एक क्षण रुक कर सोचने लगी फिर लेवक्यू के घर मे चली गई।

'मुझे बताओ, मैंने तुम्हें परसों-परले रोज जो रोटी उधार दी थी, क्या तुम उसे लौटा सकती हो ?'

लेकिन वह यकायक सहम सी गई। जो कुछ उसने देखा उससे उसे बड़ा कष्ट पहुँचा, इस घर की हालत उसके घर से भी बदतर थी।

लेवक्यू की औरत खोई-खोई आँखों से एकटक बुझी हुई आँच को देख रही थी। लेवक्यू खाली पेट कुछ कील-काँटा बनाने वालों के साथ शराब पीकर, मेज पर सोया पड़ा था। बाउटलोप दीवार से पीठ सटाये, स्वतः एक मशीन की भाँति अपने कन्धों पर हाथ फेर रहा था। एक अच्छे स्वाभाव के व्यक्ति की भाँति उसे आश्चर्य हो रहा था कि अपनी बचाई हुई रकम खा लेने पर भी उसे अपने पेट पर पट्टी बाँधनी पड़ रही है।

'एक रोटी ! आह !' लेवक्यू की पत्नी बोली, 'मैं स्वयं तुमसे एक और माँगने वाली थी !'

तब, जब उसका पति निद्रा में दर्द से कराहा तो उसने उसका मुँह मेज की ओर धकेल दिया।

'अपने को सम्भाल, जंगली जानवर ! तेरी आतें जल जाँय यही बेहतर होगा ! शराब पीने के बजाय तूने अपने मित्र से बीस सूज माँग लिये होते।'

इस गन्दगी भरी गृहस्थी के बीच वह अपने पति को गालियाँ देकर अपने दिल का गुबार निकालती जा रही थी। उस कमरे के फर्श से, जो पहले ही गन्दा रहता था अब असह्य दुर्गन्ध आ रही थी। हर चीज नष्ट हो जाय, उसे जरा भी परवाह नहीं थी। उसका लड़का बीवर्ट भी आज सुबह से गायब था, वह चिल्ला रही थी कि वह अगर कभी न लौटे तो अच्छा है। वह छुट्टी पा जायगी। तब वह बोली कि अब उसे बिस्तर पर जाना चाहिए। कम से कम उसे गरमी तो मिलेगी। उसने बाउटलोप को झकझोर कर जगाया।

'चलो, हम ऊपर जायें। आग बुझ चली है। खाली प्लेटों के देखने के लिए रोशनी करने की जरूरत नहीं। तुम आ रहे हो क्या लुईस ? अब हमें सोने चला ही जाना चाहिए। हम दोनों ही वहाँ साथ सोयेंगे तो कुछ आराम तो मिलेगा। इस शराबी को ठंढ में मरने के लिए यहीं छोड़ दो।

जब माहेदी फिर बाहर निकल आई तो उसने एक निश्चय-सा किया और फिर बगीचा पार कर पेरीन के यहाँ चली गई। उसे वहाँ हँसी सुनाई दी। जब उसने खटखटाया तो एक दम खामोशी छा गई। दरवाजा खुलने में पूरा एक मिनट लगा।

'क्या ! तुम हो ?' पेरीन ने आश्चर्य-सा जाहिर किया। 'मैंने सोचा डाक्टर होगा।'

उसे बात करने का मौका दिये बगैर वह आग के पास बैठे पेरी की ओर संकेत करती हुई कहती चली गई : 'आह ! कोई लाभ नहीं हो रहा है, जरा भी सुधार नजर नहीं आता । उसका चेहरा तो ठीक लगता है परन्तु पेट में खराबी है । फिर गरमी भी जरूरी है इसलिए जो कुछ हमारे पास बचा है, जला रहे है ।'

पेरी, दर असल, बहुत तन्दुरुस्त लगता था, उसका रंग साफ था और चमड़ा मोटा । बीमार आदमी होने का बहाना बनाने के लिए रुक-रुक कर साँस लेने का वह निष्फल प्रयत्न कर रहा था । अलावा इसके जब माहेदी अन्दर आई तो उसे खरगोश के गोश्त की तेज खुशबू मिली; उन्होंने निश्चित ही प्लेट छिपा दी होगी । टेबल में हड्डियों के टुकड़े पड़े थे और बीच मे एक शराब की बोतल पड़ी थी, जिसे उठाना वे भूल गए थे ।

'माँ रोटी की खोज मे मोंटसू गई है', पेरीन ने फिर कहा । 'हम उसका इन्तजार करते-करते ठंढे पड़ गये है ।'

लेकिन उसकी जुबान बंद हो गई; उसने अपनी पड़ोसिन की नजरों का पीछा किया और उसे भी शराब की बोतल दीखी । तत्काल उसने बात बनाई : 'देखो, यह शराब रखी है, पायोलेन के जमींदार ने उसके पति के लिए भेजी है । डाक्टर ने ऐसी हिदायत की है' और वह फिर बहुत आभार प्रदर्शन करने लगी । 'कितने अच्छे है वे लोग ! खासकर वह नवयुवती; उसे मजदूरो के घरो मे जाकर उन्हे सहायता बाँटते हुए बड़ा सुख मिलता है ।'

'हाँ,' माहेदी बोली,' मैं उन्हें जानती हूँ ।'

उसका दिल इस बात से दुखी हो रहा था कि अच्छी चीजे हमेशा कम गरीबो को मिलती है । हमेशा ऐसा होता आया है । येप पायोलेन के जमीनदार नदी से पानी निकालने के बजाय पानी को नदी तक पहुँचाते है । (कैसी उल्टी रीति है !) वे मुझे तो बस्ती मे क्यो नही दिखाई दिये ? तब, शायद मै भी उनसे कुछ पा जाऊँ ।

अन्त मे वह बोली, 'मैं इसलिए तुम्हारे पास आई हूं कि शायद तुम्हारे पास हमसे कुछ ज्यादा हो । क्या तुम्हारे पास थोड़ी-सी सेंवई होगी जो उधार मिल सके ।'

'कुछ भी नही है, अन्न का एक दाना भी नही । अगर मा लौटकर नही आई तो इसलिए कि वह सफल नहीं हो पाई । हम भूखो ही सोना पड़ेगा ।'

इसी क्षण कमरे के गलियारे से चिल्लाने का शब्द सुनाई दिया । उसने गुस्से के साथ दरवाजे को मुक्के से पीटा : 'वह शैतान लायडी है जिसे मैंने बंद कर रखा है । वह बोली, 'सारा दिन इधर-उधर टहलने के बाद अभी पाँच बजे लौटी है । कोई उसे रोक नहीं सकता, वह लगातार गायब होती रहती है ।'

माहेदी खड़ी ही रही, वह अभी वहाँ से जाने का निश्चय नहीं कर पाई थी। इस आँच के सामने वह आराम की तकलीफ देह मनसनाहट महसूस कर रही थी। यह लोग यहाँ खा रहे है, इस विचार ने उसके भूख की ज्वाला को और भी प्रज्ज्वलित कर दिया था। स्पष्ट ही उन्होंने बुढ़िया को तो बाहर भेज दिया था और बच्ची को बंद कर दिया था ताकि वे आराम से खरगोश उड़ा सकें। आहा ! लोग जोभी कहे, जब औरत अच्छा बर्ताव नहीं करती तो घर खुशहाल नहीं रह सकता।

'गुडनाइट !' उसने यकायक कहा।

बाहर रात हो चली थी। बादलों के पीछे चाँद पृथ्वी में धूमिल छाया फैला रहा था। बगीचे के बीच से गुरने के बजाय माहेदी घूम कर गई। वह निराश थी ! उसे घर जाने से डर लग रहा था। लेकिन निर्जीव आँगनों के साथ-साथ हर दरवाजे से भुखमरी का ताडव हो रहा था, चारों ओर तकलीफों का साम्राज्य था, हफ्तों से लोगों के पास खाने को कुछ नहीं था। प्याज की खुशबू तक गायब हो गई थी, वह तेज खुशबू जो दूर से ही बस्ती का परिचय देती थी। अब सिर्फ उन छेदों की नम गंध बच गई थी जिससे कोई भी चीज खाने की नहीं थी। कराह, रुंधे हुए आँसुओं, कसमों के अलावा और कुछ भी नहीं सुनाई देता था। इस सुनसानी में, जो बढती जा रही थी, भूखे पेट सोने वालों की नींद में बडबड़ाने और इधर-उधर बिस्तरों में छटपटाने के शब्द सुनाई दे रहे थे।

जब वह चर्च के पास से गुजरी तो उसे तेजी से अपने सामने से एक छाया गुजरती दीखी। एक आशा की किरण से उसके पाँवों में तेजी आ गई, क्योंकि उसने मोंटसू के पादरी आबी जोहरे को, जो बस्ती केज गिरजे में रविवार को सामूहिक प्रार्थना करवाता था, पहचान लिया था। इसमें संदेह नहीं कि वह गिरजे के पवित्र स्थान से निकला था, जहाँ उसे किसी मसले को तय करने के लिए बुलाया गया था। मोटे, भारी भरकम शरीर से वह तेजी से चल रहा था। वह हर एक के साथ शांतिपूर्वक रहने को उत्सुक रहता था। अगर वह इस रात को आया था तो इसीलिए कि वह खनिकों से कोई समझौता न कर ले। यह भी सुना गया था कि उसे हाल में ही तरक्की मिली है। अक्सर वह अपने उत्तराधिकारी के साथ, जो कि एक दुबला-पतला आदमी था और जिसकी आखें कोयले की तरह जलती रहती थीं, घूमता देखा गया था।

'महोदय ! महोदय !' माहेदी गिड़गिड़ाई।

लेकिन वह रुका नहीं।

'गुडनाइट, गुड नाइट।'

उसने अपने को अपने घर के दरवाजे पर पाया। अब उसे आगे पाँव बढ़ाने की हिम्मत नहीं पड़ रही थी और वह अन्दर चली गई।

सभी यथावत् पड़े थे। निराश माहे अब भी मेज के किनारे सिर नीचा किये बैठा था। बुड्ढा बोनेमाँ और बच्चे, गरमी पाने के लिए और अधिक करीब खिसक कर बेंच में दुबके हुए थे। वे एक शब्द भी नहीं बोले। बत्ती इतनी मंदी जल रही थी कि शीघ्र ही उसके बुझ जाने का खतरा हो चला था। दरवाजे का शब्द सुन कर बच्चों ने अपना सिर घुमाया, लेकिन यह देख कर कि उनकी माँ खाली हाथ लौटी है, वे जमीन ताकने लगे। उन्हें कहीं मार न पड़े इसलिए वे रोना रोके हुए थे। माहेदी बुझती आग के पास अपनी जगह पर धम्म से बैठ गई। उन्होंने उससे कोई प्रश्न नहीं पूछा और चुप्पी बदस्तूर रही। सभी समझ गये थे, और वे बातचीत कर अपने को परेशान करना फिजूल समझते थे। वे अब आशा-निराशा के बीच झूलते हुए आखिरी उम्मीद लगाये थे कि शायद, लाँतिये कहीं से मदद ले आये। समय गुजरने लगा और अन्त में वे उससे भी मायूस हो गए।

जब लाँतिये दुबारा आया तो वह एक कपड़े में एक दर्जन आलू लिये था जो उबले थे, लेकिन ठंडे थे।

मार्केटी के पास भी रोटी नहीं थी। यह उसका खाना था जिसे उसने इस कपड़े में बाँध कर ले जाने को उसे मजबूर किया था।

जब माहेदी ने उसे आलुओं में से उसका हिस्सा दिया तो वह बोला; 'धन्यवाद, मैं वहाँ खाँ चुका हूँ।'

यह सच नहीं था और वह उदासी से बच्चों को खाने पर टूटते हुए देखने लगा। माता-पिता भी हाथ रोक कर खा रहे थे ताकि उनके लिए ज्यादा बच जाय। लेकिन बुड्ढा लालच के साथ सब कुछ निगल गया। अलजीरे के हिस्से का आलू उन्हें उसके सामने से हटा लेना पड़ा।

तब लाँतिये बोला: 'मैंने खबर सुनी है। कम्पनी हड़तालियों की जिद से खीज कर उनके सार्टिफिकट समझौता करने वाले खनिकों को वापस करने की सोच रही है। निस्संदेह, कम्पनी संघर्ष पथ पर है। और एक गंभीर अफवाह है कि उन्होंने बहुत से खनिकों को पुनः नीचे जाने के लिए राजी कर लिया है। कल विक्टियोरे और फ्यूट्री-कैंटल में हाजिरी पूरी रहेगी, मेडेलेन और मिराओ में भी एक तिहाई मजदूर हो जायंगे, माहेदी क्रुद्ध हो उठा।

'खुदा कसम !' माहे चिल्लाया था, 'अगर हमारे बीच गद्दार है तो हमें उन्हें ठीक करना चाहिए।'

और अपने कष्टों के क्रोध के वशीभूत हो वह खड़ा हो गया। 'कल संध्या

समय जंगल को ! चूंकि वे बोनजोय में रहते वे हममें किसी समझौते पर नहीं पहुंचना चाहते, कम से कम हम जंगल में इससे आराम में तो रहेंगे !'

इस बात ने बोनेमॉ को जगा सा दिया। वह आलू निगलने के बाद कुछ पस्त सा पड़ गया था। यह पुराने खनिकों के इकट्ठा होने का स्थान था, जहाँ सम्राट के सिपाहियों के विरुद्ध पुराने खनिक एकत्र होकर प्रतिरोध की योजनायें बनाया करते थे।

'हां, हां वण्डामे चलो ! अगर तुम वहाँ चलो तो मैं भी तुम्हारे साथ हूँ।' माहेदो ने एक उत्साहपूर्ण मुद्रा बनाई। 'हम सब चलेंगे, इससे यह अन्याय और गद्दारियाँ खत्म हो जायंगी।'

लॉतिये ने निश्चय किया कि दूसरी संध्या के लिए सभी बस्तियों में सभास्थल की घोषणा कर दी जाय। आग बुझ चुकी थी। लेवक्यू के घर में यकायक बत्ती गुल हो गई। न कोयला ही बचा था और न तेल ही। उन्हें इस कड़ाके की ठंडक में अपने बिस्तरों पर हाथ में टोह लेते हुए जाना पड़ा जिससे उनका बदन ठिठुर रहा था। छोटे बच्चे चीख रहे थे।

६

जॉली अब अच्छा हो चला था और चलने-फिरने लगा था लेकिन उसके पाँव इस बुरी तरह से मिल गए थे कि वह दायें और बायें, दोनों ओर हलकता हुआ बत्तख की भांति चलता था। दौड़ने में वह पहले की ही तरह तेज था। उसमें शैतानी और चोरी करने वाले जानवर का कौशल था।

इस संध्या को, गोधूलि बेला में रिवोलीलॉ रोड पर जॉली अपने अभिन्न दोस्तों—बीवर्ट और लायडी के साथ किसी ताक में बैठा था। उन्होंने एक पनसारी की दूकान के पीछे, जो कि लेन के आखीर में पड़ती थी, तख्तों के एक अम्बार के पीछे खाली जगह अपने छिपने को बनाई थी। एक बुढ़िया, जो लगभग अंधी थी, दरवाजे पर ममूर और हरीकोट (एक प्रकार की फ्रांसीसी फली) के थैले और पुरानी सूखी हुई काड मछली लटकाये हुए थी। इसी पर उसकी निगाह अटकी थी। दो बार वह बीवर्ट को उसे उतार लाने को भेज चुका था परन्तु हर बार सड़क के मोड़ पर कोई न कोई आता-जाता दिखाई देता था जिससे वे अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो पाते थे।

एक घुड़सवार वहां से गुजरा और बच्चे तख्तों के ढेर के नीचे दुबक गए क्योंकि उन्होंने हनेब्यू को पहचान लिया था। हड़ताल के बाद अक्सर वह इस प्रकार सड़कों पर दिखाई दे जाता था। अकेला ही, घोड़े पर सवार, हड़ताली बस्तियों से

गुजरता, वह बड़े साहस के साथ स्थिति का अन्दाजा लगाया करता था। उसके कानों के पास से कभी भी किसी के ढेला फेंकने की आवाज नहीं गुजरी थी। उसे सिर्फ मौन खड़े लोग मिलते थे, जो सलाम करने में सुस्ती दिखाते थे; अक्सर उसे ओसारों और तख्तों के खत्तों में मौज लेते हुए प्रेमियों के जोड़े मिलते थे, जिनका राजनीति से कोई वास्ता न था। वह, किसी के काम में खलल न पड़े इसलिए अपनी घोड़ी पर सवार, सीधे आगे देखता हुआ चला करता था, लेकिन उसके दिल मे इस उन्मुक्त प्रेम को देखकर अतृप्ति की एक टीस-सी उठा करती थी। उसने दूर से इन नन्हें शैतानों को, छोटे लड़कों को छोटी लड़कियों के साथ एक ढेर के रूप मे देखा। अपने कष्टों को भुलाने के लिए ये छोटे-छोटे बच्चे भी अपना मनबहलाव कर रहे थे। उसकी आँखों मे आँसू भर आये और वह सैनिक ढंग का फ्राक कोट पहने, तन कर घोड़ी की पीठ पर कसी जीन पर बैठा, नजरों से ओझल हो गया।

'क्या तकदीर है ?' जॉली बोला, 'यह सिलसिला तो कभी खत्म न होगा। बीवर्ट, जाओ। उसकी दुम पर जाकर लटक जाओ।'

लेकिन दो आदमी फिर नजर आये। बच्चे फिर गाली बकते हुए दुबक गए। अबकी बार उन्होंने जाचरे की आवाज सुनी जो अपने दोस्त माक्यूट को बता रहा था कि किस प्रकार उसे अपनी औरत के एक पेटीकोट के बीच मे सिया हुआ दो फेंक मिला। वे दोनों एक दूसरे के कंधे पर हाथ मारते हुए सन्तोष के साथ हँस रहे थे।

माक्यूट अगले दिन 'क्रासी' खेलने का सुझाव दे रहा था। दो बजे वे एवेन्टेज छोड़ देंगे और मार्सेनीज के पास मोन्टोयरे की तरफ चलेंगे। जाचरे ने मंजूरी दी। हड़ताल के बावत परेशान होने से क्या लाभ ? कोई काम तो है नहीं, फिर क्यों न मनोरंजन किया जाय। वे सड़क के मोड़ की ओर घूमे ही थे कि नहर की ओर से आने वाले लॉतिये ने उन्हे रोक लिया और बातें करने लगा।

'क्या यह लोग यहीं सोयेंगे ?' जॉली ने उकता कर कहा—'रात हो रही है, बुढ़िया थैले उतारने भी लगी होगी।'

रिक्वीलॉ की तरफ से दूसरा एक खनिक आया और लॉतिये उसके साथ हो लिया। जब वे तख्तों के पास से गुजरे तो बच्चे ने जंगल की बात करते सुना। एक ही दिन में सभी बस्तियों मे घोषणा कर सकने मे असमर्थता के कारण उन्हे सभा अगले दिन के लिए स्थगित कर देनी पड़ी थी।

'मैंने कहा, सुनो, उसने अपने दोनों साथियों से हौले से कहा, 'बड़ा मामला तो कल है। हम चलेंगे, क्यों ? हम दोपहर को ही निकल जायंगे।'

और फिर अन्त में सड़क सुनसान हो जाने से उसने बीवर्ट को भेज दिया।

'हिम्मत कर उसकी पूँछ पर लटक जाना, और देखना! बुढ़िया झाड़ू न लिए हो।'

उनके सौभाग्य से रात अंधेरी हो चली थी। बीवर्ट, उछल कर इस जोर से काड मछली पर झपटा कि तागा टूट गया। वह इसे पतंग की तरह हिलाता हुआ भागा और उसके पीछे-पीछे अन्य दो साथी भी तेजी से दौड़ निकले। बुढ़िया आश्चर्य-सा करती हुई अपनी दूकान से बाहर निकली। वह समझ भी न पाई थी और पहचान भी न पाई थी कि यह 'त्रिगुट' अन्धकार में गायब हो गया।

वे बदमाश वहाँ के लिए समस्या बन गए थे। लुटेरों के जत्थे की तरह वे धीरे-धीरे लम्बे हाथ मारने लगे थे। पहले तो वे बोरों के हाथ तक ही सन्तोष कर लेते थे; कोयले के ढेर में लुढ़कते हुए, जहाँ से वे नीग्रो के समान दीखते हुए निकलते थे, लकड़ी के ढेरों के बीच आँखमिचोनी खेलते हुए, जिसमें वे किसी घोर जंगल की गहराई में खो जैसे जाते थे। उन्होंने पता लगाकर खान का किनारा खोजा था। वे उस पर बैठ कर नीचे के उन हिस्सों तक खिसकते हुए चले जाते थे जो हिस्से वीरान छोड़ दिये गए थे जहाँ जमीन के भीतर अग्नि अब भी जलती रहती थी। वहाँ वे दिन भर छिपे हुए उत्पाती चूहों के से खेल खेला करते थे। अब वे धीरे-धीरे अपना क्षेत्र बढा रहे थे, खून निकलने तक लड़कियों के ढेरों में गुत्थमगुत्था करते, खेतों में दौड़ते और बगैर रोटी के सभी किस्म की दूधिया जड़ी-बूटियाँ खाते, नहर के किनारे कीचड़ और सेवार में मछलियाँ ढूँढते और उन्हें कच्चा ही निगलते; और फिर आगे बढ़ते हुए मीलों दूर वरेडामे के जंगल तक निकल जाते थे। यहाँ बसन्त में स्ट्रोवरी, गर्मियों में अखरोट और अन्य फल मिल जाया करते थे। धीरे-धीरे समूचे मैदान में वे धावा मारने लगे थे।

मोन्टसू से मार्शेनीज तक सड़कों पर बराबर भेड़िये के बच्चों की तरह उनके ताक लगाये रहने का कारण चोरी के प्रति उनका बढ़ता हुआ प्रेम था। इस गिरोह का मुखिया जॉली था जो उन्हें हर प्रकार के शिकार को ले जाता था। प्याज के खेतों को रौंदना, बगीचों को लूटना और दूकानों की खिड़कियों पर धावा करना उनका काम था। कस्बे में हड़ताली खनिकों पर आरोप लगाते हुए, एक बड़े संगठित गिरोह की बात कही जाती थी। एक दिन, यहाँ तक कि, उसने लायडी को अपनी माँ के पास से बार्ली की चीनी के दो दर्जन चौकोर टुकड़े, जिन्हें पेरीन एक बोतल में अपनी खिड़की के आले में सजाये हुए थी, चुरा लाने को मजबूर किया और उस छोटी लड़की ने, जिसे बुरी तरह मार पड़ी थी, उसे धोखा नहीं दिया क्योंकि उसके अनुशासन के आगे वह काँपती थी। बुरी बात तो यह थी कि वह हमेशा

अपने लिए सबसे बड़ा हिस्सा रखता था। बीवर्ट भी उसके लिए चोरी का माल लाता था और उसे खुशी होती थी कि कप्तान ने उसे मारा नहीं और सारा माल अपने लिए ही नहीं रख लिया।

कुछ समय से जॉली अपने अधिकार का दुरुपयोग कर रहा था। वह लायडी को इस तरह पीटता था जैसे कोई अपनी वैध पत्नी को पीटता है। उसे बीवर्ट को अकारण दूर किसी झूठे बहाने से चोरी के लिए भेजकर उसे बेवकूफ बनाने में मजा आता था। गोकि बीवर्ट इतना मजबूत और तन्दुरुस्त था कि उसे एक ही मुक्के में गिरा दे लेकिन वह बेवकूफ था और उससे डरता था। वह उन दोनों से उकता-सा गया था और उनके साथ गुलाम का सा बर्ताव करता था। वह उनसे कहा करता था कि उसकी पत्नी एक राजकुमारी है और वे उसके सामने जाने के लायक नहीं है। और, वास्तव में, पिछले सप्ताह से वह सड़क के छोर से या रास्ते के मोड़ से, यकायक गायब हो जाता था। चाहे वे जहां भी हों, इसकी परवाह किये बिना, वह बड़े भयावह ढग से उन्हें बस्ती को लौटने का आदेश देता था। लेकिन पहले वह लूट का माल अपनी जेब के हवाले कर लेता था।

इस बार भी यही हुआ।

जब वे रुके तो उसने अपने साथी के हाथ से काड मछली छीनते हुए कहा, 'मुझे दो।' वे तीनों, रिक्वीलां के पास सड़क के एक मोड़ पर जा कर रुक गए थे।

बीवर्ट ने विरोध किया।

'मुझे भी कुछ दो, तुम जानते हो। मैं इसे लाया हूं।'

'एह! क्या!' वह चिल्लाया। 'मैं जो कुछ दूंगा वही तुम पा सकोगे। आज नहीं, यकीनन, कल, अगर कुछ बच गया तो।'

उसने लायडी को धकेल कर उन्हें एक लाइन में अस्त्रधारी सिपाहियों की तरह खड़ा किया। फिर उनके पीठ पीछे से आदेश दिया :

'अब तुम यहाँ बगैर मुड़े हुए पाँच मिनट तक खड़े रहना, खुदा कसम! अगर तुम मुड़े तो जानवर आकर तुम्हें खा जायेंगे। और उसके बाद तुम सीधे वापस जाओगे और अगर बीवर्ट ने रास्ते में लायडी को छुआ तो मुझे मालूम पड़ जायगा और मैं तुम्हें मारूँगा।'

फिर वह छाया में इस चुप्पी से गायब हो गया कि उसके नंगे पावों की चाप तक नहीं सुनाई दी। दोनों बच्चे पाँच मिनट तक बगैर मुड़े स्थिर खड़े रहे। उन्हें डर था कि ऐसा न करने पर अदृष्य शक्ति से उन्हें चाँटे पड़ेंगे। इन दोनों को समान रूप से जो भय लगता था उसी के बीच धीरे-धीरे उनमें एक दूसरे के प्रति भारी प्रेम पैदा हो गया था। वह हमेशा सोचा करता था कि वह उसे पकड़ कर अपनी बाँहों

के बीच कसकर उसका आलिंगन करे, जैसा कि वह दूसरों को करते देख चुका था। वह भी इसे पसंद करती क्योंकि इसमें उसे प्रेम का आलिंगन मिलता। परन्तु उनमें से कोई भी हुकुमअदूली की हिम्मत नहीं कर पा रहा था। रास्ते में गोकि रात काफी अँधेरी थी, उन्होंने एक-दूसरे का चुम्बक तक न लिया। वे अगल-बगल चल रहे थे, उनके दिल में एक-दूसरे के प्रति प्रेम था, परन्तु उन्हें यकीन-सा था कि अगर उन्होंने एक-दूसरे को छुआ तो कप्तान उन्हें पीछे से मारेगा।

इसी समय, लाँतिये रिक्वीलाँ में प्रविष्ट हुआ। पिछली संध्या को माकेटी ने उससे लौटने का अनुरोध किया था और वह शरमाया-सा लौटा था। उसका झुकाव उस लड़की की ओर हो चला था जो उसे देवता की तरह पूजती थी। लेकिन इसे वह स्वीकार करने को तैयार नहीं था। अलावा इसके, उसका इरादा इस सम्बन्ध को तोड़ डालने का भी था। वह उससे मिलेगा और उसे बतायेगा कि वह साथियों के खातिर उसे अब अधिक बाध्य न करे। यह मौज लूटने का समय नहीं है, जब कि लोग भूखों मर रहे हों अपने आप मौज-मजा करना बेइमानी होगी। और उसे घर में न पा कर उसने निश्चय किया कि वह इन्तजार करेगा और वह गुजरने वालों की छायायें देखने लगा।

ध्वस्त बुर्जों के नीचे खान में उतरने का पुराना स्थान था, जो आधा ऊपर की ओर से मलवा गिरने से बंद सा हो गया था। एक बल्ली सीधी खड़ी थी जिसका सिरा ऊपर की ओर इस प्रकार चला गया था कि वह सूली दिये जाने के स्थल सा लगता था। लगाई गई रोक की टूटी हुई दीवारों के बीच से दो पेड़—एक माउण्टेन ऐश और एक अन्य जंगली झाड़—उग आये थे, जो जमीन की अनन्त गहराई से उगे प्रतीत होते थे। यहाँ चारों ओर झाड़ियों का जंगल उग आया था। खान को जाने के कुंए के समान छेद में पुरानी लकड़ी टूटकर जमा हो गई थी और बसंत में वारब्लर (गानेवाली चिड़िया) इन पेड़ों में अपना घोंसला बनाती थी। इसके रख-रखाव में भारी खर्चे से बचने के लिए कम्पनी पिछले दस वर्षों में इस कुंए को पाटने की सोच रही थी, लेकिन वह नया हवाघर लगाने के इन्तजार में थी क्योंकि दोनों खानों की संवातन पट्टी नहीं, जो एक दूसरे से जुड़ती थी, रिक्वीलाँ की जड़ पर थी, जिसका पुराना तार लपेटने वाला कूपक-मोरी का काम देता था। गिरने पर रोक लगाने के लिए आरपार बल्लियाँ डाल कर ही कम्पनी ने संतोष कर लिया था। वह ऊपरी गलियारों का ख्याल न कर नीचे वाले गलियारों की हिफाजत पर ही ज्यादा ध्यान देती थी। नीचे बड़े जोरों की कोयले की आग जला करती थी, उससे जो शक्तिशाली हवा का झोंका उत्पन्न होता था वह तूफान की तेजी से पड़ोसी खान के एक कोने से दूसरे कोने तक गुजरता था। पहले से बचाव

के लिए, ताकि वे नीचे-ऊपर आ-जा सकें, मोरी में सीढ़ियाँ लगा दी गई थीं। चूंकि उनकी कोई देखभाल करने वाला नहीं था इसलिए नमी से सीढ़ियाँ सड़ रही थीं और कई जगह से वे टूट भी चुकी थीं। ऊपर एक बड़ी-सी काँटेदार झाड़ी प्रवेश पर रोक लगाये हुए थी और चूंकि पहली सीढ़ी के कुछ तख्ते निकल गए थे, उस तक पहुँचने के लिए यह जरूरी था कि 'माउन्टेन ऐश' की जड़ पर लटका जाय और फिर सीढ़ी को अंधकार मे टटोला जाय।

लॉतिये एक झाड़ी के पीछे बेसब्री मे इन्तजार कर रहा था जब कि उसे झाड़ियों से बड़ी देर तक सरसराहट सुनाई दी। पहले उसने सोचा कि कोई साँप डर कर भाग रहा होगा परन्तु यकायक माचिस जलाने से वह हैरत मे पड़ गया। और वह जॉली को देखकर, जो कि मोमबत्ती जला रहा था, दंग रह गया। अब वह जमीन के अन्दर प्रवेश करने लगा था। उसे बड़ी उत्सुकता हुई और उस छेद के पास पहुँचा जहां से वह बच्चा गायब हुआ था और उसे दूसरी सीढ़ी से एक क्षीण प्रकाश दिखलाई दिया। लॉतिये एक क्षण तो झिझका, फिर पेड़ की जड़ पकड़ कर लटक गया। एक क्षण को उसने सोचा कि वह खान की पांच सौ मीटर की गहराई तक गिरता चला जायगा, लेकिन अन्त मे उसे सीढी के डंडे का अहसास हुआ और वह धीरे से उतर गया। जॉली ने कुछ भी नहीं सुना था। लॉतिये लगातार अपने नीचे रोशनी को डूबता-सा देख रहा था और बच्चे की छाया, उसके टूटे हुए अवयवों मे चलने पर नाचती-सी बड़ी भयावह लग रही थी। वह बन्दर की सी फुर्ती मे अपने पाँव फेंक रहा था और जहाँ डंडों की जरूरत थी वहां अपने हाथों, पांवों और चिबुक के सहारे चल रहा था। सीढ़िया, जो सात मीटर लम्बी थीं, एक के बाद एक उतरती चली गई थीं, कुछ अभी मजबूत थी और अन्य हिलती हुई, सड़ कर लगभग टूटी हुई। वे इतनी संकरी और नमी मे हरी तथा सड़ी हुई थीं कि मालूम पड़ता था कोई रपटन मे चल रहा हो। यहां भट्टी की तरह गरमी थी और सौभाग्य से, अब हड़ताल होने से भट्टी चालू नही थी अन्यथा पांच हजार किलोग्राम कोयला प्रतिदिन खाने वाली भट्टी के चालू रहते कोई भी अपने बाल जलाने का खतरा मोल लिए बिना यहाँ नहीं उतर सकता था। 'क्या छोटा सा मनहूस मेढक है !' लॉतिये अपने आप मे बड़बड़ाया, 'पर यह शैतान जा कहाँ रहा है ?'

दो बार वह गिरते-गिरते बचा। नम लकड़ी में उसके पांव फिसल रहे थे। काश उसके पास भी इस बच्चे की तरह बत्ती होती। लेकिन वह हर क्षण ठोकर खा रहा था, उसका मार्ग दर्शन सिर्फ वही अस्पष्ट रोशनी कर रही थी जो उसके नीचे भागी जा रही थी। वह बीसवीं सीढ़ी तक पहुँच चुका था लेकिन नीचे

उतरने का सिलसिला अब भी जारी था। तब उसने उन्हें गिनना शुरू किया : २१, २२, २३, और वह अब भी नीचे-नीचे उतरता ही जा रहा था। उसका सिर गरमी से भन्ना रहा था और वह सोच रहा था कि वह भट्ठी में जा रहा है। अन्त में वह सतह पर पहुँचा और उसने देखा कि बत्ती गलियारे में भागी जा रही है। तीस सीढ़ी, इसका मतलब २१० मीटर हुआ।

'क्या यह मुझे लम्बे घसीटे लिए जा रहा है?' उसने सोचा। 'वह जरूर अपने को अस्तबल में दफनाने जा रहा होगा।'

परन्तु बाँई ओर अस्तबल का रास्ता जमीन धंसने से बन्द हो गया था। यात्रा फिर शुरू हुई, पहिले से अधिक कष्टदायक और अधिक खतरनाक। भयभीत चमगादड़ ऊपर उड़-उड़ कर छत से लटक रहे थे। वह तेजी से बढ़ रहा था ताकि रोशनी उसमें ओझल न हो जाय; जहाँ बच्चा बड़ी आसानी से साँप की तरह रेंगता हुआ निकल रहा था वहाँ उसे निकलने में बड़ी दिक्कत हो रही थी और उसके हाथ-पांव खुरच जाते थे। यह गलियारा, सभी पुराने गलियारों की तरह तंग था और लगातार मिट्टी गिरने से प्रतिदिन और सँकरा होता चला जा रहा था; कई स्थानों पर महज एक नली सी रह गई थी। इस कठिन परिश्रम से उभरी और टूटी हुई लकड़ियाँ उसके शरीर से चुभ रही थी और उनकी नुकीली नोकें तलवार की तरह पैनी शरीर से खून निकाल लेती थीं। सावधानी के साथ वह घुटनों और पेट के बल सामने अंधकार में बढ़ रहा था। यकायक चूहों का एक झुंड उसकी गरदन से लेकर पाँव तक दौड़ता हुआ उसके ऊपर से निकल गया।

'भाड़ में जाय यह सब! क्या अभी हम ठिकाने तक नहीं पहुँचे?' वह बड़बड़ाया। उसकी कमर दुख रही थी और सांस फूल रही थी।

वे वहाँ पहुँच चुके थे। एक किलोमीटर के अन्त में नली चौड़ी हो गई थी। वे गलियारे के एक ऐसे हिस्से में पहुँचे जो बड़े ही यत्न से सुरक्षित रखा गया था। यह पुराने कर्षण मार्ग का छोर था, जिसे काट कर एक कुदरती गुफा बना दी गयी थी। उसे ठहर जाना पड़ा। उसने दूर से बच्चे को दो पत्थरों के बीच में मोमबत्ती टिकाते देखा और देखा कि घर पहुँचने वाले व्यक्ति की तरह वह शान्ति के साथ आराम से बैठ गया है। गलियारे का सिरा बदल कर एक आरामदेह स्थान बना दिया गया था। जमीन में, एक कोने में, पुआल के ढेर से एक मुलायम कोच सी बना दी गई थी; कुछ पुराने तख्तों में, जिन्हें मेज की भांति सजा दिया गया था। रोटी, आलू, जिन की खुली बोतलें रखी थीं। यह वस्तुतः लुटेरों का अड्डा था, जिसमें सप्ताहों के लिए लूट का माल जमा किया गया था। बेकाम की वस्तुएँ जैसे साबुन, कालिख आदि, जिन्हें महज चोरी के आनन्द के लिए चुराया गया था,

यहाँ थीं। और वह बच्चा, अकेला, लूट की सम्पत्ति के बीच में, एक स्वार्थी लुटेरे की भाँति उसका आनन्द ले रहा था।

'मैंने कहा, क्या यही कारण है कि तुम लोगो का मजाक उड़ाते हो ?' लॉतिये जरा देर सुस्ता लेने के बाद चिल्लाया। 'तुम आकर यहाँ गुलछर्रे उड़ाते हो, जब कि हम ऊपर भूखों मर रहे हैं ?'

जॉली आश्चर्य से काँपने लगा। परन्तु नवयुवक को पहचान कर फिर तत्काल आश्वस्त हो गया।

'क्या तुम मेरे साथ खाना नही खाओगे ?' अन्त मे वह बोला। 'आह। थोड़ी सी भुनी काड (मछली) लो ? देखो क्या मजा मिलता है।'

अभी तक उसने काड को छोड़ा नहीं था और वह एक बढ़िया नये चाकू से उसका बाहरी हिस्सा साफ करने लगा।

'तुम्हारा चाकू बड़ा बेहतरीन है ?' लॉतिये ने कहा, 'यह लायडी ने मुझे भेंट किया है।' जॉली ने उत्तर दिया। वह इस बात को छिपा गया था कि लायडी ने इसे उसके आदेश से मोन्टमू के एक चाकू बेचने वाले की दूकान से चुराया है।

तब, जब कि अभी वह मछली साफ ही कर रहा था, वह बड़े घमंड के साथ बोला : 'क्या मेरा घर आरामदेह नहीं है ? ऊपर से यहा कुछ गरम भी है और वहाँ आराम भी मालूम पड़ता है।'

लॉतिये भी आकर वहाँ बैठ गया था और इस लडके की बातों का आनन्द लेने लगा। उसकी नाराजी अब दूर हो चली थी। इस बिगडे हुए लड़के मे वह दिलचस्पी रखने लगा था, जो कि अपने दुर्गुणो के बावजूद इतना बहादुर और उद्यमी था। वास्तव मे, उसे भी खान की सतह मे एक प्रकार का आराम मिल रहा था। गरमी अधिक नहीं थी और हर मौसम मे यहाँ एक सा ही तापमान रहता था, कुनकुने पानी की गरमी; जब कि ऊपर दिसम्बर की तीखी सूखी हवा गरीबो के कलेजे को कँपाये डाल रही थी। पुराने पड़ जाने से, गलियारे हानिकारक गैसो से मुक्त हो चुके थे। 'फायर-डैंप' भी नही रह गया था। लकड़ी और सीली जमीन की एक तीव्र, मिली-जुली गंध वहाँ से आ रही थी। वहाँ सुफेद तितलियाँ, सफेद छिपकलियाँ, मकड़ियाँ और सूर्य की धूप और रोशनी से वंचित दुनियाँ के रंगतहीन अन्य कीड़े मकोड़े थे।

'तब, तुम्हे डर नहीं लगता ?' लॉतिये ने पूछा। जॉली ने उसकी ओर आश्चर्य से देखा।

आखीर में कार्ड साफ की जा चुकी थी। उसने लकड़ी से आग जलाई, तवा निकालकर उस पर उसे भूना। तब उसने एक रोटी से दो टुकड़े काटे। भोजन मे

नमक बहुत ज्यादा था फिर भी तेज हाजमा शक्तिवालों के लिए काबिले बरदाश्त !

लॉतिये ने अपना हिस्सा स्वीकार किया।

'मुझे आश्चर्य नहीं कि तुम तगड़े हो गये हो जब कि हम सब कमजोर पड़ते जा रहे हैं। तुम जानते हो इस तरह अपने आप भकोसना जंगलीपन है ? और दूसरे ? तुम उनकी बात नहीं सोचते ?'

'ओह ! दूसरे इतने बेवकूफ क्यों हैं ?'

'तुम छिपे हो, यह तो ठीक ही है अन्यथा तुम्हारे पिता को अगर मालूम हो जाय कि तुम चोरी करते हो तो वह तुम्हें मार ही डाले।'

'क्या कहा। बुर्जुआ लोग भी हममें चोरी करते हैं ! तुम्हीं तो हमेशा यह बात कहते हो। अगर यह रोटी मैंने माइग्रेट में झपटी है तो आपको मालूम होना चाहिए कि यह वह रोटी है जिसे उसे हमें देना है।'

नवयुवक मुँह में ग्रास भरे चुप बैठा था। उसे उसकी बातों में बेचैनी ही महसूस हो रही थी। वह उस बंदर की सी हरकतें करने वाले चालाक और लंगड़े बच्चे की हरी आँखों और बड़े-बड़े कानों को देख रहा था।

'और लायडी ?' लॉतिये ने पूछा; 'तुम उसे यहाँ नहीं लाते।' जॉली बड़े जोरों हँसा।

'नहीं, वह छोटी सी बच्ची है। मैं कभी नहीं लाता, औरत जात !'

और वह हँसता ही रहा। उसकी हँसी में लायडी और बीवर्ट के लिए एक प्रकार की घृणा भरी थी। 'किसी ने कभी ऐसे बेवकूफों को न देखा होगा ? वे यह सब उठाकर खाली हाथ ही चले गये होंगे। लेकिन मैं इस सुखद स्थान में काड का मजा ले रहा हूँ।' अन्त में उसने छोटे दार्शनिक की गंभीरता से कहा।

'अकेले रहना अच्छा है, इसमें नीचे गिरने का खतरा नहीं।'

लॉतिये अपनी रोटी खत्म कर चुका था। उसने जिन की एक घूंट पी। उस समय वह सोच रहा था कि क्या जॉली के इस आतिथ्य के लिए वह उसके कान पकड़ पकड़ कर ऊपर ले जाय और उसके बाप से कहने का भय दिखाते हुए आइन्दा चोरी न करने का हिदायत दे तो बुरा तो न होगा ? परन्तु गम्भीरतापूर्वक इस प्रश्न पर विचार करने पर उसे एक बात सूझी। कौन जानता है कि ऊपर स्थिति बिगड़ने पर उसे अपने या अपने साथियों के लिए इसकी जरूरत पड़े ! उसने बच्चे को कसम खिलाई कि वह बाहर न सोयेगा। जैसा कि कभी कभी होता था और वह यहीं पुआल में सो जाया करता था। फिर मोमबत्ती का टुकड़ा लेकर, बच्चे को अपना सामान आदि सम्भालने के लिए वहीं छोड़ वह ऊपर आ गया।

भारी ठंढ के बावजूद माकेटी बल्ली पर बैठी उसका इन्तजार करते-करते

निराश हो चली थी। उसे देखकर वह उसकी गर्दन से जा लिपटी और जब उसने कहा कि अब वह उससे न मिलेगा तो उसे इतनी तकलीफ हुई कि मानो किसी ने उसके पेट में चाकू भोंक दिया हो। हे ईश्वर! क्यों? क्या वह उसे बहुत ज्यादा प्यार नहीं करती? उसके साथ उसके घर जाने की इच्छा के वशीभूत वह न हो जाय इस दृष्टि से वह उसे सड़क की तरफ ले गया और बड़े प्यार से उसे समझाने लगा कि वह उसे साथियों की नजरों से गिरा रही है, राजनैतिक उद्देश्य से विमुख बना रही है। वह ताज्जुब कर रही थी कि राजनीति से उसका क्या वास्ता? अंत में उसे ध्यान आया कि उसके साथ देखे जाने पर वह शरमाता है। उसे कोई ताज्जुब नहीं हुआ; यह स्वाभाविक था। उसने सुझाव रखा कि लोगों के सामने यह दिखाने के लिए कि उसका उससे सम्बन्ध टूट चुका है, वह उसके साथ बड़ी उदासीनता से पेश आयेगी। परन्तु उसे कभी-कभी उससे अवश्य मिलना चाहिए। अपनी वरबादी में वह उसको टटोल रही थी। वह कह रही थी कि वह उसकी नजरों से दूर रहेगी, उसे पाँच मिनट भी नहीं रोकेगी। वह द्रवित हो रहा था लेकिन इन्कार करता जा रहा था कि यह जरूरी है। तब, जब वह जाने लगा वह कम से कम उसे उसका चुम्बन लेना चाहता था। वे धीरे-धीरे मोटमू के मकानों की पहली कतार तक पहुँच गये थे और एक दूसरे के गले में बाँह डाले चाँद की रोशनी में खड़े थे। उसके पास से एक औरत यकायक गुजरी। वह इस प्रकार चौंकी मानो किसी पत्थर की ठोकर से गिर पड़ी हो।

'वह कौन थी?' लॉतिये ने व्यग्रता से पूछा। 'कैथराइन,' माकेटी बोली। वह जोन-बर्ट से वापस आ रही है।'

उनसे कुछ दूर वह चली जा रही थी, सिर झुकाये, बहुत थकी-थकी सी। नवयुवक को दुख हुआ कि उसने उन्हें देखा। उसकी अन्तरात्मा एक असह्य आत्मग्लानि से भर उठी। क्या वह उस आदमी के साथ नहीं गई? क्या उसने, इसी रिवोली रोड पर एक आदमी के सामने आत्मसमर्पण कर उसी प्रकार की तकलीफ उसे नहीं पहुँचाई? पर, जो कुछ भी हो उसी की भाँति कार्य करने का उसे दुख था, आत्मग्लानि थी।

'क्या मैं तुम से पूछ सकती हूँ कि क्या बात है?' आँखों में आंसू भरे माकेटी, बोली, 'अगर तुम मुझे पसंद नहीं करते तो इसीलिए कि तुम किसी और को प्यार करते हो।'

दूसरे दिन मौसम बढ़िया था, यह चिल्ले जाड़े का एक ऐसा सुन्दर दिन था जब कि पाँव के नीचे सख्त जमीन स्फटिक के समान स्वच्छ चमकती है। जॉली एक ही बजे घर से निकल गया था लेकिन उसे चर्च के पीछे बीवर्ट का इन्तजार

करना पड़ा। और फिर वे दोनों, वगैर लायडी को लिए, जिसे उसकी माँ ने पुनः गलियारे में बंद कर दिया था और बाद मे यह कह छोड़ा था कि यदि वह टोकरी भर सलाद लेकर न लौटी तो उसे रात भर चूहों के साथ बन्द कर दिया जायगा, रवाना होने ही वाले थे। जॉली ने उसे बाध्य किया कि सलाद की बाद में देखी जायगी। बहुत अर्से से रसेन्योर के बड़े मोटे-ताजे खरगोश पोलैण्ड पर उसकी निगाह लगी हुई थी। वह एवेन्टेज से गुजर ही रहा था कि तभी खरगोश सड़क पर निकल आया। उसने कूद कर उसे कान से पकड़ लिया और सलाद के लिए लाई गई लड़की को टोकरी में ठूंसने के बाद वे तीनों भाग निकले। उनका इरादा था कि बाद में इसे जितनी तेज हो सके जंगल तक दौड़ाने का आनन्द लिया जायगा।

परन्तु वे जाचरे और मावयूट को देखने के लिए ठहर गए जो कि अन्य दो साथियों के साथ एक-एक गिलास चढ़ा कर क्रामी का खेल आरंभ कर चुके थे। दाँव पर एक नयी टोपी और एक लाल रूमाल था, जो रसेन्योर के पास जमा कर दिया गया था। चारों खिलाड़ी, दो के विरुद्ध दो, पहली पाली मे वोरो से पाइलट फार्म तक लगभग तीन किलोमीटर की दूरी तय कर रहे थे। इस पाली मे जाचरे जीता था। उसने साथ चोटों मे दूरी तय की थी जब कि मावयूट को आठ की दरकार थी। उन्होंने बाल को, जो छोटे अंडे के समान लकड़ी की थी, एक ओर ऊँचा कर सड़क पर रख दिया था। जाचरे ने, बड़ी कुशलता के साथ अपनी पहली ही चोट मे उसे चुकन्दर के खेतों के आरपार चार सौ गज से भी अधिक दूर फेंक दिया; क्योंकि गाँव मे या सड़क मे कोई आदमी उसकी चोट से न मर जाय इसलिए इस खेल को खेलने पर प्रतिबन्ध था। मावयूट ने भी, जो इस खेल मे सिद्धहस्त था, एक ही चोट मे बाल एक सौ पच्चीस मीटर पीछे पहुँचा दी। और खेल चल रहा था कभी कोई आगे होता, कभी कोई पीछे। दोनों पक्ष हमेशा दौड़ते रहते और उनके पांव जुते हुए खेतों की जमी मेढ़ों पर आघात कर रहे थे।

पहले तो खिलाड़ियों के जोरदार प्रहारों से खुश होकर जॉली, बीवर्ट और लायडी भी उनके पीछे-पीछे भागे। फिर उन्हे पोलैण्ड की याद आई, जिसे वे टोकरी मे हिला रहे थे और खुले मैदान मे खेल छोड़ कर उन्होंने पोलैण्ड को यह देखने के लिए छोड़ दिया कि वह कितना तेज दौड़ता है। खरगोश भागा, उसके पीछे वे भी दौड़े। एक घंटे पूरी रफ्तार से दौड़ कर पीछा करने के बाद उन्होने उसे फिर पकड़ लिया। वे चिल्लाते हुए उसे डराने के लिए पीछे भाग रहे थे। अगर पोलैण्ड के बच्चा होने वाला न होता तो वे उसे कभी न पकड़ पाते।

जब वे हाँफते हुए सुस्ता रहे थे तो कसमों की आवाज सुनकर उन्होंने सिर घुमाया। क्रासी पार्टी फिर उन्हे मिली। जाचरे की बाल से उसके भाई का भेजा खुल गया होता। अब खिलाड़ियों की चौथी पाली थी। पाइलेट फार्म से वे क्वाटरे-चेम्स, वहाँ से मोंटोइरे पहुँचे थे और अब छः चोटों मे वहाँ से प्रीडेवचेज जा रहे थे। इस प्रकार एक घंटे में उन्होंने ढाई लीग का रास्ता तय किया था और इसी दौरान मे एस्टेमिनेट विसेंट और ट्राथसेजेस बार मे एक एक डोज भी चढ़ाई थी। इस बार माक्यूट जीत मे था। उसको दो चोटें और खेलनी थीं और यह निश्चित था कि वह जीत जायगा। परन्तु जाचरे ने, अपनी पारी मे इस कदर जोरों मे बाल पर चोट मारी कि वह एक गहरे खड्ड मे जा गिरी। माक्यूट का पार्टनर उसे निकाल नही सका; और यहाँ एक जिच पैदा हो गई। चारों चिल्ला रहे थे क्योंकि वे उन्नीस-बीस थे और फिर से खेल शुरू करना जरूरी हो गया था। प्रीडेवचेज से पाँच चोट मे हर्वम रोजी पाइन्ट तक दो किलोमीटर दूरी तय करनी थी जहाँ लेरेनार्ड मे वे फिर ताजे हो जायेंगे।

परन्तु जॉली के दिमाग में एक विचार सूझा। उसने उन्हें आगे बढ जाने दिया और जेब से एक तागा निकाल कर पोलेएड के पीछे के एक पाँव मे बाँध दिया। इससे बड़ा मनोविनोद हुआ। उसकी चाल देखकर वे तीनों हँसते-हँसते लोटपोट हो गए। बाद मे उन्होंने उसे उसकी गर्दन मे बाँध कर उसे दौड़ने के लिए छोड़ दिया। जब वह थक गया तो वे उसे एक गाड़ी की भाँति कभी पीठ के बल कभी पेट के बल घसीटने लगे। यह भी एक घंटे से अधिक चला। जब ब्रुकोट के जगल के पास, क्रासी पार्टी के मिलने पर उन्होने उसे जल्दी से टोकरी मे छिपाया तो उस समय वह जानवर कराह रहा था।

जाचरे, माक्यूट और अन्य दो खिलाड़ी दो किलोमीटर तय कर रहे थे। उन्होंने बीच में पड़ने वाली निर्धारित सरायों के अलावा और कही विश्राम न करने का निश्चय किया हुआ था। हर्वम रोजी से वे बुचे और फिर क्राप्स डे-पेरी, फिर केम्बले पहुँचे। उनके पावो के नीचे धरती, जिसमे हिम जमा था, चरमरा रही थी। वे लगातार बाल के पीछे भाग रहे थे। खुश्क मौसम मे क्रासी का प्रत्येक प्रहार बन्दूक के समान आवाज कर रहा था। उनके मांसल, सुदृढ़ हाथ हेण्डल पकड़े थे, उनका शरीर आगे को झुका था, मानो वे बछड़ा काट रहे हों। और यह घंटो चलता रहा, मैदान के एक छोर से लेकर दूसरे छोर तक, गड्ढों और झाड़ियों के ऊपर, सड़कों के ढालों पर और घिरे हुए बाड़ों की दीवारों के पास। इसके लिए मजबूत सीने और घुटनों मे इस्पात की सी मजबूती की जरूरत थी। खनिक इस प्रकार खान की जंग, खान का मुर्चा मिटा रहे थे। कुछ इनमें से इतने उत्साही थे कि पचीस

पर वे दस लीग पार कर सकते थे। चालीस के बाद उन्होंने खेल बंदकर दिया, वे बहुत अधिक थक गये थे।

पाँच बजा, द्वाभा होने लगी। कौन टोपी और रूमाल जीता है इसका निश्चय करने के लिए उन्होंने बरंडामे जंगल के पास एक बार और प्रयास किया। जाचरे, राजनीति के प्रति गहरी उदासीनता से उसका मजाक उड़ा रहा था : वहाँ साथियों के बीच में पूरी लम्बाई मे लेटने का मजा रहेगा। बॉली बस्ती छोड़ने लिए खेतों को पार कर रहा था ? कुपित मुद्रा में वह लायडी को डरा रहा था जो कि पश्चात्ताप और डर से बोरो लौटकर मलाद इकट्ठा करने की बात कह रही थी। क्या वे लोग सभा को छोड़ देंगे ? वह जानना चाहता था कि बड़े-बूढ़े क्या कहते हैं। उसने बीवर्ट को धकियाते हुए यह सुझाव रखा कि पेड़ों का सिलसिला शुरू होने के स्थान तक पोलैण्ड को दौड़ाकर यात्रा को मनोरंजक बनाया जाय और पत्थरों से उसका पीछा किया जाय। उसका वास्तविक इरादा उसे मार कर ले जाने और फिर रिक्वीलॉ के उस तहखाने मे खाने का था। खरगोश आगे भागा और पीछे से पत्थर मारते हुए वे लोग। एक पत्थर से उसकी पूँछ कट गई, दूसरे से वह अधमरा हो गया, अंधकार बढ़ने के बावजूद उन्होंने उसे मार ही डाला होता कि जंगल की एक खुली जगह में उन्होंने लॉतिये और माहे को खड़ा पाया। वे भयभीत हो कर खरगोश पर झपटे और उसे टोकरी मे बंदकर दिया। ठीक उसी समय जाचरे, मावयूट और अन्य दो खिलाड़ियों ने क्रामी के आखिरी दाँव मे गेंद को खुली जगह से कुछ मीटर की दूरी पर पहुँचा दिया था वे सभी सभा स्थल के बीच मे पहुँच गये थे।

समूचे क्षेत्र मे, इस चौरस मैदान की सड़कों, पगडंडियों से होकर वे लोग झुटपुटा होने के बाद से लम्बे जुलूस के रूप मे या अकेले-दुकेले जंगल के इस गहन क्षेत्र मे इकट्ठा हो रहे थे। हर बस्ती खाली हो चली थी, औरतें और बच्चे भी झुंड के रूप मे इस प्रकार निकल पड़े थे मानो वे घूमने निकले हों। अब सड़कों मे अंधेरा छा रहा था, यह चलती हुई भीड़, एक निर्धारित स्थान पर इकट्ठा हो रही थी जिसमे से अब लोगों की पहचान मुश्किल थी। झाड़ियों, लतरों और झुरमुटों के बीच से, रात्रि की शांति के बीच, लोगों के बातचीत करने की एक अस्पष्ट प्रतिध्वनि गूंज रही थी।

एम० हनेब्यू ने, जो ऐसे समय में घोड़ी पर बैठा घर की ओर लौट रहा था, इस प्रतिध्वनि को सुना। जाड़े की इस खुशनुमा रात मे उसे जोड़ों के रूप में और लम्बी कतार के रूप में घूमने वालों की टोलियाँ मिली थीं। प्रेमियों के जोड़े, दीवारों के पीछे मुँह से मुँह सटाये काम क्रीड़ा का आनंद उठा रहे थे। क्या उसे रोज ऐसे

ही दृश्य नहीं मिलते ? लड़कियां प्रत्येक गड्ढे के नीचे टांग फैलाये पड़ी रहती है, और इन भिखारियों के लिए यही एक मात्र मनोरंजन है जिसमें धन खर्च नहीं होता। और यह बेवकूफ जिन्दगी के प्रति शिकायत करते है जब कि इस प्रेम की खुशी से वे अपने आप को पूर्ण रूप से भर सकते हैं ! अगर वह एक औरत के साथ, पत्थरों के एक ढेर के पास जीवन का सुख उठा कर नये सिरे से जिन्दगी शुरू कर सकता होता और वह औरत उसे प्राणपण से प्यार करती होती तो वह सहर्ष इन लोगों की भी भांति भूखा मरने को तैयार था। उसका दुर्भाग्य बिना किसी सान्त्वना के था और वह इस गरीबों से ईर्ष्या कर रहा था। अपना सिर झुकाये हुए, अपनी घोड़ी पर सवार, धीरे-धीरे, इन चुम्बनों की मधुर, पर अपने लिए अति कष्टकर, ध्वनि के बीच वह घर की ओर बढ़ रहा था।

७

यह स्थान पास डे डामेस के नाम से पुकारा जाता था, जहां पेड़ों के गिर जाने से काफी खुली जगह बन गई थी। हल्के ढाल मे फैले इसके चारों ओर गहरा जंगल और लम्बे-लम्बे पेड़ थे। इस स्थान की घास में बड़े-बड़े पेड़ गिरे हुए थे और बाँई ओर लट्ठों के ढेर मे एक छः भुजाओं का क्षेत्र सा बन गया था। झुटपुटे के साथ साथ ठंड भी तीखी होती गई और जमी हुई धरती पांवों के नीचे चरमराती थी। जमीन मे काला अंधेरा था और सफेद टहनियां पीले आसमान के नीचे चमक रही थीं। क्षितिज मे पूर्णचन्द्र उदित हो चुका था जो धीरे-धीरे सितारों की चमक को कम कर रहा था।

लगभग तीन हजार खनिक सभा स्थल में आये थे। मरदों, औरतों और बच्चों की बढ़ती हुई भीड़ धीरे-धीरे इस खुली जगह में फैलती हुई पेड़ों के नीचे तक चली गई थी। बाद में पहुँचने वाले अब भी खड़े थे, उसने सिरों की लम्बी छाया पड़ोसियों को ढांपे ले रही थी। इस निश्चल और हिम से भरे जंगल में तूफान की भांति एक गड़गड़ाहट का शब्द इस अपार भीड़ से उठ रहा था।

ढाल के सिरे पर लॉतिये रसेन्योर और माहे के साथ खड़ा था। वहां एक झगड़ा उठ खड़ा हुआ था। यकायक चिल्ला कर कहे गए वाक्य सुनाई दे रहे थे। उनके पास कुछ लोग सुन रहे थे—लेवक्यू घूंसा ताने, पेरी अपना मुँह फिराये और इस बात से क्रुद्ध-सा कि अब वह बीमारी के बहाने टाल-मटोल नहीं कर सका। वहां फादर बोनेमॉ और बुड्ढा माक्यू भी विचारों मे डूबे हुए, अगल-बगल, गिरे हुए पेड़ की एक टहनी में बैठे थे। उनके पीछे जाचरे, माक्यूट और अन्य लोग थे, जो वहां लोगों का मजाक उड़ाने आये थे। उसके बाद इकट्ठा बैठी हुई महिलायें

बड़ी गम्भीर मुद्रा में थीं, मानो वे किसी गिरजे में बैठी हों। लेवक्यू की पत्नी द्वारा धीरे से खाई गई कसम पर माहेदी ने मौन ही अपना सिर हिलाया, फिलोमिना खाँस रही थी, उसकी ब्रांकाइट्रिस (फेफड़े की सूजन की बीमारी) जाड़े में उभर आई थी। सिर्फ माकेटी के दाँत हँसने से चमक रहे थे। वह ब्रूली द्वारा अपनी लड़की को दी जा रही गालियों का आनन्द ले रही थी जो कह रही थी कि ऐसी हरामजादी संतान है। उसने चुपचाप खरगोश उड़ाने के लिए मुझे बाहर भेज दिया। वह बिक गई है और अपने मरद की नपुंसकता पर मजा मारती है। और जॉली लकड़ी के एक ढेर पर बैठा लायडी को उठाये हुए था। बीवर्ट उसके पीछे था। तीनों ही सबसे ऊँचे हवा में बैठे थे।

झगड़ा रसेन्योर ने खड़ा किया था, जो रस्मी तौर से पदाधिकारियों के चुनाव से आरम्भ करना चाहता था। वह बोन-जोय की अपनी पराजय से बेहद खीजा हुआ था और उसने बदला लेने की कसम खाई थी। उसे घमंड था कि वह प्रतिनिधियों के नहीं, खनिकों के आमने-सामने आने पर अपनी पुरानी प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकता है। लाँतिये झल्लाया हुआ था और सोचता था कि इस जंगल में पदाधिकारियों की बात ही व्यर्थ की है। चूंकि उनका भेड़िये की तरह पीछा किया जा रहा है इसलिए उन्हें क्रांतिकारी तरीके से, जंगलियों की भाँति काम करना चाहिए।

चूंकि झगड़ा लम्बा चलने का अंदेशा हो चला था, उसने तत्काल एक पेड़ के तने पर कूद कर नेतृत्व ग्रहण कर लिया और चिल्लाया—

'साथियो ! साथियो !'

भीड़ की आपसी बातचीत का कोलाहल एक गहरी साँस में डूब गया। माहे, रसेन्योर के विरोध को रोके हुए था। लाँतिये ने बुलन्द आवाज में बात जारी रखी :

'साथियो ! चूंकि उन्होंने हमारे बोलने पर पाबन्दी लगाई है, चूंकि उन्होंने हमारे पीछे पुलिस लगाई है, मानो हम चोर-डाकू हों, इसलिये हम यहाँ बातचीत करने आये है। यहाँ हम आजाद हैं, इत्मीनान से है। हमें यहाँ कोई चुप नहीं कर सकता। हम चिड़ियों और जानवरों की तरह आजाद है।,

बिजली की कड़कड़ाहट के समान शब्द करती भीड़ ने उसके कथन का स्वागत किया।'

'हाँ, हाँ। जंगल हमारा है, हमें यहाँ बोलने की आजादी है। आगे बोलो।'

तब एक क्षण को लाँतिये तने पर स्थिर खड़ा रहा। चन्द्रमा अब भी क्षितिज के नीचे था और उसकी रोशनी में सिर्फ पेड़ों के सिरे की शाखायें चमक रही थीं।

अंधकार में बैठी भीड़ धीरे-धीरे शान्त और चुप हो गई। वह भी अंधकार में, ढाल के सिरे पर खड़ा एक छाया-मूर्ति सा लग रहा था।

धीरे से उसने अपना हाथ उठाया और बोलना आरम्भ किया। लेकिन उसकी आवाज भय पैदा करने वाली न थी। वह जनता के एक विनम्र दूत की भाँति वस्तु स्थिति का ब्यौरा पेश कर रहा था। वह भाषण के उस अंश को पूरा कर रहा था जिसे बोन-जोन में पुलिस कमिश्नर के आ जाने से उसे संक्षेप में कहना पड़ा था। उसने हड़ताल के इतिहास को तेजी से दुहराना शुरू किया, जिसमें वह सिर्फ तथ्य रखता जा रहा था। पहले उसने बताया कि वह हड़ताल को नापसन्द करता है; खनिक इसे नहीं चाहते थे। यह मालिकों ने तख्ते बैठाने की नयी प्रणाली लागू कर भड़काई है। तब उससे प्रतिनिधियों द्वारा उठाये गए पहले कदम का स्मरण दिलाया कि वे मैनेजर से मिलने गए। डाइरेक्टरों ने उनका विश्वास नहीं किया और उन्हें लूटने के प्रयास के बाद दम मेटिम की रियायत की बात कही। अब उसने प्राविडेन्ट-फंड के खत्म होने के आँकड़े बताये और बताया कि बाहर से मिली सहायता का क्या उपयोग हुआ? उसने संक्षेप में इन्टरनेशनल, प्लूचर्ड और अन्य लोगों को बचाते हुए यही कहा कि विश्व विजय के महान कार्य के सामने वे इससे अधिक हमारे लिए कुछ नहीं कर पाये। इसलिए स्थिति दिन-ब-दिन खराब होती जा रही है, कम्पनी सार्टिफिकेट वापस दे रही है और बेल्जियम से मजदूर लाने की धमकी देती है। अलावा इसके वह कमजोरों को डरा-धमका रही है और उसने कुछ खनिकों को पुनः नीचे जाने के लिए मजबूर भी किया है। उसने अपनी उदास आवाज कायम रखी मानो वह कोई बुरी खबर सुनाने जा रहा हो। उसने कहा कि भूख विजयी हो रही है, आशा खत्म हो चुकी है और संघर्ष साहस के आखरी प्रयास तक पहुँच चुका है। यकायक उसने अपनी आवाज को उठाये बिना भाषण समाप्त करते हुए कहा—

'इन परिस्थितियों में, साथियो, आज रात आपको कोई निश्चय ले लेना है। क्या आप लोग हड़ताल जारी रखना चाहते है? और अगर ऐसा है तो आप कम्पनी को पराजित करने के लिए क्या करना चाहते है?'

तारों भरे आसमान से पाले की तरह खामोशी बरसी। इन शब्दों के बोझ के नीचे, जो सब का गला दबाने जा रहे थे, अंधकार में अदृश्य भीड़ मौन थी और पेड़ों से निराशा की साँसें सुनाई दे रही थीं।

लेकिन लॉंतिये अपनी आवाज में परिवर्तन लाकर फिर भाषण करने लगा था। वह अब संघ के मन्त्री के रूप में नहीं अपितु उस समूह के अगुवा, सत्य के क्रांतिदूत की भाँति बोल रहा था। 'क्या यह हो सकता है कि वे कायरों की भाँति

अपने शब्दों को वापस ले लें ? उनका बेकार ही एक महीने तक कष्ट उठाना और फिर सिर झुकाये खानों में जाना और बदतर जिन्दगी बिताना है ! क्या यह बेहतर न होगा कि इस पूंजी की निर्दयता, उसके अत्याचारों को, जो मजदूरों को भूखों मार रही है, मिटाने के प्रयास में हम सब तत्काल मर जाँय ? हमेशा, तब तक भूख के सामने आत्मसमर्पण करो जबतक कि भूख शान्त से शान्त व्यक्ति को भी विद्रोही न बना दे। क्या यह बेवकूफी का खेल नहीं है जो कि हमेशा नहीं चल सकता ? और उसने शोषित खनिकों की ओर संकेत करते हुए कहा कि हर संकट में एक मात्र इन्हें ही विपत्ति उठानी पड़ती है, जब कभी प्रतियोगिता की आवश्यकतायें कीमतें घटा देती है तो इन्हें ही अपने पेट पर पट्टी बाँधनी पड़ती है। नहीं, तम्बे बेठाने का नियम स्वीकार नहीं किया जा सकता, यह कम्पनी की मितव्ययिता का छिपे रूप में प्रयास है, वे हर आदमी का एक घन्टा प्रतिदिन का कार्य छीन लेना चाहते है। इस बार बहुत हो गया; वह दिन दूर नही जब कि यह शोषित, दीन-सीमा के छोर तक धकेल दिये जाने पर न्याय का बंधन तोड़ देंगे।'

वह अपना हाथ हवा में उठाये खड़ा था। 'न्याय' शब्द से भीड़ में एक कम्पन पैदा हुआ और सूखी पत्तियों की खड़-खड़ाहट की तरह तालियाँ बज उठी। भीड़ चिल्लाई।

'न्याय ! यही समय है ! न्याय !'

धीरे-धीरे लॉतिये को जोश चढ आया। उसके पास रसेन्योर की सामान्य रीति से भाषण करने की प्रतिभा नहीं थी। कभी-कभी उसे शब्द नहीं मिल पाते थे, उसे वाक्यों को बनाना पड़ता था और उन्हें बाहर निकालने के प्रयास में वह अपने बाजुओं के हिलाने-डुलाने पर जोर देता था। अपने श्रोताओं को समझाने के लिए वह मजदूरों के हाव-भाव, उनकी भाव-भंगिमा प्रदर्शित कर रहा था। कभी वह बाँहे समेटता, कभी फैलाता, हुआ अपनी मुट्ठियाँ आगे बढाता, फिर यकायक अपने जबड़े आगे बढ़ाता, मानो काटना चाहता हो। इसका उसके साथियों पर एक असाधारण प्रभाव पड़ा। वे सब कह रहे थे कि यद्यपि वह बडा नही है तो भी सब उसका भाषण सुन सकते है।

'वेतन प्रणाली गुलामी की एक नयी किस्म है।' उसने अधिक कर्कश आवाज में फिर कहना शुरू किया। खान खनिक की होनी चाहिए। जैसे कि समुद्र मछुओं का है और धरती किसान की। आप लोग समझे ? खान आप लोगो की है, आप सब की, जिन्होंने एक शताब्दी तक इतना कष्ट सहकर और खून-पसीना बहा कर इसका मूल्य अदा किया है।'

वह साहस के साथ अस्पष्ट कानूनी प्रश्नों की ओर बढ़ा लेकिन खानों से सम्बन्धित विशेष कानूनी जटिलता मे खो गया। 'जमीन के भीतर का हिस्सा भी, जमीन की ही भाँति राष्ट्र का है, सिर्फ कुछ अवांछनीय विशेषाधिकारों से ही कम्पनियों को उसका एकाधिकार मिला है और उन्होंने मोंटसू में पुराने रिवाज के अनुसार पुराने फौजियों की जागीरों के मालिकों के साथ संधि कर रियायतों की तथाकथित वेधानिकता को और भी जटिल बना दिया है। खनिकों को सिर्फ तब अपनी सम्पत्ति को पुनः जीतना है।' और हाथ के इशारे से उसने जंगल के पार फैले समूचे क्षेत्र को बतलाया। इस क्षण चन्द्रमा ने, जो कि क्षितिज के ऊपर आ चुका था, पीछे से ऊँची शाखाओं के बीच से रोशनी फेंकते हुए उसे प्रकाश मे ला दिया था। जब भीड़ ने, जो अब भी छाया में थी, उसे रोशनी के प्रकाश मे पूर्ण धवल और दोनो हाथों से भाग्य श्री बाँटते हुए देखा, तो बड़ी देर तक जोरों मे तालियों की गड़गड़ाहट हुई।

'हाँ, हाँ, तुम ठीक कहते हो। शाबाश !'

तब लॉतिये घूमता-फिरता अपने प्रिय विषय पर आया। उत्पादन के साधनो की सामूहिकता को स्वीकार कर लेना।' जब वह इसे एक वाक्य मे दुहराता था तो इसका पाण्डित्य दर्शन उसे बहुत खुशी दिलाता था। मौजूदा समय मे उसका विकास पूर्ण हो गया था। एक नौसिखिये की भावुक बन्धुत्व मे आरंभ कर, वेतन प्रणाली में सुधार की आवश्यकता महसूस करते हुए वह उसकी रुकावट के राजनैतिक विचार पर पहुँच गया था। बोन जोय की बैठक के बाद से उसका समुदायवाद, जो अब भी मानवीय और बिना किसी नियम के था, एक जटिल कार्यक्रम के रूप मे केन्द्रित हो गया था, जिसे वह वैज्ञानिक रूप से एक के बाद एक प्रस्तुत कर रहा था। सर्व प्रथम उसने इस बात की पुष्टि की कि आजादी सिर्फ शासन के विनाश से ही संभव है। तब, जब लोग सरकार पर कब्जा कर लेंगे, सुधार आरंभ होंगे; प्राचीन कम्यून स्थापित किये जायंगे, नैतिक और कुचले-दबे परिवार का स्थान समान अधिकारों वाला स्वतंत्र परिवार लेगा—पूर्ण-समानता, नागरिक, राजनैतिक और आर्थिक; व्यक्ति की आजादी की गारंटी रहेगी और अन्त मे निशुल्क और रोजगार की शिक्षा भी दी जायगी जिसका व्यय भार समुदाय अपने ऊपर लेगा। इससे पुराने सड़े-गले समाज का आमूल पुनर्निर्माण होगा। उसने विवाह, वसीयत के अधिकार की आलोचना करते हुए, पुरानी शताब्दियों की अधर्मी स्मृतियों को मिटाकर हर एक के भाग्य निर्माण की बात कही। वह अपने भाषण के दौरान मे हमेशा अपने हाथों से इस प्रकार का हाव-भाव प्रदर्शित कर रहा था मानो वह पकी फसल काट रहा हो। फिर उसने पुनर्ननिर्माण, मानवता के भविष्य को बनाने और बीसवीं शताब्दी

के प्रारंभ में ही सत्य और न्याय का महल खड़ा करने की बात कही। मानसिक तनाव की इस स्थिति में तर्क लड़खड़ा गया, और सिर्फ वर्ग विशेष का ही निश्चित विचार रह गया। सूक्ष्म ज्ञान और सद्भावना के भाव अन्तर्ध्यान हो गए, इस नयी दुनिया को प्राप्त करने से सुगम और कुछ भी नहीं दिखाई दे रहा था। उसने हर चीज पहले से ही देख ली थी; वह मशीन की भाँति बोल रहा था।

अन्त में वह बोला, 'हमारी पारी आ गई है, अब शक्ति और दौलत पाने का काम हमारा है।'

जंगल की इस गहराई से उसका जोरदार समर्थन हो रहा था। चन्द्रमा अब समूचे भू भाग को प्रकाशित कर रहा था। जन समूह के सिरों का एक विशाल समुद्र सा वहाँ लहरा रहा था, इस जमा देने वाली ठंढी हवा में उनके चेहरों में क्रोध, आँखों में चिनगारी निकल रही थी। उन भूखे पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों के खुले हुए मुंह ऐसे प्रतीत होते थे मानो वे उस पुरानी दौलत को लूटने के लिए मुंह बाये खड़े हों, जिससे उन्हें वंचित रखा गया है। अब वे ठंढ महसूस नहीं करते थे, इन जोशीले शब्दों ने उनकी हड्डी-हड्डी में गरमाहट पहुँचा दी थी। धार्मिक जिहाद में वे पृथ्वी से ऊपर उठ गये थे। उनमें उसी तरह का उफान आ गया था, उसी तरह की आशा बँध गई थी जैसी इसाई धर्म के प्रारंभिक दिनों में ईसा को मानने वाले धर्मावलम्बियों की, जो कि न्याय के आने का इन्तजार करते थे। बहुत से अस्पष्ट वाक्यों के वे माने नहीं समझते थे, लेकिन उनकी नासमझी ही उनके लिए आशाओं का द्वार खोलती थी और उन्हें एक सुनहरे-चमकीले संसार में पहुँचा रही थी। क्या अजीब स्वप्न था! मालिक बनेंगे, कोई दुख तकलीफ नहीं रहेगी, अन्त में आनंद ही आनंद रहेगा!

'यही बात है, खुदा कसम! अब हमारी पारी है! शोषकों का नाश हो!'

औरतें अति उद्विग्न हो गई थीं, माहेंदी अपनी शांति खोती जा रही थी, भूख से उसे चक्कर आ रहा था, लेवक्यू की औरत चिल्ला रही थी, बुड्ढी ब्रूली अपने आप बहक रही थी और अपनी जादूगरनी की सी बांहें चमका रही थी, फिलोमिना खाँसी के दौर से सिसक रही थी और माकेटी इतनी उत्तेजित हो उठी थी कि वह वक्ता के प्रति चिल्ला चिल्लाकर अपने उद्गार व्यक्त कर रही थी। पुरुष वर्ग में, माहे बहका सा क्रोध में गालियां बक रहा था। वह कांपते हुए पेरी और बहुत बड़बड़ाने वाले लेवक्यू के बीच में बैठा था, जब कि जाचरे और माक्यूट वस्तु-स्थिति का मजाक सा उड़ाते हुए आश्चर्य प्रकट कर रहे थे कि उनका साथी बगैर एक बूंद पिये इतनी देर तक बोल सकता है। लकड़ियों के तख्तों के ऊपर, सबसे

ऊँचे मे, जॉली सबसे ज़्यादा शोर मचा रहा था। बीवर्ट और लायडी को उकसाता हुआ वह उस टोकरी को हिला रहा था जिसमें पोलैण्ड बंद था।

फिर आपसी बातचीत शुरू हो गई थी। लॉतिये अपने प्रभाव, अपनी प्रतिष्ठा के नशे का आनंद ले रहा था। वह अपनी शक्ति का इन तीन हजार पशुवत मजदूरों द्वारा कार्यान्वयन देख रहा था, जिनके दिलो-दिमाग को वह एक शब्द द्वारा हिला सकता था। अगर सोवरायन यहाँ आया होता तो वह भी उसके विचारों के लिए, जहाँ तक उन्हे मान्यता देता, उसका स्वागत अवश्य करता और अराजकतावाद में अपने शिष्य की प्रगति से अवश्य खुश होता। जहाँ तक रसेन्योर का सवाल था वह घृणा और क्रोध से अपने कंधे उचका रहा था।

'तुम मुझे भी बोलने दोगे ?' उसने चिल्लाकर लॉतिये से कहा।

लॉतिये पेड़ के तने से नीचे कूद पड़ा।

'बोलो ना, हम देखें तो अगर वे तुम्हारी बात सुनने को तैयार हों ?'

रसेन्योर लॉतिये की जगह पर जा खड़ा हुआ। और उसने शांत रहने की मुद्रा बनाई। लेकिन कोलाहल शांत नहीं हुआ; पहली कतार मे बैठे लोगों के बीच से जो उसे पहचान गए थे, उसका नाम घूमता हुआ पेड़ों के नीचे बैठे लोगों तक पहुँचा, सभी ने उसकी बात सुनने से इन्कार किया। वह त्याज्य देवता था, उसकी सूरत से ही उसके पुराने भक्तों को चिढ़ हो गई थी। उसकी मुख मुद्रा, उसका धाराप्रवाह तर्कसंगत भाषण अब उन्हें मंत्रमुग्ध नहीं करता था, उसे लोगों ने चावल के मांड़ की तरह निकाल दिया था। शोर के बीच मे उसने अपने समझौते की दलीलों से समझाने की कोशिश की। एक ही प्रहार से दुनिया को बदल डालने की असंभवता बतलाते हुए, उसे प्राप्त करने के लिए सामाजिक विकास के समय की इन्तजार की बात कही ? लेकिन उन्होंने उसकी एक न सुनी, उसका मजाक उड़ाया, उसको गालियां दीं और बोनजोय की उसकी पराजय अब ऐसी हो गई जिसको वह सुधार नहीं सकता था। अन्त में उन्होंने जमी हुई काई मुट्ठी भर-भर कर उसकी ओर फेंकनी शुरू की और औरतें चिल्लाईं !

'गद्दार का नाश हो !'

उसने समझाने की कोशिश की कि खनिक खान का मालिक नहीं बन सकता, वह बुनकर की तरह अपना पैशा ही करेगा और उससे कहा कि वह मुनाफे में भागीदारी पसंद करता है। वह चाहता है कि दिलचस्पी रखने वाला मजदूर उस परिवार का बच्चा बन कर रहे।

'गद्दार का नाश हो !' हजारों ने समवेत स्वर में कहा और उस पर पत्थर फेंके जाने लगे।

तब वह पीला पड़ गया, निराशा से उसकी आँखों मे आँसू भर आये। उसका समूचा अस्तित्व ही धराशायी हो रहा था। २० वर्षों का महत्वाकांक्षापूर्ण भाईचारा, भीड़ की अहसान-फरामोशी के नीचे खत्म हुआ जा रहा था। वह पेड़ के तने मे नीचे उतर आया, उसमे बोलने की शक्ति न रह गई थी, उसको दिली सदमा पहुँचा था।

'इसी कारण तुम हँस रहे हो !' उसने क्रोध मे विजयी लॉतिये की ओर घूर कर कहा। 'अच्छी बात है। मैं आशा करता हूँ तुम्हारी बारी भी आयेगी। अवश्य आयेगी, मैं तुम्हें आज बताता हूँ।'

और भविष्य में होने वाली बुराइयों की, जिम्मेदारी मे जिसे वह देख सा रहा था, अपने को बरी सा करता हुआ वह पीला और उदास मुँह लिये वहाँ से चला गया।

तिरस्कारपूर्ण भर्त्सना शुरू हो गई और जब उन्होंने देखा कि इस कोलाहल के बीच फादर बोनेमाँ बोलने के लिए पेड़ के तने पर खड़ा है तो उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। अब तक माक्यू और वह विचारो मे खोये हुए थे, इस रूप मे जैसे कि उनपर पुरानी बातों की प्रतिच्छाया पड़ रही हो। इसमे संदेह नहीं वह इस समय उस भावना के वशीभूत हो गया था, जो कभी-कभी उसकी स्मृतियों को इस तेजी से उभार देती थीं कि वह एकबारगी घंटों उस पर बोल सकता था। वहाँ गहरी खामोशी छा गई और लोग उस वृद्ध की बातें सुनने लगे। वह चाँद की रोशनी मे एक प्रेत-छाया की तरह उन बातों को बता रहा था जिनका तात्कालिक बहस से कोई संबंध नहीं था.....लम्बे इतिहास जिन्हे कोई नहीं समझ सका था.....। वह अपनी जवानी की बात बता रहा था, उसने अपने दो चाचाओं का जिक्र किया जो बोरो मे दब मरे थे; तब उसने फेफड़ो के सूजन की बात बताई जिससे उसकी पत्नी का देहान्त हो गया। उसकी बातों का मुख्य विषय यही था कि स्थिति कभी अच्छी नहीं रही और न रहेगी। इसी प्रकार उनमे से भी पांच सौ व्यक्ति जंगल मे चले आये थे क्योंकि सम्राट ने काम के घंटों मे कमी नही की थी। फिर वह रुक गया और दूसरी हड़ताल की चर्चा करने लगा— मैंने बहुत सी हड़तालें देखी है। वे सभी इन्ही पेड़ों के नीचे समाप्त हुईं। कभी कड़ाके की ठंढ रहती थी, बरफ जमी होती थी और कभी गरमी। एक संध्या तो इतने जोरों की वर्षा हुई कि वे बिना कुछ कहे ही चले गये होते। सम्राट के सिपाही आये और बन्दूकों की गोलियों की बौछार के साथ वह भी खत्म हो गई।'

'हमने अपने हाथ इस प्रकार उठाये और कसमे खाई कि फिर काम पर वापस न जायेंगे। आह ! मैंने भी कसम खाई थी, हाँ, मैंने भी शपथ ली थी।'

भीड़ मे खलबली मचने लगी थी। जब लॉतिये ने यह सब देखा तो वह गिरे पेड़ पर चढ़ आया और उसने बुड्ढे को बगल में कर दिया। उसने चवाल को उनके दोस्तों के बीच पहली कतार में देख लिया था। इस विचार ने, कि कैथराइन भी यहीं होगी, उसमें नयी स्फूर्ति भर दी उसकी इच्छा हुई कि उसके समर्थन में उसके सामने तालियाँ पीटी जायँ।

'साथियो ! आपने सुना; यह हमारे पुराने लोगों में से एक है और कितना कष्ट इसने सहन किया है और अगर हम इन डाकुओं और कसाइयों को ठीक न करेंगे तो हमारे बच्चे भी इसी प्रकार भोगेंगे।'

वह बहुत ही जोशीला और उभाड़ने वाला भाषण दे रहा था। पहले वह इस प्रकार का उत्तेजात्मक ढंग से कभी नहीं बोला था। एक हाथ से बोनेमाँ को सहारा दिये वह उसे दु:ख-दैन्य और मातम की साकार प्रतिमा के रूप में प्रदर्शित करते हुए बदला लेने के लिए चिल्ला रहा था। कुछ वाक्य तेजी से बोलने के बाद वह माहे परिवार के प्रथम पूर्वज तक पहुँचा। उसने दिखाया कि समूचा परिवार खान में काम करता है, कंपनी उन्हे निगल गई है। एक सौ वर्षों के काम के बाद भी आज वे पहले से अधिक भूखे हैं और इसके विपरीत डाइरेक्टरों के बड़े पेट सोने से भरे है। शेयराहोल्डरों का समूचा गोल, शताब्दियों से उन रखैल औरतों की तरह मजा मार रहा है, जो निठल्ली अपने शरीर की भूख मिटाती है। क्या यह भयावह नहीं है ? एक पीढ़ी नीचे काम करते-करते मर रही है। पिता से लेकर पुत्र तक, ताकि मंत्रियों को शराब की घूस दी जा सके और बडे लार्डों तथा बुर्जुआ की पीढ़ियाँ दावतें दे सके या आग के सामने बैठी मोटी हो सकें। मैंने खनिकों की बीमारियों का अध्ययन किया है। वह जल्दी-जल्दी उनको गिनाने लगा—खून की कमी की बीमारी, कण्ठ माला और गलसुआ, काली खाँसी, गठिया और लकवा ! इन दीनों को इंजन के सामने भोजन की तरह फेंका जाता है और जानवरों की तरह बस्तियों मे रखा जाता है। बड़ी कम्पनियाँ धीरे-धीरे इन्हे खपाती हैं, उनकी दासता को नियमित बनाती हुई, राष्ट्र के तमाम मजदूरों को भरती करने का भय दिखाती हुई और एक हजार निठल्लो का भाग्यविधाता बनने का दावा करती हुई। लेकिन अब खनिक अनजान जाहिल नही रह गया जो कि धरती के खड्ढ मे कुचला जा सके। खानों की गहराइयों से एक फौज ऊपर आ रही है। नागरिकों की एक फसल जिसके बीजों में अंकुर फुटेंगे और किसी चमकीली धूप वाले दिन धरती को फाड़कर फूट पड़ेंगे। और तब वे देखेंगे कि चालीस वर्षों की नौकरी (गुलामी) के बाद भी कोई साठ वर्ष के उस बुड्ढे को जो थूक से कोयला उगलता है, जिसके पाँव कटानों के पानी के कारण सूज गये है,

एक सौ पचास फ्रैंक पेंशन के रूप मे भी न देने की हिमाकत कैसे करता है। हाँ ! श्रम पूंजी से हिसाब पूछेगा। वह अज्ञात देवता, जिसे मजदूर नहीं जानते, अपने रहस्यमय पूजा के आसन में कहीं बैठा है, जहाँ वह दूसरों को भूखा मारकर अपना पोषण करता है ! अन्त में वे यहाँ पहुँचेंगे और नरक की आग की लौ मे वे उसका चेहरा देखने में सफल होंगे। वे खून में उसे डुबो देंगे, उस घिनौने सुअर को, उस दानवीय मूर्ति को; जो मनुष्य के रक्त-माँस से मोटा हुआ है !

वह चुप हो गया, लेकिन उसकी बाँहें शून्य मे अब भी फैली हुई थीं, दुश्मन की ओर संकेत सी करती दुनिया के एक छोर से लेकर दूसरे छोर तक, जिसे वह स्वयं नहीं जानता था कि कहाँ है। इस बार भीड़ का नारा इतना बुलन्द था कि मोंटसू के लोगों ने उसे सुना और वे बरड़ामे की ओर देखने लगे। वे चिन्तित हो उठे थे कि कहीं जबरदस्त दुर्घटना जमीन धँसने की हुई है। रात्रि को पेड़ों पर बसेरा लेने वाली चिड़ियाँ साफ खुले आसमान मे उड़ चलीं।

अब उसने अपने भाषण की परिसमाप्ति की।

'साथियो, आपका क्या निश्चय है ? क्या आप लोग हड़ताल जारी रखने के पक्ष मे राय देते हैं ?'

उन्होंने समवेत स्वर मे कहा, 'हाँ ! हाँ !'

'और आप लोग कौन सा कदम निश्चित करते है ? अगर कावर कल नीचे चले गये तो हमारी हार सुनिश्चित है।'

उन्होंने तूफान की तरह गरजकर कहा।

'कावरो को मार डालो।'

'तब आप निश्चय करते है कि उन्हे उनके कर्तव्य का स्मरण दिलाया जाय; उनके कसमों की याद दिलाई जाय। यही हम कर सकते है। कल हम लोग खानों मे मौजूद रहे, गद्दारों को हमारे समक्ष उपस्थित किया जाय। कंपनी को दिखा दिया जाय कि हम सब एकमत है, उनके सामने घुटना टेकने के बजाय हमे मृत्यु पसंद है।

'ठीक है। खानो की ओर ! खानो की ओर !'

जब वह बोल रहा था तो लॉतिये ने अपने सामने चिल्लाते हुए पीले सिरो के बीच कैथराइन को ढूंढ़ने की कोशिश की। वह निश्चित ही वहाँ नही थी, लेकिन उसे चवाल अब भी दीख रहा था; क्रोधित, दाँत पीसता और कंधे उचकाता हुआ, लेकिन वह ईर्ष्या से इतना भरा हुआ था कि इस प्रतिष्ठा, इस नेतृत्व का थोड़ा-सा भाग पाने के लिए वह अपने आप को बेचने को तैयार था।

'और अगर हमारे बीच जासूस हों तो, साथियो !' लॉतिये बोला, 'उन्हें साव-

धान हो जाना चाहिए, उन्हें सब जानते है। हाँ, मैं वरडामे के खनिकों को यहाँ देख रहा हूँ जिन्होंने अभी तक खान में काम नही छोड़ा।'

'क्या तुम्हारा मतलब मुझसे है ?' चवाल ने बहादुरी दिखाते हुए पूछा।

'चाहे तुम हो या अन्य कोई। परन्तु, चूंकि तुम बोले हो, तुम्हें मालूम होना चाहिए कि जो भोजन करते है उनका भूखों से कोई वास्ता, कोई सरोकार नहीं। तुम जीन-बर्ट मे काम करते हो ?'

एक मजाकिये ने आवाज लगाई—

'ओह ! यह काम करेगा ! इसकी औरत इसके लिए काम करती है।'

चवाल कसम खाने लगा और उसका चेहरा लाल हो उठा, 'वाइ गाड ! तब क्या काम करना मना है ?'

'हाँ !' लाँतिये ने कहा, 'जब कि तुम्हारे साथी कष्ट झेल रहे हैं, सबकी भलाई के लिए, काम पर जाने की मुमानियत है। जाने वाला स्वार्थी, कायर और मालिकों का पिट्ठू है। अगर आम हड़ताल हुई होती तो हमे बहुत पहले हक-हकूक मिल गए होते। जब मोन्टसू मे हड़ताल है तो वरडामे के एक भी व्यक्ति को खान में नही जाना चाहिए। भारी प्रहार के लिए समूचे प्रान्त मे काम बन्द हो जाना चाहिए। यहाँ भी, मोशिये डेन्यूलिन के यहा भी, तुम समझे ? जीन बर्ट की कटानों मे सिर्फ गद्दार है, तुम सब गद्दार हो।'

चवाल को चारों ओर भीड़ ने घेर लिया, घूंसे ताने जाने लगे और 'मार डालो ! मार डालो !' की आवाजें आने लगी। वह भय से फक पड़ गया। लेकिन लाँतिये के उपर विजय के उसके ईर्ष्या और घृणापूर्ण मिश्रित एक विचार से उसे सान्त्वना मिली।

'तब मेरी बात सुनो ! कल जीन-बर्ट आओ, और तुम देखोगे कि मै काम करता हूँ या नहीं। हम तुम्हारे साथ है, उन्होंने मुझे यही बतलाने के लिये तुम्हारे पास भेजा है। आग बुझा दी जायगी, और इंजन चलाने वालों को भी हड़ताल कर देनी पड़ेगी। अगर पम्प बन्द हो जायँ तो अच्छा ही होगा। पानी खान को नष्ट कर देगा और हर एक चीज खत्म हो जायगी।'

लोगों ने भयंकर रूप से तालियों द्वारा उसके कथन का स्वागत किया। अन्य-वक्ताओं ने कोलाहल के बीच पेड़ के तने पर खड़े होकर पारी-पारी से अपने अनर्गल सुझाव पेश किये। यह अन्धविश्वास का पागलपन, किसी धार्मिक वर्ग का ऐसा अधैर्य था जिसमे वे किसी चमत्कार की आशा कर रहे थे और जिसने अन्त मे उन्हें उभाड़ दिया था। भूख से उनके दिमागों मे खालीपन आ गया था और उन्हें हर चीज लाल दिखाई देने लगी थी। वे शानदार विजय के बीच आग और खून को देखते

हुए विश्वव्यापी खुशहाली का स्वप्न देखने लगे थे। और चाँदनी की धवल रोशनी में शान्ति से घिरे जंगल में हत्या की चिल्लाहट गूँज रही थी। जमी हुई काई भीड़ के पंजों के नीचे चरमराती-कड़कड़ाती थी। बीच के बड़े मजबूत वृक्ष सीधे तने खड़े थे और उन की शाखायें सीधे आसमान की ओर उठी हुई थी। ये आसमान से बातें करती शाखायें अपने नीचे छटपटाते मानव को न तो देख पा रही थीं, न उनकी बातें ही सुन पा रही थी।

कुछ धक्का-धुक्की हुई। माहेदी ने अपने को माहे के पास खड़ा पाया। वे दोनों, अपनी सद्‌बुद्धि खोकर उस क्रोध में बह गए थे जो महीनों से धीरे-धीरे उनके हृदय पर अधिकार जमा रहा था। वे लेवक्यू की बात का समर्थन कर रहे थे जो इंजीनियरों के सिर उतार लेने की भयानक बात कर रहा था। पेरी गायब हो गया था। बोनेमॉ और मावयू आपस में बेतुकी, हिंसा की बातें कर रहे थे जिसे कोई भी नहीं सुन रहा था। मजाक के लिए जाचरे ने गिरजों पर कब्जे की बात कही जब कि मावयूट क्रामी अपने हाथ में लिए गड़बड़ी बढ़ाने के लिए उसे जमीन पर पटक रहा था। महिलाओं ने रौद्र रूप धारण कर लिया था। लेवक्यू की औरत अपने कूल्हों पर मुट्ठियाँ रखे हुए फिलोमिना को गाली देती हुई कि वह हँस रही थी, रवाना हो रही थी। मार्केटी मालिकों पर हमला कर उनके चूतड़ों पर लात जमाने की बात कह रही थी; मदर ब्रूनो, लायडी को सलाद और टोकरी रहित पाकर चपत लगाने के बाद, शून्य में हाथ हिला-हिलाकर उन सब मालिकों को गाली दे रही थी जिन्हें वह जानती थी। एक क्षण को जॉली भय से काँप उठा। बीवर्ट को एक टामर से मालूम पड़ा था कि मदाम रमेन्योर ने उन्हें पोनैरुड को चुराते देखा था, लेकिन फिर उसने वापस जाकर जानवर को चुपचाप एवेन्टेज के पास छोड़ देने का निश्चय किया। वह सबसे अधिक चिल्ला रहा था और अपना नया चाकू खोल कर चमका रहा था और उसकी चमक से प्रफुल्लित हो रहा था।

'साथियो ! साथियो !' थके स्वर में लाँतिये चिल्लाया, 'कल सुबह जीन-बर्ट में, तय रहा ?'

'हाँ ! हाँ ! जीनबर्ट ! गद्दारों को मार डालो।'

इन तीन हजार आवाजों के तुमुल नाद में उठनेवाली आवाज चाँद की धवल चाँदनी में आसमान में विलीन हो गई।

पाँचवाँ भाग

१

चार बजे, भोर, चन्द्रमा डूब चुका था और अंधेरा बड़ा गहन था। डेन्यूलिन के यहाँ सब सोये हुए थे। पुराना, ईंटों का बना मकान जिसके दरवाजे और खिड़कियाँ बंद थीं, उदासी और सन्नाटे में खड़ा था। मकान और जीनवर्ट खान के बीच एक बगीचा था जिसकी रखवाली करने वाला कोई नहीं था। मकान का दूसरा हिस्सा निर्जन वण्डामे की सड़क पर पड़ता था, जो जंगल के बीच छिपा हुआ यहाँ से लगभग तीन किलोमीटर पर बसा एक बड़ा कस्बा था।

डेन्यूलिन, दिन भर खान में गुजारने के बाद थका दीवार की ओर मुंह किये खर्राटे ले रहा था, जब उसने स्वप्न सा देखा कि उसे पुकारा जा रहा है। अन्त में उसकी नींद खुली और उसे सचमुच कोई पुकार रहा था। वह उठा और खिड़की खोल डाली। उसका एक कप्तान बगीचे में खड़ा था।

'क्या बात है ?' उसने पूछा

'वहाँ बगावत हो गई है, महोदय, आधे मजदूर काम नहीं करेंगे और वे दूसरों को भी काम पर जाने से रोक रहे हैं।'

उसका सिर भारी हो रहा था और नींद बड़े जोरों से उसे दबोच रही थी। इसलिए वह उसकी बात को अच्छी तरह नहीं समझ पाया। तीखी बर्फीली हवा उसे काँटे की तरह चुभ रही थी।

'तब उन्हें नीचे जाने को कहो, बाई जार्ज। उसने उनींदी जुबान में कहा।

'एक घंटे से ऐसा चल रहा है, कप्तान बोला। 'तब हमने यही बेहतर समझा कि आपको बता दें। शायद आप उन्हें बाध्य कर सकें।'

'बहुत अच्छा; मैं चलता हूँ।'

उसने तत्काल कपड़े पहने। अब उसका दिमाग साफ हो गया था, वह बहुत चिन्तित था। ऐसा प्रतीत होता था कि घर में डाका पड़ा हो; न रसोइया ही उठा था, न नौकर ही जागा था। लेकिन सीढ़ियों की बगल से चिन्तित आवाजें आ रही थीं। जब वह बाहर निकला उसने अपनी लड़कियों का दरवाजा खुला

देखा, वे दोनों जल्दी-जल्दी में पहने गये सफेद ड्रेसिंग गाउन पहने दिखाई दीं।

'पिता जी, क्या बात है ?'

बड़ी लड़की लूसी, जिसका रंग सांवला, कद लम्बा और बाल घुंघराले थे, बाइसवां पार कर चुकी थी। वह स्वभाव की गुस्से वाली थी; जब कि छोटी जेनी मुश्किल से उन्नीस वर्ष की थी। वह कद की छोटी, सुनहरे बालों वाली और कुछ सुन्दर मुख मुद्रा वाली थी।

'कोई खास बात नहीं है,' उसने उन्हें आश्वासन देने के लिए कहा। ऐसा लगता है कि कुछ बदमाश नीचे गड़बड़ी मचा रहे हैं। मैं देखने जा रहा हूँ।'

परन्तु उन्होंने हठ किया कि वे बगैर कोई गरम पेय लिये बिना उसे जाने न देंगी। अगर वह नहीं लेगा तो वह बीमार लौटेगा और उसका पेट खराब हो जायगा, जिसकी उसे हमेशा शिकायत रहती है। उसने प्रतिरोध किया, कसम खाई कि वह जल्दी में है, वायदा किया कि आकर ले लेगा।

'सुनिये !' जेनी ने उसके गले में झूलते हुए कहा, 'आप एक छोटा गिलास रम का और दो बिस्कुट ले लीजिये, वर्ना मैं इसी प्रकार लटकी रहूँगी और आप को मुझे भी अपने साथ ले जाना होगा।'

अन्त में उसने हार मान ली और कहा कि बिस्कुटों से मेरे गले में खराश पैदा हो जायगी। नीचे डाइनिंग-रूम में वे जल्दी-जल्दी उसके लिए इन्तजाम करने लगीं, एक रम ढाल रही थी और दूसरी रसोई घर में बिस्कुटों के लिए दौड़ी। जब वे बहुत छोटी थीं तभी उनकी माँ मर गई थी। उनका लालन-पालन अस्त-व्यस्त ढंग से हुआ था, उनके पिता ने उनकी आदतों को बिगाड़ दिया था। बड़ी रंगमंच की गायिका बनने का स्वप्न देखती थी और छोटी चित्रकला के पीछे दीवानी थी जिसमें उसका अच्छा दखल भी था। जब इन फिजूलखर्ची करने वाली लड़कियों को गरीबी देखनी पड़ी तो वे तब से बड़ी किफायतशार हो गई थीं और प्रत्येक सेन्टिम को सोच-समझकर खर्च करती थी।

'खाओ पापा,' लूसी बोली।

तब, उसके उदास चेहरे को देखकर वह फिर घबड़ा गई। 'क्या कोई बड़ी गंभीर बात हुई है कि आप हमारी ओर इस तरह देख रहे हैं ? हमें बताओ, हम तुम्हारे साथ ही रहेंगी और वे लोग उस लंच में हमारे बगैर भी काम चला लेंगे।'

वह उस पार्टी की बात कह रही थी जिसका सुबह आयोजन था। मदाम हनेब्यू अपनी बग्घी में पहले ग्रीगोरे के यहाँ सीसिल को लेने जाने वाली थी, फिर वह यहाँ आकर उन्हें ले जाने वाली थी ताकि वे सब फोर्जेज में लंच के लिए मार्सेनीज जा सकें, जहाँ मेनेजर की औरत ने उन्हें दावत दी थी। यह कारखानों,

लोहा गलाने वाले भट्टों और कोयले की भट्टियों को देखने का एक मौका भी था।

'हाँ, हम जरूर रह जायेंगी,' जेनी ने अपनी तरफ से बड़ी बहिन का समर्थन किया।

लेकिन वह नाराज हो उठा।

'अच्छा विचार रहा! मैंने तुम्हें बताया कोई खास बात नहीं है। अच्छी लड़कियों की तरह अपने बिस्तरों पर जाकर लेटो और नौ बजे तैयार हो जाओ, जैसा कि तय हुआ है।'

उसने उनका चुम्बन लिया और जाने की जल्दी मचाने लगा। उन्होंने बगीचे की जमी हुई धरती में बूटों से चलने की आवाज सुनी।

जेनी ने बड़ी सावधानी से रम की बोतल बंद की और लूसी से बिस्कुट सम्भाले। कमरे में सफाई थी। जल्दी नीचे उतरने का लाभ उठाते हुए उन दोनों ने यह देखने की कोशिश की कि कहीं पिछली रात कोई चीज लापरवाही से तो नहीं छोड़ी गई। उन्हें एक टवाल पड़ा मिला, जिसके लिए उन्होंने नौकर को डाँट बताने का इरादा सोचा। अन्त में वे दोनों ऊपर चली गईं।

जब कि वह अपने रसोई घर वाले बगीचे के संकरे रास्तों से कम दूरी का रास्ता तय कर रहा था, डेन्यूलिन अपने भाग्य की, मोंटसू के उस दीनार की, जिसे बेचकर उसने दसगुना बनाने की सोची थी और जिस वजह से आज वह इतना खतरा उठा रहा था, सोच रहा था। उसके दुर्भाग्य का अन्त नहीं था, बहुत ज्यादा खर्च, बेतहाशा मरम्मत, खान का ध्वस्त दृश्य और जब थोड़ा सा लाभ होने लगा तो यह घातक औद्योगिक संकट! अगर यहाँ भी हड़ताल हुई तो वह कहीं का न रहेगा। उसने एक छोटे द्वार को धकेला; खान की इमारतें काली रात में डूबी थीं, कुछ लैंपों की रोशनी छायाओं को और भी लम्बी बना रही थीं।

जीन-बर्ट बोरो की तरह उतनी महत्वपूर्ण खान तो न थी परन्तु नया सामान लग जाने से वह अच्छी-खासी बन गई थी जैसा कि इंजीनियरों का मत था। उन्होंने खान में उतरने की कुँए के समान पोली जगह को सिर्फ डेढ़ मीटर चौड़ा कर ही संतोष नहीं किया था, उन्होंने उसे सात सौ मीटर गहरा भी बनाया था और नया इंजन बैठाया था। नये कटघरे बनवाये थे और नवीनतम वैज्ञानिक सुधारों के अनुसार हर चीज नये सिरे से बदल डाली थी।

सुबह, तीन बजे रात से ही, चवाल ने, जो सबसे पहले पहुँच गया था, अपने साथियों के काम न करने के लिए राजी कर लिया था और उन्हें कहा भी था कि मोन्टसू के खनिकों की ही तरह उन्हें भी पाँच सेंटिम फी ट्राम माँग करनी चाहिए। शीघ्र ही चार सौ मजदूर ओसारे में रिसीवर के कमरे में इकट्ठा हो गए थे, जहाँ

बड़ा कोलाहल और चिल्लाहट मची थी। जो काम करना चाहते थे वे अपने लैंप लिए हुए फावड़ा या छेनी बगल में दबाये, नंगे पाँव खड़े थे, जब कि अन्य, अब भी जूते पहने, भारी ठंड की वजह से अपने ओवर कोट कंधे में डाले, कूपक का रास्ता रोके हुए थे; और कप्तान लोग व्यवस्था स्थापित करने के प्रयास में रूखे बनते जा रहे थे। वे उनसे अनुरोध कर रहे थे कि जो लोग नीचे काम पर जाना चाहते है उन्हे न रोकें।

लेकिन जब चवाल ने कैथराइन को पायजामा, जाकेट पहने और नीली टोपी के नीचे अपना जूड़ा बाँधे देखा तो वह बिगड़ खड़ा हुआ। बिस्तर से उठने पर वह रूखे स्वर में उसको बिस्तर पर पड़े रहने की हिदायत दे आया था। काम बन्द हो जाने की इस निराशा में वह भी उसके पीछे-पीछे चली आई थी, क्योंकि वह उसे कभी भी अपना वेतन नहीं देता था और अवसर उसे अपना तथा चवाल, दोनों का खर्च, अपने पास से भुगतान करना होता था; और अगर वह कमायेगी नही तो फिर उसका क्या हाल होगा? वह मार्सेनीज के वेश्यालय के भय से काँप उठी थी क्योंकि एक कोयला भरने वाली लड़की का, जो बगैर रोटी और बगैर मकान के हो, अन्त यही था।

'हे ईश्वर!' चवाल चिल्लाया, 'तुम यहाँ क्यों आई हो?' उसने गिड़गिड़ा कर कहा कि उसकी रोटी का अन्य कोई सहारा नहीं है और वह काम करना चाहती है।

'तब तू मेरा विरोध करेगी, बदचलन औरत? फौरन वापस चली जा अन्यथा मैं भी तेरे साथ वापस चलूगा और तेरे पीठ पर अपने जूतों से ठोकर मारूँगा।'

डर कर वह पीछे हटी, परन्तु वहाँ से गई नही। वह देखना चाहती थी कि स्थिति क्या करवट लेती है। डेन्यूलिन कोयला गिराने वाली सीढ़ियों के सहारे आया। लैंपों के मन्द प्रकाश में, वह तेजी से नजर डालता वहाँ पहुँच गया। इस छाया मे भी वह हर चेहरे से परिचित था—छेनी चलाने वालों, कोयला ढोने वालों, जमीन काटने वालों, कोयला भरने वालों और ट्रामरों—को वह जानता था। पहियों के मध्य मे, जो कि अभी नये और साफ थे, रुका हुआ काम इन्तजार कर रहा था; इंजन की भाप दबाव पड़ने पर सीटी बजने की हल्की-सी आवाज कर रही थी, कटघरे निश्चल तारों में लटक रहे थे, रास्तों मे छोड़ी गई ट्रामे धातु के फर्शों का रास्ता रोके हुये थीं। मुश्किल से अस्सी लैंप उठाये गए थे, शेष लैंप रखने की केबिन में ही जल रहे थे। लेकिन इसमें सन्देह नही था कि उसका एक शब्द ही काफ़ी होगा, और काम की जिन्दगी पुनः शुरू हो जायगी।

'क्या हो रहा है, मेरे बच्चो?' उसने बुलन्द आवाज में पूछा। 'तुम लोग

क्यों नाराज हो ? मुझे बताओ तो ? हम देखेंगे कि हम राजी हो सकते हैं या नहीं।'

वह आमतौर से अपने मजदूरों के साथ पितृवत व्यवहार करता था, लेकिन साथ ही सख्त मेहनत भी चाहता था। अधिकारपूर्ण, रूखे तरीके से, वह सद्भावना और प्रेम से उन्हे जीतने की कोशिश करता था और अक्सर उसे सफलता भी मिलती थी; मजदूर उसके साहस को देख उसकी विशेष इज्जत करते थे। जब कभी खान में कोई दुर्घटना होती तो कटानों में वह खतरे मे सबसे आगे रहता था। विस्फोट होने पर, दो बार, अपनी बाहों के नीचे रस्सी बाँध कर वह नीचे उतरा था, जब कि बहादुर मे बहादुर व्यक्ति भी पीछे हट गए थे।

'अब,' वह फिर कहने लगा, 'तुम लोगों पर विश्वास के लिए मुझे पश्चाताप करने का अवसर, मैं आश कहता हूँ, तुम लोग मुझे न दोगे। तुम्हें मालूम है मैंने पुलिस संरक्षण लेने से इन्कार कर दिया। शान्ति से बोलो और मैं तुम्हारी बात सुनूंगा।'

अब सभी चुपचाप थे, सबको कुछ बुरा सा लगा। वे उसके सामने मे खिसकने लगे। अन्त में चवाल बोला :

'मोशिये डेन्यूलिन, हम काम जारी नहीं रख सकते। हमे फी ट्राम पांच सेंटिम ज्यादा मिलना चाहिए।'

उसने आश्चर्य जाहिर किया।

'क्या ? पाँच सेंटिम ! और यह माँग क्यों ? मुझे तो तुम्हारे तल्ले बैठाने को शिकायत नहीं है। मोन्टसू के डाइरेक्टरों की भाँति मैं तुम्हारे ऊपर नये नियम नहीं लादना चाहता।'

'हो सकता है ! लेकिन मोन्टसू के साथी सही है। हम नयी प्रणाली नहीं चाहते, पर पाँच सेंटिम की वृद्धि चाहते है, क्योंकि मौजूदा दरों पर अच्छी तरह काम करना सम्भव नहीं है। हम पाँच सेंटिम ज्यादा चाहते हैं, क्यों साथियो ! क्या कहते हो ?'

उसकी बात की सभी ने पुष्टि की और फिर वहाँ कोलाहल और हड़ताल की बात होने लगी। धीरे-धीरे वे एक छोटा घेरा बनाते हुए करीब चले आये।

डेन्यूलिन की आँखों से एक ज्वाला सी उठी और उसकी मुट्ठियाँ भिच गईं, वह व्यक्ति एक शक्तिशाली सरकार को पसंद करता था और उसने, इस डर मे कि कहीं वह किसी की गर्दन न पकड़ ले, अपने दोनों हाथों को मिलाकर हथेलियाँ एक दूसरे से दबोचीं। उसने तर्क के आधार पर बातचीत करना पसंद किया।

'आप लोग पांच सेंटिम चाहते हैं और मैं भी मानता हूँ कि काम इस लायक है। सिर्फ मैं उसे देने मे समर्थ नहीं हूँ। अगर मैं मंजूर कर लूं तो मैं मिट

जाऊँगा। आपको समझना चाहिए कि पहले मेरा जिन्दा रहना जरूरी है ताकि आप लोगों की रोजी चले और अन्त तक मुझे ही निभाना है। कीमत में थोड़ी-सी बढ़ती भी मुझे नुकसान पहुँचा देगी। आपको याद होगा, दो वर्ष पहले, पिछली हड़ताल के समय, मैंने मंजूर कर लिया था क्योंकि मैं तब समर्थ था। लेकिन वेतन की वह वृद्धि कम बरबादी लानेवाली नहीं थी, क्योंकि इन दो वर्षों में मुझे लगातार संघर्ष करना पड़ा है। आज मैं अगर सब बात मान लूं तो अगले महीने में आपके वेतन के लिए पैसा नहीं जुटा पाऊँगा।'

चवाल रुखाई से अपने मालिक के सामने हँसा जिसने कि अपनी बातें उन्हें इतने स्पष्ट रूप से बतला दीं। अन्य लोगों ने अपनी गरदनें झुकालीं, वे जिद्दी और अविश्वासी थे और यह मानने को तैयार नहीं थे कि अपने मजदूरों से मालिक करोड़ों पैदा नहीं करता।

तब डेन्यूलिन ने, बाध्य होकर मोंटमू से अपने संघर्ष का जिक्र किया और कहा कि वे हमेशा इस ताक में रहते है कि अगर कभी वह गलती कर बैठे तो उसे निगल जायं। यह एक जंगली प्रतियोगिता है जिसने उसे किफायतशारी को मजबूर किया है और जीनवर्ट की गहराई से कोयला निकालने का व्यय भी बढ गया है। यह एक प्रतिकूल स्थिति है जिसकी पूर्ति कोयले की परतों की मोटाई से नहीं हो पाती। अगर उसे मोंटमू की देखा-देखी यह भय न होता कि मजदूर उसके यहाँ से काम छोड़ कर चले जायंगे तो वह कभी भी पिछली हड़ताल के बाद वेतन न बढ़ाता। यह तो मजबूरी थी। और, उसने उन्हें भविष्य का भय दिखाया कि अगर उसे डाइरेक्टरों के बड़े जबड़ों के नीचे दबना पड़ा और उसने मजबूरी-वश खान को बेच दिया तो क्या परिणाम उनके लिए निकलेगा? वह अज्ञात देवस्थल की किसी गद्दी पर नहीं बैठा है। वह उन शेयर होल्डरों जैसा भी नहीं है जो खनिक की चमड़ी उतार लेने के लिए एजेन्टों को वेतन देते है। वह मालिक है, धन के अलावा और भी खतरे वह उठाये है। उसने अपनी बुद्धि, अपने स्वास्थ्य और अपने जीवन की बाजी लगायी है। काम बंद कर देने का अर्थ होगा मौत, क्योंकि उसके पास स्टाक जमा नहीं है और उसे आर्डर पूरे करने ही है। अलावा इसके उसकी पूंजी पड़ी नहीं रह सकती। वह कैसे इस व्यवस्था को बनाये रहेगा? कौन उसका ब्याज देगा जो पूंजी उसके दोस्तों ने भरोसा कर उसे दी है? इसका मतलब दीवाला होगा।

'वस्तु स्थिति यही है, मेरे अच्छे साथियो'! उनके अन्त में कहा, 'मैं तुम्हें यकीन दिलाना चाहता हूँ। हम किसी अन्य व्यक्ति से स्वयं अपना गला काटने को

नहीं कहते, क्या कहते हैं ? और अगर मैं तुम्हें तुम्हारे पांच सेंटिम दे दूं, या अगर मैंतुम्हें हड़ताल पर जाने दूँ, तो वह ऐसा ही है जैसे स्वयं अपना गला काटना ।'

वह चुप हो गया । चारों ओर बातचीत होने लगी । खनिकों का एक दल हिचकता सा प्रतीत होता था । कई लोग वापस कूपक की तरफ चले गए थे ।

एक कप्तान ने कहा ! सबको अपना निश्चय आज़ादी के करना चाहिये । कौन कौन काम करना चाहते है ?'

पहले बढ़ने वालों में कैथराइन भी थी । परन्तु चवाल ने गुस्से से उसे पीछे को धकेला और चिल्लाया :

'हम सब एकमत है, सिर्फ बेहूदे मक्कार लोग ही अपने साथियों का साथछोड़ेंगे ।'

उसके बाद समझौता असंभव सा हो गया । फिर चिल्लाने की आवाजें आने लगीं, मजदूर कूपक की ओर से धकेले जा रहे थे और उनके दीवार से टकरा कर चोट खाने का खतरा पैदा हो चला था । एक क्षण को, निराश होकर, मैनेजर ने मारपीट द्वारा भीड़ छाँटने का विचार किया, लेकिन वह व्यर्थ था, पागलपन था और वह चला गया । कुछ क्षणों को, हाँफता हुआ वह रिसीवर के कमरे की कुर्सी में बैठ गया । वह अपनी अशक्ति से इतना निराश हो चला था कि उसे कोई विचार ही नहीं सूझ रहा था । अन्त में वह शांत हुआ और उसने एक इन्सपेक्टर को चावल को बुला लाने का आदेश दिया; तब जब चवाल इन्टरव्यू के लिए सहमत हो गया तो उसने दूसरों को वहाँ से जाने का संकेत किया ।

'हमें यहाँ अकेले छोड दो ।'

डेन्यूलिन जानना चाहता था कि आखिर यह आदमी चाहता क्या है ? प्रथम शब्दों के बाद ही उसने महसूस किया कि वह व्यर्थ की कोशिश कर रहा है । उसने चापलूसी द्वारा उसे जीतने की कोशिश की और कहा, मुझे आश्चर्य हो रहा है कि तुम सा बेहतरीन कामगार अपना भविष्य इस तरह बिगाड़ रहा है ? ऐसा प्रतीत होता था कि वह बड़े दिनों से उसको तेजी से तरक्की देने की सोचता आ रहा है और उसने घुमाफिरा कर उसे बाद में कप्तान बना देने का लालच देकर अपनी बात खत्म की । चवाल पहले तो चुपचाप मुट्ठी बाँधे सुनता रहा, बाद में उसके हाथ खोल दिये । उसके दिल में कुछ उथल-पुथल हो रही थी, अगर वह हड़ताल पर ही जोर देता है तो वह सिर्फ लॉतिये के एक लेफ्टिनेंट के अलावा और कुछ न रह जायगा, जबकि अब दूसरी महत्वाकांक्षा भी द्वार खोले हुए थी कि वह भी अधिकारियों की श्रेणी में आ जायगा । घमंड की गरमी उसके चेहरे पर झलक आई और उसे नशा-सा छा गया । अलावा इसके, हड़तालियों का झुंड, जिसकी वह सुबह उम्मीद करता था, अब तक नहीं आया था । किसी अड़चन से वे रुक

गए होंगे, शायद पुलिस ने पकड़ लिया हो; यह मान जाने का समय है। लेकिन इस सब के बावजूद उसने ऐसे व्यक्ति का स्वांग किया जिसे डिगाया नहीं जा सकता, अपने सीने पर घृणा से घूंसा मारा। फिर मालिक को बैठक की बात बतलाये बिना ही कि उसने मोंटसू के मजदूरों को वचन दिया है, उसने अपने साथियों को शांत कर उन्हें नीचे काम पर जाने के लिए प्रेरित करने का आश्वासन दिया।

डेन्यूलिन छिपा हुआ बैठा रहा और कप्तान भी अलग जाकर खड़े हो गए। एक घंटे तक उन्होंने चवाल को समझाते और बहस करते सुना। वह रिसीवर के कमरे में एक ट्राम पर खड़ा था। कुछ लोग उसका तिरस्कार कर रहे थे; एक सौ बीस के लगभग मजदूर क्रुद्ध होकर चले गए। वे उस प्रस्ताव पर कायम रहने की मांग कर रहे थे जिसे ग्रहण करने के लिए उसने उन पर दबाव डाला था। सात बज चुका था। सूर्य की चमकीली किरणें निकल आई थीं, कड़ाके की ठंढ का यह चमकीली धूप वाला दिन था; और तत्काल खान में चहलपहल आरंभ हो गई और रुका हुआ काम चालू हो गया। पहले इंजन के घूरे का भाग गतिशील हुआ और वह चक्कों पर तारों को खोलता-लपेटता जाता था। तब, सिगनलों के कोलाहल के बीच नीचे उतरना आरम्भ हुआ। कटघरे भरे और नीचे जाकर फिर ऊपर आये। पोले कुंए ने अपना ट्रामरों, पुटरों और छेनी चलाने वाले मलकट्टों का राशन पाया। उधर धातु के फर्श पर लैम्पइर बिजली की सी कड़कड़ाहट से ट्राम खींच रहे थे।

'भगवान कसम ! तुम यहां क्या कर रही हो ?' चवाल कैथराइन पर बिगड़ा। 'क्या तुम नीचे जाने की मेहरबानी करोगी और यहां बेकाम न बैठी रहोगी ?'

नौ बजे सुबह, मदाम हनेब्यू अपनी बग्घी में सीसिल के साथ पहुंची। उसने लूसी और जेनी को तैयार तथा बड़े सुन्दर ढंग से सजे पाया, बावजूद इसके कि ? उन्होंने बीस मर्तबा पोशाकें बदली थीं। लेकिन डेन्यूलिन को निग्रील को घोड़े पर सवार बग्घी के पीछे-पीछे आते देख आश्चर्य हुआ। क्या पार्टी में भी मजदूर पहुंचेंगे ? तब मदाम हनेब्यू ने अपने मातृवत स्नेह से बताया कि उन्होंने उसे डरा दिया था कि सड़कों में मनहूस भरे पड़े है, इसलिए मैंने बचाव करने वाले को साथ लाना बेहतर समझा। निग्रील ने हँस कर उन्हें आश्वस्त किया: चिन्ता की कोई बात नहीं, उपद्रवियों का डर तो हमेशा की तरह है, लेकिन उनमें से किसी की यह हिम्मत नहीं कि खिड़की के शीशों में एक भी पत्थर फेंके। अपनी सफलता की खुशी में डेन्यूलिन ने जीनबर्ट की हड़ताल के दमन की बात बताई। उसने कहा, अब वह पूर्ण निश्चिन्त है। और वण्डामे रोड पर, जब कि नवयुवतियां बग्घी में बैठ गईं, सभी ने इस खुशनुमा दिन के लिए अपने को भाग्यशाली कहा।

वे उस क्षेत्र में फैली हड़ताल से लोगों के समूह मे निकलने और नारा लगाने के आतंक को भुला देना चाहते थे।

'अच्छा ! यह तय रहा,' मदाम हनेब्यू ने दुहराया, 'कि आज साँझ को तुम नवयुवतियों को लेने आओगे और हमारे साथ ही भोजन करोगे। मदाम ग्रीगोरे ने भी सीसिल के लिये आने का वादा किया है।'

'मेरे ऊपर आप इतमीनान कर सकती हैं,' डेन्यूलिन ने उत्तर दिया।

बग्घी वण्डामे की ओर चल पड़ी। जेनी और लूसी झुककर अपने पिता को अभिवादन कर रही थीं, जो कि सड़क पर खड़ा था, और निग्रील बड़ी शान से भागते हुए पहियों के पीछे घोड़ा दौड़ाता हुआ चला ज रहा था।

उन्होंने जंगल पार कर वण्डामे से मार्सेनीज की सड़क पकड़ी। जब वे 'टार्टरेट' के पास पहुँचे तो जेनी ने मदाम हनेब्यू से पूछा कि क्या वह 'कोट वर्ट' गई है ? और मदाम को पाँच वर्ष देहात मे रहने के बावजूद यह स्वीकार करना पड़ा कि वह उस ओर गई ही नहीं। तब वे उतर पड़ीं। टार्टरेट, जंगल की बाहरी सीमा पर, ज्वालामुखी के उद्गार की भाँति, एक अजीब दलदली भूखण्ड था, जिसके भीतर सदियों से एक कोयले की खान धधक रही थी। इसका इतिहास किंवदन्तियों में लुप्त हो गया था। यहाँ के खनिकों का कहना था कि इस अभिशप्त अन्तर्भाग मे, जहाँ पुटरों ने एक साथ अतिघृणित कार्य किये थे, स्वर्ग से आग बरसी और उन्हे सतह पर आने का समय तक न मिला। तब से आज तक, इस नरककुंड मे, आग जल रही है। आग से जली लाल चट्टानों मे फिटकिरी बह कर इस प्रकार जमा हो गई थी मानो किसी अंग मे कोढ़ हो गया हो। दरारों के कोने मे पीले फूल की तरह गंधक जम आई थी। रात मे, जो इन छेदों की ओर देखने का साहस कर सकते थे, वे बताते थे कि उन्होंने वहाँ लपटें देखी हैं, जिनमे पापात्मायें काँपती नजर आई हैं। ऊपरी सतह पर कभी जलने वाला और फिर यकायक बुझ जाने वाला, चलता-फिरता, प्रकाश नजर आता था। गरम पानी के सोते, जिनमे लगातार धुआँ निकला करता था, यहाँ बहते थे। लेकिन अन्दरूनी सोते के बीच चमत्कार की भाँति, इस अभिशप्त टार्टरेट के दलदल मे, कोटवर्ट का सदा हरा रहने वाला टुकड़ा था जिसके हरे भरे मैदान, हमेशा नयी पत्तियों के आच्छादित पेड़ और साल भर में तीन बार फसल देने वाले खेत थे। यह एक कुदरती गरम कमरे के समान था, जिसके नीचे, गहरे में जलने वाली आग उसे गरम रखती थी। इस पर हिम कभी नहीं टिक पाता था। जब कि पतझड़ में जंगल के पेड़, पत्तियों के गिर जाने से, ठूँठ से खड़े रहते थे, यहाँ तुषार उसके किनारों तक को न छू पाता था।

शीघ्र ही बग्घी मैदान के ऊपर से गुजरने लगी। निग्रील ने किंवदन्ती के

ऊपर मज़ाक किया और बताया कि अक्सर कोयले की धूल में ऊष्णता आने से खान की सतह में आग लग जाती है और यदि उसे बुझाया न गया तो वह हमेशा जलती रहती है। उसने बेल्जियम की एक खान का उदाहरण पेश किया कि वहाँ नदी के बहाव को बदल कर खान को जल-प्लावित कर देना पड़ा था। लेकिन फिर वह यकायक चुप हो गया। पिछले कुछ मिनटों से वह देख रहा था कि खनिकों के झुंड बग्घी की विपरीत दिशा को जा रहे है। वे चुपचाप गुजर जाते थे और इस शान-शौकत वाली बग्घी की ओर कनखियों से देखते हुए वे हठात् कुछ क्षणों के लिए रुक जाया करते थे। उनकी संख्या बढ़ती ही जा रही थी। घोड़ों को एक तंग पुलिया पार करनी पड़ी, जहाँ वे धीरे-धीरे चले। क्या हो रहा है, तब, जो कि सभी लोग घरों से बाहर निकल पड़े है? नवयुवतियाँ डर सी गई थीं और निग्रोल को इस उत्तेजित क्षेत्र में कुछ कलह का आभास-सा होने लगा था। जब वे अन्त में मार्सेनीज पहुँचे तो उन्हें कुछ ढाढ़स बँधा। कोयले के भट्टों की बैटरियां और लोहा गलाने वाली भट्टियों की चिमनियाँ, धूप में जो कि उन्हें बुझाती प्रतीत होती थी, धुआँ उगल रही थीं और हवा में कभी खत्म न होने वाली राख गिरा रही थीं।

२

जीन-बर्ट में, घोड़ों के ट्राम खींचने के स्थान तक ट्राम धकेलते-धकेलते कैथ-राइन को एक घंटा काम पर हो गया था। वह इस कदर पसीने में लथपथ हो गई थी कि पसीना पोंछने के लिये एक क्षण वह ठहर गई। कटान की सतह में, जहां चवाल अपने साथियों के साथ सन्धि पर छेनी चला रहा था, पहियों की खड़खड़ाहट न सुन कर आश्चर्य करने लगा। उसका लैंप बुरी तरह जल रहा था और कोयले की धूल ने किसी चीज का देखना असम्भव बना दिया था।

'क्या बात है?' उसने चिल्ला कर पूछा।

जब उसने उत्तर दिया कि वह यकीनन पिघल जायगी और उसके दिल की धड़कन रुकने के करीब है तो वह क्रोध में बोला :

'बेवकूफ, हमारी तरह कर! कमीज उतार डाल।'

वे डेसरी सन्धि के पहले गलियारे में, उत्तर की ओर सात सौ आठ मीटर की गहराई पर थे, जो खान के मुहाने से तीन किलोमीटर की दूरी पर थी। जब वे खान के इस हिस्से की चर्चा करते तो इस क्षेत्र के खनिक भय से पीले पड़ जाते थे, उनकी आवाज धीमी पड़ जाती थी, मानो वे नरक की बातें कर रहे हों। अक्सर वे उस व्यक्ति की भाँति सिर हिलाकर सन्तोष कर लेते थे, जो इस भयानक गरमी

की भट्टी की गहराई की बातें सुनना नहीं चाहता। ज्यों-ज्यों गलियारा उत्तर की ओर बढ़ता जाता था, वे टार्टरेट के करीब पहुँचते आते थे, जहाँ निरंतर जलने-वाली आग ने ऊपर की चट्टानों तक को लाल रंग का बना दिया था। जिस कटान में वे पहुँचे थे उसका तापमान पैंतालिस डिग्री था। वे वहाँ अग्नि की लपटों के बीच उस अभिशप्त शहर में थे जिसे उसके ऊपरी मैदान से गुजरने वाला कोई भी व्यक्ति दरारों से गंधक और विषाक्त गैस उगलते देख सकता था।

कैथराइन, पहले ही से अपनी जाकेट उतार चुकी थी, फिर झिझकते हुए उसने अपना पायजामा भी उतार डाला, और नंगी बाहों और नंगी रानों से, अपने कूल्हों के घेरे में एक तागे की भाँति औरतों वाली जांघिया पहने वह फिर ट्राम धकेलने लगी।

'खैर ! कुछ गनीमत है,' वह चिल्लाई।

इस घुटन वाली गरमी में वह एक अज्ञात भय से घबरा रही थी। पिछले पाँच दिनों से, जब से वे यहाँ काम करने लगे थे, उसे बचपन में सुनी हुई कहानियों का स्मरण हो आता था, उस जमाने की उन पुटर लड़कियों का, जो टार्टरेट के नीचे उस जघन्य अपराध के दण्ड के रूप में जल रही है, जिसे दुहराने की कोई हिम्मत नहीं कर सकता। इसमें संदेह नहीं कि इन सब बेवकूफी की बातों पर विश्वास की उसकी उमर नहीं रही थी; परन्तु, फिर भी, उसे अज्ञात भय-सा लगता था कि अगर किसी दीवार से यकायक कोई लड़की स्टोव की तरह लाल और जलते हुए अंगारे की सी आँखों से देखती हुई निकल आई तो वह क्या करेगी ? इस विचार से उसे और भी पसीना छूट रहा था।

वे गेस्टन-मेरी की ओर एक पुराने छोड़ दिये गए गलियारे में काम कर रहे थे जहाँ की गरमी असह्य होती जा रही थी। यहाँ, दस वर्ष पहले एक विस्फोट से संधि में आग लग गई थी और यहाँ जो चूने की दीवार खड़ी कर दी गई थी उसके पीछे अब भी आग जल रही थी, कोई बड़ी दुर्घटना न हो इसके लिए बराबर इस दीवार की मरम्मत होती रहती थी। हवा न होने से आग बुझ जानी चाहिए थी, परन्तु अज्ञात तरंगें उसे अब भी जलाये हुए थीं। दस वर्ष का अर्सा बीत जाने पर भी चूने की दीवार अब भी ईंटों के भट्टे की तरह गरम रहती थी और जो यहाँ से गुजरता था वह आधा भुन सा जाता था। इसी दीवार के समानान्तर, सौ मीटर की दूरी तक साठ अंश तापमान में कर्षण चलता रहता था।

दो ढुलाई के बाद कैथराइन फिर घुटन महसूस करने लगी। सौभाग्य से, रास्ता बड़ा और सुविधाजनक था। यह डेसरी संधि इस जिले में सबसे मोटी तह

वाले कोयले की थी। यह ऊँचाई में काफी थी। इस में लोग खड़े-खड़े काम कर सकते थे। परन्तु अगर उन्हें थोड़ी सी ताजा हवा मिलती तो वे इससे भी खराब स्थिति में काम करने को तैयार थे।

'हैलो, क्या तुम सो रही हो ?' चवाल ने जब फिर कैथराइन का चलना-फिरना बंद पाया तो रूखे स्वर से उसने पुकारा। किस मनहूस लड़की से पाला पड़ा है ? क्या तुम अपनी ट्राम भर कर ले जाओगी ?'

वह कटान की सतह में अपना फावड़ा लिये झुकी हुई थी और उसे चक्कर-सा आ रहा था। वह उनके आदेश का पालन किये बगैर बेवकूफ की तरह उनकी ओर ताक रही थी। लैंपों की लाल रोशनी में वह मुश्किल से उन्हें देख पा रही थी। वे सब जानवरों की तरह नंगे और कोयले की धूल तथा पसीने में सने हुए काले दिखाई दे रहे थे, उनकी नग्नता से वह भयभीत नहीं थी। वे जनवरों की भाँति पीठ झुकाये काम में जुटे हुये थे। उनके अंगों पर लाल झाई पड़ रही। वे अपनी शक्ति फावड़ा चलाने और कराहने में नष्ट कर रहे थे। वे उसे अच्छी तरह देख सकते थे और छेनी चलाना बंद कर वे उससे उसका पायजामा उतारने का मजाक कर रहे थे।

'आह ! तुम्हें ठंढ लग जायगी; ध्यान रखो !'

'इस लिए तो कि इसकी टाँगे बड़ी खूबसूरत है !'

'मैं कहता हूं चवाल, दो के लिए गुंजायश है।'

'ओह ! हमें देखना चाहिए। उठाओ ता ! ऊंचे ! और ऊंचे !'

तब चवाल ने, इस मजाक पर नाराज हुए बगैर अपना सिर घुमाया।

'यह बात है, वाई गाड ! वह भद्दे मजाक पसंद करती है। उसे इन्हें सुनने के लिए कल तक यहाँ ठहर सकती है।'

कैथराइन ने बड़ी तकलीफ से अपनी ट्राम भरने का निश्चय किया और फिर उसे धकेला। गलियारा काफी चौड़ा होने से वह दोनों ओर तख्तों का सहारा नहीं ले सकती थी, उसने नंगे पाँव पटरियों पर, जिससे वह सहारा ले रही थी, दुहरे हुए जा रहे थे और धीरे-धीरे ट्राम खींचने पर भी उसकी बांहें आगे से अकड़ सी गई थीं, उसकी कमर टूटी जा रही थी। जब वह चूने की दीवार तक पहुँची, वही भयानक तकलीफ शुरू हो गई और तूफानी बादलों की भाँति बड़ी-बड़ी पसीने की बूंदें उसके समूचे शरीर से चूने लगीं। मुश्किल से उसने एक तिहाई रास्ता तय किया होगा कि वह पसीने-पसीने हो गई। काली मिट्टी में सनी वह देख भी नहीं पा रही थी। उसकी तंग जाँघिया उसके शरीर से चिपकी हुई थी, और अपनी जाँघों को हिला कर उसे कमर तक उठाने में इतनी तकलीफ हुई कि उसे फिर काम बंद कर देना पड़ा।

क्या मामला है ? आज ऐसा क्यों हो रहा है ? उसे कभी भी इतना कष्ट महसूस नहीं हुआ था । निःसंदेह यह दूषित हवा का असर है । इस दूरस्थ गलियारे तक हवा नहीं पहुँच पाती थी । हर प्रकार की गैस में साँस लेनी पड़ती है जो कि सोते के बुलबुलों की सी आवाज करते हुए कोयले से निकला करती है । कभी-कभी तो यह इस कदर ज्यादा हो जाती है कि लैंप तक नहीं जल सकता । वह इस जहरीली हवा को अच्छी तरह पहचानती थी, खनिक इसे 'मृतहवा' कहते थे । यह हल्की गैसों के ऊपर वह भारी गैस थी जो खानों के सभी स्टालों, उसके सैकड़ों मजदूरों को बिजली की भाँति एक बार कड़क कर फटने से उड़ा सकती थी । छुटपन से ही उसने इतनी गैस साँस द्वारा जज्ब की थी कि उसे आश्चर्य हो रहा था कि आज यह उसके कानों में भनभनाहट और गले मे जलन क्य पैदा कर रही है ?

आगे बढ़ने में असमर्थ हो उसने अपनी जांघिया भी उतार डालने की जरूरत महसूस की । वह उसके लिए कष्टदायी हो रही थी । उसके छोर उसे जलाये डाल रहे थे । उसने इस इच्छा को दबाते हुए फिर धकेलने का प्रयास किया परन्तु उसे खड़े होने को विवश होना पड़ा । तब जल्दी से, अपने आप से यह कहते हुए कि वह गन्तव्य स्थान में फिर उसे पहन लेगी, उसने जांघिया भी उतार डाली लेकिन सब चीज उतार देने पर भी उसका कष्ट कम नहीं हुआ । अब वह एक नग्न मादा पशु की तरह, पेट तक कीचड़ और कोयले में सनी हुई, चारों हाथ-पाँवों से ट्राम को आगे धकेल रही थी । नंगी होने पर भी उसे आराम न मिलने पर वह निराश हो गई । अब और वह क्या उतारे ? उसने कानों की भनभनाहट उसे बहरा बना रही थी, उसकी कनपटियों पर भारी दबाव-सा उसे महसूस हो रहा था । ट्राम में कोयले के ऊपर रखा उसका लैंप उसे बुझता प्रतीत हो रहा था । उसका दिमाग फटा जा रहा था और उसने बत्ती बढ़ाकर लैंप को जलाये रखा । दो बार उसने उसकी परीक्षा की और जब वह उसे जमीन पर रखती तो उसकी रोशनी पीली पड़ जाती थी, मानो उसमें साँस न रह गई हो । यकायक लैंप बुझ गया । तब हर चीज अंधेरे में उसके आगे घूमने सी लगी । एक पत्थर से उसका सर टकराया, उसका हृदय दुर्बल पड़ गया, अकथ पीड़ा से उसके अवयव सुन्न पड़ गए और वह बेहोश होकर उस जहरीली गैस के बीच जमीन में गिर पड़ी ।

'वाईगाड, मैं सोचता हूँ कि वह फिर सुस्ताने लगी है !' चवाल ने गरज कर कहा ।

उसने ऊपर से सुनने की कोशिश की लेकिन पहियों की आवाज नहीं सुनाई दी ।

'ओ ! कैथराइन ! हत् तेरी मनहूस की !'

उसकी आवाज काले गलियारे में विलीन हो गई और कोई भी उत्तर नहीं आया ।

'मैं आकर तुझे गतिशील बनाऊंगा, आऊं !'

कोई उत्तर नहीं, वहाँ सिर्फ वही खामोशी, मौत की तरह बनी रही । वह क्रोधित हो नीचे उतरा । वह अपना लैंप लेकर इस तेजी से आगे झपट रहा था कि वह रास्ते में पड़े उसके शरीर से टकरा कर गिरते-गिरते बचा । वह हक्का-बक्का उसे देखने लगा । क्या बात है तब ? क्या यह सोने का बहाना किये पड़ी है ? परन्तु, लैंप से उसका चेहरा देखने के लिए नीचे करने पर वह बुझा चाहता था । उसने उसे उठाया और फिर नीचे किया और अन्त में उसकी समझ में आया कि यह जहरीली हवा का झोंका है । उसकी हिंसक भावना गायब हो गई । एक साथी को संकट में देखकर उसके प्रति ममता उसके दिल में पैदा हुई । उसने चिल्ला कर उसका जांघिया मँगाया । वह नग्न, बेहोश लड़की को अपनी बाँहों में जितना ऊँचा संभव था उठाये हुए था, जब उसकी जाँघिया वहाँ फेंक दी गई तो वह एक हाथ से उसका बोझ सम्भाले और दूसरे हाथ में दोनों लैंप लिए तेजी से दौड़ने लगा । वह कभी दांये, कभी बांये मुड़ता हुआ गलियारे पर गलियारा पार करता हुआ बढ़ा चला जा रहा था । अन्त में उसे पानी का सोता मिला, वहाँ चट्टान से पानी झर रहा था । वह पहले गेस्टम मेरी को जाने वाले बड़े गलियारे में था । यहाँ तूफान की तरह हवा चला करती थी और इतनी ताजा थी कि जब वह तख्तों के सहारे जमीन पर बैठा तो उसे कँपकँपी छूटने लगी । उसकी पत्नी अब भी बेहोश, आँखें बन्द किये थी ।

'कैथराइन, होश में आओ, वाई गाड । मजाक मत करो । जरा देर अपने को सम्भालो, मैं इसे पानी में भिगो लाऊं ।'

उसे इस कदर बेहोश देखकर वह चिन्तित हो उठा था । उसने उसकी जांघिया को सोते में डुबोया और उससे उसका मुँह पोछा । वह एक लाश की भाँति हो गई थी और जमीन में धँसी हुई थी । उसके दुबले-पतले अवयव यौवन के उभार में आने से अब भी झिझक से रहे थे । तब उसकी बच्ची की सी छाती पर एक कंपन-सा हुआ और वह उसकी जाँघों और पेट पर फैला । बिना खिले ही वह मुर्झा गयी थी ।उसने अपनी आँखें खोल दीं और कांपते स्वर में बोली—

'मुझे ठंढ लग रही है ।'

'आह ! अब अच्छा है !' चवाल बड़ी भारी मुसीबत से छुटकारा महसूस कर चिल्लाया ।

उसने उसे कपड़े पहनाये। उसकी जाँघिया आसानी से पहना दी। वह पाय-जामा पहनाने की दिक्कत के बारे में कसम खाने लगा, लेकिन वह ज्यादा मदद न कर सकी। वह अब भी असमर्थता-सी महसूस कर रही थी और समझ नहीं पा रही थी कि वह कहाँ है और क्यों नंगी है ? जब उसे स्मरण आया तो वह शरमा गई। कैसे उसे सब वस्त्र उतार देने की हिम्मत हुई ! और वह उससे पूछने लगी; क्या वह बिलकुल मादरजात थी और उसके कमर में एक रूमाल तक उसके शरीर को ढँकने के लिए नहीं था ? उसने मजाक किया और बात गढ़ी कि वह अभी-अभी उसे यहाँ लाया है और सभी साथियों ने एक कतार में खड़े उसे इस प्रकार देखा है। बाद में उसने बताया कि वह इतनी तेजी में यहाँ निकल आया था कि उसके साथी यह भी न जान सके कि उसका अंग गोल था या चौकोर।

'हम दो ही थे ! लेकिन मैं ठंढ से मरा जा रहा हूँ,' उसने स्वयं कपड़े पहनते हुए कहा।

उसने कभी भी चवाल को इतना मेहरबान नहीं पाया था। अक्सर उसे एक प्यार की बात के साथ-साथ दो लातें भी मिलती थीं। आपस में मेल-मुहब्बत में रहने में कितना सुख है ! अपनी तकलीफ की दुर्बलता में एक लाड़ की भावना उसके अन्दर जाग्रत हुई। वह उसकी ओर देखकर हँसी और धीमे स्वर में बोली :

'मेरा चुम्बन लो।'

उसने उसे भुजाओं में कस लिया और उसकी बगल में लेट गया और उसमें चलने की सामर्थ्य आने तक इन्तजार करने लगा।

'तुम्हें मालूम है,' वह बोली, 'तुम्हारा ऊपर से मेरे ऊपर चिल्लाना बेजा था क्योंकि मैं सचमुच असमर्थ थी ! कटान में इतनी गरमी नहीं है, परन्तु नीचे तो झुलसाने वाली असह्य गरमी रहती है।'

'इसमें संदेह नहीं,' उसने उत्तर दिया। 'पेड़ों के नीचे ज्यादा आराम रहेगा। उस स्टाल में तुम्हारी तबियत खराब हो जाती है, मुझे लगता है।'

उसे सहमत पाकर और यह महसूस कर कि वह उसे बहादुर समझता है, वह गद्‌गद् हो गई।

'ओह ! वह स्थान बुरा है। और, आज हवा भी विषाक्त है। परन्तु तुम स्वयं देखोगे कि मैं क्या हूँ। जब काम है तो उसे करना ही पड़ता है; क्यों है न ठीक बात ? रुकने के बजाय मैं मरना बेहतर समझती हूँ।'

दोनों चुप हो गए। वह उसे उसकी कमर में एक बाँह डाले जकड़े हुए था और किसी भी प्रकार की क्षति से उसे बचाने के लिए अपने सीने से चिपकाये

हुए दबा रहा था। वह अब स्टाल में वापस लौटने की शक्ति महसूस करने लगी थी, अपनी खुशी में वह सब कुछ भूल सी गई।

वह धीमे से बोली, 'मैं चाहती हूँ कि तुम इसी तरह कोमल बने रहो, हम दोनों अगर एक दूसरे को थोड़ा सा भी प्रेम करें तो कितना अच्छा हो।'

और वह धीमे स्वर में रोने लगी।

'लेकिन मैं तुम्हें प्यार करता हूँ, वह बोला, 'इसीलिए मैंने तुम्हें अपने साथ रख लिया है।'

उसने सिर्फ सिर हिला कर उत्तर दिया। ऐसे भी लोग होते हैं जो औरतों को अपनी काम-पिपासा शांत करने के लिए अपने साथ रखते हैं और उनकी खुशी की जरा भी परवाह नहीं करते। अब उसके आँसू और तेजी से झरने लगे थे, अब वह उस कल्पना से निराश सी हो रही थी कि अगर वह दूसरे नवयुवक के हाथ पड़ी होती तो कितना सुखमय उसका जीवन होता, वह हमेशा ही इस तरह उसके हाथ अपनी कमर में महसूस करती। दूसरा ? और उस दूसरे की अस्पष्ट सी आकृति उसकी भावनाओं की गहराई से उभरी। लेकिन अब तो सब मामला ही खत्म था। अब वह अन्त तक इसी युवक के साथ रहने की इच्छा रखती थी बशर्ते कि वह उसे बहुत ज्यादा परेशान न करे।

'तब,' वह बोलो, 'कभी-कभी इसी तरह बनने की कोशिश करो।'

सुबकियों से उसका गला रुँध गया और उसने पुनः उसका आलिंगन किया।

'तुम बेवकूफ हो ! सुनो, मैं सदय बनने की कसम खाता हूँ। मैं किसी अन्य व्यक्ति से बुरा नहीं हूँ।'

उसने उसको निहारा और अपने आँसू भरी आँखों से उसकी ओर देखती मुस्कराने लगी। शायद वह ठीक कहता है, ऐसी औरत कभी भी नहीं मिलती जो सदैव संतुष्ट रहे। फिर, गोकि उसे उसकी कसमों पर विश्वास नहीं था, उसने उसकी खुशी के आगे आत्मसमर्पण कर दिया। काश ! हमेशा ही ऐसा रहता ! वे पुनः एक दूसरे के आलिंगन में आबद्ध थे और जब कि वे इस प्रकार प्रगाढ़ आलिंगन-चुम्बन में निमग्न थे उन्हें पदचाप सुनाई दी, वे उठ खड़े हुए। तीन खनिक, जिन्होंने उन्हें इस प्रकार गुजरते देखा था, उसकी तबीयत का हाल जानने वहाँ आये थे।

वे सब साथ रवाना हुए। अब लगभग दस बज रहा था और उन्होंने एक शीतल कोने में नाश्ता किया। वे अपनी रोटी-मक्खन को खत्म कर अपने टिन से काफी पीने ही जा रहे थे कि दूरस्थ स्टालों से आने वाली आवाजों से वे चिन्तित हो उठे। क्या हुआ ? क्या कोई दूसरी दुर्घटना हुई ? वे उठकर भागने लगे। हर-कदम पर उन्हें मलकट्टे, ट्रामर, पुटर मिलते थे। कोई भी कुछ नहीं जानता था।

सभी चिल्ला रहे थे कि कोई भारी दुर्घटना हुई है। धीरे-धीरे तमाम खान में आतंक छा गया, डरी हुई छायाकृतियाँ गलियारों से निकलतीं, लैंप नाचतीं और फिर अँधेरे में भागतीं नजर आतीं। कहाँ यह हुआ ? कोई क्यों नहीं पता पा रहा है ?

तत्काल एक कप्तान चिल्लाता हुआ गुजरा: 'वे तार काट रहे है ! वे तार काट रहे हैं !'

तब तो आतंक और भी बढ गया। लोग बेतहाशा धूमिल गलियारों से भाग रहे थे। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कुछ भी, कि क्यों तार काटे जा रहे हैं ? कौन उन्हें काट रहा है जब कि लोग नीचे काम कर रहे है ? बड़ी भयानक बात है।

लेकिन दूसरे कप्तान की आवाज सुनाई दी:

'मोंटसू के लोग तार काट रहे हैं। हर एक ऊपर चला जाय।'

जब चवाल ने समझा तो उसने कैथराइन को रोका। मोंटसू के लोग ऊपर उसे मिलेंगे, जब वह बाहर निकलेगा। इस विचार से उसके पैरों को लकवा सा मार गया था। तब, वह गिरोह आ ही पहुँचा, जिसे उसने सोचा था कि पुलिस के हाथ में पड़ गया होगा। एक क्षण को उसने रास्ता छोड़कर गेस्टन मेरी के रास्ते ऊपर उतरने की सोची, परन्तु अब वह संभव नही था। वह कसमें खाता हुआ हिचक रहा था, अपने भय को छिपा रहा था और बराबर दुहरा रहा था कि इस तरह दौड़ना बेवकूफी है। वे, शायद उन्हें खान की सतह में नही छोड़ेंगे।

कप्तान की आवाज की प्रतिध्वनि आ रही थी, अब वह उनके करीब आ रहा था।

'हर एक ऊपर चला जाय ! सीढ़ियों के रास्ते ! सीढ़ियों के रास्ते !'

और चवाल भी अपने साथियों के साथ भागने लगा। उसने कैथराइन को धक्का देते हुए उस पर तोहमत लगाई कि वह तेज नहीं भाग रही है। क्या, तब, वह खान में नीचे ही रह कर भूखों मरना चाहती है ? क्योंकि वे मोंटसू के लुटेरे लोगों के ऊपर पहुँचने का इन्तजार किये बगैर ही सीढ़ियों को तोड़ने की हिमाकत कर सकते हैं। इस भय ने सभी को पागल सा बना दिया। गलियारों से लोग अस्त-व्यस्त दौड़ रहे थे। हर कोई इस कोशिश में था कि वह औरों से पेश्तर पहुँच कर ऊपर चढ़ जाय। वे कूपक की ओर झपटे और सीढ़ियों के मार्ग के तंग दरवाजे से एक दूसरे को कुचलते हुए आगे बढ़ने लगे। एक पुराने सईस ने, जो घोड़ों को अस्तबल में वापस ले जा रहा था, उनकी हड़बड़ाहट देख कर बड़े उदासीन तरीके से

उनकी ओर देखा, वह खान में रातें गुजारने का अभ्यस्त था और उसे विश्वास था कि वह उससे बाहर निकल सकता है।

'भगवान कसम ! क्या तुम मेरे आगे चढ़ोगी ?' चवाल कैथराइन से बोला। 'कम से कम अगर तुम गिरो तो मैं तुम्हें पकड़ सकूंगा।'

हाँफते हुए, और तीन किलोमीटर की इस दौड़ से पुनः पसीने में लतपथ और पस्त कैथराइन ने बिना कुछ समझे-बूझे भीड़ में अपने को झोंक दिया। तब, उसने उसे बाँह से उठाया; वह दर्द के मारे कराह उठी और उसकी आँखों में आँसू छल-छला आये। वह अपनी कसम भूल चुका था, कभी भी खुशी उसके भाग्य में नहीं है।

'चलो तब !' उसने गरज कर कहा।

लेकिन उसने उसे बहुत भयभीत कर दिया था, अगर वह पहले चलती है तो वह बराबर पीछे से उसे तंग करेगा। इसलिए वह झिझक रही थी जब कि अन्य लोगों की जंगली भीड़ ने उन्हें एक ओर धकेल दिया। कूपक से छन कर आने वाला पानी बड़ी-बड़ी बूंदों में गिर रहा था और पिट-आई का फर्श, इस रौंदा-रौंदी में, दस मीटर गहरे कीचड़ के तालाब के ऊपर बुरी तरह हिल रहा था। जीनबर्ट में दो वर्ष पेश्तर, यहीं पर एक भयंकर दुर्घटना हो गई थी, तार टूट जाने से कट-घरा कीचड़ की सतह में चला गया था जिसमें दो व्यक्ति डूब गए थे। और वे सभी उसकी कल्पना कर रहे थे कि अगर वे सभी एक साथ भीड़ के रूप में तख्तों पर चढ़े तो फिर हर एक व्यक्ति नीचे रह जायगा।

'बेवकूफ, औंधी खोपड़ी !' चवाल चिल्लाया। 'तब, मर; मैं तुझसे मुक्त हो जाऊँगा।'

वह ऊपर चढ़ने लगा और वह भी पीछे-पीछे थी।

नीचे से सूर्य की रोशनी तक एक सौ दो सीढ़ियाँ थीं। लगभग सात मीटर की लम्बान की, एक चौरस चिमनी की तरह सीढ़ियाँ एक दूसरे के ऊपर इस काले और नमी वाले पाइप के बीच से चली गई थी। एक तगड़े व्यक्ति को इन कठिन सीढ़ियों से चढ़ने में पचीस मिनट लगता था। अब इस मार्ग का, दुर्घटना के अलावा उपयोग नहीं किया जाता था।

कैथराइन पहले बहादुरी से चढ़ी। उसके नंगे पाँव मार्गों के सख्त कोयले के अभ्यस्त थे। उन लोहे के डंडों से जिसे सीढ़ियों के बचाव के लिए लगाया हुआ था, उसे परेशानी नहीं हो रही थी। कर्षण से अभ्यस्त उसके सख्त हाथ ऊपर की छड़ों को मजबूती से पकड़ते जा रहे थे, गोकि वे छड़ें उसके लिए बहुत बड़ी पड़ रही थीं। और इस अभूतपूर्व चढ़ाई में, मजदूरों की एक बहुत बड़ी लम्बी कतार थी, जिसमें एक सीढ़ी पर तीन-तीन आदमी थे। वह अपनी तकलीफ का दर्द भूल

जाती थी और कल्पना करती थी कि जब सिरा बाहर सूर्य के प्रकाश में होगा तो पूंछ कीचड़ में ही सरकती होगी। अभी वे पहुँचे नहीं थे, पहले वाले लोग कूपक का मुश्किल से एक तिहाई पार कर पाये थे। अब कोई बातचीत नहीं कर रहा था, सिर्फ उनकी पदचाप सुनाई दे रही थी, उनके लैंप घूमते हुए तारों की भाँति नीचे से ऊपर तक, एक लगातार बढ़ती हुई कतार बना रहे थे।

कैथराइन ने अपने पीछे एक ट्रामर को सीढ़ियां गिनते सुना। उसे भी विचार आया कि वह भी सीढ़ियाँ गिने। वे पंद्रहवीं सीढ़ी चढ़ चुके थे और उतरने के स्थान तक पहुँच रहे थे। परन्तु इसी क्षण वह चवाल के पाँव से टकराई। उसने गाली देते हुए उससे सावधानी बरतने को कहा। धीरे-धीरे समूची कतार रुक गई और स्थिर हो गई। क्या हुआ? कोई बात हो गई क्या? और हर आदमी जोर से प्रश्न कर अपना भय जाहिर करने लगा। खान में सतह छोड़ने के बाद उनकी उत्सुकता भी बढ गई थी ऊपर क्या हो रहा है? इसकी अनभिज्ञता से ज्यों-ज्यो वे रोशनी के करीब पहुँचते जाते थे चिन्ता बढती जाती थी। किसी ने कहा कि चूंकि सीढ़ियाँ टूट चुकी है, इसलिए उन्हे फिर नीचे जाना पड़ेगा। यही चिन्ता सबको थी, एक दूसरे को आमने-सामने पाने का भय भी था। दूसरी बात जो लोगों के मुँह जबानी नीचे पहुँची यह थी कि कोई दुर्घटना हो गई है, एक मनकट्टा सीढ़ी के डंडे में गिर पड़ा है। कोई ठीक तरह से नहीं जानता था, चिल्लाहट के मारे सुनना मुश्किल पड़ रहा था; क्या इन लोगों की यही शय्या बन जायगी? अन्त में बिना किसी ठोस सूचना के, फिर लोगो ने ऊपर चढना शुरू किया, उसी धीमी, कष्टदायक गति में, पाँव जमा-जमा कर आगे बढ़ते, लैंप नचाते हुए। निःसंदेह ऊपर सीढियां तोड़ डाली गई होंगी।

बत्तीसवीं सीढ़ी में, जब वे उतरने के स्थान का तीसरा नाला पार कर रहे थे, कैथराइन ने महसूस किया कि उसकी बाहें और टाँगें अकड़ गई है। पहले उसने अपने शरीर में हल्की सनसनाहट महसूस की। अब उसे अपने हाथों के नीचे लोहे का और पाँवों के नीचे लकड़ी का अहसास ही नहीं हो रहा था। एक अस्पष्ट सा दर्द, जो धीरे-धीरे जलन में बदल रहा था, उसकी मांसपेशियों में हो रहा था और उसे मिचली-सी आ रही थी। वह फादर बोनेमॉ की बताई हुई पुराने जमाने की बात सोचने लगी थी जब कि मार्ग नहीं थे। छोटी लड़कियाँ खुली सीढ़ियों में अपने कंधों पर कोयला ढोया करती थी और अगर कोई फिसल पड़ता या टोकरी में कोई कोयले का टुकड़ा लुढ़क जाता तो तीन या चार बच्चे नीचे की ओर सिर किये लुढ़क पड़ते थे। उसके अवयवों में असह्य ऐंठन हो रही थी, वह सिरे तक कभी न पहुँच पायेगी।

नये सिरे से कतार के रुक जाने से उसे साँस लेने का मौका मिला। लेकिन ऊपर से हर बार मिलने वाली सूचनाओं से उसे अधिक घबड़ाहट हो रही थी। उसके ऊपर, नीचे साँस लेने में बड़ी दिक्कत हो रही थी। यह अन्त-रहित चढ़ाई मिचली-सी पैदा कर रही थी। अंधकार मे नशे की सी हालत में उसे घुटन महसूस हो रही थी और उसके अवयव दीवारों से टकरा कर चोट खा रहे थे। नमी से काँपती हुई उसके शरीर से बड़ी-बड़ी बूंदें गिर रही थी। वे ऐसे स्तर पर पहुँच रहे थे जहाँ ज्यादा पानी झरने से उनके लैंपों के बुझने का खतरा हो चला था।

चवाल ने दो बार कैथराइन से बातचीत करनी चाही परन्तु उसे कोई उत्तर नही मिला। तब, वह नीचे क्या कर रही है? क्या उसकी जबान बंद हो गई है? वह बतला तो सकती है कि वह ठीक है। वे आधे घंटे से चढ रहे थे परन्तु इतनी ज्यादा मशक्कत पर भी वे सिर्फ उनसठवीं सीढी पर ही पहुँचे थे, अब भी तैंतालिस सीढियाँ बाकी थीं। अन्त मे कैथराइन धीरे से बोल पाई कि वह ठीक है। अगर वह अपनी थकान जाहिर करती तो वह उससे बडी भद्दी तरह पेश आता। लोहे की छड़ों से उसके पैर कट गए होंगे, उसे प्रतीत हो रहा था कि वे उसकी हड्डियों मे घुसे जा रहे है। हर पकड़ के बाद वह अपने सुन्न हाथों को पकड़ छोड़े देखना चाहती थी। वे इस कदर सुन्न पड़ गए थे और ऐंठ गये थे कि वह अपनी अंगुलियाँ बंद नही कर पा रही थी। उसे खतरा हो रहा था कि वह इस प्रयास मे कहीं पीछे की तरफ न लुढक पड़े। सीढियों की दोषपूर्ण खतरनाक ढाल से उसे काफी परेशानी हो रही थी, लगभग सीधे खडे रहने की अवस्था मे वह अपनी कलाइयों के बल पर ऊपर झूल-सी रही थी और पेट के सहारे तख्तों पर बढ़ती थी। साँसों के हाँफने की आवाज मे पाँवों की चाप का शब्द खो गया था। कोई बड़े जोरो से चिल्लाया; ट्रामरों मे यह बात फैल गई कि एक सीढ़ी के किनारे से टकरा कर एक ट्रामर का सिर कट गया है।

और कैथराइन चढ़ती चली गई। सतह पार करने के बाद निरंतर होने वाली वर्षा रुक गई थी। अब हवा में भारीपन आ गया था और उससे पुराने लोहे और सीली लकड़ी की मिली-जुली गंध आ रही थी। यंत्रवत उसने गिनना शुरू कर दिया था—एकासी, बयासी, तिरासी; अभी उन्नीस और हैं। इन अंकों को दुहराने मे उनकी लय के संतुलन का सहारा उसे हो रहा था। अपने अवयव चलने का अब उसे अहसास नहीं था। जब उसने अपना सिर उठाया तो लैंप उसकी आँखों के आगे नाचने से लगे। उसके खून बह रहा था और उसने महसूस किया वह मर रही है, आखरी साँस उसका दम तोड़ देगी। उसे सब से ज्यादा परेशानी यह थी कि नीचे वाले धकेलने लगे थे, और समूची कतार आगे बढ़ रही थी, कष्ट और थकान

ने सूर्य का प्रकाश देखने की उसकी उत्कण्ठा और अभिलाषा को और भी बढ़ा दिया था। पहले वाले साथी बाहर पहुँच गए थे, तब, वहां कोई सीढ़ी टूटी नहीं थी, परन्तु यह विचार कि वे आखिरी में आने वाले लोगों को रोकने के लिए सीढ़ियां तोड़ सकते हैं, उन्हें पागल बनाये डाल रहा था। और जब एक बार नये सिरे से लोग ठहरे तो गालियाँ दी जाने लगीं और सभी एक दूसरे को धक्का देते हुए ऊपर चढ़ने लगे और किसी भी कीमत पर ऊपर पहुँचने के लिए वे एक दूसरे के शरीर को लाँघ कर जाने लगे।

तब कैथराइन गिर पड़ी। उसने निराशापूर्ण याचना में चवाल का नाम पुकारा था। वह नहीं सुन पाया; वह अपने एक साथी की पसुली में पांव अड़ाये उससे आगे निकलने का प्रयास कर रहा था। वह नीचे लुढ़क कर कुचली जा चुकी थी। जब वह बेहोश थी तो वह स्वप्न देख रही थी : उसे ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वह पुराने जमाने की एक छोटी पुटर लड़की है और ऊपर से कोयले के एक टुकड़े के गिरने से वह कूपक की सतह में फेंक दी गई है जैसे किसी गौरय्या के तीर लगा हो। सिर्फ पाँच सीढ़ी चढ़ना बाकी था। वह नहीं जान पाई कि कैसे वह दिन के प्रकाश में पहुँच गई। मार्ग तंग होने से लोगों के कंधों के सहारे वह ऊपर चली आई थी। यकायक उसने अपने आपको सूर्य की चौंधिया देने वाली रोशनी में, चिल्लाती हुई भीड़ के बीच, जो उसको बुरा-भला कह रही थी, पाया।

३

भोर, सूरज निकलने के पहले से ही, बस्तियों में सनसनी मची हुई थी और वह खलबली अब सड़कों पर जमा हो कर समूचे क्षेत्र में छाने लगी थी। परन्तु अभी उन लोगों ने पूर्व नियोजित प्रयाण शुरू नहीं किया था क्योंकि यह खबर फैल गई थी कि घुड़सवार फौज और पुलिस मैदान पार कर आ रही है। कहा जा रहा था कि वह रात को दुआई पहुँच चुकी थी और रेमन्योर को गालियाँ दी जा रही थीं कि उसने एम० हनेब्यू को खबर देकर साथियों के साथ दगाबाजी की है। एक पुटर ने कसम खाई कि उसने नौकरानी को तारघर सूचना ले जाते देखा है। खनिक अपने घूंसे ताने हुए प्रातःकाल की पीली धूप में खिड़कियों के पीछे से सिपाहियों को देख रहे थे।

साढ़े सात बजे के करीब सूरज उगने के समय दूसरी अफवाह फैली जिससे अधैर्य और बढ़ गया। लेकिन यह गलत बात थी, यह एक साधारण सैन्य टुकड़ी थी जो हड़ताल के मौके पर लिली के राज्याधिकारी द्वारा बुलाई गई थी। हड़ताली

इस अधिकारी से नफरत करते थे, वे उसे मध्यस्थता के लिए हस्तक्षेप करने की वायदा खिलाफी के लिए बुरा-भला कहते थे। उसने उन्हें डराने के लिए हर सप्ताह एक सैनिक टुकड़ी मोंटसू भेजने तक अपने को सीमित रखा था इसलिए घुड़-सवार टुकड़ी और पुलिस ने जब बस्तियों का चक्कर काट कर, चुपचाप मार्सेनीज वापस जाने का रास्ता पकड़ा, तो खनिक इस राज्याधिकारी और उसके सिपाहियों का मजाक उड़ाने लगे कि जब जरा गरमी आने का समय हुआ तो वे दुम दबाकर भाग निकले हैं। नौ बजे तक वे लोग शांति से अपने घरों के आसपास रहे और बराबर सड़कों पर चौकन्नी नजर डाले आखरी सिपाही को वहाँ से जाते हुए देखते रहे। अपने चौड़े मुलायम बिस्तरों में मोंटसू के लोग अभी नींद का आनन्द ले रहे थे। मैनेजर के मकान पर, मदाम हनेब्यू अभी-अभी बग्घी पर घर से निकली थी। एम० हनेब्यू काम कर रहा था। समूचे मकान में निर्जनता प्रतीत होती थी। किसी भी खान पर सैनिक पहरा नहीं था। ऐसे खतरे के समय यह एक घातक अदूरदर्शिता थी, स्वाभाविक बेवकूफी जिससे विध्वंस होता है, एक गलती थी जो सरकार तथ्यों की महत्वपूर्ण जानकारी होने पर भी करती है। नौ बज रहा था जब कि खनिकों ने, पिछले दिन जंगल में की गई बैठक में हुए निर्णय के आधार पर वरुडामे रोड का रास्ता पकड़ा।

लॉतिये ने बहुत जल्दी ही पता लगा लिया था कि उसे जीनबर्ट में वे तीन हजार साथी नहीं मिलेंगे, जिन पर वह भरोसा किये था। बहुत से यह ख्याल कर रहे थे कि प्रदर्शन का निश्चय रद्द कर दिया गया है और सब से बुरी बात यह हुई थी कि अगर वह उनकी अगुवाई नहीं करता तो दो या तीन दल, जो रास्ते में निकल चुके थे, मामले को चौपट ही कर डालते। लगभग सौ खनिक, जो सूर्य उगने से पहले रवाना हुए थे, औरों का इन्तजार करते हुए पेड़ों के नीचे बैठे थे। सावेरायन ने, जिससे नवयुवक सलाह लेने गया था, बड़े अनमने ढंग से अपनी राय जाहिर की थी कि दस दृढ़ संकल्प वाले लोग, एक भीड़ से ज्यादा काम कर सकते है, और उसने उनके साथ शामिल होने से इन्कार कर अपने सामने खुली किताब को पढ़ना शुरू कर दिया। इस बात के अब भावना में बदलने का खतरा हो चला था जब कि मोटसू को जलाने के लिए एक सामान्य फ़लीता ही काफी होता। जब लांतिये वहाँ से निकला तो उसने रसेन्योर को देखा, जो एक धातु के स्टोव के सामने बैठा हुआ बहुत पीला लग रहा था, जबकि उसकी पत्नी अपनी हमेशा की काली पोशाक में उसे बड़े विनम्र परन्तु चुभने वाले वाक्यों में उसे लानत दे रही थी।

माहे की राय थी कि उन्हें अपने वायदे को निभाना चाहिए। इस प्रकार की

सभा पवित्र होती है। फिर भी रात्रि ने उनके उफान को कम कर दिया था, अब वह दुर्भाग्य का खतरा महसूस कर रहा था और उसने कहा कि अपने साथियों को सही रास्ते पर रखने के लिए उनका वहाँ जाना कर्तव्य है। माहेदी ने सर हिला कर स्वीकृति दी। लॉतिये ने प्रसन्नता पूर्वक दुहराया कि उन्हे क्रांतिकारी तरीके अपनाने चाहियें लेकिन किसी की जान नहीं लेनी चाहिए। रवाना होने से पहले उसने अपने हिस्से की रोटी का वह टुकड़ा लेने से इन्कार कर दिया जो उसे पिछली रात दिया गया था। उसके साथ दी गई जिन की बोतलों में से उसने एक के बाद एक तीन छोटे गिलास यह कहते हुए पिये कि वह ठंढ से बचने के लिए ऐसा कर रहा है; एक टिन वह रास्ते के लिए भी भर कर ले गया। अलजीरे बच्चों की देखभाल करने वाली थी। बुड्ढा बोनेमॉ कल के चलने से थका था और वह घर पर ही रहा।

एहतियात की दृष्टि से वे एक साथ नही गए। जॉली बहुत पहले गायब हो चुका था। माहे और माहेदी ढाल की ओर से मोंटसू की ओर गए जब कि लॉतिये जंगल की ओर मुड़ा जहाँ उसने साथियों से मिलने को कहा। रास्ते में उसे औरतों का एक झुंड मिला और उसने मदर बूली और लेवक्यू की स्त्री को पहचाना; चलते-चलते वे माकेटी के लाए हुए अखरोट खाती जा रही थीं, वे उसके छिलके तक को चबाये डाल रही थीं ताकि उनका पेट भरा-भरा रहे। लेकिन जंगल में उसने किसी को नहीं पाया; लोग पहले ही जीनबर्ट पहुँच चुके थे। उसने भी वही रास्ता पकड़ा और उस समय खान मे पहुँचा जबकि लेवक्यू तथा कुछ सौ लोग अहाते मे घुम रहे थे। हर दिशा से खनिक आ रहे थे—पुरुष मुख्य सड़क मे, महिलायें खेतों से। सभी निरुद्देश्य से, बिना किसी नेतृत्व के, बगैर हथियार के ऐसे वहाँ जमा हो रहे थे, जैसे पानी ढाल की ओर बहता है। लॉतिये ने पाँवदान पर चढ़ने वाले जॉली को देखा जो वहाँ ऐसे बैठा था जैसे किसी थियेटर मे बैठा हो। वह तेजी से दौड़ कर उन लोगों मे सबसे पहले पहुँच गया। मुश्किल से वहाँ तीन सौ मजदूर थे।

जब डेन्यूलिन रिसीवर के कमरे को जाने वाली सीढ़ियों के ऊपरी सिरे पर दिखाई दिया तो लोग कुछ झिझके।

'आप लोग क्या चाहते हैं?' उसने बुलन्द आवाज में कहा।

अपनी लड़कियों को बिदा कर वह एक अस्पष्ट चिन्ता मे परेशान खान में लौट आया था। यहाँ उसे हर चीज व्यवस्थित मिली। लोग नीचे काम कर रहे थे; कटघरा काम कर रहा था। पुनः आश्वस्त हो वह बड़े कप्तान मे बातें कर रहा था जब कि हड़तालियों के आने की सूचना उसे दी गई। वह स्क्रीन-शेड की

खिड़की पर से झाँककर देखने लगा और अहाते में बढ़ती हुई इस भीड़ के सामने उसे अपनी कमजोरी का अहसास हुआ। वह कैसे इन इमारतों का बचाव कर सकेगा जो कि चारों ओर से खुली हैं? वह मुश्किल से अपने चारों ओर अपने बीस मजदूर इकट्ठा कर सकता है। वह मायूस हो गया।

अपना गुस्सा दबाये हुए उसने दुहराया, 'तुम क्या चाहते हो?' वह भय से पीला हो गया था फिर भी अपने इस सर्वनाश को हिम्मत से स्वीकार करने की चेष्टा कर रहा था।

भीड़ में धुक्कम-धुक्का था और तरह-तरह की गुस्से भरी आवाजें आ रही थी। अन्त में लाँतिये सामने आया और बोला: 'हम आपको नुकसान पहुँचाने नहीं आये, लेकिन काम सब जगह बन्द हो जाना चाहिए।'

डेन्यूलिन ने स्पष्ट रूप से उसके साथ ऐसा व्यवहार किया जैसा किसी मूर्ख के साथ किया जाता है।

'क्या तुम सोचते हो कि तुम मेरे यहाँ काम रुकवा कर मुझे फायदा पहुँचाओगे? तुम मेरी पीठ पर गोली मार सकते हो? हाँ, मेरे मजूर नीचे काम कर रहे हैं, वे ऊपर नहीं आयेंगे जब तक कि तुम मुझे न मार डालो।'

उसके इन तीखे शब्दों से उत्तेजना बढ़ी। माहे को लेवक्यू को रोकना पड़ा क्योंकि वह गुस्से में भरा हुआ आगे बढ रहा था, जबकि, लाँतिये, हमेशा एक सभ्य व्यक्ति की भाँति व्यवहार करते हुए उनके क्रांतिकारी आचरण के औचित्य को डेन्यूलिन को समझाने की कोशिश कर रहा था। परन्तु डेन्यूलिन काम करने के अधिकार की बात करता था। अलावा इसके वह इसे बेवकूफी कहकर बातचीत करने से इन्कार कर रहा था। उसका मतलब कहने का यह था कि वह अपने स्थान का स्वामी है। उसको पश्चात्ताप इसी बात का था कि इस भीड़ को भगाने के लिए उसके पास चार सिपाही भी नहीं है।

'निःसंदेह, यह मेरा कसूर है और जो कुछ मेरे साथ हो रहा है उसका मैं भागी हूँ। तुम्हारे जैसे लोगों के लिए शक्ति, ताकत ही एकमात्र दलील है। सरकार तुम्हें रियायतें देकर खरीद लेना चाहती है। तुम यही करोगे कि उसे मिटा दोगे, यही न, जबकि उसने तुम्हारे हाथ में हथियार दिया है।'

लाँतिये काँप रहा था, लेकिन वह अपने आपको रोके हुए था। उसने धीमी जबान से कहा: 'मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप अपने आदमियों को ऊपर आने का आदेश दें। मैं साथियों के कार्यों का जवाब नहीं दे सकता। आप संकट टाल सकते हैं।'

'नहीं ! मेहरबानी करके मुझे अकेला छोड़ दो। मैं तुम्हें नहीं जानता। तुम मेरे यहाँ काम नहीं करते और तुम्हारा मुझसे कोई झगड़ा नहीं है। इस प्रकार समूचे क्षेत्र को रौदकर घरों को लूटना लुटेरों का काम है।'

जोरों की उत्तेजित आवाजों में उसकी आवाज डूब गई। महिलायें उसे गालियाँ दे रही थीं ! लेकिन वह अपनी बात कहे जा रहा था, अपने अनुशासन-पूर्ण स्वभाव से इस प्रकार की स्पष्टोक्ति से उसे कुछ सन्तोष-सा मिल रहा था। उसकी बरबादी सुनिश्चित थी; फिर वह कायरता को फिजूल समझता था। लेकिन मजदूरों की संख्या बढ़ती जा रही थी, लगभग ५०० मजूरे दरवाजे की ओर बढ रहे थे और अगर उसके बडे कप्तान ने तेजी से उसे पीछे की ओर न खींच लिया होता तो उसके टुकडे-टुकडे हो जाते।

'अगर आप नहीं मानते, जनाब ! तो हत्याकांड हो जायगा। मजदूरों को व्यर्थ मरवाने से क्या लाभ ?'

बड़े कप्तान की पकड़ से छूटने का असफल प्रयास करते हुए वह चिल्लाया : 'लुटेरे कहीं के। जब हम फिर मजबूत हो जायेंगे तब तुम्हें मालूम पड़ेगा कि यह सब क्या होता है।'

वे उसे वहाँ से हटा ले गए। भीड़ ने पहले अवरोध को सीढ़ियों से धकेल दिया था जिससे उसकी छड़ें मुड़ गई थीं। औरतें धक्का देकर, चिल्लाकर पुरुषों को बढ़ा रही थी। द्वार तत्काल टूट गया, यह दरवाजा बगैर ताले के सिर्फ एक फीते से बंद था। बढ़ती हुई भीड़ के लिए सीढ़ियाँ बड़ी तंग थी, अगर भीड़ का पिछला हिस्सा दूसरे मार्गों से प्रवेश को न चला गया होता तो उन्हें प्रवेश करने में बड़ा समय लगता ! वे चारों ओर से भीतर प्रवेश कर रहे थे। भयानक तरीके से चिल्लाते, मुख मुद्रा बनाते हुए वे हर द्वार से—शेड से, स्क्रीनिंग द्वार से, वायलर की इमारत से, टिड्डी दल की भाँति सर्वत्र छा रहे थे। पाँच मिनट से भी कम समय में समूची खान पर उनका अधिकार हो चला था। वे उस प्रतिरोध करने वाले मालिक पर विजय की खुशी में कोलाहल मचा रहे थे।

माहे भयभीत होकर धक्का देता हुआ सबसे आगे पहुँचा और लाँतिये से बोला—'कहीं ये लोग उसे मार न डालें !'

लाँतिये दौड़ निकला और तब, जब उसे यकीन हो गया कि डेन्यूलिन कप्तान के कमरे में घिरा हुआ है तो उसने उत्तर दिया—

'तो क्या यह हमारा कसूर है ? ऐसा पागल आदमी !'

वह भी चिन्तित हो उठा था, गोकि इस क्रोध के विस्फोट के बीच भी वह

बहुत शांत था। उसकी नेतृत्व की भावना को भी इस भीड़ को अपने अधिकार से बाहर होते देख ठेस पहुँची थी। वह शांति का निष्फल प्रयास कर रहा था। वह चिल्ला रहा था कि उन्हें अपने दुश्मनों को गलत काम करने का मौका नहीं देना चाहिए।

'बायलरों की ओर !' मदर ब्रूली चिल्लाई। 'आग बुझा डालो।'

लेवक्यू को एक रेतना मिल गया था और वह उसे कटार की भांति चमका रहा था और बुरी तरह चीखता हुआ हुल्लड़बाजों का प्रतिनिधित्व कर रहा था—

'तार काट डालो ! तार काट डालो !'

शीघ्र ही सभी इसे दुहराने लगे। सिर्फ लॉतिये और माहे विरोध कर रहे थे और परेशान थे कि इस हो-हुल्लड़ में उनकी कोई सुन ही नहीं रहा है। अन्त में लॉतिये को बात कहने का मौका मिला :

'लेकिन साथियो ! नीचे मजदूर काम कर रहे है।'

कोलाहल द्विगुणित हो उठा और सभी ओर से आवाज आने लगी :

'और भी बुरी बात है !—नीचे नहीं जाना चाहिए था !—गद्दारों को ठीक करो !—हाँ, हाँ, उन्हें वहीं मरने दो !—और फिर सीढ़ियाँ भी तो हैं।'

तब, जब सीढ़ियों के विचार से वे और भी जिद करने लगे तो लॉतिये ने देखा कि उसे झुकना ही पड़ेगा। बड़ी दुर्घटना के भय से वह इंजन की ओर तेजी से बढ़ा। वह चाहता था कि किसी भी सूरत से कटघरे ऊपर आ जाँय ताकि कूपक के ऊपर से तार काट दिये जाने से, अपने भारी वजन से, नीचे गिरने पर वे उन्हें कुचल न सकें। इंजनमैन और ऊपर काम करने वाले मजदूर भाग चुके थे। उसके चलाने वाले उत्तोलक (लीवर) को संभाला, जब कि लेवक्यू और उसके साथ अन्य दो घर्घरी को सहारा देने वाले धातु के मचान पर चढ़ चुके थे। कटघरे मुश्किल से अपने स्थान पर आ टिके होंगे कि रेतनी से इस्पात काटने की आवाज आने लगी। वहाँ गहरी खामोशी थी और यह आवाज समूची खान में गूंजती प्रतीत होती थी। सभी अपना सिर उठाये हुए इस घटना को देखने के इन्तजार में थे। पहली कतार में माहे को एक क्रूर खुशी का अहसास हुआ, मानो रेतनी के दाँत तारों को काट कर उनके दुर्भाग्य को उस अनन्त के गर्त में डाल देंगे जहाँ से वह फिर कभी उभर न सके।

मदर ब्रूली ओसारे की सीढ़ियों से चिल्ला रही थी : 'आग बुझा दी जानी चाहिए ! बायलरों के पास !'

कुछ औरतें उसके पीछे-पीछे चलीं। माहेदी ने तेजी से बढ़ कर उन्हें हर चीज नष्ट करने से रोकना चाहा। वह भी अपने पति की भाँति लोगों से अकल से

काम लेने को कह रही थी। वह उन सबों में शांत थी, लोगों को अपने अधिकार माँगने चाहिए पर ऐसे नहीं कि हर चीज नष्ट कर दो। जब वह बायलर वाली इमारत में घुसी तो दो औरतें दो आघातकों को पीछे धकेल रही थीं। मदरब्रूली एक लम्बा बेलचा लिए एक स्टोव के सामने खुरच कर तेजी से उसे खाली कर रही थी और लाल अंगारों को ईंटों के फर्श पर फेंक रही थी जहाँ वे काला धुआँ देते हुए जल रहे थे। पाँच बायलरों के लिए दस स्टोव थे। शीघ्र ही औरतें अधिक तेजी से काम करने लगीं थीं। लेवक्यू की स्त्री दोनों हाथों से बेलचा चला रही थी। माकेटी आग पकड़ने के डर से अपने कपड़ों को जाँघों तक चढ़ाये थी। सभी ज्वालाओं की प्रतिच्छाया मे मुखे नजर आ रही थी और पसीने मे लतपथ इस जादूगरनी की रसोई मे काम कर रही थी। कोयले के अम्बार बढ चले थे और उसकी गरमी से इस बडे हाल की छत तड़कने लगी थी।

'काफी हो गया, अब !' माहेदी चिल्लाई, 'स्टोर के कमरे मे आग लग गई है।'

'और अच्छा हुआ,' मदर ब्रूली बोली। 'इसमे काम हो जायगा। आह ! भगवान कसम ! मैने कहा न था कि मै उन्हे अपने पति की मृत्यु का मजा चखाऊँगी !'

इसी क्षण जॉली की तीखी आवाज सुनाई दी :

'हट जाओ ! मैं इसे बुझा दूँगा, मैं अवश्य ही बुझा दूँगा ! मैं सभी चीज उड़ा दूँगा।'

वह सबसे आगे आ गया था और भीड मे अपनी टाँगे फेंकता हुआ इस दृश्य से खुश था और ढूंढ़ रहा था कि वह क्या बदमाशी कर सकता है। उसको यह सूझ गई थी कि वह टेप खोल दे और सब भाप बाहर निकल जाने दे।

गोलियों की छूटने की आवाज करते हुए फौवारे फूट पड़े और तूफान की सी स्थिति पैदा करते हुए पाँचों बायलर खाली हो गए। हर चीज भाप के बीच गायब सी हो गई थी। गरम कोयला पीला पड़ गया था और औरतों की सिर्फ छायाकृति दिखाई देती थी। सिर्फ जॉली ही सफेद भाप के बवण्डर के बीच गैलरी मे चढ़ा हुआ इन तूफान को लाने मे समर्थ होने की खुशी मे अपने खीस निपोर कर हँस रहा था।

पन्द्रह मिनट तक यह चलता रहा। इसकी पूर्णाहुति मे कुछ बाल्टी पानी कोयले के ढेर में और डाल दिया गया था। आग लगने का खतरा जाता रहा था, लेकिन भीड़ का क्रोध शांत नहीं हुआ; बजाय शांत होने के वह बढ़ गया था।

लोग हथौड़े लिए नीचे पहुँचे। महिलायें तक लोहे की छड़ें लिए थीं और वे वायलरों को तोड़ने, इंजन को नष्ट करने और खाना का ध्वस्त करने की बातें कर रहे थे।

लॉतिये, पहले ही से सचेत, माहे के साथ आया। वह स्वयं मदहोश सा होकर इस बदले की भावना में बह चला था। उसने उन्हें हटाते हुए उन्हें शांत रहने को कहा और बताया कि अब आग बुझाने, तार काटने में काम असभव हो गया है। परन्तु हमेशा उसकी नहीं सुनी जाती थी। पुनः भीड़ उसकी हुक्म-अदूली करने जा रही थी कि बाहर एक छोटे से दरवाजे पर, जहाँ से सीढ़ियों का मार्ग आता था, तिरस्कार की आवाजें सुनाई दी।

'गद्दारों का नाश हो—ओह! कायरो! तुम्हारा नाश हो! तुम्हारा नाश हो!'

मजदूर नीचे से ऊपर निकलने लगे थे। पहले पहुँचने वाले, दिन की रोशनी में चौंधिया कर, पलकें टिमटिमाते हुए वहाँ खड़े थे। फिर वे वहाँ से सड़क पकड़ कर भाग निकलने की कोशिश में खिसक गए।

'कायरों का नाश हो! गद्दारों का नाश हो।'

हड़तालियों का समूचा गिरोह ऊपर दौड़ पड़ा। तीन मिनट से भी कम समय में इमारतों में एक भी आदमी न रह गया। मोंटसू के पांच सौ मजदूर दो कतारों में बँटकर वण्डामे के उन मजदूरों को, जिन्होंने नीचे काम पर जाकर गद्दारी की थी, इस कतार के बीच से गुजरने को बाध्य कर रहे थे। और जब कभी भी नया खनिक, काम के कपड़ों में मिट्टी से सना हुआ, चीथड़े पहने द्वार से निकलता था, तिरस्कार के शब्द कोलाहल मचाने लगते थे और क्रूर मजाक होने लगता था—'ओह! जरा उसको तो देखो!—तीन इंच की टाँगों के बाद तो नितम्ब भाग शुरू हो जाता है। और उसे देखो, जिनकी नाक बोल्कन की लड़कियों ने साफ कर दी है...और इस दूसरे की ओर तो ख्याल करो, उसकी आँखों से इतना मोम निकल रहा है कि वह दस गिरजों के लिए काफी होगा, और इस लम्बे ठूंठ को तो देखो।' एक स्थूल शरीरवाली पुटर लड़की अपनी छाती को पेट से मिलाये और अपने पेट को नितम्बों से मिलाये ऊपर आई, उसकी हालत देखकर वहाँ क्रूर हँसी हुई। वे उन्हें ठीक करना चाहते थे। मजाक क्रूरता में बदलता जा रहा था। जल्दी ही मुक्के बरसने लगते थे; और खान से निकलने वाले इन गरीबों की कतार गालियों को चुपचाप सहन करती, मुक्के बरसने के डर से कनखियों से देखती हुई खान से निकल कर भाग निकलने में ही खुश होती थी।

'हैलो! और कितने लोग वहाँ हैं?' लॉतिये ने पूछा।

उसे बहुत ज्यादा खनिकों को निकलते देख आश्चर्य हो रहा था। वह इस विचार से परेशान और खीझा हुआ था कि ये कप्तानों द्वारा आतंकित चंद मजदूर नहीं हैं। तब क्या जंगल में उन्होंने उससे झूठ बोला; लगभग तमाम मजदूर नीचे गए हुए हैं। लेकिन द्वार पर चवाल को खड़ा देख कर आश्चर्य के मारे उसकी चीख-सी निकली और वह आगे बढ़ा।

'भगवान कसम ! क्या बैठक में यही वायदा तुमने हमसे किया था ?' लोगों ने कोसना शुरू कर दिया और भीड़ गद्दार की ओर बढ़ने लगी। क्या ? उसी ने तो उन लोगों के साथ-साथ एक दिन पहले शपथ ली थी, और अब वही अन्य लोगों के साथ नीचे गया था ! तब क्या, वह लोगों को बेवकूफ बनाना चाहता है ?

'इसे खत्म कर दो ! सुरंग की ओर ! सुरंग की ओर !'

चवाल, भय से सफेद, गिड़गिड़ा कर सफाई देने की कोशिश कर रहा था ; लेकिन लॉतिये ने, स्वयं भी उत्तेजित होकर, उसकी बात काट दी।

'तुम अन्दर रहना चाहते थे न, और तुम उसमें रहोगे। चलो !'

दुबारा गालियों की बौछार से उसकी आवाज दब गई। इस बार कैथराइन ऊपर निकली थी। चमकीली धूप में चौधियाई-सी इन जंगलियों के बीच में पड़ जाने से वह बुरी तरह घबरा गई थी। वह हाँफ रही थी और एक सौ दो सीढ़ियों को पार करने से उसकी टाँगों मे दर्द हो रहा था, हाथों की हथेलियों से खून निकल रहा था। तब, माहेदी उसे देख कर अपना हाथ उठाये उसकी ओर बढ़ी।

'आह ! तू भी गई थी कुतरी। तेरी मां भूखों मर रही है और तू अपने पेट की खातिर उसे धोखा दे रही है।'

माहे ने उसका हाथ पकड़ कर प्रहार रोक लिया, लेकिन अपनी लड़की को झकझोरता हुआ वह भी अपनी स्त्री की भाँति क्रोधित हो उठा था। वे दोनों ही पगला उठे थे और अन्य लोगों से भी तेज आवाज में गालियाँ बक रहे थे।

कैथराइन को देखकर लॉतिये का गुस्सा खत्म हो गया। वह बोला, 'हम दूसरी खानों में जायें तो तू भी हमारे साथ रहेगा, गंदा सूअर कहीं का !'

चवाल को बमुश्किल इतना समय मिला कि वह ओसारे में जाकर अपने बूट पहन ले और अपनी ऊनी जाकेट अपने कंधों में डाल ले। वे सभी उसे घसीटते हुए अपने बीच में चलने को विवश कर रहे थे। कैथराइन भी घबराई-सी अपने बूट पहनने लगी और अपने को ठंढ से बचाने के लिए उसने अपने आदमी की पुरानी जाकेट का बटन गले में लगा लिया। वह अपने प्रेमी के पीछे पीछे भाग रही थी।

वह उसे नहीं छोड़ सकती थी क्योंकि उसे डर था कि ये लोग जरूर उसकी हत्या कर डालेंगे।

तब दो मिनट में ही जीनबर्ट खाली हो गया। जॉली को कहीं एक सींघ मिल गया था और वह उसे बजा रहा था। कर्कश आवाज पैदा हो रही थी; ऐसा प्रतीत होता था कि वह बैलों की ढोर इकट्ठा कर रहा हो। औरतें—मदर ब्रूली; लेवक्यू पत्नी, माकेटी—दौड़ने के लिए अपनी कमीजें (स्कर्ट) ऊपर किये थीं, जबकि लेवक्यू हाथ में कुल्हाड़ी लिए उसे बैण्ड मास्टर की तरह हिला रहा था। और भी मजदूर पहुँच चुके थे और अब उनकी संख्या लगभग एक हजार हो चली थी। वे बेतरतीब सड़क पर इस प्रकार चले जा रहे थे मानो बाँध खोल दिया गया हो। द्वार बहुत संकरे थे और टट्टर का बाड़ा तोड़ दिया गया था।

'खानों की ओर !—काम बंद हो !—गद्दारों का नाश हो।'

और जीनबर्ट में एकायक मनहूस खामोशी छा गई। डेन्यूलिन कप्तान के कमरे से निकल कर, अकेला ही, औरों को उसके पीछे आने के लिए मना करता हुआ खान में गया। वह बहुत पीला पड़ गया था, मानो बीमारी से उठा हो।

पहले वह कूपक के पास रुका। आँख उठा कर उसने कटे हुए तारों को देखा। रेतनी के दाँतों ने एक बड़ा सा घाव किया था और वह ताजा घाव काले ग्रीज के बाद में वह इंजन के पास पहुँचा, उसने उसके धुरे के भाग को देखा, जो लकवे में मारे हुए अवयव की तरह स्थिर था। उसने उसके ढाँचे को छुआ, वह भी ठंढा हो चला था। उसे एक कँपकँपी छूटी मानो उसनें किसी लाश को छू लिया हो। तब वह नीचे बायलर रूम में गया। बुझे हुए स्टोवों के सामने से गुजरता हुआ उसका पाँव बायलरों से टकराया जिनसे पोली आवाज आ रही थी। उसकी अच्छी तरह बरबादी हो चुकी थी। अगर वह तारों को ठीक करवाये, आग जलवाये तो उसे आदमी कहाँ मिलेंगे ? एक पखवारा बीत जाने पर वह दीवालिया हो जायगा। इस विनाश की सुनिश्चित स्थिति में उसे अब मोंटसू के लुटेरों के प्रति घृणा नहीं थी; वह इसे युग की बुराई मानता हुआ सभी की उलझन महसूस कर रहा था। वे जंगली है, उसमें संदेह नहीं, पर ऐसे जंगली जो पढ़-लिख नहीं सकते, जो भूख से मरे जा रहे हैं।

—०—

४

और यह समूह निर्बाध बाँध की तरह, इस चौरस मैदान से, पीली धूप के नीचे, पाले से सफेद धरती को रौंदता, सड़कों के किनारों मे न अमा सकने के कारण चुकन्दर के खेतों के बीच से निकलता, गुजर रहा था। फोर्च-एक्स-बौफ से लॉतिये ने नेतृत्व सँभाल लिया था। वह आदेश देता और भीड़ अनुसरण करती और और प्रयाण संगठित किया जाता। जॉली सबसे आगे दौड़ता हुआ, सीघ से वीभत्स राग बजा रहा था। तब महिलायें पहली कतार मे आईं, उनमे से कुछ लाठियाँ लिए हुए थीं। माहेदी खोई-खोई आँखों से दूर न्याय की शहर की खोज मे जाती प्रतीत होती थी। मदरब्लूली, लेवक्यू की पत्नी, माकेटी फटे वस्त्रों मे इस प्रकार लम्बे-लम्बे कदम चला रही थीं मानो सिपाही युद्धस्थल को रवाना हो रहे हों। अगर उनकी कोई मुठभेड़ हुई, तो हम देखेंगे कि पुलिस किस तरह औरतों पर वार करती है। और उनके पीछे पुरुष, बेतरतीब, झुंड के रूप मे गर्जना करते जा रहे थे। उनकी भीड़ निरंतर बढ़ती जा रही थी, लोहे की छड़ें और लेवक्यू की एकमात्र कुल्हाड़ी का फल धूप में चमक रहा था। लॉतिये, जो मध्य मे था, बराबर चवाल को अपनी नजरों के सामने रखता हुआ उसे आगे चलने को बाध्य कर रहा था; जब कि उसके पीछे माहे, कैथराइन पर निगाह रखे था। उन पुरुष की टोली मे वह अकेली ही औरत थी जो हठपूर्वक अपने प्रेमी के करीब इसलिए थी कि उसे कोई मारे-पीटे नहीं। खुले सिर हवा मे हिल रहे थे, सिर्फ बूटों की चरमराहट सुनाई देती थी। वे सब खोल दिये गए मवेशियों की तरह, जॉली के जंगली बाजे की आवाज से संचालित हो रहे थे।

एकायक नया नारा उठा—

'रोटी ! रोटी ! रोटी !'

दोपहर हो चली थी। छः सप्ताह की हड़ताल की भूख उनके खाली पेट में जाग्रत हो रही थी जो खेतों के बीच दौड़ने से और भी जोर पकड़ गई थी। सुबह की रोटी के चंद टुकड़े और माकेटी के अखरोट न जाने कब के पच चुके थे; उनके पेट खाना माँग रहे थे और इस कष्ट से उनका गद्दारों के प्रति रोष और भी बढ़ चला था।

'खानों की ओर ! काम बंद हो ! रोटी !'

लॉतिये, बस्ती मे अपना हिस्सा खाना अस्वीकार कर चुका था अब उसके सीने में असह्य चीरे की सी सनसनी हो रही थी। वह कोई शिकायत नहीं कर रहा था और समय-समय टिन से जिन की घूंट पी रहा था। उसके गाल सुर्ख हो गए

थे और उसकी आँखों से ज्वाला फूटने लगी थी। उसका दिमाग अभी ठीक था, अब भी उसकी इच्छा थी कि अनावश्यक बरबादी रोकी जाय।

जब वे जैमली रोड पहुँचे तो वण्डामे का एक मलकट्टा, जो अपने मालिक से बदला लेने की नीयत से इस दल में शामिल हो गया था, चिल्लाया—

'गेस्टन-मेरी की ओर! पंप बंद करना चाहिए। पानी से जीनबर्ट को नष्ट होने दो!'

लॉतिये के विरोध के बावजूद भीड़ मुड़ रही थी। लॉतिये उनमे कह रहा था कि पंप को चालू रहने दो, गलियारों को नष्ट करने से क्या लाभ? माहे ने भी मशीन से बदला लेना अनुचित समझा। लेकिन मलकट्टा अपने बदले की भावना से अब भी चिल्ला रहा था और लॉतिये को उसमे भी जोर मे चिल्लाना पड़ा।

'मिराओ की ओर!—वहाँ गद्दार नीचे हैं!—मिराओ की ओर!—मिराओ की ओर!'

संकेत मे उसने भीड़ को बाँई सड़क पर मोड़ा; जबकि जॉली आगे-आगे भीषण ककर्श आवाज निकाल रहा था। भीड़ को एक चक्कर दे दिया गया था और इस बार गेस्टन-मेरी को बचा लिया गया।

मिराओ तक चार मीटर की दूरी आधे घन्टे मे दौड़ती चाल मे तय कर ली गई। इस ओर नहर मैदान को एक बरफ के रिबन की भाँति काटती चली गई थी। खान मे पहुँचने पर उन्होंने स्क्रीन शेड की सीढ़ी पर एक कप्तान को अपने स्वागत मे खड़े पाया। वे सभी फादर क्वेनडे को भली भाँति जानते थे, जिसका रोंआ-रोंआ सफेद हो गया था, फिर भी सत्तर वर्ष की उम्र मे उसका स्वास्थ्य बहुत ही अच्छा था जो कि खान मे काम करने वाले के लिए आश्चर्य की बात है।

'तुम्हारा यह विघ्नकारकों का झुंड यहाँ क्यों आया है?' वह चिल्लाया।

भीड़ ठहर गई। वहाँ इस बार मालिक नही था, एक साथी था। वे इस बुड्ढे मजूरे की इज्जत करते थे, इसमे वे पीछे हट गए।

'यहाँ आदमी नीचे काम कर रहे है,' लॉतिये बोला, 'उन्हें ऊपर आने को कहो?'

'हाँ, लोग नीचे हैं,' फादर क्वेनडे बोला, 'लगभग छः दर्जन, अन्य तुम दुष्ट भिखारियों के डर के मारे आ ही नहीं पाये! लेकिन मैं तुम्हें सचेत करता हूँ कि एक भी आदमी ऊपर नहीं आयेगा या तुम्हें पहले मुझसे भुगत लेना होगा!'

लोगों ने क्रोध में चिल्लाना शुरू कर दिया, लोग धक्का देने लगे, औरतें आगे बढ़ीं। सीढ़ी से तेजी मे नीचे उतर कर कप्तान ने द्वार का रास्ता रोका।

तब माहे ने बीच-बचाव की कोशिश की। 'यह हमारा हक है, अगर हम

सभी साथियों को अपने पक्ष में नहीं लेते तो हम कैसे हड़ताल को 'आम हड़ताल' ना सकते हैं ?'

बुड्ढे ने उत्तर दिया—'हो सकता है यह तुम्हारा अधिकार हो, मैं इसको नहीं कहता। लेकिन मैं तो सिर्फ अपने आदेश को जानता हूँ। मैं यहाँ अकेला हूँ, लोग तीन बजे तक नीचे रहेंगे और वे वहाँ तीन बजे तक ठहरेंगे।'

उसके आखिरी शब्द हड़तालियों के तिरस्कार मे उड़ गए। घूंसे उठने लगे थे, महिलायें उसे बहरा बनाये डाल रही थीं, उनकी गरम साँस उसके चेहरे को छू रही थी। लेकिन वह सीधा खड़ा हुआ अदम्य साहस का परिचय दे रहा था।

'भगवान कसम ! तुम लोग घुस नहीं सकते ! यह इतना ही सत्य है जितना सूरज का चमकना। मैं तुम्हें तार छूने दूँ इससे पेश्तर मैं मरना बेहतर समझूंगा। ज्यादा धक्का-धुक्की न करो, वर्ना मुझे सौगंध है अगर मैं तुम लोगों के सामने ही कूपक से नीचे न कूद पड़ूं तो।'

भीड़ काँपती हुई और प्रभावित-सी पीछे हटी। वह कहता गया :

'जानवर तक इस बात को समझते है। मुझसे यहाँ रक्षा को कहा गया है और मैं कर रहा हूँ। मैं भी सिर्फ औरों की तरह मजदूर हूँ।'

जहाँ तक फादर क्वेनडे की बुद्धि काम देती थी वह सैनिक के समान ड्यूटी को पुनीत कर्तव्य मानता था। अपनी छोटी खोपड़ी, और आधी शताब्दी नीचे गुजारने के बाद काली मनहूसियत से बंद प्रायः आँखों वाला वह अपनी ड्यूटी पर डटा था। उसने उन्हे झिझकते देख फिर कहा।

'मुझे कसम है यदि मैं शेफ्ट से नीचे न कूदूँ तो।'

लोग मुंह फेर कर पीछे हटने लगे। वे सब मुड़कर दाँई ओर खेतों मे दूर तक गुजरती सड़क पर दौड़ चले। फिर नारे लगने लगे।

'मेडेलेन को !—क्रीवेक्योर को !—काम बंद हो !—रोटी ! रोटी !'

जब वे जा रहे थे तो मध्य में धक्का-धुक्की होने लगी। उन लोगों का कहना था कि चवाल्न भागने के मौके का लाभ उठाने की कोशिश कर रहा था। लॉतिये ने उसकी बाँह पकड़ ली और उसे धमकी दी कि यदि उसने गद्दारी की कोशिश की तो उसे समाप्त कर दिया जायगा। अगला इसका विरोध कर रहा था।

'आखिर यह सब क्यों ? क्या आदमी स्वतंत्र नहीं है ? मैं पिछले एक घन्टे से ठंढ से जमा जा रहा हूँ। मैं सफाई करना चाहता हूँ। मुझे जाने दो।'

वह वास्तव में पसीने से मिले कोयले के शरीर मे चुभने से परेशानी महसूस कर रहा था और उसकी ऊनी पोशाक उसके लिए नाकाफी पड़ रही थी।

'चले-चलो वर्ना मैं तुम्हें साफ कर दूँगा, लॉतिये ने उत्तर दिया। 'यह उम्मीद मत करो कि किसी सौदेबाजी से तुम मुक्त हो सकोगे।'

वे अब भी दौड़ रहे थे और वह कैथराइन की ओर मुड़ा, जो बराबर उनके साथ-साथ चल रही थी। कैथराइन को अपने करीब इतनी दीन-हीन, असहाय, अपने प्रेमी को पुरानी जाकेट पहने काँपती हुई, मिट्टी से सना पायजामा पहने देखकर वह परेशानी महसूस कर रहा था। वह मारे थकान के अधमरी हो गई थी, फिर भी वह दौड़ रही थी।

'तुम जा सकती हो,' अन्त में वह बोला।

कैथराइन ने मानो सुना ही न हो। उसकी आँखें, लॉतिये से मिलने पर तिरस्कार से भर उठीं। वह रुकी नहीं। वह क्यों चाहता है कि वह अपने प्रेमी को छोड़ कर चली जाय? यह सच था कि चवाल उसके प्रति जरा भी दया नहीं दिखाता था, कभी-कभी वह उसे पीटता भी था। लेकिन, जो कुछ हो, वह उसका आदमी था, पहला व्यक्ति था जिसने उसको भोगा है और उसे क्रोध आ रहा था कि वे एक हजार से भी अधिक लोग उस पर टूट पड़े हैं। वह उसके प्रति बिना किसी प्रकार की कोमल भावना के, महज आत्माभिमान के नाते उसे बचा रही थी।

'चली जाओ यहाँ से,' गुस्से से भरा माहे बोला।

उसके बाद के आदेश से एक क्षण को उसकी गति रुकी। वह काँप रही थी, उसकी आँखों में आँसू भर आये थे। तब, भय के बावजूद वह अपने पुराने स्थान पर लौट आई और दौड़ने लगी। तब, उन लोगों ने उसे रहने दिया।

भीड़ जैसली रोड पार कर, कुछ दूर क्रोन रोड पर जाकर कोगनी की ओर चढ़ने लगी थी। इस ओर कारखानों की चिमनियाँ चारों ओर दिखाई देती थीं। लकड़ी के बने ओसारे, तख्तों से बने कारखाने, जिनकी खिड़कियों में मनों धूल जमी होती थी, सड़कों के किनारे दिखाई देते थे। वे दो बस्तियों से गुजरे, जहाँ सींघ के घोष से प्रत्येक परिवार के स्त्री-पुरुष, बालक घरों से निकल-निकल कर जुलूस में शामिल हो रहे थे। जब वे मेडेलेन पहुँचे तो उनकी संख्या पन्द्रह सौ हो चली थी। यहाँ सड़क मामूली ढाल की ओर चली गई थी; हड़तालियों के झुंड को अहाते में फैलने से पहले खान के किनारे की ओर मुड़ना पड़ा।

दो बजे से ज्यादा समय हो चुका था। कप्तानों को सूचना मिल गई थी, इसलिए वे जल्दी-जल्दी खान खाली करा रहे थे। जब हड़तालियों का जुलूस पहुँचा तो लगभग बीस मजदूरों को छोड़कर बाकी सब ऊपर आ चुके थे, अब वे भी कटघरे से उतर रहे थे। वहाँ के सभी मजदूर भाग निकले और जुलूस ने उनका

पत्थरों से पीछा किया। दो को चोट भी आई, एक की जाकेट की आस्तीन पीछे छूट गई। इस मजूरों का पीछा करने से सामान बच गया और न तो तार ही छुए गए, न बायलरों को ही क्षति पहुँचाई गई। भीड़ खिसकनी शुरू हो गई थी, वे दूसरी खान की ओर बढ़ रहे थे।

यह मेडेलेन से सिर्फ ५०० मीटर दूर, क्रेवेक्योर खान थी। वहाँ भी उपद्रवी भीड़ मजूरों के खान से ऊपर आते समय पहुँची। एक पुटर लड़की को पकड़ कर औरतों ने उसे नंगी कर उसकी पीठ मे चाबुक मारे जब कि मर्द उसे देखते हुए खड़े-खड़े हँस रहे थे। ट्रामर-लड़कों के कान गरम किए गए और मलकट्टों की घूंसों से पूजा की गई और उनकी नाक मे खून बहने लगा। इस बढ़ती हुई क्रूरता में, इस बदला लेने की पुरानी आवश्यकता मे, हर एक व्यक्ति पागल-सा हो उठा था। भर्राये स्वर मे गद्दारों के नाश के नारे लग रहे थे, बहुत कम मजदूरी दिये जाने वाले काम के लिए घृणा जाग रही थी और पेट रोटी माँग रहा था। वे तार काटने लगे, लेकिन रेती ने काम नहीं दिया। काम मे बहुत विलम्ब लगने का खतरा था और उनको आगे बढ़ने का भूत सवार था। जब बायलर का नल खोला गया तो एक बालटी भर पानी स्टोव मे फेंके जाने से उनमे विस्फोट हो गया।

बाहर वे लोग सेंट टामस जाने की बात कर रहे थे। यह सबसे अधिक अनुशासित खान मानी जाती थी। वहाँ हड़ताल का कोई असर नही था। लगभग ७०० मजदूर तो वहां नीचे गए ही होंगे। इससे उन्हे क्रोध चढ़ आया, वे हाथों में छड़ियाँ लिए उनका इन्तजार करेंगे और देखेंगे कि उनमे किसमे सबसे ज्यादा ताकत है। लेकिन अफवाह यह फैली कि सेंट टामस मे पुलिस है। सुबह वाले वही सिपाही हैं जिनका उन्होंने मजाक उड़ाया था। कैसे यह मालूम पड़ा? कोई भी नहीं बता सका। कोई बात नहीं! वे डर गए थे और फ्यूटीकेंट्रल जाने का निश्चय हुआ। तब उस जुलूस के एक छोर से दूसरे छोर तक खबर फैली कि वहां नीचे सैनिक है। उसकी यात्रा मे कुछ ढिलाई आ गई। समूचे क्षेत्र मे, जिसमे काम बंद पड़ा था और जिसे वे घंटों से रौंद रहे थे, आतंक-सा छा गया। तब उनका सामना क्यों सैनिकों से नहीं हुआ? इस दमन के विचार से, जोकि आने वाला समझा जा रहा था, उन्हें परेशानी हो रही थी।

बिना किसी के जाने हुए एक आदेश सब लोगों को मालूम पड़ा जिससे वे दूसरी खान की तरफ मुड़े।

'विविटयोरे को! विविटयोरे को!'

तब विविटयोरे में पुलिस या फौज कोई नहीं है? इसे कोई न जानता था। सभी को ऐसा विश्वास था कि वहाँ कोई न होगा। और मुड़ते हुए वे ढाल से खेत

पार करते हुए जैसली रोड पहुँच गए। रेलवे लाइन से उनका मार्ग अवरुद्ध था, उन्होंने रोक को खींच कर उसे पार किया। अब वे मोंटमू पहुँच रहे थे। ढाल धीरे-धीरे कम हो गया था। चुकन्दर के खेतों का सिलसिला एक समुद्र की भाँति मार्सेनीज के काले मकानों तक फैला नजर आता था।

इस बार पाँच किलोमीटर का रास्ता था। एक तीव्र भावना उसके अन्दर काम कर रही थी और वे अपनी अत्यधिक थकावट, अपने पाँवों की खरोंचें और घाव भूल चुके थे। उनकी क़तार सड़कों और बस्तियों में अन्य मजदूरों के शामिल होते रहने की वजह से लम्बी होती चली गई थी, जब वे भगाचे पुल से नहर पार कर विक्टियोरे के सामने पहुँचे तो उनकी तायदाद दो हजार तक पहुँच चुकी थी। लेकिन तीन बज चुका था और सभी खान के ऊपर आ चुके थे। खान में, नीचे एक आदमी भी नहीं था। उन्होंने अपनी यह निराशा व्यर्थ की धमकियों में व्यक्त की। वे सिर्फ टूटी हुई ईंटें ही उस मजदूरों पर बरसा सके जो कि जमीन काटने की अपनी ड्यूटी पर आये थे। भीड़ का एक रेला उधर गया और खान पर उनका अधिकार हो गया। गद्दारों को पीटने के लिए उन्हें न पाकर, गुस्से में, वे सामान नष्ट करने लगे।

ओमारे के पीछे लाँतिये ने कुछ कुलियों को एक वैगन में कोयला भरते देखा।

'क्या तुम इस स्थान को खाली न करोगे?' लाँतिये जोर से चिल्लाया। 'एक टुकड़ा कोयला बाहर नहीं जायगा!'

उसके आदेश से कुछ सौ हड़ताली उपर दौड़ पड़े और कुलियों को मुश्किल से भागने का मौका मिला। उन्होंने घोड़ों को खोल डाला और डरा कर उन्हें भगा दिया। अन्य लोगों ने कोयले का वैगन उलट कर शेफ्ट को तोड़ डाला।

लेवक्यू अपनी कुल्हाड़ी से पायदानी पर चढ़कर सीढ़ियाँ काटने लगा। जब उसने देखा कि लोहे के डंडों से इस कार्य में बाधा पड़ रही है तो उसने उन्हें उखाड़ना शुरू किया। जल्दी ही समूचा गिरोह, विशाल जन-समुदाय, काम में जुट गया। माहे ने अपने हाथ की छड़ से उत्तोलन दण्ड का काम लेते हुए धातु की कुर्सियों को फेंकना शुरू किया। इस बार मदर ब्रूली औरतों को ले गई और लैंप केबिन में धावा बोल दिया गया। माहेदी भी क्रोधावेश में लेवक्यू की औरत की भाँति करने लगी थी। सभी तेल में भीगी हुई थीं। माकेटी ने अपने स्कर्ट से ही हाथ पोंछे और अपने को इतनी गंदी पाकर हँसने लगी। जॉली ने मजाक के रूप में एक लैंप से उसकी गर्दन में तेल उड़ेल कर खाली कर दिया था। लेकिन इस सब प्रतिशोध में उन्हें कोई खाने की वस्तु नहीं मिली। उनके पेटों में आग लगी थी और अब भी चीख मची हुई थी।

'रोटी ! रोटी ! रोटी !'

विक्टियरोरे का एक भूतपूर्व कप्तान बगल में ही एक स्टाल खोले हुए था। इसमें संदेह नहीं कि वह डर के मारे भाग गया था क्योंकि शेड खाली पड़ा था। जब औरतें लौटी तो पुरुष रेलवे को नष्ट करने का काम निबटा चुके थे। वे स्टाल पर टूट पड़े। उस की खिड़कियाँ जल्दी ही टूट गईं। परन्तु उन्हें वहाँ रोटी नहीं मिली, वहाँ सिर्फ कच्चे गोश्त के दो टुकड़े और आलू का एक बोरा था। लेकिन इस लूट में उनके हाथ जिन की लगभग पचास बोतलें लगीं। वे इस प्रकार गायब हो गईं जैसे बालू में एक बूंद पानी।

लॉतिये ने अपना टिन खाली कर उसे फिर भर लिया। धीरे-धीरे नशा, भूखे व्यक्ति का नशा, उसकी आँखों को प्रज्ज्वलित कर रहा था और वह एक भेड़िये की भाँति अपने पीले चेहरे से दाँत दिखा रहा था। एकाएक, उसे ख्याल आया कि चवाल इस कोलाहल के बीच कहीं खिसक गया है। वह गालियाँ बकने लगा और लोग भगोड़े को पकड़ने दौड़े, जो कि कैथाराइन के साथ तख्तों के एक ढेर के पीछे छिपा हुआ था।

'आह ! गंदे सूअर; तुझे डर है कि तू संकट में पड़ जायगा ?' लॉतिये चीखा, 'तूने ही तो जंगल में कहा था कि इंजनमैन हड़ताल कर दें, पंप बंद कर दिये जाँय, और अब तू ही हमारे साथ गन्दी चालबाजी खेलना चाहता है। भगवान कसम ! हम गेस्टन मेरी वापस जायंगे। तुझे पंप नष्ट कर देना होगा; हाँ, भगवान कसम ! तेरे हाथों वह नष्ट होगा !'

वह नशे मे था, वह अपने साथियो को उसी पंप को नष्ट करने को कह रहा था जिसे उसने कुछ घंटे पहले बचाया था।

'गेस्टन-मेरी को ! गेस्टन-मेरी को !'

वे सभी उस ओर दौड़ पड़े और चवाल को कंधे मे पकड़कर जोरों से उस ओर धकेला जाने लगा। वह बराबर कह रहा था कि उसे नहाने की छुट्टी दी जाय।

'तू जाती है कि नहीं ?' माहे दौड़ती हुई कैथराइन पर बिगड़ा। इस बार वह पीछे नही हटी, उसने अपनी जलती हुई आँखें अपने बाप की ओर डालीं और दौड़ती रही।

एक बार फिर उन्होंने चौरस मैदान को रौंदा। वे लम्बे, सीधे मार्गों और अनन्त तक फैले हुए खेतों को पार करते हुए चले जा रहे थे। चार बज रहा था। सूर्य क्षितिज पर पहुँच चुका था और उसकी किरणों से इस जमी हुई धरती में पड़ने वाली लम्बी छायायें भयावह मुद्रायें बना रही थीं।

मोंटसू से न गुजरना पड़े इसलिए उन्होंने पायोलेन की बगल से रास्ता काटा। ग्रीगोरे का परिवार बाहर गया हुआ था। हनेव्यू परिवार में भोजन करने और वहीं से सिमिल को लिवा लाने से पहले वे एक वकील के पास गए हुए थे। जमींदारी सुनसान प्रतीत होती थी। उसके नीबुओं का बाग और रसोई वाला बगीचा टंड से उजड़ सा गया था। घर में कोई भी जाग्रत प्राणी प्रतीत नहीं होता था। बिना वहाँ ठहरे, जुलूस ने दीवार का बचाव करने वाली, आर-पार लगी लोहे की छड़ों से इस इमारत की ओर एक उदास नजर डाली। फिर नारा उठा :

'रोटी ! रोटी ! रोटी !'

उसका उत्तर भयानक रीति से भौंकते हुए कुत्तों ने दिया। बंद खिड़कियों के पीछे से सिर्फ नौकर-चाकर ही, भय से पसीने-पसीने और पीले पड़े हुए इन जंगलियों को गुजरते देख रहे थे। पास की एक खिड़की के काँच पर बाहर से फेंके गए एक ढेले की आवाज से उनके प्राण सूख गए और वे घुटनों के बल इस प्रकार गिरे मानो किसी ने उन्हें गोली मार दी हो। यह जॉली की शरारत थी, उसने सुतली से ढेलबाँस बनाकर ग्रीग्रोरे के मकान की ओर एक ढेला फेंका था। फिर वह अपना सींघ बजाने लगा था और जुलूस दूर निकल गया था। उनकी आवाज अब धीमी पड़ गई थी : 'रोटी ! रोटी ! रोटी !'

वे और भी अधिक संख्या में गेस्टन-मेरी पहुँचे। ढाई हजार से अधिक पागलों का जुलूस हर चीज को नष्ट करता हुआ, हर चीज को बहाता-सा उस तेज धारा की भाँति बह रहा था जो बहते-बहते और जोर पकड़ती है। पुलिस यहाँ से एक घंटा पेश्तर जा चुकी थी और कुछ किसानों के बताने के मुताबिक सेंट-टामस की ओर गई थी; जल्दबाजी में उन्होंने चंद सिपाहियों को यहाँ खान की हिफाजत के लिए भी नहीं छोड़ा था। पन्द्रह मिनट से भी कम समय में आग बुझा दी गई, बायलर नष्ट कर दिये गए और इमारतें नीचे गिरा कर ध्वस्त कर दी गईं। परन्तु उन्हें पंप को नष्ट करना था। उसे बंद कर ही उन्हें संतोष नहीं हुआ, उस पर ऐसे टूट पड़े जैसे किसी जीवित प्राणी की जान लेना चाहते हों।

एक हथौड़ा चवाल के हाथ में देते हुए लॉतिये बोला, 'पहला प्रहार तुम्हारा होगा। आओ ! तुमने भी दूसरों के साथ कसम खाई है।

चवाल काँपता हुआ पीछे हटा और इस धक्का-धुक्की में हथौड़ा नीचे गिर पड़ा, जब कि अन्य लोगों ने, बिना रुके, लोहे की छड़ों, ईंटों और जो हाथ में आया उसके प्रहार से इंजन को तोड़ डाला। कुछ लोगों ने तो उसके ऊपर लकड़ियाँ पटक-पटक कर तोड़ीं। उसके इस्पात और ताँबे के टुकड़े निर्जीव अवयवों की भाँति बिखर कर नष्ट हो गए।

यह सब समाप्त करने के बाद भीड़ लॉतिये के पीछे-पीछे दीवानी होकर चली। लॉतिये ने चवाल को मुक्त नहीं किया।

'मार डालो ! गद्दार है ! शेफ्ट की ओर ! शेफ्ट की ओर !'

वह अपनी सफाई की जिद पर गिड़गिड़ाता हुआ मुक्ति की कोशिश कर रहा था।

लेवक्यू की औरत बोली, 'ठहरो ! यह रही बाटली !'

वहाँ एक तालाब था। जिसमें पंप से छना पानी आता था। वह बरफ की मोटी तह से सफेद पड़ गया था। उन्होंने उस पर चोट कर बरफ तोड़ डाली और उसे अपना सिर उसमें डुबोने को बाध्य किया।

'डुबो सिर,' मदर ब्रूली बोली, 'अगर तूने सिर न डुबोया तो भगवान कसम ! हम तुझे इसी में डुबा देंगे। और अब तुझे इसे पीना भी होगा, एक जानवर की तरह अपना मुँह इसमें डुबोते हुए।'

उसे हाथों को टिका कर उसी प्रकार पानी पीना पड़ा। वे सभी क्रूर हँसी हँस रहे थे। एक औरत ने उसका कान खींचा, दूसरी ने रास्ते से ताजा गोबर उठा कर उसके मुँह पर दे मारा। उसकी पुरानी जाकेट उसकी रक्षा नहीं कर पा रही थी। उसने भागने की कोशिश की। माहे ने उसे धकेला। उसके साथ क्रूर व्यवहार करने वालों में माहेदी भी थी जो अपना पुराना बदला ले रही थी। माकेटी भी, जो अपने पुराने प्रेमियों के प्रति हमेशा मेहरबान रहती थी, इसके प्रति बेहद नाराज हो चली थी और उसे निकम्मा करार देते हुए यह देखने के लिए उसकी ब्रजिम उतारने की बात कह रही थी कि क्या वह अब भी मरद है ?

लॉतिये ने उसे अपनी जबान रोकने के लिए डाँटा। 'बस, काफी हो गया। इसकी अब जरूरत नहीं। अगर तुम चाहो तो तुम हमेशा के लिए इसका फैसला कर सकती हो।'

उसकी मुट्ठियाँ बँधी हुई थीं, उसकी आँखों में खून उतर आया था; उसका नशा हत्या की इच्छा में बदल रहा था।

कैथराइन, निर्जीव सी, डरी हुई उसकी ओर ताक रही थी। वह उसकी उस बात का स्मरण कर रही थी कि जब वह पी लेता है तो तीसरे गिलास के बाद उसकी इच्छा किसी मनुष्य को मार डालने की होती है। उसके शराबी माता-पिता ने उसके शरीर में इतना जहर घोल दिया था कि वह उसे सहन नहीं कर पाता था। एकाएक वह आगे झपटी और अपने दोनों हाथों से उसे पीटती हुई घृणा से उसके मुँह पर चिल्लाने लगी :

'कायर ! कायर ! कायर ! क्या इतना काफी नहीं है, और फिर यह सब बेइज्जती ? वह अब सीधा खड़ा भी नहीं हो सकता और तुम उसकी हत्या करना चाहते हो ।'

वह अपने माता-पिता और अन्य लोगों की ओर मुड़ी ।

'तुम सब कायर हो ! कायर ! तब, मुझे भी इसी के साथ मार डालो । मैं तुम्हारी आंखें बाहर निकाल लूंगी, अगर किसी ने इसे छुआ तो । ओह ! कायर कहीं के ।'

और वह अपने प्रेमीको बचाने के लिए उसके आगे खड़ी हो गई । उसके मुक्कों को, अपने कष्टमय जीवन को भूल कर वह इस विचार से आन्दोलित थी कि चूंकि उसने उसे भोगा है इसलिए वह उसकी है और उसके सामने उसकी इस प्रकार हत्या उसके लिए लज्जा की बात है ।

लांतिये इस लड़की के मुक्कों से पस्त-सा पड़ गया । पहले तो उसने सोचा कि वह उसे पटक दे, परन्तु बाद में उसने अपने नशे से चेतन-सा होते हुए अपना मुंह पोंछा और गहरी चुप्पी के बीच चबाल से बोला :

'वह ठीक कहती है; बहुत हो गया । तुम जा सकते हो ।'

तत्काल चबाल निकल भागा और कैथराइन भी उसके पीछे-पीछे दौड़ी । भीड़ उन्हें सड़क के भीड़ में अदृश्य होने तक देखती रही । लेकिन माहेदी बोली :

'तुमने गलत काम किया, उसे रोकना चाहिए था । वह कोई गद्दारी पर तुला हुआ है ।'

लेकिन भीड़ फिर चलने लगी । पांच बज रहा था । क्षितिज के छोर पर सूर्य आग के अंगारे के समान लाल नजर आता था । एक बटोही ने, जो वहां से गुजर रहा था, उन्हें सूचित किया कि फौज क्रेवेक्योर की ओर से नीचे उतर रही है । तब वे मुड़ गए । एक आदेश हुआ :

'मोंटमू की ओर ! मैनेजर के यहां ! — रोटी ! रोटी ! रोटी !'

५

अपने अध्ययन कक्ष की खिड़की के सामने बैठा हुआ एम० हनेब्यू बग्घी में बैठ कर मार्सेलीज जाती हुए अपनी पत्नी को देखता रहा । उसकी आंखें बग्घी के पीछे घोड़े पर जाते हुए निग्रील का अनुसरण कर रही थीं । फिर वह चुपचाप लौट कर डेस्क के सामने बैठ गया । जब उसकी औरत और निग्रील में से कोई भी घर पर नहीं रहता था तो घर खाली-खाली मालूम पड़ता था । उस दिन कोचवान उसकी औरत के साथ गया था । नयी नौकरानी, उस रोज पांच बजे शाम तक छुट्टी

लेकर बाहर गई थी; सिर्फ हिपोलेट और रसोई बनाने वाली घर में थे। इस सूने घर में एम० हनेब्यू ने महत्वपूर्ण काम खत्म कर डालने का निश्चय किया था।

नौ बजे सुबह हिपोलेट ने डेनार्ट के आने की सूचना दी, गोकि उसे आदेश यह था कि वह कोई भी आये उसे वापस भेज दे। डेनार्ट खबर लाया था और मैनेजर को पहली बार पिछली सन्ध्या को जंगल में हुई बैठक की सूचना मिली, उसकी विस्तृत बातें अति महत्व की थीं इसलिए वह उन्हें सुन रहा था और पेरीन के साथ कप्तान के गुप्त सम्बन्ध के बारे में सोच रहा था। यह बात इतनी जाहिर थी कि सप्ताह में उसे कप्तान की हरकतों के बारे में दो या तीन गुमनाम पत्र मिला करते थे। जाहिर है कि उसके मरद ने और पेरी की पत्नी ने भी इसमें कहा होगा। उसने इस मौके का लाभ उठाते हुए बड़े कप्तान को यह जाहिर कर दिया कि वह सब बातें जानता है लेकिन किसी बड़े घोटाले के डर से चुप बैठा है। अपनी रिपोर्ट के बीच, अपने ऊपर तोहमत आते देख हेड कप्तान चौंका। अपने गुप्त सम्बन्ध से इन्कार करता हुआ बहाने बनाने लगा, जब कि उसकी लम्बी नाक सूर्ख होकर उसके जुर्म को स्वीकार कर रही थी। उसने इतने सस्ते निबट जाने की खुशी में ज्यादा विरोध भी नहीं किया क्योंकि वह जानता था कि जब कभी कोई कर्मचारी खान की किसी लड़की के साथ ऐसे मामले में फँसा होता है तो मैनेजर उससे बड़ी सस्ती में पेश आता है। हड़ताल के बारे में उनकी बातचीत जारी रही : 'जंगल की बैठक उन उपद्रवियों का दिखावा मात्र है, कोई गम्भीर खतरे की बात नहीं। कुछ भी हो आज सुबह फौजी टुकड़ी जो चक्कर मार गई है उससे कुछ दिनों तक तो बस्तियों को सिर उठाने का मौका नहीं रहेगा, इसमें सन्देह नहीं।'

जब एम० हनेब्यू फिर अकेला रह गया तो एक बार उसका विचार हुआ कि राज्याधिकारी को एक तार भेज दे। अनावश्यक चिन्ता दिखाने का भय उसे रोक रहा था। वह अपनी इस अदूरदर्शिता के लिए पश्चाताप कर रहा था कि उसने हर जगह कहा है और डाइरेक्टरों तक को लिखा है कि हड़ताल एक पखवारे से ज्यादा नहीं चलेगी। उसे आश्चर्य था कि यह दो महीने से चलती आ रही है; इसी चिन्ता और निराशा में वह दिन ब दिन घुलता चला जा रहा था और कोई ऐसी खूबसूरत तिकड़म सोच रहा था कि वह डाइरेक्टरों की निगाह में फिर ऊँचा चढ़ जाय। किसी सम्भावित भिड़न्त की स्थिति में उसने अभी हाल में डाइरेक्टरों को आदेश के लिए लिखा था। उत्तर मिलने में विलम्ब हो

गया था और वह दोपहर की डाक तक उसके प्राप्त होने की उम्मीद कर रहा था। उसने स्वतः कहा कि तब तार भेजने के लिए और खानों में सैनिक अधिकार के लिए समय तो रहेगा ही। उसकी राय में संघर्ष और खून-खराबी होने की पूरी-पूरी आशंका थी। वह हिम्मतवर होने पर भी अपनी जिम्मेदारी से अधिक चिन्तित था।

ग्यारह बजे तक वह शांति से काम करता रहा। उसके बाद उसके पास एक-एक कर सन्देशवाहक आने लगे। पहले ने मोंटमू के हड़तालियों द्वारा जीनबर्ट में धावा बोले जाने की सूचना दी। दूसरे ने तार काटने, आग बुझाने और हर चीज नष्ट किये जाने की खबर बताई। वह कुछ भी नहीं समझ पाया कि कम्पनी की किसी खान में धावा बोलने के बजाय हड़ताली डेन्यूलिन के यहाँ क्यों गए? अलावा इसके, वण्डामे के नष्ट किये जाने की खबर उनके लिए अच्छी थी क्योंकि इसमें उनकी विजय की योजना परिपक्व हो सकेगी जिसे वह बहुत लम्बे अर्से से बना रहा था। दोपहर को उसने अकेले ही अपने बड़े डाइनिंग-रूम में भोजन किया। यह एकान्त उसे और खल रहा था, वह दिल में बड़ी उदासी महसूस कर रहा था। इसी समय एक कप्तान दौड़ता हुआ आया और उसने उपद्रवी भीड़ के मिराओ प्रयाण की सूचना दी। इसी समय, एक टेलीग्राम में उसे सूचना मिली कि मेडेलेन और क्रीवेक्योर को भी खतरा है; तब उसकी चिन्ता बेहद बढ़ गई। वह दो बजे पोस्टमैन के आने की उम्मीद में था: 'क्या उसे तत्काल फौज मँगानी चाहिए? या धैर्य के साथ इन्तजार करना और जब तक डाइरेक्टरों के आदेश न मिल जाँय तब तक कोई कार्रवाई न करना बेहतर होगा?' वह पुनः अध्ययन कक्ष में चला गया, वह उस रिपोर्ट को पढ़ना चाहता था जिसे पिछले दिन उसने निग्रील से राज्याधिकारी के नाम तैयार करने को कहा था। लेकिन वह उसे नहीं मिली; उसने सोचा शायद नवयुवक अपने कमरे में ही भूल गया होगा, जहाँ अक्सर वह रात को लिखा करता था और बगैर कोई निश्चय किये, रिपोर्ट के विचार से प्रेरित वह जीने पर चढ़ गया और उसके कमरे में पहुँचा।

वहाँ पहुँचने पर एम० हनेब्यू को आश्चर्य हुआ कि कमरे की सफाई नहीं की गई। इसमें संदेह नहीं कि यह हिपोलेट का भुलक्कड़पन या सुस्ती थी। वहाँ पिछले रात की बंद हवा और गरमी में नमी थी जिसे, गरम हवा का स्टोव, जो खुला छोड़ दिया गया था और भी भारी बना रहा था। इत्र की तीव्र गंध उसे बेचैन बना रही थी जिसे वह सोचता था कि बेसन में भरे स्नान के पानी से यह खुशबू आ रही होगी। कमरा बड़ा अस्तव्यस्त था—चारों ओरकपड़े बिखरे पड़े थे। गीली तौलिया कुर्सी की पीठ पर पड़ी थी। बिस्तर अस्तव्यस्त था और चादर घिसट कर कालीन तक

चली आई थी। पहले तो उसने एक सरसरी निगाह इस ओर डालते हुए टेबल पर पड़े कागजों के ढेर में खोई रिपोर्ट खोजने की कोशिश की। दो बार, एक-एक कर सभी कागज देख डालने पर भी उसे रिपोर्ट नहीं मिली। तब कहाँ उस पागल पाल ने उसे रख दिया है ?

और जब, एम० हनेब्यू फिर कमरे के बीच में पहुँचा तो वहाँ रखे गए फर्नीचर की हर वस्तु पर निगाह दौड़ाने पर उसे बिस्तर में एक तारे की भाँति चमकती कोई चीज दिखाई दी। वह उत्सुकतावश पहुँचा और उसे हाथ में उठा लिया। वह एक छोटी सी सोने की सेंट-बोतल थी, जो चादर की दो तहों के बीच लिपटी थी। उसने तत्काल पहचान लिया कि यह सेंट-बोतल मदाम हनेब्यू की है, इस छोटी सी इत्र की बोतल को वह हमेशा साथ रखती है। पर वह यह नहीं समझ पाया कि यह बोतल यहाँ कैसे आ गई। यह कैसे पाल के बिस्तर तक पहुँच गई ? एकाएक उसका दिमाग भन्ना उठा और वह पीला पड़ गया। उसकी औरत यहाँ सोई थी !

'माफ कीजियेगा, सर!' हिपोलेट ने दरवाजे से झाँकते हुए कहा, 'मैंने देखा आप आ रहे है।'

नौकर ने अन्दर आकर देखा कि कमरा अस्तव्यस्त पडा है, वह इसे देखकर बड़े पसोपेश में पड़ गया।

'हे ईश्वर ! क्या, कमरा साफ नहीं हुआ ! तो रोज सारे घर का काम मेरे कंधों पर छोड़ कर बाहर चली गई है !'

'क्या चाहते हो तुम ?'

एम० हनेब्यू ने बोतल को हाथ से छिपा लिया था और उसे जोरों से दबा रहा था।

'दूसरा आदमी आया है, सर ! क्रेवेक्योर से चिट्ठी लेकर !'

'अच्छा ! तुम जाओ, उससे इन्तजार करने को कहो।'

उसकी औरत यहाँ सोई थी ! जब उसने कमरे में सिटकनी चढा ली तो उसने फिर अपना हाथ खोला और उस बोतल को गौर से देखने लगा जिससे उसके हाथ में लाल अक्स खिच आया था। एकाएक उसके दिमाग में सभी बातें घूम गईं; यह व्यभिचार इस मकान मे महीनों से चल रहा है। उसे पिछले संदेह और दरवाजे के पास से किसी के नंगे पाँव गुजरने की बात याद आई। हाँ, यह उसकी औरत ही रही होगी जो ऊपर यहाँ सोने आई होगी !

बिस्तर की दूसरी ओर पड़ी कुर्सी पर गिरकर वह शून्य की ओर इस प्रकार टकटकी बाँधे देखता रहा मानो वह कुचल गया हो। कुछ क्षण इसी प्रकार

बीतने पर, दरवाजे पर किसी के खटखटाने से उसकी तंद्रा टूटी, वह उसे खोलने की कोशिश कर रहा था। नौकर की आवाज उसने पहचान ली।

'सर—ओह ! आप कमरे मे बंद है, सर !'

'अब क्या बात है ?'

'वे लोग जल्दी मचा रहे है, मजदूर हर चीज नष्ट किये जा रहे है, दो संदेश-वाहक नीचे है। कुछ तार भी आये है।'

'मुझे थोड़ी देर अकेला छोड़ दो ! मैं सीधे वहीं आ रहा हूँ।'

इस विचार ने, कि अगर हिपोलिट सुबह इस कमरे मे आया होता तो उसे यह सेंटकी बोतल मिलती, उसे स्तम्भित कर दिया। और अलावा इसके, यहव्यक्ति अवश्य जानता होगा, बीसियों बार व्यभिचार के बाद उसने बिस्तर को गरम पाया होगा, तकिये से लिपटे मदाम के बाल पाये होंगे और कपड़े को भिगोते हुए घृणित चिन्ह पाये होंगे। यह व्यक्ति, जो बराबर उसके यहाँ रुकने मे खलल डाल रहा है, संभव है उत्सुकतावश बाहर खड़ा हो। शायद वह अपने मालिको के व्यभिचार से उत्तेजित दरवाजे से कान लगाये बाहर खड़ा रहता हो !

एम० हेनब्यू वहीं बैठा अब भी बिस्तर की ओर आखें गड़ाये था। उसके दाम्पत्य जीवन की पिछली परेशानियां, और उलझने एक के बाद एक चलचित्र की भांति उसके आगे से गुजरने लगी। उसकी उस औरत के साथ शादी, दोनो का मनोमालिन्य और परिवारिक कटुता, उसके प्रेमी, जिन्हे वह उससे छिपाये रही और उसका वह प्रेमी जिसे वह दस वर्षो तक इस प्रकार बरदाश्त करता रहा जैसे कोई बीमार औरत के चिड़चिड़ेपन को सहन करता है। तब उनका मोटसू आना, उसे सुधारने की झूठी आशा, महीनो की जिन्दगी मे बेजारी और वृद्धावस्था का आगमन जो शायद, अन्त मे उसे उसकी बना दे। तब उनके भतीजे का पदार्पण, यह पाल, जिसकी वह माँ बन गई और जिससे वह अपने हमेशा के लिए राख के नीचे दफना दिये गए टूटे दिल की बात बताती थी। और, वह एक बेवकूफ पति की भांति अंधकार में ही रहा ! वह इस औरत को अपनी पत्नी मानकर प्यार करता रहा, जिसे दूसरे लोग भोगते रहे। परन्तु अकेला वही ऐसा अभागा रहा जो उसे न भोग सका। वह उसे शर्मीली तीव्र कामना से प्यार करता था और अगर उसने दूसरे लोगों को छोड़ दिया होता तो वह उसके कदमों को चूमने के लिए तैयार था ! लेकिन औरों को छोड़ने के बाद उसने इस नवयुवक को पकड़ा।

इसी क्षण दूर से घंटी बजने की आवाज से वह चौंका। उसने उसे पहचान लिया; उसके आदेश से, पोस्टमैन के पहुँचने पर उसे बजाया गया था। वह उठा और अपने भर्राये गले से बड़े जोरों से बोल उठा :

'ओह ! भाड़ में जाँय उनके तार, भाड़ मे जाँय उनके पत्र ! मुझे उनकी रत्ती भर परवाह नहीं ! रत्ती भर परवाह नहीं !'

अब वह क्रोधावेश में आ गया। वह किसी परनाले की आवश्यकता महसूस कर रहा था, जिसमें वह इस सब गंदगी को अपने जूतों की ठोकर से फेंक डाले। 'यह औरत एक वाहियात औरत है, और वह उसके लिए कटुतम सज्ञा सोचने लगा। एकाएक उसे पाल और सीसिल की शादी का ध्यान आया जिसे वह इतनी खुशी-खुशी करा रही थी, इससे उसका गुस्सा चरम सीमापर पहुँच गया। तब, इसमें कामुकता की भावना या इसकी तह में ईर्ष्या की भावना नहीं ?.यह महज एक खिलवाड़ है, एक औरत की आदत है, स्वादिष्ट मनोरंजन है ! और, वह सारा उत्तरदायित्व उसकी औरत पर डाल रहा था जिसने इस लड़के को उसकी चढ़ती हुई जवानी में डसा था जैसे कोई रास्ते से चुराकर कच्चा सेब खा जाता है। वह किसे डसेगी, किसके ऊपर गिरेगी यह कोई नहीं जानता जबकि वह अपने भतीजों तक को नहीं छोड़ती ?

दरवाजे पर किसी व्यक्ति ने डरते हुए थाप दी और हिपोलेट चाबी वाले छेद से धीमे से बोला :

'पोस्टमैन, मर ? और मोशिये डेनार्ट भी वापस आकर बता रहे है कि वे एक दूसरे की हत्या कर रहे है।'

'मै नीचे ही आ रहा हूँ, हे ईश्वर !'

तब, वह उनके लिए क्या करे ? मार्शेनीज से लौटने पर उन्हें गंदे जानवरों की तरह खदेड़ कर भगा दिया जाय, उन्हे वह अपने बाडे मे नहीं रखना चाहता ? वह एक सोंटा लेकर उन्हे कह देगा कि वे अपने विषाक्त जोड़ों को अन्यत्र ले जाँय। उन्हीं के उछ्वासों से, उन्ही की मिली-जुली साँसों से, इस कमरे की नम गरमी-बोझिल हुई है; तीव्र गंध जो उसकी नाक मे घुस कर घुटन सी-पैदा कर रही थी उसकी औरत द्वारा इस्तेमाल किये जाने वाले इत्र की थी जो उसकी एक और वाहियात अभिरुचि थी। उसे ऐसा लग रहा था मानो वह गन्धर्व रति की गरमी और गंध महसूस कर रहा हो। उसके आसपास के तमाम बर्तनों, भरे हुए बेसिन, अस्त-व्यस्त फर्नीचर से वह तात्कालिक व्यभिचार का अहसास सा करता हुआ सम्पूर्ण कमरे को व्यभिचार-पूर्ण अनुभव रहा था। अपनी पुंसत्वहीनता के क्रोध से वह बिस्तर पर गिरपड़ा और उन स्थानों को अपनी मुट्ठियोंसे कूटने लगा जहाँ उसे दो शरीरों के निशान से दिखाई दे रहे थे। अस्तव्यस्त तकियों और मुड़ी हुई चादर को वह अपने प्रहारों से रात्रि के आलिंगन-चुम्बन के लिए दण्डित करना चाहता था।

एकाएक उसे अहसास हुआ कि हिपोलेट फिर ऊपर आ रहा है; वह शर्म के मारे रुक गया। एक क्षण वह काँपता हुआ उठ खड़ा हुआ, अपने माथे का पसीना पोंछता हुआ वह अपने दिल की तेज धड़कन क थामने का प्रयास करने लगा। एक शीशे के सामने खड़े हो उसने अपने चेहरे को देखा। इतना बदल गया था वह कि स्वयं अपने को नहीं पहचान पा रहा था। तब, बराबर चेहरा देखते रहन के बाद आत्मदमन से उसने अपने को सुव्यवस्थित किया और सीढ़ियों से उतर कर नीचे चला गया।

डेनार्ट को छोड़कर पाँच संदेशवाहक नीचे खड़े थे। सभी खनिकों के खानों की ओर प्रयाण करने से स्थिति के गंभीर रूप से बिगड़ने की खबरें लाये थे। बड़े कप्तान ने पूरे ब्योरे के साथ उसे बताया कि मिराओ में क्या हुआ और फादर क्वेनडे ने कैसा शानदार आचरण दिखाया ? वह अपना सिर हिलाता हुआ सुन रहा था, परन्तु कोई बात उसकी समझ में नहीं आती थी; उसके विचार ऊपर वाले कमरे में थे। अन्त में उसने उन्हें विदा किया और कहा कि वह समुचित कार्रवाई करेगा। जब फिर वह अकेला रह गया, डेस्क के सामने बैठा हुआ वह थकान और निद्रा सी महसूस कर रहा था। अपने दोनों हाथों के बीच सिर दबाये वह आँखें बंद किये रहा। उसकी डाक वहाँ रखी थी, उसने डाइरेक्टरों से मिलने वाले संभावित उत्तर के लिए उसे देखने का निश्चय किया। पहले उसकी लाइनें उसके सामने नाचने लगीं, परन्तु बाद में उसकी समझ में आ गया कि डाइरेक्टर लोग संघर्ष चाहते हैं। उन्होंने यह आदेश तो नहीं दिया था कि स्थिति को और खराब बनाया जाय परन्तु, इसमें संदेह नहीं कि उन्होंने जोरदार दमन द्वारा गड़बड़ी और बढ़ाने और हड़ताल का जल्दी फैसला करने की इच्छा जाहिर की थी। इसके बाद उसने अधिक विलम्ब न कर चारों ओर तार भेज दिये—लिली के राज्याधिकारी को, डोआई की सैन्य टुकड़ी को और मार्शेनीज की पुलिस को। उसे तसल्ली मिली। अब सिवाय वहाँ बंद रहने के और कोई काम तो था नहीं। उसने यह अफवाह भी फैला दी कि वह गठिया से परेशान है। दोपहर भर वह अपने अध्ययन कक्ष में छिपा रहा, सबसे मिलना-जुलना बंद रख वह लगातार आने वाले तारों को ही पढ़कर संतोष कर ले रहा था। इस प्रकार वह जुलूस का बहुत दूर से पीछा कर रहा था, मेडेलेन से क्रेवेक्योर, क्रेवेक्योर से विविटयारो और विविटयारो से गेस्टन-मेरी। उसे सूचना भी मिली कि पुलिस और फौज का आतंक है। सड़कों पर निरुद्देश्य भटकते हुए हड़ताली उन खानों से भाग निकलते है जहाँ वे हमला कर चुके हैं। वे एक दूसरे की हत्या कर सकते है, हर चीज नष्ट कर सकते है ! उसने पुनः अपना सिर दोनों हाथों के बीच लेते हुए अपनी आँखों पर अंगुलियाँ फेरीं और

उस सूने घर की खामोशी में डूब सा गया, जहाँ सिर्फ यदाकदा संध्या के भोजन की तैयारी की खटर-पटर सुनाई दे रही थी।

द्वाभा से कमरे में अँधेरा-सा छाने लगा था; लगभग पाँच बजे एम० हनेब्यू एक गड़बड़ी से चौंक-सा उठा और उसने परेशान-सा हो अपनी कुहनियाँ मेज के कागजों मे टिका दीं। उसने सोचा कि वे दो कुकर्मी आ रहे होंगे। लेकिन कोलाहल बढ़ता ही गया और जब वह खिड़की के करीब जाने लगा तो बाहर एक जोरों का नारा सुनाई दिया।

'रोटी ! रोटी ! रोटी !'

यह हड़ताली थे जो अब मोंटमू में धावा बोल रहे थे, जब कि पुलिस बोरो में हमला होने के अंदेशे मे, उसे बचाने के लिए विपरीत दिशा में तेजी से बढ़ रही थी।

तभी, पहले मकानों से दो किलोमीटर दूर, चौराहे से थोड़ा उधर, जहां मुख्य सड़क वण्डामे रोड से मिलती थी, मदाम हनेब्यू और उसके साथ की नवयुवतियों ने भीड़ को अपने आगे से गुजरता देखा। मार्सेनीज मे दिन बड़े आनन्द के साथ कटा था, फोर्जेज के मैनेजर के साथ दोपहर का भोजन बड़ा आनन्ददायक रहा। दोपहर मे कारखानों और पड़ोस के कांच के बर्तनों के कारखाने का निरीक्षण भी पुरलुत्फ रहा; और जब वे जाड़े के इस खुशनुमा दिन की संध्या बेला मे घर लौट रहे थे तो सड़क के किनारे एक छोटे से फार्म को देखकर सीसिल को एक गिलास दूध पीने की धुन सवार हुई। वे सभी वग्घी से उतर पड़े और निग्रील भी फुर्ती के साथ घोड़े से कूद पड़ा; जबकि किसान की औरत इन सम्भ्रान्त लोगों को आया देख दूध देने से पहले कोई कपड़ा बिछाने की बात कहती हुई इधर-उधर हड़बड़ा कर भागने लगी। लेकिन लूसी और जेनी गाय दुहते देखना चाहती थी इसलिए वे अपने कप हाथ मे लिए मवेशियों के बाड़े मे चली गईं और गाँव की सैर का आनन्द लेती हुई भूसे के ढेर मे लेट कर धीरे-धीरे हँसने लगी।

मदाम हनेब्यू अपने मातृवत स्नेह से अपने होठों के किनारे को कप मे डुबोती दूध की चुमकी-सी ले रही थी जबकि एक विचित्र घर्राटे का शब्द उन्हें सुनाई दिया।

मदाम ने विचलित हुए बगैर पूछा: 'यह क्या है ?'

सड़क के किनारे बने मवेशी बाड़े का एक बड़ा दरवाजा गाड़ी रखने के लिए था, जो पुआल रखने के इस्तेमाल में भी आता था। लड़कियाँ अपने सिर बाहर निकाल कर बाँई ओर से आती हुई काली बाढ़ को देख कर आश्चर्य कर रही थी, यह चिल्लाता हुआ जन-समुद्र वण्डामे रोड पर बढ़ रहा था।

'कहीं लड़ाई हो रही है, ऐसा लगता है,' निग्रील ने बाहर निकलते हुए कहा।

'शायद खनिक फिर आ रहे हैं?' किसान की औरत बोली। 'आज यह दूसरी बार ये गुजर रहे हैं। लगता है स्थिति ठीक नहीं चल रही है; ये देश के मालिक हैं!'

वह हर शब्द को बड़े गर्व के साथ कह रही थी और उनके चेहरे पर उसके प्रभाव को पढ़ने की कोशिश कर रही थी। जब उसने देखा कि वे सब डर गए हैं और इस मुठभेड़ से भारी चिन्ता में पड़ गए हैं तो वह जल्दी से बात बदल कर बोली :

'ओह, दुष्ट लोग! दुष्ट लोग!'

निग्रील ने यह देखते हुए कि उनकी बग्घी तक पहुँच कर मोंटमू पहुँचने में अब विलम्ब हो गया है तो उसने कोचवान को बग्घी आहाते के भीतर ले आने का आदेश दिया ताकि ओसारे के पीछे वह छिपी रह सके। जब वह लौट कर आया तो उसने अपनी चाची और लड़कियों को भयत्रस्त पाया, जो किसान औरत की राय के मुताबिक उसके घर में छिपने के लिए उसके पीछे जाने को तैयार थीं। लेकिन उसकी राय हुई कि वे जहाँ हैं वहीं अधिक सुरक्षित हैं क्योंकि यह निश्चित है कि कोई उन्हें फूस में तलाशने नहीं आयेगा। दरवाजा अच्छा नहीं था और उसमें बड़े-बड़े छेद थे जिससे सड़क साफ दिखाई देती थी।

'आओ, हिम्मत से काम लो!' वह बोला, 'हमारी जान लेना बहुत मँहगा पड़ेगा।'

इस मजाक से उनका डर और भी बढ़ गया। कोलाहल बढ़ता जा रहा था, लेकिन अभी कुछ भी दृष्टिगोचर नहीं हुआ था। सूनसान सड़क से तूफानी हवा के झोंके से आते प्रतीत होते थे, जिनके बाद बड़ा तूफान आता है।

पुआल में छिपने का उपक्रम करती हुई सीसिल बोली, 'नहीं, नहीं! मैं देखना नहीं चाहती।'

मदाम हनेब्यू डर से पीली पड़ गई थी और इन लोगों पर क्रुद्ध थी कि उन्होंने उसका समस्त आनन्द किरकिरा कर दिया। नफरत भरी निगाह डालते हुए वह पीछे खड़ी थी जबकि लूसी और जेनी, काँपते हुए, एक छेद से आँख लगाये इस दृश्य को अच्छी तरह देखने के लिए उत्सुक थीं।

बिजली के कड़कने की सी आवाज नजदीक आई, जमीन काँपने लगी और अपना सींग बजाता हुआ जॉली सबसे आगे कुलाचें भरता नजर आया।

'अपनी सेंट की बोतलें निकाल डालो, लोग पसीने से नहाये हुए गुजर रहे हैं।' निग्रील धीरे से बोला। वह रिपब्लिकन विचारधारा का होते हुए भी महिलाओं की संगत में जनता का मखौल उड़ाना पसंद करता था।

लेकिन उसका मजाक गंभीर मुख-मुद्राओं और नारों के तूफान में बह गया। महिलायें, जिनकी संख्या लगभग एक हजार रही होगी, दौड़ने की वजह से बाल बिखेरे हुए, तंग कपड़ों में अपने नग्न शरीर का प्रदर्शन करतीं गुजर रही थीं। कुछ अपनी गोद के बच्चों को मातम और प्रतिशोध की पताकाओं के रूप में उठाये हुए थीं। अन्य, जो उम्र में उसमें छोटी थीं, छाती खोले, हाथों में सोटे लिए हुए थीं। भयावनी वृद्ध महिलायें इतने जोरों से चीख रही थीं कि उनकी मांस रहित गले की हड्डियाँ चटखती प्रतीत होती थीं। फिर दो हजार पागल पुरुषों की भीड़ जिसमें ट्रामर, मलकट्टे, कुली, सभी थे—फटे हुए ऊनी पायजामे पहने या धूमिल जाकेटें पहने सामने से गुजरे। उनकी आँखें जलती प्रतीत होती थी। उनके काले मुखड़ों में, जब वे सैनिक प्रयाण का गीत गाते थे, सिर्फ क्षेद मात्र दिखाई देता था और इस कोलाहल के बीच सख्त जमीन पर उनके जूतों से चलने की आवाज़ सुनाई देती थी। उनके सिरों के ऊपर, चमकते हुए लोहे के डंडों के बीच एक कुल्हाड़ी सीधी खड़ी चमचमा रही थी, और यह एकमात्र कुल्हाड़ी उनकी पताका प्रतीत होती थी।

'क्या मनहूस चेहरे हैं?' मदाम हनेब्यू बोली।

'निग्रील फुसफुसा कर बोला : 'अगर मैं एक को भी पहचानता होऊँ तो मुझे शैतान खा जाय! न जाने यह लुटेरे कहाँ से उठ आये हैं?'

और, वास्तव में, दो महीने के महान कष्ट और क्रोध में, इधर-उधर खानों तक रौंदा-रौंदी ने उनके चेहरों को और भी जंगली और खूंखार बना दिया था। ढलते हुए सूर्य की किरणों से समूचा क्षेत्र रक्तिम हो उठा था। सड़क खून से भरी प्रतीत होती थी और उसके बीच औरतें और मरद इस प्रकार गुजर रहे थे जैसे किसी कसाईखाने में बूचड़।

इस भय मिश्रित सौंदर्य को देखकर लूसी और जेनी अपनी कलात्मक अभिरुचि की तृप्ति होती देख चिल्ला उठीं, 'ओह! सुन्दर! अति सुन्दर!'

बावजूद इसके वे डर कर मदाम हनेब्यू के पास, जो नींद के सहारे खड़ी थी, हट आई थीं। मदाम इस भय से जमी जा रही थीं कि उस छेदों वाले दरवाजे के बीच से किसी का झाँकना ही उनकी हत्या के लिए काफी होगा। निग्रील भी, जो हमेशा ऐसे मौकों पर बहादुर बना रहता था, किसी अज्ञात भय से आत्मविश्वास खोकर

पीला पड़ गया था। सीसिल, फूस पर पड़ी हुई, हिल डुल नहीं रही थी और वहीं पड़ी थी। अन्य, अपनी आँखें उधर से फेर लेने की इच्छा रखते हुए भी उसे देखने को विवश हो रही थीं।

यह क्रांति की लाल छाया थी जो अनिवार्यतः एक दिन उन सबको बहा ले जायगी, शताब्दी के अन्त के किसी रक्तिम साँझ को! हाँ, किसी दिन, लोग अन्त में बेलगाम होकर, इसी प्रकार सड़कों को रौंदेंगे और मध्यवर्ग का रक्त बहायेंगे। वे सिरों को टाँग देंगे और ढँके हुए कफनों से सोना निकालकर बिखेरेंगे। औरतें डाइनों की तरह चिल्लायेंगी और पुरुष काटने के लिए इसी तरह अपने भेड़िये के से दाँत-जबड़े खोले रहेंगे। हाँ, इसी प्रकार के चीथड़े होंगे, भारी बूटों की इसी प्रकार की बिजली की सी कड़क होगी। इसी प्रकार का भयावह जुलूस होगा। मैले-कुचैले, अधनंगे वे बरबरता क्रूरता की बाढ़ में पुरानी दुनिया को ध्वस्त कर देंगे। चारों ओर आग की लपटें निकलती होंगी: वे कस्बों का एक पत्थर भी साबूत नहीं छोड़ेंगे। वे जंगलों में जाकर जंगली जीवन बिताने लगेंगे। भयंकर मार-काट के बाद बड़ा भोज दिवस होगा, जबकि गरीब एक रात में ही औरतों की सारी विलासिता खत्म कर धनिकों के आलों को खाली कर देगें। कोई चीज बाकी न बच पायगी। न उस अपार दौलत का एक सू और न बड़ी-बड़ी जमींदिरियों के इकरारनामे ही; तब शायद स्वर्णिम प्रभात में नयी दुनिया फिर एक बार बसेगी। हां, यही चीजें थीं, जो सड़क से गुजर रही थीं। यह कुदरत की शक्ति थी जिसके तेज थपेड़े वे अपने चेहरों पर महसूस कर रहे थे।

सैनिक प्रयाण गीत के साथ तुमुल कोलाहल उठा। 'रोटी! रोटी! रोटी!'

लूसी और जेनी मदाम हनेब्यू से चिपकी जा रही थीं जो स्वयं बेहोश सी हो रही थी। निग्रील उनके सामने इस प्रकार खड़ा था मानो अपने शरीर से उनकी रक्षा कर रहा हो। क्या सामाजिक व्यवस्था आज ही संध्या को खत्म हो रही है? और इसके बाद जो कुछ उन्होंने देखा उसमें वे हतबुद्धि हो गए। जुलूस लगभग गुजर चुका था, सिर्फ कुछ पिछड़े हुए लोगों में माकेटी ऊपर आई। वह जानबूझ कर देरी लगा रही थी और बुर्जुआ लोगों को, जो अपने बगीचों या अपने घरों की खिड़कियों से उन्हें गुजरते देख रहे थे, देखती जा रही थी। गोकि वह उनके मुंह पर थूक नहीं सकती थी फिर भी वह उसके प्रति घोर घृणा का भाव व्यक्त कर रही थी। जब कभी भी वह किसी को देखती अपनी स्कर्ट उठाकर कमर झुकाती हुई, सूर्य की लाल किरणों की रोशनी में अपने बड़े और नग्न नितम्ब दिखाने लगती थी। इन बड़े भयानक नितम्बों में अश्लील कुछ भी नहीं था, कोई उन्हें देख कर हँसता भी नहीं था।

हर चीज अदृश्य हो गई। जुलूस सड़कों की मोड़ से होता हुआ चमकीले मकानों की नीची छतों के बीच से गुजरता मोंटमू की ओर बढ़ चला। बग्घी आहाते से बाहर निकाली गई। कोचवान तत्तकाल वहाँ से मदाम और नवयुवतियों को लेकर चल पड़ने के लिए तैयार नहीं था क्योंकि हड़ताली सड़क पर भरे पड़े थे और कोई दूसरी सड़क भी नहीं थी जहाँ से निकला जाय।

'हमें वापस जाना चाहिए क्योंकि भोजन तैयार होगा ?' मदाम हनेब्यू ने परेशानी और भय से क्रुद्ध होकर कहा। 'इन गंदे लोगों ने फिर आज का ही दिन चुना जब कि मेरे मेहमान आये हुए है। इन लोगों के साथ कोई कैसे भलाई कर सकता है ?'

लूसी और जेनी सीमिल को भूंसे में बाहर निकालने में लगी हुई थी। वह इन्कार कर रही थी और ऐसा ख्याल कर रही थी कि वे जंगली अब भी गुजर रहे है और बार-बार कह रही थी कि, 'मैं उन्हें नहीं देखना चाहती।' निग्रोल पुनः घोड़े पर चढ चुका था और उसे सूझा कि उन्हे रिवोलों की गलियों से होकर जाना चाहिए।

'धीरे-धीरे चलो,' उसने कोचवान को हिदायत दी, 'क्योंकि रास्ता खतरे से भरा है,' अगर कोई गिरोह तुम्हे सड़क पर लौटने से रोके तो तुम पुरानी खान के पीछे ठहर जाना और हम छोटे बगीचेवाले दरवाजे से पैदल चले जायंगे। तुम बाहर किसी सराय में बग्घी और घोड़ों को रख लेना।

वे रवाना हुए। जुलूस, दूर, मोंटमू में प्रवेश कर रहा था। वहाँ के रहने वाले दो बार पुलिस और सेना को देख कर आतंकित हो उठे थे। डरावनी अफवाहे फैली हुई थीं, लोग बता रहे थे कि बुर्जुओं के पेट फाड़ डालने के इश्तेहार लिख कर चिपकाये गए है। किसी ने उन्हे पढा नहीं था, परन्तु फिर भी वे उनमे क्या लिखा था उसे सही-सही बताने में असमर्थ थे। वकील के घर पर विशेष आतंक था क्योंकि उसे अभी-अभी एक गुमनाम पत्र से चेतावनी मिली थी कि अगर उसने जनता का साथ न दिया तो एक बैरल बारूद उसके घर के पिछवाड़े छिपाया हुआ है और उसे उड़ा दिया जायगा। उस समय, ग्रीगोरे दम्पत्ति, इस पत्र को पाने की वजह से और विलम्ब होने के कारण, इस पर बातचीत कर रहे थे और अपनी राय जाहिर कर रहे थे कि यह किसी मजाकिये का काम है। तभी इस जुलूस के पहुँच जाने से आतंक चरम सीमा तक पहुँच गया। फिर भी वे मुस्कराते हुए बाहर देखने के लिए खिड़कियों के पर्दे का किनारा एक ओर कर रहे थे और इसे मानने को तैयार नहीं थे कि वहाँ कोई खतरा है। उनकी राय थी कि हर बात अच्छी तरह निबट जायगी। पाँच बज चुका था और सड़क खाली होने तक वे इन्तजार कर

सकते थे क्योंकि बाद में उन्हें हनेब्यू के यहाँ भोजन को जाना था, जहाँ सीसिल निःसंदेह उनका इन्तजार कर रही होगी। लेकिन मोंटमू में कोई भी उनके इस विश्वास का समर्थक नहीं था। लोग भय से इधर-उधर भाग रहे थे और खिड़कियाँ तथा दरवाजे बंद किये जा रहे थे। उन्होंने देखा कि सड़क की दूसरी ओर माइग्रेट अपनी दूकान को लोहे की छड़ों से घेर रहा है। वह बहुत डरा हुआ था और काँप रहा था, इसलिए उसकी छोटी सी कमजोर-मरियल औरत को स्क्रू कसने पड़ रहे थे। भीड़ मैनेजर के विला के पास आकर रुक गई और नारों की प्रतिध्वनि गूंज उठी।

'रोटी ! रोटी ! रोटी !'

एम० हनेब्यू खिड़की पर खड़ा था जब कि हिपोलेट शटर (झिलमिली) बंद करने आया क्योंकि उसे अंदेशा था कि खिड़कियाँ पत्थरों से तोड़ डाली जायँगी। वह निचली मंजिल में सब जगह से बंद कर ऊपरी मंजिल में आया था और एक-एक कर झिलमिली तथा खिड़कियों के बंद होने की आवाज आ रही थी। दुर्भाग्यवश रसोई घर की खिड़कियाँ उस तरीके से बंद न हो सकी थीं।

किसी अज्ञात प्रेरणा से, एम० हनेब्यू बाहर देखने की नीयत से निग्रील के कमरे में दूसरे माले में चला गया। बाँई ओर बने इस कमरे से कंपनी के अहाते तक की दूरी तक सड़क साफ दिखाई देती थी। झिलमिली के पीछे वह भीड़ को देखता रहा। लेकिन इस कमरे में उसे फिर बेचैनी होने लगी। गोकि सब जगह सफाई कर हर चीज यथा स्थान कर दी गई थी। दोपहर का उसका तमाम गुस्सा, गंभीर खामोशी के बीच उसके मन का अन्तर्द्वन्द्व, अब एक भारी दुख और क्लेश में बदल गया था। उसका इस कमरे में अस्तित्व भी अब सुबह की गंदगी साफ हो जाने से, ठंडी सफाई में बदल चुका था। इस व्यभिचार पर कुढ़ने से क्या लाभ ? क्या घर में कोई वास्तविक परिवर्तन आया है ? उसकी औरत ने महज एक दूसरे प्रेमी को अपना लिया है। इससे स्थिति बिगड़ती नहीं क्योंकि उसने परिवार में से ही उसे चुना है। शायद यह फायदेमंद भी है क्योंकि इससे बाहर की बदनामी तो न होगी। जब वह अपनी रकाबत के पागलपन की बात सोचता तो उसे अपने उपर तरस आता था। उत्तेजना के उन क्षणों में बिस्तर को पीटना कितना हास्यास्पद था। जब उसने उसके दूसरे प्रेमियों को बरदाश्त किया है तो वह सहज ही इस व्यक्ति को भी सहन कर सकता है। थोड़ा और नफरत की बात है। एक तीखी कड़ुवाहट से उसका मुंह भर आया। वस्तु स्थिति की आन्तरिक वेदना तथा अपने आप के प्रति लज्जा की स्थिति से। वह ऐसी औरत को अब भी प्यार करता है, भोगना चाहता है जो हमेशा अपने चारों ओर गंदगी लपेटे रही है।

खिड़की के नीचे भीड़ हिंसात्मक रूप धारण करती हुई चिल्ला रही थी।

'रोटी ! रोटी ! रोटी !'

'बेवकूफ !' एम० हनेब्यू ने दाँत भीच कर कहा।

उसने सुना कि उसकी लम्बी तनख्वाह के लिए वे उसे कोस रहे हैं। उसे निठल्ला बैठने वाला कहकर, अच्छे-अच्छे भोजन से अपना पेट भरने वाला जानवर कह रहे हैं। औरतों ने रसोई घर देख लिया था और वहाँ भूने जा रहे कबूतर के गोश्त और मसाले की खुशबू से उनके खाली पेटों मे दर्द पैदा हो रहा था। 'आह ! नारकीय बुर्जुआ ! इन्हे तो शेम्पियन से इतना भर देना चाहिए कि इनके पेट फूट जाँय।'

'रोटी ! रोटी ! रोटी !'

'बेवकूफ कहीं के !' एम० हनेब्यू ने दुहराया; 'क्या मैं खुश हूँ ?'

इन लोगों के खिलाफ, जो कुछ समझते-बूझते नहीं हैं, उसे क्रोध आ गया था। वह उनके उन्मुक्त प्रेम की सुविधा की खातिर सहर्ष अपनी तनख्वाह की बड़ी रकम को तोहफे के रूप मे देने को तैयार था। वह अपनी एक दिन की खुशी के लिए अपनी शिक्षा, अपनी सुख-सुविधा, अपने मैनेजर के अधिकारों का त्याग करने को तैयार था अगर कोई एक दिन के लिए भी उसे प्यार करता और उन लोगों की तरह वह भी उसे भोग सकता। उसे इस खुशी, इस आत्मतृप्ति की खातिर भूखों मरना पसंद था।

'रोटी ! रोटी ! रोटी !'

तब वह क्रोध से कोलाहल के बीच चिल्लाया।

'रोटी ! क्या इतना ही काफी है, बेवकूफो !'

रोटी तो वह भी पाता है लेकिन कष्ट से कराह रहा है। उसकी बरबाद गृहस्थी, उसके सुखमय दाम्पत्य जीवन का अभाव मृत्यु की यंत्रणा की तरह उसका गला घोंटे डाल रही है। सिर्फ रोटी मिलने से ही खुशी हासिल नहीं होती ! कौन ऐसा बेवकूफ होगा जो दौलत की सांसारिक सुख से तुलना करेगा ? ये क्रांति का स्वप्न देखने वाले समाज को तहस-नहस कर नये समाज का पुनर्निर्माण तो कर सकते हैं; लेकिन ये मानवता की खुशहाली में कुछ जोड़ नहीं सकते, प्रत्येक के लिए रोटी-मक्खन काटकर वे एक का दुख भी दूर नही कर सकते। वे इस दुनिया के कष्टों को बढ़ायेंगे ही, अपनी कामनाओं के बढ़ने के साथ-साथ वे हर एक को दुखी बना देंगे। नहीं, अच्छा तो यही है कि अपना अस्तित्व ही न हो और अगर हो भी तो पेड़, पत्थर और उससे भी छोटे एक बालू के कण के रूप में, जिसे गुजरने वाले के जूतों के नीचे कोई दुख-तकलीफ न हो।

और अपनी दिली पीड़ा के कष्ट से एम० हनेब्यू की आँखों मे आँसू छलछला आये और जलन पैदा करने वाली बूंदों के रूप मे उसके गालों पर ढुलक पड़े। इन भुखमरों के प्रति अब उसका क्रोध बह गया था। आँसू बहाता हुआ उसका घायल मन बारबार पुकार रहा था—

'बेवकूफ ! बेवकूफ !'

लेकिन भूखी आत्माओं की आवाज एक तूफान की भाँति अपने सामने हर चीज को उड़ाती हुई ले चली थी—

'रोटी ! रोटी ! रोटी !'

६

कैथराइन के घूंसों से चेतन्य होकर लॉतिये अपने साथियों का नेतृत्व कर रहा था। जब वह अपने साथियों को मोंटसू की ओर चलने का आदेश दे रहा था तो उसके अन्तर्मन में विवेक बुद्धि आश्चर्य से पूछ रही थी कि इस सब का क्या मतलब है ? उसने तो इस प्रकार का कोई इरादा नहीं बनाया था; यह सब कैसे हो गया, शान्तिपूर्वक काम कर, तोड़फोड़ रोकने के इरादे से जीनबर्ट को रवाना होने के बाद से अब वह मैनेजर के विला को घेर कर हिंसक प्रवृत्ति बढ़ाता हुआ दिन समाप्त कर रहा है ?

उपद्रवी भीड़ जब कम्पनी के अहाते को नष्ट करने की बात कर रही थी तो उसने निःसंदेह, उन्हें रोका था लेकिन अब विला की चहरदीवारी पर पड़ने वाली पत्थरों की बौछार को रोकने का वह असफल प्रयास कर रहा था। वह नहीं चाहता था कि कोई बड़ी दुर्घटना हो। जब वह इस प्रकार अकेला निःशक्त सा सड़क के मध्य में खड़ा था तो एस्टेमिनेट तिसोन की चहरदीवारी के झाड़ के पास खड़े एक व्यक्ति ने उसे बुलाया।

'हाँ, मैंने बुलाया है। सुनो तो ?'

वह रसेन्योर था। ड्यू-सेंट-क्वारेंट के लगभग ३० स्त्री-पुरुष, जो सुबह घर पर ही रह गए थे, संध्या को समाचार जानने यहाँ आये थे और हड़तालियों के यहाँ पहुँचने पर इस होटल में आकर बैठ गए थे। जाचरे अपनी पत्नी फिलोमिना के साथ एक टेबल घेरे हुए था। उससे कुछ हटकर पेरी और पेरीन, पीठ किये हुए अपना मुंह छिपाये बैठे थे। कोई यहाँ पीने नहीं आया था, वे यहाँ शरण ले रहे थे।

रसेन्योर को पहचान कर जब लॉतिये मुड़ने को हुआ तो रसेन्योर बोला।

'तुम मुझसे मिलना नहीं चाहते, क्यों ? मैंने तुम्हें सचेत किया था कि स्थिति बिगड़ रही है। अब तुम रोटी माँगते हो और वे तुम्हें गोली देंगे।'

तब लॉतिये लौट आया और उसने उत्तर दिया :

'मुझे परेशानी उन कायरों से है जो कि हाथ पर हाथ धरे हमें अपनी जान का खतरा उठाते देख रहे हैं।'

'तब, तुम्हारा इरादा यहाँ लूट-मार का है ?' रसेन्योर ने पूछा।

'मेरा इरादा अन्त तक साथियों का साथ देने और उनके साथ मृत्यु के आलिंगन का है।'

निराश होकर लॉतिये मृत्यु के लिए तैयार, भीड़ में चला गया सड़क पर तीन बच्चे पत्थर फेंक रहे थे, उसने उन्हें कसकर लात मारी और साथियों से चिल्लाकर बोला कि खिड़कियों के तोड़ने से कोई लाभ नहीं होगा।

बीवर्ट और लायडो फिर जॉली से आ मिले थे और उससे ढेला चलाना सीख रहे थे। उनमें ढेले फेंकने की होड़ लगी थी कि कौन ज्यादा नुकसान पहुँचा सकता है। लायडो ने भीड़ में एक औरत की खोपड़ी फोड़ डाली थी और दोनों लड़के जोरों से हँस रहे थे। बोनेमाँ और माउक्यू बेंच में बैठे हुए, पीछे से, उन्हें देख रहे थे। बोनेमाँ के सूजे पावों में इतनी तकलीफ थी कि उसे बड़े कष्ट से घिसट कर इतनी दूर चलना पड़ा था; कोई नहीं जानता था कि कौन सी शक्ति उसे खींचकर यहाँ लाई है, क्योंकि इन दिनों उसका चेहरा मृतक का सा हो गया था और वह एक शब्द भी नहीं बोल पाता था।

अब कोई भी लॉतिये का आदेश नहीं मान रहा था। उसके आदेश के विरुद्ध पत्थर अब भी चल रहे थे और इन जंगलियों को बेलगाम करने मे आश्चर्य में पड़ा हुआ वह भयभीत हो गया था क्योंकि वे जो कि किसी काम को करने में पहले इतने सुस्त दिखते थे, अब गुस्से में इतने भयंकर और खूंखार हो उठे थे। उसने लेवक्यू के हाथ से बड़ी मुश्किल से कुल्हाड़ी छुड़ाई और पशोपेश में था कि माहे को कैसे रोके। औरतें उसके लिए पेचीदा समस्या बन रही थीं—लेवक्यू की स्त्री माकेटी और अन्य—गुस्से में अँधी होकर अपने नाखून और दाँत निकाले सूअरी की भाँति गुर्रा रही थीं। मदरब्लूली उनका नेतृत्व सँभाले थी।

लेकिन वहाँ एकाएक शान्ति सी छा गई। लॉतिये को ताज्जुब सा हुआ कि एकाएक ऐसा कैसे हो गया। यह ग्रीगोरे दम्पत्ति के कारण हुआ था जो कि वकील से विदा लेकर शान्ति के साथ, उसी विश्वास और आस्था से कि इन भलेमानस खनिकों का यह एक मजाक मात्र है, वे उनके बीच आ गए थे और इन्हें चोट न पहुँचे इसलिए भीड़ ने पत्थर फेंकना बंद कर दिया था। उन्होंने उन्हें बगीचे में घुसकर

सीढ़ियाँ चढ़ने दिया और वे घिरे हुए द्वार के पास खड़े हो गए। उसी समय घर की नौकरानी रोज भी बाहर से आ रही थी, वह खनिकों पर हँसती हुई आगे बढ़ रही थी क्योंकि सबसे उसका परिचय था, वह स्वयं मोंटसू की रहने वाली थी। उसने ही दरवाजे पर आघात करते हुए अन्त में हिपोलेट को उसे खोलने को विवश किया। जब ग्रीगोरे दम्पत्ति अदृश्य हो गए तो फिर पत्थर बरसने शुरू हो गए। अचम्भे से किंकर्तव्य विमूढ़ भीड़ पुनः चिल्लाने लगी थी :

'बुर्जुओं का नाश हो ! जनता की विजय हो !'

रोज हंसती हुई विला के हाल तक चली गई और भयत्रस्त नौकर को ढाढ़स दे रही थी कि वे लोग बुरे नहीं हैं, मैं उन्हें जानती हूं।'

एम० ग्रीगोरे ने अपनी हैट उतार कर टांगी और मदाम ग्रीगोरे को उसका भारी ओवरकोट उतारने में मदद करने के बाद बोला :

'निःसंदेह उनके दिल में कोई खोट नहीं है। जब वे खूब चिल्ला लेंगे तो फिर भोजन के लिए अच्छी भूख लिए घर चले जायेंगे।'

इसी क्षण एम० हनेब्यू दूसरी मंजिल से नीचे उतरा। उसने यह नजारा देख लिया था और अपने उत्साहहीन, विनम्र तरीके से अतिथियों का स्वागत करने नीचे उतरा था। सिर्फ उसके चेहरे की रंगत बता रही थी कि दुख ने उसे झकझोर दिया है।

'आपको मालूम है', वह बोला, 'महिलायें अभी तक नहीं लौटीं।'

पहली बार ग्रीगोरे दम्पत्ति के चेहरे पर चिन्ता का भाव दिखाई दिया। सीसिल नहीं लौटी ! अगर खनिकों ने अपनी मजाक जारी रखी तो वह अभी कैसे लौट सकेगी ?

'पहले तो मैंने सोचा कि यह जगह साफ करवा दूँ', एम० हनेब्यू बोला। 'लेकिन दुर्भाग्य यह है कि मैं यहाँ अकेला हूं। और अलावा इसके, मैं नहीं जानता कि एक कार्पोरल और चार सैनिकों को बुलाने के लिए, जो इस भीड़ को हटा दें, अपने नौकर को कहाँ भेजूं ?'

रोज ने, जो वहाँ खड़ी थी, बोलने का साहस किया : 'ओह सर ! वे दिल के मैले नहीं हैं।'

मैनेजर ने सिर हिलाया। बाहर कोलाहल और बढ़ गया था और वे घर की दीवार पर पत्थरों की चोटों की धीमी आवाज सुन रहे थे।

'मैं उन पर सख्ती करना नहीं चाहता, मै उन्हे माफ करने को भी तैयार हूं। उन सा बेवकूफ भी कोई होगा जो कि ऐसा विश्वास रखते है कि हम उन्हें नुकसान पहुँचाना चाहते है। लेकिन गड़बड़ी रोकना मेरा कर्तव्य है। मैं सोचता हूं

कि सड़कों पर पुलिस है, जैसा कि मुझे बताया गया है। लेकिन सुबह से मुझे एक भी आदमी नहीं दिखाई दिया !'

फिर वह मदाम ग्रीगोरे से माफी सा माँगता हुआ बोला, 'मेरा निवेदन है, मदाम, यहाँ ठीक नहीं; ड्राइंगरूप में चला जाय।'

लेकिन रसोई बनाने वाली के बड़े गुस्से मे नीचे ऊपर आने के कारण उन्हें कुछ देर और ठहर जाना पड़ा। उसने कहा कि उसने मार्सेनीज के एक पेस्ट्री बनाने वाले को चार बजे का आर्डर दिया था लेकिन वह आया नहीं और वह डिनर की जिम्मेदारी नहीं ले सकती। यह स्पष्ट था कि पेस्ट्रीवाला इन हड़तालियों के डर के मारे सड़क के उस पार झाड़ी के पीछे छिपा था कि कहीं वे उसका सामान न लूट लें।

'धैर्य रखो, धैर्य रखो', एम० हनेब्यू ने कहा। 'अभी ज्यादा देर नहीं हुई। पेस्ट्री वाला आ सकता है।'

लेकिन जब वह स्वयं ड्राइंग रूम का दरवाजा खोलते हुए मदाम ग्रीगोरे की ओर मुड़ा तो उसे हाल के बेंच मे एक आदमी को बैठे देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसे छाया की वजह से वह नहीं पहचान पाया था।

'क्या ! तुम हो, माइग्रेट ! क्या बात है ?'

माइग्रेट खड़ा हो गया। उसका मोटा, पीला चेहरा भय से बदल चुका था। उसकी शांत दृढ़ता गायब हो गई थी। उसने बताया कि वह इन लुटेरों द्वारा उसकी दूकान पर हमला किये जाने की स्थिति मे संरक्षण और मदद चाहता है।

'तुम देख ही रहे हो, मुझे स्वयं खतरा उत्पन्न हो गया है, और मेरे पास कोई आदमी भी नहीं है,' एम० हनेब्यू ने उत्तर दिया। 'बेहतर यही होता कि तुम अपने मकान पर ही रहते और अपने माल की हिफाजत करते।'

'ओह ! मैंने लोहे की छड़ें लगा दी हैं, और फिर मेरी औरत भी वहाँ है।'

मैनेजर ने बड़ी बेरुखी दिखाई और अपनी घृणा जाहिर करते हुए कहा, 'बड़ा बढ़िया पहरेदार रखा है ! वह बेचारी मार से पहले ही अधमुई है। मैं कुछ नहीं कर सकता। तुम्हे स्वयं अपनी रक्षा का प्रबन्ध करना चाहिए। मेरी सलाह है कि तुम फौरन चले आओ क्योंकि वे वहाँ फिर रोटी की माँग कर रहे हैं, सुनो।'

वास्तव में कोलाहल फिर शुरू हो गया था, माइग्रेट को ऐसा लगा कि चिल्लाहट के बीच उसका भी नाम लिया गया है। वापस जाना अब संभव नहीं था। वे उसके टुकड़े-टुकड़े कर डालेंगे। इसके अलावा बरबादी की चिन्ता से वह क्लान्त हो उठा। उसने अपना चेहरा दरवाजे के काँच से लगाया और विनाश की

संभावना से काँपता हुआ उसके पसीना निकल आया था, जब कि ग्रीगोरे दम्पत्ति ने ड्राइंग रूम में जाने का निश्चय किया।

एम० हनेब्यू ने इस बंद कमरे में अतिथियों को आराम से बैठने को कहने का निष्फल प्रयास किया। बाहर से होने वाली नारेबाजी का प्रत्येक दौर दिन में भी दो लैम्पों से प्रकाशित कमरे को आतंक से भर रहा था। वे वार्ता का विषय बदलने की कोशिश करते हुए भी बार-बार इसी अग्राह्य आन्दोलन पर पहुँच रहे थे। वह आश्चर्य प्रकट कर रहा था कि उसे पहले कुछ भी मालूम नहीं पड़ा; उसकी सूचना इतनी गलत थी कि वह बार-बार रसेन्योर का जिक्र करते हुए कह रहा था कि उसके प्रभाव को वह जानता है। जहाँ तक ग्रीगोरे दम्पत्ति का प्रश्न था वे सिर्फ अपनी लड़की सीसिल के बारे में सोच रहे थे कि वह बेचारी बुरी तरह घबरा गई होगी। शायद उपद्रव को देखते हुए बग्घी मार्सेनीज लौट जाय। सड़क से आने वाली कोलाहल की ध्वनि के बीच वे लोग परेशान से घंटा भर इन्तजार करते रहे। अन्त में स्थिति उनके लिए असह्य हो उठी। एम० हनेब्यू ने स्वयं जाकर उपद्रवियों को खदेड़ने और बग्घी कहाँ है उसे देख आने की बात कही। इतने में हिपोलिट ने सूचना दी।

'सर। सर। मदाम आ गई है। वे लोग मदाम को मारे डाल रहे है।'

बग्घी रिवोली लेन में भय उत्पन्न करने वाले हड़तालियों के दलों के बीच से नहीं गुजर पाई थी। निग्रील ने अपनी योजनानुसार घर से लगभग सौ मीटर दूर से पैदल आकर बगीचे में प्रवेश का छोटा दरवाजा खटखटाया। उन्हें पक्का यकीन था कि माली आवाज सुनकर द्वार खोल देगा क्योंकि वहाँ हमेशा कोई न कोई बना ही रहता था। योजना का पूर्वार्ध तो सफलता से कार्यान्वित हुआ। मदाम हनेब्यू और नवयुवतियाँ जब द्वार खटखटा रही थीं तो कुछ औरतें, जिन्हें खबर मिल गई थी, लेन में घुस आई थीं। फिर तो सारी योजना ही चौपट हो गई। दरवाजा नहीं खुला और निग्रील ने अपने कंधे से उसे खोलने की असफल कोशिश की। औरतों की भीड़ बढ़ गई थी, और इस आशंका से कि कहीं वे औरतों के रेले में पड़कर धकिया कर न ले जाई जायँ, निग्रील ने अपनी चाची और नवयुवतियों को अपने सामने से धकेलने का निराशाजनक प्रयास किया ताकि वे उन घेरनेवालों के बीच से गुजर कर पहली सीढ़ियों तक पहुँच जायँ। लेकिन इस प्रयास से धक्का धुक्की हुई। उन्हें मुक्त नहीं किया गया। एक चिल्लाता हुआ गिरोह उनके पीछे चला और दाँये-बाँये, बिना सोचे समझे सिर्फ इन सम्भ्रान्त महिलाओं को इस भीड़ के बीच खोई हुई पाकर आश्चर्य के साथ, जमाव बढ़ता जा रहा था। इस क्षण वहाँ गड़बड़ी इतनी अधिक थी कि उसमें ऐसी एक गलती हो गई जिसके बारे

में ठीक-ठीक ब्यौरा नहीं दिया जा सकता। लूसी और जेनी सीढ़ियों तक पहुँचकर दरवाजे से मकान में दाखिल हो गईं। नौकरानी द्वारा खोल दिये गए द्वार तक पहुँचने में मदाम हनेब्यू भी कामयाब हो गईं और उनके पीछे निग्रील ने आकर द्वार में सिटकनी चढा दी, उसे पक्का विश्वास था कि उसने सीसिल को सबसे पहले अन्दर जाते देखा है। लेकिन वह वहाँ नहीं थी, रास्ते से ही लापता हो गई थी। वस्तुतः वह इतनी डर गई थी कि घर की ओर से मुँह फेरकर वह स्वतः खतरे के बीचोबीच बढ़ आई थी।

तत्काल नारा लगा :

'जनक्रान्ति की विजय ! बुर्जुआ लोगों का नाश हो ! उन्हें मार डालो !'

दूर खड़े कुछ लोगों ने, जॉली के नीचे छिपे हुए उसके चेहरे से, उसे मदाम हनेब्यू समझने की गलती की थी और अन्य लोग कह रहे थे कि वह मैनेजर की औरत की मित्र एक पड़ोसी निर्माता की युवा पत्नी है। जो कुछ भी हो, उसके रेशमी वस्त्र, उनका फर लगा ओवरकोट, उसकी हैट का सफेद पंख उन्हें क्रोधित बना रहा था। उससे इत्र की सुगंध आ रही थी। वह घड़ी पहने थी और उसकी त्वचा मुलायम और नाजुक थी।

'रुको ?' मदरब्रूली चिल्लाई, 'हम उस लेस को तुम्हारे उसमें डालेंगी।'

'हरामखोर, गंदी औरतों ने कहा यह हमने चुराया है', लेवक्यू बोली। 'वे अपने शरीर मे 'फर' लगाती हैं और यहाँ हम ठंड से मर रहे है। जरा नंगी रह कर दिखाओ तो किस तरह रहा जाता है।'

तत्काल माकेटी आगे दौड़ी—

'हाँ, हाँ। इसे कोड़े लगाओ।'

और ये औरतें जंगली ईर्ष्या से गुस्से में भरकर उसे धकियाने लगीं और इस प्रकार नोचने लगी मानो हर एक इस धनी लड़की की त्वचा का एक-एक टुकड़ा बाँटना चाहती हो। 'यह अन्याय अधिक नहीं चलेगा, इन दूसरों की कमाई पर मौज करने वाली औरतों को मजदूरिन की भाँति कपड़े पहनने को मजबूर किया जायगा जो कि अपना एक पेटीकोट धुलाने में आधा फ्रेंक खर्च कर डालती है।'

इस नोच-खसोट के बीच सीसिल की टाँगे लकवा से पीड़ित व्यक्ति की भाँति काँप रही थी। वह बार-बार एक ही बात दुहरा रही थी।

'महिलाओ ! प्लीज ! प्लीज ! महिलाओ, कृपया मुझे मत मारो।'

लेकिन यकायक वह जोरों से चीख उठी, ठंढे हाथों ने उसे गर्दन से पकड़ लिया था। भीड़ उसे बुड्ढे बोनेमाँ तक ले चली थी, और उसने उसे पकड़ लिया था। वह भूख से नशे मे प्रतीत होता था, दीर्घकालीन यातनाओं से मूर्छित सा वह

एकाएक अर्थ शताब्दी के आत्मसमर्पण से जागता हुआ सा अज्ञात कुत्सित आवेग में बह गया था। अपने जीवन काल में अपनी जान पर खेलकर आधे दर्जन साथियों को मौत से बचाने के बावजूद वह ऐसी इच्छा के वशीभूत होता जा रहा था जिसका वह बयान नहीं कर सकता था। लड़की की सफेद गर्दन उसे बरबस परेशान कर रही थी और उस दिन उसकी जुबान बंद थी, वह अंगुलियों को इस प्रकार बंद कर लेता था जैसे कोई बुड्ढा, अपाहिज जानवर अपने जीवन की स्मृतियों का मनन कर रहा हो।

'नहीं। नहीं।' औरतें चिल्लाईं। 'उसके कपड़े उतार डालो। उसके कच्छे को फाड़ डालो।'

विला में ज्योंही उन्होंने इस दुर्घटना को महसूस किया निग्रील और एम० हनेब्यू तत्काल बहादुरी से द्वार खोलकर सीसिल की मदद को दौड़े। लेकिन अब भीड़ बगीचे की चहारदीवारी की तरफ बढ़ गई थी और उससे बाहर निकल पाना आसान नहीं था। यहाँ एक छोटा-मोटा संघर्ष हुआ, जब कि ग्रीगोरे दम्पत्ति आतंकित से सीढ़ियों पर खड़े थे।

अपनी ओर से लॉतिये, इस बच्ची के साथ बदला लिए जाने से दुखी होकर गिरोह को उसे मुक्त करने को बाध्य कर रहा था। एक प्रेरणा उसके मन में जागी, उसने लेवक्यू के हाथ से छीनी गई कुल्हाड़ी चमकाते हुए कहा।

'माइग्रेट के घर। भगवान की कसम! वहाँ रोटी है। माइग्रेट के ओसारे में, जमीन के नीचे गाड़ी हुई।'

और अलबटप्यू उसने अपनी कुल्हाड़ी का पहला वार दूकान के दरवाजे पर किया। कुछ साथियों ने—लेवक्यू, माहे और अन्य—उसका अनुसरण किया। लेकिन औरतों ने भयंकर रूप धारण कर लिया था और सीसिल बोनेमाँ की अंगुलियों से निकल कर मदरब्यूली को हाथों में पड़ गई थी। लायड़ी और बीवर्ट जॉली के नेतृत्व में चारों हाथ-पाँवों से उसके पेटीकोट के नीचे घुसकर झाँकने देखने की कोशिश कर रहे थे। औरतों ने उसे खींचना शुरू कर दिया था और उसके कपड़े फटने शुरू हो गए थे, तभी एक आदमी घोड़े पर सवार हो वहाँ पहुँचा। अपने घोड़े को भीड़ के बीच से ले जाता हुआ वह रास्ते में आड़े आने वाले लोगों को चाबुक से मार कर हटा रहा था।

'आह! जाहिलो! तुम हमारी लड़कियों को कोड़ों से पीटना चाहते हो, क्यों?'

वह डेन्यूलिन था जो भोजन के लिए हनेब्यू के यहाँ आया था। वह तेजी से सड़क पर कूद पड़ा और सीसिल को कमर से उठाकर दूसरे हाथ से उसने इस

कौशल और ताकत से घोड़े पर बैठकर उसे बढ़ाया कि भीड़ देखती ही रह गई। चहार दीवारी के पास रौंदा-रौंदी जारी थी। कुछ खरोचों के साथ वह उसे भी पार कर गया। इस आकस्मिक सहायता से निग्रील और एम० हनेब्यू को बड़ी राहत मिली क्योंकि गालियों और घूंसों के बीच उन्हें स्वयं को खतरा हो गया था। नवयुवक बेहोशवत सीसिल को अन्दर ले गया और डेन्यूलिन ने अपने लम्बे कद्दावर शरीर की आड़ में मैनेजर की रक्षा की, लेकिन सीढ़ियों के सिरे पर उसके कंधे पर एक पत्थर आकर जोरों से लगा।

'यह बात है', वह चिल्लाया। 'अब चूंकि तुमने मेरा इंजन तो तोड़ ही डाला है, मेरी हड्डियां भी तोड़ डालो।'

उसने फुर्ती से दरवाजा खोला और पत्थरों की एक बौछार उसके विरुद्ध टकराई।

'क्या पागलपन है !' वह चिल्लाया। 'दो सेकण्ड और देरी होती तो उन्होंने मेरा भेजा खोल दिया होता। उनसे कुछ कहना-सुनना बेकार है, तुम उन्हें गोलियों से गिरा सकते हो।'

ड्राइंग रूम मे सीसिल के होश-हवास दुरुस्त होने पर ग्रीगोरे दम्पति रोने लगे थे। उसे कोई चोट नहीं आई थी और कोई खरोंच भी नहीं दिखाई देती थी। सिर्फ उसके मुंह पर पर डालने वाली घुघटनुमा जाली वहीं छूट गई थी। लेकिन उनका भय तब और भी बढ़ गया जब कि उन्होंने अपनी रसोई बनाने वाली मलानी को वहाँ देखा। वह बता रही थी कि उन्होंने पायोलेन को किस तरह ध्वस्त किया है और वह भय से पागल मालिको को सूचना देने भागी-भागी यहाँ आई है। और अपने ब्योरे में वह बराबर उसी पत्थर का जिक्र कर रही थी जिसे जॉली से फेंका था और जिससे खिड़की का एक कांच टूट गया था। वही एकमात्र पत्थर उसके लिए तोप का गोला बन गया था। तब, एम० ग्रीगोरे के खनिकों के प्रति विचार ही बदल गए : वे उसकी लड़की की हत्या कर रहे थे, वे उसके मकान को ध्वस्त करना चाहते थे; तब, यह सच है कि वे उसके प्रति दुर्भावना रखते है क्योंकि वह उनके काम पर एक भले आदमी की तरह जिन्दगी व्यतीत करता है।

नौकरानी एक तौलिया और यू डी कोलोन ले आई थी, वह बोली :

'बड़े ताज्जुब की बात है ! वे लोग दिल के तो बुरे नहीं है !'

मदाम हनेब्यू बैठी-बैठी भय से पीली पड़ी हुई थी। अभी वह उस सदमे से संभल नहीं पाई थी। जब निग्रील को शाबासी दी गई तो वह मुस्कराई। सीसिल के माता-पिता ने विशेष रूप से नवयुवक को धन्यवाद दिया और शादी अब लगभग पक्की समझी गई। एम० हनेब्यू ने चुपचाप अपनी निगाह अपनी पत्नी की ओर

से हटाकर उसके प्रेमी की ओर फेरी, जिसकी हत्या की वह सुबह कसम ले चुका था, फिर उसने उस लड़की की ओर देखा जिसकी वजह से, इसमें संदेह नहीं, वह शीघ्र ही उस नवयुवक से छुटकारा पा जायगा। इस काम के लिए कोई जल्दी नहीं थी, सिर्फ उसे डर यही था कि कहीं उसकी औरत और नीचे गिर कर किसी नौकर-चाकर से न फँस जाय।

'और तुम मेरी प्यारी बेटियो', डेन्यूलिन ने अपनी लड़कियों से पूछा; 'कहीं तुम्हारी तो कोई हड्डी नहीं टूटी ?'

लूसी और जेनी बहुत डर गई थीं, परन्तु अब वे यह सब देख लेने के लिए प्रसन्न थीं। अब वे हंस रही थीं।

'बाई जॉर्ज।' पिता ने अपना कथन जारी रखा, 'हमारा आज का दिन बड़ा नायाब रहा ! अगर तुम दहेज चाहती हो तो तुम्हें उसे स्वयं कमाना होगा और तुम्हें मुझे भी खिलाना होगा।'

वह मजाक कर रहा था, लेकिन उसकी आवाज काँप रही थी। जब उसकी दोनों लड़कियाँ उसकी अगल-बगल बाजुओं को पकड़े खड़ी हो गईं तो उसकी आँखों में आँसू भर आये।

एम० हनेब्यू ने उसकी बरबादी की स्वीकारोक्ति सुन ली थी। एक विचार से उसका चेहरा चमक उठा। वण्डामे अब मोंटमू का हो जायगा, यही आशापूर्ण मुआवजा है, सौभाग्य की एक किरण है जो उसे पुनः डाइरेक्टरों का विश्वासपात्र बना देगी। अपने कार्यकाल के हर संकट पर वह आदेशों के सस्ती के साथ पालन की शरण लेता था, एक सैनिक अनुशासन के रूप में, जिसमें वह स्वयं रहता था और थोड़ी सी खुशी हासिल करता था।

वे सब शांत हो गए थे; ड्राइंग रूम में फिर बोझिल शांति छा गई थी, सिर्फ दो लैंप खामोशी के साथ जल रहे थे। तब, बाहर क्या हो रहा है ? उपद्रवकारी शांत थे, अब घर में पत्थरों की बौछार नहीं आ रही थी; सिर्फ कहीं भरपूर जोर से किये जाने वाले प्रहार की आवाज आ रही थी, मानो जंगल में कोई लकड़ी काट रहा हो। वे जानना चाहते थे, दरवाजे के काँच से झाँक कर देखने की नीयत से वे फिर हाल में चले गए। महिलायें भी पहले माले की झिलमिली से देखने के लिए उपर चली गईं।

एम० हनेब्यू ने डेन्यूलिन से कहा, 'तुम उस दुष्ट रसेन्योर को देख रहे हो, दूकान की उस चहारदीवारी के पास। मैंने इतना तो अनुमान लगा ही लिया था कि वह यहीं कहीं होगा।'

वह रसेन्योर न होकर लॉतिये था जो अपनी कुल्हाड़ी से माइग्रेट की दूकान तोड़ रहा था। और वह लोगों से कहता जा रहा था कि क्या इस दूकान का माल खनिकों का नहीं है ? क्या उन्हें यह अधिकार नहीं है कि वे इस चोर से, जो उनका अब तक शोषण करता आया है और जो कंपनी के इशारे पर उन्हें भूखा मार रहा है, अपना माल वापस लें ? धीरे-धीरे वे सभी मैनेजर के मकान के पास से हट आये थे और पड़ोस की दूकान लूटने दौड़ पड़े थे। पुनः रोटी ! रोटी ! रोटी ! का नारा लगा। उन्हें दरवाजे के भीतर रोटी मिलेगी। भूख के क्रोध मे वे उन्मत्त हो उठे, मानो वे यह महसूस कर रहे हों कि अधिक इन्तजारी से उन्हें सड़क पर ही दम तोड़ देना होगा। दरवाजे पर इस कदर भारी प्रहार पड़ रहा था कि प्रत्येक चोट पर लॉतिये को किसी के चोट आने का खतरा रहता था।

इसी बीच, माइग्रेट ने, मैनेजर के हाल से निकल कर पहले तो रसोईघर में शरण ली, लेकिन, वहाँ कुछ सुनाई न पड़ने की वजह से उसने अनुमान लगाया कि उनकी दूकान पर हमला हो रहा है और वह पुनः ऊपर आकर बाहर पंप की आड़ में छिप गया। यहाँ उसने दरवाजे के चरमराने और 'लूट लो' की चिल्लाहट के बीच अपना नाम लिए जाने की आवाजें सुनी। तब, यह स्वप्न नहीं था। अगर वह देख नहीं सकता था तो वह सुन सकता था और बजते हुए कानों से वह इस हमले का अनुसरण कर रहा था। प्रत्येक प्रहार उसके दिल पर चोट कर रहा था। एक चूल तो अवश्य उखड़ गई होगी और ५ मिनट मे ही दूकान उनके कब्जे में आ जायगी। वस्तु स्थिति उसके सामने वास्तविक और काल्पनिक रूप से भीषण नृत्य कर रही थी—लुटेरे सामान पर टूट पड़े है, सभी ड्रापर तोड़ कर खोले जा चुके हैं, बोरे खाली कर दिये गए हैं, हर चीज खा-पीकर बराबर कर दी गई है और मकान भी ध्वस्त कर दिया गया है। कोई भी चीज बाकी नही रही, एक छड़ी भी नहीं जिसके सहारे वह गाँव में जाकर माँग सके। नहीं, नहीं, वह अपनी सम्पूर्ण बरबादी न होने देगा इससे तो वह मर जाना पसंद करेगा। जब से वह यहाँ था वह अपने घर की एक खिड़की पर अपनी औरत की दुबली-पतली परछाईं देख रहा था, काँच के पीछे पीली और घबराई हुई; इसमें संदेह नहीं कि वह एक गरीब मार खाई हुई औरत की चुप्पी से दूकान टूटते देख रही थी। नीचे वहाँ एक ओसारा था, वह इस प्रकार बना था कि बगीचे से भीत के सहारे उस पर चढ़ा जा सकता था और फिर खिड़की तक खपरैलों के ऊपर से होते हुए पहुँचना आसान था। अब वह घर छोड़ने पर पछता रहा था और घर पहुँचने की उसकी इच्छा बड़ी तीव्र हो उठी थी। शायद उसे फर्नीचर से दूकान की आड़ लगाने का मौका मिल जाय; वह अन्य बहादुराना प्रतिरोध की कल्पना भी कर रहा था—तेल उबाल कर

डाला जाय, पेट्रोल जलाकर ऊपर से छोड़ा जाय। लेकिन यह दौलत का प्रेम उसके भय से संघर्ष कर रहा था और वह इस संघर्ष में कायरता दिखा रहा था। एका-एक कुल्हाड़ी की गहरी चोटें पड़ते सुनकर उसने कुछ निश्चय किया। वे और उसकी पत्नी बोरों को अपने शरीर से ढँक लेंगे लेकिन एक रोटी भी न जाने देंगे।

उसी समय तत्काल गालियाँ पड़नी शुरू हो गईं : 'देखो ! देखो ! वह मोटा बिलाव वहाँ है ! बिलाव के पीछे ! बिलाव के पीछे !'

भीड़ ने माइग्रेट को ओसारे की छत पर देख लिया था। चिन्ता की उत्तेजना में, वह भारी शरीर का होने पर भी, भीत पर चढ़ गया था और टूटती हुई लकड़ी की परवाह किये बगैर वह खपरैलों पर लम्बा लेट कर खिड़की तक पहुँचने की चेष्टा कर रहा था। लेकिन छत बड़ी ढालवाँ थी और वह फिसलन से बचने मे अपने नाखून खो बैठा। अगर वह पत्थर पड़ने के डर से न काँपता तो शायद वह खिड़की तक पहुँच भी जाता। भीड़, जिसे वह देख सकता था, उसके नीचे तक पहुँच चुकी थी और चिल्ला रही थी !

'बिलाव के पीछे ! बिलाव के पीछे।—मार डालो इसे।' और तत्काल उसके दोनों हाथ छूट गए, वह गेंद की तरह नीचे लुढ़क चला, नाली से पार कूदता सा उसका शरीर बीच की दीवारों मे इस प्रकार पड़ा कि वह सड़क पर जा गिरा। दुर्भाग्यवश पत्थर के एक थूम के कोने से टकरा कर उसका भेजा खुल गया। वह मर गया ! उसकी औरत ऊपर से खिड़की के पीछे पीली और घबराई अब भी उसी प्रकार देख रही थी।

पहले तो वे हक्के-बक्के रह गए। लॉतिये ठहर गया और कुल्हाड़ी उसके हाथों से छूट गई। माहे, लेवक्यू और अन्य दूकान को भूल से गए। वे एकटक दीवार की ओर देख रहे थे जहाँ से खून की पतली धारा धीरे से नीचे बह रही थी। चिल्लाहट बंद हो गई, बढ़ते हुए अन्धकार मे खामोशी छा गई।

फिर, एकाएक नारे लगने शुरू हुए। खून के नशे में उत्तेजित सी औरतें आगे दौड़ीं।

'अरे। ईश्वर अवश्य सब कुछ देखता है, अन्त में ! आह ! नारकीय कीड़ा ! यह तो मर चुका है !'

उन्होंने उसके शव को, जो अब भी गरम था, चारों ओर से घेर लिया। वे क्रूर हँसी हँसती हुई उसकी बेइज्जती कर रही थीं और उसे कोसती हुई हजारों गालियाँ दे रही थीं।

माहेदी ने भी अन्य औरतों की तरह क्रोधावेश में कहा, "मुझे तेरे ६० फ्रैंक देने थे, अब तेरा भुगतान हो गया न, चोर ! अब तू मुझे उधार देने से इन्कार

न कर सकेगा। ठहर, ठहर अन्तिम बार मैं तुझे मोटा बना दूँ ! और उसने अपने नाखूनों से कुछ मिट्टी खरोच कर दो मुट्ठियाँ भर लीं और बेरहमी से उसके मुँह में ठूँस दी।

'ले ! इसे खा ! ले ! खा ! खा ! तू हमें खाता था न।'

गालियाँ और बढ़ने लगीं, जब कि मृतक की लाश पीठ के बल पड़ी थी और उसकी बड़ी स्थिर आँखें विस्तृत आकाश की ओर जिससे रात्रि बरस रही थी• एकटक घूर रही थीं। उसके मुंह में डाली गई मिट्टी वह रोटी थी जिससे उसने दूसरों को देने से इन्कार किया था। अब वह कभी रोटी नहीं खा सकता। लोगों को भूखा मार कर उसका कोई भला नहीं हुआ।

लेकिन औरतों को उससे दूसरी बात का भी बदला लेना था। वे उसे मादा भेड़िये की तरह सूँघती हुई उसके इर्दगिर्द इस उद्देश्य से चक्कर काट रहीं थी कि वे कोई ऐसी जंगली हरकत करें जिससे उन्हें शान्ति मिल जाय।

मदर ब्रूली की तीखी आवाज सुनाई दी : 'इसे बिलाव की तरह काट डालो।'

'हाँ, हाँ, काट डालो इसे ! इसने हमे बहुत ही सताया है ! नारकीय जानवर कहीं का !'

\+ \+ \+ \+

...ऊपर खिड़की पर मदाम माइग्रेट अब भी स्थिर खड़ी थी, परन्तु डूबते हुए सूर्य की अन्तिम किरणों के नीचे उसका सफेद चेहरा ऐसा दिखाई दे रहा था मानो वह हंस रही हो। हर क्षण मार और घुड़की खाते उसकी कमर सुबह से रात तक 'लेजर' खाते में झुकी रहती थी। शायद वह हँस रही थी, जब कि औरतों का गिरोह उस नारकीय लोथड़े को अपनी छड़ी की नोक मे लटकाये, आगे बढ़ी जा रही थी।

यह वीभत्स, भयानक नज्जारा भयाक्रांत होकर देखा गया। लाँतिये, माहे और अन्य किसी को भी हस्तक्षेप का समय नहीं मिल पाया, वे इन भयानक औरतों के प्रयाण को स्थिर खड़े हो देखते ही रह गए। एस्टेमिनेट निसोन के द्वार पर कुछ सिर दिखाई दे रहे थे—रसेन्योर घृणा और उद्वेग से पीला और जाचरे और फिलोमीन, जो कुछ उन्होंने देखा था उससे किंकर्तव्य विमूढ़। दो वृद्ध, बोनेमाँ और माउक्यू, गंभीरता से अपने सिर हिला रहे थे। सिर्फ जॉली मजाक उड़ा रहा था और बीवर्ट को कोहनी से धकियाता हुआ लायडी को ऊपर देखने के लिए मजबूर कर रहा था। औरतें वापस लौट रही थीं और चक्कर काट कर

मैनेजर के घर की खिड़की के नीचे से गुजर रही थीं। वे उस दृश्य को नहीं देख पाये थे क्योंकि एक दीवार की आड़ आ गई थी इस लिए वे अँधेरे में समझ नहीं पाये।

लाँतिये ने एक बार फिर कुल्हाड़ी चमकाई; लेकिन चिन्ता के बोझ से मुक्ति नहीं मिली। यह लाश अब सड़क को रोके हुए दूकान की हिफाजत कर रही थी। बहुत से लोग पीछे रह गए। मृतक के प्रति आदर के भाव से उन्हें संतोष हो गया था। माहे मायूसी के साथ खड़ा था जब कि उसने अपने कान में भाग निकलने की बात सुनी। उसने मुड़ कर देखा तो कैथराइन को पहचाना, वह अब भी ओवरकोट ओढ़े, काली और थकी हुई थी। उसने इशारे से बात करने से मना किया। वह उनकी बात न सुन कर उसे मारने दौड़ा। निराश होकर वह हिचक रही थी और फिर लाँतिये की ओर दौड़ी!

'अपने को बचाओ! अपने को बचाओ! सिपाही आ रहे है!'

उसने भी उसका तिरस्कार करते हुए उसे धकेला। लेकिन वह हटी नहीं, उसने उसे कुल्हाड़ी फेंकने को विवश किया और सारी ताकत लगा कर दोनों हाथों से उसे घसीटती हुई दूर ले गई।

'मैंने तुमसे कहा न था कि सैनिक आ रहे है। मेरी बात सुनो। चवाल उन्हें खबर देने गया था और उन्हें लिए आ रहा है। मेरे लिए यह असह्य था। इसलिए मैं आई हूँ। अपने को बचाओ। मैं नहीं चाहती कि वे तुम्हें पकड़ ले जाँय।'

और कैथराइन उसे दूर खींच ले गई, जब कि, उसी क्षण, दूर से घोड़ों की टापों का शब्द सुनाई दिया। तत्काल एक आवाज आई, 'पुलिस! पुलिस!' वहाँ भगदड़ मच गई, सब लोग जान लेकर भागे और दो ही मिनट में सड़क इस प्रकार साफ हो गई मानो तूफान वहाँ के कूड़े को उड़ा ले गया हो। सफेद धरती पर माइग्रेट की लाश एक धब्बा बनी हुई थी। तिसोन एस्टेमिनेट के सामने अकेला रसेन्योर कष्टमुक्त-सा प्रसन्न मुख-मुद्रा में खड़ा था। और निर्जीव-प्राय मोंटसू में बुर्जुआ लोग बंद कमरों में पसीना चुआते, दाँत किटकिटाते बाहर झाँकने की हिम्मत नहीं कर पा रहे थे। बाहर, विस्तृत मैदान सघन अंधकार में डूब चुका था, सिर्फ लोहे की धमन भट्टियाँ और कोयले के भट्टे जलते हुए चमक रहे थे। पुलिस के घोड़ों की टापें नजदीक आ रही थीं। वे झुंड के झुंड आ रहे थे और अँधेरे में उनकी गिनती संभव नहीं थी। उनके पीछे मार्सेनीज के पेस्ट्री बनाने वाले का छकड़ा आखीर में पहुँचा। उसमें से एक छोटा बच्चा कूदा और उसने आर्डर का माल उतारा।

छठा भाग

१

फरवरी का पहला पखवारा बीत चला था और गरीबों पर रहम किये बगैर सख्त जाड़े की ठंड बढ़ती चली जा रही थी। एक बार पुनः अधिकारियों ने सड़कों पर दौड़ शुरू कर दी थी, लिली का राज्याधिकारी, एक एटर्नी, एक जनरल और पुलिस काफी नहीं समझी गई, मोंटसू में कब्जा करने सेना आगई थी, समूची रेजीमेंट ब्यूगिनीज और मार्सेनीज के बीच पड़ाव डाले पड़ी थी। सशस्त्र टुकड़ियाँ खानों में पहरा देती थीं और हर इंजन के पास सिपाही रहते थे। मैनेजर का विला, कंपनी का हाता यहाँ तक कि कुछ नागरिकों के घरों पर संगीनधारियों का पहरा रहता था। सड़कों पर सैन्य टुकड़ियों के इधर-उधर जाने के अलावा कुछ नहीं सुनाई देता था। वोरक्स की खान के किनारे एक सैनिक हमेशा जमा देने वाली हवा में खड़ा दिखाई देता था और हर दो घंटे के बाद संतरी की आवाज इस प्रकार सुनाई देती थी मानो वे किसी शत्रु के क्षेत्र में हों।

'कौन जाता है ?—नाम बताओ।'

कहीं भी काम चालू नहीं हुआ था, इसके विपरीत हड़ताल फैल गई थी; क्रेवेक्योर, मिराओ, मेडेलेन भी वोरक्स की ही भाँति कुछ भी उत्पादन नहीं करते थे। फ्यूट्री-कैंटल और विक्टियारो में हर सुबह आदमियों की संख्या घटती जा रही थी, यहाँ तक कि सेंट-टामस में, जो अब तक अछूता था, आदमियों की जरूरत पड़ने लगी थी। अब इस बल-प्रदर्शन का खामोश विरोध हो रहा था। इससे खनिकों के आत्मामिमान को ठेस पहुँच रही थी और वे नाराजी जाहिर करते थे। चुकन्दर के खेतों के बीच बस्तियाँ उजाड़ प्रतीत होती थीं। कोई भी खनिक नहीं दिखाई देता था। यदाकदा अकस्मात कोई मिल भी जाता तो वह लाल पायजामों के सामने कनखियों से देखता हुआ अपना सिर नीचा कर लेता था। और इस मनहूस गहरी शांति मे, बन्दूकों के विरुद्ध निहत्थे विरोध में जंगली जानवरों के पिंजरे में बंद एक मजबूरी की अनुशासनशीलता थी, अगर उनसे पीठ फेर ली जाय तो वे उसकी गर्दन पर झपटने को तैयार बैठे थे। कंपनी, जो कि काम ठप हो

जाने से बरबाद हो रही थी, बेल्जियन सीमान्त पर बोरीनेज मे मजदूर लाने की बात करती थी परन्तु वह हिम्मत नहीं कर पा रही थी; इस लिए घरों में बंद खनिकों और सैनिकों द्वारा संरक्षित खानों के बीच लड़ाई पूर्ववत् जारी थी।

उस दुर्दान्त दिवस के दूसरे दिन एकाएक शांति छा गई, इस प्रकार के आतंक को छिपाते हुए क्षति और नृशंसता के सम्बन्ध में यथासंभव चुप्पी रखी गई थी। जो जाँच हुई थी उससे पता चला था कि माइग्रेट गिरने से मरा है और लाश की भयावह दुर्गति का मामला दबा ही रह गया था, जिसके बारे में वहाँ तरह-तरह की बातें फैल चुकी थीं। अपनी ओर से कंपनी यह कबूलना नहीं चाहती थी कि उसे कितना नुकसान उठाना पड़ रहा है। ग्रीगोरे दम्पत्ति नहीं चाहते थे कि उनकी लड़की गवाही दे। फिर भी कुछ गिरफ्तारियाँ हुईं; हमेशा की भाँति वही लोग पकड़े गए जो बेवकूफ और डरे हुए थे और कुछ भी जानकारी नहीं रखते थे। गलती से पेरी भी हाथों मे हथकड़ी डालकर मार्सेनीज तक ले जाया गया जिससे उसके साथियों का बड़ा मनोविनोद हुआ। रसेन्योर भी, दो सिपाहियों द्वारा करीब-करीब गिरफ्तार ही हो चुका था। प्रबन्धकों ने नामों की सूची बनाकर सार्टिफिकेट वापस करने से ही संतोष कर लिया था। माहे और लेवक्यू के अलावा उस बस्ती के ३४ अन्य खनिकों को सार्टिफिकेट वापस मिले थे। सब सस्ती लातिये के खिलाफ बरती जा रही थी, जो उस संध्या से ही गायब था जब वह घटना हुई थी। उसकी चारों ओर तलाश हो रही थी लेकिन उसका कोई सूत्र नहीं मिल पाया था। चवाल ने, अपनी ईर्ष्या की वजह से, उसे अभियुक्त करार दिया था, जबकि कैथराइन के अनुरोध पर उसने दूसरों के नाम नहीं बताये थे। दिन गुजरते जा रहे थे। अभी कुछ भी तय नही हो पाया था; और बड़े बुझे हुए दिल से सभी अन्त की राह जोह रहे थे।

मोंटसू में, इस दौरान मे, वहाँ के निवासी हर एक रात को चौक कर जाग उठते थे, उनके कान काल्पनिक खतरे से बज उठते थे और उनके नाक के नथुनों में बारूद की गंध आती थी। उनकी परेशानी अब्बे जोइरे के स्थान पर आये हुए नये पादरी अब्बे रेने के धार्मिक प्रवचनों से और भी बढ़ गई थी क्योंकि वह विनम्र और शांतप्रिय आदमी था। वह इन घृणित लुटेरों की तरफदारी करता हुआ मध्यम वर्ग की तीव्र आलोचना किया करता था। हड़तालियों की ज्यादती को माफ करता हुआ वह सारी जिम्मेदारी इस अभिजात वर्ग पर ही थोपता था। यह अभिजातवर्ग ही है जिसने चर्च को उसकी पुरानी स्वतंत्रता से वंचित बनाया है ताकि वह उसका दुरुपयोग कर सके। इसी ने इस दुनिया को अन्याय और यातनाओं का एक अभिशप्त स्थान बना दिया है। यह अभिजातवर्ग ही है जो अपनी नास्तिकता से इस दुनिया को एक बड़ी दुर्गति की ओर घसीट रहा है। वह धनिकों को भी डराने की

हिम्मत रखता था। उसने उन्हें चेतावनी दी थी कि अगर वे ईश्वर की वाणी सुनने से इन्कार करने को अपनी जिद पर अड़े रहे तो ईश्वर निःसंदेह, गरीबों की तरफ हो जायगा। वह उनसे उनकी दौलत छीन लेगा जिसे वे ईश्वर की सत्ता को न मानते हुए उपभोग करते चले आ रहे है और अपनी सत्ता की विजय के उपलक्ष्य में उसे गरीबों में बाँट देगा। धार्मिक लोग इस बात से काँप उठते थे। वकील कहता था कि यह बेहूदे किस्म का समाजवाद है। सभी क्यूरे (पादरी) को गिरोह के आगे देखते थे, एक क्रास चमकाते हुए और जोरदार प्रहार द्वारा १८वीं शताब्दी के बुर्जुआ समाज को ढहाते हुए।

एम० हनेब्यू को जब सूचित किया गया तो उसने इतना कह कर संतोष कर लिया : 'अगर उसने हमे ज्यादा परेशान किया तो विशप (बड़ा पादरी) हमे उससे मुक्ति दे देगा।'

और जब कि इस क्षेत्र के एक कोने से लेकर दूसरे कोने तक आतंक छाया हुआ था, लॉतिये रिक्वीलां की तह मे, जॉली के घर पर, धरती के नीचे रह रहा था। वहीं वह छिपा हुआ था। कोई भी उसे इतना समीप नहीं जानता था। वह वहां आराम से रहता था क्योंकि खाने-पीने का सामान वहाँ पहले से ही काफी मात्रा में भरा हुआ था, जिन थी, सूखी हुई काड मछली थी और हर किस्म का सामान था। पुआल का नर्म बिस्तर था। इस समान रहने वाले तापमान मे हमेशा एक सुखद गरमी रहती थी। हाँ, कभी कभी प्रकाश की कमी पड़ जाती थी। जॉली ने अपने को भोजन की सामग्री जुटाने वाला बना लिया था। एक जंगली की फुरती और चालाकी से उसे पुलिस का मजाक उड़ाने मे आनंद मिलता था। वह उसके लिए पोमेड तक ले आता था लेकिन मोमबत्ती पर हाथ साफ नहीं कर पाया था।

पाँचवें दिन के बाद लॉतिये ने भोजन के समय के अलावा कभी बत्ती नही जलाई। वह अंधेरे में निगल नहीं पाता था। यहाँ हमेशा रहने वालो रात्रि उसका मुख्य कष्ट थी। इस सुरक्षित स्थान में वह सोया भी रहे तो कब तक। रात्रि ने इससे पहले कभी भी उसके दिमाग पर इतना बोझ नहीं डाला था। उसे ऐसा लगता था कि वह अपने विचारों मे ही खत्म हो जायगा। अब वह चोरी पर जी रहा था। अपने साम्यवादी सिद्धान्तों के बावजूद, पुरानी शिक्षा का असर जाग्रत हुआ और सूखी रोटी के अपने हिस्से पर ही उसने संतोष किया। लेकिन किया क्या जाय ? उसे जिन्दा तो रहना ही है और अभी उसका काम भी पूरा नहीं हुआ है। दूसरे उसे शर्म आती थी जिन पीने के बाद जाहिल मदान्धता के प्रति पश्चातांप के रूप में, जिसे उसने खाली पेट उस भयंकर जाड़े मे पिया था और जिसके नशे में

वह चाकू लेकर चवाल पर टूट पड़ा था। इससे उसके मन में एक अज्ञात आतंक सा छा गया। माता-पिता से बिरासत के रूप में मिली यह खराबी उसके खून में आ गई थी कि शराब पीने के साथ ही उसकी इच्छा किसी को मार डालने की होती थी और वह उसे रोक नहीं पाता था। तब क्या उसका अन्त हत्यारे के रूप में होगा ? जब उसने शरण पाली थी तो जमीन के भीतर की इस अनवरत शांति में वह एक अपराधी की नींद सोता था, भरपेट भोजन पा विजित सा। उसकी उदासी बनी रही, वह वहाँ विजित की जिन्दगी बिता रहा था, उसके मुंह में कड़ुवाहट और सिर में भारीपन बना रहता था जैसा कि बड़ी देर तक नाचरंग मे रहने के बाद सुबह होता है। एक सप्ताह गुजर गया। माहे, जिसे खबर दे दी गई थी, मोमबत्ती का इन्तजाम न कर सका। उसे भोजन के समय भी रोशनी के सुख से वंचित रहना पड़ा।

अब लॉतिये घंटों यहाँ पुआल में पड़ा रहता था। उसके मन मे पहली बार तरह-तरह के विचार आते थे; एक श्रेष्ठता की भावना, जो उसे उनके साथियों से अलग कर देती थी। उसे कभी तो ऐसा अहसास नही हुआ था कि वह औरों से ज्यादा समझ रखता है। वह अपने मन में विचार कर रहा था कि खानों को जाने के उस गुस्से से भरे प्रयाण पर क्यों वह अब एक प्रकार की गलती का अनुभव कर रहा है ? वह उसका उत्तर सोचने-समझने की हिम्मत नही कर पा रहा था, उसका स्मरण ही उसे अप्रिय लगता था, उसमे से उसे दुर्दान्त जीवन की गंध आती थी। अंधेरे की परेशानी के बावजूद वह अब बस्ती मे लौटने के समय को नफरत से देखने लगा था। कितनी उबकाई लाने वाला वह जीवन है, सभी लोग जानवरों की तरह एक जगह रहें। कोई ऐसा वहाँ नही है जिससे वह राजनीतिक चर्चा कर सके। एक पशुवत अस्तित्व है सबका। हमेशा वही प्याज भूने जाने की गंध जो गला घोंटने वाली होती है ! वह उनके दायरे को और विस्तृत बनाना चाहता था, उन्हें मालिक बनाकर उन्हें मध्यमवर्ग के आराम और सलीके तक ऊँचा उठाना चाहता था; लेकिन इस सब में कितना समय और लगेगा ? इस भूख की कैद में विजय का इन्तजार करने का साहस उसमे नहीं था। धीरे-धीरे उसके नेता होने का अहंकार, उनके बदले लगातार सोचने की व्यस्तता ने उसकी आत्मा में उन बुजुंआ लोगों की बू ला दी थी जिनसे उसे दिली नफरत थी।

जॉली, एक साँझ को, एक मोमबत्ती का टुकड़ा ले आया जो एक गाड़ीवान की गाड़ी से चुराया गया था। इससे लॉतिये को बहुत बड़ी राहत मिली। जब अन्धकार उसे पागल बनाने लगता था तब वह एक क्षण को उसे जला लेता था और फिर विचारों को दूर भगाने के बाद वह उसे बुझा देता था। जीवन के लिए वह रोशनी

की इतनी ही आवश्यकता समझने लगा था जितनी कि रोटी की। सूनसानी उसके कानों को बजाती रहती थी, चूहों के इधर-उधर भागने की आवाज, पुरानी लकड़ी के टूटने की चरमराहट, मकड़ी की जाला बुनने की धीमी आवाज मात्र वह सुन सकता था। इस शून्यता में वह आँखें खोले हुए पुराने एक मात्र विचार पर लौट आता था कि—उसके साथी ऊपर क्या कर रहे होंगे ? उसका इस तरह पलायन स्वयं उसे हद दर्जे की कायरता लगती थी परन्तु वह यह भी सोचता था कि अगर वह इस तरह छिपा है तो इसलिए कि वह मुक्त रहकर सलाह दे सके या काम कर सके। लम्बे अर्से तक एक ही बात को सोचते रहने से उसकी महत्वाकांक्षा स्थिर हो गई थी। अच्छी स्थिति आने का इन्तजार करता हुआ वह प्लूचर्ड बनना पसंद करता था और चाहता था कि शारीरिक श्रम छोड़कर राजनीति ही किया करे ; परन्तु अकेले, एकान्त कमरे में, यह बहाना लेकर कि दिमागी मेहनत में पूरी तन्मयता और एकान्त की जरूरत होती है।

दूसरे सप्ताह के आरंभ में, जब बच्चे ने यह बताया कि पुलिस यह समझती है कि वह बेल्जियन की ओर चला गया है, तब अंधेरा होने पर उसने इस गोह से निकलने का साहस किया। वह स्थिति का अन्दाजा लगा कर यह निश्चय कर लेना चाहता था कि प्रतिरोध अब भी चल सकता है अथवा नहीं। उसे स्वयं अपनी सफलता पर संदेह हो चला था। हड़ताल में पहले भी वह परिणाम के प्रति अनिश्चित था और वह महज परिस्थितियों के आगे झुक गया था; और अब विद्रोह के नशे में उसका पुराना संदेह लौट आया था। वह कंपनी को झुकाने में विफल हो रहा था। लेकिन अभी वह स्वयं अपने मन में इस बात को कबूल करने को तैयार नहीं था। जब वह पराजय के उत्पीड़न की सोचता और यह सोचता कि इन सब विपत्तियों की जिम्मेदारी उस पर आयेगी तो वह बेचैन हो उठता था। हड़ताल का अन्त क्या स्वयं उसका अन्त नहीं है ? उसकी महत्वाकांक्षाओं का खून; खान के पुराने जानवरों वाले जीवन में फिर उसका लौटना और बस्तियों का नारकीय जीवन आदि का वगैर अन्दाजा आँके वह फिर अपने आत्मविश्वास के साथ यह सिद्धकर देना चाहता था संघर्ष अब भी संभव है। श्रम की बहादुराना खुदकशी के आगे वह पूंजी भी नष्ट होने के करीब है।

समूचे क्षेत्र में, वस्तुतः, व्यापक बरबादी की प्रतिध्वनि के अलावा और कुछ नहीं था। रात्रि में, जब वह जंगल से निकले एक भेड़िये की भाँति इस काले प्रदेश में चक्कर काटता था, तो उसे मैदान के एक कोने से दूसरे कोने तक दीवालियापन की कराह सुनाई देती थी। जब वह सड़कों की तरफ से निकलता तो उसे बंद, निर्जीव मृतप्राय कारखाने दिखाई देते थे। चीनी कारखानों को

विशेष क्षति पहुँची थी; होंटन चीनी मिल और फाविले कारखाने में पहले आदमी हटाने के बाद में उन्हें बंद ही कर देना पड़ा था। डोटिले नामक आटा मिल, जो आखिरी मिल बनी थी, पिछले दूसरे शनिवार को बंद हो चुकी थी, और ब्लूजे रस्से का कारखाना, तालाबंदी से पूर्ण बरबाद हो चला था। मार्सेनीज की ओर स्थिति दिन पर दिन खराब होती जा रही थी। गागेवाँ काँच के कारखाने में सर्वत्र आग बुझ गई थी। सोनविले कारखाने से रोज आदमियों की छँटनी हो रही थी। फोर्जेज की तीन धमन भट्टियों में सिर्फ एक यही चालू थी और क्षितिज पर कोयले के भट्टों की कोई भी बैटरी जलती नहीं दीखती थी। पिछले दो वर्षों से चल रहे औद्योगिक संकट को, मोंटमू के खनिकों की हड़ताल ने और भी बढ़ा दिया था और उसके पतन को संभव बना दिया था। इस संकट के अन्य कारण अमेरिका से आर्डरों का मिलना बंद होना और लगाई गई पूँजी अत्यधिक उत्पादन में फँस जाना, अब कुछ भट्टों के लिए, जो कि अब भी जलते हुए रखे गए थे, अकल्पित कोयले की कमी में बदल गये थे जिससे स्थिति और और भी खराब हो चली थी। इससे सर्वाधिक चिन्ता हो चली थी क्योंकि इंजनों की खुराक न मिलने से खानों का काम नहीं चल सकता था। आम चिन्ता से डर कर पहले तो कम्पनी ने उत्पादन कम कर खनिकों को भूखा मार डाला जिसके परिणाम स्वरूप दिसम्बर के अन्त तक खानों का सतरह में कोयले का एक टुकड़ा भी नहीं बचा। यह औद्योगिक संकट इतनी तेजी से बढ़ा कि इसका प्रभाव पड़ोसी शहरों पर पड़ा और वहां के बैंकर भाग निकले थे।

एक सड़क के मोड़ पर अक्सर लॉतिये कड़कड़ाती हुई रातों में खान के किसी भाग के टूट के नीचे गिरने की आवाजें सुनने के लिए ठहरा करता था। वह अंधेरे में गहरी सांस लेता हुआ विनाश की खुशी महसूस करता था। वह आशा करता था कि पुरानी दुनिया के खत्म हो जाने पर एक दिन आयेगा जब कि एक भी धनी खड़ा नहीं रह सकेगा। समानता की हँसिया हर चीज को समतल बना देगी। परन्तु इस सामूहिक हत्याकांड में कंपनी की खानों की ओर उसका विशेष ध्यान था। वह अंधकार में एक के बाद एक, कंपनी की सभी खानों का चक्कर काटता था और नई दुर्घटना का पता लगाने की उसे खुशी होती थी। लम्बे अर्से तक गलियारों के बेमरम्मत छूटे रहने की वजह से जमीन के धँसने की दुर्घटनायें निरंतर बढ़ती हुई गंभीर चिन्ता का कारण बन रही थी। मिराग्रो के उत्तरी गलियारे के ऊपर जमीन इस कदर बैठ गई थी कि जंसलो रोड पर सौ मीटर का टुकड़ा गायब हो गया था, मानो भूकम्प से हुआ हो। इस दुर्घटनाओं से उड़ने वाली अफवाहों से घबरा कर कंपनी ने धंसे हुए खेतों के मालिकों को, बगैर किस

प्रकार की सौदेबाजी किये, मुआवजा दे दिया था। क्रेवेक्योर और मेडेलेन, जो नयी, स्थिति बदलने वाली चट्टानों पर बनाये गए थे, नित्य प्रति बंद होते जा रहे थे। कहा जाता था कि दो कप्तान विक्टियोर में दब गए हैं, फ्यूट्री कैंटल में पानी भर आया है। सैंट टामस में, जहाँ कि गलियारों मे चारों ओर थूम टूटते जा रहे हैं, एक गलियारे में एक किलोमीटर तक दीवार चुनना अनिवार्य हो गया है। इस प्रकार प्रति घंटे भारी रकम खर्च हो रही थी। शेयर होल्डरों के लाभांश में भारी कटौती की जा रही थी। खानों में तेजी से बरबादी बढ़ रही थी जो कि अन्त में उस प्रसिद्ध मंटसू दीवार को चाट कर ही दम लेने वाली थी जो एक शताब्दी में तीन सौ गुना ही बढ़ गया था।

इन बराबर पड़ने वाले प्रहारों के बीच लॉतिये की आशा फिर जाग उठी थी। उसे विश्वास हो चला था कि तीसरे महीने हड़ताल के खींच दिये जाने पर किसी अज्ञात आसन पर दुबक कर बैठा यह आदमखोर जानवर दम तोड़ देगा। वह जानता था कि मोंटसू की गड़बडी के बाद पेरिस के समाचार पत्रों मे बड़ी उथल-पुथल मची। सरकारी समाचार-पत्रों और विरोधी पत्रों में जोरदार विचार चला। लोमहर्षक विवरण छापे गए जो कि खास तौर से इंटरनेशनल के खिलाफ थे, जिसे पहले प्रोत्साहन देने के बाद अब सरकार उससे घबराने लगी थी। डाइरेक्टर इस ओर मे अधिक देर तक आँखें मूँदे रहने की हिम्मत न कर सके थे और दो डाइरेक्टरों ने यहाँ आकर जाँच भी की थी, परन्तु वे इसके कारणों का पता लगाये बगैर इसके प्रति जरा भी दिलचस्पी न रखते हुए तीन दिन बाद ही यह घोषणा कर चले गए थे कि हर चीज यथासंभव ठीक चल रही है। और लोगों से उसे पता चला था कि अपनी जाँच के दौरान मे उन महानुभावों ने बैठे-बैठे सब खानापूरी की थी और ऐसे कार्यों मे व्यस्त रहे जिनके बारे मे उनमे से किसी ने भी कुछ नही बताया। उसकी उन लोगों के बारे में राय थी कि उन्हे अब विश्वास नही रहा है, वे निराश होकर अपनी पराजय देखने यहाँ आये थे। अब उसे अपनी जीत के बारे मे और भी दृढ़ विश्वास हो चला था।

लेकिन दूसरी रात लॉतिये की निराशा फिर लौट आई। कंपनी की पीठ इतनी मजबूत है कि उसे सहज ही नहीं तोड़ा जा सकता; वे लाखों का नुकसान सहन कर सकते है, लेकिन बाद मे वे मजदूरों की रोटी से छीन कर उन्हें वसूल कर लेंगे। उस रात जीनवर्ट तक गश्त करने पर उसने एक ओवरसीयर की की बात मे सच्चाई का अनुमान लगा लिया, उसने बताया था कि वण्डामे को मोंटसू को बेचने की बात चल रही है। डेन्यूलिन के घर पर जो दुर्गति थी वह

दयनीय थी। धनी की दुर्गति; बाप अपनी असमर्थता से बीमार था और लड़कियाँ पैसा बचाने के लिए व्यापारियों से झगड़ा किया करती थीं। भूखी बस्तियों में मध्यम वर्ग के घरों से कम उत्पीड़न था। जीनवर्ट में काम शुरू हो गया था, और गेस्टन मेरी में पंप को बदलना जरूरी हो गया था। बहुत शीघ्रता से काम करने पर भी खान में पानी भरना शुरू हो गया था और बड़ी रकम खर्च करने की जरूरत थी। डेन्यूलिन ने आखीर में ग्रीगोरे से दस लाख फ्रैंक कर्ज माँगने का खतरा उठाया था और उनकी अस्वीकृति से, गो कि उसे ऐसी आशंका पहले से ही थी, वह पूर्ण रूप से निराश हो गया : उन्होंने उसे असंभव संघर्ष से बचाने के लिए ही उसे कर्ज देने से इन्कार करते हुए उसे खान बेच डालने की सलाह दी थी। वह हमेशा की तरह गुस्से से उसे अमान्य कर रहा था। हड़ताल का खमियाजा भुगतने की बात से उसे ज्वर सा चढ आता था। पहले तो उसने सोचा कि वह इस मिरगी के समान रोग से मर जायगा। लेकिन किया क्या जाय ? उसे डाइरेक्टरों के प्रस्ताव को सुनना ही पड़ा। वे उसको दबा रहे थे। वे इस बेहतरीन शिकार का दाम घटा रहे थे—इसकी फिर से मरम्मत की गई, नई मशीनरी लगाई गई खान का, जिसमें पूँजी की कमी उत्पादन को रोके हुए थी। अगर उसे अपने ऋणदाताओं को देने भर को मिल जाय तो यह उसका सौभाग्य होगा। मोटसू में दो दिन तक वह डाइरेक्टरों से जूझता रहा। वह चुपचाप उसकी मजबूरी से फायदा उठाने के उनके तौर-तरीकों पर बेहद क्रोधित हो बड़े जोर-जोर से उनकी बात अस्वीकार कर आया, और बात वहीं रुक गई। वे धैर्यपूर्वक उसकी आखरी गुर्राहट के खत्म होने के बाद उसके दम तोड़ने का इन्तजार करते हुए पेरिस लौट गए। लाँतिये को क्षति के इस मुआवजे की खबर लग गई थी और बड़े पूँजीपतियों की इस असीम शक्ति से वह निरुत्साह हो चला था जो कि संघर्ष में इतने तगडे होते हैं कि उनके हाथ पड़ने वाले छोटे पूँजीपतियों को निगलते हुए और मोटे पड़ जाते है।

दूसरे दिन, सौभाग्य से, जॉली उसके लिए एक अच्छी खबर ले आया। वोरो में ईषा (सेफ्ट) की टबिंग के टूटने का खतरा हो चला था। सभी जोड़ों से पानी अन्दर आ रहा था; जल्दी-जल्दी में बढइयों का एक गैंग मरम्मत के काम में लगा दिया गया था।

अब तक लाँतिये वोरो की ओर जाना टाल जाता था। उसे सचेत कर दिया गया था कि वहाँ खान के किनारे मैदान के ऊपर हमेशा एक संतरी पहरा देता है। उनकी निगाह से नहीं बचा जा सकता था क्योंकि वह ऊँचे में एक झंडे की तरह जमा रहता था। सुबह तीन बजे के करीब आसमान मेघाच्छादित हो चला

था। वह खान की तरफ चला गया, जहाँ कुछ साथियों ने उसे टबिंग की खराब हालत से अवगत कराया। उनका ऐसा मत था कि इसको नये सिरे से लगाने की जरूरत है, जिससे तीन महीने के लिए कोयले का उत्पादन रुक जायगा। बड़ी देर तक वह वहाँ चक्कर काटता हुआ ईषा पर बढइयों की मुंगरियों की चोटों को सुनता रहा। वह घाव, जिस पर पट्टी बाँध दी गई थी, उसके दिल को प्रफुल्लित कर रहा था।

जब वह तड़के सूरज निकलने के बाद वापस जाने लगा तो उसने देखा कि संतरी अब भी खान-किनारे है। इस बार तो वह अवश्य देख लिया जायगा। वह चलते हुए इन सिपाहियों के बारे मे सोच रहा था, जो जनता के बीच से लिए गए थे, और जनता के खिलाफ ही हथियार-लैस बनाये गए थे। क्रांति की विजय कितनी आसान हो अगर सेना एकाएक उसके पक्ष मे हो जाय। अगर बैरकों के किसान और मजदूर यह स्मरण रखें कि उनकी पैदाइश कहाँ से है तो इतना ही काफ़ी होगा। मध्यम वर्ग को सबसे बड़ा खतरा, भारी भय यही था। उनके दाँत किटकिटाने लगते थे जब वे फौजों के सम्भाव्य विरुद्ध होने की बात सोचते थे। दोही घंटे मे वे साफ हो जायंगे। इस आराम और ऐश की अपनी खुशी-सुख से वंचित कर दिये जायंगे। यह कहा जाता था कि तमाम रेजीमेन्टों मे समाजवाद फैल चुका है। क्या यह सच है? जब न्याय अवतरित होगा, तो मध्यम वर्ग द्वारा बाँटे गए कारतूसों के लिए उसे धन्यवाद देना होगा? और एक दूसरी आशा से प्रेरित होकर नवयुवक स्वप्न देखने लगा कि खानों मे पहरा देने वाली यह रेजीमेंट, हड़तालियों की तरफ हो जायगी। कंपनी के हर एक आदमी को मारकर, अन्त में खान खनिकों को दे देगी।

तब उसे भान हुआ कि वह खान के किनारे चढ़ रहा है। उसका दिमाग इन्हीं विचारों से भरा हुआ था। तब वह क्यों न सिपाही से बात कर ले? वह जान सकेगा कि उसके विचार क्या हैं। बड़ी लापरवाही के साथ वह और करीब आने लगा मानो वह कूड़े में से पुरानी लकड़ी बटोर रहा हो। संतरी स्थिर बना रहा।

'आह! मेट! क्या बेहूदा मौसम है?' लॉतिये अन्त मे बोला 'मैं सोचता हूँ कि बरफ गिरेगी।'

वह एक ठिगने कद का, बहुत गोरा, लाल झुर्रियों वाले पीले चेहरे का व्यक्ति था और अपना सैनिक ओवरकोट एक रंगरूट की अकुशलता से पहने हुए था।

'हाँ, शायद, बरफ जरूर गिरेगी, मैं सोचता हूँ' उसने धीरे से उत्तर दिया।

और अपनी नीली आँखों से वह नीले आसमान की ओर ताकने लगा। इस कुहासे वाली सुबह मैदान में शीशे की तरह तुषार बरस रहा था।

'कैसे बेवकूफ वे लोग हैं कि तुम्हें यहाँ जमने के लिए छोड़ दिया है !' लॉतिये कहता चला गया, 'कोई सोचता होगा कि कज़्ज़ाक आ रहे हैं। और फिर यहाँ हमेशा झंझा बहती है।'

ठिगना सिपाही बिना शिकायत किये काँप उठा। वहाँ सूखे पत्थरों की एक छोटी सी केबिन थी, जहाँ तूफान के समय बुड्ढा बोनेमाँ शरण लिया करता था। लेकिन आदेश था कि खान किनारे की चोटी न छोड़ी जाय। सिपाही उधर से हटने की हिम्मत नहीं कर सकता था। उसके हाथ ठंढ से इतने अकड़ गए थे कि वह अपने हाथ की बन्दूक का अहसास नहीं कर सकता था। वह बोरो की रक्षा करने वाली साठ सिपाहियों की गारद का सिपाही था और यह संतरी की सख्त ड्यूटी अवसर पाली से आती रहती थी। एक बार पहले वह सुन्न पाँव लिए वहाँ ड्यूटी दे चुका था। उसका काम ही ऐसा था, हुक्म की पाबंदी और वह इन प्रश्नों का उत्तर एक ऊँघते हुए बच्चे के समान अपुष्ट स्वर में दे रहा था।

लॉतिये राजनीति पर बातचीत के लिए लगभग पन्द्रह मिनट उसके साथ व्यर्थ प्रयास करता रहा। वह 'हाँ' या 'ना' में जवाब देता हुआ ऐसे बोल रहा था मानो वह समझ ही न रहा हो। उसके कुछ साथियों का कहना था कि उनका कप्तान 'रिपब्लिकन' है; उसकी कोई भी राय नहीं थी, उसके लिए सब बराबर थे। अगर उसे गोली चलाने को कहा जायगा तो वह गोली चलायेगा ताकि उसे सजा न मिले। नवयुवक सुनता रहा—सेना के खिलाफ आम जनता मे नफरत की भावना से—इन भाइयों के खिलाफ जिनके दिलो-दिमाग उनके बूतड़ों के नीचे लाल धारियों वाली पतलून आ जाने से बदल गए है।

'तब तुम्हारा नाम क्या है ?'

'जूलेस।'

'और रहने वाले कहाँ के हो ?'

'प्लोगोफ का, वहाँ !'

और उसने अकस्मात अपनी बाँह फैला दी : वह ब्रिटेनी में कहीं है, ज्यादा वह नहीं जानता। उसका पीला चेहरा प्रसन्न हो उठा। वह कुछ आत्मीयता को महसूस कर हँसने लगा।

'मेरी माँ और एक बहिन है। वे मेरा इन्तजार करते होंगे। आह ! जैसे कल

की बात हो। जब मैं वहाँ से चला तो वे ओन्टा-इ-अब्बे तक छोड़ने आईं। हमें लापालमैक तक घोड़ा किराया करना पड़ा; ओ डार्ने पहाड़ी पर तो उसके पाँव ही टूट गए होते। चचेरा भाई चार्ल्स डिब्बों में भरा हुआ मसाला लगा मांस लिए हमारा इन्तजार कर रहा था, लेकिन औरतें बहुत रो रही थीं और वह हमारे गले में ही अटक गया। हे ईश्वर! हमारा घर कितनी दूर पड़ता है!'

उसकी आँखें भर आई थीं, गोकि वह अब भी हँस रहा था। प्लोगोफ का रेतीला, दलदली इलाका, राज का तूफानी, जंगली क्षेत्र, किसी खुशनुमा दिन चमकीली धूप में, रोशनी के नीचे दीखता महसूस हो रहा था।

'तुम क्या सोचते हो?' उसने पूछा, 'अगर मुझे कोई दण्ड नहीं मिला तो क्या मुझे दो वर्षों में एक महीने की छुट्टी मिल जायगी?'

तब लॉतिये उस इलाके की बात करने लगा जिसे उसने तब छोड़ा था जब वह बहुत छोटा था। रोशनी बढ़ गई थी और हिमानी कतरे मटमैले आसमान से बरसने से लगे थे। अन्त में उसे जॉली को देखकर चिन्ता हुई। वह लॉतिये को वहाँ देख, आश्चर्यचकित सा, झाड़ियों के पीछे दुबका बैठा था और संकेत से उसे बुला रहा था। सिपाहियों से भाईचारा कायम करने के इस स्वप्न से क्या लाभ? इसमें वर्षों लगेंगे। यकायक वह जॉली के संकेत को समझ गया। संतरी का पहरा बदलने वाला था और वह दौड़ता हुआ रिक्वीलां की कंदरा में छिपने के लिए चला गया। अपनी हार की निश्चितता से उसका दिल बैठा जा रहा था। वह छोटा बच्चा भी उसके साथ-साथ भागता हुआ एक सैनिक को गाली दे रहा था जिसने संतरी को उन पर गोली चलाने के लिए बुलाया था।

खान-किनारे की चोटी पर जूलेस स्थिर खड़ा गिरते हुए हिम के कतरों की ओर देख रहा था। सार्जेन्ट अपने सैनिकों के साथ वहाँ पहुँच रहा था और नियम के अनुसार पुकार का आदान प्रदान हुआ।

'कौन जाता है? —संकेत बताओ?'

और उन्होंने फिर भारी बूटों से कवायद की आवाज़ सुनी। मानो वे किसी विजित इलाके को रौंद रहे हों। प्रकाश बढ़ जाने के बावजूद बस्तियों में कोई जीवन प्रतीत नहीं होता था। खनिक मौन क्रोध में सैनिकों के बूटों के नीचे दबे प्रतीत होते थे।

२

दो दिनों से लगातार हिम गिर रहा था। सुबह से हिम गिरना बन्द हुआ था और पाले से यह विस्तृत चादर जम गई थी। इस कोयले वाले मुल्क में, जहाँ की सड़कों, दीवारों और पेड़ों में कोयले की काली धूल भरी रहती थी, अब सर्वत्र सफेदी थी। जिधर देखो सफेदी का कोई अंत नज़र नहीं आता था। ब्यू-सेंट-क्वारेंट बस्ती में बरफ के नीचे चिमनियों से धुंवां नहीं निकल रहा था। घरों में इतनी ठंढक थी जैसी सड़क के पत्थरों मे। बिना आग के इन मकानों की छतों में बरफ की मोटी तह जमी हुई थीं। सफेद मैदान में यह बस्ती सफेद चौरस पत्थरों की एक खान सी प्रतीत होती थी। यह मृत गाँव शव-वस्त्र से ढँका प्रतीत होता था। सड़कों से गुजरने वाले सैन्य दस्तों के बूटों से कीचड़ के निशान मात्र बन गए थे।

माहे परिवार ने बचे-खुचे कोयले पिछली रात जला डाले थे और ऐसे भयंकर जाड़े में, जब कि गौरैया तक घास का एक तिनका नहीं पा सकती थी, खान-किनारे कोयला बीनने की बात सोचना ही फिजूल था। अलजीरे, जिसने जिद कर अपने नन्हे सुकुमार हाथों से बरफ खोदी थी, अब मृत्यु शैय्या पर पड़ी थी। माहेदी उसे चादर के एक टुकड़े मे लपेटे डाक्टर वण्डरहेगन का इन्तजार कर रही थी, जिसे बुलाने वह दो बार हो आई थी परन्तु वह घर पर नहीं मिला था। डाक्टर के नौकर ने आश्वासन दिया था कि रात होने से पेश्तर डाक्टर बस्ती मे आयेगा और माँ खिड़की के सामने खड़ी बाट जोह रही थी। छोटी बच्ची, जिसने ऐसा ख्याल कर कि नीचे ठंढी अँगीठी के सामने यहाँ से अच्छा रहेगा, नीचे पहुँचाये जाने की इच्छा जाहिर की थी, कुर्सी पर पड़ी काँप रही थी। उसके सामने पड़ा हुआ बुड्ढा बोनेमाँ, जिसके पाँव फिर सूज आये थे, सोता प्रतीत होता था। जॉली के साथ भीख माँगने सड़को पर निकले हुए लीनोरी और हेनरी मे से कोई भी लौट कर नहीं आया था। माहे अकेला इस खाली कमरे में भारी, थके कदमों से चहल कदमी कर रहा था और हर बार मुड़ने पर वह दीवार से टकराता-सा उस जानवर की भाँति हतबुद्धि था, जो अपना पिंजरा न देख पा रहा हो। चिराग भी बुझ चला था; लेकिन बाहर से हिम की प्रति-च्छाया इतनी चमकीली थी कि रात्रि के बढ़ जाने पर भी उससे कमरे में धुंधलका प्रकाश हो रहा था।

बूटों की आवाज हुई और लेवक्यू की औरत ने हवा के एक तेज झोंके की तरह द्वार खोला और देहरी से ही माहेदी पर चिल्लाने लगी :

'तब यह तुमने कहा था कि मैंने अपने किरायेदार के साथ सोने के लिए उससे बीस सूज माँगे थे ?'

माहेदी ने नकारात्मक रूप से सिर हिलाया : 'मुझे परेशान मत करो। मैंने कुछ भी नहीं कहा, और तुमसे ऐसा किसने कहा ?'

'वे लोग कहते हैं कि तुमने ऐसा कहा; इससे तुम्हें मतलब नहीं कि वह कौन है। तुमने यह भी कहा कि तुम दीवार के पीछे से हमारी गंदी हरकतें सुनती हो, और वह गंदगी तुम्हारे घर में आती है क्योंकि मैं हमेशा ऐसा करती हूँ। बताओ तो क्या तुमने ऐसा नहीं कहा, क्यों ?'

औरतों के लगातार आपस में एक दूसरे की बुराई करते रहने से प्रतिदिन इस प्रकार के झगड़े हुआ करते थे। विशेषकर उन परिवारों के बीच जो अगल-बगल रहते थे, प्रतिदिन झगड़ा और समझौता हुआ करता था। लेकिन पहले कभी भी उनमे एक-दूसरे के खिलाफ इतनी कटुता नहीं आई थी। जबसे हड़ताल हुई, भूख ने उसके क्रोध को और भी बढ़ा दिया था और वे हाथापाई की आवश्यकता महसूस करते थे; दो झगड़ने वाली औरतों के बीच की गाली-गलौज उनके मर्दों के बीच हिंसात्मक खून-खराबी पर समाप्त होती थी।

तभी लेवक्यू बाउटलोप को घसीटता हुआ वहाँ पहुँच गया।

'यह रहा हमारा साथी; जरा यह कह तो दे कि इसने मेरी औरत को उसके साथ सोने के लिए बीस सूज दिये हों।'

किरायेदार अपने दब्बूपन और शराफत को अपनी दाढ़ी में छिपाता सा विरोध करता हुआ कह रहा था :

'ओह ! ऐसी बात ? नहीं ! कभी कोई ऐसी बात नहीं हुई, कभी नहीं !'

तत्काल लेवक्यू ने माहे को नाक में मारने के लिए घूंसा तान लिया।

'तुम्हें मालूम है मेरे साथ ऐसा नहीं चल सकता। अगर किसी की औरत ऐसी हो तो उसे उसकी हड्डी-पसली तोड़ देनी चाहिए। अगर नहीं है तो जो वह कह रही है उसका तुम्हें विश्वास करना चाहिए।'

अपनी उदासीनता और अपार मानसिक दुख से इस प्रकार इस मामले में घसीटे जाने पर खिन्न माहे बोला, : भगवान कसम ! फिर यह सब कलह क्या है ? क्या हमारे लिए परेशानियों की कमी है ? मुझे अकेला छोड़ दो वरना ठीक न होगा ! और पहली बात तो यह है कि कौन कहता है मेरी औरत ने ऐसा कहा है ?'

'कौन कहता है ऐसा ?' पेरीन ने कहा।

माहेदी व्यंगात्मक रूप से हँसी, और लेवक्यू की औरत की ओर मुड़ी :

'आह ! पेरीन ना ? अच्छा ! मैं तुम्हें बताऊँ उसने मुझसे क्या कहा। हाँ, उसने मुझसे कहा कि तुम दो मर्दों के साथ सोती हो—एक नीचे और दूसरा ऊपर।'

उसके बाद तो उनमें समझौता होना संभव नहीं रहा। वे सब गुस्सा हो उठे और लेवक्यू दम्पति ने माहे दम्पति के कथन के उत्तर में कहा कि पेरीन ने उनके बारे में बहुत सी बातें कही हैं—कि उन्होंने कैथराइन को बेच डाला, वे सब गंदे लोग हैं, छोटों तक को लॉतिये द्वारा वोल्कन से लाई गई गंदी बीमारी है।

'उसने ऐसा कहा ! उसने ऐसा कहा !' माहे चिल्लाया। 'अच्छी बात है ! मैं उसके पास जाऊंगा और अगर उसने कबूला कि उसने ऐसा कहा है तो मैं उसके जबड़े उतार लूंगा।'

वह क्रोध में बाहर निकल पड़ा और क्या होता है यह देखने लेवक्यू भी उसके पीछे गया। बाउटलोप को झगड़ा नापसंद था। इसलिए वह घर चला गया। इस गाली-गलौज से उत्तेजित हो माहेदी भी बाहर निकलना चाहती थी परन्तु अलजीरे की कराह ने उसे रोक लिया। उसने उसके काँपते हुए शरीर को चादर के किनारों से दबा दिया और स्वयं खोई-खोई आँखों से खिड़की से डाक्टर का इन्तजार करने लगी।

पेरी के दरवाजे पर माहे और लेवक्यू को लायडी मिली जो हिम में खेल रही थी। मकान बंद था और रोशनी की एक किरण झिलमिली के एक सुराख से आ रही थी। पहले तो लड़की ने बेमन से उनके प्रश्नों का उत्तर दिया; नहीं, उसका बाप घर में नहीं है। वह मदरब्रूली की मदद को धोबीघाट गया है। फिर वह गड़बड़ा गई और बता न सकी कि उसकी माँ क्या कर रही है ? अन्त में शरमाते हुए, एक द्वेषपूर्ण हँसी से उसने सब कुछ बता दिया कि उसकी माँ ने उसे बाहर निकाल दिया है क्योंकि मोशिये डेनार्ट अन्दर है और उसकी उपस्थिति से उनकी बातों में खलल पड़ता था। सुबह से वह दो पुलिस वालों के साथ बस्ती में चक्कर काट रहा था, कमजोर पड़ने वालों को डरा रहा था और ऐलान कर रहा था कि अगर सोमवार तक वोरो में खान में उतरना चालू न हुआ तो कंपनी ने वोरीनेज से किराये पर मजदूर बुलाने का फैसला किया है। और जब रात होने लगी तो उसने पुलिस वालों को तो भेज दिया और पेरीन को अकेली पा कर आंच के सामने एक गिलास जिन पीने को ठहर गया।

'चुप ! जबान बन्द रखो। हम उन्हें देखें तो', लेवक्यू बोला और रहस्यपूर्ण ढंग से मुस्कराया। 'हम सीधे ही सब बात कर लेंगे। तुम हट जाओ यहाँ से, छोकरी।'

लायडी कुछ कदम पीछे हट गई और लेवक्यू ने झिलमिली के छेद पर आँख गड़ाई। हल्की चीख के साथ वह कमर झुका कर काँप उठा। उसकी औरत ने जब देखा तो जैसे उसे 'कॉलिक' हो गया हो, घोषित किया कि यह घृणास्पद है। माहे ने उसे धकेलते हुए स्वयं देखा और कहा कि उसके पास इस सब के लिए काफी धन है। और वे सब पारी-पारी से छेद से इस प्रकार झाँकने लगे मानो 'बाइस्कोप' देख रहे हों। साफ चमकीले फर्श पर अच्छी आँच जल रही थी। टेबल पर बहुत से केक और एक बोतल जिन रखी हुई थी, वस्तुतः यह अच्छा-खासा दावत का सामान था। जो कुछ उन्होंने अन्दर देखा उससे उन दोनों पुरुषों को क्रोध चढ़ आया—जो अन्य परिस्थितियों मे इस पर कम से कम छः महीने तक हँसते—कि वह गले तक तो भरी हुई है और अपनी कुरती उतारे हुए कामवासना मे लिप्त है। लेकिन हे ईश्वर! आग के सामने यह सब करना घृणित कार्य नहीं है? और लोगों के पास न रोटी का एक टुकड़ा है और न कोयले का एक कण और यह बिस्कुटों का मजा उड़ा रहे है?

'पापा आ रहा है,' भागते हुए लायडी चिल्लाई।

पेरी धोबीघाट से कंधे पर लीनन का बण्डल लादे चुपचाप चला आ रहा था। माहे ने तत्काल उसे सम्बोधित करते हुए कहा :

'सुनो! वे मुझसे कहते हैं तुम्हारी औरत ने कहा है कि हमने कैथराइन को बेंच डाला और हम सब, जितने भी घर मे, गंदे हैं। और वे तुम्हें क्या देते हैं, तुम्हारे घर में तुम्हारी औरत और वह कप्तान, जो इस समय तुम्हारी औरत को भोग रहा है?'

पेरी अचम्भित-सा कुछ समझ नहीं पाया और पेरीन, बाहर कोलाहल सुन कर इतनी भयभीत हो गई कि उसकी अकल गुम हो गई और यह देखने के लिए कि यहाँ क्या हो रहा है, दरवाजा खोल दिया। वे उसे देख सकते थे। वह सुर्ख नजर आती थी; उसके पोशाक के बटन खुले हुए थे। स्कर्ट जल्दी-जल्दी मे कमर तक आ गया था। उसके पीछे डेनार्ट जल्दी-जल्दी में बटन लगा रहा था। वह बाहर निकल कर एकदम गायब हो गया। उसे डर था कि यह बात मैनेजर के कान तक पहुँचेगी। फिर उसकी बड़ी भद होगी, लानत-मलामत दी जायगी।

लेवक्यू की औरत ने चिल्ला कर पेरीन से कहा :

'औरों को तो तुम गंदा बताती हो! कोई ताज्जुब की बात नहीं कि जब अधिकारी ही तुम्हें भोगते हैं तो तुम साफ क्यों न रहो!'

'आह! दूसरों के बारे में तो कहना आसान है।' लेवक्यू ने कहा, 'यहाँ एक

कुलटा है जो यह कहती है कि मेरी औरत दो मर्दों के साथ सोती है; एक के ऊपर, एक के नीचे ! हाँ ! हाँ ! वे मुझसे कहते है कि तुमने ऐसा उनसे कहा है।'

इन सब तोहमतों के बावजूद पेरीन शान्त थी। उसे बड़ा नाज था कि वह सबसे ज्यादा खूबसूरत और धनी है।

'जो मैंने कहा, कहा; मुझे अकेली छोड़ दो। तुम्हें मेरे मामले से क्या लेना-देना, ईर्ष्यालु कहीं के। तुम लोग हमसे जो चाहो सो कहो; मेरा मरद जानता है कि मोशिये डेनार्ट यहाँ क्यों आया था।'

पेरी, वास्तव में, अपनी औरत का पक्ष ले रहा था। झगड़े का रुख ही बदल गया। वे उसे कोसने लगे कि वह बिक गया है, वह कम्पनी का जासूस है, उसका कुत्ता है। उन्होंने उस पर आरोप लगाया कि उसकी गद्दारी के लिए अधिकारी जो रुपये देते है उसे वह घर मे बन्द होकर खाता है। इसके प्रतिरोध मे उसने झूठी बात मढ़ी कि माहे ने उसके दरवाजे पर एक कागज मे दो हड्डियों के क्रास के ऊपर एक छुरा रख कर उसे डराने की कोशिश की थी। इससे औरतों का झगड़ा मरदों तक पहुँच गया और माहे और लेबवयू को, जो घूंसे ताने पेरी की ओर झपटे, अलग करना पड़ा।

जब मदर ब्रूली घाट से लौटी तो उसके दामाद की नाक से खून बह रहा था। जब उसे बताया गया कि क्या हुआ तब उसने इतना ही कहा :

'इन जानवरो ने मुझे बेइज्जत कर दिया है।'

सड़क वीरान होती जा रही थी। बरफ में एक भी छायाकृति नजर न आती थी और बस्ती मे मौत का सा सन्नाटा था। मजदूर भयंकर शीत से पीड़ित भूखों मरे जा रहे थे।

माहे ने द्वार बन्द करते हुए पूछा, 'क्या डाक्टर आया ?' खिड़की पर खड़ी माहेदी ने उत्तर दिया, 'अभी नहीं।'

'बच्चे वापस आ गए ?'

'नहीं, नहीं आये।'

माहे ने इस दीवार से उस दीवार तक अपनी चहल-कदमी जारी रखी। फादर बोनेमॉ ने अपनी कुर्सी से चिपक कर बैठे हुए सिर तक नहीं उठाया। अलजीरे ने भी कुछ कहा नहीं और उन्हें कष्ट न हो इस बात को रोकने के लिए वह कोशिश कर रही थी कि वह काँपे नही; परन्तु कष्ट सहन करने की उसकी हिम्मत के बावजूद वह कभी-कभी इस बुरी तरह काँप उठती थी कि उसकी छोटी सी दुबली-पतली देह चादर के भीतर थरथराती सुनाई देती थी, जब कि वह अपनी

बड़ी-बड़ी आँखों से छत की ओर ताक रही थी, जिससे सफेद बगीचों की प्रतिच्छाया चन्द्रमा के प्रकाश की तरह कमरे में उजाला किये थी।

खाली घर यातना और नग्नता की चरम सीमा पर पहुँच चुका था। उनके बाद शय्यावरण, चादरें, लीनन, जो भी चीज बेची जा सकती थी खरीदारों के हाथ जा चुकी थीं। एक संध्या को उन्होंने बोनेमॉ का रूमाल भी दो सूज में बेच दिया था। इस गरीब गृहस्थी की हर चीज के निकलने पर आँसू गिरते थे और माँ को अब तक मलाल था कि उसे अपने मरद के पुराने तोहफे, सुनहरे कार्डबोर्ड के बक्स को अपने स्कर्ट मे छिपा कर इस प्रकार ले जाना पड़ा था जैसे कोई अपने बच्चे को, उससे मुक्त होने के लिए दूसरे के दरवाजे पर छोड़ आता है। उनके पास उनका शरीर बेचने के अलावा कुछ भी नहीं बचा था और वह भी इतना बदसूरत और जीर्ण हो चुका था कि उसका कोई एक फार्दिंग भी न देता। वे अब ढूँढने का कष्ट भी नहीं करते थे। वे जानते थे वहाँ कुछ भी नहीं है। वे हर चीज की अन्तिम सीमा तक पहुँच चुके है। उन्हें अब एक मोमबत्ती, या कोयले का एक टुकड़ा अथवा एक आलू की भी आशा नहीं करनी चाहिए : और वे मृत्यु का इन्तजार कर रहे थे, उन्हें चिन्ता सिर्फ बच्चों की थी।

'अन्त मे ! वह आ ही पहुँचा ,' माहेदी बोली।

एक काली छाया खिड़की की तरफ से गुजरी। दरवाजा खुला। लेकिन वह डाक्टर वण्डरहेगन नही था। उन्होंने नये पादरी अब्बे रेने को पहचाना गो इस मृत घर में, जहाँ न रोशनी थी, न रोटी थी और न आग थी, आने मे जरा भी आश्चर्य नहीं कर रहा था। वह तीन पड़ोसी घरों मे जा चुका था और प्रत्येक परिवार की बातें सुन कर कहता था :

'मेरे बच्चो, तुम सामूहिक प्रार्थना में क्यों नही आये ? तुम गलत सोच रहे हो, सिर्फ चर्च ही तुम्हे बचा सकता है। अब वायदा करो कि तुम अगले इतवार को आओगे।'

माहे, उसकी ओर घूरने के बाद, चहल-कदमी करता रहा और एक शब्द भी न बोला। माहेदी ने उसकी बात का उत्तर दिया।

'सामूहिक प्रार्थना में, सर ? किस लिए ? क्या ईश्वर हमारा मजाक नहीं उड़ा रहा है ? यहाँ देखो मेरी छोटी बच्ची ने उसका क्या बिगाड़ा है कि वह ज्वर से काँप रही है ? ऐसा लगता है कि हमारी यातनायें कम हैं, और उसने तभी मेरी बच्ची को बीमार भी किया जब कि मैं उसे एक प्याला गरम माँड भी नहीं दे सकती।'

तब पादरी उठ खड़ा हुआ और लम्बी-चौड़ी बातें करने लगा। उसने हड़ताल के बारे में कहा। गरीबी और भुखमरी की बात कही। उसने कहा कि चर्च गरीबों के साथ है, वह एक दिन अमीरों पर ईश्वरीयकोप रूपी न्याय को विजयी बनायेगा। परन्तु अगर मजदूर जमीन का न्यायपूर्ण बटवारा चाहते हैं तो उन्हें तत्काल अपने को पादरियों के हाथों में सौंप देना चाहिए जैसे कि जीसस की मृत्यु पर गरीब और विनम्र लोग गिरजाघरों में जुट गए थे। तब पोप की क्या ताकत हो जायगी जब कि असंख्य मजदूर उसके निर्देश पर चलने को तैयार होंगे! एक सप्ताह में ही वे दुष्टों से दुनिया को शुद्ध कर डालेंगे। वे अन्यायी मालिकों को खदेड़ कर भगा देंगे। तब, वास्तव में, ईश्वर का वास्तविक शासन होगा। हर एक को उसकी योग्यता के आधार पर ओहदा मिलेगा और काम करने के सिद्धान्त से संसार की खुशहाली की बुनियाद पड़ेगी।

माहेदी को उसकी बातें सुनकर ऐसा लगा कि वह उन हेमन्त की संध्याओं में लाँतिये की बातें सुन रही है जब वह उनकी यातनायें, तकलीफें खत्म हो जाने की घोषणा किया करता था। सिर्फ फरक यह था कि वह इस चोगे पर विश्वास नहीं करती थी।

'जो कुछ आप कह रहे है, सर, वह तो बहुत अच्छी बात है,' वह बोली, 'लेकिन वह इसलिए कि आप बुर्जुआ से सहमत नहीं हैं। अन्य सभी पादरी मैनेजर के घर खाना खाते थे और जब हम रोटी माँगते तो हमे भय दिखाते थे।'

उसने फिर बोलना शुरू किया। चर्च और जनता के बीच फैली भारी गलत-फहमी का जिक करते हुए उसने शहरों के पादरियो, उच्च पदस्थ धर्माधिकारियों को कोसते हुए कहा कि आनन्द से बैठे हुए वे सत्ता के मद मे अंधे हो कर मध्यम-वर्ग से करार और समझौते करते है और यह नहीं देखते कि इसी मध्यमवर्ग ने दुनिया के साम्राज्य से उन्हे पदच्युत किया है। मुक्ति देहाती पादरियो से ही मिलेगी, जो गरीबों की सहायता से क्राइस्ट के राज की पुर्नस्थापना के लिए उठ खड़े होंगे; और उसने अपना गठीला शरीर ऐसे उठाया कि मानों वह उनके दल का अगुआ हो। उसकी आँखों मे वह चमक आ गई कि वे उस उदास कमरे को चमकाने लगीं। यह उत्साहपूर्ण प्रवचन उसे किसी अगम्य ऊँचाई तक उठा रहा था और गरीब तपके ने तो बहुत पहले से ही उसे समझ पाना बन्द कर दिया था।

'इतने लम्बे चौड़े प्रवचन की जरूरत नहीं,' माहे एकाएक गुर्राया। 'अच्छा तो यह हो कि आप हमें पहले रोटी लाकर देने से ही काम शुरू करें।'

'रविवार की सामूहिक प्रार्थना में आओ,' पादरी चिल्लाया, 'ईश्वर तुम्हें हर चीज प्रदान करेगा।'

वह उठकर लेवक्यू के घर चला गया। वह अन्ततोगत्वा 'चर्च' की विजय के अपने स्वप्न से इतना प्रभावित हो गया था कि वह बस्ती में, उन भूखों मरने वालों की एक सेना के बीच बिना कोई उपहार या दान लिए ही चला जा रहा था। वह स्वयं भी गरीब था और यातनाओं को मुक्ति का मार्ग समझता था।

माहे की चहल-कदमी जारी रही। फर्श पर पड़ने वाले उसके भारी बूटों की आवाज के अलावा कुछ भी नहीं सुनाई दे रहा था। मोर्चा लगी हुई धरनी की तरह आवाज करता बोनेमाँ ठंडी अंगीठी में थूक रहा था। फिर एक निश्चित गति से पाँवों के चलने की आवाज शुरू हो गई। अलजीरे को बीमारी की कमजोरी से सन्निपात हो गया था। वह धीमे स्वर में हँसती हुई कल्पना कर रही थी कि वहाँ गरमी है और वह सूरज की धूप में खेल रही है।

माहेदी ने अपने हाथ से उसके गाल छूते हुए कहा,' हे ईश्वर, कैसे जल रहे है यह! मैं नहीं सोचती कि अब वह जानवर आयेगा। लुटेरों ने उसे भी आने से मना कर दिया होगा।'

उसका मतलब कम्पनी के डाक्टर से था। जब उसी समय कोई दरवाजा खोल कर अन्दर आया तो उसने खुशी जाहिर की लेकिन फिर एकाएक उसकी बांहें नीचे लटक गईं और वह उदास चेहरा लिए खड़ी रही।

'गुड ईवनिंग,' लॉतिये ने धीरे से कहा और सावधानी से द्वार बंद कर लिया।

वह अक्सर इस प्रकार रात को आया करता था। माहे को दूसरे ही दिन से उनके छिप जाने की बात मालूम हो गई थी। उन्होंने इस बात को गुप्त रखा था और बस्ती में कोई भी नहीं जानता था कि नवयुवक का क्या हुआ। उसके पीछे एक किंवदन्ति प्रचलित हो गई थी। लोगों को अब भी उस पर विश्वास था और बड़ी विचित्र-विचित्र अफवाहें उसके बारे में वहाँ थी। वह एक सेना और सोने से भरे हुए बड़े-बड़े सन्दूक लेकर पुनः प्रकट होगा और वे लोग हमेशा किसी चमत्कार की धार्मिक आस्था रखते हुए, काल्पनिक आदर्श की उद्देश्य पूर्ति को, उस न्याय के शहर में प्रवेश करने की, जिसका उनसे वायदा किया गया था, आशा रखते थे। कुछ लोगों का कहना था कि उन्होंने उसे मार्सेनीज रोड में एक बग्घी में तीन अन्य सम्भ्रान्त लोगों के साथ देखा है। अन्य का मत था कि वह कुछ दिनों के लिए इंग्लैण्ड चला गया है। अन्त में, संदेह उत्पन्न होने लगा। मजाकिये कहने लगे कि वह भूमिगृह में छिपा हुआ है, जहाँ माकेटी

उसे गरम रखती है; क्योंकि उनके इस गुप्त सम्बन्ध के ज्ञात होने से उसकी प्रतिष्ठा को ठेस पहुँची थी। उसकी प्रतिष्ठा के विरुद्ध अनास्था बढ़ रही थी। हतोत्साह समर्थकों में शनैः शनैः अविश्वास उत्पन्न हो रहा था और उनकी संख्या धीरे-धीरे बढ़ रही थी।

'कैसा वाहियात मौसम है !' उसने कहा। और तुम, कोई नई बात नहीं, बद से बदतर ? उन्होंने मुझे बताया है कि लिटिलनिग्रील बोरिनों को बुलाने बेल्जियन गया है। हे ईश्वर ! अगर यह सच है तो हम तो कहीं के न रह जायंगे।'

इस ठंडे, बरफ के समान कमरे में घुसने पर वह काँप उठा था और उसे इन अभागे मनुष्यों को भली भाँति देख पाने में कुछ समय लग गया था क्योंकि कमरे में अंधेरा था। फिर भी उनकी उपस्थिति का भान उसे हो गया था। उसे अपने अध्ययन और अपनी महत्वाकांक्षा के कारण अपने वर्ग से ऊँचे उठ गए मजदूर की भाँति यहाँ अरुचि और परेशानी महसूस हो रही थी। क्या भाग्यहीनता है ! क्या गंदगी है ! सभी का एक ढेर के रूप में पड़े रहना ! इस कारुणिक दृश्य से वह इतना विह्वल हो उठा कि वह आत्मसमर्पण की बात किस तरह इन लोगों से कही जाय उसके लिए शब्द ढूंढ़ने लगा।

लेकिन माहे बड़े क्रोध से उसके करीब आया और चिल्लाया : 'बोरिन ! उन्हें हिम्मत न होगी, ब्लडी फूल !· अगर वे चाहते है कि हम खानों को नष्ट कर दें तो जाने दो बोरिनों को नीचे।

संयत भाषा में लॉतिये ने समझाया कि यह संभव नहीं हो सकेगा। खानों-की रक्षा करने वाले सैनिक बेल्जियन मजदूरों के नीचे उतरने की निगरानी रखेंगे। माहे ने झल्लाकर अपनी-मुट्ठियाँ कस लीं और अपनी पीठ पर संगीन घुसा लेने की बात कहने लगा। तब, क्या खनिक अपने स्थानों के मालिक नहीं रहे ? तब क्या उनके साथ कैदियों का सा व्यवहार कर उन्हें भरी बन्दूक से काम करने को मजबूर किया जायेगा ? हमें अपनी खान से प्रेम है। मुझे बड़ी तकलीफ महसूस होती है कि मैं दो महीने से नीचे नहीं उतरा हूँ। जिन अजनबी लोगों को वे लाना चाहते हैं उससे उनकी भारी तौहीन होने के विचार मात्र से ही वह बौखला उठा था। फिर, जब उसे याद आया कि उसका सार्टिफिकेट वापस दे दिया गया है तो उसे ऐसा धक्का लगा मानो किसी ने उसके सीने में छुरा भोंक दिया हो।

वह बोला, "मैं नहीं जानता, मैं क्यों नाराज हुआ ! मैं अब उनकी खान का

नौकर ही कहाँ रहा। जब उन्होंने मुझे यहाँ से भगा दिया है तो मैं सड़क पर मर जाऊँ तो क्या ?'

'जहाँ तक इस बात का सम्बन्ध है,' लॉतिये बोला, 'अगर तुम चाहो तो वे कल तुम्हारा सार्टिफिकेट वापस मांग लेंगे। लोग अच्छे कामगारों को नहीं निकाला करते।'

अलजीरे की आवाज से आश्चर्य में पड़ कर वह स्वयं रुक गया। वह सन्निपात में बड़बड़ा रही थी और धीरे-धीरे हँस रही थी। अब तक उसने फादर बोनेमाँ की शिथिल-अकड़ी हुई काया नहीं देखी थी और बीमार बच्ची के इस प्रलाप से उसे चिन्ता हुई। अगर यह बच्ची मर गई तो सचमुच बहुत बड़ी ज्यादती होगी। कांपती हुई आवाज में बोला : 'देखो ! यह अब नहीं चल सकता, हम बरबाद हो गए। हमें हड़ताल का परित्याग कर देना चाहिए।'

माहेदी जो अब तक निश्चल और चुप थी एकाएक बोल उठी : 'तुम यह क्या कह रहे हो ? तुम ऐसा कह रहे हो, बाई गाड।'

वह तर्क पेश करने जा ही रहा था कि उसने उसे बोलने नहीं दिया।

'इस बात को दुहराना नहीं, बाई गाड ! अन्यथा, मैं औरत होते हुए भी तुम्हारे मुँह में घूंसा जड़ दूंगी। हम दो महीने से मर रहे है, मैंने घर-गृहस्थी का सामान बेच डाला है और इसी वजह से मेरे बच्चे बीमार पड़ गए है। अब कोई चीज ऐसी बाकी नहीं जिसे बेचा जा सके और फिर वही अन्याय नये सिरे से शुरू होगा। आह ! तुम जानते हो, जब मैं इन बातों को सोचने लगती हूँ तो मेरा खून खौल उठता है। नहीं, नहीं, मैं हर चीज जला डालूंगी। हर एक का खून कर डालूंगी परन्तु ऐसा न होने दूंगी।'

लॉतिये को उसकी ओर निगाह उठाने की हिम्मत न हुई लेकिन उसकी तप्त साँस उसे छू रही थी। इस क्रोध को देख कर, जो कि उसी की पैदा की हुई चीज थी, वह हैरत में पड़ गया था। वह इतनी बदल गई थी कि वह उसे नहीं पहचान पा रहा था कि यह वही औरत है जो कभी बहुत समझदार थी; उसकी हिंसक योजनाओं का विरोध करते हुए कहा करती थी कि हमें किसी की मृत्यु की कामना नहीं करनी चाहिए और आज वह तर्क को सुनने से इन्कार कर लोगों को मार डालने को कहती है। अब वह राजनीति पर बात नहीं करता था, वह करती थी। वह एक ही बार में बुर्जुआ समाज को खत्म कर जनता से मांग करती थी कि जो भूखों मरते श्रमिकों की कमाई पर मोटे होते हैं उन धनिकों को, लुटेरों को, सूली पर चढ़ा दिया जाय।

'हाँ, मैं अपने नाखूनों से उनकी चमड़ी उतार लूंगी। हम बहुत कुछ देख चुके हैं! अब हमारी पारी आई है; तुम ही तो ऐसा कहा करते थे। जब मैं पिता, पितामह, प्रपितामह की बातें सोचती हूँ, जिन्होंने यह सब यातनायें भुगती हैं, जो हम भुगत रहे हैं और जो हमारे बच्चे और हमारे बच्चों की औलाद भुगतेगी, तो मैं पागल हो उठती हूँ—मैं एक चाकू उठा सकती हूँ। उस दिन हमने मोंटस् मे कुछ भी नहीं किया; हमे वहाँ सब कुछ भूमिसात् कर देना था और ईंट-ईंट बजा देनी थी। मै नही जानती, एक अफसोस मुझे है कि हमने पायोलेन के जमींदार की लड़की को बुड्ढे के हाथों से बचा दिया। भूख मेरे बच्चों का गला घोंट डाले तो इसकी वे परवाह करेंगे?'

उसके शब्द रात्रि मे कुल्हाड़ी की चोट के समान पड़ रहे थे। दुख और कष्टों से जर्जर इस शरीर के भीतर असंभव आदर्श विष घोल रहे थे।

मैदान मे भागता हुआ .सा अन्त मे लॉतिये बोला, 'तुम गलत समझ रही हो, हमे कंपनी के साथ कोई समझौता कर लेना चाहिए। मैं जानता हूँ कि खानों मे भारी नुकसान हो रहा है। इसीलिए शायद वह किसी समझौते को राजी हो जाँय।'

'नही, कभी नही!', वह चिल्लाई।

तभी लीनोरी और हेनरी खाली हाथ वापस आये। एक भद्र पुरुष ने उन्हें दो सूज दिये थे लेकिन लड़की बराबर अपने भाई को धक्का देती आ रही थी और वे दो सूज बरफ मे कही गिर गए और जॉली ने भी उन्हे खोजने में मदद की थी परन्तु वे नही मिले।

'जॉली कहाँ है?'

'वह चला गया, माँ; कहता था कुछ काम है।'

लॉतिये दर्द भरे दिल से सब सुनता रहा। एक बार उसी ने उन्हें किसी के आगे हाथ पसारने पर मार डालने की धमकी दी थी। अब वही उन्हें स्वयं सड़कों पर भेजती है और प्रस्ताव करती है कि वे सब के सब—मोंटसू के दस हजार खनिक—हाथ मे छड़ी और झोला लेकर, पुराने जमाने के भिखारियों की भाँति, आतंकित क्षेत्र की खाक छानें।

काले अंधकारमय कमरे मे यंत्रणा बढ़ती ही गई। छोटे बच्चे भूखे लौटे थे। उन्हें भोजन चाहिए था, उन्हें कोई चीज खाने को क्यों न मिले? वे कलपते हुए, इधर-उधर भागे और अन्त में अपनी मरती हुई बहिन के कदमों के पास बैठ गए।

अंधेरे में माँ ने उनके कान ऐंठे। तब वे और जोर-जोर से चीखते हुए रोटी माँगने लगे। वह फूट-फूट कर रोने लगी और फर्श पर बैठ गई। उसने उन्हें उठा कर अपनी बाँहों में ले लिया और बड़ी देर तक रोती रही, फिर बोली : 'ओह। ईश्वर ! तू मुझे क्यों नहीं उठा लेता ? ओह ! ईश्वर ! मेहरबानी करके हमे उठा ले।'

बुड्ढा बोनेमाँ जड़वत् बना रहा। आँधी और पानी से मुड़े हुए एक पेड़ की भाँति, माहे बगैर उस ओर देखे अंगीठी और आलों के बीच बराबर टहलता रहा।

दरवाजा खुला और इस बार डाक्टर वण्डरहेगन आया था। हमेशा की तरह काम से थका हुआ वह झिड़कने लगा : शैतान ! इस रोशनी में तुम्हारी आँखें न होंगी। जल्दी करो ! मुझे जल्दी है !'

संयोग से उसके पास माचिस थी। माहे को छह तीलियाँ खर्च करनी पड़ी। वह एक के बाद एक जला रहा था और डाक्टर देख रहा था बच्ची को। चादर में लिपटी वह ठंड से काँप रही थी और बरफ मे मरने वाली छोटी चिड़िया के समान दम तोड़ रही थी। वह इतनी दुबली, कमजोर और छोटी थी कि उसका कूबड़ मात्र दिखाई देता था। लेकिन वह मरने समय की विपक्षण हँसी हंस रही थी। उसकी आँखें बड़ी-बड़ी थीं और वह अपने नन्हे हाथों को अपनी छाती के ऊपर रखे थी और उसकी अधमरी मा पूछ रही थी कि उसकी एक मात्र बच्ची को, जो उसे गृहस्थी के काम मे मदद करती थी, बड़ी समझदार और नेक थी, उससे छीन लेना कहां का न्याय है ? डाक्टर परेशान हो गया था।

'आह। यह जा रही है। भूख से मरी है यह तुम्हारी बच्ची। और यही नहीं, अभी-अभी एक और बीमार बच्ची मैं वहाँ देखकर आया हूँ। तुम सब मुझे बुला भेजते हो, लेकिन मैं कुछ नहीं कर सकता, तुम्हे गोश्त चाहिए जो तुम्हारी बीमारी अच्छी कर दे।'

माहे की अंगुली जल गई और उसके हाथ से माचिस नीचे गिर पड़ी। अंधकार का आवरण उस लाश पर छा गया, जो अभी गरम थी। डाक्टर जल्दी में निकल गया। इस अंधकारपूर्ण कमरे मे माहेदी की सिसकियों के अलावा लॉतिये को अन्य कोई शब्द नहीं सुनाई दिया। वह अत्यन्त दुख के साथ, कातर स्वर में विलाप करती हुई अपनी मौत की ईश्वर से भीख माँग रही थी।

'हे ईश्वर ! अब मेरी पारी है, मुझे उठा ले ! हे ईश्वर ! मेरे मरद को उठा ले, औरों को उठा ले, दयाकर, तेरा बड़ा उपकार होगा।'

३

उस रविवार को, आठ बजे सुबह से ही, सोवरायन अकेला एवेन्टेज की बैठक में अपने निर्दिष्ट स्थान पर दीवार के सहारे सिर लगाये बैठा था। एक भी खनिक शराब पीने वहाँ नहीं आया था क्योंकि उनके पास दो सूज भी नहीं थे। मय-खानों में इतनी कम ग्राहकी कभी नहीं हुई थी। इसलिए मदाम रसेन्योर काउन्टर पर चुपचाप बैठी थी और रसेन्योर लोहे की अंगीठी के पास खड़ा हुआ, विचार मग्न, कोयले के लाल धुंए को देख रहा था।

एकाएक, इस गरम हवा से भरे कमरे की खामोशी में, किसी के धीमे लेकिन एक के बाद एक मुक्के एक खिड़की पर मारने के शब्द हुये जिससे सोवरायन ने अपना सिर घुमाया। वह उठ खड़ा हुआ, क्योंकि वह संकेत को समझ गया था। इसका प्रयोग इसे बुलाने के निमित्त लॉतिये पहले कई बार कर चुका था। लेकिन इंजनमैन के दरवाजे तक पहुँचने से पहले ही रसेन्योर दरवाजा खोल चुका था और खिड़की की रोशनी में खड़े व्यक्ति को पहचान कर वह उससे बोला—

'क्या तुम डरते हो कि मैं तुम्हें पकड़ा दूंगा? सड़क पर खड़े होने की अपेक्षा तुम यहाँ पर अच्छी तरह इतमीनान से बातें कर सकते हो।'

लॉतिये अन्दर आया। मदाम रसेन्योर ने विनम्रता से उसके सामने एक गिलास लेने का प्रस्ताव रखा जिसे उसने अपनी भाव-भंगिमा से अस्वीकार कर दिया। सराय मालिक बोला :

'मैंने बहुत पहले अन्दाज लगा लिया था कि तुम कहाँ छिपे हो? अगर मैं जासूस होता, जैसा कि तुम्हारे मित्र लोग कहते है, तो मैंने एक सप्ताह पहले ही पुलिस को तुम्हारे पीछे भेज दिया होता।'

नवयुवक ने उत्तर दिया, सफाई देने की कोई जरूरत नहीं। मैं जानता हूँ कि तुम इतने नीच कभी नहीं हो सकते। लोगों में विचारों का मतभेद होता है और उनमें एक दूसरे के प्रति वही इज्जत की भावना रहती है।'

और फिर वहाँ पुनः चुप्पी छा गई। सोवरायन पुनः अपनी कुर्सी पर आ बैठा था। उसका सिर दीवार के सहारे लगा था और उसकी आँखे सिगरेट के धुंए पर। परन्तु उसकी अंगुलियाँ बड़ी बेचैनी के साथ उसके घुटनों से खेल रही थीं और वह पोलैण्ड के नरम बालों की गरमी महसूस नहीं कर पा रहा था जो आज संध्या से गायब था। उसे कुछ ऐसी अज्ञात बेचैनी सी, कोई अभाव सा महसूस हो रहा था जिसे वह स्वयं ठीक-ठीक नहीं बता सकता था कि ऐसा क्यों है?'

मेज की दूसरी ओर बैठा लॉतिये अन्त में बोल उठाः 'कल वोरो में फिर काम शुरू हो रहा है। लिटिल निग्रील बेल्जियनों को लाया है।'

'हाँ, उन्होंने उन्हें अंधेरा होने पर उतारा है।' रसेन्योर ने खड़े-खड़े कहा। 'जब तक वे एक दूसरे को नहीं मारते, कुछ भी हो।'

तब अपनी आवाज ऊँची करते हुए उसने अपना कथन जारी रखा—

'नहीं, तुम जानते हो, मैं झगड़े पर पुनः बहस करना नहीं चाहता। परन्तु इतना कहे देता हूँ कि अगर अब तुम लोग नहीं माने तो अन्त मे इसका नतीजा बहुत बुरा होने वाला है। क्यों, तुम्हारी कहानी भी ठीक तुम्हारे इन्टरनेशनल जैसी है। मैं परसों लिली में, जहाँ मेरा कुछ काम था, फ्लूचर्ड से मिला था। उसकी संस्था गलत काम कर रही है।'

उसने विस्तार पूर्वक समझाना शुरू किया। इस संगठन ने प्रचार द्वारा सारी दुनियां के मजदूरों को विजित किया और अब धीरे-धीरे अन्दरूनी, आपसी झगड़ों से खत्म होता जा रहा है। चूंकि अराजकतावादियों ने पुराने उत्कर्षवादियों को भगा कर इस पर अधिकार कर लिया है इसलिए हर चीज नष्ट होती जा रही है। उसका मूलभूत उद्देश्य, वेतन प्रणाली मे सुधार, गुटबंदी के झगड़ों मे पड़ कर खो गया है। उसका वैज्ञानिक ढांचा अनुशासनप्रियता के प्रति नफरत से विश्रंखलित हो गया है। अब यह अनुमान लगा लेना आसान हो गया है कि वर्तमान समय मे पुरानी सड़े-गले समाज को नष्ट कर डालने की जो हवा बह रही है वह अन्ततोगत्वा इस जन आन्दोलन को गुमराह कर देगी।'

'फ्लूचर्ड को यह सब अच्छा नहीं लगता, और अब उसकी आवाज कोई आवाज नहीं रही। फिर भी, हर चीज के बावजूद वह भाषण करता है और पेरिस जाना चाहता है और उसने मुझसे तीन बार कहा कि हमारी हड़ताल असफल हो गई है।'

लॉतिये जमीन की ओर ताकता हुआ उसे बातें कहने का मौका दे रहा था। पिछली साँझ को उसने अपने कुछ साथियों से बातें की थी और उसे महसूस हुआ था कि उसे घृणा और संदेह की निगाह से देखा जा रहा है। यह उसकी प्रतिष्ठा घटने का पहला मौका था। वह उदास बना रहा, अपनी निराशा वह ऐसे व्यक्ति के सामने कबूल नही करना चाहता था जिसने पहले ही उसे बता दिया था कि एक दिन आयेगा जब यही लोग उसके गलत अन्दाजे का बदला लेने के लिए उसे दुत्कारेंगे।

'इसमें संदेह नही कि हड़ताल विफल रही, मैं भी इसे जानता हूँ और फ्लूचर्ड भी', उसने कहा। 'लेकिन हमने पहले ही इसे समझ लिया था। हमने

अपनी इच्छा के विरुद्ध इस हड़ताल को अपनाया। हमने कभी कम्पनी के साथ नाता तोड़ने की नहीं सोची थी। इतना जरूर है कि भावावेश में बहकर आदमी कभी-कभी बड़ी उम्मीदें बाँध लेता है परन्तु जब स्थिति बिगड़ने लगती है तो वह भूल जाता है कि उसे यह उम्मीद नहीं करनी चाहिए थी।'

'जब तुम सोचते हो कि तुम बाजी हार चुके हो तो फिर साथियों को तर्क-संगत बात सुनने को क्यों नहीं कहते ?' रसेन्योर ने पूछा।

नवयुवक कड़ी नजर से एक टक उसकी ओर घूरने लगा—'सुनो ! बहुत हो चुका। तुम्हारे विचार तुम्हारे है, मेरे मेरे। मैं यहाँ यह दिखाने आया हूँ कि हर चीज के बावजूद मेरे दिल में तुम्हारे प्रति सम्मान है। परन्तु मैं अब भी सोचता हूँ कि अगर हमें इस संकट में असफलता भी मिली तो हमारे भूखे कंकाल तुम्हारी सुलझी राजनीति की अपेक्षा जनता का अधिक उपकार करेंगे। आह ! अगर उन जाहिल सिपाहियों में से कोई मेरे सीने पर गोली मार दे तो यह एक शानदार मौत होगी।'

उसकी आँखों में आँसू छलछला आये मानो उसकी इस चीख में उसके अन्तर्मन की व्यथा छिपी हो।

'बहुत खूब !' मदाम रसेन्योर ने कहा और अपने पति की ओर अपने उग्रवादी विचारों के कारण एक नफरत भरी निगाह डाली।

सोवरायन अपनी भाव रहित निगाहों से देखता हुआ, अपने हाथ को मसलता हुआ किसी स्वप्न में डूबा हुआ था। उसका लड़कियों के समान सुन्दर चेहरा किसी रक्तरंजित क्रान्ति का स्वप्न देखता हुआ डरावना होता जा रहा था। इन्टरनेशनल के बारे में रसेन्योर की कटु उक्ति का उत्तर देता हुआ वह बोला—

'वे सब कायर है, सिर्फ एक ही आदमी ऐसा है जो उनकी मशीनों को विध्वंस का भयानक अस्त्र बना सकता है। इसके लिए आत्मबल चाहिए। इसीलिए एक बार फिर यह विद्रोह गुमराह हो जायगा।'

वह नफरत भरी आवाज में लोगों को उनकी दुर्बलता के लिए कोस रहा था और वे दोनों, अन्धकार में उसके निद्रावस्था में कहे गए वाक्यों के समान इन विचारों से भयभीत हो उठे थे। रूस में भी स्थिति अच्छी नहीं चल रही थी और वहाँ से मिलने वाली खबरों से वह चिन्तित हो उठा था। उसके पुराने साथी सब राजनीतिज्ञ बनते जा रहे थे। सुप्रसिद्ध शून्यवादी, जिन्होंने समूचे यूरोप को थर्रा दिया था—पोप के लड़के, निम्न मध्यम वर्ग के लोग, छोटे-छोटे व्यापारी—राष्ट्रीय मुक्ति से ऊँचे नहीं उठ सके थे। ऐसा प्रतीत होता था कि वे इस बात पर विश्वास करते है कि स्वेच्छाचारियों का बध करने के बाद उन्होंने संसार को

मुक्त कर दिया है। जब कभी वह उनसे पकी खेती की भाँति समाज को भूमिसात् करने की बात कहता था—जब कभी वह 'रिपब्लिक' शब्द का उच्चारण करता था—उसे ऐसा प्रतीत होता था कि उसे गलत समझते हुए उपद्रवी समझा जा रहा है। एक पीड़ादायक कड़ुआहट में वह अपने प्रिय वाक्य को दुहराने लगा :

'बेवकूफी ! वे कभी भी अपनी बेवकूफी की वजह से इससे नहीं उभर सकते।'

तब अपनी आवाज धीमी करते हुए उसने अपने भाई-चारे के पुराने स्वप्न की कटु शब्दों में चर्चा की। उसने अपना ओहदा और अपनी दौलत का परित्याग कर दिया। वह नये समाज की सर्व साधारण में बुनियाद ढूंढने की आशा से मजदूरों के बीच चला आया। उसकी जेब के सभी सूज बहुत पहले ही बस्ती के छोकरों के हाथ में चले गए। वह खनिकों के साथ हमेशा भाई-चारा रखता था। उनके संदेह पर हंसता हुआ, शांत मजदूर के तरीके से उन्हें जीतने की कोशिश करता हुआ। उसे व्यर्थ की बातें नापसंद थीं। लेकिन वह कभी भी उनमें नहीं मिल पाया और अजनबी ही बना रहा। उनकी इच्छा थी कि वह छोटी छोटी बातों, झूठे अहंकार और आनन्द से मुक्ति रहे। आज सुबह से, अखबार में एक घटना का जिक्र पढ़ने के बाद से, वह विशेष रूप से क्रोधित था।

उसका स्वर बदला, उनकी आँखों में चमक आई और उन्हें लॉतिये के मिलाने के बाद उसने सीधे उसे संबोधित किया—

'अब, तुम समझे ! इन मार्सेनीज के मध्यम वर्ग के लोगों ने, जिन्होंने दस लाख फ्रेंक की बड़ी लाटरी का इनाम जीतने के बाद तत्काल उसे पूंजी के रूप में लगा दिया और घोषित किया कि अब वे बिना कुछ किये धरे जिन्दगी गुजारेंगे। हां, यही तुम्हारा विचार है, तुम सभी फ्रेंच मजदूरों का। तुम कोई गुप्त खजाना चाहते हो ताकि बाद में किसी एकान्त कोने में बैठ कर अकेले उसका उपभोग कर सको। तुम चाहे धनिकों के खिलाफ जितना चिल्लाओ, तुम में यह साहस नहीं कि तकदीर से प्राप्त धन तुम गरीबों को दे सको। जब तक कुछ तुम्हारा अपना है तब तक तुम कभी सुखी नहीं रह सकते और बुर्जुआ के प्रति तुम्हारी घृणा में यह भावना छिपी है कि तुम उनके स्थान पर हो जाओ।

रसेन्योर हंस पड़ा। मार्सेनीज के मजदूर बड़ा इनाम छोड़ देंगे यह विचार उसे बेहूदा लगा। लेकिन सोवरायन पीला पड़ गया था और उन धार्मिक चिनगारियों में से एक चिनगारी के कारण भयानक हो उठा था जिन्होंने राष्ट्रों को को तबाह कर दिया था। वह चिल्लाया :

'तुम्हें घास की तरह काट दिया जायगा, गिरा कर कूड़े के ढेर में डाल दिया जायगा। कोई पैदा होगा जो तुम्हारी कायरों और विषय भोगियों की पीढ़ी को नेस्तनाबूद कर देगा। और यहाँ देखो। तुम मेरे हाथों को देख रहे हो; अगर मेरे हाथों में सामर्थ्य होगी तो वे इस प्रकार उठा कर तब तक हिलाते रहेंगे जब तक कि उसके टुकड़े-टुकड़े न बिखर जाँय और तुम सब मलबे के नीचे दफन हो जाओगे।'

'क्या कहा, बहुत खूब,' मदाम रसेन्योरे ने अपने विनम्र और आश्वस्त स्वर में ताईद की।

वहाँ फिर चुप्पी छा गई। लॉतिये ने फिर एक बार बोरिन लोगों की चर्चा छोड़ी। उसने सोवरायन से पूछा कि बोरो के मामले में अब कौन सा कदम उठाना चाहिए। लेकिन इंजनमैन अब भी अपने विचारों में लीन था और उसने कोई उत्तर नहीं दिया। वह सिर्फ इतना जानता था कि खान में पहरा देने वाले सैनिकों को कारतूस बाँट दिये जायंगे। उसकी अस्थिर अंगुलियाँ उसके घुटनों पर इस प्रकार तेजी से चल रही थी कि अन्त में उसे अहसास हुआ कि पालतू खरगोश के मुलायम, मृदु बालों का अभाव उसे परेशान किये था!

उसने पूछा; 'पोलैण्ड कहाँ गयी?'

सराय मालिक ने हँस कर अपनी पत्नी की ओर देखा। फिर कुछ देर बेचैन चुप्पी के बाद वह बोला :

'पोलैण्ड? वह बर्तन में पक रही है।'

जॉली ने जब पोलैण्ड को पकड़ा था तब वह बच्चा देने वाली थी और उसके पेट से मरे हुए बच्चे निकले। बेकाम के जानवर को खिलाना उन्हें खलने लगा था और वे प्रतिदिन उसे आलुओं के साथ पका डालने की सोचते थे।

'हाँ, आज साँझ को तुमने उसकी एक टाँग खाई थी। ओह। उसके बाद तुम अपनी अंगुलियाँ चाटते रहे थे।'

सोवरायन पहले तो समझ नहीं पाया। फिर उसका चेहरा ऐसा पीला पड़ गया मानो उसको मिचली आ रही हो और धैर्य के साथ कुछ सहन करने की उसकी शक्ति के बावजूद उसकी आँखों के कोर में आँसुओं की दो बड़ी-बड़ी बूंदें झलकने लगी।

लेकिन किसी को भी उसकी भावना पर ध्यान देने का अवकाश नहीं था, क्योंकि किसी ने बड़े जोरों से दरवाजा खोला और कैथराइन को अपने आगे धकेलता हुआ चवाल वहाँ दिखाई पड़ा। मोंटसू के सभी मद्य गृहों में आत्मदंभ और मद्य के नशे के बाद उसको यह विचार सूझा कि वह एवेन्टेज में जाकर अपने

पुराने दोस्तों को यह दिखाए कि वह डरता नहीं है। अन्दर आते हुए उसने अपनी प्रेमिका से कहा—

बाई गाड !' मैं बताए देता हूँ कि तुम्हें एक गिलास यहाँ पीनी पड़ेगी; मैं उस आदमी के जबड़े तोड़ दूँगा जो मेरी ओर तिरछी नज़र से देखेगा।'

कैथराइन लॉतिये को देखकर घबड़ा गई थी और बहुत सुस्त पड़ गई। जब चवाल ने उसे देखा तो वह भी अपने दुष्ट स्वभाव से बड़बड़ाया।

'दो गिलास ? मदाम रसेन्योर ! काम नये सिरे से चालू होने से हम भीगे है।'

बिना एक शब्द बोले उसने उस औरत की भाँति बियर ढाली जो कभी किसी को इन्कार नहीं करती। वहाँ खामोशी थी और रसेन्योर या उन दोनों आदमियों में से कोई भी अपनी सीट से नहीं उठा था।

चवाल शेखी बघारते हुए ताने कस रहा था—

'मैं उन लोगों को जानता हूँ जिन्होंने कहा है कि मैं जासूस हूँ। मैं उम्मीद करता हूँ कि वे फिर मेरे मुँह पर इस बात को कहेंगे ताकि हम जरा एक दूसरे को सफाई दे सकें।'

उसकी बात का किसी ने भी उत्तर नहीं दिया, और वहाँ बैठे लोगों ने अपना मुँह फेर लिया और दीवारों की तरफ ताकने लगे।

'कुछ लोग होते हैं जिन्हें शर्म, हया होती है और कुछ लोगो को कोई शर्म नहीं होती,' वह ऊँची आवाज मे बोलता जा रहा था। 'मेरे पास छिपाने को कुछ नहीं है, मैंने डेन्यूलिन की वाहियात नौकरी छोड़ दी है और कल मे एक दर्जन बेल्जियनों को लेकर वोरो में नीचे जाऊँगा। उनका नेतृत्व मुझे सौंपा गया है क्योंकि वे मेरी कद्र करते हैं; और अगर कोई इस बात को पसंद नहीं करता तो वह कहे, और हम इसके मुत्तल्लिक बात कर लेंगे।'

तब, जब उसी तिरस्कार पूर्ण खामोशी ने उसके उत्तेजनात्मक तानाकशी का स्वागत किया तो वह कैथाराइन पर बिगड़ उठा :

'पियो न। बाई गाड ! उन सब गन्दे जानवरों के बुरे के लिए मेरे साथ पियो जो काम से इन्कार करते हैं।'

वह पीने लगी, लेकिन उसके हाथ इस कदर काँप रहे थे कि दोनों के गिलास एक दूसरे के साथ टकराने पर खन्न से बज उठे। उसने एक मुट्ठी में चाँदी के सिक्के अपनी जेब से निकाले और नशे की हालत में, यह कहता हुआ कि यह उसके पसीने की कमाई है, उनका प्रदर्शन करने लगा। उसके इन साथियों की उदासीनता उसे क्रोधित बना रही थी और अब वह उनकी मुँह के सामने बेइज्जती करने लगा।

'तब रात को छछुदर बिलों से बाहर निकले है ? जब पुलिस सो जाती है तब लुटेरे बाहर आते है ।'

लॉतिये शांति और दृढ़ता के साथ खड़ा हो गया ।

'सुनो ! तुम मुझे गुस्सा दिलाना चाहते हो । हाँ, तुम जासूस हो; तुम्हारे धन से अब भी किसी गद्दारी की बू आ रही है । तुम बिक चुके हो और मुझे तुम्हारा चमड़ा छूते घृणा लगती है । कोई बात नही ! मैं तुम्हारा आदमी हूँ । अभी बहुत समय है जब कि हम एक दूसरे से भुगत सकते है ।'

चवाल ने अपना घूंसा तान लिया ।

'आ न तब, कायर कुत्ता कहीं का । तू जरा गरम पड़े इसलिए मैं तुम से ऐसा कह रहा हूँ । तू अकेला ही आ--मैं तैयार हूँ; और तुझे उन सब गन्दी हरकतों की कीमत चुकानी होगी जो तूने मेरे साथ खेली है ।'

अपने दोनों हाथों से 'झगड़ा न करने' का निवेदन सा करती हुई कैथराइन उन दोनों के बीच में आ गई । परन्तु उन्हे उसे धक्का देकर नहीं हटाना पड़ा । उसने संघर्ष की आवश्यकता महसूस की और स्वयं धीरे से पीछे हट आई । दीवार के सहारे खड़ी वह चुप-चाप उन दोनों को अपनी बड़ी-बड़ी आँखों से ताक रही थी जो उसके कारण एक दूसरे की हत्या करने पर आमादा थे ।

मदाम रसेन्योर ने इस डर से कि कही काँच के गिलास न टूट जायँ उन्हे काउन्टर पर से हटा लिया । फिर वह कोई विशेष उत्सुकता दिखाये बगैर एक मेज पर जाकर बैठ गई । परन्तु दो पुराने साथियों को इस प्रकार एक दूसरे की हत्या के लिए नही छोड़ा जा सकता था । रसेन्योर ने बीच-बचाव करना चाहा और सोवरायन उसका कंधा पकड़ कर उसे फिर मेज के पास वापस ले जाते हुए कहा—

'इसका तुमसे कोई सरोकार नही । एक म्यान मे दो तलवारें नहीं रह सकतीं, ताकतवर को अवश्य रहना चाहिए ।'

हमले का इन्तजार किये बगैर चवाल के मुक्के शून्य मे प्रहार करने लगे थे । उन दोनों मे वह लम्बा था और वह चेहरे को लक्ष्य बनाता हुआ अपनी बाहों को इस प्रकार नचा रहा था मानो वह दो कृपाणों को एक साथ चला रहा हो । अपने को उत्तेजित रखने के लिए वह बराबर गालियाँ भी बकता जाता था ।

'आह ! दुष्ट, नारकी कीड़े ! मैं तेरी नाक तोड़ूंगा ! मैं तेरी वाहियात नाक का कचूमर निकाल डालूंगा । तेरे टुकड़े-टुकड़े कर डालूंगा । तब देखेंगे कि रंडियाँ तेरे पीछे कैसे दौड़ती है !'

चुपचाप, दाँत भीचे हुए, लॉतिये अपनी शक्ति एकत्रित करता हुआ मुक्के-

बाजी के नियमों के अनुसार अपने सीने और चेहरे का दोनों मुट्ठियों से बचाव कर रहा था। वह पहले आँक लेता था और बाद में स्प्रिंग की भाँति भयानक सीधा प्रहार करता था।

पहले-पहले दोनों में से किसी को भी ज्यादा चोट नहीं आई। एक-दूसरे के मुक्के बचाते हुए उनका संघर्ष लम्बा चलने लगा। एक कुर्सी उलट गई थी, उनके हाँफने की आवाज सुनाई दे रही थी और उनके चेहरे इस प्रकार सुर्ख हो गए थे मानों किसी अन्दरूनी आग से जल उठे हों और उसकी ज्वाला उनके आँखों के छेद से निकल रही थीं।

'ले संभाल !' चवाल चिल्लाया।

और वास्तव में उसने मूसल की तरह अपने मुक्के से अपने प्रतिद्वन्द्वी के कंधे के पास वाले मांसल भाग पर इतना करारा प्रहार किया कि लॉतिये ब-मुश्किल दर्द से कराहना रोक पाया। उसने भी इसका जवाब सीधे चवाल के सीने का निशाना बनाते हुए एक मुक्के से दिया और अगर चवाल बकरे की तरह छलांग लगाकर वार न बचाये होता तो वह सचमुच गिर जाता। मुक्का उसके बांये पार्श्व पर बैठा और वह इतना करारा था कि थोड़ी देर तक वह लड़खड़ाता रहा। पीड़ा से अपनी बाँहों को शिथिल पाकर चवाल क्रोधान्ध होकर जंगली जानवर की भाँति अपने जूते की ठोकर से अपने प्रतिद्वन्द्वी का निशाना बनाता हुआ उस पर झपटा।

वह अवरुद्ध आवाज में चिल्लाया : 'अब मैं तेरी आँतें निकाल डालूंगा।'

लॉतिये ने वार बचा लिया लेकिन वह प्रतिद्वन्द्विता के नियम भंग करने के उसके कार्य से इतना झल्ला उठा था कि उसे अपना मौन भंग करना पड़ा।

'जबान बंद कर, जंगली ! और पाँव न चला। भगवान् कसम ! अन्यथा मैं कुर्सी उठाकर तुझे यहीं ढेर कर दूंगा !'

तब द्वन्द्वयुद्ध ने गंभीर रूप धारण कर लिया। रसेन्योर को यह सब बड़ा अरुचिकर लगा और अगर उसकी औरत की गंभीर मुद्रा उसे न रोकती तो वह फिर हस्तक्षेप करने जा रहा था। क्या दो ग्राहकों को घर में अपने मामले निबटाने का अधिकार नहीं है ? वह फिर आग के पास आकर बैठ गया। सोवरायन ने अपने सामान्य शांत तरीके से एक सिगरेट बनाई लेकिन वह उसे जलाना भूल गया। कैथराइन दीवार के सहारे स्थिर खड़ी थी और अनायास ही अनजाने में उसके हाथ उसकी कमर पर पहुँच गए थे। वह अपनी चीख रोकने की पूरी-पूरी कोशिश कर रही थी ताकि उसके द्वारा उन दोनों में से किसी को भी प्राथमिकता की घोषणा किये जाने से दूसरे की हत्या न हो जाय; वह भी स्वयं इतनी

विचलित हो गई थी कि वह खुद नहीं सोच पा रही थी किसे वह पसंद करती है।

चवाल, पसीने में लथपथ अधाधुन्ध मुक्के चला रहा था और वह जल्दी ही थक गया। गुस्से के बावजूद लॉतिये उसके सभी प्रहारों को बचाता हुआ चल रहा था फिर भी कुछ मुक्कों से उसे चोट पहुँची थी, उसका कान छिल गया था। एक नाखून से उसकी गर्दन में खरोंच आ गई थी और इससे उसे इतना क्रोध चढ़ा कि अपनी पारी में उसने एक तेज सीधा मुक्का उसकी ओर चलाया। इस बार भी चवाल ने अपने सीने को नीचे झुक कर बचा लिया लेकिन मुक्का उसके मुँह पर आकर लगा और उनकी नाक और आँख में बुरी तरह चोट आई। तत्काल उसकी नाक से खून बहने लगा और उसकी आँख फूल आई। इस सुर्ख खून से अंधा-सा होकर, अपनी आँख की पीड़ा से विह्वल वह हवा में घूंसे चलाये जा रहा था। तब दूसरे प्रहार से, जो सीधा उसके सीने पर बैठा, वह वहीं ढेर हो गया। प्लास्टर के बोरे को खाली किये जाने की आवाज के समान एक भारी धमाका उसके पीठ के बल गिर पड़ने से हुआ।

लॉतिये इन्तजार करने लगा।

'उठ जा! अगर तू दूसरा चाहता है तो हम फिर से शुरू करेंगे।'

बिना उत्तर दिये, कुछ मिनट तक पड़े रहने के बाद चवाल ने अपने हाथ-पाँव सीधे किये। बड़ी मुश्किल से वह उठा और कुछ देर तक अपने घुटनों के बल बैठा हुआ अपनी जेब में कोई चीज टटोलता-सा रहा। तब, जब वह खड़ा हो गया तो अपने गले से एक जंगली चीख निकालता हुआ फिर आगे की ओर झपटा।

लेकिन कैथराइन ने देख लिया था। एकाएक घबरा कर बड़े जोरों से वह चिल्ला उठी :

'सावधान! वह चाकू लिए हुए है।'

लॉतिये को मुश्किल से अपनी बाँह से उसके प्रथम प्रहार को रोकने का मौका मिला। तेज धार से उसकी ऊनी जाकेट कट गई थी और उसने चवाल की कलाई पकड़ ली। फिर बड़ी भयंकर लड़ाई हुई क्योंकि उसे भय था कि अगर उसने पकड़ ढीली की तो वह अगला वार कर देगा और चवाल बराबर कोशिश में था कि वह कलाई छुड़ा कर वार करे। जब उसके अवयव थक जाते तो चाकू की नोक धीरे-धीरे नीचे की ओर आ जाती थी। दो बार लॉतिये को अपने शरीर से चाकू की नोक चुभने का अहसास हुआ और उसे भरपूर जोर चवाल की कलाई मोड़ने के लिए लगा देना पड़ा, नतीजा यह हुआ कि चाकू उसके हाथ से फिसल गया।

दोनों ही धरती पर आ गिरे थे और अब लॉतिये को मौका मिला था कि वह उस चाकू को पकड़ कर चमकाये, उसने चवाल को अपने घुटनों के नीचे दबाये रखा और उसे उसके गले पर फेरने के लिए धमकाने लगा।

'आह ! गद्दार ! भगवान् कसम ! अब तू इस बात पर उतर आया।' उसे अपने अन्दर से उसे बहरा बना देने वाली भयंकर आवाज उठती प्रतीत हुई। वह उसकी आँतों से उठकर उसके सिर पर हथौड़े के समान चोट कर रही थी। हत्या करने का और खून देखने का एकाएक एक भूत उस पर सवार हुआ। इससे पहले किसी भी संकट पर इतना विचलित नहीं हुआ था। उसने शराब नहीं पी थी इसलिए वह इस पैतृक बीमारी के खिलाफ संघर्ष ले रहा था। अन्त में अपने को संयत बनाकर उसने चाकू अपने पीछे की ओर फेंक दिया और कठोर आवाज में बोला—

'उठ—और भाग जा !'

इस बार रसेन्योर आगे बढ़ आया था लेकिन उसे उन दोनों के बीच आने का साहस इसलिए नहीं हो पा रहा था कि कहीं कोई करारा घूंसा उसे न पड़ जाय। वह नही चाहता था कि किसी की उसके घर मे हत्या हो। वह इस सबसे इतना नाराज हो उठा था कि काउण्टर पर सीधी तनी बैठी हुई उसकी औरत को उसे कहना पड़ा कि वह हमेशा बहुत जल्दी ही चिल्लाने लगता है। सोवरायन ने, अपने पाँवों के पास पड़े चाकू की मूंठ दबाने के बाद सिगरेट जला ली। तब क्या यह सब खेल खत्म हो गया ? कैथराइन ठगी-ठगी सी उन दोनों प्रेमियों को देख रही थी, जो दोनों ही उम्मीद न होने पर भी जीवित थे।

'भाग जाओ यहाँ से !' लॉतिये ने दुहराया। 'भाग यहाँ से वर्ना मैं तुझे यहीं खत्म कर दूँगा।'

चवाल उठा, और उसने अपने हाथ के पार्श्व मे खून साफ किया जो कि उसकी नाक से अब भी बह रहा था; अपने कटे-फटे, चोट खाये जबड़े और फूली हुई एक आँख लेकर वह अपनी पराजय से खिन्न लड़खड़ाता हुआ निकल गया। कैथराइन अनायास ही उसके पीछे चल पड़ी। तब उसने मुड़कर पीछे देखा और घृणा के साथ उस पर गालियों की बौछार करने लगा।

'नहीं, नहीं ! चूंकि तू उसे चाहती है, उसी के साथ सो। गंदी कुतिया ! और अगर तू अपना भला चाहती है तो अपने दुश्चरित्र पाँव कभी मेरी देहरी मे न रखना !'

उसने गुस्से से दरवाजा भेड़ दिया। गरम कमरे मे गहरी खामोशी छा गई,

सिर्फ कभी-कभी कोयला चटखने की आवाज सुनाई पड़ती थी। जमीन पर सिर्फ उलटी हुई कुर्सियां और खून का एक बड़ा सा धब्बा रह गया था जिसे फर्श पर पड़ी बालू सोख रही थी।

४

जब वे रसेन्योर के घर से बाहर निकले तो लॉतिये और कैथराइन चुपचाप साथ-साथ चलते रहे। पिघलान शुरू हो गई थी, धीमी, ठंडी पिघलान, जो हिम को गलाये बिना उसे भिगो डालती है। पीले आसमान में पूर्णचन्द्र बादलों की ओट दिखाई देने लगा था। काले बादल बहुत ऊपर तूफानी हवा में इधर-उधर तेजी से भाग रहे थे। धरती पर कोई भी जीवन प्रतीत नहीं होता था। नीची छतों से, सफेद ढेर के गल-गल कर धीमा शब्द करते हुए जमीन पर गिरने के अलावा कोई आवाज नहीं आ रही थी।

लॉतिये इस औरत से, जो उसे दे दी गयी थी, बड़ी पशोपेश में पड़ा था और अपनी परेशानी में बोलने के लिए कोई शब्द नहीं ढूंढ पा रहा था। उसने सुझाव रखा था कि वह अपने माता-पिता के पास बस्ती में चली चले लेकिन वह डर के मारे इन्कार कर रही थी। नहीं नहीं उनके साथ बुरा सलूक करने के बाद फिर उनके ऊपर भार बनने से तो कहीं अन्यत्र जाना बेहतर है! फिर उनमें से कोई नहीं बोला। वे बिना किसी लाभ के सड़कों का चक्कर काट रहे थे जहां कि अब कीचड़ की नदी-सी बहने लगी थी। पहले वे बोरो की ओर गए, तब वे मुड़े और खान किनारे और नहर के बीच से गुजरे।

अन्त में वह बोला, 'लेकिन तुम्हें कहीं न कहीं तो सोना ही होगा। काश मेरे पास एक कमरा होता और मैं तुम्हें आसानी से वहां—'

लेकिन संकोच की एक अजीब भावना ने उसे बोलने से रोक दिया। उसका पिछला जीवन उसके सामने आया। उनकी एक-दूसरे को भोगने की पुरानी इच्छा, और नाजुक सम्बन्धों तथा शर्म का उन दोनों के एक साथ होने से रोकना। क्या अब भी वह उसे चाहता है जो वह इतना परेशान हो रहा है? यह विचार धीरे-धीरे उसके दिल में उसे भोगने की इच्छा जाग्रत कर रहा था। गेस्टन-मेरी में उसके घूंसों की याद उसके दिल में अब घृणा की जगह प्यार और आकर्षण ला रही थी और उसे आश्चर्य हो रहा था कि उसे रिक्वीलां ले जाने का उसका विचार अब स्वाभाविक और सहज ही किया जाने योग्य बन रहा है।

'तब, आओ, निश्चय कर लो कि तुम्हें यह पसंद है कि नहीं कि मैं तुम्हें प्यार करूं?' तुम्हें मेरे साथ आने में नफरत होनी चाहिए।'

वह धीरे-धीरे उसके पीछे चल रही थी क्योंकि कीचड़ वाली फिसलन मे पाँव उठाने की तक्लीफ से उसे विलम्ब लग रहा था; अपना सिर ऊँचा उठाये वगैर वह बोली :

'मैं बहुत तकलीफ उठा चुकी हूँ, हे ईश्वर ! मुझे ज्यादा कष्ट मत दो । जो कुछ तुम मुझसे माँग रहे हो इससे हमारा क्या लाभ होगा । अब, जब कि मेरा भी एक प्रेमी है और तुम्हारी भी एक प्रेमिका है ?'

उसका मतलब माकेटी से था । वह विश्वास करती थी कि यह नवयुवक अब भी उसके पास जाता है जैसी कि एक पखवारे से अफवाह थी; और फिर जब उसने सौगंध खाई कि ऐसा नहीं है तो वह अपना सिर हिलाने लगी, क्योंकि उसे वह संध्या याद थी जब कि उसने उन्हें कामुक होंठों से एक-दूसरे का प्रगाढ़ चुम्बन लेते देखा था ।

'इस प्रकार की वाहियात बातें वास्तव मे खेदजनक है ?' रुकते हुए धीरे से उसने कहा । 'हम एक दूसरे को अच्छी तरह समझ सकते है ।'

हल्के कंपन के साथ उसने उत्तर दिया :

'कोई ख्याल न करो, तुम्हें लज्जित होने की जरूरत नहीं । तुम्हारा ज्यादा कुछ नहीं बिगड़ा । अगर तुम जान पाते कि कितनी व्यर्थ की वस्तु मैं हूँ—दो कौड़ी की भी नहीं, यकीनन !' ऐसे ढाँचे में ढली कि मैं कभी औरत नहीं हो सकती ।

और वह अपने को कोसती रही, मानो उसके तरुणी होने मे विलम्ब के लिए वही जिम्मेदार हो । उसके प्रेमी के अलावा वह अपनी गिनती छोकरियों में करती थी ।

लॉतिये ने द्रवीभूत होकर बड़ी धीमी आवाज मे कहा : 'मेरी नन्हीं गुड़िया ।'

वे खान के किनारे की जड़ मे पहुँच गए थे जो बड़े ढेर की छाया मे छिपी थी । एक काला बादल का टुकड़ा चाँद के ऊपर आ गया । वे अब एक दूसरे के चेहरे नहीं पहचान पा रहे थे, उनकी साँसें टकरा रही थी, उनके होंठ एक दूसरे के उस मधुर चुम्बन के लिए आतुर थे जिसके लिए वे महीनों से तड़प रहे थे । लेकिन एकाएक चाँद प्रकट हो गया, उन्होंने अपने ऊपर, रोशनी मे सफेद चट्टानों के सिरे पर, सीधे वोरो में खड़े संतरी को देखा और इससे पहले की वे चुम्बन ले सकते एक संकोच की भावना ने उन्हें जुदा कर दिया । पुरानी संकोच-शीलता, जिसमें क्रोध का पुट था, एक अस्पष्ट विरोध, जिसमें मित्रता की भावना अधिक थी । वे फिर भारी कदमों से रवाना हो गए और उनके घुटने-घुटने तक कीचड़ हो गया था ।

'तब, यह तय हो गया। तुम मेरे मे कोई सरोकार नहीं रखना चाहती ?' लॉतिये ने पूछा।

'नहीं,' वह बोली। चवाल के बाद तुम और तुम्हारे बाद अन्य कोई, समझे ? नहीं, इससे मुझे नफरत है; जिससे मुझे कोई आनंद नहीं मिलता उसे करने से क्या फायदा ?'

वे चुपचाप कुछ सौ कदम चलते रहे।

'लेकिन, कुछ भी हो, तुम जानती हो तुम्हें कहाँ जाना है ?' वह बोला 'इस तरह की रात में मैं अकेला तुम्हें बाहर नहीं छोड़ सकता।'

वह साधारण लहजे में बोली :

'मैं वापस जा रही हूँ। चवाल मेरा मरद है। मुझे उसके साथ के अलावा और कहीं भी नहीं सोना।'

'लेकिन वह तुम्हे पीटते-पीटते मार डालेगा।'

वे फिर चुप हो गए। उसने आत्मसमर्पण के भाव मे अपने कंधे सिकोड़े। वह उसे पीटेगा और जब वह पीटते-पीटते थक जायगा तो फिर छोड़ देगा। एक आवारा की तरह सड़कों की खाक छानने मे यह बेहतर नहीं है ? तब वह मार खाने में अभ्यस्त है, वह अपने संतोष के लिए, बोली, कि दस लड़कियों मे से आठ की हालत उससे अच्छी नहीं है। अगर उसका प्रेमी कभी उससे शादी कर लेगा तो उसकी मेहरबानी होगी।'

लॉतिये और कैथराइन स्वतः ही मोंटमू की ओर निकल पड़े और ज्यों-ज्यों वे नजदीक पहुँचते जा रहे थे उनकी चुप्पी बढ़ती जा रही थी। ऐसा प्रतीत होता था कि उन लोगों का पहले कभी साथ ही नहीं रहा। उसे चवाल के पास वापस जाते देख उसे बड़ा क्लेष हो रहा था लेकिन सांत्वना के कोई शब्द वह नहीं ढूंढ पा रहा था। उसका दिल टूट रहा था; उसके पास मौजूदा दीनता और भगोड़ेपन के अलावा देने के लिए कुछ नहीं था और वह भी एक रात के लिए। अगर दूसरे दिन किसी सैनिक की गोली उसके सीने के आर-पार न हुई तो। शायद इस प्रकार यातना सहना ही बुद्धिमत्ता थी। वह नये कष्ट का खतरा न उठाते हुए कष्ट भोग रहा था इसलिए, वह उसे उसके प्रेमी के पास तक ले गया। जब कैथराइन ने उसे मेन रोड पर ही रुक जाने को कहा तो उसने कोई विरोध नहीं किया। वह आहातों के कोने में, एस्टेमिने टपिक्यूटी से बीस मीटर दूर ही ठहर गया। वह बोली :

'आगे न आना। अगर कहीं उसने तुम्हें देख लिया तो स्थिति और बिगड़ जायगी।'

चर्च की घड़ी ने ग्यारह का घंटा बजाया। एम्टेमिनेट बंद था लेकिन झिलमिली से रोशनी की चमक आ रही थी।

'गुड बाई।' वह धीरे से बोली।

कैथराइन ने उसकी ओर हाथ बढ़ाया। वह उसे बड़ी देर तक पकड़े रहा और बड़े दुख के साथ उसने हाथ खींचा तथा धीरे-धीरे उसे वहीं छोड़ कर आगे बढ़ गई। दुबारा अपना सिर घुमाये बगैर वह छोटे बंद दरवाजे को खोलकर अन्दर चली गई। लेकिन वह वहीं खड़ा रहा। उसकी आखें मकान पर लगी हुई थी और जानने के लिए मन में बेचैनी थी कि अन्दर क्या हो रहा है ? वह कान लगा-कर सुनने की चेष्टा कर रहा था कि उसे मार खाई औरत की चीखें तो नहीं सुनाई देतीं। मकान मे अंधेरा और खामोशी बनी रही। उसे सिर्फ पहली मंजिल के कमरे में प्रकाश होता दिखाई दिया। वहाँ खिड़की खुली और सड़क की ओर झुक कर देखने वाली दुबली पतली काया को उसने पहचाना, वह करीब आ गया।

तब कैथराइन बहुत धीरे से बोली :

'वह अभी लौटा नही है। मै सोने जा रही हूँ। कृपया चले जाओ।'

लॉतिये लौट गया। पिघलाव बढ़ चला था। छतों से लगातार पानी गिर रहा था। एक नमी दीवारों, टट्टर के बाड़ों मे रिस रही थी, इस औद्योगिक बस्ती का अस्त-व्यस्त ढेर अन्धकार मे डूबा हुआ था। थकावट और उदासी से भरा हुआ पहले वह रिक्वीलॉ की ओर मुड़ा। उसकी इच्छा यही हो रही थी कि जाकर जमीन के गर्त में समा जाय। लेकिन बाद मे उसे वोरो का विचार आया। उसने नीचे उतरने वाले बेल्जियन मजदूरों के बारे मे सोचा, अपने बस्ती के उन साथियों के बारे मे सोचा जो सैनिकों से क्रुद्ध थे और अपनी खान मे अजनबी लोगों का घुसना सहन करने को तैयार नही थे। और वह पिघली हुई बरफ से जगह-जगह बने गड्ढों से गुजरता हुआ नहर के किनारे-किनारे चलने लगा।

जब वह दुबारा खान-किनारे रुका तो चाँद की चमकीली रोशनी हो रही थी। उसने सिर उठाकर आसमान की ओर देखा। उपर बहने वाली तेज हवाओं से बादल तेजी से भाग रहे थे; लेकिन उनका रंग अब सफेद हो गया था और उनका हल्का आवरण चाँद के ऊपर इस प्रकार छाया था मानो किसी तालाब के अस्थिर पानी में चन्द्रमा का प्रतिबिंब दिखाई देता हो। वे इस तेज रफ्तार से भाग रहे थे कि एक क्षण को चन्द्रमा में ऊपर हल्का आवरण आ जाता था और दूसरे ही क्षण उनकी धवल किरणें धरती पर पड़ने लगती थीं।

स्वच्छ चाँदनी को भरपूर देख लेने के बाद लॉतिये ने जब निगाह नीची की तो वोरो की चोटी के दृश्य की ओर उसका ध्यान आकर्षित हुआ। संतरी ठंड से

अकड़ कर चहल-कदमी कर रहा था। वह मार्सेनीज की ओर पच्चीस कदम चलने के बाद फिर मोंटमू की ओर लौट आता था। उनकी काली छाया के ऊपर उसकी बन्दूक की संगीन आसमान की ओर उठी हुई चमकती नजर आती थी। लेकिन नवयुवक की दिलचस्पी उस केबिन के पीछे, जहाँ तूफानी रातों में बोनेमाँ शरण लेता था, एक डोलती छाया—दुबके बैठे हुए एक जानवर—को देखकर और बढ़ी। उसने तत्काल पहचान लिया कि वह जॉली था। उसकी लचीली लम्बी रीढ़ नेवले की भाँति दीख रही थी। संतरी उसे नहीं देख सकता था। यह लुटेरा बच्चा निःसंदेह कोई गहरा मजाक करने की तैयारी कर रहा है क्योंकि वह अब भी इन सिपाहियों से बेहद नाराज था और बराबर पूछा करता था कि हम कब बन्दूकधारी हत्यारों से मुक्त होंगे जो यहाँ लोगों की हत्या के लिए भेजे गए हैं।

एक बार लॉतिये ने सोचा कि उसकी कोई भी बेहूदा हरकत को रोकने की नीयत से वह उसे बुलाये। चाँद फिर छिप गया था। उसने देखा कि वह उछल कर कूदने के लिए संतरी के और निकट खिसक चला है, लेकिन चाँद के फिर निकल आने पर बच्चा दुबका बैठा रहा। हर फेरे में संतरी केबिन तक आता और फिर मुड़ कर विपरीत दिशा की ओर चला जाता था। उसकी छाया देख एकाएक जंगली बिल्ली की तरह बच्चा बड़ी फुरती से उसके कंधे पर कूदा और अपने पंजों से उसे पकड़े हुए उसने अपने लम्बे खुले चाकू को उसके गले में धंसा दिया। संतरी के घोड़े के बालों वाले सख्त कालर पर चाकू का फल फँसने लगा और उसे दोनों हाथों से उसकी मूँठ पकड़ कर उस पर झूलते हुए शरीर का सारा बोझ डाल देना पड़ा। वह अक्सर फार्मों के पीछे जंगली चिड़ियों का इसी तरह शिकार किया करता था। उसने यह काम इतनी फुर्ती से किया कि रात्रि में सिर्फ गला घोटने वाली चीख उठी और पुराने लोहे के मानिंद आवाज करती हुई बन्दूक गिर पड़ी। चाँद फिर चमकने लगा था।

जड़वत् खड़ा लॉतिये अब भी ताक रहा था। एक चीख उसके गले में ही अटक गई थी। ऊपर, खान की चोटी खाली थी। बादलों के नीचे कोई भी वस्तु नजर नहीं आती थी। वह तेजी से ऊपर दौड़ा और उसने देखा कि जॉली लाश के सामने उकड़ूं बैठा है। धूमिल प्रकाश में उनका लाल धारीवाला पायजामा और भूरा ओवरकोट बरफ के ऊपर बेमेल बैठ रहे थे। खून की एक बूंद भी वहाँ नहीं गिरी थी, चाकू अब भी मूँठ के पास तक उसके गले में धँसा हुआ था। एक गुस्से में भरे घूंसे से, जिसके बारे में वह कोई तर्क पेश नहीं कर सकता था, उसने बच्चे को लाश के सामने गिरा दिया।

'यह तुमने किसलिए किया?' उसने काँपते स्वर में कहा। जॉली अपने

हाथों के बल बैठ गया। उसके तेज घूंसे से काँपता हुआ, वह गुस्से से लाल हो गया था।

'भगवान कसम ! तुमने ऐसा क्यों किया ?'

'मैं नहीं जानता; मेरी इच्छा थी।'

वह इसी उत्तर पर जोर दे रहा था। पिछले तीन दिनों से उसकी ऐसी इच्छा थी। अपनी इच्छा पूरी न कर पाने के कारण वह परेशान था। वह इस बारे मे इतना सोचता था कि उसके बड़े कानों के पीछे उसकी कनपटी दुखने लगती थी। खनिकों को उनके घरों मे परेशान करने वाले इन सिपाहियों के साथ ऐसा करने की उसकी इच्छा अति बलवती हो उठी थी ? जंगल में जो उत्तेजनात्मक भाषण उसने सुने थे, खानों में विनाश और मौत के जो नारे लगे थे, उनके पाँच या छः शब्द उसे याद थे। उन्हे वह सड़क पर क्रान्ति का खेल करने वाले बच्चे की भाँति दुहराया करता था। वह अधिक कुछ नहीं जानता था; किसी ने भी उसे सिखाया नहीं था कि वह ऐसा करे। यह विचार उसके दिल में स्वतः ही उत्पन्न हुआ था, ठीक उसी तरह जैसे उसके सामने पड़ने वाले खेत से प्याज चुराने की उसकी इच्छा होती थी।

इस बच्चे के दिमाग के किसी कोने मे अपराध की इस भावना की छिपी वृद्धि से चौंक कर लॉतिये ने उसे ठोकर से एक मूढ जानवर की भाँति पीछे धकेला। उसे चिन्ता हो रही थी कि वोरो के प्रहरी ने कहीं उस संतरी की घुटी चीख न सुन ली हो और वह बार बार, जब भी चन्द्रमा बादलों से प्रकट होता, खान की ओर सशंकित नजरों से देख रहा था। जब कोई चीज उसे नजर न आयी तो वह नीचे झुका, हाथों को छूकर उसने देखा कि वे ठंडे होते जा रहे है। ओवरकोट के नीचे दिल की धड़कन भी बंद हो गई थी। सिर्फ चाकू की मूंठ दिखाई दे रही थी जिसमें बड़े अक्षरों मे 'आर्मर' शब्द खुदा हुआ था।

उनकी निगाह गले से मुँह की ओर गई। एकाएक उसने उस छोटे कद के सिपाही को पहचान लिया। यह जूलेस था। वह रंगरूट जिससे उसने एक दिन सुबह बातचीत की थी। इस सुन्दर चेहरे को देखकर उसका मन दया से भर आया। उसकी नीली आँखें, खुली हुई आसमान की ओर उसी प्रकार ताक रही थीं जैसे वह उस दिन क्षितिज के उस पार अपनी जन्मभूमि को खोज रहा था। कहाँ था वह प्लोगोफ, जो चमकीली धूप में उसे दिखाई-सा पड़ा था ? वहाँ, वहाँ ! इस तूफानी रात में समुद्र बहुत दूर गरज रहा था। शायद ऊपर बहने वाली हवा उस दलदली इलाके से गुजरी थी। हवा मे बहने वाले अपने दुपट्टे को पकड़े, शायद, दो औरतें वहाँ खड़ी थीं। एक उसकी माँ, दूसरी बहिन।

मानो वे देख रहीं थीं उन्हें जुदा करने वाली लोगों की दूरी से ताक रही थीं कि यहाँ उनके छोटे से प्रिय पुत्र और भाई का क्या हो रहा है ? अब वे हमेशा-हमेशा उसका इन्तजार करेंगी । गरीबों के लिए यह कितनी वाहियात बात है कि वे अमीरों के लिए एक दूसरे की हत्या करें !

लेकिन उसकी लाश को ठिकाने भी लगाना था। पहले तो लॉतिये ने सोचा कि उसे नहर में फेंक दे । परन्तु वहाँ निश्चित पता चल जाने के भय से वह रुक गया । उसकी चिन्ता बेहद बढ़ गई थी, हर एक क्षण महत्वपूर्ण था; उसे क्या करना चाहिए ? एकाएक उसे एक बात सूझ गई; अगर वह इस लाश को रिक्वीलॉ तक ले जा सके तो वह हमेशा के लिए उसे वहाँ दफना सकेगा ।

'यहाँ आओ,' उसने जॉली से कहा ।

बच्चे को संदेह हुआ । 'नहीं, तुम मुझे पीटना चाहते हो । और मुझे काम भी है । गुडनाइट ।'

वास्तव में उसने बीवर्ट और लायडी से एक गुप्त छिपने की जगह मिलने को कहा था । यह स्थान चोरों के लिए रखे गए तख्तों के नीचे एक छेद था । उनमें यह तय हुआ था कि वे बाहर सोयेंगे ताकि अगर बेल्जियन खान में उतरे तो जब वे उतरने लगें पत्थरों से उनकी हड्डियाँ तोड़ डाली जाँय ।

'सुनो । 'लॉतिये बोला, 'यहाँ आओ ? नहीं तो मैं सिपाहियों को आवाज दूँगा और वे तुम्हारा सिर उतार लेंगे ।'

और जॉली के निश्चय करने तक उसने अपना रूमाल निकाला और चाकू निकालने से पेस्तर सिपाही की गरदन कसकर बाँध दी ताकि खून बाहर न बहे । बरफ पिघल रही थी । मिट्टी में लाल धब्बा या संघर्ष के कारण पाँव का कोई निशान नहीं था ।

'तुम पाँव की तरफ से पकड़ो ।'

जॉली ने पाँव पकड़े और लॉतिये ने बन्दूक उसकी पीठ पर बाँध कर कंधों से उसे उठाया और तब वे दोनो धीरे से खान के किनारे बड़ी सवधानी से उतरने लगे ताकि कोई पत्थर नीचे की ओर न लुढ़के । सौभाग्य से चन्द्रमा बादलों की ओट हो गया था । लेकिन जब वे नहर के किनारे से गुजर रहे थे फिर चाँद चमकने लगा था और यह आश्चर्य की बात थी कि पहरेदार ने उन्हें नहीं देखा । चुपचाप वे तेजी से बढ़ रहे थे । लाश के लटक जाने से उन्हें बड़ी असुविधा हो रही थी और हर सौ मीटर पर उन्हें उसे जमीन पर लिटा देना पड़ता था । रिक्वीलॉ के एक नुक्कड़ पर उन्होंने एक आवाज सुनी और मारे भय के उनकी जान सूख गई । उन्हें गश्त लगाने वालों से बचने के लिए दीवार के पीछे छिप

जाना पड़ा। आगे, एक व्यक्ति उनके सामने पड़ा लेकिन वह शराब के नशे में था और उन्हें गालियाँ बकता हुआ निकल गया। अन्त में वे पुरानी खान तक पहुँच गए। पसीने से नहाये वे इतने थक गए थे कि उनके दाँत किटकिटाने लगे थे।

लॉतिये ने अन्दाज लगा लिया था कि सीढ़ियों के शेफ्ट से सिपाही को नीचे उतारना सरल न होगा। यह बड़ी दिक्कत का काम था। पहले जॉली को ऊपर खड़े होकर लाश को नीचे लटकाना पड़ा और लॉतिये झाड़ पकड़े हुए उसके साथ-साथ पहली दो सीढ़ियाँ, जिनके डंडे टूटे हुए थे, उतरा। उसके बाद प्रत्येक सीढ़ी पर उन्हे इसी क्रम को दुहराना पड़ा। वह पहले नीचे जाता था और ऊपर से जॉली द्वारा दी गई लाश को पकड़ता था। इस प्रकार वे दो सौ तीस मीटर तक तीस सीढ़ियाँ उतरे और प्रत्येक बार लाश उसे अपने ऊपर गिरती प्रतीत होती थी। बन्दूक उसकी हड्डियों मे चुभती थी और बड़े जतन से संभाले गए मोमबत्ती के टुकड़े को जलाने की इजाजत उसने जॉली को नहीं दी। क्या फायदा ? इस संकरी सुरंग मे उन्हे रोशनी से परेशानी ही होगी। जब वे 'पिट आई' पर पहुँचे तो बेदम होकर उसने जॉली को बत्ती लेने भेज दिया। वह बैठ कर उसका इन्तजार करने लगा। शव के पास बैठे हुए उसका दिल बुरी तरह धड़क रहा था। जब जॉली रोशनी ले आया तो लॉतिये ने उससे सलाह की, क्योंकि वह खान के हर हिस्से का पता लगा चुका था। वह सुराख तक उससे नहीं छूटे थे जहाँ से आदमी का गुजरना असंभव है। वे लाश को घसीटते हुए भग्नप्रायः गलियारो की भूल-भूलैया से गुजरते हुए एक किलोमीटर तक चले। अन्त मे छत नीची हो चली थी और वे झुकते हुए एक बालुआ चट्टान के नीचे पहुँचे, जो आधे टूटे तख्तों के सहारे अटकी थी। वह एक प्रकार का लम्बा सन्दूक-सा था जिसके भीतर उन्होंने सिपाही को इस प्रकार लिटा दिया जैसे कफन के भीतर। उन्होंने उसकी बन्दूक उसकी बगल मे रख दी; फिर अपने बूटों की जोरदार ठोकरों से, अपने दब जाने की परवाह किये बगैर, तख्ते तोड़ने लगे। तत्काल वहाँ जमीन धँस गई और वे बड़ी फुरती से, चारों हाथ-पावों से रेंग कर पीछे खिसक आये। जब, जिज्ञासा से लॉतिये ने एक बार मुड़ कर देखा तो छत अब भी गिरती जा रही थी और धीरे-धीरे लाश उस भारी बोझ के नीचे दबती जाती थी। अब वहाँ मिट्टी के एक बड़े ढेर के अलावा और कोई चिन्ह बाकी नही बचा था।

जॉली अपने लूट-पाट के माल असबाब के पुराने अड्डे पर लौट गया था, वह बहुत थका था और पुआल पर लम्बा लेटा हुआ धीरे-धीरे अपने आप से कह रहा था :

'होगो ! उन छोकरों को मेरी राह देखने दो; मैं एक घंटा झपकी ले लूं ।'

लॉतिये ने मोमबत्ती का बचा हुआ छोटा सा टुकड़ा बुझा दिया । वह भी थक गया था लेकिन उसे नींद महसूस नहीं हो रही थी; दुखदायी, भयावह विचारों से उसका माथा इस प्रकार दमक रहा था मानों हथोड़े की चोट पड़ रही हो । एक विचार ऐसा था कि जिसका उत्तर वह नहीं सोच पा रहा था । वह यह कि जब उसने चवाल को चाकू के नीचे दबा लिया था तो उसने उसे छोड़ क्यों दिया और क्यों इस छोकरे ने उस सिपाही की हत्या कर डाली जिसका नाम भी वह नहीं जानता था ? इसने उसकी क्रांतिकारी आस्था को—हत्या का साहस और हत्या का अधिकार—हिला दिया था । तब, क्या वह कायर है ? पुआल में पड़ा बच्चा एक शराबी की तरह खुर्राटे लेने लगा था, मानो वह हत्या के नशे को सोकर दूर कर रहा हो । लॉतिये का मन अशांत और खिन्न था, उस बच्चे की वहाँ उपस्थिति उसे खल रही थी । एकाएक वह काँप उठा, भय की एक लहर उसके चेहरे पर दौड़ गई । एक हल्की सरसराहट, एक सुबकी सी उसे जमीन की उस गहराई से निकलती सुनाई दी । छोटे सिपाही की आकृति, चट्टानों के नीचे बन्दूक के साथ लिटाये गए उसके शव की याद में उसकी उसकी पीठ जम सी गई और उसके रोमांच खड़े हो गए । यह महज मतिभ्रम था, उसे ऐसा प्रतीत होता था कि समस्त खान से आवाजें आ रही है । उसने बत्ती जला ली और उसकी पीली रोशनी में गलियारों की शून्यता देखने के बाद उसे तसल्ली हुई ।

लगभग पन्द्रह मिनट तक इसी प्रकार के अन्तर्द्वन्द से परेशान वह एकटक जलती हुई लौ को देखता रहा, लेकिन उसके समाप्त हो जाने पर फिर अंधकार छा गया । वह फिर काँपने लगा । इतनी जोरों से खुर्राटे लेने के लिए उसकी तबियत हुई कि वह जॉली के कान उमेठे ! बच्चे का सामीप्य इतना असह्य हो उठा था कि वह ताजी हवा लेने की अनिवार्य आवश्यकता महसूस करता तेजी के साथ गलियारों और मार्ग को पार करता हुआ इस प्रकार बाहर निकल आया मानो कोई छाया उसका पीछा कर रही हो ।

जब लॉतिये रिक्वीला के खण्डहरों के बीच ऊपर पहुँच गया तब उसने शांति की साँस ली । चूंकि वह हत्या का साहस नहीं कर सकता था, इसलिए उसके लिए मृत्यु का मार्ग था; और यह मृत्यु का विचार इस कदर उसके दिमाग में समा गया था कि उसे अन्त में यही एकमात्र आशा दिखाई देती थी । बहादुरी की मौत, क्रांति के लिए मरना, यह हर चीज का अन्त कर देगी; उसकी हर बात का फैसला कर देगी, अच्छी या बुरी । और उसे सोच विचार से छुट्टी मिल जायगी । अगर मजदूर बोरिनों पर हमला करेंगे तो वह पहली कतार में रहेगा;

तब घातक प्रहार लगने का अच्छा मौका होगा। इस दृढ़ निश्चय के साथ वह वोरो के आस-पास चक्कर काटने के लिए निकल गया। दो बज चुका था, और कप्तान के कमरे से, जहाँ खान की निगरानी के लिए पहरा लगा हुआ था, जोरों की आवाजें आ रही थीं। संतरी के गायब हो जाने से गार्ड हैरान थे। वे कप्तान को जगाने गए थे और उस स्थान की अच्छी तरह छान-बीन के बाद उनका यह मत था कि संतरी भाग गया है। लॉतिये को, जो छाया में छिपा हुआ था, उस छोटे सैनिक द्वारा बतलाई गई इस रिपब्लिकन कप्तान की बात याद आई। कौन जानता है कि वह जनता की ओर हो जाय! सैनिक अपनी बन्दूकें उठायेंगे और वह अभिजात वर्ग की सामूहिक हत्या का संकेत होगा। एक नया स्वप्न वह देखने लगा। उसे अब जिन्दगी से मोह हो रहा था, और वह घंटों कीचड़ में खड़ा रहा। पिघलाव से पानी की बूंदें उसके कंधों पर गिर रही थीं और उसके मन मे एक आशा जाग्रत हो रही थी कि विजय अब भी संभव है।

पाँच बजे सुबह तक वह बोरिनों का इन्तजार करता रहा। तब उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि कम्पनी ने चालकी के साथ उनके वोरो मे ही सोने की व्यवस्था की है। नीचे उतरने का काम शुरू हो गया था और ब्यू-सेंट-क्वारेंट बस्ती के चंद हड़तालियों ने, जिन्हें सूचना देने का काम सौपा गया था, अभी अपने साथियों को सूचित नहीं किया था। उसने उन्हे कम्पनी की चालबाजी बताई और वे दौड़ते हुए वहाँ से रवाना हुए। लॉतिये स्वयं खान के पीछे, रस्से से घसीटे जाने वाले मार्ग में खड़ा इन्तजार करने लगा। छः का घंटा बजा। मटमैला आसमान पीला पड़ रहा था और उसमे उषाकाल की लालिमा छाने लगी थी। अब्बे रेने अपना चोगा सम्भाले हुए उस रास्ते से गुजरा। प्रति सोमवार को वह खान की दूसरी ओर कॉनवेंट के गिरजे में सुबह की सामूहिक प्रार्थना के लिए जाया करता था।

अपनी जलती हुई आँखों से नवयुवक को घूरने के बाद वह जोरदार आवाज में बोला; 'गुड मार्निंग, मेरे दोस्त।'

लेकिन लॉतिये ने कोई उत्तर नहीं दिया। दूर वोरो की मचानों में बीच उसने अभी-अभी एक औरत को गुजरते देखा था, और वह उत्सुकता से आगे दौड़ा क्योंकि उसका ख्याल था कि वह कैथराइन थी। मध्य रात्रि से कैथराइन पिघलाव वाली सड़कों पर घूम रही थी। चवाल ने वापस लौटने पर उसे बिस्तर मे लेटी हुई पाया और धक्का देकर उसे नीचे गिरा दिया था। वह चिल्ला उठा था कि दरवाजे से बाहर निकलने में ही उसकी कुशल है वर्ना वह खिड़की से उसे बाहर फेंक देगा। वह रोते हुए मुश्किल मे कपड़े पहन पाई थी कि उसने उसे आखिरी बार धक्का देकर बाहर धकेल दिया था। इस एकाएक जुदाई से वह हक्की-बक्की

रह गई थी और कुछ देर बाहर एक पत्थर पर बैठकर आशा लगाये बैठी थी कि शायद वह फिर उसे वापस बुला लेगा। यह असंभव है, वह निःसंदेह उसे खोजेगा और उसे इस प्रकार काँपते हुए तथा असहाय पाकर अन्दर बुला लेगा क्योंकि उसे बुलाने वाला और कोई नहीं है।

दो घंटे प्रतीक्षा करने के बाद वह उठ खड़ी हुई। वह सड़क में फेंक दिये गए कुत्ते की तरह जाड़े से मरी जा रही थी। वह मोंटमू से रवाना हो गई फिर वापस आई लेकिन उसे हिम्मत नहीं हो रही थी कि रास्ते से पुकारे या दरवाजे पर जाकर खटखटाये। अन्त में, बस्ती मे अपने माता-पिता के पास जाने के विचार से वह मुख्य सड़क से दाईं ओर मुड़ी। लेकिन जब वह वहाँ पहुंची तो उसे इतनी शरम मालूम पड़ी कि वह तेजी से बगीचों से होती हुई दौड़ी। उसे भय था कि कोई उसे पहचान न ले। इसके बाद वह इधर-उधर भटकती थी। जरा सी खटके से वह भयभीत हो उठती थीं। वह काँप रही थी कि कहीं कोई उसे पकड़ कर मार्सेनीज के वेश्यालय में न पहुँचा दे। यही भय उसे महीनों से कुस्वप्न की तरह सता रहा था। दो बार वह वोरो की ओर गई लेकिन गार्ड की बुलन्द आवाज से भयभीत होकर बेतहाशा भाग निकली और बराबर पीछे मुड़कर देखती जाती थी कि कहीं कोई उसका पीछा तो नहीं कर रहा है। रिक्वीलॉ लेन हमेशा शराबियों से भरी रहती थी। वह वहाँ भी गई और उसे एक क्षीण आशा थी कि शायद वह व्यक्ति उसे मिल जाय जिसे कुछ घंटे पहले उसने भगा दिया था।

आज सुबह चवाल को खान मे उतरना है, इस विचार से कैथराइन पुनः खान की ओर आई। गोकि वह समझ रही थी कि उससे बात करना व्यर्थ ही होगा; उनके सम्बन्ध टूट चुके है। जीनबर्ट में काम बन्द था; और उसने कसम खाई थी कि अगर वह वोरो में फिर से काम पर गई तो वह उसे मार डालेगा, क्योंकि उसे डर था कि यहाँ काम करने पर वह फिर उसे मना लेगी। इसलिए अब क्या किया जाय?—या तो कहीं अन्यत्र जाओ, या भूखो जान दे दो, और गुजराने वाले हर व्यक्ति के घूंसे सहो? वह कीचड़ में घिसटती हुई आगे बढ़ रही थी। उसकी टाँगें दर्द कर रही थी और उसके घुटनों-घुटनों कीचड़ भर आई थी। पिघलाव से अब सड़कों पर कीचड़ की नदी-सी बहने लगी थी। वह उसके बीच से गुजरी और किसी पत्थर पर बैठने का साहस न कर चलती गई।

दिन निकल आया। कैथराइन ने चवाल को पीठ देखकर उसे पहचाना। वह सावधानी से खान के किनारे का चक्कर काट कर जा रहा था। उसने देखा कि लायडी और बीवर्ट भी तख्तों के ढेर के नीचे अपने छिपने के स्थान से बाहर झाँक रहे हैं। उन्होंने रात वहीं छिपकर गुजारी थी और घर नहीं गए थे क्योंकि

जॉली उन्हें उसका इन्तजार करने का आदेश दे गया था। वह रिक्वीलां में हत्या के नशे को सोकर दूर कर रहा था और यह दोनों बच्चे गरमी पाने के लिए दूसरे की गलबैंया डाले पड़े थे। अखरोट और ओक के तख्तों के बीच से जब हवा चलती थी तो ये दोनों ही किसी लकड़हारे की सूनी झोपड़ी मे पड़े हुए व्यक्ति की भाँति बैठ जाते थे। लायडी को मार खाने की, शिकायत की हिम्मत नही हो ? रही थी जब कि बीवर्ट कह रहा था कि कप्तान के मुक्कों से उसका गाल सूज आया है। वह निःसंदेह अपनी शक्ति का दुरुपयोग कर उन्हें चोरी के माल में हिस्सा नहीं देता। अन्त मे उनका दिल बागी हो उठा था और आदेश के प्रतिकूल वे एक दूसरे से लिपट गए थे। उन्हें उस अदृश्य शक्ति द्वारा उनके कान उमेठे जाने का भी भय नहीं था जिससे वह उन्हें डराया करता था। यही नहीं हुआ, वे धीरे से एक दूसरे का चुम्बन ले रहे थे। वे अपने इस आलिंगन-चुम्बन द्वारा अपनी चिरकालीन पिपासा को शांत कर रहे थे। रात भर वे इस तरह एक दूसरे को गरमी पहुँचाते रहे। वे इस गुप्त अड्डे में छिपे हुए इतने प्रसन्न थे कि उनकी याद मे वे कभी भी इतने प्रसन्न नहीं हुए थे—सेंट बारबे के मेले मे भी नहीं, जब कि उन्होंने सूअर का नमक लगा बगले का गोश्त खाया था और शराब पी थी।

एकाएक बिगुल की आवाज से कैथराइन चौंक उठी। उसने सिर उठा कर देखा कि वोरो के गार्ड बन्दूकें उठा रहे है। लॉतिये दौड़ता हुआ पहुँचा। बीवर्ड और लायडी कूद कर अपने छिपने के स्थान से बाहर निकल आये। और ऊपर सूर्य के प्रकाश मे, बस्ती से औरतों और पुरुषों की टोलियाँ क्रोध मे दाँत पीसती हुई चली आ रही थीं।

५

वोरो के सभी प्रवेश द्वार बंद कर दिये गए थे। साठ सैनिक बन्दूकें जमीन से टिकाये हुए एकमात्र खुले द्वार की रक्षा कर रहे थे जो एक संकरे मार्ग से कप्तान के कमरे पर खुलने वाले रिसीवर के कमरे और ओसारे तक चला गया था। लकड़ी की भीत के सहारे वे दो कतारें बनाये हुए थे ताकि उन पर पीछे से हमला न हो सके।

पहले बस्ती के खनिकों का झुंड कुछ दूर खड़ा रहा। वे उस समय मुश्किल से तीस के करीब रहे होंगे। वे आपस में बड़ी उत्तेजक बातें कर रहे थे।

माहेदी, जो पहले पहुँचने वालों में थी, अपने रूखे बालों को रुमाल से बाँधे हुए थी। उसकी गोद में एस्टीली थी और वह बार-बार बौखलाहट में चिल्ला रही थी :

'किसी को भी अन्दर या बाहर जाने-आने मत दो ! उन सभी को वहीं बंद रहने दो ।'

माहे ने स्वीकृति दी और तभी फादर मावयू रिक्वीलॉ से वहाँ पहुँचा । वे उसे रोकना चाहते थे । लेकिन वह विरोध करता हुआ कह रहा था चाहे कुछ हो मेरे घोड़े घास अवश्य खायेंगे । मैं बगावत की जरा भी परवाह नहीं करता । अलावा इसके एक घोड़ा मर गया था, और वे उसे ऊपर लाये जाने का इन्तजार भी कर रहे थे । लॉतिये ने पुराने सईस को मुक्त कर दिया और सैनिकों ने भी उसे शेफ्ट में जाने की इजाजत दे दी । पन्द्रह मिनट बाद, जब भीड़ क्रुद्ध होती जा रही थी, निचले तल्ले का एक बड़ा दरवाजा खुला और कुछ लोग मरे घोड़े को खींचते नजर आये । इस रस्सों के जाल में बंधे माँस के ढेर को उन्होंने पिघलती हुई बरफ के गड्ढे में ही छोड़ दिया । वहाँ इतना आश्चर्य फैला हुआ था कि किसी ने भी उन लोगों को लौटने और पुनः दरवाजा घेरने से नहीं रोका । वे सभी उस घोड़े को पहचानते थे । आपस में कानाफूसी होने लगी :

'यह ट्रोम्पेटी है, क्यों है न ? निःसंदेह ट्रोम्पेटी है ।'

वह वास्तव में ट्रोम्पेटी ही था । नीचे उतरने के बाद से कभी भी वह वहाँ की जलवायु को सहन करने योग्य नहीं हुआ था । वह हमेशा बीमार रहता था और काम के प्रति उसकी कोई दिलचस्पी नहीं थी । ऐसा प्रतीत होता था कि प्रकाश न मिलने से वह हमेशा दुखी रहता है । खान के दानव कहे जाने वाले बेटली ने उसके साथ मित्रता का निष्फल प्रयास किया था । उसके चुम्बन और प्यार से उसकी उदासी बढ़ चली थी । अस्तबल में वे दोनों समीप बाँधे जाते थे । जब ट्रेम्पोटी अस्तबल में बीमार पड़ा था तो बेटली उसे सूंघकर इस प्रकार हिन-हिनाता था मानो उसकी बीमारी से दुखी होकर सुबकियाँ ले रहा हो । वह महसूस करता था कि वह मरणासन्न है और खान ने उसकी आखिरी, एकमात्र खुशी भी छीन ली है जो कि उसके मित्र के ऊपर से उतरने के बाद उसे महसूस हुई थी और उसने जब जान लिया कि उसका दूसरा साथी अब कभी उठने वाला नहीं तो मारे भय के हिनाहिनाते हुए उसने रस्सी तोड़ डाली थी ।

मावयू ने एक हफ़्ता पेश्तर ही बड़े कप्तान को सूचना दे दी थी, लेकिन वे ऐसे समय में बीमार घोड़े के बारे में ज्यादा परेशान नहीं थे । वे घोड़ों को इधर-उधर हटाना नहीं चाहते थे फिर भी उन्हें उसे बाहर निकालने का निश्चय करना ही पड़ा । पिछली साँझ को सईस ने दो घंटा अन्य दो व्यक्तियों के साथ घोड़े को बाँधने में लगाया था । उसे शेफ्ट तक खींचने के लिए उन्होंने बेटली को कसा ।

यह बुड्ढा घोड़ा अपने मृत साथी की लाश को खींचता हुआ तंग गलियारों से गुजरा था। 'पिट शाई' के पास जब उन्होंने उसे खोला तो वह अपनी उदास आँखों से इस लाश को जाल में बाँध कर ऊपर खींचे जाने की सभी तैयारी देखता रहा। अन्त में कुलियों ने उसे बाँध दिया और वह उसे ऊपर उठते देखने के लिए गर्दन उठाये रहा। पहले धीरे-धीरे लाश उठी फिर एकाएक अंधेरे में गायब हो गई। वह अपनी गर्दन निकाले वैसा ही रहा, शायद उसकी पशु स्मृति में जमीन के ऊपर की बातें याद आ रही थीं। लेकिन सब काम समाप्त हो गया, वह अब अपने दोस्त को कभी न देख पायेगा, और उसे भी एक बंडल की भाँति बाँध कर एक दिन ऊपर भेजा जायगा। उसके पाँव काँप रहे थे। दूर-बहुत-दूर से आनेवाली ताजी हवा उसका गला सा घोंट रही थी और जब वह भारी कदमों से अस्तबल वापस लौटा तो वह नशे की हालत मे मालूम पड़ता था।

ऊपर खनिक मायूसी के साथ ट्रोम्पेटी की लाश के सामने खड़े थे। एक औरत धीमी आवाज में बोली—

'एक आदमी और; अगर चाहो तो वह भी नीचे चला जाय।'

लेकिन इसी समय बस्ती से खनिकों का एक नया दल वहाँ पहुँच गया था जिसमें सबसे आगे लेवक्यू अपनी औरत और बाउटलोप के साथ था। वह चिल्लाया—

'मार डालो, इन बोरिनों को! कोई गद्दार यहाँ न रहे! मार डालो! मार डालो!'

सभी आगे को दौड़ पड़े और लाँतिये को उन्हें रोकना पड़ा। वह कप्तान के पास गया जो मुश्किल से अट्ठाइस वर्ष का एक लम्बा, दुबला-पतला, दृढ निश्चय वाला व्यक्ति था। उसने उसे वस्तुस्थिति समझाते हुए उसका समर्थन प्राप्त करने और अपने शब्दों का प्रभाव देखने की कोशिश की। अनावश्यक खून-खराबी से क्या फायदा? क्या खनिक न्याय के पथ पर नही हैं। वे सब भाई-भाई है और उन्हें एक दूसरे से सहानुभूति होनी चाहिए। जब उसने 'रिपब्लिक' शब्द का प्रयोग किया तो कप्तान ने कुछ बेचैनी दिखाई, लेकिन उसकी सैनिक दृढ़ता कायम रही और यकायक बोला—

'दूर रहो! मुझे अपना कर्तव्य पालन को मजबूर न करो!'

तीन बार लाँतिये ने कोशिश की, उसके पीछे उसके साथी गुर्रा रहे थे। वहाँ खबर फैली कि एम० हनेब्यू भी नीचे है। वे उसकी गर्दन पकड़ कर उसे नीचे ले जाने की बातें करने लगे और कहने लगे कि देखें वह अपना कोयला स्वयं काट सकता है कि नहीं। लेकिन यह रिपोर्ट गलत थी। सिर्फ निग्रोल और डेनार्ट वहाँ

थे। वे दोनों ही एक क्षण को रिसीवर के कमरे की खिड़की पर दिखाई दिये। बड़ा कप्तान जो कि पेरीन के साथ पकड़े जाने की घटना के बाद कुछ झेंपा-झेंपा सा रहता था, पीछे खड़ा था और इंजीनियर अपनी चमकीली छोटी आँखों से भीड़ की ओर बहादुरी के साथ इस तरह देख रहा था कि मानो वह उनके उपेक्षा कर रहा हो। मजदूरों ने गालियाँ देना शुरू किया और वे गायब हो गए और उनके स्थान पर सोवरायन का पीला चेहरा दिखाई दिया। वह तब ड्यूटी पर आया और हड़ताल के बाद उसने एक दिन के लिए भी इंजन नहीं छोड़ा था। एक निश्चित विचार में अधिकाधिक डूबा हुआ वह अब ज्यादा बातचीत नहीं करता था। उसकी वह विचारधारा उसकी पीली आँखों की गहराई में इस्पात की भाँति चमकती प्रतीत होती थी।

'दूर रहो!' कप्तान जोरों से चिल्लाया। 'मैं कुछ नहीं सुनना चाहता। मुझे खान में पहरा देने का आदेश है, और मैं पहरा दूँगा। मेरे सिपाहियों पर ज्यादा दबाव न डालो, अन्यथा मैं जानता हूँ कि तुम्हें कैसे पीछे भगाया जा सकता है।'

अपनी दृढ़ आवाज के बावजूद ज्यों-ज्यों खनिकों की भीड़ वहाँ बढ़ती जाती थी उसकी चिन्ता भी बढ़ रही थी और वह पीला पड़ गया था। दोपहर तक उसकी ड्यूटी बदल जायगी लेकिन इस डर से कि तब तक वह ठहर नहीं पायेगा उसने एक ट्रामर को कुमक बुलाने मोंटसू भेज दिया था।

उसकी इस बात का प्रत्युत्तर नारों ने दिया: 'गद्दारों को मार डालो! बोरिनों को खत्म कर दो! अपनी खानों के मालिक स्वयं हम है।'

लॉतिये निराश होकर पीछे हट आया। अन्त आ गया था; लड़ने और मरने के अलावा कोई चारा नहीं था। उसने अपने साथियों को पीछे रोके रहना भी बंद कर दिया था। भीड़ छोटी सी फौजी टुकड़ी के पास तक बढ़ आई थी। उनकी संख्या लगभग चार सौ पहुँच गई थी और पड़ोसी बस्तियों के लोग भी दौड़े हुए ऊपर चले आ रहे थे। वे सब एक ही बात चिल्ला रहे थे। माहे और लेवक्यू ने गुस्से में सैनिकों से कहा—

'चले जाओ यहाँ से! हमारी तुमसे कोई दुश्मनी नहीं है! हट जाओ यहाँ से!'

'इससे तुम्हारा कोई सरोकार नहीं', माहेदी बोली! 'हमें अपना मामला निबटा लेने दो।'

और पीछे से लेवक्यू की औरत ने अधिक उग्र होकर कहा: 'क्या रास्ता साफ करने के लिए हमें तुम्हें निगलना होगा, इस जगह से हट क्यों नहीं जाते?'

यहाँ तक कि लायडी की तीखी आवाज सुनाई दी। वह बीवर्ट के साथ भीड़ में घुसकर और नजदीक आ गई थी और ऊँचे स्वर में कह रही थी—

'ओह ! पीले चेहरे वाले सूअर !'

कुछ दूरी पर खड़ी कैथराइन किंकर्तव्य विमूढ़ सी खड़ी इस नये हिंसात्मक दृश्य को देख रही थी और सोच रही थी कि दुर्भाग्य ने कभी उसका साथ नहीं छोड़ा है। क्या अब भी कोई कसर बाकी है ? इससे पहले उसने हड़ताल की उत्तेजना को नहीं समझा था। वह सोचती थी कि एक बार मार पड़ जाने पर फिर अधिक मार खाने के लिए जाना व्यर्थ है। लेकिन अब उसका हृदय घृणा से भर रहा था, उसे लॉतिये की वह बातें याद आ रही थीं जो उसे अक्सर, जब वे साथ बैठे होते थे बताया करता था। वह सुनने की कोशिश कर रही थी कि अब वह सैनिकों से क्या कह रहा है। वह उनके साथ साथियों-सा व्यवहार कर रहा था, उन्हें स्मरण दिला रहा था कि वे भी जनता के बीच के लोग हैं और उन्हें भी जनता की गरीबी से लाभ उठाने वालों के विरुद्ध जनता का साथ देना चाहिए।

लेकिन भीड़ में एक लहर सी दौड़ गई। एक बुढ़िया तेजी से दौड़ती हुई ऊपर आई। वह मदर ब्रूली थी, जो कृशकाय शरीर से हाथों और गर्दन को हवा में झुलाती हुई इस तेजी से ऊपर आ रही थी कि उसके सफेद बालों की लटें उसके मुंह पर आकर उसे अंधी बना डालती थीं।

'आह ! भगवान् कसम ! मैं यहाँ पहुँच ही गई', वह हाँफते हुए बोली। 'उस गद्दार पेरी ने तो मुझे गलियारे में बंद कर दिया था।'

और रुके बगैर वह सिपाहियों पर टूट पड़ी। उसके काले मुँह से गालियाँ बरस रही थीं—

'नीच ! गंदे सूअर ! मालिकों के तलवे चाटने वाले; गरीब जनता के खिलाफ ही बहादुर बनते हैं !'

औरों ने भी उसका सहयोग दिया और उनकी बुरी तरह बेइज्जती होने लगी। कुछ लोगों ने, इसके विपरीत कहा, सैनिक चिरजीवी हों ! अफीसर के साथ शेफ्ट की ओर चलो ! लेकिन जल्दी ही वे निराश हो गए, सिर्फ एक ही नारा लगने लगा। 'लाल पैन्ट धारियों का नाश हो !' यह लोग, जो भाई-चारे और मित्रतापूर्ण अपीलों को चुपचाप सुन चुके थे, अब इन गालियों की बौछारों के बीच भी वैसे ही शांत और मौन बने रहे। उनके पीछे कप्तान ने अपनी तलवार खींच ली थी और जब कि भीड़ उन्हें बराबर दबाती चली आ रही थी और उन्हें

दीवार से लगकर पिस जाने का खतरा हो चला था तो कप्तान ने उन्हें बन्दूकें सम्भालने का आदेश दिया। उन्होंने आदेश का पालन किया और संगीनों की दुहरी कतार हड़तालियों के सीनों के सामने तन गईं।

'आह ! जंगली सूअर !' मदर ब्रूली पीछे हटते हुए चीखी।

लेकिन वे फिर मृत्यु के भय से निडर होकर आगे बढ़ने लगे। औरतें आगे घुसी चली आ रही थीं और लेवक्यू की स्त्री तथा माहेदी चिल्ला रही थीं :

'मार डालो ! मारो न, तब ! हमें हमारे अधिकार चाहिएं।'

लेवक्यू ने कट जाने का खतरा उठाते हुए तीन संगीनों को अपने हाथों से पकड़ लिया था और उन्हें छीनने की नीयत से हिलाता हुआ अपनी ओर खींच रहा था। क्रोध के आवेग में उसने उन्हे मोड़ डाला था, जबकि बाउटलोप उसके बगल में खड़ा अपने साथी के साथ आने पर खिन्न सा, चुपचाप उसे देख रहा था।

'जरा आकर यहां देखो', माहे बोला, 'जरा देखो तो अगर तुम शरीफ लोग हो तो !'

उसने अपना जाकेट खोलकर अपनी कमीज एक तरफ कर ली और कोयले के खाये हुए अपने बालों वाले सीने को खोल कर उन्हें दिखाने लगा। उसने संगीन अपने सीने पर अड़ा ली और उसे दबाने लगा जिससे मजबूर होकर इस बहादुरी से भयभीत सिपाही पीछे हटे। एक ने उसके सीने पर संगीन चुभा दी थी और वह पागल की भाँति उसे और गहराई तक चुभाने की कोशिश करने लगा।

'कायर कहीं के, तुम्हारी हिम्मत नहीं है। अभी हमारे पीछे दस हजार हैं। हाँ, तुम हमारी हत्या कर सकते हो। अभी दस हजार हममे से और है जिन्हें मारना होगा।'

सैनिकों की स्थिति नाजुक होती जा रही थी, क्योंकि उन्हें सख्त आदेश था कि आखिरी क्षण तक हथियार न उठाये जायँ और अब वे किस प्रकार इन उत्तेजित व्यक्तियों को उन्हें बलपूर्वक बाहर निकालने से रोक सकते हैं ? अलावा इसके जगह भी संकरी होती जा रही थी। अब वे दीवार से बिलकुल सट गए थे। उनकी चंद सैनिकों की टुकड़ी, खनिकों की बढ़ती हुई बाढ़ के विरुद्ध अब तक शांति से कप्तान के संक्षिप्त आदेशों का पालन करती चली आ रही थी। कप्तान, बड़ी पैनी निगाह डाले, होंठ दबाये हुए, सिर्फ इस बात से डर रहा था कि कहीं ये लोग गालियों से उत्तेजित न हो उठें। एक युवा सार्जेन्ट, एक लम्बा छरहरे

बदन का व्यक्ति, जिसकी हल्की मूछें उग रही थीं, असंतुष्ट तरीके से अपनी आँखें नचाने लगा था। उसके करीब एक अधेड़ सिपाही, जिसका शरीर बीस अभियानों को जीतने के बाद तप-सा गया था, अपनी संगीन को तिनके की तरह मुड़ते देख पीला पड़ गया था। एक रंगरूट जब भी अपने को गंदा और घिनौना जानवर कहे जाते सुनता लाल-पीला होने लगता था और वहाँ हिंसात्मक, उत्तेजनात्मक रवैया बन्द नहीं हुआ था। उनके चेहरों को लाल बना देने वाली गालियों की बौछारें, घिनौने शब्दों का प्रयोग, घूंसों द्वारा उन्हें भय दिखाये जाने के इस उत्तेजक वातावरण में उन्हें सैनिक अनुशासन की गंभीर चुप्पी कायम रखने में पूर्ण आत्मनियंत्रण से काम लेना पड़ रहा था।

संघर्ष होना अनिवार्य हो गया था, तभी सैनिकों के पीछे से फादर रिचोम, भावना से विह्वल हो, आता हुआ नजर आया और अपने मीठे सरल स्वभाव से बोला :

'भगवान् कसम ! यह बेवकूफी है। इस प्रकार की मूर्खता नहीं चल सकती।'

और वह संगीनों तथा खनिकों के बीच में आ गया।

'साथियो ! मेरी बात सुनो। तुम्हें मालूम है कि मैं एक पुराना कामगार हूँ और मैं हमेशा तुम्हीं मे से एक रहा हूँ। अच्छा, भगवान् कसम ! मैं तुमसे वायदा करता हूँ कि अगर उन्होंने तुम्हारे साथ न्याय न किया तो मै जाकर अधिकारियों को बताऊँगा कि स्थिति क्या है। लेकिन यह बहुत बड़ी ज्यादती है कि इन भले आदमियों को गालियाँ दी जायँ और अपने को गोलियों से भूनने दिया जाय।'

वे हिचकते हुए उसकी बात सुनने लगे। लेकिन, ऊपर दुर्भाग्य से लिटिल निग्रील की सूरत दिखाई दी। वह निःसंदेह घबड़ाया हुआ था कि उस पर अपनी जगह एक कप्तान को नीचे भेजने का आरोप लगाया जायगा, उसने कुछ कहने की चेष्टा की। लेकिन उसकी आवाज उस भयावह कोलाहल में डूब गई और उसे खिड़की मे हटने को विवश होना पड़ा। इसके बाद अपने नाम पर उन्हे समझाने और साथियों के बीच ही मामला तय कराने का रिचोम का प्रयास विफल रहा; उन्होंने उस पर संदेह कर उसे वापस भेजना चाहा। लेकिन वह भी हठी था और उन्हीं लोगों के बीच में जमा रहा।

'भगवान कसम ! उन्हें मेरा तथा अपना सिर फोड़ लेने दो, क्योंकि मैं तुम्हें नहीं छोड़ूंगा क्यों कि तुम इतने बेवकूफ हो।'

लॉतिये ने, जिससे उसने अपनी तर्कसंगत बात सुनाने में मदद का अनुरोध किया, अपनी असमर्थता बताने का भाव प्रदर्शित किया। बहुत विलम्ब हो चुका था, अब उन लोगों की संख्या पाँच सौ से अधिक पहुँच चुकी थी। और बोरिनों को खदेड़कर भगाने आये हुए पागल खनिकों के अलावा कुछ लोग उत्सुकता से या इस संघर्ष का मजा लेने और मजाक उड़ाने के लिए वहाँ पहुँचे थे। एक गिरोह के बीच में, कुछ दूरी पर, जाचरे और फिलोमिना उस दृश्य को ऐसी शांति से देख रहे थे जैसे थियेटर देख रहे हों, वे अपने साथ अपने दोनों बच्चों को भी लाए हुए थे। एक दूसरा गोल रिक्वीलां की तरफ से पहुँच रहा था जिसमें माक्यूट और माकेटी भी थे। माक्यूट तत्काल अपने मित्र जाचरे के कंधे में धप जमाने ऊपर चला गया और उत्तेजित स्थिति में पहली पाँत की ओर तेजी से बढ़ गई।

हर पाँच मिनट पर कप्तान, नीचे, मोंटसू रोड की ओर निगाह डाल लिया करता था। इच्छित कुमक नहीं पहुँची थी और उसके साठ आदमी अब ज्यादा ठहर नहीं पा रहे थे। अन्त में उसे भीड़ को डराने का विचार सूझा और उसने अपने सिपाहियों को बन्दूकें भरने का आदेश दिया। सैनिकों ने उसके आदेश का पालन किया। लेकिन गड़बड़ी बढ़ चली थी, हड़तालियों के गर्जन और खिल्ली उड़ाने में।

'आह ! ये बेहया, ये अपने लक्ष्य से दूर हट रहे है !' ब्रूली, लेवक्यू और अन्य औरतें दाँत पीसने लगीं।

माहेदी, एस्टीली के नन्हें शरीर से अपनी छातियाँ ढँके हुए, उनके इतने करीब आ गई थी कि सार्जेन्ट को पूछना पड़ा कि वह इस नन्हीं बच्ची का क्या करेगी ?

'तुम्हें इससे क्या मतलब ?' माहेदी ने उत्तर दिया, 'हिम्मत हो तो चला दो इस पर गोली।'

अन्य लोग कह रहे थे कि जब लोग क्रीमिया का आन्दोलन चला रहे थे तो उन्हें गोलियों से भय नहीं था और सभी राइफलों के पास तक बढ़ने का क्रम जारी रखे हुए थे। अगर इस समय गोली का वार शुरू हो गया होता तो लोग घास की तरह काट दिये गए होते।

पहली कतार में माकेटी का आवेग से गला रुंध सा गया था, वह सोच रही थी कि सिपाही औरतों पर गोली चलाने जा रहे हैं। वह, जितनी गालियाँ उसे याद थीं, सभी उनके मुँह पर थूक चुकी थी और उनके मुँह पर उछालने के लिए कोई गंदगी न पा कर एकाएक घृणित प्रदर्शन पर उतर आई थीं और उन्हें

अपना पार्श्व भाग दिखाने लगी। अपने दोनों हाथों से उसने स्कर्ट उठा ली, अपनी पीठ झुकाई और गोलाकार भाग को फैलाया।

'लो, यह तुम्हारे लिए है! और यह तुम्हारे लिए बहुत साफ है, कलमुहे, गंदे सिपाही!'

वह प्रत्येक के पास उचकती और नीचे झुकती हुई हर बार दुहराती जाती थी।

'यह तुम्हारे अफसर के लिए! यह तुम्हारे सार्जेन्ट के लिए! यह तुम सैनिकों के लिए!'

वहाँ हँसी का एक तूफान सा उठा; बीवर्ट और लायडी तो लोट-पोट हो गए। लाँतिये स्वयं भी गंभीरता के बावजूद इस तिरस्कार पूर्ण नग्नता-प्रदर्शन पर ताली बजाने लगा। अब सभी तमाशबीन और उत्तेजित हड़ताली, सैनिकों की खिल्ली उड़ाने लगे थे, गालियाँ बकने लगे थे जैसे मानो उन्होंने उन्हे गन्दगी में सराबोर देख लिया हो। सिर्फ कैथराइन, एक ओर पुराने तख्तों के ढेर पर चुपचाप खड़ी थी, धीरे-धीरे उसके दिल में नफरत जाग रही थी।

अब धक्का-धुक्की शुरू हो गई थी। अपने सैनिकों की उत्तेजना शांत करने के लिए कप्तान ने गिरफ्तारी करने का निश्चय किया। कूद कर माकेटी निकल भागी और अपनी साथिनों के बीच मे जाकर बच गई। तीन खनिक, लेवक्यू तथा दो अन्य, अधिक उग्र लोगों में थे जो गिरफ्तार कर दूसरे छोर पर कप्तान के कमरे में नजरों के सामने रखे गए। ऊपर से निग्रोल और डेनार्ट चिल्ला कर कप्तान से कह रहे थे कि वह ऊपर आकर उनके साथ ही शरण ले ले। उसने इन्कार किया; वह महसूस कर रहा था कि ये इमारतें, जिनके दरवाजों मे ताले नहीं हैं हमले से नष्ट कर दी जायेंगी और उसे निरस्त्र कर दिये जाने की बेइज्जती सहन करनी होगी। उसकी छोटी सैन्य टुकड़ी अधैर्य से गुर्राने लगी थी; इन जंगलियों के आगे बूटों से भागना भी असंभव था। साठ का यह दस्ता दीवार की ओर पीठ किये भरी बन्दूकें उग्र भीड़ के चेहरों की ओर किये था।

पहले वे पीछे हट आये और कुछ देर गहरी, भयावह खामोशी के बाद बंदियों को तत्काल रिहा करने की माँग की जाने लगी। कुछ लोगों ने तो यहाँ तक कहा कि वहाँ उनकी हत्या की जा रही है और किसी प्रकार की सामूहिक ठोस कार्रवाई के बजाय उसी भावना से प्रेरित हो, बदले की भावना से, वे सभी पास लगाये गए ईंटों के ढेरों के पास दौड़ गए। ये ईंटें, जिनके लिए चिकनी मिट्टी उपलब्ध हो जाती थी, यहीं पकाई जाती थीं। बच्चे एक-एक करके उन्हें उठा लाये और औरतों ने उनसे अपने स्कर्ट भर लिए। हर एक के पाँव के पास

शीघ्र ही पत्थरों का गोला-बारूद जमा हो गया और पत्थरों की बौछार शुरू हो गई।

मदर ब्रूली ने शुरूआत की। उसने अपने टखने की तेज नोक पर ईंट को तोड़ा और दोनों हाथों में दो टुकड़े उठा कर फेंके। लेवक्यू की औरत उसके पास खड़े बाउटलोप के रोकने पर भी, अपना निशाना साधने को आगे बढ़ी। बाउटलोप उसे वहाँ से हटा ले जाने की आशा से उसे पीछे खींच रहा था। माकेटी ने अपनी मोटी-मोटी रानों में ईंटा तोड़ने के प्रयास में असफल होने के बाद उन्हें समूची ही फेंकना ज्यादा बेहतर समझती थी। यहाँ तक कि छोटे-छोटे बच्चे भी एक लाइन में आ गए थे, और बीवर्ट ने लायडी को सिखाया कि कुहनी के नीचे से कैसे ईंट फेंकी जा सकती है। बड़े-बड़े ओलों की बौछार के समान चलते हुए पत्थरों से हल्के धमाके की आवाज उत्पन्न हो रही थी। एकाएक इस उग्र भीड़ मे कैथराइन हवा में अपनी मुट्ठियाँ बाँधे श्रद्धा (आधी ईंट) चमकाती हुई और फिर अपने नन्हे हाथों से उसे पूरे जोर के साथ फेंकती दिखाई दी। वह नहीं जानती थी कि उसे क्यों घुटन सी हो रही है, वह हर एक को मार डालने की बलवती इच्छा के वशीभूत हो रही थी। क्या यह दुर्भाग्य का अभिशप्त जीवन जल्दी ही खत्म नहीं होगा ? वह बहुत भुगत चुकी है। उसके प्रेमी ने मार-पीट कर उसे खदेड़ दिया है, सड़कों की कीचड़ मे आवारा कुत्ते की तरह घूमती हुई वह अपने माँ-बाप से एक टुकड़ा रोटी तक नही माँग सकती क्योंकि वे भी उसकी ही तरह भूखों मर रहे है। उसे प्रतीत होता था कि स्थिति कभी न सुधरेगी, उसकी स्मृति में वह बिगड़ती ही गई है। उसने ईंटें तोड़ी और उन्हें सामने की ओर चलाने लगी। एक ही विचार उसके दिमाग में था कि हर चीज का सफाया कर दे। उसकी आँखें इस प्रकार अंधी हो गई थीं वह देख तक नहीं पा रही थी कि उसके पत्थरों से किसके जबड़े टूटेंगे।

सिपाहियों के सामने खड़े लॉतिये का भेजा खुल गया होता। उसका कान खुरच गया था, मुड़कर देखने पर जब उसे पता चला कि यह ईंट कैथराइन के काँपते हुए हाथों से छूटी है तो वह चौंक सा गया; लेकिन मारे जाने का खतरा मोल लेते हुए भी वहीं खड़ा रहा जहाँ पहले था और उसकी ओर ताकता रहा। अन्य बहुत से वहाँ संघर्ष में डूबे हुए अपना अस्तित्व भूल गए थे। माक्यूट उन प्रहारों की इस प्रकार टीका-टिप्पणी कर रहा था, मानों वह 'स्टापर' का खेल देख रहा हो। 'आह, बड़ा बढ़िया निशाना मारा ! और वह दूसरा, दुर्भाग्य, लगा नहीं !' वह मजाक कर जाचरे को धकिया रहा था। समूची सड़क पर दर्शक खड़े थे और

ढाल के सिरे पर, बस्ती के प्रवेश द्वार के पास बुड्ढा बोनेमाँ, छड़ी के सहारे खड़ा दिखाई दिया।

ज्योंही ईंट फेंकने की पहली बौछार हुई, कप्तान रिचोम फिर सैनिकों और खनिकों के बीच आ कर खड़ा हो गया। वह एक दल को पीछे हटा रहा था और दूसरे से शांत होने को कह रहा था। खतरे के प्रति लापरवाह उसकी आँखों से आँसू बहने लगे थे। इस कोलाहल में उसके शब्दों को सुन पाना असंभव सा हो गया था, सिर्फ उसकी भूरी लम्बी मूंछें हिलती-दिखाई देती थीं।

लेकिन अब अधिक तेजी से ईंटें बरसने लगी थीं; औरतों का अनुकरण मरद भी करने लगे थे।

तब माहेदी ने देखा कि माहे पीछे खाली हाथ उदासीन भाव से .खड़ा है।

'तुम्हें क्या हो गया है ?' वह चिल्लाई। 'क्या तुम कायर हो ? क्या तुम अपने साथियों को जेल खाने ले जाना पसंद करते हो ? आह ! अगर मेरे पास यह बच्ची न होती तो तुम देखते !'

एस्टीली चीखती हुई उसकी गर्दन से लिपटी थी और उसके मदर ब्रूली तथा अन्य औरतों का साथ देने में रुकावट बन रही थी। और चूंकि उसका आदमी बातें न सुनता प्रतीत नहीं होता था उसने ठोकर मार कर कुछ ईंटें उसके पाँव के पास फेंकीं।

'भगवान कसम ! क्या तुम इन्हें उठाओगे ? क्या मैं तुम्हारा हौसला बढ़ाने के लिए इतने लोगों के सामने तुम्हारे मुँह पर थूकूं ?'

बहुत खीझ कर उसने कुछ ईंटें तोड़ीं और उन्हें चलाया। वह उसे कोसती हुई उसे विक्षिप्त बना रही थी, उसके पीछे से मौत के नारे लगा रही थी; अपनी लड़की को अपनी बाँहों से छाती पर चिपकाये हुए उसे आगे बढ़ा रही थी और वह इतना आगे बढ़ गया कि बंदूकों की नाल के सामने पहुँच गया।

पत्थरों की इस बौछार के नीचे छोटी सी सैनिक टुकड़ी अदृश्य हो गई थी। सौभाग्य से ईंटें ऊँचे में लग रही थीं जिससे दीवार में स्थान-स्थान पर छेद हो गए थे। अब क्या किया जाय ? अन्दर जाने, पीठ दिखाने के विचार से कप्तान का पीला चेहरा एक क्षण को सुर्ख हो गया, परन्तु अब यह भी संभव नहीं था, जरा भी हिलने पर उसके टुकड़े-टुकड़े हो जायंगे। एक ईंट अभ -अभी उसकी टोप के सिरे पर आकर लगी थी, उसके माथे से खून की बूंदें नीचे बह रही थीं। उसके बहुत से सिपाही घायल हो चुके थे और वह महसूस कर रहा था कि आत्मरक्षा की अनिवार्य आवश्यकता से प्रेरित होकर वे आत्मनियंत्रण खो रहे हैं जब कि ऐसे समय में नेतृत्व के आदेश का पालन भी समाप्त हो जाता है। सार्जेन्ट का बाँया

बाजू बुरी तरह कट गया था और उससे खून का फुव्वारा छूट रहा था। रंगरूट सैनिक का अँगूठा कुचल गया था और उसके दाँये घुटने में जलन हो रही थी। एक पत्थर दीवार से टकराने के बाद वापस बुढ्ढे सैनिक के पेट के नीचे लगा और उसका चेहरा नीला पड़ गया। उसकी बन्दूक, जिसे वह अपने दुबले-पतले हाथों से थामे आगे की ओर किये हुए था, काँप रही थी। तीन बार कप्तान गोली चलाने का आदेश देने को हुआ, लेकिन भारी व्यथा से उसका गला रुंध सा गया था। पिछले कुछ मिनटों से उसके मन में विचारों और कर्तव्य के बीच निरंतर अन्तर्द्वन्द चल रहा था। उसकी एक मनुष्य और एक सिपाही की आस्थाओं में संघर्ष हो रहा था। ईंटों की वर्षा बढ़ने लगी। उसने अपना मुँह खोला और 'फायर' का आदेश देने ही जा रहा था कि बन्दूकें स्वतः छूट गईं। पहले तीन गोलियाँ, फिर पाँच और फिर गोलियों की बौछार छूटी, अन्त में कुछ क्षण बाद एक गोली और छूटी, सर्वत्र शांति छा गई।

चारों ओर लोग हक्के-बक्के हो गए। उन्होंने गोलियाँ चलाई हैं और हाँफती हुई भीड़ जड़वत् खड़ी हो, गई, अभी तक उसे विश्वास नहीं हो रहा था। लेकिन हृदय विदारक चीखें मचने लगी थीं जब कि गोली चलाना बंद करने को बिगुल बजाकर संकेत किया जा रहा था। और भीड़ में भगदड़ मच गई थी। लोग पागलों की तरह भेड़ों के झुंड की भाँति तेजी से कीचड़ में भागे जा रहे थे। पहली तीन गोलियों में बीवर्ट और लायडी एक दूसरे के ऊपर गिरते हुए लुढ़के थे। लड़की के चेहरे पर गोली लगी थी और लड़के के बाँये कंधे के नीचे। वह तो तत्काल मर गई थी लेकिन वह जीवित था और खिसक कर उसने अपनी पीड़ा की ऐंठन में उसे दोनों हाथों से इस प्रकार पकड़ लिया था मानो वह फिर उसके साथ आलिंगन-चुम्बन का खेल खेलना चाहता हो जिसे कि वे रातभर अपने छिपने के उस गुप्त अड्डे में खेल रहे थे। और जॉली, जो उसी समय अर्धनिद्रित अवस्था में खिड़कीलां से दौड़ कर ऊपर पहुँचा था, धुंए के बीच इधर-उधर टाँग मार रहा था। उसने बीवर्ट को उसकी नन्हीं पत्नी को आलिंगन करते और दम तोड़ते देखा।

अन्य पाँच गोलियों से मदर ब्रूली और कप्तान रिचोम की इह लोकलीला समाप्त हो गई थी। जब कि वह अपने साथियों को धकेल रहा था एक गोली उसकी पीठ पर लगी थी और वह घुटनों के बल जमीन में पड़ा कराह रहा था। उसकी आँखों में अब भी आँसू भरे थे। बुढ़िया की छाती में गोली लगी थी और खून की क़ै करते हुए वह आखरी गोली निकालने के बाद ईंधन के सूखे गट्ठर की भाँति पीछे की ओर गिर पड़ी थी।

लेकिन गोलियों की बौछार खेतों पर गिरी थी और सौ कदम दूर खड़े इस संघर्ष पर हँसने वाले दर्शकों को घास की तरह काट गई थी। एक गोली माक्यूट के मुँह में घुस कर उसके भेजे को चीरती हुई उसे जाचरे और फिलोमिना के पाँवों के पास गिरा गई थी, जिनके दोनों छोटे-छोटे बच्चे लाल बूंदों से सराबोर हो गए थे। एक गोली उसी समय माकेटी के पेट में लगी थी। उसने सैनिक को बाँह फैलाते देख लिया था और कैथराइन को सावधान होने की चेतावनी देती हुई उसके सामने आ गई थी। उसने एक तेज चीख निकाली और धक्के से उलट कर मुँह के बल जा गिरी। लॉतिये ऊपर दौड़ा, उसे उठाकर दूर ले जाने के लिए। लेकिन उसने एक भंगिमा द्वारा उसने बता दिया कि सब समाप्त हो गया है। फिर वह कराही और उन दोनों को देखकर मुस्कराती रही, मानो वह कह रही हो कि अब, जब कि वह जा रही है उन दोनों को एक साथ देख कर खुश है।

सब समाप्त प्रतीत होता था, गोलियों की लपटें बस्तियों के आंगनों तक जाकर लुप्त हो गई थीं। जब कि आखिरी, एकमात्र गोली चली।

माहे के सीने में गोली लगी, वह उलट कर मुँह के बल कोयले से काले कीचड़ में जा गिरा। माहेदी किंकर्तव्य विमूढ़ नीचे झुकी।

'आह! मेरे प्यारे, उठो। कुछ नहीं हुआ, सचमुच?' उसके हाथ एस्टीली को पकड़े थे और अपने पति का सिर फिराने के लिए उसने अपनी काँख में दबा लिया था। 'कुछ बोलो! कहाँ हो तुम?'

उसकी आँखें पथरा गई थीं, उसके मुँह से खूनी झाग की लार बह रही थी। वह समझ गई : वह मर चुका था फिर वह लड़की को बण्डल की तरह अपनी काँख में दबाये अपने मृत पति की ओर हत-बुद्धि हो ताकती मिट्टी में बैठ गई।

खान अब आपद रहित हो चुकी थी। बड़ी बेचैनी के साथ कप्तान अपनी पत्थरों से चोट खाई सैनिक टोपी उतारी और फिर लगा ली; उसके चेहरे पर उसके जीवन विपत्तियुक्त क्षणों में भी पीली दृढ़ता कायम थी जब कि उसके सैनिकों के मौन चेहरों पर स्थिरता आने लगी थी। रिसीविंग-रूम के कमरे की खिड़की से निग्रील और डेनार्ट के डरे हुए चेहरे दिखाई दे रहे थे। उनके पीछे सोवरायन था जिसके माथे पर गहरे बल पड़े हुए थे, मानो उसके निश्चित विचारों को वहाँ कीलित कर दिया गया हो। क्षितिज की दूसरी ओर, मैदान के छोर से बोनेमॉ हिला नहीं था, एक हाथ से छड़ी का सहारा लिए, दूसरा हाथ भौंहों के ऊपर इस प्रकार लगाये था मानो वह नीचे अपने मजदूरों की हत्या अच्छी तरह देखना चाहता हो। घायल कराह रहे थे, मृतकों के शव ठंढे पड़ते जा रहे थे।

पिघलाव की कीचड़ से सने हुए वे शव, यहाँ-वहाँ हिम की सफेदी में कोयले के काले गढ़े से बना रहे थे। मानवों की इन दयनीय लाशों के बीच, माँस के बड़े से ढेर के रूप में ट्रोम्पेटी का भीमकाय शरीर पड़ा हुआ था।

लॉतिये नहीं मारा गया था। वह अब भी कैथराइन के पीछे इन्तजार कर रहा था, जो थकान और घबराहट के मारे गिर पड़ी थी, जब कि एक सुरीली आवाज से वह चौंक उठा। यह अन्बे रेने था जो कि सामूहिक प्रार्थना से लौट रहा था और एक भविष्यवक्ता के प्रेरित क्रोध से, दोनों हाथ हवा में उठाये, हत्यारों के ऊपर परमात्मा का कहर गिरने की प्रार्थना कर रहा था। वह न्याय का युग आने की भविष्यवाणी करता हुआ, आसमान से आग बरस कर मध्यम-वर्ग के सफाये के दिन अब करीब होने की बात कह रहा था क्योंकि मजदूरों और पददलितों की सामूहिक हत्या कर वे अपने पापों को चरम सीमा तक पहुँचा चुके थे।

---

*

सातवां भाग

१

मोंटसू में गोलियों के चलने की प्रतिध्वनि भयंकर रूप से पेरिस तक पहुँची थी। चार दिनों तक विरोधी समाचार पत्र, बड़े रोष के साथ अत्याचारों, जोर-जुल्म का विस्तृत वर्णन अपने अखबारों के पहले पृष्ठ पर छापते रहे; '१४ मरे, २५ घायल; मृतकों में ३ महिलायें, २ बच्चे भी।' लोगों को कैद भी किया गया है, लेवक्यू एक प्रकार का हीरो बन गया था, उसने जाँच करने वाले मजिस्ट्रेट को जिस शान के साथ उत्तर दिया था उसकी तारीफ हो रही थी। सरकार के शासनकाल की इस मध्यावधि में, चंद गोलियों से उस पर प्रहार किये जाने के बावजूद, वह अपनी अनन्त शक्ति के साथ शांत बैठी थी और अपने घाव की गंभीरता का उसे अहसास भी नहीं हो रहा था। यह महज एक साधारण, दुर्भाग्यपूर्ण मुठभेड़ थी। वहाँ कोयले वाले क्षेत्र में कोई वस्तु मिट गई थी। पेरिस के उस प्राचीन शहर से दूर, जहाँ कि जनमत बनता है; जल्दी ही लोग इस घटना को भूल जायंगे। कम्पनी को सरकारी आदेश मिला था कि जल्दी ही मामला रफा-दफा करे और हड़ताल समाप्त करे, जो कि लम्बे अर्से तक चलने के कारण सामाजिक खतरा बन रही है।

इसलिए बुधवार की सुबह तीन डाइरेक्टर मोंटसू में दिखाई दिये। आतंकित से, इस छोटे से कस्बे ने, जो कि अभी इस हत्याकांड के सदमे से नहीं उभर पाया था, पुनः शांति की साँस ली और उसे बच जाने की खुशी हासिल हुई। मौसम भी अब सुहावना हो चला था, चमकीली धूप निकल आई थी—फरवरी के प्रथमार्ध की नम गरमी वाली धूप, जो कि बकाइन के पौधे में हरे कल्ले ले आती हैं—एडमिनिसट्रेशन बिल्डिंग के सभी रोशनदान और झिलमिली खोल दी गई थीं और इस विशाल इमारत में फिर जीवन मालूम पड़ता था। चित्त प्रसन्न करने वाली अफवाहें फैल रही थीं। कहा जाता था कि डाइरेक्टर लोग इस दुर्घटना से बड़े दुखी होकर बस्तियों के खनिकों के प्रति अपने पितृवत् स्नेह से दौडे चले आये हैं। चूंकि अब प्रहार तो पड़ ही चुका था--उससे भी अधिक जोरदार जितना

कि वे चाहते थे—वे अपने सहायता कार्य में उदार बन गए थे और उन्होंने ऐसे प्रस्तावों की घोषणा कर दी थी जिनमें विलम्ब होने पर भी उन्हें शानदार कहा जा सकता था। पहले तो उन्होंने बोरिनों को वापस भेज दिया और उनके बदले अपने मजदूरों को यथासंभव सुविधायें दीं। तब उन्होंने खानों से सैनिक पहरा उठा लिया, उनमें अब अभिशप्त हड़तालियों से कोई खतरा नहीं था। वे बोरो से गायब हो जाने वाले संतरी के बारे में भी मौन रहे; सारा क्षेत्र छान मारने पर भी न तो उसकी बन्दूक ही मिली, न लाश ही। गोकि उसकी हत्या कर दिये जाने का संदेह था, यह निश्चय किया गया कि उसे भगोड़ा समझ लिया जाय। इस तरह उन्होंने हर प्रकार से मामले को दबाने की कोशिश की। पुरानी दुनिया की ढहती हुई इमारत के बीच खुले रूप से छोड़ दी गई एक उग्र भीड़ की झल्लाहटपूर्ण जंगली हरकतों को प्रकाश में लाना उन्होंने खतरनाक समझा। और अलावा इसके, मध्यस्थता के इस कार्य से उनके विशुद्ध प्रशासकीय मामलों के एक सन्तोषपूर्ण निष्कर्ष पर पहुँचने में कोई रुकावट भी नहीं आती थी; क्योंकि डेन्यूलिन एडमिनिस्ट्रेशन बिल्डिंग में देखा गया था, जहाँ उसकी भेंट एम० हनेब्यू से हुई। वण्डामे की खरीदारी की बातचीत जारी रही और यह सुनिश्चित सा जान पड़ता था कि डेन्यूलिन कंपनी के प्रस्ताव को स्वीकार कर लेगा।

लेकिन वहाँ सर्वाधिक चर्चा उन बड़े पीले इश्तहारों की थी जिन्हें डाइरेक्टरों ने बड़ी तायदाद में दीवारों पर चिपकवा दिया था। इनमें बड़े-बड़े अक्षरों में यह चंद लाइनें लिखी हुई थीं :

'मोंटसू के खनिको ! हम नहीं चाहते कि पिछली गलतियों के परिणामस्वरूप जिसका दुखद प्रभाव आप सब देख चुके हैं, समझदार और काम करने के इच्छुक मजदूरों की रोजी-रोटी छिन जाय। इसलिए हम सभी खानों को सोमवार की सुबह खोल देंगे और जब काम चालू हो जायगा तो हम बड़ी सावधानी और सहानुभूति के साथ उन मामलों पर विचार करेंगे जिनमें सुधार की गुंजायश हो सकेगी। हम दरहकीकत, जो भी न्याय या संभव होगा उसे पूरा करने में कोई कोर-कसर नहीं रखेंगे।'

एक दिन सुबह दस हजार खनिक इन इश्तहारों के सामने से गुजरे। किसी ने भी जुबान नहीं खोली। बहुतों ने अपने सिर हिला दिये और अन्य भारी मन से, घिसटते कदमों से चले गए और उनके गतिहीन चेहरों में जरा भी परिवर्तन नहीं आया।

अब तक ड्यू-सेंट-क्वारेंट की बस्ती में भयानक प्रतिशोध की भावना थी। ऐसा प्रतीत होता था कि उनके साथियों का खून, जिसने खान की मिट्टी को सुर्ख

बना दिया था, औरों के रास्ते में अवरोध बना हुआ है। मुश्किल से एक दर्जन मजदूर, जिनमें पेरी और उसी के समान अन्य अधम लोग थे, खान में उतरे थे, जिनका खान में जाना और वापस आना खिन्नता के साथ, बिना किसी प्रकार का भाव या धमकी दिखाये, देखा जाता था। इसलिए चर्च पर लगाये गए इश्तहारों को गहरे संदेह से देखा गया। उसमें सार्टिफिकेट लौटाने के बारे में कुछ भी नहीं कहा गया था। क्या कंपनी फिर उन्हें काम पर लेने से इन्कार करेगी ? और बदले की भावना, अधिक समझदार लोगों को बरखास्त किये जाने का विरोध करने की भाई-चारे की भावना उन्हें और भी हठी बना रही थी। यह संदेह-युक्त है, बाद में देखा जायगा। जब ये भद्र लोग साफ-साफ तौर से बातें सामने रखेंगे वे खान में लौट जायंगे। इन छोटे, नीची छतों वाले मकानों की खामोशी घुटन पैदा करने वाली थी, भूख उसके सामने नगण्य लगती थी; उनकी छतों से जब मौत गुजर ही चुकी है तो वे सब मरने को तैयार थे।

माहे के मकान में विशेष रूप से अंधकार और इस व्याकुल सदमे की खामोशी थी। जब से माहेदी अपने पति के शव को कब्रिस्तान में दफना आई थी तब से वह हमेशा होंठों से दाँत दबाये रहती थी। संघर्ष के बाद उसने लॉतिये को अधमरी और बीमार कैथराइन को उसके घर में लाने की अनुमति दे दी थी; और जब वह नवयुवक के सामने, उसे बिस्तर पर सुलाने के लिए उसके कपड़े खोल रही थी, तो एक क्षण को उसे ख्याल हुआ कि उसकी लड़की के पेट में गोली लगी है क्योंकि उसकी जाँघिया में खून के बड़े-बड़े दाग पड़े हुए थे। लेकिन वह जल्दी-ही समझ गई की यह युवावस्था की निशानी है, जिसका बाँध अन्त में, उस मनहूस दिन सदमे से फूट गया था।

आह ! यह दूसरी सौभाग्य की बात हुई ! लुटेरों को मारने के लिए बच्चे पैदा करने योग्य होना बड़ी सुन्दर बात है; और उसने कैथराइन से कोई बात नहीं की, न उसने लॉतिये को ही कुछ बताया। लॉतिये, गिरफ्तारी के खतरे के बावजूद जॉली के साथ सोया था। रिक्वीलां के अन्धकार में जाने के विचार मात्र के वह इतना घबरा उठा था कि वह कैद होना पसंद करता था। एक कँपकँपी उसे छूटती थी, इस गहराई में अंधकार के भय के साथ। वहाँ चट्टानों के नीचे सोये उस छोटे सैनिक के एक अज्ञात एवं अस्वीकार्य भय से। अलावा इसके, अपनी पराजय के सन्ताप के बीच वह जेल में शरण लेने के स्वप्न देखता था, लेकिन उन्होंने उसे कष्ट नहीं दिया और वह इन दुर्भाग्यपूर्ण घंटों को गुजारता गया। उसे समझ में नहीं आता था कि वह अपने शरीर को कैसे थकाये। सिर्फ कभी-कभी माहेदी

उसे तथा अपनी लड़की को एक घृणा की दृष्टि से देख लेती थी मानो वह उनसे पूछ रही हो कि वे घर में क्या कर रहे हैं ?

पाँचवें दिन को दोपहर में, लॉतिये को इस अभागी औरत को देखकर इतना कष्ट पहुँचा कि वह कमरे से निकल कर बस्ती के फुटपाथ पर धीरे-धीरे टहलता हुआ निकल पड़ा ! काम न करने से जो शिथिलता उसमें आगई थी उसे दूर करने के लिए वह बराबर चलते रहने को विवश हो गया था। सुस्ती से बाँहें हिलाते, गर्दन झुकाये हुए वह हमेशा उसी विचार से परेशान रहता था। आधा घंटा निरुद्देश्य भटकने के बाद, जब उसने महसूस किया कि उसके साथी उसे देखने दरवाजे तक आ रहे हैं तो उसकी परेशानी और भी बढ़ गई। उसकी रही-सही प्रतिष्ठा, प्रसिद्धि भी उस लगातार गोली चलने के दिन हवा में उड़ गई थी और अब, जब कभी भी वह गुजरता था भयावह आँखें उसका पीछा करती थीं। जब वह अपना सिर उठाता तो उसे डरावने स्त्री-पुरुष उसे अपनी खिड़कियों के पर्दे एक ओर हटाते नजर आते थे, और इन मौन अभियोग और गुस्से को मन ही मन पीने वाली निगाहों के नीचे, जिन्हें भूख और आँसुओं ने और बड़ा बना दिया था, वह इतनी उलझन महसूस करता था कि उसके लिए सीधे चलना दुश्वार हो जाता था। उसे यह मौन-तिरस्कार उसके पीछे हमेशा बढ़ता प्रतीत होता था। वह इतना घबरा उठा था कि सारी बस्ती के लोग बाहर निकल कर उसे गालियाँ देते प्रतीत होते थे और वह काँपता हुआ लौट आया था। लेकिन माहेदी के यहाँ दृश्य उसे देखने को मिला उससे उसकी परेशानी और बढ़ गई। बुड्ढा बोनेमाँ ठंढे चूल्हे के पास लेटा हुआ था। जिस दिन वह हत्याकांड हुआ उस दिन वह जमीन में पड़ा पाया गया था, उसकी लाठी टूटी हुई थी और पुराने बिजली गिरे पेड़ की भाँति वह धराशायी हो गया था और लीनोरी और हेनरी अपनी भूख को झुठलाने के लिए, एक पुराने भगोने को, जिसमें पिछले दिन करमकल्ला उबाला गया था, बड़े जोरों से करोद रहे थे। माहेदी, एस्टीली को मेज पर सुलाने के बाद, खड़ी हुई कैथराइन को घूंसे से डरा रही थी।

'फिर तो कह, भगवान् कसम ! जरा हिम्मत है तो फिर कह !'

कैथराइन ने वोरो में फिर जाने का इरादा जाहिर किया था। विचार उसका अपने ही लिए रोटी कमाने का नहीं था। अपनी माँ के मकान में एक बेकाम जानवर की तरह पड़े रहना उसे प्रति दिन असह्य होता जा रहा था; और अगर उसे चवाल का डर न होता तो वह मंगलवार को ही काम पर चली गई होती।

उसने डरते-डरते फिर कहा :

'तब तुम करोगी क्या ? हमारे इस तरह निठल्ले बैठे रहने से तो काम चलेगा नहीं। हमें कैसे भी हो, रोटी चाहिए।'

माहेदी ने उसे बीच ही में टोक दिया :

'मेरी बात सुनो : तुम में से जो भी पहले काम पर जायगा, उसे मैं मार डालूंगी। नहीं, यह बहुत बड़ी ज्यादती है, बाप को तो मार डालो और बच्चों से काम लेते रहो ! मैं बहुत भुगत चुकी हूँ। मैं तुम सभी को, उसी की भाँति, जो चला गया है, तुम्हारे कफन में देखना ज्यादा पसंद करूंगी।'

और उसकी दीर्घ काली चुप्पी का बाँध भयानक शब्दों की बाढ़ में टूट पड़ा : 'कैथराइन मुझे बड़ी अच्छी रकम ले आयेगी ! मुश्किल से तीस सूज और अगर अधिकारियों ने उसके तथा जॉली के लिए काम खोजने की मेहरबानी की तो बीस सूज और मिल जायंगे। पचास सूज और खाने वाले सात प्राणी ! वे तो सिर्फ सूप निगलने भर के होंगे। जहाँ तक दादा का सवाल है जब वह गिरा था तो मालूम पड़ता है कि उसके दिमाग की कोई नस फट गई है, क्योंकि वह अशक्त मालूम पड़ता है; अन्यथा सैनिकों को उसके साथियों पर गोली चलाता देख उसका खून उबल पड़ता।'

'यही बात है न पितामह। क्या ऐसा नहीं है ? उन्होंने तुम्हें निकम्मा बना छोड़ा है। तुम्हारे हाथों की मजबूती से अब कोई लाभ नहीं; तुम खत्म हो चुके हो।'

बोनेमॉ ने अपनी धुँधली आँखों से उसकी ओर निहारा और उसकी बात वह नहीं समझा था। वह घंटों उसी प्रकार एक जगह आँखें गड़ाये देखता रहा, सफाई की दृष्टि से उसके बगल में राख से भरी रखी गई प्लेट में थूकने के अलावा और किसी प्रकार का ज्ञान उसे नहीं रह गया था।

'और उन्होंने उसकी पेंशन भी अभी तय नहीं की है, वह बोली,' मुझे लगता है कि वे उसे नहीं देंगे, क्योंकि हमारे विचार उन्हें मालूम हैं। नहीं, मैं तुम्हें बतला चुकी हूँ हमें, इन लोगों ने बहुत सताया है, जो हमारे दुर्भाग्य के कारण हैं।'

'लेकिन,' कैथराइन ने, कहने का साहस किया, 'वे इश्तहारों में वायदा करते हैं—'

'भाड़ में जाँय तुम्हारे वे इश्तहार। हमें पकड़ने और खाने के लिए चारा फेंका गया है। हमारे भेजे खोल देने के बाद अब वे हमारे प्रति मेहरबानी दिखाते हैं।'

'लेकिन हम जायंगे कहा, माँ ? वे हमें बस्ती में नहीं रहने देंगे, यह निश्चित जानो।'

माहेदी ने एक अस्पष्ट, आतंकित मुख मुद्रा बनाई। वे कहाँ जायँगे ? वह बिल्कुल नहीं जानती; वह इस बारे में सोचना टाल देती थी, इससे वह पागल हो उठती थी। वे कहीं अन्यत्र चले जायँगे—कहीं भी। और चूंकि भगोने को करोदने की आवाज असह्य हो चुकी थी, उसने मुड़ कर लीनोरी और हेनरी के कान उमेठे। एस्टीली के गिरने से, जो कि चारों हाथ-पाँवों से सरक रही थी, गड़बड़ी और भी बढ़ गई। माँ ने धक्का देकर उसे चुप कराया—अच्छा होता इससे यह मर गई होती! वह अलजीरे की बात करने लगी; वह मनाने लगी कि और बच्चों को भी उसी का नसीब मिले और फिर एकाएक वह अपना सिर दीवार पर लगा कर फूट-फूट कर रोने लगी।

लाँतिये को, जो पास में ही खड़ा था, हस्तक्षेप का साहस नहीं हुआ। अब घर में उसकी कोई गिनती नहीं थी, और बच्चे तक संदेह के साथ उससे दूर भागते थे। लेकिन इस अभागी औरत के आँसुओं ने उसके कलेजे पर घाव किया। वह धीरे से बोला :

'आओ, आओ ! हिम्मत से काम लो। हमें इस संकट से निकलने की कोशिश करनी चाहिए।'

वह उसकी बात सुनती प्रतीत न होती थी और धीमी आवाज में शिकायत सी करती विलाप कर रही थी।

'आह ! गरीबी ! क्या यह संभव है ? इस दारुण विपत्ति से पहले भी स्थिति ऐसी ही थी। हम अपनी सूखी रोटी खाते थे, लेकिन हम सब साथ थे, और क्या हो गया ? हे ईश्वर ! हमने कौन सा ऐसा पाप किया कि हमें इतना कष्ट झेलना पड़ा—कुछ लोग कब्र में पहुँच गए हैं और दूसरों के पास कुछ नहीं बचा। वे भी इसका इन्तजार कर रहे हैं ? यह सच है कि वे घोड़ों की तरह हमें काम पर कसे रहते थे ! और यह तो जिम्मेदारियों का उचित बँटवारा नहीं है कि हमेशा सोंटे खाते रहें और अच्छी चीजों का स्वाद चखने की आशा किये बगैर; और हम धनी लोगों को और धनी बनाते जाँय ? जब आशा जाती रहती है तो जीवन नीरस हो जाता है। हाँ, वह स्थिति लम्बे अर्से तक चलती रहती तो हमें थोड़ा साँस तो मिलती। काश, हमें पहले मालूम होता। क्या न्याय की माँग करने में अपने को इतना कष्ट में डाल देना संभव है ?

उसने गहरी साँस खींची और उसका गला असीम उदासी से भर आया।

'तब यहाँ हमेशा तुम्हें ऐसे चतुर लोग मिलेंगे जो तुमसे वायदा करते हैं कि सिर्फ थोड़ा सा कष्ट उठाने से सब ठीक कर लिया जायगा। तब लोगों का दिमाग फिर जाता है और वे इतना कष्ट भोगते हैं मानो वे कोई ऐसी चीज माँग

रहे हों जो हो नहीं सकती। अब तक, मैं एक बेवकूफ की तरह स्वप्न देखती थी। मैं जीवन को हर एक के साथ अच्छे मैत्री भाव से देखती थी; मैं हवा में उड़ने लगी, मेरा विश्वास, मेरी आस्था बादल बन गए। और तब कमर टूट जाने से पुनः हम लोग लड़खड़ा कर धूल चाटने लगे। वह सच नहीं है; वहाँ ऐसी कोई वस्तु नहीं है जिसके बारे में लोग बताया करते थे। वहाँ जो है, वह है भयंकर गरीबी-भुखभरी और अभिशप्त जीवन! जितना चाहिए उतना ले लो, और लाभांश के रूप में गोलियाँ भी।'

लॉतिये इस विलाप को सुन रहा था और उसका प्रत्येक आँसू उसे पश्चाताप में डुबो रहा था। वह सोच नहीं पा रहा था कि माहेदी को किन शब्दों में सान्त्वना दे जो कि आदर्शों की ऊँचाई से बड़े जोरों से गिरकर टूट सी गई थी। वह कमरे के मध्य में आ गई थी और अब उसकी ओर देख रही थी। उसने तिरस्कार पूर्ण आत्मीयता से उसे सम्बोधित करते हुए क्रोध की आखिरी चीख भरी।

'और तुम, तुम भी हम लोगों को उस मनहूस जगह से बाहर भगा कर अब लान में उतरने की बात करते हो! मैं तुम्हारी निंदा नहीं करती, परन्तु अगर मैं तुम्हारी जगह होती तो साथियों का इतना बड़ा नुकसान करने के बाद दुख से मर गई होती।'

वह उत्तर देने ही जा रहा था, लेकिन निराशा में उसने अपने कंधे उचकाये। सफाई देने से लाभ ही क्या? वह अपने दुख में समझ तो पायेगी नहीं? और वह अत्यन्त खिन्न मन से बाहर निकल आया और फिर निरुद्देश्य चक्कर काटने लगा।

वहाँ फिर उसने पाया कि बस्ती के लोग उसका इन्तजार कर रहे हैं, पुरुष दरवाजों पर और महिलायें खिड़कियों पर। जैसे ही वह दिखलाई पड़ा, गुर्राहटें सुनाई पड़ने लगीं, और भीड़ बढ़ गई। कानाफूसी की आवाज, जो पिछले चार दिनों से बढ़ती जा रही थी, विश्वव्यापी शाप के रूप में भंग हो रही थी। उसकी ओर घूंसे दिखाये जाते थे। मातायें नफरत से अपने बच्चों को, उसकी ओर संकेत कर बताती थीं, बुड्ढे उसकी ओर देखकर थूक देते थे। पराजय के बाद का यह परिवर्तन था—प्रसिद्धि का घातक प्रतिरूप—बिना किसी परिणाम के भुगती गई लम्बी यातनाओं का रोषपूर्ण श्राप। उसे भुखभरी और मौत की कीमत चुकानी पड़ेगी?

जाचरे ने फिलोमिना के साथ ऊपर आते हुए लॉतिये को झकझोरा और विद्वेषपूर्वक बोला: 'देखो, मोटा होता जा रहा है। अब वह और लोगों की मौत पर मजा उड़ा रहा है?'

लेवय्यू की औरत बाउटलोप के साथ दरवाजे पर आ गई थी। वह अपने छोटे बच्चे बीवर्ट के बारे में, जिसकी मौत गोली लगने से हुई थी, बातचीत करती हुई चिल्लाई :

'हाँ, ऐसे भी कायर हैं जो बच्चों की हत्या करवाते हैं। अगर वह मेरा बेटा मुझे वापस देना चाहता है तो उसे जाकर धरती में खोजना चाहिए।'

वह जेल में पड़े अपने मरद को भूल गई थी क्योंकि बाउटलोप के होने से गृहस्थी चलती जा रही थी, परन्तु जब उसे उसका स्मरण आया तो तेज आवाज में चीखी :

'आगे बढ़ो ! दुष्ट लोग निर्द्वन्द घूम रहे हैं जब कि भले आदमी जेल में हैं।'

उससे बच निकलने के लिए लॉतिये पेरीन के ऊपर लखखड़ा कर गिर पड़ा जो कि बगीचे से होकर दौड़ रही थी। उसने अपनी माँ की मौत को किसी अभिशाप से मुक्ति मान लिया था क्योंकि बुढ़िया का उत्पात उन्हें सूली का भय दिखाये रहता था। न वह पेरीन की छोटी लड़की के मर जाने पर ही रोई थी। 'वह सड़कों पर घूमने वाली लड़की—अच्छा हुआ, छुट्टी मिल गई।' लेकिन समझौते के लाभ की दृष्टि से उसने भी पड़ोसियों का साथ दिया।

'और मेरी माँ, एह, और नन्हीं सी बिटिया ? तुम्हें देखा गया, तुम अपने को उनके पीछे छिपाये हुए थे और गोली तुम्हारे बजाय उन्हें लगी।'

क्या किया जाय ? पेरीन और अन्य का गला घोंट दिया जाय और समूची बस्ती से लड़ा जाय ? एक क्षण को लॉतिये की इच्छा ऐसी हुई। उसके सिर में भनाहट हो रही थी, वह अब अपने साथियों को जाहिल समझने लगा था। उन्हें इतना मूर्ख और बर्बर पाकर, जो कि तथ्यों को तर्क के साथ रखने पर उससे बदला लेने की भावना रखते थे, खीझ उठा था। यह सब कितनी बेवकूफी है। वह उन्हें पुनः पालतू बनाने की अपनी अशक्ति पर उद्वेग महसूस कर रहा था और वह जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाकर संतोष मानता हुआ उनके तिरस्कार पर ध्यान ही नहीं दे रहा था। जल्दी ही वह एक पलायनवादी बन गया। जिस घर के दरवाजे से वह गुजरता वहीं उसे गालियाँ पड़ती थीं। वे उसकी पदचाप के पीछे भागते थे। ऐसा प्रतीत होता था कि समूचा राष्ट्र घृणा से आकुल होकर बिजली के समान कड़कड़ी आवाज में उसे कोस रहा था। वही था, उन्हें गुमराह करने वाला, उनकी हत्या करवाने वाला; और उनके दुर्भाग्य का मुख्य कारण वही था। वह इस चीखती हुई भीड़ को पीछे आते देखकर डर से पीला पड़ गया और तेजी से बस्ती के बाहर की ओर भागा। जब अन्त में वह मेनरोड पर पहुँचा, उनमें से अधिकांश लौट चले थे और थोड़े से अब भी पीछा कर रहे थे। आखिर में ढाल

के नीचे, एवेन्टेज के सामने उसे वोरो की ओर से आती हुई दूसरी टोली मिली।

बुड्ढा माउक्यू और चवाल उन लोगों में थे। अपनी लड़की माकेटी और पुत्र माक्यूट की मृत्यु के बाद बिना शिकायत किये या दुख का एक शब्द जाहिर किये वह साईस का काम करता आ रहा था। एकाएक, जब उसने लॉतिये को देखा, वह क्रोध से काँप उठा। उसकी आँखों से आँसू और तम्बाकू चबाने की आदत से थूक चुआते, काले मुँह से भद्दी-भद्दी गालियों की बौछार निकलने लगी :

'शैतान ! सूअर ! गंदा कीड़ा ! ठहर जा, तुझे मेरे निरपराध बच्चों की मौत का खमियाजा मुझे देना है; तेरा भी वही हाल होना है।'

उसने एक ईंट उठाई, उसे तोड़ा और दोनों टुकड़े उसकी ओर फेंके।

'हाँ ! हाँ ! साफ कर डालो, इसे !' चवाल इस प्रतिशोध से खुश होकर उत्तेजित स्वर में चिल्लाया : 'हर एक की बारी आती है; अब तुझे दीवार से चिपकना है, गंदा भेड़िया !'

और उसने भी पत्थरों से लॉतिये पर हमला किया। एक जंगली हो-हल्ला उठा, उन सभी लोगों ने ईंटें उठाईं, उन्हें तोड़ा और उसका भेजा फोड़ डालने के इरादे से उन्हें उसकी ओर चलाया जैसा उन्होंने सैनिकों के साथ किया था। वह घबड़ा गया और भाग नहीं सका। वह उनका सामना करने लगा, उन्हें शब्दों से शांत करने की कोशिश करने लगा। उसके पुराने भाषण, जिनका इतना जोरदार स्वागत हुआ था, पुनः उसके होठों पर आये। उसने उन शब्दों को दुहराया जिनसे उसने उन्हें एक समय नशे की हालत में ला दिया था और वह किसी के भी ऊपर एक स्वामिभक्त जानवर की तरह हाथ रख सकता था; लेकिन उसकी वह शक्ति लुप्त हो गई थी, सिर्फ उसका उत्तर पत्थरों ने दिया। तभी उसकी बाईं बाँह में चोट आई और भारी आतंक में वह पीछे हटा और उसने अपने आप को एवेन्टेज के सामने की दीवार से लगा हुआ पाया।

पिछले कुछ क्षणों में रसेन्योर अपने दरवाजे पर खड़ा था।

'अन्दर आ जाओ', उसने तेजी से कहा।

लॉतिये झिझका। उसे वहाँ शरण लेने में घुटन की महसूस हो रही थी।

'अन्दर आओ, तब मैं इन लोगों से बात कर लूँगा।'

उसने आत्म-समर्पण कर दिया और कमरे के दूसरे कोने में जाकर बैठ गया। उधर रसेन्योर अपने चौड़े कंधों से दरवाजा घेरे रहा।

'सुनो, मेरे दोस्तो, जरा बुद्धि से काम लो। तुम भली-भाँति जानते हो कि

मैंने कभी तुम्हें धोखा नहीं दिया। मैं हमेशा ही शांति के पक्ष में रहा हूँ और अगर तुम मेरी बात सुने होते तो वस्तुस्थिति वह न होती जो अब है।'

अपने कंधों और पेट को घुमाते हुए वह अपनी भाषण शक्ति से, गुनगुने पानी की मृदुता की भाँति, धाराप्रवाह बोल रहा था। उसकी पुरानी प्रतिष्ठा फिर लौट आई। अपनी प्रसिद्धि को उसने स्वाभाविक ढंग से बगैर किसी प्रयत्न के इस प्रकार पा लिया मानो उसका कभी तिरस्कार ही न हुआ हो और उसे एक महीना पेश्तर कायर कहा ही न गया हो। उसके विचारों का समर्थन करते हुए आवाजें उठने लगीं, 'बहुत ठीक! हम तुम्हारे साथ हैं! यह तरीका है चीजों को सामने रखने का!'

और तालियों की गड़गड़ाहट हुई।

पृष्ठभूमि में लाँतिये बेहोश सा हो गया, और उसका दिल कड़ुवाहट से भर गया। उसे रसेन्योर की जंगल में की गई भविष्यवाणी याद आई जिसमें उसने जनता की बेवफाई की बात का उसे डर दिखाया था। क्या अल्पबुद्धि का जंगलीपन है! पुरानी सेवाओं के प्रति क्या घृणित कृतघ्नता है! यह एक अंधशक्ति है जो लगातार अपने आप को निगल जाती है। और इन जंगलियों को अपना मामला स्वयं बिगाड़ते देखकर उनके प्रति क्रोध की तह में उसके स्वयं के गिरने और उसकी महत्वाकांक्षाओं के दुखद अन्त की निराशा भी थी। उसे स्मरण आया कि पेड़ों की टहनियों के नीचे तीन हजार दिलों में उसके दिल की धड़कन की प्रतिध्वनि गूँज रही थी। उस दिन उसकी प्रतिष्ठा मानवे आसमान पर थी। पागलपन के स्वप्नों ने उसे मदहोश बना दिया था। मोंटमू उसके कदमों पर, उसके पार पेरिस, शायद वह डिपुटी हो जाय, एक भाषण में मध्यवर्ग को कुचलते हुए, संसद में किसी मजदूर द्वारा किया गया पहला भाषण। और यह सब खत्म हो गया। वह जागा। अभागा और घृणित, उसके समर्थक, जिन्हें वह अपना अनुयायी समझता था और अपने को उनका मास्टर, उसे ईंटा मार कर खदेड़ रहे थे।

रसेन्योर ने ऊँचे स्वर में कहा :

'हिंसा कभी भी कामयाब न होगी; दुनिया को एक दिन में फिर से नहीं बनाया जा सकता। जिन्होंने तुमसे यह वायदा किया कि वे एक ही चोट में इस सब को बदल देंगे या तो उन्होंने तुम्हें बेवकूफ बनाया या वे शैतान हैं।'

'शाबास! शाबास!' भीड़ चिल्लाई।

तब कौन अपराधी है? और यह प्रश्न, जिसे लाँतिये स्वतः से पूछा करता था उसे अत्यधिक व्याकुल बना देता था। क्या वास्तव में यह उसका कसूर है,

यह दुर्भाग्य जो उसे रक्त बहाने को विवश कर रहा है, कुल की गुरबत, अन्य की हत्या, ये औरतें, ये बच्चे, कृशकाय और बमौर रोटी के टुकड़े। उस दुर्दिन से एक साँझ पहले उसकी कल्पनाओं में यह कायरता आई थी। लेकिन जिस एक शक्ति ने उसे उठा रखा था, वह भी अपने साथियों के साथ वह गया। अलावा इसके, उसने कभी भी उनका नेतृत्व नहीं किया। यह वह लोग थे जिन्होंने उसका भाग्य-दर्शन किया, जिन्होंने उन्हें ऐसे काम करने को मजबूर किया, जिन्हें वह यदि वहाँ भीड़ पीछे से धक्का देकर न फरमाती तो कभी न करता। हर नये उत्पात पर वह घटनाक्रम से हक्का-बक्का रह जाता था क्योंकि न तो पहले उसने उनकी कल्पना ही की थी और न उनमें से किसी को चाहता ही था। उदाहरणार्थ, क्या वह पहले कभी सोच सकता था कि धरती के उसके अनुगामी एक दिन उसे पत्थर मारेंगे? ये क्रोधित लोग झूठ बोले जब कि इन्होंने कहा कि उसने निठल्ले बैठे-बैठे उन्हें हर सुख-सुविधा देने का वायदा किया था। और इसे औचित्य-प्रकाश, इस तर्क पेश करने के पीछे, जिसमें वह अपने पक्षसमर्थन में संघर्ष लेने की कोशिश कर रहा था, वह व्यग्रता छिपी थी कि वह अपने उद्देश्य में नाकामयाब सिद्ध हुआ है। यह अर्थ-गर्भित व्यक्ति के संदेह, उसे अब भी पशोपेश में डाले हुए थे। लेकिन वह अपने को उत्साहहीन पा रहा था। उसके साथियों के दिल में अब उसके लिए कोई स्थान नहीं था। वह इस जन-समूह से घबरा रहा था, अंधी और अप्रतिहत, प्रकृति की शक्ति के समान विचरता, हर चीज को अपने साथ बहाता हुआ, नियमों और सिद्धान्तों से परे। एक प्रकार की नफरत उसे उनसे दूर ले जा रही थी— नई अभिरुचि में उसको महसूस होने वाली असुविधा, उसके ऊँचे तबके के बनने की दिशा में मंथर गति।

इसी क्षण रोमन्योर की आवाज उत्साहवर्धक कोलाहल में डूब गई।

'हमारा नेता रोमन्योर! यह है नेता! शाबाश, शाबाश!'

संतोष मालिक ने दरवाजा बंद कर दिया और भीड़ छँट गई। दोनों आदमियों ने एक दूसरे की ओर खामोश निगाहों से देखा। दोनों ने ही अपने कंधे उचकाये। उन्होंने साथ ही एक-एक प्याला पीकर मनोमालिन्य धो डाला।

उसी दिन पार्लमेन्ट में जोरदार दावत थी। वे जिप्सियों और सीमिकों की सगाई का समारोह मना रहे थे। छिपी जाल में सीमोने दम्पति ने डाईनिंग-रूम के सामान सजा दिये थे और ड्राइंग रूम की सफाई कर दी गई थी। मामी रसोई घर में व्यस्त गोश्त भून रही थी और सिरका तैयार कर रही थी, जिसकी खुशबू छत के कमरे तक पहुँच रही थी। यह तय हुआ था कि कोचबर्न फ्रांसिस होनोरीन को परोसने में मदद करेगा। मामी की औरत सगाई में मदद करेगी

और माली दरवाजा खोलेगा। इस गिरजे के मामान शांत और धनी पुरानी घर में इससे पूर्व कभी भी इस तरह की चहल-पहल और खुशी का वातावरण नहीं हुआ था।

हर चीज बड़ी खूबसूरती के साथ सम्पन्न हो गई। मदाम ह्नेच्यू सीखिल के साथ खुशी मना रही थीं, जब मोटसू के वकील ने भावी दम्पति के स्वास्थ्य की कामना का बड़े उत्साह से प्रस्ताव रखा तो वह मुस्कराई। एम० ह्नेच्यू भी बड़ा प्रियदर्शी बना हुआ था। उसके हँसमुख चेहरे से अभिथि बड़े प्रभावित हुए थे। यह खबर फैली थी कि डाइरेक्टरों की निगाह में उसकी इज्जत बढ़ गई है और जिस कौशल से उसने हड़ताल को खत्म किया है उससे उसे 'लीग आफ आनर' का अफसर बना दिया जायगा। हाल की घटनाओं का कोई जिक्र नहीं था, लेकिन इस आम खुशी में विजय की भावना थी और यह दावत एक विजय का आधिकारिक समारोह बन गई थी। अन्त में, वे उठ गए और फिर वे शांति से पी सकेंगे। मृतकों का, जिनके खून से खोरो की धरती अभी भी गीली थी वहीं बुद्धिमानी के साथ अप्रत्यक्ष उल्लेख किया गया था। यह एक आवश्यक सबक था, और प्रोगोप ने प्रस्ताव रखा कि अब सभी को कर्तव्य निष्ठा में लौटा कर खानों में अनुशासन कायम करना है। सभी उसकी बात से प्रभावित हुए। उसने पुनः उदार संतोष आ गया था, अपने बहादुर साथियों को साफ करते हुए वे पुनः उन्हें खानों में काम कर हमेशा के आत्मसमर्पण का अच्छा उदाहरण पेश करते देख सकते थे। मोटसू के प्रमुख उल्लेखनीय लोगों में, जो अब भय रहित हो गये थे, इस बात पर सहमति जाहिर की थी कि वेतन प्रणाली के प्रश्न का सावधानी से अध्ययन होना चाहिए। झूना हुआ गोश्त परोसा गया, उनकी पूर्ण विजय हो गई जब कि एम० ह्नेच्यू ने विरुपण के पास से आये हुए एक पत्र से अन्धे होने के हटाये जाने की घोषणा सुनाई। समूचे क्षेत्र का मध्यवर्ग इस पादरी की कट्टरता से क्रोधित हो उठा था जिसने सैनिकों को तैयारी की सजा दी थी। जब भोजनोपरान्त फल इत्यादि आये तो वकील ने निश्चयात्मक रूप से घोषित किया कि वह एक स्वतंत्र विचारक है। डेन्यूलिन भी अपनी दोनों पुत्रियों के साथ वहाँ आया हुआ था। इस खुशी के अवसर पर वह अपनी बरबादी के दुख को आत्मसंयम से दबा रहा था। आज सुबह ही उसने रण्डामे को मोटसू कम्पनी के हाथ बिक्री के कागजात पर हस्ताक्षर किये थे। अपने गले में छुरा रख कर उसने डाइरेक्टरों की माँगें स्वीकार की थीं, अन्तर्दोगता उन्हें उनका शिकार सौंप दिया था जिसकी ताक में वे इतने लम्बे अर्से से बैठे हुए थे। उसे उन लोगों से मुश्किल से इतना दाम मिला था कि वह अपने कर्जदारों का भुगतान कर

सके। उसने, एक सुनहरे मौके के रूप में, अन्त में डाइरेक्टरों के उसको डिवीजनल इंजीनियर बनाये जाने के प्रस्ताव को भी मंजूर कर लिया था और उसने उस खान की देख-रेख स्वीकार की थी, जो उसकी दौलत निगल गई थी। यह छोटे व्यक्तिगत उद्योगों को, एक-एक करके हमेशा की भूखी, मनुष्यभक्षी दैत्य रूपी पूंजी द्वारा निगल कर उसे बड़ी कंपनियों की बाढ़ में डुबो देने के मानिंद था। अकेले उसी को हड़ताल का खमियाज़ा भुगतना पड़ा था। जब एम० हनेब्यू की तरक्की के उपलक्ष्य में उन्होंने एक-एक जाम और पिया तो वह समझ रहा था कि यह उसे नेस्तनाबूद करने के उपलक्ष्य में पिया जा रहा है। उसे थोड़ा-बहुत संतोष इस बात से हो रहा था कि लूसी और जेनी हिम्मत के साथ अपने पतन को हँसते-हँसते सह रही थीं।

जब वे काफी के लिए ड्राइंग रूम में पहुंचे तो एम० ग्रीगोरे ने अपने चचेरे भाई को एक ओर ले जाकर उसके निश्चय के साहस पर उसे बधाई दी।

'तुम करने क्या? तुम्हारी बड़ी गलती तो यही थी कि तुमने मोंटसू का दीनार वण्डामे में लगा दिया। तुमने अपने ऊपर एक भयंकर घाव किया और वह उस बेकार के श्रम में बह गया। जब कि मेरा, अभी मेरी ड्राअर में ही बंद है और उसकी बदौलत अब भी बगैर हाथ पांव डुलाये चैन का जीवन व्यतीत कर रहा हूं और वह मेरे पोतों के बच्चों को भी खाना खिलाता रहेगा।

२

रविवार को अंधेरा होने पर लांतिये बस्ती से निकल भागा। स्वच्छ निर्मल आकाश में तारे छिटके हुए थे, जो ढाभा में धरती पर नीली धुंधली रोशनी फेंक रहे थे। वह ढाल की ओर नहर की तरफ निकल गया और धीरे-धीरे घूमता हुआ नहर के किनारे-किनारे मार्सेनीज की ओर बढ गया। उसके घूमने निकलने की यह प्रिय, दो लीग लम्बी, घास से भरी सड़क इस नहर के किनारे किनारे सीधी निकल गई थी। रास्ते में उसे कभी भी कोई नहीं मिला। लेकिन आज वह एक व्यक्ति को अपनी ओर आता हुआ देखकर घबड़ा गया। तारों की पीली, धुंधली रोशनी में जब वे दोनों एकाकी घुमक्कड़ एक दूसरे के आमने-सामने हुए तो दोनों ने एक दूसरे को पहचाना।

'क्या! तुम हो?' लांतिये ने पूछा।

सोवरायन ने उत्तर दिए बगैर सिर हिला दिया। एक क्षण को वे स्थिर खड़े रहे, तब अगल बगल में वे साथ-साथ मार्सेनीज की ओर रवाना हुए। उनमें से प्रत्येक अपने विचारों में इतना खोया हुआ था कि मानो वे एक दूसरे से बहुत दूर हों।

'क्या तुमने समाचार पत्रों में प्लूचर्ड की पेरिस मे सफलता के बारे में पढ़ा है।' अन्त में लॉतिये ने पूछा। 'वेलेविले की उस सभा के बाद वे फुटपाथ पर उसका इन्तजार करते रहे और उसका स्वागत किया था। ओह! उसका गला खराब होने पर भी उसका भाषण बड़ा प्रभावशाली होता है। वह भविष्य में जो चाहे कर सकता है।'

इंजनमैन ने नफरत से अपने कंधे सिकोड़े। उसे अच्छे वक्ताओं से, जो कि इस प्रकार राजनीति में चले जाते है जैसे कोई मद्यशाला मे जाता है और अपने भाषणों की ही रोटी खाते हैं, बड़ी घृणा थी।

लॉतिये अब डारविन का अध्ययन कर रहा था। उसने उसके एक खंड को, जो कि संक्षिप्त कर छोटे पुस्तकाकार रूप मे पाँच सूज के संस्करण मे प्रकाशित किया गया था, पढ़ लिया था और अपने इस अधकचरे अध्ययन से उसने एक क्रांतिकारी विचार हासिल किया था—अस्तित्व के लिए संघर्ष, दुबले द्वारा मोटे का निगला जाना—शक्तिशाली लोगो का पीले-कमजोर मध्यम वर्ग को निगल जाना। लेकिन सोवरायन डारविन को मानने वाले सोशलिस्टो की बेवकूफी की कटु आलोचना कर रहा था: वैज्ञानिक असामंजस्य का वह प्रचारक, जिसका प्रसिद्ध सिद्धान्तवाद सिर्फ अभिजातवर्गीय दार्शनिको के लिए ही अच्छा है।' उसका साथी इस प्रश्न पर तर्कपूर्वक सोचने और तर्कबुद्धि द्वारा किये गए विश्लेषण पर अपने संदेह प्रकट करने की बात पर जोर दे रहा था: मान लो पुराना समाज नही रहा, नष्ट कर दिया गया. अच्छा, क्या यह भय नही रहेगा कि नया समाज फिर पनपेगा? धीरे-धीरे वह भी इसी अन्याय से दूषित होता जायगा? कुछ गरीब होंगे और अन्य धनी होते जायंगे? कुछ कुशल और बुद्धिमान होंगे, हर चीज में बढ़ते जायेंगे और अन्य दुर्बल और सुस्त होंगे, फिर गुलाम बन जायेंगे?' आन्तरिक दीनता की इस कल्पना से पहले ही इंजनमैन क्रोध से चिल्ला उठा कि अगर मानव के साथ न्याय संभव नही है तब मानव को विनष्ट हो ही जाना चाहिए। हर सड़ांधयुक्त समाज के लिए कत्लेआम होना ही चाहिए जब तक कि आखरी प्राणी नेस्तनाबूद न हो जाय। और फिर वे दोनो ही खामोश हो गए।

बड़ी देर तक, सर झुकाये, सोवरायन छोटी-छोटी घास पर चलता रहा। वह विचारों में इतना लीन था कि वह पानी के बिलकुल किनारे-किनारे इस इस प्रकार चलता रहा मानो कोई स्वप्न मे चलने वाला छत पर चल रहा हो। तब वह अकारण ही काँप उठा मानो वह किसी छाया के विरुद्ध लड़खड़ाया हो। उसने आँखें उठाई, उसका चेहरा बहुत पीला पड़ गया था; और धीरे से अपने साथी से बोला:

'क्या मैंने तुम्हें कभी बताया था कि वह कैसे मरी ?'

'तुम्हारा मतलब किससे है ?'

'मेरी पत्नी से, वहाँ, रूस में।'

लॉतिये ने एक अस्पष्ट भाव प्रदर्शित किया। उसकी आवाज में कंपन था और उसको अपने विश्वास मे लेने की अचानक उसकी इच्छा से उसे आश्चर्य हो रहा था क्योंकि वह हमेशा उससे तथा औरों से उदासीन रहा करता था। उसे सिर्फ इतना मालूम था कि एक औरत उसकी पत्नी थी और उसे मास्को में फाँसी मिली थी।

'मामला अभी समाप्त नहीं हुआ है,' सोवराग्वन ने लम्बे पेड़ों के बीच बहर की श्वेतधारा की ओर निगाह डाले हुए कहा। हम एक पखवारे तक एक खेदी में छिपे हुए रेलवे के नीचे सुरंग बिछाते रहे और वह जार की ट्रेन नहीं थी जिसे उड़ाया गया, वह एक पैसेंजर ट्रेन थी। तब उन्होंने अनतचुका को गिरफ्तार कर लिया। एक किसान औरत के भेष मे वह हर संध्या को हमारे लिए रोटी लाया करती थी। उसी ने फ्यूज में भी आग लगाई, थी क्योंकि पुरुष का वहाँ होना ध्यान आकर्षित कर सकता था। मैं झोंप में छिपा हुआ उसके मुकदमे को लगातार छः दिन तक सुनता रहा।'

उसकी आवाज भर आई थी और उसने गला साफ किया मानो उसमें घुटन पैदा हो रही हो।

'दो बार मेरी इच्छा हुई कि मैं चिल्लाऊँ और आदमियों के सिरों से कूद कर उसके पास पहुँच जाऊँ। लेकिन उससे क्या लाभ होता ? एक आदमी के कम हो जाने का मतलब एक सैनिक का घट जाना था और मैंने देखा कि जब कभी उसकी बड़ी-बड़ी आँखें मेरे से चार होतीं तो वह मुझसे कहती प्रतीत होती कि 'आना मत।'

उसने फिर खँखारा और गला साफ किया।

'आखिरी दिन स्वायर में मैं भी वहाँ था। पानी बरस रहा था; बरसात में बाहर निकलने पर उनका भेजा फिर गया था। अन्य चारों को फाँसी लटकाने मे बीस मिनट लगे, रस्सा टूट गया, वे चौथे को खत्म न कर सके। अनतचुका खड़ी इन्तजार कर रही थी। वह सब को नहीं देख सकती थी, वह भीड़ में मुझे खोज रही थी। मैं एक थूम में खड़ा हो गया और उसने मुझे देखा और हमारी आँखें बराबर एक दूसरे को देखती रहीं। जब वह मर गई तब भी वह मेरी ओर देख रही थी। मैंने अपना टोप हिलाया; मैं लौट आया।'

फिर वहाँ खामोशी छा गई। नहर की बरफ से ढँकी सफेद सड़क बहुत दूर तक चली गई थी। वे फिर चुपचाप कदम उठाते हुए बढ़े चले जा रहे थे मानो वे

फिर एकाकीपन में डूब गई हों। खिड़की पर, पीले पानी के आसमान में आकाश का एक छोटा सा छिद्र खुलता प्रतीत होता था।

'यह हमारी सजा थी,' सोवरायन ने रुलाई में कहा। 'हम एक दूसरे को प्यार करने के अपराधी थे। हाँ, यह अच्छा ही हुआ कि वह मर गई। उसके खून से वीरों का जन्म होगा और मेरे दिल में कोई कायरता नहीं रह जायगी। आह! कोई नहीं, न माँ-बाप, न पत्नी, न दोस्त! उस दिन जब कि मैं दूसरों की जान ले लूँगा या अपनी दे दूँगा, मेरा हाथ कँपा देने वाली कोई वस्तु न होगी।'

इस ठंडी रात में काँपता हुआ लॉतिये ठहर गया। उसने ज्यादा बहस न कर सिर्फ इतना कहा :

'हम बहुत दूर निकल आये हैं, क्या वापस लौटें?'

वे धीरे-धीरे बोरो की ओर लौट आये और कुछ कदम चलने के बाद वह बोला :

'तुमने नये इश्तहारों को देखा है?'

कंपनी ने उस दिन सुबह कुछ और बड़े पीले इश्तहार लगाये थे। वे अधिक स्पष्ट और अधिक समझौते वाले थे और कंपनी ने उन खनिकों के सार्टिफिकेट पुनः वापस लेने का वायदा किया था जो दूसरे दिन नीचे जायेंगे। हर बात भुला दी जायगी और उन्हें भी माफ कर देने को कहा गया था जो कि बहुत ज्यादा उग्र थे।

'हाँ मैंने देखा है,' इंजनमैन बोला।

'अच्छा, तुम इसके बारे में क्या सोचते हो?'

'मैं सोचता हूँ कि सब खत्म हो गया। मेहनत फिर नीचे जायेंगी। तुम सब बहुत ही कायर हो।'

लॉतिये ने जल्दीबाजी में अपने साथियों को माफ कर दिया। एक आदमी बहादुर हो सकता है। एक समूह के पास, जो कि भूखों मर रहा हो, शक्ति नहीं रह जाती। धीरे-धीरे वे बोरो की ओर लौट रहे थे और खान के काले समूह के सामने उसने अपना शपथ लेना जारी रखा कि कम से कम, वह कभी नीचे न जायगा; लेकिन जो जाते है उन्हे वह माफ कर सकता है। तब, उसने जानकारी के लिए पूछा : 'यह अफवाह थी कि बढ़ई लोगों को टबिंग की मरम्मत के लिए समय नहीं मिल पाया। क्या यह सच है? क्या शेफ्ट की अन्दरूनी मचान बनाने वाले तख्तों का किनारा मिट्टी के बोझ से इतना अन्दर आ गया था कि 'लपेट कटघरा' नीचे जाते हुए पचास मीटर की लम्बाई तक उससे घिसटता चला गया?'

सोवरायन ने, जो पुनः मौन बन गया था, संक्षेप में उत्तर दिया : 'वह पिछले दिन काम कर रहा था और कटघरा, निःसंदेह, घड़घड़ाहट का शब्द कर रहा था; उसे उस स्थान को पार करने के लिए रफ्तार को द्विगुणित भी कर देना पड़ा था। लेकिन निरीक्षण की कोई खबर अधिकारियों को दी जाय तो वही झुंझलाहट भरा उत्तर मिलता है : वे कोयला चाहते हैं, उसकी मरम्मत बाद में भी हो सकती है।

'तुम देखते हो वह धसक रहा है ?' लॉतिये ने कहा। 'वह दिन शुभ होगा !'

छाया में खान की ओर नजर लगाये हुए, सोवरायन ने शान्तिपूर्वक बात समाप्त की :

'अगर वह ध्वस्त हो जायगा तो साथी लोगों को मालूम पड़ ही जायगा, चूंकि तुम उन्हें नीचे जाने की सलाह दे रहे हो।'

मोंटसू के गिरजे में नौ बज गए थे और उसके साथी ने कहा कि वह सोने जा रहा है। उसने अपना हाथ बाहर निकाले बगैर ही कहा :

'अच्छा, गुडबाई। मैं चला जा रहा हूँ ?'

'क्या ! तुम दूर जा रहे हो ?'

'हाँ, मैंने सार्टिफिकेट वापस माँगा है। मैं अन्यत्र जा रहा हूँ।' लॉतिये हक्का-बक्का और मायूस हो उसकी ओर देखने लगा। दो घंटे टहलने के बाद उसने यह बात उसे बताई थी और इतनी शान्त आवाज में, जब कि एकाएक इस जुदाई से उसका दिल स्वयं दुख रहा था। वे एक-दूसरे को जानने लगे थे। उन्होंने साथ-साथ कष्ट भोगा था; और एक साथी को फिर न देख पाने के विचार से ही एक व्यक्ति हमेशा उदास हो जाता है।

'तुम जा रहे हो ! और तुम जाओगे कहाँ ?'

'कहाँ—मैं स्वयं नहीं जानता कहाँ जाऊंगा ?'

'लेकिन मेरी फिर तुमसे मुलाकात होगी ?'

'नहीं, मैं ऐसा नहीं सोचता।'

वे चुपचाप एकक्षण को एक-दूसरे के आमने-सामने खड़े रहे। उन्हे बातचीत का कोई प्रसंग नहीं मिल रहा था।

'तब गुड बाई।'

'गुड बाई।'

जब लॉतिये बस्ती की ओर चढ़ाई चढने लगा तोसोवरायन मुड़ा और फिर नहर के किनारे-किनारे चलने लगा; और वहाँ अकेले, घूमने का उसका क्रम जारी रहा। सिर नीचे झुकाये, वह अंधकार में इतना खोया हुआ था कि वह रात्रि

की हिलती-डुलती छाया प्रतीत होता था। यदा-कदा वह ठहर जाता, दूर बजने वाले घंटे की आवाज से वह घंटे गिनता था। जब उसने बारह का घंटा सुना तो वह किनारा छोड़ कर बोरो की ओर मुड़ गया।

उस समय खान खाली थी, और उसे एक नींद से बोझिल आँखों वाला कप्तान मिला। छः बजे सुबह से पहले उठकर उनके फिर से काम चालू करने के लिए स्टीम बनने वाली नहीं थी। पहले वह एक आले में रखी गई जाकेट लेने गया जिसे उसने भूल जाने का बहाना बनाया था। इस जाकेट मे बहुत से औजार लपेटे हुए थे—स्क्रू लगा हुआ बरमा, एक छोटी लेकिन बड़ी मजबूत आरी, एक हथौड़ा और एक रुखानी। फिर वह वहाँ से निकल आया। लेकिन ओसारे से बाहर निकलने के बजाय वह सीढ़ियों के मार्ग को जाने वाले सँकरे गलियारे से गुजरा। अपनी जाकेट काँख मे दबाये वह दबे पाँव, बगैर लैंप के नीचे उतर गया और सीढ़ियाँ गिनते हुए गहराई नापने लगा। वह जानता था कि तीन सौ चौहत्तर मीटर पर कटघरा निचले पीपों की पाँचवीं कतार से घिसट रहा था। जब वह चौव्वन सीढ़ियाँ गिन चुका तब उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया और तख्तों का फूलना उसने महसूस किया। यही वह जगह थी। तब एक अच्छे कारीगर की कुशलता और धैर्य से, जो कि अपना काम लम्बे अर्से से करता चला आ रहा हो, वह काम में जुट गया। वह लपेट-कटघरे से सम्पर्क स्थापित करने को बीच के लकड़ी के तख्ते को आरी से चीरने लगा। दियासलाई की सहायता से, जिसे जलाकर वह जल्दी बुझा देता था, उसने पीपों की हालत और हाल की मरम्मत की स्थिति को आँक लिया।

कैले और बेलेनेसीज के बीच निचली घाटियों में बहुत बड़ा जलभंडार होने की वजह से खान के लिए कूपक का खोदना बहुत मुश्किल काम है। सिर्फ बड़े बड़े पीपे लगाने और एक लम्बी नल के द्वारा जमीन के भीतर की झीलों के चश्मों का पानी उसके द्वारा बाहर बहा कर ही कूपक को बचाना और खोदना संभव हो सकता था। बोरो को खोदने के लिए दो पीपों की जरूरत हुई थी। ऊपरी तल पर, खिसकने वाली बालू और सफेद मिट्टी को परतों के बीच, और निचले तल पर कोयले की तह के तत्काल बाद, पीली, आटे के समान महीन मिट्टी पर, जो कि गाढ़े घोल के रूप में बहती थी; यहीं वह तेज धारा पाई गई थी। वह अथाह सागर, जो कि नार्ड की खानों के लिए एक अभिशाप है—ऐसा सागर, जिसमें सूर्य के प्रकाश से तीन सौ मीटर नीचे तूफान आते हैं, जहाज डूबते हैं और अनन्त गहराई लिए हुए बाढ़ें आया करती है। आमतौर से पीपों को भारी दबाव से खतरा रहता है। सामान्य खतरा यही होता है कि पुराने गलियारों से बहकर आस-पास

की मिट्टी यहाँ जमा न हो जाय। इस नीचे की ओर वाली खाई चट्टानों में कभी-कभी दरारें आ जाती हैं जो धीरे-धीरे मन्नानों तक पहुँचकर उसे छलनी कर डालती हैं और अन्त में उसे कूपक की ओर धकेल देती हैं और वहाँ जमीन के धँसने और किसी चश्मे के फूट पड़ने से खान में पानी के भर जाने तथा चट्टानों के खिसकने का भारी खतरा रहता है।

सोखरायन ने जो खुली जगह बना डाली थी उस पर मैंने कमर कसकर पीपों की पाँचवीं कतार में एक भारी दोष ढूँढ़ निकाला। ढाँचे से लकड़ी बाहर निकल आई थी; कई तख्ते तो तीन-चौथाई बाहर आ गये थे। जोड़ों में जगह-जगह से पानी बड़े वेग से, रस्सों से ऐंठे गए स्थानों से निकला रहा था। बढ़ई लोगों ने समयाभाव से कीलों में लोहे के चौकड़ रखकर ही संतोष कर लिया था और वह भी इतनी लापरवाही से कि उनके स्क्रू भी नहीं लगाये गए थे। पीछे से, निःसंदेह बालू के प्रवाह में एक पर्याप्त बढ़ाव प्रतीत हो रहा था। छेद बनाने वाले औजार से चौखटों को हिला कर दिया ताकि दूसरे धक्के से वे दूर जा गिरें। यह बड़ा बेवकूफी का काम था, क्योंकि वह कई बार सिर के बल एक सौ अस्सी मीटर नीचे गिरने से बचा जो कि उसके और तल के बीच की दूरी थी। उसे ओक की प्रदर्शिका, भरत को, जिसके सहारे कटघरा खिसका करता था, पकड़ना पड़ा। उसने शून्य में लटकते हुए आर-पार पड़ी हुई आड़ी बल्लियों को, जो उसके साथ जुड़ी हुई थी, पार किया। सरकते, बैठते, उलटते हुए वह दीवार के सहारे अपनी कोहनी या घुटने के बल मृत्यु को लेय समझता हुआ स्थिरतापूर्वक बढ़ रहा था। एक फूंक से वह उलट सकता था और तीन बार वह मृत्यु के मुंह में गिरने से बचा। लेकिन उसे जरा भी कँपकँपी नहीं छूटी। पहले उसने हाथ से टटोल कर काम शुरू किया और जब वह इन चिम-चिपी बल्लियों के बीच खो जाता तो दियासलाई जला लेता था। स्क्रू ढीले करने के बाद उसने लकड़ी पर वार किया और तब खतरा और भी बढ़ गया। वह उस आधार की, उस टुकड़े की तलाश में था जो अन्य सभी को रोके हुए था। उसने भयंकर रीति से उस पर हमला किया, उस पार छेद बनाया, आरी से काटा, उसे इतना पतला बना दिया कि उसके टिक पाने की शक्ति जाती रही; उधर कि छेदों और दरारों के बीच से हल्के फव्वारों के रूप में निकलने वाला पानी उसे अंधा बनाये दे रहा था और वह इस बर्फीले पानी में बुरी तरह भीग गया था। दो माचिसें बुझ चुकी थीं। वे सब नम पड़ गई थीं और वहाँ राशि हो गई, निस्सीम गहराई तक अंधकार।

इस क्षण से उसे क्रोध चढ़ आया। किसी अदृश्य के चलचित्रों से वह नशे की

से हालत में हो गया था। इस निरंतर वर्षा वाले काके छेद का आतंक उसे विनाश के पागलपन की ओर प्रेरित कर रहा था। उससे अपना गुस्सा पीपों पर अंधाधुंध प्रहार कर उतारा। जहाँ कहीं भी वह वार कर सकता था उसने छेनी से, आरी से, वार किया। उसकी इच्छा यह हो रही थी कि इस समूचे ढेर को वह एक बारगी ढहा दे चाहे वह उसके ही सर पर क्यों न गिर जाय। उसने अपने इस कार्य को इतनी उत्तेजना से किया मानो वह किसी आदमखोर जीवित जानवर को एक चाकू से छेद रहा हो। अन्त मे वह चोरों को खत्म ही कर डालेगा; हमेशा जबड़ा खोले हुए इस दुष्ट जानवर को, जो इतना अधिक नरमांस निगल चुका है। उसके औजारों की काट सुनाई दे रही थी। उसने अपने अवयव सीधे किये; रेंगकर नीचे उतरा, फिर ऊपर आया। लगातार वह घरन पकड़े हुए इस प्रकार आश्चर्यजनक रीति से आता-जाता था मानों घंटाघर की घरनों के बीच कोई बड़ा पंछी इधर-उधर आ जा रहा हो।

लेकिन कुछ देर बाद अपने आपसे असंतुष्ट सा हो वह शान्त हो गया। क्यों न काम को ठंडे दिमाग से किया जाय? उसने इतमीनान से साँस ली और फिर सीढ़ी वाले मार्ग से जाकर छेद को उसी चौखट से बंद कर दिया जिसे उसने आरी से काटा था। वह व्यापक क्षति पहुँचा कर तत्काल हो-हल्ला नहीं होने देना चाहता था अन्यथा उसकी फौरन मरम्मत कर ली जाती; इतना काफी था। जानवर के पेट में घाव हो गया था; देखा जायगा कि वह रात भर जीवित रहता है अथवा नहीं। और उसने अपनी निशानी छोड़ दी थी; भयत्रस्त दुनिया जान लेगी कि जानवर की मौत स्वतः नहीं हुई है। उसने करीने से अपने औजारों को जाकेट में लपेटा और धीरे से सीढ़ियों पर चढ़ गया। तब, जब वह बगैर किसी के देखे खान से बाहर आया, उसे यह भी इच्छा नहीं हुई कि वह जाकर अपने कपड़े बदल ले। तीन बज चुका था। वह सड़क पर खड़ा इन्तजार करता रहा।

उसी समय लाँतिये, जो सो नहीं पाया था, कमरे की गहरी शांति में हल्की चरमराहट से परेशान था। वह बच्चों के हल्के से साँस भरने और बोने माँ तथा माहेदी के खर्राटों को पहचान सकता था। उसकी बगल में सोया जूली लम्बी साँस लेता हुआ बंसी की सी आवाज कर रहा था। निःसंदेह उसने स्वप्न देखा होगा? लेकिन जब वह करवट ले रहा था तो फिर आवाज शुरू हुई। यह चारपाई की चरमराहट थी, किसी का धीरे से उठने का प्रयास था। तब उसने सोचा कि कैथराइन बीमार तो नहीं है?

'मैंने कहा, तुम हो, क्या बात है?' उसने धीमे स्वर में पूछा।

किसी ने उत्तर नहीं दिया और अन्य लोगों को खुर्राहट जारी रही। पाँच मिनट तक सब शांत रहा। फिर नये सिरे से चरमराहट हुई। इस बार निश्चित होकर उसने कमरे मे अपनी दूसरी ओर के बिस्तर को अंधेरे में ही हाथ से टटोला। उसे आश्चर्य हुआ कि वह अपनी साँस रोके बैठी हुई है और पूर्ण रूप से जाग्रत अवस्था में है।

'अच्छा ! तुमने उत्तर क्यों नही दिया ? तुम क्या कर रही हो ?'

अन्त में वह बोली :

'मैं उठ रही हूँ।'

'उठ रही हो, इतनी रात को ?'

'हाँ, मैं खान में काम पर वापस जा रही हूँ।'

लॉतिये को गहरी सहानुभूति उत्पन्न हुई। वह चारपाई के एक कोने पर बैठ गया और वैथराइन अपना तर्क उसको बताने लगी। वह इस प्रकार बेकाम बैठे बैठे ऐसा महसूस करती है कि उसकी ओर लगातार घृणा से देखा जा रहा है। इससे बेहतर यही है कि वह वहाँ चवाल द्वारा मार कर नीचे गिरा दिये जाने का खतरा उठाये। और अगर उसकी माँ उसका वेतन लेने से इनकार करेगी तो अच्छा है न ले। वह खुद ही सब कर लेगी और अपना सूप भी बना लेगी।

'जाओ, मैं कपड़े बदलूंगी ! और कुछ कहना मत, क्या तुम न कहोगे ? अगर तुम मेहरबान रहना चाहो तो ?

लेकिन वह उसी के पास खड़ा रहा। उसने दुख और दया के प्यार से उसकी कमर में हाथ डाल दिया। अपनी कमीजों मे एक-दूसरे को दबाते हुए वे एक-दूसरे के नग्न अवयवों का सुख महसूस कर रहे थे। पहले लड़की ने अपने को छुड़ाने की कोशिश की; फिर वह धीरे-धीरे सुबकियाँ भरने लगी और उसके गले में बाँह डालकर निराशा के आलिंगन मे उसे बद्ध करने लगी। वे और किसी इच्छा के बगैर, अपने पुराने दुर्भाग्यपूर्ण प्रेम की बात सोचते हुए, जिसे वे संतुष्ट नहीं कर पाये थे, वैसे ही रहे। तब, क्या हमेशा के लिए उनके प्रेम का खात्मा हो गया ? क्या वे कभी भी, किसी भी दिन, एक-दूसरे को प्यार करने का साहस न कर सकेंगे ? और अब तो वे स्वतंत्र हो गए है। उनकी शर्म को दूर करने के लिए थोड़ी सी खुशी की जरूरत थी, वह झिझक जो उन्हें सभी प्रकार के विचारों के कारण, जिन्हें वह स्वयं स्पष्टतया समझ नहीं पाते थे, एक दूसरे से रोकती थी।

'बिस्तर में चले जाओ', उसने उसके कान में कहा। 'मैं रोशनी जलाना नहीं चाहती, माँ जाग उठेगी। अब समय हो गया; मुझे छोड़ दो।'

उसने सुना नहीं; वह अत्यधिक उदासी से भरा उसे दबाये चला जा रहा था। शांति की आवश्यकता, खुशी की अनिवार्यता, उसे बहाये लिए जा रही थी। और वह कल्पना कर रहा था कि वह विवाहित हो गया है। एक छोटे से साफ-सुथरे घर में वे रह रहे है, इसके अलावा और कोई महत्वाकांक्षा नही है कि वे साथ ही साथ जियें-मरें। उसे रोटी पर ही संतोष होगा; अगर वह एक के लिए भी पर्याप्त हो, उसे रोटी मिलनी चाहिए। अन्य सब चीजों से क्या लाभ ? क्या इससे भी बेहतरीन और कोई जीवन हो सकता है ?

लेकिन लड़की के अपनी नंगी बाँहों की पकड़ ढीली कर दी।

'कृपया, मुझे छोड़ो'

तब, यकायक भावातिरेक मे उसने उसके कान में कहा :

'ठहरो, मैं भी तुम्हारे साथ आ रहा हूँ।' और उसे स्वय आश्चर्य हुआ कि वह क्या कह बैठा है। वह कसम ले चुका था कि कभी भी खान मे नही उतरेगा, तब यकायक यह निश्चय कहाँ से आया ? विचार-विमर्श के लिए एक क्षण का मौका दिये बगैर, बगैर कल्पना के, कैसे उसके ओठों से अनायास ही निकल गया ? अब उसके मन मे इतनी शांति थी, उसके संदेहों का पूर्ण विवरण था कि वह भाग्यवशात् अपने को उस व्यक्ति की भांति बच गया महसूस कर रहा था जिसे अपना परेशानियों-उलझनों का एक मात्र हल मिल गया हो। इसलिए जब लड़की ने चिन्ता जाहिर की तो उसने उसकी बात मानने से इनकार कर दिया। वह समझ रही थी कि उसके लिए ही वह यह सब कर रहा है और खान मे लोग गालियो से उसका स्वागत करेंगे। उसने हर बात हँस कर टाल दी; 'इश्तहारों से माफी का वायदा किया गया है और इतना ही काफी है।'

'मै काम करना चाहता हूं; यही मेरा विचार है। चलो, कपड़े पहने जाँय और शोर न किया जाय।'

बड़ी सावधानी के साथ उन्होंने अंधेरे में ही कपड़े पहने। उसने चुपचाप पिछली रात अपने खान के कपड़ों की मरम्मत कर ली थी; नवयुवक ने भी आले पर से अपनी जाकेट और ब्रिजिस उतारी। चिलमची गिरने के डर मे उन्होंने हाथ-मुंह भी नहीं धोया। जब वे रवाना होने को हुए तो दुर्भाग्य मे लड़की कुर्सी से टकराई। माँ जाग उठी और उनींदे स्वर में बोली :

'एह ! यह क्या है ?'

कैथराइन रुक गई, काँपते हुए उसने जोरों से लॉतिये का हाथ दबाया :

'मैं हूँ; तुम कष्ट मत करो,' नवयुवक बोला। 'कुछ घुटन सी महसूस हो रही है और मैं खुली हवा में जरा देर को बाहर जा रहा हूँ।'

'बहुत अच्छा' ।

और माहेदी फिर सो गई। कैथराइन को उठने की हिम्मत नहीं हुई। आखिर में उसने नीचे, रसोई घर में जाकर मक्खन लगे एक रोटी के टुकड़े को, जिसे उसने मोंटसू की एक सम्भ्रान्त महिला द्वारा दी गई एक पाव रोटी से बचा कर सुरक्षित रखा था, दो भागों में बाँटा। तब उन्होंने धीरे से दरवाजा बन्द किया और बाहर निकल गए।

सोवरायन, एवेन्टेज के पास, सड़क के कोने पर खड़ा था। आधे घंटे से वह अँधेरे में, धीरे-धीरे चलने वाले मवेशियों के झुंड की तरह, काम पर जाते हुए खनिकों को देख रहा था। वह उन्हें गिन रहा था, जैसे कोई कसाई बूचड़खाने में प्रवेश करने वाली भेड़ों को गिन रहा हो और उनकी संख्या देखकर उसे आश्चर्य हो रहा था; उसके निराशावाद ने भी कल्पना नहीं की थी कि कायरों की संख्या इतनी अधिक हो सकती है। उनकी धारा-सी बहती जा रही थी और वह सख्त बनता जा रहा था, बहुत ही निर्दय, दांत किटकिटाता हुआ। उसकी आँखों में एक चमक थी।

लेकिन वह चौंक पड़ा। गुजरने वाले लोगों में, जिनके चेहरे वह पहचान नहीं पा रहा था, उसने एक व्यक्ति को उसकी चाल से पहचाना था। उसने आगे बढ कर उसे रोका।

'तुम कहाँ जा रहे हो?'

लाँतिये ने आश्चर्य से, उत्तर देने के बजाय, पूछा :

'क्या! अभी तुम रवाना नहीं हुए?'

तब उसने स्वीकार किया कि वह खान जा रहा है। निःसंदेह उसने शपथ खाई थी; परन्तु हाथ पर हाथ धरे जिन्दगी भर उन बातों का तो इन्तजार किया नहीं जा सकता जो शायद सौ वर्षों के बाद होंगी और अलावा इसके, उसकी तर्क बुद्धि ने उसे यह राह दिखाई है।

सोवरायन, काँपता सा उसकी बातें सुनता रहा। उसने उसे कंधे से पकड़ कर बस्ती की ओर धकेला।

'घर वापस चले जाओ; मैं चाहता हूँ तुम जाओ। क्या तुम समझे?'

लेकिन कैथराइन के पहुँचते पर उसने उसे भी पहचाना। लाँतिये ने विरोध किया, ऐलान सा किया कि वह अपने काम की किसी को जाँच की अनुमति नहीं देता। इंजनमैन की आँखें नवयुवती की ओर से उसके साथी की ओर घूमीं और वह एकाएक तेजी से पीछे हट आया था। जब किसी आदमी के दिल में औरत बसी होती है तो वह व्यक्ति निकम्मा हो जाता है, वह पर सकता है। शायद

उनकी कल्पना मे तेजी से उसकी पत्नी का वहाँ, मास्को में फाँसी लटकने का दृश्य घूम गया था, उसकी आत्मा से वह आखिरी कड़ी भी कट जाने मे वह स्वतंत्र हो गया था कि वह औरों की जान ले ले और अपनी दे दे। उसने सिर्फ इतना कहा :

'जाओ।'

लॉतिये असमंजस में पड़ कर विलम्ब कर रहा था और कोशिश मे था कि इस प्रकार विदा न होकर किन्हीं मित्रतापूर्ण शब्दों के साथ अलग हो।

'तो तुम अब भी जाने का इरादा रखते हो ?'

'हाँ।'

'अच्छा, अपना हाथ मुझे दो, पुराने साथी। तुम्हारी यात्रा सुखद हो, कोई मनोमालिन्य नही।'

अगले ने अपना ठंढा हाथ बढ़ा दिया। उसके न मित्र था, न पत्नी ही थी।

'इस बार हमेशा के लिये विदा।'

'हाँ, अलविदा।'

और सोवरायन, अंधकार मे निश्चल खड़ा लॉतिये और कैथराइन के बोरो मे प्रवेश करने तक देखता रहा।

३

चार बजे खान में उतरने का काम शुरू हुआ। डेनार्ट, जो स्वयं हाजिरी दफ्तर में था, हर सामने आने वाले मजदूर का नाम लिख रहा था और उसे एक लैंप दे रहा था। उसने बगैर कोई टीका-टिप्पणी किये इश्तहारों में किये गए वायदे के अनुसार सभी को काम पर ले लिया। तब, जब उसने लॉतिये और कैथराइन को खिड़की पर देखा तो क्रोध मे लाल होकर उसने इन्कार करने को मुँह खोला; लेकिन फिर अपनी विजय पर संतुष्ट होकर ताना मारने लगा : 'आह ! आह ! तो बहादुर आदमी भी पछाड़ खा गया ? तब तो कंपनी भाग्यशाली मालूम पड़ती है क्योंकि मोटमू का जबरदस्त पहलवान उससे रोटी माँगने वापस आया है ?' लॉतिये ने चुपचाप अपना लैंप लिया और पुटर के साथ चुपचाप कूपक की ओर चला गया।

परन्तु वहाँ, रिसीवर के कमरे में कैथराइन को साथियों के अपशब्दों का डर था। प्रवेश द्वार पर ही उसने चवाल को पहचान लिया, जो कि लगभग बीस खनिकों के साथ कटघरे के खाली होने का इन्तजार कर रहा था। वह गुस्से के साथ कैथराइन की ओर बढ़ा, लेकिन लॉतिये को देखकर रुक गया। उसने घृणा-

स्पद भाव से अपने कंधे सिकोड़े। अच्छा है ! अगला उस जगह आ गया है; उसे मुक्ति मिली ! यह उसकी बात है कि वह जुठन पसंद करता है। इस उपेक्षा प्रदर्शन की तह में छिपी हुई ईर्ष्या की भावना से वह फिर जल उठा और उसकी आँखों से चिनगारियाँ निकलने लगीं। अन्य साथियों मे से कोई भी उद्विग्न नहीं हुआ था, सभी सिर नीचा किये थे। वे नवागन्तुकों को कनखियों से देखकर ही संतोष माने ले रहे थे; फिर मायूस और क्रोधरहित वे अपने लैंप हाथ में लिए, लगातार शीतल रहने वाले इस बड़े कमरे में ठंढ से काँपते एकटक कूपक के मुंह की ओर देखने लगते थे। आखिर कटघरा अपने चौखट पर आ लगा और उन्हें उस पर बैठने का आदेश मिला। कैथराइन और लॉतिये एक ट्राम में सटकर बैठ गए, उसमें पेरी और अन्य दो मलकट्टे पहले ही से बैठे थे। उनकी बगल मे दूसरी ट्राम में बैठा चवाल फादर माउवयू से जोर-जोर मे कह रहा था कि डाइरेक्टरों ने उन लोगों को बर्गलाने वाले नीच प्रकृति के लोगों को खानों मे न रखने का फायदा न उठाकर गलती की है; लेकिन पुराना सईस, जो कि कुत्ते की तरह अपने अस्तित्व को भूल चुका था, अब अपने बच्चों की मृत्यु से क्रोधित नहीं था और उसने प्रत्युत्तर के रूप में सिर्फ समझौते की एक मुख मुद्रा बनाई।

कटघरा उठा और अंधकार की ओर गिरने लगा। कोई बातचीत नहीं कर रहा था। एकाएक जब वे नीचे उतरने के क्रम में तीसरी मंजिल के मध्य मे थे, एक भयंकर झटका लगा। लोहा चरमराने लगा और लोग उछलकर एक-दूसरे पर आ गिरे।

'वाई गाड !' लॉतिये गुर्राया, 'क्या वे हमें यहीं चौरस बना देना चाहते है ? पीपों की जैसे फूहड़ ढंग से मरम्मत हुई है उससे तो हम यहीं समाप्त हो जायेंगे। और वे कहते है कि उन्होंने मरम्मत की है !'

कटघरा किसी प्रकार इस रुकावट से मुक्त हुआ। अब नीचे उतरते हुए इतने जोरों से पानी गिर रहा था मानो तूफान आया हुआ हो। मजदूर चिन्तित होकर पानी गिरने के शब्द को सुनने लगे। निःसंदेह जोड़ों में दबाव मे बहुत से छेद हो गए होंगे।

पेरी कई दिनों से काम कर रहा था। उससे पूछे जाने पर वह अपना भय जाहिर करना नहीं चाहता था क्योंकि उसे प्रबन्धकों की आलोचना समझा जाता। इसलिए उसने साधारण तौर पर उत्तर दिया !

'ओह, कोई खतरा नहीं ! यह हमेशा से ऐसा ही है। इसमे संदेह नहीं कि उन्हें छेदों को बंद करने का अभी समय नहीं मिला है।

उनके सिर के ऊपर से मूसलाधार वर्षा हो रही थी, और अन्त में वे खान के पेंदे पर वास्तविक जलस्रोत के नीचे पहुँचे। कप्तानों में से एक के दिमाग में भी यह बात नहीं आई थी कि वे सीढ़ियाँ चढ़ कर देख लें कि मामला क्या है? पंप ही काफी होगा, बढ़ई अगली रात को जोड़ों को देख लेंगे। गलियारों में फिर से काम संघटित करना बड़ा पेचीदा प्रश्न था। मलकट्टों को कोयला काटने के लिए भूमिगृहों में जाने देने से पूर्व, इंजीनियरों ने तय किया था कि काम को निर्बाध बनाने के लिए पहले पाँच दिन सब लोग उसी में जुट जाँय क्योंकि यह बहुत जरूरी हो गया था। हर जगह जमीन के धंसने का खतरा हो चला था। मार्ग इस कदर क्षतिग्रस्त हो चले थे कि कई सौ मीटर तक धूम बाँधने और मिस्त्री लगाने की जरूरत थी। इसलिए दस-दस आदमियों की टोलियाँ बनाई गईं और हर एक टोली एक कप्तान के मातहत थी। तब वे सर्वाधिक क्षतिग्रस्त स्थानों की मरम्मत में जुट गए। जब नीचे उतरने का काम पूरा हो गया तो मालूम हुआ कि तीन सौ बाईस खनिक नीचे उतरे है, जिनमें से लगभग आधे वहाँ तब काम करते थे जब कि खान में पूरी रफ्तार से काम चालू था।

चवाल कैथराइन और लॉतिए के ही गैंग में था। यह अकस्मात ही नहीं हुआ था। पहले वह साथियों के पीछे छिपा था, फिर उसने कप्तान को कहा था। यह गैंग लगभग तीन किलोमीटर दूर, उत्तरी गलियारे में जमीन धँसने से उसका मलवा साफ करने निकल गया था, जिसने दिहिटपॉस संधि के गलियारे को बंद कर दिया था। वे फावड़ों और गैंती से गिरी हुई चट्टानों को साफ कर रहे थे। लॉतिये, चवाल और अन्य पाँच मजदूर मलवा हटाते और कैथराइन, ट्रामरों के साथ, मिट्टी को ऊपर तक ठेलों में खींच कर पहुँचाती थी। वे चुपचाप काम कर रहे थे और कप्तान बराबर वहीं जमा रहा। कोयला भरने वाली लड़की के दोनों प्रेमियों में मारपीट की नौबत आई। यह चिल्लाता हुआ भी कि वह इस घुमक्कड़ लड़की को बहुत देख चुका है, अब भी उसको अंगीकार करने की सोचता था और दुष्टता से उसे धकिया रहा था। तब लॉतिये को उसे धमकी देनी पड़ी कि यदि उसने उसे छेड़ा तो उसे ठीक कर दिया जायगा। वे एक दूसरे की ओर आँख निकाले हुए झपटे और उन्हें छुड़ाना पड़ा।

आठ बजे डेनार्ट काम का निरीक्षण करने के लिए वहाँ आया। प्रतीत होता था कि उसका मिजाज गरम है और उसने कप्तान को झिड़की दी: 'कोई काम ढंग से नहीं हुआ। ऐसे काम से क्या फायदा? हर जगह तख्ते दोबारा लगाने पड़ेंगे।' और वह यह ऐलान कर निकल गया कि दोबारा इंजीनियर के साथ आयेगा।

सुबह से वह निग्रील का इन्तजार कर रहा था, परन्तु उसके विलम्ब का कारण नहीं समझ पाया था।

दूसरा घंटा गुजरा। कप्तान ने सभी मजदूरों को छत की मरम्मत में लगाकर मलवा फिकवाने का काम बन्द करवा दिया था। यहाँ तक कि पुटर और दोनों ट्रामर ठेला चलाना बंद कर लकड़ी लाने और उसे तैयार करने के काम में जुट गए थे। गलियारे के इस छोर पर जिसका कि अन्य स्टालों से सम्पर्क टूट चुका था, यह गैंग एक अग्रिम दस्ते के रूप में काम कर रहा था। तीन या चार बार विचित्र आवाजों, दूर से आने वाले धमाकों के शब्दों को मजदूर सिर घुमाकर सुनने लगे। वह क्या है ? एक ने कहा कि मार्ग खाली हो रहे है और मजदूर दौड़ते हुए लौटे जा रहे है। लेकिन ये शब्द गहरी खामोशी मे खो गए और वे हथौड़े की गहरी चोटों से घबड़ाकर पुनः लकड़ी के पच्चड़ ठोंकने लगे। अन्त मे वे फिर मलवे के पास लौट आये और उसे ढोना शुरू कर दिया। कैथराइन पहली खेप के बाद घबराई हुई वापस आई और बोली कि ऊपर कोई भी नही दिखाई दिया।

'मैंने आवाज दी, पर कोई जवाब नहीं मिला। वे सब वहाँ से चले गए है।'

घबड़ाहट इतनी अधिक हो गई कि दसों आदमी अपने औजार फेंककर भागने को उद्यत हुए। यह विचार कि वे परित्यक्त कर दिये गए है, खान के पेंदे मे इतनी दूर; इस तल मे अकेले छोड़ दिए गए हैं, उन्हें उतावला बनाये डाल रहा था। सिर्फ अपने लैंपों की हिफाजत करते हुए एक कतार मे—पुरुष, छोकरे और पुटर—दौड़ रहे थे। कप्तान भी हतबुद्धि होकर अपील कर रहा था और गलियारों की सुनसानी मे अधिकाधिक घबड़ा रहा था। तब क्या हो गया कि एक भी आदमी उन्हे नजर नहीं आता ? कौन सी दुर्घटना से उनके सब साथी भाग गए ? खतरे की अनिश्चितता से उनका डर और भी बढ़ गया था। वे बिना जाने ही कि वह क्या है एक खतरा महसूस कर रहे थे।

अन्त में जब वे खान के पेंदे के पास पहुँचे तो एक बाढ़ ने उनका रास्ता रोक लिया। तत्काल उनके घुटने तक पानी आ गया और वे अब दौड़ भी नहीं सकते थे। वे बड़े परिश्रम से बाढ़ में बढ़ते जा रहे थे क्योंकि एक मिनट की देरी का मतलब मौत हो सकता था।

'भगवान् कसम ! यह पीपों के खुलने के कारण है।' लॉतिये चिल्लाया। 'मैंने कहा न था कि हम यहाँ हमेशा के लिए दफन हो सकते है।'

नीचे उतरने के बाद से पेरी चिन्तातुर होकर कूपक से गिरने वाली बाढ़ को बढ़ते देख रहा था। जब अन्य दो मजदूरों ने ट्रामें भर लीं तो उसने अपना सिर उठाया, उसका मुँह बड़ी-बड़ी बूंदों से भर गया। उसके कान ऊपर चलने वाले

तूफान की सी आवाज से बहरे हो रहे थे। जब उसने देखा कि उसके पाँवों के पास दस मीटर गहरा जलाशय तेजी से भर रहा है तो वह काँप उठा। पानी फर्श पर आकर धातु की प्लेटों पर चढ़ने लगा था। इससे जाहिर था कि पंप की छेदों से चूनेवाले पानी के बाहर निकालने की क्षमता खत्म हो चली है। वह थकावट से हाँफता सुनाई दे रहा था। तब उसने डेनार्ट से आग्रह किया। डेनार्ट ने क्रोधित हो गाली देते हुए इंजीनियर का इन्तजार करने को कहा। दो बार वह जाँच करने के लिये गया लेकिन वगैर कुछ पता पाये लौट आया और खिन्न होकर कंधे सिकोड़ने लगा : 'अच्छा ! पानी तो बढ़ रहा है, मैं क्या कर सकता हूँ ?'

माउक्यू वेटली के साथ आता दीखा। वह उसे काम पर ले जा रहा था और उसे घोड़े को दोनों हाथों से थामना पड़ा क्योंकि यह निद्रित-सा पुराना घोड़ा एकाएक बुरी तरह से हिनहिनाता हुआ आगे बढ़ने से इन्कार कर रहा था और अपना मुँह कूपक की ओर निकाले हुए था।

'अच्छा, दार्शनिक ! तेरी चिन्ता का कारण क्या है ? ओह ! इसलिए कि पानी गिर रहा है। आ, चल, इससे तेरा कोई मतलब नहीं।

लेकिन जानवर काँप उठा और माउक्यू जबरदस्ती उसे कर्पण गलियारे की ओर खीचने लगा।

लगभग उसी क्षण जब कि माउक्यू और वेटली गलियारे के छोर मे अदृश्य हो रहे थे, हवा मे एक कड़क का शब्द हुआ और बाद में देर तक किसी भारी वस्तु के गिरने की आवाज आती रही। यह पीपे का एक टुकड़ा था जो खुल गया था और दीवारों से टकराता हुआ एक सौ अस्सी मीटर नीचे की ओर गिर रहा था। पेरी और अन्य सामान ढोने वाले रास्ते से हट गए और इस ओक के तख्ते से एक खाली ट्राम टूट गई। उसी समय पानी की एक बाढ़, बाँध के टूटने से वेग से बहने वाली जलधारा नीचे गिरने लगी। डेनार्ट ने ऊपर जाकर जाँच का सुझाव रखा और अभी वह बात ही कर रहा था कि दूसरा टुकड़ा भी नीचे आ गिरा। और बड़ी आपत्ति के खतरे से भयभीत उसने, बिना अधिक विलम्ब के ऊपर जाने का आदेश दिया और कप्तानों को स्टालों से मजदूरों को बुला लाने के लिए भेज दिया।

तब भयानक धक्का धुक्की होने लगी। हर गलियारे से कामगारों की कतारें दौड़ती हुई ऊपर आईं और झपट कर कटघरों की ओर बढ़ने लगीं। वे पागलों की तरह एक-दूसरे को कुचलते हुए तत्काल ऊपर जाने की कोशिश करने लगे। कुछ लोग, जिन्होंने सीढ़ियों से ऊपर चढ़ने की सोची थी, यह चिल्लाते हुए नीचे लौट आये कि वह मार्ग पहले ही बन्द हो चुका है। यह आतंक वे हर बार कट-

घरा उठते समय महसूस करते थे कि इस बार तो वह ऊपर गुजरने में समर्थ हो सका है, लेकिन कौन जानता है कि कूपक में आने वाली बाधाओं के बीच वह फिर गुजर पायेगा कि नहीं ? ऊपर से जमीन खिसक कर बराबर नीचे गिर रही होगी क्योंकि लगातार एक धीमे विस्फोट की आवाज सुनाई दे रही थी। तूफान के लगातार बढ़ते हुए शोर के बीच तख्ते बराबर टूट-टूट कर गिर रहे थे, बिखर रहे थे। कटघरे का एक हिस्सा शीघ्र ही बेकाम हो गया, टूट कर वह अब प्रदर्शिकाओं के बीच से नही खिसक रहा था, जो स्वयं भी टूट चुकी थीं। दूसरा-हिस्सा भी इतना घिसट कर सरक रहा था कि शीघ्र ही तार के टूट जाने की पूरी आशंका हो चली थी और अभी सौ मजदूरों को ऊपर जाना था। सभी काँपते हुए, एक-दूसरे का सहारा लिए थे। उनके अवयवों से खून निकल रहा था और वे आधे पानी में डूबे हुए थे। दो मजदूर तख्तों के गिरने से मर चुके थे। एक तीसरा जिसने कटघरा पकड़ लिया था, पचास मीटर ऊपर से गिर कर कुंड में गायब हो गया था।

डेनार्ट मामले को सुव्यवस्थित ढंग से ठीक करने की कोशिश मे था। गेंती हाथ मे लिए वह उनकी आज्ञा न मानने वाले का भेजा खोल देने की धमकी दे रहा था; और उसने उन्हे कतार मे लगाने की कोशिश की। वह चिल्लाता रहा कि सब साथियों को ऊपर भेजने के बाद कुली आखीर मे जायंगे। वह भी सुन रहा था और उसे डरपोक तथा काँपते हुए पेरी को पहले बैठने वालों के रूप मे कटघरे में प्रवेश से रोकना पड़ा। हर बार जब कटघरा उठता तो उसे पेरी को धकिया कर एक ओर करना होता था। लेकिन स्वयं उसके दाँत किटकिटा रहे थे। वह सोच रहा था कि एक मिनट और गुजरने पर वह भी निगल लिया जायगा। वहाँ हर चीज नष्ट हो रही थी। बाढ़ का बाँध टूट चुका था और मचान से ईंट, पत्थरों, तख्तों की संहारकारी वर्षा हो रही थी। कुछ लोग अभी दौड़ते हुए ऊपर पहुँच ही रहे थे कि भय से पागल होकर वह ट्राम में कूद पड़ा और पेरी भी उसके पीछे कूदा। कटघरा उठ गया।

उसी क्षण वह गैंग, जिसमें लॉतिये और चवाल थे, खान के पेंदे पर पहुँचा। उन्होंने कटघरे को गायब होते देखा और वे दौड़ कर आगे आये, लेकिन पीपों के आखिरी बार गिरने से उन्हें हटना पड़ा। शेफ्ट का मार्ग बन्द हो गया था और कटघरा अब नीचे नहीं आ सकता था। कैथराइन सुबकियाँ ले रही थी और गालियाँ बकने से चवाल का गला बैठ गया था। वहाँ बीस मजदूर बच गए थे : तब क्या वे मनहूस अधिकारी उन्हें इस प्रकार मरने को छोड़ देंगे ? फादर माउक्यू, जो बगैर जल्दबाजी किये बेटली को वापस ले आया था अब भी

उसकी रास थामे हुए था और तेजी से इस प्रकार खान में पानी भरते देख वे दोनों, सईस और जानवर, आश्चर्य चकित रह गए थे। पानी उनकी रानों तक चढ़ आया था। लॉतिये चुपचाप, दाँत पीसते हुए, अपनी बाँहों से कैथराइन को सहारा दिये था। वे बीसों चिल्लाते हुए ऊपर सिर उठाये हुए, हठ पूर्वक, मूर्खों की तरह उस कूपक को, उस बन्द छेद की ओर ताक रहे थे, जो बाढ़ उगल रहा था और जहाँ से अब कोई सहायता आने को उम्मीद नहीं थी और न आही सकती थी।

ऊपर, जमीन की सतह पर आने पर, डेनार्ट ने निग्रील को दौड़ कर आते हुए देखा। उस दिन, भाग्यवशात्, मदाम हनेब्यू ने, उसे सुबह उठने के बाद देरी करा दी थी और शादी के उपहार खरीदने के लिए केटलाग के पन्ने उलटती रही थी। इसी मे दस बज गया था।

'अच्छा ! क्या हो रहा है अब ?' वह दूर से ही चिल्लाया।

'खान बरबाद हो गई है।' बड़े कप्तान ने उत्तर दिया और उसने चंद भयभीत वाक्यों में इस विनाश की सारी कहानी सुना डाली। इंजीनियर बेचैनी से कंधे हिलाता हुआ सुनता रहा : 'क्या ! पीपों को भी इस प्रकार विनष्ट किया जा सकता है ? यह बढ़ा चढ़ाकर कहा गया है। मैं स्वयं जाँच करूंगा।'

'मै सोचता हूं कि नीचे कोई व्यक्ति नही छूटा होगा ?'

डेनार्ट घबड़ा गया : 'नहीं, कोई नहीं, कम से कम, मेरा ऐसा विश्वास है। लेकिन हो सकता है कुछ लोगों को विलम्ब हो गया होगा।'

'लेकिन', निग्रील बोला, 'तब तुम क्यों ऊपर चले आये ? तुम अपने मजदूरों को नहीं छोड़ सकते।'

उसने तत्काल लैप गिनने का आदेश दिया। सुबह तीन सौ बाइस बाँटे गए थे, अब सिर्फ २५५ ही पाये गए; लेकिन कई मजदूरों ने स्वीकार किया कि भगदड़ और आंतक में उनके लैंप गिर पड़े थे और उन्होंने उसे उठाया नहीं। आदमियों की हाजिरी लेने का प्रयास किया गया लेकिन ठीक संख्या पता लगाना असंभव था। कुछ खनिक चले गए थे, कुछ ने अपना नाम ही नहीं सुना था। लापता साथियों के बारे में कोई भी एक मत नहीं था। वह बीस भी हो सकते थे, शायद चालीस भी। और इंजीनियर एक बात का निश्चित पता लगा सका कि नीचे आदमी छूट गए है क्योंकि उनके चीखने की आवाजें पानी की बौछार और गिरी हुई मचानों से, कूपक के मुँह पर कान लगाने पर, स्पष्ट सुनाई दे रही थीं।

निग्रील ने पहली सावधानी यह बरती कि एम० हनेब्यू को बुला भेजा और खान को बंद करवा दिया; लेकिन अब बहुत विलम्ब हो चुका था। भाग कर ब्यू-सेंट क्वारेंट पहुँचने वाले खनिकों ने, परिवारों को डरा दिया था। महिलाओं, बुड्ढों और बच्चों के झुंड के झुंड दौड़ते हुए, रोते-सिसकते ऊपर पहुँच रहे थे। उन्हें पीछे धकेलना पडा और उन्हें दूर रखने के लिए ओवरसोयरों की एक कतार बनानी पडी ताकि बचाव कार्य मे खलल न पड़े। बहुत से मजदूर, जो कूपक से ऊपर आये थे, बेवकूफो की तरह वहीं खड़े रह गए थे। उन्हे कपड़े बदलने की भी याद नही रही। इस भयंकर छेद के सामने, जिनमे वे हमेशा के लिए रह गए होते, वे भय से कीलित से खड़े थे। औरतें पागलों की तरह उनको घेरे उनसे नाम पूछ रही थीं। क्या अमुक-अमुक वहाँ था? और वह वहाँ था? वे नहीं जानते। वे रुक-रुक कर बोल रहे थे और बुरी तरह कांप रहे थे; पागलों की तरह वे हाव-भाव करते थे। ऐसा प्रतीत होता था कि वे किसी ऐसी वीभत्स कल्पना से त्रस्त है जो उनके साथ हमेशा से लगी है। भीड़ तेजी से बढ़ चली थी और सड़कों से ही विलाप का शब्द सुनाई दे रहा था। और वहाँ, ऊपर, खान किनारे, बोनेमाँ की केबिन में, जमीन पर एक व्यक्ति बैठा था। वह सोवरायन था। वह गया नहीं था। वहीं बैठा यह सब देख रहा था।

'नाम बताओ? नाम बताओ?' औरतें चिल्लाईं और उनकी आवाज रुदन से रुँध गई थी।

निग्रील एक क्षण को दिखाई दिया और जल्दी मे बोला—'ज्यों ही हमें नाम मालूम पड़ जायेंगे वे बता दिये जायेंगे। लेकिन अब तक कोई नुकसान नहीं हुआ है; हर एक को बचा लिया जायगा। मैं स्वयं नीचे जा रहा हूँ।'

तब, वेदना से खामोश भीड़ प्रतीक्षा करने लगी। इंजीनियर, वास्तव में, बड़े धैर्य और साहस के साथ नीचे उतरने की तैयारी रहा था। उसने कटघरा खोलने और उसके स्थान पर एक टब बाँधने का आदेश दिया; चूंकि उसे लैप बुझने का अंदेशा था इसलिए उसने उसे दूसरे टब के नीचे बाँध दिया।

कई कप्तान काँपते हुए, भय से सफेद, घबड़ाये चेहरों से इस तैयारी में मदद दे रहे थे।

निग्रील एकाएक बोला, 'तुम मेरे साथ आओगे, डेनार्ट!'

जब उसने देखा कि वे सभी पस्तहिम्मत हैं और बड़ा कप्तान सकपका रहा है, भय से उसका चेहरा फक पड़ गया है तब उसने उसे एक ओर को धक्का दिया और नफरत जाहिर की।

'नहीं, तुम मेरे रास्ते में बाधा बनोगे। मैं अकेला ही जाऊँगा।'

वह तार के एक छोर में बंधी संकरी बाल्टी में बैठ गया। उसके एक हाथ में लैंप था और दूसरे में संकेतक रस्सी। उसने चिल्ला कर इंजनमैन को आदेश दिया :

'धीरे से।'

इंजन के पहिये घूमने लगे और निग्रील उस खाई में विलुप्त हो गया, जहाँ नीचे से अब भी उन घिरे हुए असहाय प्राणियों की चिल्लाने की आवाजें आ रही थी।

ऊपरी हिस्से में सब चीज ठीक थी। उसने देखा कि यहाँ की स्थिति बहुत अच्छी थी। कूपक के बीच में संतुलन कायम रहते हुए वह चारों ओर मुड़ता हुआ रोशनी से दीवारों को देख रहा था। जोड़ों के बीच छेद इतने कम थे कि उसका लैंप ठीक-ठीक जलता रहा, लेकिन तीन सौ मीटर पर जब वह नीचे के पीपों तक पहुँचा तो लैंप बुझने को आ गया था, जैसी कि उसे आशंका थी क्योंकि पानी की बौछार से टब भर गया था। इसके बाद वह सिर्फ लटकते हुए लैंप को ही देख पाने में समर्थ रहा जो कि उसके पीछे-पीछे चल रहा था। वह साहसी होने के बावजूद विनाश के इस ताण्डव को देखकर काँप उठा और पीला पड़ गया। सिर्फ चंद लकड़ी के तख्ते बच गए थे, अन्य अपने ढाँचों सहित नीचे गिर चुके थे। उनके पीछे बड़ी-बड़ी पोली जगहें बन गई थीं। पीली मिट्टी, आटे की तरह महीन, बड़े पैमाने पर बह रही थी; जबकि भूमि के अन्दर फैला हुआ विशाल समुद्र, किसी अज्ञात स्थान से, नदी के टूटे बाँध की तरह हरहराता हुआ, वेग से जल फेंक रहा था। इन दरारों के बीच से गुजरता हुआ वह और नीचे गया जो झरनों के जलप्रपात की थपेड़ें खाते-खाते और भी चौड़ी होती जा रही थी। उसके टब के नीचे लगे लैंप की मंदी लाल रोशनी में ऐसा प्रतीत होता था कि वह हिलती-डुलती विशाल छायाकृतियों में किसी विनष्ट शहर की सड़कों और स्वायरों को देख रहा है। इसकी मरम्मत अब मनुष्य की शक्ति से परे थी। उसकी बची-खुची एकमात्र आशा संकट में फंसे मजदूरों को बचाने के प्रयास की थी। ज्यों-ज्यों वह नीचे उतर रहा था उसे चिल्लाहट और साफ सुनाई दे रही थी और वह रुकने को मजबूर हो गया। एक अभेद्य रुकावट कूपक में अड़ी हुई थी—मचानों का मलवा, प्रदर्शिकाओं की टूटी हुई तहतीरें और पंप के टूटे हुए टुकड़ों से उलझे हुए हवा निकालने के बने लकड़ी के झरोखों का एक ढेर वहाँ जमा था। जब वह बड़े दुख के साथ कुछ देर तक उन्हें देख रहा था कि एकाएक नीचे से चीखने की आवाजें बन्द हो गईं। इसमें संदेह नहीं कि पानी के एकाएक बढ जाने से उन अभागों को

वहाँ से गलियारों में भागना पड़ा होगा, यह भी तब जब कि अगर बाढ़ ने उनके मुंह बन्द न कर दिये हों।

निग्रील ने निराश होकर ऊपर खींचे जाने के संकेत के रूप में रस्सी खींची। फिर वह पुनः रुक गया। एकाएक इस दुर्घटना के कारण को वह नहीं समझ पाया था। वह इसकी जाँच करना चाहता था, और उसने उन टुकड़ों का मुआयना किया जो कि अभी अपने स्थान पर थे। कुछ दूरी पर लकड़ी में चीरने के निशान देखकर उसे आश्चर्य हुआ। उसका लैंप, नमी में डूबा हुआ, बुझा चाहता था। उसने अपनी अंगुलियों से छूकर स्पष्ट रूप से आरी और छेद करने के बरमे के निशानों को पहचाना और विनाश के उस महा घृणित कार्य को देखा। जाहिर था कि यह आपत्ति जान-बूझकर लाई गई थी। वह हक्का-बक्का रह गया और लकड़ी के टुकड़े कड़कड़ाते हुए मय ढाँचों के पूर्णाहुति के रूप में नीचे खिसक कर ढह गए जबकि वह उनके ही साथ नीचे गिरने से बाल-बाल बचा। उसकी हिम्मत-पस्त हो गई। जिस व्यक्ति ने यह भयानक कार्य किया था उसके विचार मात्र से उसके रोंगटे खड़े हो गए। वह इस अंधकार में वह इससे इतना भयभीत हो उठा कि उसका खून जम सा गया और वह ऐसा महसूस करने लगा मानो वह व्यक्ति अब भी अंधकार में खड़ा इस अगम्य अपराध का खेल-खेल रहा हो। वह चिल्लाया और गुस्से से जोर-जोर से रस्सी हिलाने लगा, और निःसंदेह, यह उपयुक्त समय था क्योंकि उसने देखा कि एक सौ मीटर ऊपर ऊपरी पीपे भी हिलने लगे है। उनके जोड़ भी खुल रहे थे, रस्सों का बंधन ढीला पड़ रहा था और उनसे भी जलधार छूटने लगी थी। अब कुछ ही घंटों की बात थी कि ऊपरी नालियाँ भी टूट कर नीचे गिर पड़ेंगी।

ऊपर जमीन की सतह पर एम० हनेब्यू व्यग्रता से निग्रील का इन्तजार कर रहा था।

'अच्छा, क्या है ?' उसने पूछा।

लेकिन निग्रील का गला अवरुद्ध हो गया था, वह बोल नहीं पा रहा था; ऐसा महसूस होता था कि वह बेहोश हो जायगा।

'यह अब संभव नहीं है, ऐसी वस्तु तो कभी देखने में नहीं आई। क्या तुमने जाँच कर ली है ?'

उसने चौकन्ना होकर सिर हिलाया और कप्तानों के सामने, जो कि उनकी बातें सुन रहे थे, कुछ कहने से इन्कार करता हुआ अपने चाचा को दस मीटर दूर ले गया। इस दूरी को भी नाकाफ़ी समझते हुये उसने उससे और आगे चलने का आग्रह किया; तब, बहुत धीरे से उसने खान को विनष्ट किये जाने, तख्तों को चीर

कर तोड़े जाने और उन्मत्त प्रमाद में किये गए जघन्य अपराध के लिए चुप रहने की आवश्यकता की बात बतलाई। उसने कहा खान की गर्दन मे प्रहार किया गया है और वह दम तोड़ रही है। दस हजार मोंटमू के मजदूरों के सामने इस प्रकार आतंकित होना ठीक नहीं है; वे बाद में देख लेंगे। वे दोनो ही हौले-हौले बातें करते रहे, इस विचार से उन्हें रोमांच हो रहा था कि एक व्यक्ति इतनी हिम्मत कर सकता है कि नीचे जाय, अधर में लटके और इस भयंकर काम को करने में बीस बार अपनी जान जोखों में डाले। वे विनाश के इस साहसिक पागलपन को नहीं समझ पा रहे थे। प्रमाण के बावजूद उन्हें विश्वास नही हो रहा था, ठीक उसी प्रकार जैसे कि हम उन बातों पर संदेह करते है कि मृत्युदण्ड पाया हुआ कैदी जमीन से तीस मीटर ऊँची खिड़की से निकल भागा।

जब एम० हनेब्यू कप्तानों के पास वापस लौटा उसका चेहरा चिन्ता से विवर्ण हो गया था। उसने निराशा का भाव प्रकट किया और खान खाली किये जाने का आदेश दिया। यह एक प्रकार मातम का जुलूस था। चुपचाप वे ईंटों की इन विशालकाय इमारतों पर एक नजर डालते हुए पीछे हट रहे थे, जो जन हीन थीं और अब भी खड़ी थीं, लेकिन अब उनमें से कुछ बचाया जा सकना असंभव था।

मैनेजर तथा इंजीनियर अन्त में रिसीवर के कमरे से नीचे उतर आये। चिल्लाती हुई भीड़ उन्हे मिली जो हठपूर्वक पूछ रही थी :

'नाम बताओ ? नाम बताओ ? हमे नाम बताओ।'

माहेदो भी अब वहाँ औरतो के बीच खड़ी थी। उसे रात मे खटपट होने का स्मरण हो आया। उसकी लड़की और लॉतिये, निःसंदेह, साथ साथ यहाँ आये होंगे और वे जरूर खान मे नीचे होंगे। और यह चिल्लाने के बाद कि 'अच्छा हुआ, उनको यह सजा मिलनी ही चाहिए थी, हृदयहीन, कायर;' वह ऊपर दौड़ आई थी और व्यथा से काँपती हुई पहली कतार मे खड़ी हो गई थी। अलावा इसके, उसे अब संदेह नहीं रह गया था कि उसके चारों ओर होने वाली चर्चा से उसे नीचे रह गए लोगों के नामों की सूचना मिली। हाँ, हाँ, कैथराइन भी उनमें थी, लॉतिये भी—एक साथी ने उन्हे देखा था। लेकिन औरों के बारे में मतैक्य नहीं था। नहीं, वह नहीं था, वह था, शायद चवाल भी हो, जिसके बारे मे एक ट्रामर ने बताया कि वह ऊपर आ चुका था। लेवेक्यू की पत्नी और पेरीन, जब कि उनके आदमियों में से किसी को भी खतरा न था, चिल्ला रही थीं और अन्य औरतों की तरह उतने ही जोर से विलाप कर रही थीं। जाचरे भी, जो कि हर चीज का मजाक उड़ाने का आदी था, रोता हुआ अपनी पत्नी और माँ को चूम रहा था और अपनी माँ के पास खड़ा होकर काँपता हुआ अपनी बहिन के प्रति अभूतपूर्व प्रेम

प्रदर्शित कर रहा था। वह इस बात पर विश्वास करने से इन्कार कर रहा था कि वह नीचे है जब तक कि अधिकारी साधिकार एलान नहीं करते।

'नाम बताओ ? नाम बताओ ? दया करके नाम बताओ ?' निग्रील क्लान्त होकर ओवरसीयरों पर चिल्लाया :

'क्या तुम इन्हें भी चुप नहीं कर सकते ? यह कष्ट किसी को मार डालने के लिए काफी है ! हम नाम नहीं जानते !'

इसी प्रकार दो घंटे बीत गये। पहले हड़बड़ी में किसी को भी पुरानी रिक्वीलॉ खान के दूसरे कूपक की याद नहीं आई। एम० हनेब्यू एलान करने ही जा रहा था कि उस ओर से बचाव की कोशिश की जायगी, जबकि एक खबर वहाँ फैली। पाँच व्यक्ति अभी-अभी पुराने काम में न लाये जाने वाले मार्ग की सड़ी हुई सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर से निकल आये है, और फादर माउक्यू का नाम भी वहाँ लिया गया। इससे आश्चर्य हुआ क्योंकि कोई नहीं जानता था कि वह नीचे है। लेकिन पाँच बच कर आये लोगों ने जो वर्णन किया उससे रोना-धोना और भी बढ़ गया; पन्द्रह साथी उनका अनुशरण नहीं कर पाये थे। वे भटक गए थे और बीच में जमीन धँसने से उनका मार्ग रुक गया था। उन्हें सहायता करना भी अब संभव नहीं था क्योंकि रिक्वीलॉ में दस मीटर पानी भर आया था। सभी नामों का पता चल गया और हवा में एक करुण क्रन्दन व्याप्त हो गया।

'क्या तुम इन्हें चुप कराओगे ?' निग्रील गुस्से मे बोला 'उन्हे पीछे हटाओ ! हाँ, हाँ एक सौ मीटर तक ! यहाँ खतरा है; उन्हे पीछे धकेलो, पीछे धकेलो !'

इन गरीब लोगों को धकेलना जरूरी था। वे हर प्रकार के दुर्भाग्य की कल्पना कर रहे थे—उन्हे इसलिए भगाया जा रहा है कि मौतें छिपा ली जायँ, कप्तानों ने उन्हें बताया कि कूपक समूची खान को विनष्ट कर देगा। इस विचार से वे आतंक से गूंगे हो गए और अन्त मे उन्होंने उन्हें पीछे हटाया जाना मंजूर कर लिया। उन्हे पीछे रखने के लिए जो घेरा बनाया गया था उसे दुहरा बनाना पड़ा क्योंकि वे मंत्रमुग्ध से होकर बार-बार उस स्थल पर लौटे चले आ रहे थे। हजारों व्यक्ति सड़क पर धक्का धुक्की सी कर रहे थे; वे सभी बस्तियों से और मोंटसू से दौड़े चले आ रहे थे। और ऊपर खान के किनारे बैठा हुआ लड़कियों के से चेहरे वाला व्यक्ति, अपने को व्यस्त रखने के लिए सिगरेट फूंकता हुआ, अपनी निर्मल आँखें एकटक खान की ओर लगाये था।

फिर प्रतीक्षा शुरू हुई। दोपहर ढल चुकी थी, किसी ने मुँह मे दाना तक नहीं डाला था, लेकिन कोई वहाँ से जाना भी नहीं चाहता था। धुंधले आसमान

में मटमैले, भूरे बादल धीरे-धीरे एक ओर से दूसरी ओर गुजर रहे थे। रसेन्योर की झाड़ियों के पीछे एक बड़ा कुत्ता अकारण, इस भीड़ को देख कर जोरों से भूंक रहा था। भीड़ धीरे-धीरे पड़ोसी क्षेत्र में बिखर गई थी और खान से सौ मीटर दूरी पर उसके चारों ओर एक घेरा बनाये हुए थी। निर्जनता के बीच मे बोरो की बड़ी-बड़ी इमारतें उठी हुई थीं। वहाँ कोई भी प्राणी नहीं था, कोई आवाज नहीं थी; सब वीरान पड़ा था। खुले छोड़ दिये गए दरवाजों, खिड़कियों से अन्दर की सूनसानी दीखती थी। एक भूरी बिल्ली, इस वीरानी के खतरे से अशंक सी सीढ़ियों से कूदी और गायब हो गई। इसमें संदेह नहीं कि वायलर और स्टोव अभी बुझे नहीं थे क्योंकि लम्बी ईंटों की चिमनी से गहरे बादलों के नीचे हल्का धुंवा निकल रहा था। बुरजी पर वायु की दिशा बतलाने वाली पंखी इन विनाशोन्मुख भीमकाय इमारतों के बीच हवा मे उदासी भरी चीख निकालने वाली एकमात्र वस्तु थी।

दो बजे तक सब चीजें यथावत रहीं। एम० हनेब्यू, निग्रील और अन्य इंजीनियरों ने जल्दी ही ऊपर पहुँच कर भीड़ के सामने, जो काले कोटों को पहने और हैट लगाये हुए थे, एक घेरा बना लिया था। वे भी उस स्थान से नहीं हटे थे। गोकि उनकी टाँगों में थकान से दर्द हो रहा था और वे इस विपत्ति मे घबराये हुए, परेशान से अपनी अपनी असमर्थता महसूस कर रहे थे, फिर भी वे कभी-कभी धीरे से दो शब्द बोल लेते थे मानो वे किसी मरने वाले की मृत्यु शैय्या के पास खड़े हों। ऊपरी पीपे भी अब अवश्य ही गिर गए होंगे, क्योंकि किसी वस्तु के टूट कर गहराई मे नीचे गिरने की प्रतिध्वनि सुनाई देने लगी थी। घाव लगातार बढ़ रहा था। नीचे जो जमीन धंस रही थी अब ऊपरी सतह पर भी उसका प्रभाव पड़ने लगा था। निग्रील अधीर हो उठा था; वह देखना चाहता था कि हो क्या रहा है? और वह इस डरावने त्यक्त स्थान की ओर बढना ही चाहता था कि उसे पीछे से कंधे से पकड़ लिया गया। इससे क्या फायदा? वह किसी चीज को रोक तो सकता नहीं। एक पुराना खनिक किसी तरह इंजीनियरों के घेरे से निकल कर ओसोरे की ओर दौड़ा; लेकिन वह वहीं लापता हो गया। वह वहाँ अपने बूट लेने गया था।

तीन बजा। अभी तक कुछ नहीं हुआ। पानी की एक बौछार ने भीड़ को भिगा दिया था लेकिन वे एक कदम भी पीछे नहीं हटे। रसेन्योर का कुत्ता फिर भूंकने लगा था। तीन बजकर बीस मिनट पर पहला धक्का महसूस हुआ। बोरक्स काँप उठा, लेकिन ठोस और सीधा खड़ा रहा। तब तत्काल बाद मे एक दूसरा धक्का आया और खुले मुंहों से एक लम्बी चीख निकली; एक विरोजा पुता हुआ

स्क्रीन-शेड, लड़खड़ाने के बाद भयंकर आवाज करता हुआ जमीन के गर्त में समा गया। इस भारी दबाव के नीचे इमारत के ढाँचे इस जोर से टूटे और आपस में रगड़ खाये कि उससे चिनगारियाँ बाहर निकल पड़ीं। इस के बाद जमीन हिलती रही। एक के बाद एक भूकम्प के से धक्के आने लगे और ज्वालामुखी के फूटने की घड़घड़ाहट की सी आवाज करता हुआ भूमि के अन्दर का हिस्सा गिरता चला गया। कुत्ते का भूंकना बंद हो गया था; वह चौकन्ना सा हो कर उस ओर इस प्रकार देख रहा था मानो आने वाले भूचाल की सूचना दे रहा हो। वहाँ खड़े स्त्री-पुरुष और बच्चे प्रत्येक धक्के पर, जो उन्हें हिला डालता था, आर्तनाद कर उठते थे। दस मिनट के भीतर ही बुरजी की सिलेटी छत ढह गई। रिसीवर का कमरा और इंजन का कमरा, दोनों की छतें फट कर खुल गई थीं और उनमें दरारें आ गई थीं। तब आवाजें बंद हो गईं और वहाँ फिर गहरी खामोशी छा गई।

एक घंटे तक बोरो इसी प्रकार टूटा-फूटा बना रहा मानो उस पर किसी बर्बर सेना ने बमबारी की हो। अब भीड़ ने चिल्लाना बंदकर दिया था। दर्शकों का बढ़ा हुआ घेरा अब महज उसी ओर नजर लगाये था। ओसारे की बल्लियों के ढेर के नीचे मारवाहक भूले के टूटे हुए यांत्रिक-पात्र दिखाई दे रहे थे। रिसीवर के कमरे में ईंटों की वर्षा से कूड़े का बड़ा ढेर इकट्ठा हो गया था और दीवार का एक बड़ा हिस्सा तथा प्लास्टर टूट कर नीचे गिर पड़ा था। घिरनियों का भार उठाने वाली लोहे की मचान मुड़ कर खान में आधी घुस गई थी; एक कटघरा अब भी झूल रहा था, एक टूटा हुआ तार का टुकड़ा लटका था और ट्रामों, लोहे की प्लेटों और सीढ़ियों के टुकड़े-टुकड़े वहाँ बिखरे थे। न जाने कैसे लैंप-केबिन अभी यथावत् थी और उसमें छोटे-छोटे लैंपों की चमकीली कतारें चमक रही थीं। अपने ध्वस्तप्रायः कक्ष के एक कोने में एक चौकोर, मजबूत चबूतरे पर इंजन बैठा नजर आ रहा था, उसका ताँबे का शरीर चमक रहा था और उसके बड़े इस्पाती अवयव अटूट मांसल से बने प्रतीत होते थे। विशालकाय धुरे का भाग (झुक) हवा में झुका हुआ किसी शक्तिशाली दानव का घुटना-सा लगता था जो कि विश्राम ले रहा हो।

खान के अधिक विनष्ट होने में एक घंटे से अधिक विलम्ब हो जाने पर एम० हनेब्यू को पुनः आशा बँधने लगी थी कि जमीन का खिसकना अब बंद हो गया और इंजन तथा अन्य इमारतों को बचा लेने का अधिक मौका मिल सकता है। लेकिन अभी वह किसी को भी वहाँ जाने की इजाजत नहीं दे सकता था और आधा घंटा और ठहर जाना अनिवार्य समझता था। यह इंतजार असह्य हो रही थी;

आशा से अधैर्य और भी बढ़ गया था। और सभी का का दिल बड़ी तेजी मे धड़क रहा था। क्षितिज पर काला बादल बढ़ता जा रहा था जिससे जल्दी ही संध्या घिर आई थी। इधर बाढ़ थी और आज का दिन भी बड़ा मनहूस था। सुबह सात बजे से वे बगैर खाये-पिये वहाँ जमे हुए थे।

और एकाएक, जब कि इंजीनियर बड़ी सतर्कता से आगे बढ़ रहा था, तेजी मे जमीन हिलने से वे भाग खड़े हुए। भूगर्भ में जोरदार धड़ाका हुआ। इमारतों सहित समूचा विशाल ढाँचा ही एक-एक कर भूमि के उदर में समाने लगा। सतह पर ध्वस्त हालत में कुछ इमारतें रह गई थीं। पहले एक बवण्डर सा ओसारे और रिसीवर के कमरे का तमाम कूड़ा साफ कर ले गया, बाद मे बायलर वाली इमारतें फटीं और गायब हो गईं। तब उस नीची, चौकोर बुरजी की पारी आई जहाँ पंपिंग इंजन बैठाया गया था। वह मुँह के बल ऐसा गिरा मानो किसी व्यक्ति को गोली मार दी गई हो। तब बड़ा भयानक दृश्य दिखाई दिया; इंजन अपनी मजबूत बुनियाद पर से हट गया और टूटे हुए अवयवों से वह मृत्यु के खिलाफ जूझ रहा था। वह खिसका, उसने अपने धुरे को, विशालकाय टखने को सीधा किया, मानो वह आखिरी साँसें ले रहा हो। अब तीस मीटर ऊँची एकमात्र चिमनी वहाँ अब भी इस प्रकार खड़ी थी मानो किसी तूफान में मस्तूल हो। यह अनुमान लगाया गया कि वह भी टुकड़े-टुकड़े हो कर बिखर जायगी, लेकिन एकाएक वह अपनी बुनियाद सहित नीचे बैठ गई। जमीन उसको निगल गई और वह मोमबत्ती की भाँति पिघल गई। अब कोई चीज बाकी नहीं बची थी। प्रकाश बिन्दु भी नहीं। खान विनष्ट हो चली थी। दुबक कर इस विशाल बाँबी में बैठा हुआ यह भयंकर जानवर नरमांस से पेट भर कर अपनी लम्बी भौड़ी साँस भी नहीं ले रहा था। समूचा बोरो इस अथाह अंधकूप द्वारा निगल लिया गया था।

भीड़ चीखती हुई प्राण लेकर भागी। औरतों ने भागते हुए अपनी आँखों पर हाथ रख लिया। भय उन्हें सूखे पत्तों की तरह बटोर भागा था। वे चिल्लाना नहीं चाहते थे लेकिन फिर भी चिल्ला रहे थे। उस अथाह छेद के सामने वे हाँफते हुए, हवा में बाँह उठाये चीख रहे थे। ज्वालामुखी के उद्‌गार की तरह पन्द्रह मीटर गहरा यह घेरा सड़क से नहर तक कम से कम चालीस मीटर जमीन घेरे हुए था। खान का समूचा घेरा, विशाल प्लेटफार्म, पैदल चलने की पुलियाँ, उनकी पटरियाँ, ट्रामों की एक पूरी ट्रेन, तीन वैगन और अनगिनत बल्लियाँ, जंगल से काटी गई लकड़ियाँ इमारतों के बाद तिनके की तरह निगल ली गई थीं। नीचे सिर्फ लट्ठों का अस्तव्यस्त ढेर, ईंटें, लोहे के टुकड़े, प्लास्टर, एक साथ मिट्टी में सना, खिचड़ी बना दिखाई देता था। छेद बढ़ता ही जा रहा था। उसके किनारों में भी दरारें आने

लगी थीं और वह दूर खेतों तक चली गई थीं। एक पतली दरार ऊपर चढ़ती हुई रसेन्योर की मद्यशाला तक चली गई थी और उसके आगे की दीवार में दरार आ गई थी। क्या बस्ती भी इसी भी समा जायगी? उन्हे इस प्रलयकारी दिन शरण के लिए और कितनी दूर दौड़ना पड़ेगा जब कि बादलों से भरा यह आसमान भी पृथ्वी पर टूट पड़ना चाहता है?

निग्रील ने वेदना की एक कराह भरी और एम० हनेब्यू की आँखों में आँसू भर आये। अभी विनाश की लीला पूरी नही हुई थी। नहर का एक किनारा टूट पड़ा और नहर का पानी हरहराता हुआ उस टूटे हुए भाग मे उसमें समाने लगा। ऊँचाई से गिरने वाले झरने की भाँति पानी वहां गिरकर अलोप हो जाता था। खान इस नदी को पी गई थी और गलियारे अब वर्षो तक पानी मे डूबे ही रहेगे। शीघ्र ही वह उद्गार भर गया और एक गंदले पानी की झील वहाँ लहराने लगी जहाँ अभी-अभी बोरो खड़ा था। वहाँ बड़ी भयावह चुप्पी छा गई थी और धरती की आँतों मे पानी घुसने से पैदा होने वाली गड़गड़ाहट के सिवाय वहाँ और कुछ नही सुनाई दे रहा था।

तभी कम्पायमान खान के किनारे से सोवरायन उठा। उसने माहेदी और जाचरे को इस ध्वस्तलीला के सामने सिसकते हुए पहचान लिया था। उसने अपनी आखिरी सिगरेट नीचे फेक दी और वह बगैर एक बार मुड़ कर पीछे देखे अंधेरी रात मे निकल गया। दूर उसकी छाया अंधकार मे मिल कर विलीन हो गई। वह वहाँ जा रहा था जो अज्ञात था, वह बड़ी शान्ति के साथ सर्वनाश की ओर जा रहा था, जहाँ कहीं भी शहरों और मनुष्यों को उड़ाने के लिए डाइनामाइट होंगे, वह वहाँ होगा। निःसंदेह वह वहाँ होगा जब कि मध्य वर्ग यातना के साथ अपने पावों के नीचे सड़कों के फुटपाथों मे विस्फोट को सुनेगा।

४

बोरो खान के ध्वस्त होने की रात से दूसरी रात को एम० हनेब्यू इस उद्देश्य से रवाना हो गया कि समाचार पत्रों मे इस खबर के छपने से पूर्व वह डाइरेक्टरों को सूचना दे दे। और जब वह लौटा तो बहुत शांत मालूम पड़ता था और उसमे प्रशासक का रोब लौट आया था। उसने स्पष्टतया अपने को उत्तरदायित्व से मुक्त कर लिया था। ऐसा प्रतीत नहीं होता था कि वह डाइरेक्टरों की निगाह में गिर गया है। इसके विपरीत उसे 'लीग आफ आनर' का अफसर बनाये जाने की घोषणा पर चौबीस घंटे बाद हस्ताक्षर हुए।

यद्यपि मैनेजर को कोई आँच न आई थी लेकिन कंपनी एक जबरदस्त थप्पड़ से लड़खड़ा रही थी। यह चंद करोड़ फ्रैंक के डूब जाने का ही सवाल नहीं था अपितु खान की निर्मम हत्या से उन्हें भविष्य का भी हमेशा के लिए खतरा पैदा हो गया था। कंपनी इतनी ज्यादा प्रभावित हुई थी कि उसने पुनः चुप रहना ही बेहतर समझा। इस अति घृणित कार्य की चर्चा छेड़ने से ही क्या लाभ? अगर खल नायक का पता भी लग गया तो उसे शहीद बना कर दूसरे के दिमाग में भी इस प्रकार की भयानक वीरता भरने, और आग लगाने वालों तथा हत्यारों की एक लम्बी कतार क्यों बनाने की ग़लती की जाय?। अलावा इसके, असली अपराधी पर किसी को भी संदेह नहीं हुआ। कंपनी सोचने लगी कि अपराधियों की एक पूरी फौज है। वह विश्वास नहीं कर पा रही थी कि अकेले आदमी की भी इतनी हिम्मत और शक्ति हो सकती है कि वह ऐसा काम करे। यही विचार उसके दिमाग का बोझ बना हुआ था कि उसकी खानों के अस्तित्व का खतरा बढ़ता जा रहा है। मैनेजर को आदेश मिला था कि वह जासूसों का जाल बिछा दे और फिर चुप-चाप, एक-एक करके उन लोगों को छाँट दे जिनका जुर्म में हाथ होने का संदेह हो। वे शुद्धीकरण के इस तरीके से संतुष्ट थे—यह बुद्धिमानी का राजनीतिक तरीका था।

वहाँ एकमात्र व्यक्ति तत्काल बरखास्त हुआ। वह था बड़ा कप्तान डेनार्ट। पेरीन के घर की उस खुराफात के बाद वह मैनेजर को असह्य हो उठा था। उसके खतरे के समय के दृष्टिकोण का तो एक बहाना बनाया गया था कि उसने एक कायर की तरह अपने साथियों को नीचे ही परित्यक्त कर दिया। यह खनिकों पर एक बुद्धिमानी का जाल भी फेंका गया था क्योंकि वे उससे नफरत करते थे।

सर्व साधारण मे बहुत सी अफवाहे फैली हुई थीं और डाइरेक्टरों को एक समाचार पत्र मे प्रकाशित एक समाचार के खंडन में एक पत्र भी भेजना पड़ा जिसमे कहा गया था कि बारूद के एक पीपे में हड़तालियों ने आग लगा दी थी। ऊपर ही ऊपर जाँच के बाद सरकारी इन्सपेक्टर ने रिपोर्ट दी कि समय-समय पर मिट्टी इकट्ठा होते रहने से उसके दबाव के कारण पीपे स्वतः फट पड़े थे; और कंपनी ने भी चुप रहना पसंद कर निरीक्षण की कमी का दोष अपने सिर ओढ़ लिया। पेरिस के समाचार पत्रों में, तीसरे दिन बाद, इस दुर्घटना ने खबरों के भंडार को बढ़ाने का काम किया; सर्वत्र खान के तल में डूबे व्यक्तियों के अलावा और कोई चर्चा ही नहीं थी और प्रकाशित तार हर सुबह बड़ी उत्सुकता से पढ़े जाते थे। मोंटसू में, लोग बोरो के नाम से पीले पड़ जाते थे और एक किंवदन्ती प्रचलित हो गई थी जिसे सुनकर बहादुर से बहादुर आदमी भी काँप

उठता था। समूचे प्रान्त में मृतकों के प्रति बड़ी सहानुभूति प्रदर्शित की गई। विनष्ट खान निरीक्षण के लिए लोग आए और उन खण्डहरों को देखकर, जो उन दबे हुए अभागों के सिर ऊपर थे, देखने वाले परिवारों के लोग काँप उठते थे।

डेन्यूलिन, जिसे डिवीजनल इंजीनियर बना दिया गया था, इस महान विपत्ति के दौरान में अपनी ड्यूटी पर वहाँ पर आया। उसने पहला काम यह किया कि नहर को फिर उसके पुराने मार्ग पर डाल दिया क्योंकि उससे क्षति प्रतिक्षण बढ़ती ही जा रही थी। बड़े पैमाने पर काम जरूरी हो गया था और तत्काल सौ मजदूर एक बाँध बनाने पर लगाये गए। दो बार पानी की तेज धारा मे बाँध टूटा। तब पंप लगाये गए और पानी तथा मनुष्य के बीच एक जबरदस्त संघर्ष छिड़ गया। शनैः शनैः गायब हुई जमीन पुनः प्राप्त की जा रही थी।

लेकिन घिरे हुए खनिकों के बचाव का कार्य और भी दुःसाध्य था। इसके लिए भरसक प्रयास करने का काम निग्रील को सौंपा गया और उसको मदद करने वाले व्यक्तियों की तो कमी थी नहीं। भाई-चारे की भावना मे सभी खनिक मदद के लिए दौड़ पड़े। वे हड़ताल को भूल गए थे। उन्हें इस बात की चिन्ता नहीं थी कि इस काम की उन्हें मजदूरी नहीं मिलेगी। उन्हें कुछ भी न मिले, वे वहाँ अपने साथियों को मौत के मुंह से बचाने के लिए अपनी जान जोखिम में डालने को तैयार थे। वे सब वहाँ अपने औजारों से लैस होकर पहुँच गए थे और बेचैनी से इन्तजार कर रहे थे कि उन्हें कहाँ चोट करनी है। बहुत से इस दुर्घटना से और भूकम्पन से इतना अधिक डर गए थे कि वे बीमार पड़ गये थे। रात्रि को उन्हें बुरे स्वप्न दिखाई देते थे। वे पसीने से नहा उठते थे। यह सब कुछ होते हुए भी वे उठ आते थे और वे अन्य लोगों की ही भाँति धरती से संघर्ष लेने को व्यग्र थे मानो वे उससे बदला लेना चाहते हों। दुर्भाग्य से, समस्या तब खड़ी हुई जब प्रश्न आया कि क्या किया जाय? वे नीचे कैसे जा सकेंगे? वे किस ओर चट्टानों पर हमला करें?

निग्रील की राय यह थी कि उन अभागे मनुष्यों में कोई भी जिन्दा न बचा होगा। पन्द्रह तो निश्चित ही खत्म हो गए होंगे, डूब गए होंगे या उनका दम घुट गया होगा। पहली समस्या, जो उसे सुलझानी थी, यह थी कि क्या वे भाग कर कहीं शरण भी ले सकते हैं, इसका वह निर्णय करे। कप्तानों और पुराने खनिकों ने, जिनसे उसने सलाह-मशविरा किया, एक बात पर एकमत जाहिर किया: पानी बढ़ते देख, निश्चित ही, वे लोग एक गलियारे से दूसरे गलियारे को पार करते हुए सबसे ऊँचे में बनी कटान तक पहुँचे होंगे। इसलिए, इसमें जरा भी

संदेह नहीं कि वे ऊपरी मार्गों के छोर तक चले आये होंगे। फादर माउवयू की सूचना से इस बात की पुष्टि हुई। उसके व्याकुलता भरे भ्रम में डाल देने वाले बयान से इस बात को मान लेने का कारण भी मिला कि प्राण बचाने की इस दौड़ में वह झुंड छोटे-छोटे टुकड़ों में बँट गया होगा और थके हुए लोगों को हर तल पर पीछे छोड़ता जाता होगा। परन्तु बचाव के संभावित प्रयासों के बारे में चर्चा चली तो कप्तान सहमत नहीं हो पाये। चूंकि मार्ग, नजदीक से नजदीक जमीन की सतह से एक सौ पचास मीटर नीचे थे, इसलिए कूपक खोदने का कोई प्रश्न नहीं उठता था। पहुँच का एकमात्र जारिया रक्वीलाँ रह गया था। यही वह स्थल था जिससे वे उन तक पहुँच सकते थे। सब से बड़ी खराबी तो यह हुई थी कि यह पुरानी खान भी अब बाढ़ में डूबी हुई थी और उसका बोरो से कोई सम्पर्क ही नही रह गया था। जहाँ तक पानी के स्तर का सवाल था, सिर्फ पहले तल के कुछ गलियारों के कोने उससे अछूते बचे थे। पंप से निकालने की प्रणाली से तो वर्षों लग जायेंगे। सबसे बेहतर योजना यही सोची गई कि इन गलियारों में जाकर निश्चित कर लिया जाय कि कोई उन पानी में डूबे मार्गो से उस छोर तक पहुँचा है जहाँ कि विपत्ति मे पड़े हुए खनिकों के होने का संदेह किया जा सकता है। इस प्रश्न पर तर्क के आधार पर किसी निर्णय पर पहुँचने से पहले अव्यवहार्य संभावनाओं को दूर करने के लिए बहुत अधिक विचार-विनिमय की जरूरत थी।

निग्रील अब पुराने कागजात की धूल झाड़ने लगा। उसे दो खानों की पुरानी योजनायें मिल गईं। उसने उनका अध्ययन कर उस बिन्दु को निश्चित किया जहाँ से उनका जाँच का काम शुरू होना था। धीरे-धीरे इस खोज में उसकी दिलचस्पी बढ़ने लगी। बावजूद इस बात के कि वह मनुष्यों और वस्तुओं के प्रति व्यंगात्मक उदासीनता रखता था, इस बार उसमें प्रेम भाव उमड़ आया था। पहली दिक्कत रिक्वीलाँ में नीचे जाने की थी; यह आवश्यक था कि पेड़ काट दिया जाय और झाड़ियाँ साफ कर दी जाँय ताकि कूपक के मुंह के पास का कूड़ा साफ हो जाय। उन्हें सीढ़ियों की भी मरम्मत करनी थी। तब, उनके लिए कुछ सहूलियत हुई। इंजीनियर दस खनिकों के साथ नीचे उतरा और जहाँ,-जहाँ वह बताता गया, उनसे अपने औजारों के लोहे से संधि स्थलों मे चोट करने को कहा। गहरी शांति में उनमें से प्रत्येक कोयले के पास अपने कान लगा कर उत्तर में कहीं दूर से प्रहार की आवाज सुनने की कोशिश करता था। लेकिन हर संभाव्य गलियारे में उनका प्रयास व्यर्थ गया; कोई प्रत्युत्तर उन्हें नहीं मिला। उनकी व्याकुलता बढ़ गई। किस स्थान पर वे कोयले की परत काटें ? किस की ओर वे जाँय जब कि वहाँ

कोई है ऐसा मालूम नहीं पड़ता ? फिर भी उनकी खोज जारी थी। बढ़ती हुई चिन्ता से वे थकान की परवाह न कर निरंतर प्रयास में जुटे थे।

पहले दिन, माहेदी सुबह रिक्वीलाँ आई। वह कूपक के सामने एक बल्ली पर बैठ गई और संध्या तक वहाँ से नहीं उठी। जब एक आदमी ऊपर आया वह उठी और आँखों की भाषा में उससे प्रश्न पूछा। 'नहीं ! कुछ नहीं ?' और वह फिर बैठ गई और बगैर एक शब्द बोले गंभीर चेहरा बनाये इन्तजार करती रही। जॉली भी, अपनी गुफा में हमला होते देख, एक डरे हुए जानवर की भाँति इर्द-गिर्द चक्कर लगा रहा था। उसे डर था कि पता चल जाने पर उसकी लूट का माल हड़प हो जायगा। वह चट्टानों से दबे सैनिक की बात सोच रहा था, उसे डर था कि वे उसकी चिरनिद्रा में खलल डालेंगे; लेकिन खान का वह हिस्सा पानी में डूबा हुआ था और अलावा इसके, उनकी खोज की दिशा पश्चिम की ओर बाँये हाथ के गलियारों की तरफ थी। पहले-पहल फिलोमिन भी जाचरे के साथ, जो कि गैंग के साथ काम कर रहा था, आई। तब वह ठंढ पकड़ जाने के भय से चिन्तित हो, अपनी वहाँ कोई आवश्यकता न समझ, बस्ती में लौट गई। यह बीमार औरत दिन-रात खाँसती हुई अपनी जिन्दगी के दिन काट रही थी। जब कि इसके विपरीत जाचरे को कोई और बात नहीं सूझती थी, वह अपनी बहिन को वापस पाने के लिए चट्टानों को निगल जाना चाहता था। रात्रि में वह चिल्लाता था कि उसने अपनी बहिन को देखा है, उसकी आवाज सुनी है, भूख से वह बहुत दुबली हो गई है और मदद के लिए पुकारते-पुकारते उसकी छाती में दर्द होने लगा है। चूंकि उसने बगैर आदेश के, यह कहते हुए कि यह वहाँ है उसे पक्का यकीन है, खोदना शुरू कर दिया था। इंजीनियर उसे नीचे नहीं आने देता था और वह खान से, जहाँ से उसे भगा दिया गया था, हटता ही न था। वह अपनी माँ के पास बैठा इन्तजार भी नहीं कर सकता था। वह काम करने की आवश्यकता से इतना ज्यादा उत्तेजित हो गया था कि वह बराबर अन्दर जाने की कोशिश करता रहता था।

तीसरे दिन, निग्रील ने निराश होकर, शाम को प्रयास त्याग देने का निश्चय किया। दोपहर बाद, भोजनोपरान्त, जब वह एक आखिरी प्रयास करने खनिकों के साथ वहाँ पहुँचा तो उसे जाचरे को देख कर आश्चर्य हुआ। वह खुशी में लाल चेहरा बनाये हाव-भाव प्रदर्शित करता हुआ खान से बाहर निकल कर चिल्ला रहा था :

'वह वहाँ है। उसने मेरी आवाज का उत्तर दिया ! आओ मेरे साथ, जल्दी।'

वहाँ रक्षक खड़ा होने के बावजूद वह सीढ़ियों से नीचे उतर गया और बराबर कह रहा था कि उसने वहाँ, गिलोमे-संधि के पहले तल पर हथौड़ा चलाने की आवाज सुनी है।

'लेकिन हम तो दो बार उस दिशा में हो आये हैं', निग्रील ने संदेहयुक्त स्वर में कहा। 'कुछ भी हो, हम चल कर देखेंगे।'

माहेदी भी उठ खड़ी हुई और उसे नीचे जाने से रोकना पड़ा। वह कूपक के कगार पर खड़ी, उस कूप के अंधकार की ओर नीचे झाँकती हुई, इन्तजार करने लगी।

निग्रील ने, नीचे जाकर, स्वयं तीन बार देर तक रुक-रुक कर प्रहार किया। तब उसने कोयले से कान लगाया और मजदूरों को बिल्कुल खामोश रहने की चेतावनी देता रहा। कोई आवाज उसे न सुनाई दी। उसने मायूसी से अपना सिर हिलाया। स्पष्ट था कि लड़का स्वप्न देख रहा था। गुस्से में भर कर जाचरे ने प्रहार किया और उसने फिर आवाज सुनी। उसकी आँखें चमकने लगी और खुशी से पाँव काँपने लगे। तब दूसरे खनिकों ने भी परीक्षण की कोशिश की और वे सब प्रसन्न हो उठे। बहुत दूर से धीमा उत्तर मिला था। इंजीनियर आश्चर्य में पड़ गया। उसने फिर कान लगाया, अन्त में उसे भी एक बहुत धीमी आवाज, खतरे में पड़े हुए खनिकों द्वारा कोयले पर किए जाने वाले प्रहार की एक लययुक्त धीमी ध्वनि, सुनाई दी। कोयले में कणीय सफाई से बहुत दूर तक आवाज छन कर आती है। एक कप्तान ने, जो वहाँ खड़ा था, अनुमान लगाया कि उनके साथियों को जुदा करने वाली कोयले की चट्टानों की यह दूरी पचास मीटर से कम न होगी। परन्तु ऐसा प्रतीत होता था कि मानो वे उन तक हाथ बढ़ा सकते हैं। और, एक आम खुशी छा गई। निग्रील ने तत्काल उन तक पहुँचने का कार्य आरंभ करवा दिया।

जब जाचरे ऊपर आया तो उसने माहेदी को देखा और वे दोनों ही खुशी के मारे एक दूसरे से लिपट गए।

'इतने ज्यादा खुश होने से काम नहीं चलेगा,' पेरीन ने, जो उत्सुकतावश यहाँ चली आई थी, कहा। 'अगर कैथराइन वहाँ न हुई तो बाद में बड़ा सदमा होगा।'

'यह सच हो सकता है; कैथराइन कहीं दूसरी जगह हो सकती है।'

जाचरे क्रोध से चिल्लाया, 'जाओ। हमें अकेला छोड़ दो? वह वहाँ है; मैं जानता हूँ।'

माहेदी पुनः बैठ गई, वह भावरहित मुखमुद्रा बनाकर इन्तजार करने लगी।

ज्योंही यह खबर मोंटसू में पहुँची, एक नई भीड़ वहाँ पहुँच गई। कोई चीज दिखाई तो नहीं दी थी लेकिन फिर भी वे वहाँ जमे रहते थे। उन्हें कुछ दूर हटाना पड़ा था। नीचे दिन-रात काम चल रहा था। कहीं कोई रुकावट पैदा न हो इसलिए इंजीनियर ने संधि मे नीचे उतरने के तीन गलियारे खुलवा दिए थे। वे सब उसी कोने की ओर झुके थे जहाँ घिरे हुए खनिकों के होने की आशा थी। नली बहुत संकरी होने से सिर्फ एक ही खनिक कोयले पर गेंती चला सकता था। हर दो घंटे मे दूसरा व्यक्ति उसका स्थान लेता था, और कटा हुआ कोयला एक हाथ से दूसरे हाथ में दे कर मजदूरों की एक लम्बी कतार से ऊपर पहुँचाया जाता था। पहले काम बड़ी तेजी से चला। वे एक दिन में छः मीटर खोद लेते थे।

कोयला खोदने के लिए छाँटे गए खनिकों में जाचरे को भी स्थान मिल गया था। यह एक सम्मान की जगह थी जिसके लिए वे झगड़ते थे। दो घंटा काम के बाद जब दूसरा खनिक उसके स्थान पर आता था तो वह बेहद क्रोधित हो उठता था। वह अपने साथियों की पारी नहीं होने देता था और गेंती नहीं छोड़ता था। उसका गलियारा शीघ्र अन्य लोगों की अपेक्षा आगे बढ़ गया था। वह इस क्रोध से कोयले को तोड़ता था कि इस पोली नली से उसकी साँस लेने की आवाज भट्टी की धौंकनी के समान सुनाई देती थी। जब वह काला और मिट्टी में सना, थकान के कारण चक्कर खाता हुआ बाहर निकला तो वह जमीन पर गिर पड़ा और उसे कपड़े से लपेटना पड़ा। फिर लड़खड़ाता हुआ वह कूद पड़ता था और नये सिरे से काम पर जुट जाता था। अब कोयले की परतें मोटी ही चली थीं; जिससे दो बार उसकी गेंती टूट चुकी थी, और उसे क्रोध चढ़ता था कि वह उतनी तेजी से नहीं बढ़ पा रहा हैं। गर्मी से भी उसे परेशानी होती थी, जो हर मीटर पर बढ़ती जाती थी और संकरे छेद के पास असह्य हो जाती थी वहाँ पयोंकि हवा चक्कर नहीं काट सकती थी। एक छोटा सा संवीजन अच्छा काम दे रहा था, लेकिन गैस-युक्त वायु इतनी कम निकल पाती थी कि तीन बार बेहोश खनिकों को बाहर खींचना पड़ा।

निग्रील नीचे ही खनिकों के साथ जमा हुआ था। उनका खाना दोनों समय नीचे ही भेज दिया जाता था और वह कभी-कभी पुआल के बिस्तर पर एक लबादा ओढ़े सिर्फ दो तीन घंटे ही सो पाता था। एक चीज उन्हें जल्दी के लिए बराबर प्रेरित करती रहती थी। वह थी उन अभागों की कोयले पर चोट करने की

आवाज जो अब अधिक धीमी पड़ती जा रही थी और अधिक साफ सुनाई देती थी। अब वह संगीत लहरी की तरह स्पष्ट बजती थी, मानों किसी हारमोनियम के स्वरों को छेड़ दिया गया हो। वे इस शब्द पर ऐसे आगे की ओर बढ़ते थे जैसे युद्ध में सिपाही तोप की आवाज पर। हर बार जब भी मलकट्टे की पारी बदलती निग्रील नीचे जाकर दीवार पर चोट करता, फिर कान लगा कर सुनता; और अब तक, हर बार जल्दी तथा जरूरी उत्तर मिलता था। उसे कोई संदेह नहीं रह गया था कि वे ठीक दिशा की ओर बढ़ रहे थे, लेकिन बड़ी घातक धीमी गति से। वे कभी भी जल्दी नहीं पहुँच सकते। पहले दो दिनों में, निःसंदेह, उन्होंने तेरह मीटर कोयला खोद लिया था, लेकिन तीसरे दिन वे पाँच ही मीटर बढ़ पाये और चौथे दिन सिर्फ तीन ही। कोयला अब अधिक पास-पास और मोटी परत वाला मिल रहा था। वह इतना ज्यादा सख्त हो गया था कि वे बमुश्किल दो मीटर बढ़ पाते थे। नौवें दिन असाधारण प्रयास के बाद वे तेइस मीटर बढ़ पाये थे और अन्दाज लगा रहे थे कि तकरीबन बीस मीटर और उनके आगे रह गया है। खान में बंद लोगों के लिए यह बारहवाँ दिन था, बारह बार चौबीस घंटों की पुनरावृति उनके लिए बगैर भोजन, बगैर आग के उस बर्फीले अंधकार मे हो चुकी थी! यही डरावना विचार खनिकों की आँखों में आँसू ला देता था और उनकी बाँहों को जकड़ लेता था। यह असंभव लगता था कि वे अधिक जीवित रह जायेंगे। पिछले दिन से स्पष्ट आवाज और धीमी हो गई थी। और हर क्षण वे काँपते थे कि कहीं उन्हें खुदाई बंद न करनी पड़ जाय।

माहेदी नित्य प्रति सुबह आती और कूपक के मुँह के पास बैठ जाती थी। वह अपनी गोद में एस्टोली को भी ले आती थी क्योंकि वह अकेली सुबह से रात तक नहीं रह सकती थी। घंटा प्रति घंटा वह मजदूरों से पूछती, उनकी आशा-निराशा में डूबती उतराती थी। बाहर खड़ी टोलियों में घबड़ाहट भरी उम्मीद थी और मोंटसू तक इस बात की चर्चायें हुआ करती थीं। जिले में हर व्यक्ति का दिल पृथ्वी के नीचे की बेचैन धड़कन महसूस करता था।

नौवें दिन, नाश्ते के समय में, जाचरे ने जब उत्तर माँगा तो कोई प्रत्युत्तर नहीं मिला। वह एक पागल की भाँति, भयंकर क्रोध से काम कर रहा था। निग्रील एक क्षण के लिए वहाँ आया था और फिर चला गया था। सिर्फ एक कप्तान और तीन अन्य खनिक नीचे थे। जाचरे ने मंदी रोशनी से क्रोधित होकर हुक्मअदूली करते हुए अपना लैंप खोल डाला था, जबकि 'फायर डैंप' का खतरा होने से लैंप खोलने की सख्त मनाही थी। एकाएक, बिजली की सी कड़क सुनाई दी और नली के मुँह से इस प्रकार अग्नि

की लपटें निकली जैसे कोई तोप का गोला छोड़ा गया है। हर चीज भभक उठी और हवा में बारूद की तरह आग लग गई। इस ज्वाला की लहर में कप्तान और तीनों खनिक भाग कर गलियारे से ऊपर आ गये। लपटें एक उद्‌गार की तरह दिन के प्रकाश में भी लपक आई थीं। जिज्ञासु भाग खड़े हुए। माहेदी भी भयभीत एस्टीली को छाती से दबाये उठ खड़ी हुई।

जब निग्रील और अन्य लोग वापस आये तो उन्हें बेहद क्रोध आ गया था। उन्होंने इस प्रकार जमीन पर पाँव पटका जैसे कोई निर्दयता के भावावेश में आकर अपने बच्चों को मार डालने वाली सौतेली माँ के ऊपर टूट पड़ा हो। तीन घंटे के प्रयास और खतरे के बाद वे पुनः गलियारे में पहुँचे। हताहतों को ऊपर लाने का कार्य शुरू हुआ। कप्तान और तीनों खनिकों में से कोई मरा नहीं था लेकिन वे भुन से गये थे और उनके भयानक घाव हो गए थे। आग पी लेने से उनके गले में छाले पड़ गए थे। और वे कराहते हुए बराबर अकेले छोड़ दिए जाने की प्रार्थना कर रहे थे। तीन खनिकों में से एक वह था जिसने हड़ताल के दौरान में अपने फावड़े से गेस्टनमेरी का पंप तोड़ डाला था; अन्य दोनों के हाथों में सिपाहियों पर चलाई गई ईंटों की खुरचन और अंगुलियों की फटन अब भी बाकी थी। जब वे ले जाये गए तो भय से पीली और काँपती हुई भीड़ ने अपनी टोपें उतार लीं।

माहेदी खड़ी इन्तजार करती रही। अन्त में जाचरे का शव लाया गया। उसके कपड़े जल गए थे। शरीर काले चारकोल का एक पिण्ड सा हो गया था, जिसे पहचानना असंभव था। विस्फोट से उसका सिर छितरा गया था और उसका अस्तित्व ही नहीं रह गया था। और जब यह डरावने अवशेष स्ट्रेचर पर लादे गए तो माहेदी यंत्रवत् उसके पीछे-पीछे चली। उसकी जलती हुई पलकों के आँसू भी सूख गए थे। एस्टीली उसकी गोद में लटकी हुई थी। वह एक अति-करुण मुद्रा में बढ़ रही थी और उसके रूखे बाल हवा में बिखर रहे थे। बस्ती में फिलोमिना हतबुद्धि सी खड़ी थी, उसकी आँखों से अश्रुधारा बह रही थी और वह जल्दी ही गम के बोझ से हल्की हो गई। लेकिन माँ जल्दी ही उन्हीं कदमों से रिवोलाँ लौट आई थी; वह अपने लड़के की अर्थी के साथ गई थी और अब अपनी लड़की का इन्तजार करके लौट रही थी।

तीन दिन और गुजर गए। बहुत अधिक कठिनाइयों के साथ बचाव कार्य फिर शुरू हो गया था। 'फायर-डैंप' के विस्फोट से गलियारे में पहुँचने का रास्ता सौभाग्य से गिरा नहीं था, लेकिन हवा में इतना भारीपन और इतनी गैस थी कि और संबीजन बनाने की जरूरत थी। हर बीस मिनट में मलकट्टे एक-दूसरे के

स्थान पर आते थे। वे बढ़ रहे थे और मुश्किल से उनके और उनके अभागे साथियों के बीच दो मीटर का फासला था। लेकिन अब वे नाउम्मीद से होकर काम कर रहे थे। महज बदला लेने की भावना से जोरों से गेंती चलाते थे; क्योंकि आवाज आनी बंद हो गई थी। यह उनके श्रम का बारहवाँ और उस दुर्घटना का पन्दरहवाँ दिन था। प्रातःकाल से ही वहाँ मौत का सा सन्नाटा था।

नयी दुर्घटना से मोंटसू की उत्सुकता बढ़ गई थी और वहाँ के निवासियों ने इस उत्साह से भ्रमण पार्टियाँ संगठित की थीं। ग्रीगोरे दम्पत्ति ने भी उसका अनुकरण करने का निश्चय किया। उन्होंने पार्टी तय की और वह बोरो अपनी बग्घी में जायंगे जबकि मदाम हनेब्यू लूसी और जेनी को अपनी बग्घी में ले जायंगी। डेन्यूलिन उन्हें वहाँ अपने यार्ड दिखायेगा और तब वे रिक्वीलाँ लौट जायँगे, जहाँ निश्चल गलियारों की सही-सही स्थिति उन्हें समझायेगा और बतायेगा कि क्या अब भी आशा की जा सकती है? अन्त में वे शाम को साथ-साथ खाना खायँगे।

जब ग्रीगोरे दम्पत्ति अपनी लड़की सीसिल के साथ, लगभग तीन बजे ध्वस्त खान के पास पहुँचे तो उन्होंने मदाम हनेब्यू को समुद्री नीली पोशाक पहने हुए वहाँ पाया, जो कि छाता लगाये फरवरी की मीठी धूप से अपनी रक्षा कर रही थी। वसंत की गर्मी साफ आसमान में आने लगी थी। मदाम हनेब्यू वहाँ डेन्यूलिन के साथ थी, जो कि उसे नहर में बाँध बाँधने के प्रयासों का ब्यौरा सुना रहा था। जेनी, जो हमेशा अपने साथ एक स्केच खींचने की कापी रखती थी, चित्र खींचने लगी। वह प्रसंग की भयंकरता की भावना में बह गई थी, जबकि लूसी उसके पीछे, वैगन के एक ढाँचे पर बैठी हुई, खुशी से चिल्ला रही थी और वहाँ बहुत प्रसन्नता महसूस कर रही थी। अधूरे बाँध में कई दरारें आ गई थीं। और छोटी-छोटी धारायें डूबी हुई खान के भयंकर छेद में गिर रही थीं, फिर भी उद्गार खाली हो रहा था और जमीन का पिया हुआ पानी सूख रहा था, जिससे उसके तल पर डरावने ध्वंशावशेष दृष्टिगोचर हो रहे थे।

'और लोग-बाग अपना रास्ता छोड़ इसे देखने आते हैं!' एम० ग्रीगोरे ने हैरत में पड़ कर कहा।

मदाम हनेब्यू ने विरोधात्मक स्वर में कहा :

'सत्य यह है कि यह जरा भी खूबसूरत दृश्य नहीं है।'

दो इंजीनियर हँस पड़े। उन्होंने दर्शकों में दिलचस्पी पैदा करने की कोशिश की और उन्हें चारों ओर घुमाकर पंपों के काम के बारे में समझाया। लेकिन महिलायें, जब उन्हें मालूम हुआ कि पंपों को ६ वर्षों तक खान से सब पानी निकालना

पड़ेगा तब जाकर कूपक दुबारा बनेगा, घबरा गईं। नहीं, वे किसी और चीज के बारे में सोचेंगी, इस विनाश के बारे में सोचने पर तो उन्हें बुरे सपने आयंगे।

मदाम हनेब्यू अपनी बग्घी की तरफ मुड़ती हुई बोली, 'हमें जाना चाहिए।'

लूसी और जेनी और ठहरना चाहती थीं। क्या ? इतनी जल्दी ! अभी तो ड्राइंग ही खत्म नहीं हुई। वे यहीं ठहरेगी; उन्हें शाम को उनके पिता जी खाना ले आयंगे। एम० हनेब्यू अकेला अपनी पत्नी के साथ बग्घी में बैठा, क्योंकि वह निग्रील से कुछ पूछताछ करना चाहता था।

'बहुत अच्छा ! तुम लोग आगे चलो', एम० ग्रीगोरे बोला। 'हम तुम्हारे पीछे-पीछे आ रहे हैं; हमें पाँच मिनट बस्ती में रुकना है। तुम चलो, तुम चलो। हम तुम लोगों के साथ-साथ ही रिवीलाँ पहुँच जायंगे।'

वह मदाम ग्रीगोरे और सीसिल के साथ उठ खड़ा हुआ, जबकि दूसरी बग्घी नहर के किनारे-किनारे निकल गई और उनकी बग्घी धीरे-धीरे चढ़ाई पर चढ़ने लगी।

उनका भ्रमण कुछ दान-पुण्य के बाद पूरा होने वाला था। जाचरे की मृत्यु से उनका दिल इस अभागे माहे परिवार के प्रति दया से भर आया था, जिसके बारे में समस्त क्षेत्र में चर्चा थी। उनकी पिता के प्रति, उस लुटेरे और सैनिकों की हत्या करने वाले के प्रति, कोई हमदर्दी नहीं थी। लेकिन माँ के प्रति वे दयार्द्र थे, जिसकी कि पति को खो देने के बाद लड़के की भी मौत हाल में हो गई थी और जिसकी लड़की शायद जमीन के भीतर ही मर गई होगी; अपंग दादा के बारे में तो कुछ कहने की बात ही नहीं थी, एक बच्चा मिट्टी के नीचे दब जाने से लंगड़ा हो गया था और एक छोटी लड़की हड़ताल के दौरान में भूखों मर गई थी। गोकि विद्रोही घृणित विचारों वाले इस परिवार की यही सजा थी परन्तु अपने दान-पुण्य की भावना की तह में उनकी क्षमादान और समझौते की इच्छा भी छिपी थी। दो पार्सल सावधानी से लपेट कर वे बग्घी की एक सीट के नीचे रखे हुए थे।

एक बुढ़िया ने कोचवान को हाथ के इशारे से माहेदी का घर बताया—दूसरे ब्लाक का १६ नम्बर का मकान। लेकिन जब ग्रीगोरे पार्सलों के साथ उतरे तो उन्होंने दरवाजा खटखटाया; अन्त में वे दरवाजे पर मुट्ठी से मारते हुए खड़े रहे और कोई उत्तर नहीं मिला। वह घर एक परित्यक्त अंधेरे, बगैर आग-पानी के उजाड़ घर की भाँति मातम मना रहा था।

'यहाँ तो कोई नहीं है,' सीसिल ने निराश होकर कहा, 'क्या वाहियात बात है ! हम इस सब को क्या करेंगे ?''

एकाएक बगल के मकान का दरवाजा खुला, और लेवक्यू की औरत दिखाई दी।

'ओ, सर ! माफ कीजियेगा मदाम ! क्षमा करो, मिस। आप लोग पड़ोसी को चाहते हैं ? वह यहाँ नहीं है; रिक्वीलाँ गई है।'

फिर वह धारा प्रवाह अपनी कहानी सुनाने लगी। बोली : लोगों को एक दूसरे की मदद करनी ही चाहिए। वह हेनरी और लीनोरी को सम्भालती है ताकि माँ वहाँ जाकर इन्तजार कर सके। उसकी निगाह पार्सल पर पड़ गई थी और वह अपनी लड़की की बात बताने लगी जो कि विधवा हो गई थी। वह अपनी गरीबी का प्रदर्शन कर रही थी लेकिन उसकी आँखों में मक्कारी थी। तब हिचकते हुए, वह बोली :

'मेरे पास चाबी है। अगर आप वास्तव मे मिलना ही चाहते हैं तो—दादा वहाँ हैं !'

ग्रीगोरे आश्चर्य से उसकी ओर ताकने लगे। क्या ! दादा वहाँ है ? लेकिन किसी ने कोई उत्तर नहीं दिया। तब वह सो रहा होगा ? और जब लेवक्यू पत्नी ने दरवाजा खोलने का इरादा किया, जो कुछ उन्होंने देखा उससे वह देहली पर ही ठक गए। बोनेमाँ वहाँ अकेला अपनी बड़ी-बड़ी आँखें खोले, ठंढी अंगीठी के पास अपनी कुर्सी में जड़वत् बैठा था। उसके इर्द-गिर्द सूना कमरा खाली-खाली लग रहा था, न उसमें घड़ी थी, न फर्नीचर ही, दीवारों पर सिर्फ सम्राट और समाज्ञी के चित्र थे जो हंसते हुए उन अभागों का उपहास करते प्रतीत होते थे। बुड्ढे ने दरवाजे से एकाएक रोशनी आते देख न तो पलक ही झपकाई और न कुर्सी से ही उठा। वह अशक्त मालूम पड़ता था। उसके पाँव के पास उसकी प्लेट रखी थी, जिसमें इस प्रकार राख भरी थी मानो उसे बिल्ली के गंदा करने को रख छोड़ा हो।

लेवक्यू-पत्नी बोली : 'इसके अविनम्र होने का आप लोग ख्याल न करें। मालूम पड़ता है कि इसके दिमाग में कुछ गड़बड़ी आ गई है। एक पखवारा गुजरा तब से इसने बोलना भी बंदकर दिया है।'

लेकिन बोनेमाँ किसी बेचैनी से हिलने-डुलने लगा। उसके पेट से कोई गहरी टीस सी उठती प्रतीत होती थी। उसने काला थूक निकाल कर प्लेट में थूका। राख काली मिट्टी से सन गई थी, खान का वह काला कोयला था जिसे वह अपने सीने से निकाल रहा था ! वह फिर निश्चल हो गया। वह कभी-कभी थूकने के लिए उठने के अलावा हमेशा पड़ा ही रहता था।

कुछ बेचैनी और मिचली का अनुभव करते हुए ग्रीगोरे ने मैत्रीपूर्ण और उत्साहवर्द्धक शब्द कहने का प्रयास किया :

'मेरे भले खनिक ! तब, शायद तुम्हें ठंढ लगी है ?'

वृद्ध दीवार की ओर आँख लगाये था। उसने मुंह नहीं फेरा। फिर वहाँ गंभीर खामोशी छा गई।

'उन्हें तुम्हें थोड़ा सा गरम-गरम शोरवा बना कर देना चाहिए, मदाम ग्रीगोरे ने कहा।

सोसिल धीरे से बोली, 'पापा' मैं कहती हूँ, उन्होंने निःसंदेह, हमें इसके अपाहिज होने की बात बताई थी; सिर्फ बाद में हमें ही इसका ख्याल नहीं रहा कि—,

वह स्वयं व्याकुल सी होकर आधी बात पर ही अटक गई। कुछ खाने का सामान और दो बोतल शराब मेज पर रखने के बाद उसने दूसरा पार्सल खोला और बड़े बूटों का एक जोड़ा निकाल लिया। यह दादा के लिए तोहफा था और प्रत्येक हाथ में एक बूट पकड़े वह बड़ी पशोपेश में पड़ी हुई बुड्ढे के सूजे हुए पाँव देख कर मन ही मन सोच रही थी कि यह कभी चलने लायक न हो सकेगा।

'ओह ! यह कुछ देर में आये, क्यों, मेरे बेहतरीन कामगार ?' एम० ग्रीगोरे ने पुनः कहा : 'कोई बात नहीं, वह हमेशा ही फायदेमंद सिद्ध होंगे।'

बोनेमाँ ने न सुना और न जवाब ही दिया। उसका डरावना चेहरा इतना ठंढा था मानो पत्थर हो।

तब सोसिल ने बूटों को दीवार के सहारे रख दिया। उसकी सावधानी के बावजूद उनकी नीचे की कील बज उठी और यह लम्बे बूट खाली कमरे में उपहास के रूप में खड़े रहे।

लेवक्यू पत्नी बूटों को देखकर जलती हुई तृषित सी बोली, 'यह आपको धन्यवाद भी न कहेगा। ऐसे आदमी की मदद से क्या लाभ जो जरा भी एहसान मन्द न हो ? और वह उन्हें अपने कमरे में ले जाने की कोशिश कर रही थी जहाँ, उसे उम्मीद थी कि वे उस पर भी दयालु हो जायंगे। अन्त में उसे बहाना सूझा; उसने लीनोरी और हेनरी की तारीफ के पुल बाँधने शुरू कर दिये। इतने अच्छे बच्चे हैं, इतने भले हैं, इतने बुद्धिमान है कि जो भी सवाल उनसे पूछा जाय देवदूत की भाँति उसका उत्तर देते है। वे हर चीज आप साहिबान को बतायेंगे जो आप जानना चाहेंगे।

'तुम एक क्षण को आओगी, मेरी बच्ची ?' बाप ने वहाँ से चलने पर प्रसन्नता जाहिर की।

'हाँ, मैं आ रही हूँ, तुम चलो', वह बोली।

सीसिल बोनेमॉ के पास अकेली ही रह गई। यह विचार उसे वहाँ कंपा रहा था और मंत्र मुग्ध बनाये था कि उसने इस बुड्ढे को कहीं देखा है। तब, कोयले के खत्तों वाला चोकोर नीलवर्ण चेहरा उसने कहाँ देखा होगा? एकाएक उसे स्मरण हो आया; उसने उसे घेरने वाले लोगों की एक चिल्लाती हुई भीड़ देखी और उसे लगा कि किन्हीं ठंढे हाथों के नीचे उसका गला दबता जा रहा है। यह वही था; उसने पुनः उस व्यक्ति की ओर देखा कि वह अपने घुटनों पर हाथ रखे बैठा है, एक अपाहिज मजदूरे के हाथ, जिसकी सारी ताकत कलाई में होती है। उसकी उम्र के बावजूद वे बहुत मजबूत थे। धीरे-धीरे बोनेमॉ जाग्रत प्रतीत होता था, उसने उसे देखा और पहचानने की कोशिश की। एक लहर सी उसके गालों पर आई, तन्तुओं के खिचाव से उसका मुँह ऐंठ सा गया, जिसके कि काने मेलाव की एक पतली लकीर सी निकल रही थी। वे मंत्र मुग्ध से एक दूसरे को देख रहे थे—वह अपनी पीढ़ी की लम्बी आरामतलबी से सुखी, तन्दुरुस्त और तरोताजा; वह पानी से सूजा हुआ, भगा दिये गए जानवर की तरह दयनीय बद-सूरती से भरा हुआ, मुखमरी और काम की वजह से शताब्दियों से पीढ़ी-दर-पीढ़ी बरबाद होता हुआ!

दस मिनट तक इन्ताजरी के बाद, ग्रीगोरे को आश्चर्य हुआ कि सीसिल अभी माहेदी के घर से नहीं निकली तो वे फिर माहेदो के घर में घुसे और उनके मुंह से एक भयंकर चीख निकल गई। उनकी लड़की जमीन पर पड़ी थी, उसका चेहरा नीला पड़ गया था, उसका गला घोंट दिया गया था। उसकी गर्दन पर किसी मजबूत-भीयकाय हाथ की अंगुलियों के लाल निशान अब भी मौजूद थे। बोनेमॉ, अपने निर्जीव पाँवों से घिसटता हुआ, उसकी बगल में पड़ा हुआ था और उसमें अब उठने की शक्ति नहीं थीं। उसके हाथ अब भी झुके हुए थे और वह अशक्त भाव से अपनी बड़ी-बड़ी आँखें घुमाता चारों ओर देख रहा था। गिरते हुए उसने अपनी प्लेट तोड़ डाली थी। राख चारों ओर बिखर गई थी। काले खंखार की मिट्टी तमाम फर्श में फैल गई थी, जब कि भारी बूट, सुरक्षित से, अलग-बगल में दीवार के सहारे रखे हुए थे।

यह सब कैसे हुआ, इसका तथ्य-निरूपण असंभव था? सीसिल इसके समीप क्यों आई? बोनेमॉ, जो कि कुर्सी में जड़वत् बैठा था, किस तरह उसकी गर्दन पकड़ने में समर्थ हुआ? जाहिर है, जब उसने उसे पकड़ लिया होगा तो वह क्रोधित हो उठा होगा। लगातार उसे दबाते हुए, स्वयं भी उसके साथ उलट गया होगा और आखिरी चीख तक उसकी गर्दन दबाये रहा होगा। जरा सी आवाज भी, जरा सा कराहने का शब्द भी, उस पतली विभाजन दीवार से होकर पड़ोस

में नहीं सुनाई दिया। ऐसा प्रतीत होता था कि एकाएक पागलपन के आवेश में उसने यह सब किया है। इस खूबसूरत सुकुमार गर्दन को देख कर उसकी हत्या की भावना बलवती हो उठी होगी। एक वृद्ध अपाहिज में इस प्रकार का खूँखार जंगलीपन का होना, जो कि एक वफादार जानवर की भाँति, एक स्वाभिभक्त मजदूर की तरह, नये विचारों का विरोध करता हुआ काम करता रहा, अचम्भे की बात थी। कौन सी विद्वेष की भावना, धीरे-धीरे असर करने वाला कौन सा जहर उसके दिमाग के कोने में था ? जिससे वह स्वयं भी अनभिज्ञ था। इसके आतंक से वे इसी परिणाम पर पहुँचे कि वह अपने होश में नहीं था और यह अपराध एक ऐसे व्यक्ति द्वारा किया गया था जिसके होश-हवास दुरुस्त न हों।

ग्रीगोरे दम्पति अपने घुटनों पर गिरे हुए सुबकियाँ ले रहे थे। बड़ी अन्तर-वेदना के साथ अपनी मृत लड़की को देख रहे थे। वह उनके आदर्शों, उनकी इच्छाओं की एक मूर्ति थी, जिसके लिए उन्होंने सभी सुख-सुविधायें प्रदान कर रखी थी; जिसे वे सोते देखा करते थे और जिसे उन्होंने अपनी दृष्टि में कभी भी पूर्ण स्वस्थ और पंजों के बल खड़े होकर वे भरपेट भोजन करते हुए नहीं पाया था। यह उनकी स्वयं की जिन्दगी का अन्त था।

हाय, अब तो उन्हें अपनी जिन्दगी बिना उसके गुजारनी पड़ेगी। ऐसी जिन्दगी से लाभ ही क्या ?

लेवक्यू की औरत यह विनाश देखकर चीख उठी। 'आह बुड्ढे भिखारी ! तूने यह क्या किया ? कौन ऐसी बात की उम्मीद कर सकता था ? और माहेदी, वह तो संध्या तक नहीं लौटेगी ! क्या मैं जाकर उसे बुला लाऊँ ?'

ग्रीगोरे दम्पत्ति दुख में निढाल बैठे थे। उन्होंने कोई प्रत्युत्तर नहीं दिया।

'क्यों ? बेहतर होगा। मै जाती हूँ।'

लेकिन जाने से पहले लेवक्यू की औरत ने बूटों की ओर देखा। समूची बस्ती में खबर फैल चुकी थी और वे लोग झुंड के झुंड इर्द-गिर्द इकट्ठा हो रहे थे। शायद वे चुरा लिये जाँय और फिर माहेदी के घर में कोई मरद भी नहीं जो इन्हें पहने। वह चुपचाप उन्हें उठा ले गई। वे बाउटलोप के पाँव में ठीक बैठेंगे।

रिक्वीलों में हनेब्यू निग्रील के साथ बढ़ी देर तक ग्रीगोरे की प्रतीक्षा करते रहे। निग्रील, खान से ऊपर आकर उन्हें विस्तारपूर्वक समझा रहा था। उन्हें उम्मीद थी कि उसी दिन संध्या तक वे अभागे कैदियों से सम्पर्क स्थापित कर सकेंगे। परन्तु उन्हें उम्मीद नहीं थी कि उन्हें लाशों के अलावा और कुछ मिल पायेगा, क्योंकि मौत का सा सन्नाटा बना हुआ था। इंजीनियर के पीछे, एक बल्ली

पर बैठी माहेदी सुन रही थी और उसके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही थीं। तभी लेवक्यू की औरत ऊपर आई और उसने उसे बुड्ढे की विचित्र हरकत के बारे में बताया। माहेदी ने बेचैनी और परेशानी को एक भंगिमा बनाई और उसके पीछे-पीछे घर की ओर चली।

मदाम हनेब्यू को गहरा सदमा पहुँचा। क्या घिनौना कर्म है! बेचारी सीसिल जो उस दिन इतनी खुश थी, एक घंटा पहले कितनी जिन्दादिली और उमंग भरी थी! एम० हनेब्यू को एक क्षण के लिए अपनी-मदाम को बुड्ढे माउक्यू के घरौंदे में ले जाना पड़ा। अपने काँपते हुए हाथों से उसने उसकी चोली खोली। उसकी बॉडी से निकलने वाली मुश्क की तीव्र सुगन्धि से वह बेचैनी का अनुभव कर रहा था और आँखों से अश्रुधारा बहाती हुई वह निग्रील से लिपट गई। इस मौत ने उनके विवाह की योजना को खत्मकर दिया था। एम० हनेब्यू उन दोनों को विलाप करते देखता रहा। उसको एक भारी चिन्ता से मुक्ति का सा अनुभव हुआ। इस दुर्भाग्य से सब चीज दुरुस्त हो जायगी; अपने कोचवान के भय के कारण वह अपने भतीजे को ही रखना ज्यादा पसंद करता था।

५

कूपक के पेंदे पर छोड़ दिये गए अभागे भयाक्रांत चीख रहे थे। अब पानी उनके कूल्हों तक चढ़ आया था। जल प्रवाह का शब्द उन्हें अधिक व्याकुल बनाये था। पीपों के आखिरी बार गिरने से एक प्रलयकारी आवाज हुई और अस्त-बल में बंद घोड़ों की हिनहिनाहट से उनकी व्याकुलता और भी बढ़ गई। घोड़े एक भयानक, न भूलनेवाली, मौत को सी चीख निकाल रहे थे मानो किसी जानवर को हलाल किया जा रहा हो।

माउक्यू ने बेटली को छोड़ दिया था। यह पुराना घोड़ा काँपता हुआ अपनी धूमिल आँखों से पानी की ओर, जो निरतंर बढ़ रहा था, एकटक देख रहा था। खान का पेंदा तेजी से भर रहा था, हरे रंग के पानी की बाढ़ धीरे-धीरे छत के नीचे जलने वाले तीन लैंपों की रोशनी में बढ़ती दिखाई दे रही थी। और एका-एक, जब घोड़े ने उस बर्फीले पानी को अपनी लादी भिगोते महसूस किया, वह भयंकर रीति से टाप मारता हुआ भाग निकला। वह पानी से घिर कर कर्षण गलियारों में से एक में गायब हो गया।

तब वहाँ भगदड़ मच गई। मजदूर भी घोड़े के पीछे-पीछे चलने लगे।

'इस मनहूस छेद में अब कुछ नहीं किया जा सकता', माउक्यू चिल्लाया; 'हमें रिक्वीलों से कोशिश करनी चाहिए?'

इस विचार से कि अगर रास्ता कटने से पहले ही वे पहुँच गए तो पुरानी पड़ोसी खान से बाहर निकलना शायद संभव हो सकेगा, वे बढ़े चले जा रहे थे। एक कतार में दौड़ते हुए बीस मजदूर एक-दूसरे से धक्का खाते चल रहे थे। उनके लैंप ऊपर हवा में उठे थे ताकि पानी उन्हें बुझा न दे। सौभाग्य से गलियारा ढालवाँ चला गया था और दो सौ मीटर तक वे पानी को पार करते हुए बढ चले। अब बाढ़ का उनको डुबोने का खतरा नहीं था। इन घबराये हुए प्राणियों में अंधविश्वास जाग्रत हो रहा था; उन्होंने धरती को उत्तेजित किया और धरती उनसे बदला ले रही है। वह अपनी नसों से बाढ़ रूपी खून फेंक रही है क्योंकि उन्होंने उसकी एक धमनी को काट डाला है। बुड्ढे लोग भूली हुई प्रार्थना गुनगुना रहे थे। वे खान की दुष्टात्मा को संतुष्ट करने के लिए अपने अंगूठे पीछे की ओर झुका रहे थे।

लेकिन पहले मोड़ पर मतभेद हो गया; सईस बाँये मुड़ने को कह रहा था और अन्य लोग कह रहे थे कि दाँई ओर जाकर वे जल्दी पहुँच जायगे। एक मिनट वहीं विलम्ब होगा।

'अच्छा, मरो यही। मेरा क्या बिगड़ता है ?' चवाल ने निर्दयता से कहा : 'मैं इस रास्ते चला।'

वह दाँई तरफ मुड़ गया और दो अन्य मजदूरों ने उसका अनुसरण किया। अन्य लोग माउक्यू के पीछे-पीछे चले, क्योंकि वह खान में ही बड़ा हुआ था। वह स्वयं हिचक रहा था और समझ नहीं पा रहा था कि किस ओर मुड़े। उनकी बुद्धि साथ नहीं दे रही थी। माउक्यू तक उन रास्तों को नहीं पहचान रहा था जो उलझे हुए ताँबे के लच्छे की तरह उनके सामने फैले थे। हर चौराहे पर वे अनिश्चितता से ठिठक जाते थे, फिर भी उन्हें निश्चय तो करना ही था।

लॉतिये सब से पीछे था क्योंकि थकान और भय से लड़खड़ाती कैथराइन की वजह से उसे विलम्ब हो रहा था। वह दाँई ओर चवाल के साथ चला गया होता क्योंकि वह उसे बेहतर मार्ग समझता था; लेकिन उसने चवाल से जुदा होना ही बेहतर समझा था। उनका भागना जारी रहा। कुछ साथी उनके साथ से चले गए थे और माउक्यू के पीछे सिर्फ दो व्यक्ति बचे थे।

नवयुवती को कमजोर पड़ते देख कर लॉतिये बोला, 'मेरी गर्दन पर लटक जाओ और मैं तुम्हें ले चलूंगा।'

वह धीरे से बोली, नहीं, 'मुझे रहने दो, मैं ज्यादा चल नहीं सकती; मैं तत्काल मरना ज्यादा पसंद करूंगी।'

उन्हें विलम्ब होने लगा और और वे पचास मीटर पीछे छूट गए। लड़की के

विरोध के बावजूद वह उसे उठाये हुए था जब कि एकाएक एक भारी शिलाखंड के गिर जाने से गलियारे का रास्ता बंद हो गया और वे औरों से जुदा हो गए। चारों ओर से घिरकर आने वाली बाढ़ में जमीन भीगती जा रही थी। उन्हें पीछे की ओर चलना पड़ा, तब वे स्वयं नहीं जानते थे कि वे किसी दिशा की ओर जा रहे है। रिक्वीलॉ से बच निकलने की सभी आशा समाप्त हो गई थी। उनकी एकमात्र आशा ऊपरी गलियारों तक पहुँचने की थी, जहाँ से शायद पानी कम हो जाने पर उन्हें मुक्ति मिल सके।

लॉतिये ने आखीरकार ग्विलोमे संधि को पहचाना। 'अच्छा', वह बोला। 'अब मैंने पहचाना कि हम लोग कहाँ है? ईश्वर क़सम! हम ठीक रास्ते पर चल रहे थे, लेकिन अब हम नरक में जायँगे! यहाँ, हमें सीधे चलना चाहिए, हम ऊपरी मार्ग में चढ़ेंगे।'

बाढ़ उनके सीने तक पहुँच गई थी और वे बहुत धीमे चल रहे थे। जब तक उनके पास रोशनी रही उन्हें घबराहट कम थी, और उन्होंने तेल के खर्च को कम करने के लिए एक लैंप बुझा दिया और उसे दूसरे लैंप में उलट दिया। वे चिमनी-मार्ग तक पहुँच चुके थे, जब कि पीछे से आने वाली आवाज से उन्होंने मुड़ कर देखा। क्या यह कोई साथी है जो रास्ता बंद पाकर लौट रहा है? गर्जन बहुत दूर से हो रहा था; वे समझ नहीं पा रहे थे कि उन तक पहुँचने वाला यह तूफान सा क्या है, जो कि झाग उगल रहा है। जब उन्होंने देखा कि एक विशाल काय सफेद पिण्ड छाया से निकलकर उसके साथ आया चाहता है और सँकरे नलों के मार्ग से बढ़ रहा है तो वे चीख उठे।

यह बेटली था। खान के पेंदे से निकल भागने के बाद वह बेतहाशा अँधेरे गलियारों को चीरता हुआ दौड़ निकला था। इस भूगर्भ स्थित शहर में अपनी सड़क से वह भली-भाँति भिज्ञ प्रतीत होता था जिसमें वह पिछले ग्यारह वर्षों से रह रहा था। चिर रात्रि की इन गहराइयों में, जिसमें वह रहता चला आ रहा था, उसकी आँखें स्पष्ट देखती थीं। वह सरपट दौड़ता ही चला गया था। अपनी गर्दन मोड़ता, पाँव ऊपर उठाता वह जमीन के भीतर की इन संकरी नलियों के बीच अपनी भरकम देह लिए आगे बढ़ रहा था। सड़क के बाद सड़क मिल रही थी और उसके घुमावदार मोड़ बिना हिचकिचाहट के पार हो थे। वह कहाँ जा रहा है? वहाँ, शायद, अपनी बाल्यावस्था की उस धुंधली स्मृति की ओर, मिल की ओर, ढाल के किनारे, जहाँ हवा में जलते हुए बड़े लैंप की भाँति उसे सूरज देखने की हल्की स्मृति थी। वह जीवित रहना चाहता था। उसकी पशु-स्मृति जाग उठी थी। मैदानों की खुली हवा में साँस लेने की बलवती इच्छा उसे सीधे आगे

किसी छेद की खोज में लिए जा रही थी जिससे वह रोशनी में, चमकीली धूप के नीचे पहुँच जाय। विद्रोह उसके पुराने आत्मसमर्पण को बहा ले गया था; यह खान उसे अंधा बना देने के बाद अब उसकी हत्या करना चाहती है? उसका पीछा करने वाली बाढ़ उसके पार्श्व पर चाबुक से मार रही थी और साज की दुमची के स्थान पर उसे काट सी रही थी। लेकिन वह ज्यों-ज्यों गहराई में घुसता जाता था गलियारे संकरे, छतें नीची और दीवारें फैलती जाती थीं। हर दिक्कत के बावजूद वह सरपट भागता ही जाता था और अपने अवयवों के टुकड़े लकड़ियों पर छोड़ता जाता था। हर ओर से खान उसको दबाती हुई उसका गला घोंट कर मार डालती प्रतीत होती थी।

जब वह कैथराइन और लॉतिये के नजदीक पहुँचा तो उन्होंने देखा कि वह दो चट्टानों के बीच में दबा जा रहा है। उसने जोर दिखाकर अपने आगे की दो टाँगें तोड़ डाली थीं। अन्तिम प्रयास में वह कुछ मीटर और घिसटा लेकिन उसका शरीर उससे न गुजर सका और वह वहीं जमीन से चिपका सा रह गया। उसका खून चूता हुआ धड़ आगे निकला था। वह अपनी बड़ी-बड़ी भयग्रस्त आँखों से अब भी जोर लगा रहा था। पानी तेजी से उसके ऊपर आ गया। वह उसी प्रकार की मृत्यु-यंत्रणा से हिनहिनाने लगा जिस प्रकार उसके अन्य साथी अस्तबल में मर गए थे। यह डरावने दुख का एक नजारा था। यह बुड्ढा जानवर अंगों में क्षतिग्रस्त और स्थिर इस गहराई में, रोशनी से दूर मृत्यु से जूझ रहा था। बाढ उसकी अयाल को डुबो रही थी और वह बराबर करुण क्रन्दन करता ही जाता था। अब उसकी आवाज में, उसकी हिनहिनाहट में कुछ रूखापन आ गया था, उसका बड़ा, चौड़ा मुँह अब भी पानी के बाहर था। आखिरी बार पानी के भीतर किसी वस्तु के गिरने की हल्की छपाके की आवाज हुई और फिर गहरी शांति छा गई।

'ओ, मेरे भगवान! मुझे ले चलो!' कैथराइन ने सुबकते हुए कहा। 'हे, ईश्वर! मैं डर गई हूँ। मै मरना नहीं चाहती। मुझे ले चलो! मुझे ले चलो!'

उसने मौत देख ली थी। गिरा हुआ कूपक, बाढ़ से भरी हुई खान, किसी से भी वह इतनी भयभीत नहीं हुई थी जितनी बेटली की इस मृत्यु-यंत्रणा की चीखों से। ऐसा प्रतीत होता था कि वह लगातार इन्हे सुन रही है। उसके कान उसी आवाज से बज-से रहे थे। उसकी सारी देह काँप रही थी।

'मुझे ले चलो! मुझे ले चलो!'

लॉतिये ने उसे पकड़कर उठा लिया; वास्तव में अब विलम्ब की गुंजायश नहीं थी। वे कंधे तक भीगे-भीगे चिमनी के मार्ग से ऊपर चढ़ गए। उसे उसकी मदद को विवश होना पड़ा क्योंकि उसमें लकड़ी में झूलने तक की सामर्थ्य नहीं रह गई

थी। तीन बार उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि वह उसके हाथ फिसल जाने से वह उस गहरे समुद्र में गिरी जा रही है जिसका ज्वार नीचे गर्जन-तर्जन कर रहा है। जब वे पहले गलियारे मे पहुँचे तो उन्हे कुछ साँस लेने का समय मिला क्योंकि अभी पानी यहाँ नहीं पहुँचा था। पानी पुनः दीखने लगा और उन्हें फिर ऊपर झूलना पड़ा। एक घंटे तक इस प्रकार चढ़ने का क्रम जारी रहा। प्रत्येक मार्ग पर बाढ उनका पीछा कर रही थी और लगातार उन्हें ऊपर चढ़ने को बाध्य कर रही थी। छठे तल पर कुछ ठहराव से उन्हें ऐसी आशा हुई कि पानी स्थिर होता जा रहा है। लेकिन और तेजी से बढाव शुरू हुआ, और उन्हे सातवें और फिर आठवें तल पर चढ़ना पड़ा। सिर्फ एक तल बाकी बचा था। जब वे उस पर भी चढ गए तो वे चिन्ता के साथ प्रत्येक सेंटीमीटर पानी के बढ़ाव को देख रहे थे। अगर यह थमा नहीं तो उन्हे भी बुड्ढे घोडे की तरह मरना होगा। वे छत मे चिपके होंगे और उसके पेट में पानी भरा होगा।

हर क्षण चट्टानों के धँसने की प्रतिध्वनि गूँज रही थी। समूची खान हिल उठती थी और भयंकर बाढ़ उसकी आतें तोडकर उन्हे उदरस्थ कर लेती थी। गलियारों की छोर पर हवा का दबाव पीछे को जाकर बड़ी जोरो से चट्टानों और मिट्टी को बिखेरता विस्फोट कर उठता था।

लगातार चट्टानों के गिरने से भयभीत कैथराइन बगैर रुके हुए कुछ शब्द बड़बड़ाती हुई दोनों हाथों को एक दूसरे से बाँधे हुए थी।

'मै मरना नही चाहती ! मैं मरना नहीं चाहती है !'

उसे भरोसा दिलाने के लिए लॉतिये ने कहा कि अब पानी आगे नहीं आ रहा। वे लगातार छह घंटे से भागते आ रहे हैं, वे शीघ्र बचा लिए जायेंगे। उसने छह घंटे अन्दाज से ही कह दिया था क्योंकि वे हिसाब तो भूल ही गए थे। वस्तुतः उनके ग्विलोमें सन्धि मे लगातार चढ़ने मे उन्हें सारा दिन लग गया था।

भीगे हुए, काँपते वे वहाँ बैठ गए। उसने बगैर शरम के अपने कपड़े खोल लिए और उन्हें मरोड़ कर पानी निकालने लगी। तब उसने फिर ब्रिजिस और जाकेट पहन ली और उन्हे बदन पर ही सूखने को छोड़ दिया। चूंकि उसके पाँव नंगे थे युवक ने उसे अपने बूट पहनने को दे दिए। अब वे धैर्यपूर्वक इन्तजार कर सकते थे; उन्होंने बत्ती की लौ बहुत मंदी कर दी थी और रात के चिराग की तरह उसे मंदी जलते छोड़ दिया था। लेकिन उनके पेट में भूख से पीड़ा हो रही थी और वे महसूस कर रहे थे कि वे भूखों मर रहे है। अब तक उन्हें अहसास भी नहीं हुआ था कि वे जीवित हैं। नाश्ते से पहले यह दुर्घटना हुई थी और अब उन्होंने पाया कि पानी से फूल कर उनकी रोटी और मक्खन की लुग्धी बन

गई है। उसके अपना हिस्सा लेना स्वीकार न करने पर वह नाराज हो उठी। जब वह खा चुकी तो थकान के मारे एकदम ठंढी धरती पर ही सो गई। उसे अनिद्रा की सी शिकायत हो चली थी और वह अपने माथे को दोनों हाथों के बीच में दिये एकटक उसकी ओर देख रहा था।

इस प्रकार कितने घंटे गुजर गए इसका उसके पास हिसाब नहीं था ? वह सिर्फ इतना ही जानता था कि जिस छेद से वे चढ़े थे उससे बाढ़ को पुनः अपनी ओर बढ़ते हुए पाया। पहले एक साँप के समान रेंगती हुई रेखा खिंची। तब वह काली, जानवर की छाया की भाँति डोलती शीघ्र ही उनके पास पहुँच गई जिससे सोती हुई लड़की का पाँव छू गया। चिन्तित होकर वह उसे जगाने से हिचक रहा था। क्या इस मदहोश निद्रा से जगाना उसके साथ क्रूरता न होगी, जिसमें शायद वह खुली हवा और चमकीली धूप के नीचे के जीवन का स्वप्न देख रही हो ? अलावा इसके, वे जा भी कहाँ सकते है ? उसने सोचा और उसे याद आया कि खान के इस भाग में ऊपर हवा निकालने के लिए बनाया गया मार्ग एक-दूसरे तल से एक छोर से जुड़ा है। इस रास्ते तो बाहर निकला जा सकता है। उसने उसे जब तक संभव हो सका सोने दिया और बाढ को बढ़ते देखता रहा और इन्तजार करता रहा कि उससे उन्हें भागने को मजबूर होना पड़े। अन्त में उसने आहिस्ता से उसे उठाया और वह काँप उठी।

'आह, मेरे ईश्वर ! यह मैं स्वप्न तो नहीं देख रही ! फिर पानी चढ़ना शुरू हो गया, हे ईश्वर !'

'नहीं, शांत हो जाओ', उसने कान में कहा। 'हम यहाँ से निकल सकते है, विश्वास रखो।'

ऊपर चढ़ने के मार्ग तक पहुँचने के लिए उन्हें दुगुने वेग से भागना पड़ा, फिर वे कंधे तक भीग गए और फिर चढ़ाई शुरू हुई। अब इस छेद से जो समूचा लकड़ी का बना था और सौ मीटर लम्बा था, चढाई और अधिक खतरनाक थी। पहले उन्होंने लोहे के तार को खींच कर एक गाड़ी से उसे नीचे बाँधना चाहा। लेकिन इस डर से कि उनके चढ़ाई के दौरान में वह गिरा तो वे कुचल जायँगे, उनकी उसे छूने की हिम्मत नहीं हुई। लेकिन तार खिसका नहीं, किसी खराबी से वह अटका था। वे उस छेद के अन्दर चले गए और रास्ते में पड़े तार को इस्तेमाल करने की हिम्मत न कर पा रहे थे। वे अपने नाखूनों से मुलायम ढाँचे को कुरेदते ऊपर चढ़ रहे थे। वह नीचे था और अपने सिर से लड़की को सम्भाले था ताकि वह फिसल कर गिर न पड़े। एकाएक बल्ली के टुकड़े उनके रास्ते में अड़े नजर आये। उसके ऊपर कुछ मिट्टी गिरी हुई थी जिससे ऊपर जाने का

रास्ता बंद हो गया था। सौभाग्य से वहाँ एक द्वार खुला था और वे एक मार्ग में घुस गए। एक लैंप का प्रकाश अपने सामने देख वे आश्चर्य में पड़ गए। एक व्यक्ति जंगली तरीके से उन पर चिल्लाया—

'बड़े चालाक बनते थे, मेरी ही तरह मूर्ख निकले !'

उन्होंने चवाल को पहचान लिया, जो उन्ही की तरह ऊपर चढ़ने के मार्ग के मिट्टी गिरने से बंद हो जाने के कारण वहीं घिर गया था; उसके साथ आने वाले अन्य दो साथी रास्ते ही में छूट गए थे, उनके भेजे खुल गए थे। उसकी कोहनी में चोट आई थी लेकिन उसमें घुटनों के बल पीछे जाकर उनके लैंप और उनकी रोटी तलाश कर उसे चुरा लेने की हिम्मत थी। जैसे ही वह वहाँ से निकला था उसके पीछे आखिरी बार शिलाखंड गिरने से रास्ता पूर्णरूप से बंद हो गया था।

वह तत्काल कसम खाने लगा कि वह अपने भोजन में उन लोगों को हिस्सा नहीं दे सकता जो कब्र से निकल कर आये है। वह तत्काल उनका भेजा निकाल देगा। तब उसने भी उन्हे पहचान लिया। उसका गुस्सा शांत हो गया और वह एक क्रूरतापूर्ण खुशी की हँसी हंसने लगा।

'आह, यह तुम हो कैथराइन ? तुमने अपनी नाक कटा ली है और फिर तुम अपने प्रेमी का साथ चाहती हो। अच्छा, अच्छा ! हम दोनों साथ साथ खेलेंगे।'

उसने लाँतिये को न देखने का बहाना बनाया। इस नयी मुठभेड़ से परेशान लाँतिये ने ऐसी भंगिमा बनाई कि वह पुटर की रक्षा करेगा, जो स्वयं उससे चिपकी जा रही थी। उसने स्थिति को स्वीकार कर लिया था। इस प्रकार बोलते हुए कि मानो वे दोनों अच्छे दोस्तों की तरह एक दूसरे से एक घंटा पहले जुदा हुए हों, उसने सहज भाव से कहा :

'तुमने नीचे देखा है ? तब हम कटानों से नहीं गुजर सकते ?'

चवाल अब भी क्रोध मे भरा था—

'आह, कटानें ! वे अन्दर भी गिर गई है। हम दो दीवारों के बीच ऐसे घिरे है जैसे चूहेदानी के बीच चूहा। लेकिन तुम अगर अच्छे ड्राइवर हो तो तुम छेद से ऊपर जा सकते हो।'

वास्तव में, पानी बढ़ रहा था; वे उसके लहराने की आवाज सुन रहे थे। उनके पीछे जाने का रास्ता कट गया था और वह सच कह रहा था कि यह एक चूहेदानी के समान था। सामने गलियारे की छोर की रुकावट थी और पीछे गिरी हुई मिट्टी का ढेर। और कही गुंजायश नहीं थी। तीनों दीवार से चिपके हुए थे।

'तब तुम रहोगे ?' चवाल ने ताना मारते हुए कहा। 'अच्छा, सबसे बढ़िया यही होगा कि तुम मुझे अकेला छोड़ दो। मैं कभी भी तुमसे न बोलूंगा। अभी भी यहाँ दो पुरुषों के लिए गुंजायश है। हम जल्दी ही देखेंगे कि कौन पहले मरता है, बशर्ते वे लोग हमें बचाने न आ जायं, जो कि जरा मुश्किल ही दीखता है।'

नवयुवक बोला 'अगर हम दीवार पर प्रहार करें तो शायद उन्हें सुनाई दे।'

'मैं प्रहार करते-करते थक गया हूँ। लो, इस पत्थर से तुम भी कोशिश करो।'

लॉतिये ने बालुवा-पत्थर उठा लिए जिसे अगले ने तोड़कर रख रखा था और गलियारे के छोर पर उसने उन्हें कोयले की भीत से दे मारा। तब उसने सुनने के लिए कान लगाया। बीस बार उसने ऐसा किया लेकिन उत्तर नहीं आया।

इस दौरान में चवाल शांति से अपनी गृहस्थी जमा रहा था। पहले उसने तीनों लैंपों को दीवार के सहारे जमाया। सिर्फ एक को जलाकर, दो को बाद के इस्तेमाल के लिए रख छोड़ा। बाद मे उसने लकड़ी के एक टुकड़े पर दो टुकड़े रोटी-मक्खन के रखे, जो अब बच गए थे। यह आला था। इससे वह मजे मे दो दिन चला सकता था। उसने मुड़कर कहा—

'तुम्हे मालूम है, कैथराइन। इसमे से आधा तुम्हारे लिए है जब तुम्हे भूख, लगेगी खा लेना।'

नवयुवती चुप रही। इन दो रकीबो के बीच अपने को पाकर उसका दुख उसकी उदासी और भी बढ़ गई थी।

और उनकी भयानक जिन्दगी शुरू हुई। न चवाल ही बोला और न लॉतिये ही। वे दोनों जमीन पर एक दूसरे से थोड़े फासले पर बैठे थे। पहले से इशारा पाकर दूसरे ने अपना लैंप बुझा दिया, यह फिजूलखर्ची थी; तब वे दोनों चुपचाप विचारों में डूब गए। कैथराइन लॉतिये के पास लेटी हुई थी। अपने पुराने प्रेमी की कनखियों से उसे बेचैनी महसूस हो रही थी। घंटे बीतने लगे, और उन्होंने बढ़ते हुए पानी का हल्का कलकल शब्द सुना। उधर समय-समय गहरे धक्के और दूसरी गूंजने वाली प्रतिध्वनि खान के आखिरी स्मृतिचिन्हों के ध्वस्त होने की सूचना दे रही थी। जब लैंप का तेल खतम हो गया तो उन्हें जलाने के लिए दूसरा खोलना पड़ा। एक क्षण को वे 'फायरडैंप' के भय से घबरा गए। परन्तु वे अंधेरे में रहने की अपेक्षा विस्फोट से उड़ा दिया जाना ज्यादा पसंद करते। कोई विस्फोट नहीं हुआ। वहाँ कोई 'फायरडैंप' नहीं था। वे फिर लेट गए और घंटे इसी तरह गुजरने लगे।

एक आवाज से कैथराइन और लॉतिये जागे, उन्होंने अपने सिर ऊपर उठाये। चवाल ने खाने का निश्चय किया था। उसने रोटी-मक्खन का आधा हिस्सा काट

डाला था और धीरे-धीरे उसे चबा रहा था और कोशिश कर रहा था कि उसे निगल जाने के लालच को रोक पाये। भूख से परेशान वे उसकी ओर देखने लगे।

'अच्छा, तुम इन्कार कर रही हो ?' उसने लड़की से अपने उत्तेजना दिलाने वाले लहजे में कहा। 'तुम गलती कर रही हो।'

वह उसकी बात न मान ले इसलिए लड़की सिर नीचा किये रही। उसके पेट में इतनी तीव्र पीड़ा हो रही थी कि उसकी आँखों में आँसू छलछला आये। लेकिन वह समझ रही थी वह क्या माँग रहा है ? सुबह उसने उसकी गर्दन के पास उसाँस फेंकी थी। वह उसे पर-पुरुष के पास देखकर पुरानी रकाबत और उसे भोगने की तीव्र इच्छा के वशीभूत हो गया था। जिन कनखियों से वह उसे बुला रहा था उनमें एक ज्वाला सी थी जिसे वह अच्छी तरह जानती थी; ईर्ष्या की एक ज्वाला, जिसमें वह उसकी ओर घूंसा तानता हुआ उस पर आरोप लगाया करता था कि वह अपनी माँ के किरायेदार के साथ घिनौने व्यभिचार में संलग्न रहती है। वह उसकी बात पर झुकने को तैयार नहीं थी। उसके पास लौटने में वह इसलिए घबरा रही थी कि इससे इस संकरी गुफा में यह दोनों पुरुष एक दूसरे पर टूट पड़ेंगे, जहाँ कि वे तीनों भयंकर विपत्ति में पड़े थे। हे ईश्वर ! वे भाई-चारे से रहते हुए साथ ही साथ मरना क्यों पसंद नहीं करते ?

चचाल से एक ग्रास रोटी माँगने से बेहतर लाँतिये भूखों मरना पसंद करता था। यह खामोशी अब खलने लगी थी। धीरे-धीरे बीतने वाली इन मनहूस घड़ियों में भविष्य लम्बा खिंचता प्रतीत होता था, बिना किसी आशा के, बिना उम्मीद के। अब उन्हें यहाँ एक साथ बंद पड़े हुए एक दिन गुजर चुका था। दूसरा लैंप भी बुझने पर आ गया था और उन्होंने तीसरा जलाया।

चचाल रोटी-मक्खन का दूसरा टुकड़ा खाने लगा और चिल्लाया—

'आओ तब, बेवकूफ ?'

कैथराइन काँपी। उसे स्वतंत्र छोड़ देने के लिए लाँतिये ने करवट बदल ली। तब, जब वह नहीं उठी, उसने धीरे से उससे कहा—

'जाओ, मेरी बच्ची।'

आँसू, जो अब तक रुके हुए थे, बाँध की तरह फूट पड़े। वह बड़ी देर तक सुबकियाँ लेती रही। उसमें उठने की शक्ति न रह गई थी। उसे अब भूख भी महसूस नहीं हो रही थी, उसके तमाम शरीर में एक प्रकार की पीड़ा हो रही थी। वह खड़ा हुआ आगे-पीछे चल रहा था और कोयले पर चोटकर साथियों का ध्यान आकृष्ट करने का निष्फल प्रयास कर रहा था। उसे इस शेष जीवन पर, जिसे कि उसे अपने एक ऐसे रकीब के साथ बिताने को मजबूर होना पड़ रहा था जिससे

वह बेहद नफरत करता था, क्रोध आ रहा था। एक दूसरे से दूर मरने के लिए पर्याप्त जगह भी नहीं थी। दस कदम आगे बढ़ने पर उसे फिर अपने रकीब के पास तक लौटना पड़ता था। और वह, वह अभागी लड़की, जिसको लेकर वे धरती पर भी लड़े थे, वह उसकी होगी जो अधिक देर जियेगा। वह पहले मर गया तो यह व्यक्ति उसे उससे चुरा लेगा। इसका कोई अन्त नहीं था; घंटे पर घंटे बीतते जा रहे थे, विद्रोहात्मक विभेद असह्य हो रहा था। अपनी सांसों की विषाक्त हवा और आवश्यकताओं की पूर्ति के अभाव मे क्रोधित सा वह दो बार चट्टानों की तरफ इस वेग से गया मानो उन्हें अपने घूंसे से तोड़ डालेगा।

दूसरा दिन भी बीत गया, और चवाल कैथराइन के पास बैठा हुआ उसके साथ अपनी रोटी के आखिरी टुकड़े का हिस्सा बंटा रहा था। वह बड़े कष्ट से उसे चबा रही थी और उसने प्रत्येक कौर की कीमत अपने चुम्बनों से अदा कर ली थी। उसमें एक प्रकार की हठपूर्ण ईर्ष्या भरी थी और वह दूसरे आदमी की उपस्थिति मे भी उसके साथ संभोग करने से पहले मरना नहीं चाहता था। थकान के मारे वह चुपचाप पड़ी हुई थी। लेकिन जब वह उसको दबाने लगा तो उसने शिकायत की :

'ओह ! मुझे छोड़ दो ! तुम मेरी हड्डियाँ तोडे डाल रहे हो।'

लॉतिये ने काँपते हुए अपना माथा एक लकड़ी के सहारे टिका दिया था ताकि वह देख न सके। वह जंगली की तरह झपटता आया—

'उसे छोड़ दो, भगवान् कसम !'

'तुम्हे इससे क्या मतलब ?' चवाल बोला, 'यह मेरी औरत है, मेरा ख्याल है यह मेरी है।'

वह फिर उसे दबाकर चुम्बन लेने लगा और बहादुरी सी जतलाते हुए अपनी भूरी मूछों से उसके अधरों को बुरी तरह कुचलने लगा और लॉतिये से बोला : 'क्या तुम हमें अकेला रहने दोगे, क्यों ? क्या तुम मेहरबानी कर के उस ओर मुंह फेर लोगे जबकि हम कुछ काम करने हों ?'

लेकिन लॉतिये होंठों पर जबान फेर कर चिल्लाया : 'अगर तुमने इसे नहीं छोड़ा तो मैं तुम्हें मार डालूंगा ?'

दूसरा व्यक्ति तत्काल उठ खड़ा हुआ क्योंकि अगले की आवाज से उसे पता चल गया था कि वह मरने-मारने को उद्यत है। मृत्यु उन्हे बहुत विलम्ब से धीरे-धीरे आती प्रतीत होती थी। यह जरूरी था कि उनमें से एक तत्काल अपनी जगह खाली कर दे। यह पुरानी रकाबत की लड़ाई थी जो यहाँ फिर लड़ी जा रही थी। इस जमीन के गर्त में, जहाँ कि शीघ्र ही वे मर कर एक दूसरे की बगल मे लेट

जायँगे और वहाँ इतनी कम जगह थी कि वे बगैर चोट खाये घूंसा भी नहीं तान पाते थे।

'सम्भलो !' चवाल गुर्राया। 'इस बार मैं तुम्हें खत्म करूँगा।'

इस क्षण लॉतिये पागल हो उठा। उसकी आँखों से लाल चिनगारियाँ निकलती प्रतीत होती थीं; उसका सीना खून के दौर से भर गया था। हत्या कर डालने की इच्छा उसे शारीरिक आवश्यकता महसूस हो रही थी, उस खाँसी के दौर की भाँति जिसके बाद कफ निकलता है। उसकी इच्छाशक्ति के प्रतिकूल, पैतृक रोग के रूप में यह भावना उसके मन में उठी थी और वही बाहर फूट रही थी। उसने दीवार से एक सिलेटी कोयले का एक बड़ा सा भारी टुकड़ा पकड़ कर उसे हिला कर निकाल डाला और दोनो हाथों से दस गुना जोर लगाकर उसे चवाल के खोपड़े पर दे मारा।

अगले को पीछे कूदने का भी मौका नही मिला। वह गिर पड़ा। उसका चेहरा कुचल गया था और भेजा फट गया था। खोपड़ी से खून निकलकर, स्रोत से फूट पड़ने वाले पानी के फव्वारे की तरह, गलियारे की छत पर छिटक गया था। तत्काल वहाँ एक धारा सी बहने लगी, जो लैंप के धुंधले प्रकाश में प्रतिबिम्बित हो रही थी। अंधकार इस कंदरा मे आधिपत्य जमाता जा रहा था और उसका शरीर, खुरदरे कोयले के एक बडे टुकड़े की भाँति काला और निर्जीव धरती पर पड़ा था।

झुककर, आँखें फाड़ते हुए, लॉतिये ने उसे देखा। तब क्या वह मर गया ? उसने उसे मार डाला ? पुराने जितने भी संघर्ष उसने किये थे उनकी बातें व्याकुलता से उसकी स्मृति में आ रही थी। उसकी नसो मे छिपे हुए उस जहर, धीरे-धीरे पीढ़ी-दर-पीढ़ी उसके खून मे जमा होने वाले मादकपेय के खिलाफ उसके निरर्थक संघर्ष की बातें उसे याद आई। उसे इस समय सिर्फ भूख का नशा था; उसके माता-पिता द्वारा प्रदत्त शराबखोरी का छिपा हुआ नशा उसके लिए काफी था। इस हत्या के आतंक से उसके रोंगटे खड़े हो गए। उसको शिक्षा के ज्ञान से अनुभूत होने वाले एक प्रतिरोध के बावजूद, एक खुशी सी दिल में हो रही थी। एक पशुवत खुशी कि अन्त में उसकी भूख शांत हो गई। उसे शक्तिशाली पुरुष होने का गर्व भी हो रहा था। छोटे सैनिक की सूरत उसकी आँखों के आगे नाची, जिसका गला छोटे बच्चे के चाकू ने साफ कर दिया था। अब, उसने भी हत्या कर डाली है। लेकिन कैथराइन ने सीधी खड़ी होकर एक भयानक चीख मारी—

'हे ईश्वर ! यह मर गया !'

'क्या तुम्हें दुःख हो रहा है ?' लॉतिये ने नाराजी से पूछा।

उसका गला भर आया और वह घिघियाने लगी। तब लड़खड़ाते हुए उसने उसकी बाँहें पकड़ लीं।

'आह! मुझे भी मार डालो! आह, हम दोनों को साथ ही मरने दो!'

उसने उसका आलिंगन किया और उसकी गर्दन में झूलने लगी। युवक ने भी उसका आलिंगन किया और वे आशा करने लगे कि वे साथ ही मरेंगे। लेकिन मौत को जल्दी नहीं थी, उन्होंने फिर बाँहें अलग-अलग कर लीं। तब, वह अपने हाथों से अपनी आँखें छिपाये रही और उसने उसकी लाश को घसीट कर पेंदे में फेंक दिया क्योंकि वहाँ जगह तंग थी और उन्हें अभी वहाँ रहना था। अपने पाँवों के नीचे लाश रखे हुए उन लोगों को वहाँ जीवन असंभव मालूम पड़ता था। और जब उन्होंने ऊपर आने वाले झाग के बीच में लाश के कूदने की छपाक की आवाज सुनी तो वे बहुत घबराये। तब, क्या छेद में भी पानी भर आया है? उन्होंने देखा कि पानी गलियारों में भर रहा है।

तब एक नया संघर्ष आरंभ हो गया। उन्होंने आखिरी लैंप जला लिया था। इस फर्श को रोशनी पहुँचाते-पहुँचाते वह बुझता प्रतीत होता था और बाढ़ का पानी निरंतर बढ़ता ही जा रहा था। पहले उनके टखनों तक पानी आया, फिर उनके घुटने भींगने लगे। मार्ग ढालवाँ चला गया और उन्होंने ऊपर की ओर चढ़ते हुए कोने में जाकर शरण ली। इससे उन्हें कुछ घंटों तक मुक्ति मिली। लेकिन फिर बाढ़ ने उन्हें पकड़ लिया और वे कमर-कमर नहा गए। आखिरी छोर पर खड़े हुए, उनकी हड्डियाँ चट्टान से लगी हुई थीं और वे उसे निरंतर बढ़ते हुए देख रहे थे। जब वह उनके मुँह तक पहुँच जायगी तो सब खत्म हो जायगा। लैंप, जो ऊपर बाँध दिया गया था, छोटी-छोटी लहरों के तेजी से बढ़ाव पर पीली रोशनी फेंक रहा था। वह पीला पड़ता जा रहा था और एक विलुप्त होते हुए अर्धव्यास के अलावा वे किसी चीज को पहचान नहीं पा रहे थे। ऐसा प्रतीत होता था कि बाढ़ अपने बढ़ने के साथ-साथ अंधकार भी ले आई है; और एकाएक वहाँ पूर्ण अंधकार हो गया। अपनी तेल की आखिरी बूंद तक उगलने के बाद लैंप बुझ चला था। अब वहाँ धरती के अन्दर हमेशा बनी रहने वाली पूर्ण रात्रि, पूर्ण अंधकार छा गया था। यह धरती के भीतर का ऐसा अंधकार था जिसमें उन्हें हमेशा के लिए सो जाना पड़ेगा और कभी भी सूर्य की चमक उनकी आँखें न देख पायेंगी।

'भगवान् कसम!' लाँतिये ने मंद स्वर में कहा।

कैथराइन ने, अंधकार को देखते हुए, लाँतिये की शरण ले ली थी। वह कान में बात करती सी पुरानी किंवदन्ती सुनाने लगी—

'मौत लैंप को बुझा रही है।'

फिर भी इस खतरे के बावजूद उसके अवयव संघर्ष ले रहे थे। जीवित रहने की उनकी इच्छा बलवती होती जा रही थी। वह बड़े जोरों से लैंप के हुक्से कोयले की दीवार मे स्थान बनाने लगा, जबकि वह अपने नाखूनों से उसे सहायता कर रही थी। उन्होंने ऊँचे स्थान मे एक बेंच सी बना डाली और फिर दोनों ही भूल कर उस पर चढ़ गए। उनके वहाँ बैठने मात्र को जगह बनी थी और वे कमर झुकाये, पाँव लटकाये बैठे थे क्योंकि कोयले की यह गुम्बद उन्हें सिर नीचा रखने को विवश करती थी। अब वे सिर्फ अपने टखनो के पास बर्फीली जलन का अहसास कर रहे थे। बेंच, जो खुरदुरी थी, नमी से फिसलन वाली बन गई थी और उन्हे अपने को फिसलने से रोकने के लिए कोयले की गाँठों को पकड़े रहना होता था। यह अन्त था। इस छोर तक पहुँचने के बाद वे अब हिल नहीं सकते थे। थके-मांदे, भूखे वे अब कर ही क्या सकते थे? उन्हे अंधकार से विशेष परेशानी हो रही थी। इससे वे आती हुई मौत को नहीं देख पा रहे थे। वहां गहरी खामोशी थी। पानी पीने से तृप्त सी होकर अब खान मे उसका अधिक बढ़ाव रुक गया था। उनके पाँवों के नीचे गलियारों की गहराइयों मे अब चुपचाप आने वाले ज्वार से फूलने वाले समुद्र के अलावा और किसी वस्तु की अनुभूति उन्हें नहीं हो रही थी।

एक के बाद एक कर काले घंटे गुजरते चले जा रहे थे। लेकिन वे समय का अन्दाजा लगाने में अधिकाधिक भ्रम में पड़कर कितना समय गुजरा इसका अन्दाजा नहीं आंक पा रहे थे। उनकी परेशानी, उनका कष्ट, जिससे वे मिनटों के विलम्ब से गुजरने का अनुभव कर सकते थे, तेजी से उन्हे भार-स्वरूप प्रतीत होता जा रहा था। वे सोच रहे थे कि उन्हें बंद हुए दो दिन और एक रात गुजरी होगी, जबकि वस्तुतः तीसरा दिन भी समाप्त हो रहा था। मदद की समस्त आशा समाप्त हो चली थी; कोई नहीं जानता कि वे वहां है? कोई उन तक नीचे नहीं आ सकता। एक बार, आखिरी समय उनकी इच्छा हुई कि कोयले पर प्रहार कर आवाज लगाई जाय। लेकिन पत्थर तो पानी के नीचे पड़े थे। अलावा इसके, उनकी सुनेगा भी कौन?

कैथराइन अपने दुखते हुए माथे को संधि से लगाये थी। तब वह चौंक कर बैठ गई।

'सुनो।' उसने कहा।

पहले लॉतिये ने सोचा कि वह हमेशा बढ़ती हुई बाढ़ के धीमे शब्द के बारे में कह रही होगी उसे चुप कराने के लिए उसने झूठ बोला—

'तुम मेरी की हुई आवाज सुन रही हो, मै अपने पाँव हिला रहा हूं।'

'नहीं; नही; यह नहीं। वहां सुनो !'

और उसने अपना कान कोयले से लगाया। वह समझ गया, उसने भी वैसा ही किया। वे सांस रोके कुछ क्षण तक बैठे सुनते रहे। तब, बहुत दूर, वह धीमे स्वर में आने वाले तीन प्रहारो की आवाज उन्होंने दीर्घ अवधि के बाद सुनी। लेकिन उन्हें अब भी संदेह था; कि उसके कान बज रहे होंगे। शायद यह जमीन का धसकना हो। और, उनकी समझ में नही आ रहा था कि वे किस चीज से प्रहार कर प्रत्युत्तर दें।

लॉतिये को एक विचार सूझा।

'तुम्हारे पास बूट है, उन्हे उतार डालो और हील की तरफ से दीवार पीटो।'

उसने प्रत्युत्तर दिया। संकट में पड़े खनिकों के सहायता की पुकार के रूप मे कोयले पर प्रहार किया; और फिर सुनने की कोशिश की। फिर दूर से आने वाले तीन प्रहार की आवाज को उन्होंने पहचाना। बीस मर्तबा उन्होंने इस क्रम को दुहराया और बीस ही बार प्रहारों से उत्तर मिला। वे खुशी से रोते हुए एक दूसरे से लिपट गए। आखिरकार उनका पता साथियों को चल ही गया, वे आ रहे हैं। एक वर्णनातीत खुशी और प्रेम से वे आशान्वित हो सारे कष्ट भूल गे गए। मानो उनके बचाने वालो को सिर्फ एक अंगुली से दीवार चीर कर उन्हें मुक्त कर लेना है।

'आहा !' उसने प्रसन्नता से कहा—'क्या यह भाग्य की बात नहीं थी कि मैने अपना सिर दीवार से टिकाया ?'

'ओह, तुम्हारे कान तेज है !' वह बोला, 'अब मुझे कुछ नहीं सुनाई दे रहा है।'

उस क्षण से वे एक-दूसरे को आराम देते हुए बारी-बारी से दीवार पर कान लगाये, प्रत्येक संकेत का उत्तर देने को तैयार रहने लगे। उन्हे शीघ्र ही गैंती चलाने की आवाज सुनाई पड़ी। उन तक पहुँचने का काम शुरू हो रहा था। एक गलियारा खोदा जा रहा था लेकिन उनकी खुशी शीघ्र ही समाप्त हो गई। वे एक दूसरे को दिलासा देने के लिए व्यर्थ हँसते थे। निराशा धीरे-धीरे उनके अन्दर बढ़ रही थी। पहले-पहले उनकी लम्बी चर्चा छिड़ती थी; स्पष्ट है कि रिक्वीलॉ की ओर से उन तक पहुँचने का प्रयास हो रहा है। गलियारा नीचे की ओर उतर रहा है; शायद कई गालियारे खुद रहे है, क्योंकि हमेशा तीन व्यक्ति खोदने में लगे रहते हैं। तब वे कम बातें करने लगे, जब उन्होंने उन्हें और उनके

साथियों के बीच में आने वाले भारी शिलाखंड का हिसाब लगाया तो वे चुप हो गए। वे मौन हो कर अपने भाव व्यक्त करते जाते थे, इस बड़े खंड को चीर कर एक खांचक को उन तक पहुँचने में कितने दिन लगेंगे इसका हिसाब वे प्रत्येक दिन गिन कर लगा रहे थे ? वे जल्दी ही पहुँचते वाले नहीं है, उनके पहुँचने तक तो उन्हें बीस बार मरने का समय मिलेगा। इस द्विगुणित कष्ट में वे परस्पर एक भी शब्द बोलने की हिम्मत न कर, बगैर आशा के, सिर्फ औरों को उनके जीवित होने की खबर देने की यंत्रवत् आवश्यकता से प्रेरित हो कर बूटों से 'पुकार' का उत्तर देते थे।

इस प्रकार एक दिन बीता, दो दिन बीते। उन्हें खान के पेंदे में छः दिन हो गए थे। पानी उनके घुटनों तक आकर स्थिर हो गया था। न बढ ही रहा था; न घट ही रहा था, और इस ठंडे पानी में उनके टखने गलते हुए प्रतीत होते थे। निःसंदेह घंटे, दो घंटे के लिए वे उन्हें पानी से बाहर भी रख सकते थे परन्तु ऐसा करने पर उन्हें इस कदर मुड़ी-मुड़ी होकर लेटना पड़ता था कि उनकी स्थिति और भी असुविधाजनक हो जाती थी और फिर उन्हें पाँव नीचे लटका देने पड़ते थे। हर दस मिनट बाद वे एक झटके से पीछे हटते हुए फिसलने वाली चट्टानों के उभार थाम लेते थे। कोयले के कोने उनकी हड्डियों में चुभते थे और उनके सिर पर चोट न लगे इसलिए उन्हें अपनी गर्दन बराबर झुकाये रहना पड़ता था जिससे उनकी गर्दन के पिछले हिस्से की नसों में बड़ी तकलीफ होती थी। उनकी घुटन भी बढ़ती जाती थी। पानी के चढ आने से हवा का दबाव वहाँ बढ़ गया था। उनकी आवाज उन्हें बड़ी दूर से आती प्रतीत होती थी। उनके कानों में भन-भनाहट की आवाज आती थी। वे बड़े जोरों से घंटी सी बजने की आवाज सुनते थे। ओलों की वर्षा के नीचे भेड़ों के झुंड की दुर्दशा की भाँति उनका कष्ट भी बढ़ता ही चला जा रहा था।

पहले-पहल कैथराइन को भूख से बहुत अधिक कष्ट हुआ। वह अपने काँपते हुए हाथों से अपनी छाती दबाती थी। उसकी साँस की आवाज लगातार घर-घराहट के शब्द की भाँति गहरी और पोली चल रही थी मानो चिमटी की पकड़ से उसका पेट चीरा जा रहा हो।

लॉतिये भी उसी कष्ट से घुटन महसूस करता हुआ अंधेरे में अपने हाथों से इधर-उधर कुछ टटोल सा रहा था। जब उसके हाथ आधा सड़ा हुआ लकड़ी का एक टुकड़ा लगा तो उसने नाखूनों से उसे कुरेदा। उसने एक मुट्ठी भर कर पुटर को उसकी लुगदी सी दी, जिसे वह जल्दी-जल्दी निगल गई। दो दिन तक वे कीड़े की खाई लकड़ी के टुकड़े पर रहे और उसे निगल जाने के बाद फिर निराश हो

कर उन्होंने दूसरे तख्तों को, जिनकी लकड़ी अभी मजबूत थी, तोड़ने की कोशिश में अपने हाथों को लोहू-लुहान कर डाला। उनका कष्ट बढ़ गया। वे क्रोधित थे कि वे अपने पहने हुए वस्त्रों के कपड़े को नहीं चबा पा रहे हैं। एक चमड़े की पेटी से, जिसे वह कमर में बाँधा करता था, उन्हें थोड़ा सा सहारा मिला। वह उसमें से छोटे-छोटे टुकड़े अपने दाँतों से काटता और वह उन्हें चबा-चबा कर निगल जाती। इससे उनके जबड़े व्यस्त रहते थे और उन्हें खाने की मृग-मरीचिका बनी रहती थी। तब, जब पेटी खत्म हो गई, वे फिर कपड़े चबाने लगे और घंटों उसे चूसते रहते थे।

परन्तु शीघ्र ही वह तेज यंत्रणा घट गई। भूख सिर्फ एक हल्की गहरी वेदना बन गई थी जो शनैः शनैः उनकी शक्ति को कम कर रही थी। इसमें संदेह नहीं कि अगर पीने के लिये पर्याप्त पानी उन्हें न मिला होता तो वे मर गए होते। उन्हें सहज झुक कर अंजुली से पानी पीना पड़ता था और बार-बार पीने पर भी उन्हें वह प्यास थी जिसे यह तमाम पानी भी नहीं बुझा सकता था।

सातवें दिन कैथराइन जब अपने नीचे झुकी तो उसका हाथ उसके सामने तैरते हुए किसी शरीर से टकराया।

'मैंने कहा, देखो ; यह क्या है ?'

लॉतिये ने अंधेरे में टटोला।

'मैं भी नहीं पहचान पा रहा हूँ; संवीजन-द्वार का पर्दा-सा लगता है।'

वह पानी पीने लगी, लेकिन जब वह दूसरी अंजलि भरने लगी तो फिर शव उसके हाथ से टकराया और वह भयानक रूप से चीख उठी—

'भगवान कसम ! यह वही है।'

'तुम्हारा मतलब किससे है ?'

'वह ! तुम अच्छी तरह जानते हो। उसकी मूंछें मेरे हाथ से छू गईं थीं।'

यह चवाल की लाश थी जो छेद से ऊपर आ कर पानी के प्रवाह में उन तक पहुँच गई थी। लॉतिये ने अपनी बाँह बढ़ाई; उसको भी मूंछों और उसकी टूटी हुई नाक का अहसास हुआ। वह घृणा और भय से काँप उठा। तेज मिचली से कैथराइन ने पेट में भरे हुए पानी की कै कर दी। उसे ऐसा लग रहा था कि वह उस व्यक्ति का खून था।

'ठहरो !' लॉतिये बोला 'मैं इसे दूर धकेले देता हूँ।'

उसने शव को लात मारी और वह दूर चला गया। लेकिन शीघ्र ही उन्होंने उसे फिर अपने पाँवों से टकराते पाया।

'भगवान कसम ! भाग जा।'

और तीसरी बार लॉतिये को उसे छोड़ देना पड़ा। कोई लहर हमेशा उसे वापस ले आती थी। चवाल जायगा नहीं, वह उन्हीं के साथ और उनके विरुद्ध रहना चाहता था। यह बड़ा डरावना साथी था जो वायु को दूषित बना रहा था। उस तमाम दिन उन्होंने पानी नहीं पिया। वे प्यास से बराबर जूझते हुए मरना पसंद करते थे। दूसरे दिन तक जब तीव्र प्यास से तड़पते हुए वे उसे बरदाश्त न कर सके तो उन्होंने प्रत्येक बार शव को धकेलते हुए पानी पिया। उसके भेजे को खोल देना अच्छा नहीं हुआ क्योंकि अपनी ईर्ष्या से ढीठ हो कर उन दोनों के बीच मे आ रहा था। आखीर तक वह वहाँ रहेगा। गोकि वह मर चुका था फिर भी वह दोनों के करीब आने में बाधा बना हुआ था।

एक दिन गुजरा, फिर दूसरा दिन गुजरा। पानी की हर लहर पर लॉतिये को हल्का सा धक्का उस व्यक्ति से लगता था जिसे उसने मार डाला था। वह धक्का एक पड़ोसी के साधारण कुहनी लगने के समान था जो कि अपनी उपस्थिति का स्मरण दिलाता है। वह प्रत्येक बार, जब वह आता, काँप उठता था। वह बराबर उसे फूला हुआ, हरापन लिए हुए उसकी भूरी मूछों और कुचले हुए चेहरे को देखता सा अचेतन रहा था। तब उसे स्मरण ही नहीं रहा। उसने उसे नहीं मारा; दूसरा व्यक्ति तैरता हुआ उसे काट सा रहा था।

कैथराइन अब चीख के लम्बे अनन्त दौरे आने से चित्त पड़ गई थी। अन्त में वह अप्रतिहत निद्रा की स्थिति मे पहुँच गई थी। वह उसे जगाता लेकिन वह कुछ अस्पष्ट शब्द कहती और अपनी पलकें उठाये बगैर तत्काल पुनः सो जाती थी। वह डूब न जाय इस डरसे उसने उसकी कमर में अपनी बाँह लपेट ली थी। अब वह साथियों को प्रत्युत्तर देता था। गेंती का शब्द अब उसे करीब से सुनाई देने लगा था। अब वह उनके प्रहार को अपने पीछे की ओर सुनता था। लेकिन अब उसकी शक्ति भी क्षीण होती जा रही थी; उसमे भी प्रहार करने की हिम्मत नही रह गई थी। वे वहाँ पहुँच गए है यह पता लग जाने से क्यों अपने को परेशान किया जाय? उसे अब इस बात में दिलचस्पी नही रह गई थी कि वे आयें चाहे न आयें। अपनी मूर्छा मे वह घटों उस बात को भूला रहता था जिसका वह इतने दिनों से इन्तजार कर रहा था।

एक बात से उन्हे थोड़ी सी राहत मिली; पानी कुछ घट गया था और चवाल का शव भी उसी के साथ दूर चला गया। पिछले नौ दिनों से उन्हें निकालने का काम चल रहा था। और पहली बार, गलियारे में वे कुछ कदम चले थे जब कि भयानक कमजोरी के चक्कर से वे जमीन पर गिर पड़े थे। वे एक दूसरे के शरीर को छूते हुए, एक दूसरे को बाँहें डाले पागलों की तरह

पड़े थे। वे कुछ सोच-समझ नहीं पा रहे थे और सोच रहे थे कि विपत्ति फिर आने वाली है। हर चीज शांत अवस्था में पड़ी थी। गेंती चलाने की आवाजें भी बंद हो गई थीं।

उस कोने में, जहाँ वे एक दूसरे को थामे हुए अलग-बगल बैठे थे, कैथराइन एक हल्की हँसी हँसने लगी।

'बाहर बहुत अच्छा है। चलो यहाँ से बाहर चलें ?'

लॉतिये ने पहले तो इस पागलपन को दूर हटाने की कोशिश की लेकिन इस रोग के सम्पर्क में आने की वजह से उसका सशक्त माथा भी ठनक रहा था और वह भी वस्तुस्थिति को भूलता जा रहा था। उनकी ज्ञानेन्द्रियों की चेतना विलुप्त सी होती जा रही थी, खास कर कैथराइन की। उसे बुखार था और वह बोलने तथा घूमने की इच्छा से परेशान थी। उसके कानों में बजने वाली घंटियों की सी टनटनाहट अब बहते हुए पानी की कलकल और चिड़ियों के गायन में बदल गई थी। वह कुचली हुई घास की सोंधी महक सी महसूस कर रही थी और अपनी आँखों के सामने से बहते हुए पीले बड़े धब्बों को स्पष्ट देख रही थी। वे इतने बड़े थे कि वह सोच रही थी कि वह घर के बाहर, नहर के किनारे खेतों-चरागाहों की सैर कर रही थी।

'आह। कितना खुशनुमा दिन है ! आओ, हम दोनों साथ रहें; हमेशा-हमेशा के लिए।'

उसने उसे दबा लिया और वह एक आत्मविभोर लड़की की तरह बड़ी देर तक उससे आलिंगन कर उसके शरीर पर हाथ फेरती रही।

'हम कितने बेवकूफ रहे कि इतने दिनों इन्तजार करते रहे। मैं तुम्हें उसी समय से प्यार करने लगी थी और तुम समझते ही नहीं थे, बराबर कतराते थे। तुम्हें याद है, हमारे घर पर उस रात की बात, जब कि हम सो नहीं पाये थे। अपने चेहरे बाहर निकाले हुए एक दूसरे के साँस लेने की आवाज सुन रहे थे। कितनी तड़पन थी हमारे दिल में एक-दूसरे के पास आने की ?

वह उसकी खुशी पर मोहित हो गया और उनकी खामोश नाजुक खयाली पर मजाक करने लगा।

'तुमने एक बार मुझे मारा। हाँ, हाँ, दोनों गालों पर चपत जमाई।'

'इसलिए कि मैं तुम्हें प्यार करती थी,' वह प्रेम भरे स्वर में बोली।

'मैंने तुम्हारे बारे में न सोचने की कोशिश की। मैं अपने मन में सोचती थी कि यह सब खत्म हो गया। परन्तु फिर भी हर समय मुझे ऐसा लगता था कि

एक न एक दिन हम दोनों अवश्य मिलेंगे। इसके लिए सिर्फ किसी सुनहरे अवसर की, किसी मौके की जरूरत थी। क्यों ऐसा नहीं था क्या ?'

एक कंपन से वह जम-सा गया। उसने इस स्वप्न को दूर हटाने की कोशिश की। तब धीरे से बोला :

'कोई बात हमेशा के लिए खत्म नहीं हो जाती। थोड़ी सी खुशी भी पुनः हर चीज को नये सिरे से बनाने के लिए काफी है।'

'तब तुम मुझे अपने साथ रखोगे और इस बार हर बात ठीक होगी ?'

और वह बेहोश सी होती हुई नीचे को खिसक गई। वह इतनी कमजोर हो गई थी कि उसकी आवाज बहुत धीमी पड़ गई थी। भयभीत होकर वह उसे अपने कलेजे से चिपकाये रहा।

'तुम्हें कष्ट है क्या ?'

वह आश्चर्य के साथ बैठ गई।

'नहीं, कतई नहीं। क्यों ?'

लेकिन इस प्रश्न ने उसे उसके स्वप्नों से जगा दिया। वह व्याकुलता से अंधकार की ओर ताकने लगी। सिसकियों के दूसरे दौर में अपने हाथों को एक-दूसरे से मलने लगी :

'हे ईश्वर, हे ईश्वर, यहाँ कितना अंधेरा है।'

अब यहाँ न चरागाह थे, न घास की सुगंध, न लार्क चिड़िया का गाना और न पीली धूप। यह एक ध्वस्त, दुर्गंध, पूर्ण अंधकार और बाढ़ से भरी हुई खान थी जिसकी छत से उदासी बरस रही थी, जहाँ वे इतने दिनों से घिरे हुए कराह रहे थे। उसकी विलुप्त चेतना लौट आने से उसका भय और भी बढ़ गया था। उसके बचपन का अंधविश्वास उसे सताने लगा था। उसने उस काले मानव को, उस मरे हुए बुड्ढे खनिक को देखा जो नटखट लड़कियों की गरदनें मरोड़ने को, खानों में लौट आता था।

'सुनो। तुम्हें सुनाई दे रहा है ?'

'नहीं कुछ भी नहीं; मुझे कुछ नहीं सुनाई देता।'

'हाँ, वह आदमी—तुम जानते हो ? देखो ! वहाँ है वह। धरती ने अपने घाव का बदला लेने के लिए अपनी नसों से सब रक्त निकाल दिया है; और वह वहाँ है। तुम उसे देख सकते हो—देखो ! रात्रि से भी काला। ओह, मैं बेहद डर गई हूँ ! बेहद डर गई हूँ।

वह काँपती हुई चुप हो गई। फिर बड़े धीमे स्वर में कान के पास बोली :

'नहीं; हमेशा वह दूसरा मौजूद रहता है।'

'कौन दूसरा ?'

'वही जो हमारे साथ है, जो जीवित नहीं है।'

बवाल की सूरत प्रेत की तरह उसे परेशान करती थी। वह घबड़ाहट में उसकी बात कहती थी। उसके साथ अपनी कुतिया की सी जिन्दगी का वर्णन करती थी और कहती थी कि वह सिर्फएकदिन जीन-बर्ट में उस पर मेहरबान रहा। बाकी सभी दिन लात-घूंसों और कलह में बीते। फिर लातों से उसकी मरम्मत करने के बाद वह उसे चुम्बन-आलिंगन से मार डालता था।

'मैं तुमसे कह रही हूँ कि वह आ रहा है। वह अब भी हमें साथ मिलने से रोकेगा। वह फिर ईर्ष्या से भरा हुआ है। ओह! दूर भगाओ उसे। ओह! मुझे पास रखो और पास रखो।'

एकाएक भावावेग में मानसिक प्रेरणा से उसने उसको जकड़ लिया और उसके होंठों को अपने होंठों से लगाकर जोर से उन्हें दबाने लगी। पुनः अंधकार में उजाला छा गया। वह फिर सूर्य की रोशनी में अपने को देखने लगी और प्रेम की दुनिया में विचरती हुई मंद हंसी हंसने लगी। उसे अपने शरीर से इस प्रकार लिपटी देखकर वह काँप उठा। वह अपनी चीथड़े हो गई जाकेट और पायाजामे के अन्दर अर्धनग्न थी और उसने भी उसे जकड़ लिया। उसका पुरुषत्व जाग रहा था। और अन्त में यह उनकी सुहागरात थी। इस कब्र के नीचे, मिट्टी के बिछौने पर, आनंद उठा लेने से पहले ही न मरने की बलवती इच्छा रखते हुए वे अपनी एकाकार होने की दीर्घ-कालीन अभिलाषा को तृप्त कर रहे थे। वे हर चीज से निराश हो कर भी मृत्यु की गोद में पड़े हुए एक दूसरे को प्यार कर रहे थे।

इसके बाद उनकी कोई कामना न बची थी। लॉतिये जमीन पर हमेशा उसी कोने में बैठा रहता था और कैथराइन उसके पाँवों के पास स्थिर लेटी रहती थी। बहुत समय तक वह सोचता रहा कि वह सो रही है। तब जब उसने उसे छुआ तो वह बहुत ठंढी मालूम हुई, वह मर चुकी थी। 'वह जाग न जाय इस भय से उसने उसे हटाया नहीं। इस विचार ने, कि एक युवती के रूप में उसे भोगने वाला वह पहला पुरुष है और वह गर्भवती हो सकती है, उसे प्रेम भाव से ओत-प्रोत कर दिया था। अन्य प्रकार के विचार, उसके साथ कहीं अन्यत्र जाने की इच्छा, वे बाद की जिन्दगी में क्या करेंगे इसकी खुशी, क्षण भर को उसके दिमाग में आते थे। लेकिन वे इतने अस्थिर थे मानो किसी सोने वाले की साँस से उसका माथा छू गया हो। वह कमजोर पड़ता जा रहा था। उसमें थोड़ा सा मुंह बनाने और हाथ हिलाने-डुलाने की शक्ति शेष रह गई थी। वह वहाँ है इस बात का निश्चय करने के लिए वह कभी-कभी हाथ से उसे

छू लेता था जो कि जमकर कड़ी पड़ गई थी और बच्चों की सी बेखबर नींद ले रही थी। हर चीज मिटती, लुप्त होती जा रही थी। रात्रि स्वयं गायब हो गई थी; और वह कहीं भी नहीं था—उस स्थान से दूर, समय से दूर। किसी वस्तु पर उसके सिर के पीछे, निश्चित ही, प्रहार किया जा रहा था। तेजी से प्रहार की आवाजें वह सुन रहा था। लेकिन उत्तर देने में वह बड़ा आलसी हो गया था। असाधारण थकान से अब वह ज्ञानशून्य हो गया था। अब वह कुछ नहीं जानता था। वह सिर्फ स्वप्न देख रहा था कि युवती उसके सामने चल रही है और वह उसके बूटों की हल्की चाप सुन रहा है। दो दिन गुजर गए, वह नहीं जागी। यंत्रवत् उसने उसे छूकर देखा और उसे इतनी चुपचाप लेटी देख कुछ आश्वस्त हुआ।

लॉतिये को एक झटका-सा लगा। आवाजें सुनाई दे रही थीं और चट्टान के टुकड़े उसके पाँवों के पास से लुढ़क रहे थे। उसकी झपकती हुई आँखें प्रकाश बिन्दु देख रही थीं। वह अति प्रसन्न होकर लगातार इस लाल निशान को, जो इसे अँधेरे में धूमिल धब्बा सा दिखाई दे रहा था, देख रहा था। कुछ साथी उसे उठा ले गए और उसने उसके बन्द दाँतों के बीच कुछ चम्मच सूप डाले जाने से इन्कार नहीं किया। रिक्वीलॉ के गलियारे में उसने किसी को अपने सामने खड़ा देख पहचाना। वह इंजीनियर निग्रील था और यह दोनों व्यक्ति जो एक दूसरे से सख्त नफरत करते थे—विद्रोही मजदूर और संदेही अफसर—एक दूसरे से लिपट कर अपने अन्दर की मानवता को बड़े जोरों से रो-रो कर व्यक्त करने लगे। यह एक अपार उदासी, पीढ़ियों की गरीबी, दरिद्रता और जीवन में आने वाले सदमे की इतिश्री थी।

जमीन की सतह पर, माहेदी कैथराइन के शव के पास चिपकी बैठी धाड़ मार कर रो रही थी। कई लाशें ऊपर लाई गई थीं और एक कतार में रखी गई थीं। प्रत्येक के सामने लोग बैठे हुए विलाप कर रहे थे। लम्बी और गहरी चीखों की कराह सुनाई दे रही थी। चवाल के बारे में ख्याल किया जा रहा था कि वह मिट्टी गिरने से कुचल गया होगा।.एक ट्राम ढोने वाला और दो छेनी चलाने वाले भी कुचल गए थे। उनके शवों के सिर से भेजे गायब थे, पानी से उनके पेट फूल आये थे। भीड़ में औरतें पागल सी हो रही थीं; अपने स्कर्ट फाड़े डाल रही थीं और अपने मुंह खरोचे ले रही थीं। जब लॉतिये अन्त में लैंप की रोशनी का अभ्यस्त बनाये जाने और कुछ खिलाये जाने के बाद बाहर लाया गया तो उसकी हड्डी-हड्डी नजर आ रही थी और उसके बाल बिल्कुल सफेद हो चले थे। उसे देख लोग मुँह फेर लेते थे और इस बुड्ढे को देखकर काँप उठते थे। माहेदी का रोना बन्द हो

गया और वह हतबुद्धि सी होकर अपनी बड़ी-बड़ी आँखों से एक टक उसकी ओर देख रही थी।

६

सुबह के चार बजे थे और स्वच्छ अप्रैल की रात, दिन निकलने का समय नजदीक होने के कारण, कुछ-कुछ मृदु होती जा रही थी। स्वच्छ, नीले आसमान में तारे टिमटिमा रहे थे और ऊषाकाल में पूर्व की ओर हल्की सी लालिमा छाने लगी थी। इस निद्रित काले क्षेत्र में एक हल्की सी लहर उठी और अस्पष्ट जनरव के साथ लोग उठने लगे।

लॉतिये लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ वण्डामे रोड से गुजर रहा था। वह अभी-अभी, छः सप्ताह मोंट्सू के एक अस्पताल में बिस्तर पर गुजारने के बाद छुट्टी मिलने पर निकल आया था। गोकि वह बहुत दुबला और कमजोर हो गया था फिर भी वह जाने की शक्ति महसूस कर चला जा रहा था। कंपनी अपनी खानों के बारे में चिन्तित थी। वह बराबर मजदूरों को निकाल रही थी और उसे भी नोटिस मिली थी कि उसे काम पर नहीं लिया जायगा। उसे सौ फ्रैंक मुआवजा देकर पितृवत् सलाह दी गई थी कि वह खान में काम न करे क्योंकि इसका उसके स्वास्थ्य पर गहरा असर पड़ेगा। लेकिन उसने सौ फ्रैंक लेने से इन्कार कर दिया था। उसे प्लूचर्ड का एक पत्र मिल चुका था और उसने उसे पेरिस बुलाया था और साथ ही मार्ग-व्यय भी भेज दिया था। उसका पुराना स्वप्न साकार होगा। पिछली रात, अस्पताल छोड़ने से पहले वह बोन-जोय में विधवा डीसर के यहाँ सोया था। वह तड़के उठ गया था। उसकी एकमात्र इच्छा यही थी कि मार्सेनीज में आठ बजे की ट्रेन पकड़ने से पूर्व वह अपने साथियों से 'अलविदा' कर ले।

एक क्षण को लॉतिये सड़क में रुक गया जो कि अब गुलाबी रंग की हो गई थी। वसंत के आगमन की सूचना देने वाली इस ताजा हवा में साँस लेना कितना आह्लादकारी था। आज का दिन भी बड़ा खुशनुमा रहेगा। सूर्य का गोला धीरे-धीरे क्षितिज से उठ रहा था और उसी के साथ-साथ धरती में जीवन भी जाग रहा था। वह फिर चलने लगा और काँटेदार झाड़ी की बनी हुई एक छड़ी को जोरों से टेकता हुआ दूरस्थ मैदानों को रात्रि के अंधकार से उभरता हुआ देख रहा था। उससे किसी की भी मुलाकात नहीं हुई थी; एक बार माहेदी अस्पताल आई थी; फिर, शायद, वह दुबारा नहीं आ पाई। लेकिन वह जानता था कि ज्यू-सेंट-क्वारेंट की समूची बस्ती जीन-बर्ट में काम करने खान में जाती है और माहेदी को भी वहाँ काम मिल गया है। धीरे-धीरे सुनसान सड़कों में लोगों की आमद-

रफ्त बढ़ने लगी और खनिक पीले, मौन चेहरों से लॉतिये के सामने से गुजरे चले जा रहे थे। ढाई महीने की हड़ताल के बाद, जब वे भूख से प्रताड़ित खानों में लौटे थे तो उन्हें वेतन-कटौती के छिपे हुए स्वरूप, तख्ते बैठाने के नियमों को मजबूरन स्वीकार करना पड़ा था। अब चूंकि इसके पीछे उनके साथियों का इतना रक्त बह चुका था इसलिए वे इससे और भी नफरत करने लगे थे। उनसे उनके एक घंटे के काम की मजदूरी जबरन छीन ली गई थी। उन्हें कभी आत्मसमर्पण न करने की उनकी शपथ से झूठा बनाया जा रहा था और जबरन उनकी प्रतीज्ञा भंग कराये जाने की यह बात उनके गले में गोली की तरह अंटकी हुई थी। फिर से सर्वत्र काम चालू हो रहा था। मिराग्रो, मेडेलेन, क्रीवेक्योर और विक्टियोरे में, सर्वत्र काम चालू हो गया था। सुबह के धुंधलके में अंधकार में विलीन सड़कों से भेड़ों के झुंड की भाँति मजदूरों की कतारें, धरती की ओर चेहरे झुकाये इस प्रकार गुजर रही थीं मानो भेड़ें कसाईखाने की ओर ले जाई जा रही हों। वे अपनी पतली पोशाकों के नीचे कांपते, अपने हाथों और बाहों को एक दूसरे के ऊपर आड़े लाते, अपनी जाकेट और कमीज के बीच बँधी रोटी का कूबड़ सा निकाले, अपने कूल्हे मटकाते हुए निकल जाते थे। सभी काम पर लौट रहे थे। इन काली, मौन छायाकृतियों को कभी हँसते नहीं पाया गया। वे अब इधर-उधर नहीं देखते थे, गुस्से से उनके दाँत भिचे रहते थे और उनके दिलों में भयंकर घृणा भरी हुई थी। सिर्फ पेट की खातिर उन्होंने यह आत्मसमर्पण किया था।

ज्यों-ज्यों लॉतिये खान के समीप पहुँचता गया उनकी संख्या बढ़ती गई। वे लगभग अकेले-अकेले ही आ रहे थे। जो झुंड में आते थे। वे भी कतारवार होते थे। थके हुए से वे एक-दूसरे से और स्वयं से भी उकता गए थे। उसने एक अति-वृद्ध व्यक्ति को देखा, जिसकी आँखें उसके नीले माथे के नीचे जलते हुए अंगारे की तरह चमक रही थीं। दूसरा एक नवयुवक, तूफान की बँधी हुई तेजी की तरह कराह रहा था। बहुत से अपने बूट हाथों में लिए थे और उनके खुरदुरे ऊनी मोजों से फर्श पर चलने की हल्की चाप सुनाई देती थी। वे एक दूसरे से धक्का खाते हुए इस प्रकार सिर नीचे किये चलते थे मानो किसी विजित सेना को जबरन कवायद करवाई जा रही हो। लेकिन उनके दिल नये सिरे से संघर्ष कर बदला लेने की तीव्र इच्छा से भरे हुए थे।

जब लॉतिये वहाँ पहुँचा तो जीनबर्ट अंधकार से जाग सा रहा था। तख्ती से लटकाये गए लैंप, अब भी सुबह के बढ़ते हुए प्रकाश में जल रहे थे। छिपी हुई इमारतों के ऊपर भाप की हल्की-सी लकीर इस प्रकार उठ रही थी मानो परों के

गुच्छे हल्के गुलाबी रंग में रंग दिए गए हों। वह रिसीवर के कमरे तक जाने के लिए सीढ़ियों से चढ़ता हुआ गुजरा।

खान में उतरने का काम शुरू हो रहा था। लोग ओसारे से वहाँ पहुँचने लगे थे। एक क्षण को इस कोलाहल और आमदरफ्त के बीच वह स्थिर खड़ा रहा। ट्रामों की खड़खड़ाहट लोहे के फर्श को कँपाये डाल रही थी। तुरही के क्रन्दन के बीच चक्के घूमते हुए तारों को खोल रहे थे। संकेतक खंड से आने वाले प्रहारों के शब्द के बीच घंटियाँ बज रही थीं और उसने देखा कि वह दानव पुनः इन्सानी-गोश्त की अपनी खुराक ले रहा है। कटघरे डूबते-उभरते हुए अविश्रान्त मानव के बोझ को, एक आदमखोर दानव की भाँति, निगलते चले जा रहे थे। उसके साथ हुई दुर्घटना के बाद उसे खान से एक अज्ञात भय सा होने लगा था। कटघरे, नीचे उतरते हुये उसकी आँतों को चीरते प्रतीत होते थे। उसे अपना सिर फिरा लेना पड़ा; खान उसे क्रोधित बना डालती थी।

उस विशाल अँधेरे हाल में, जिसमें लैंप का धुंधला प्रकाश हो रहा था, उसे कोई भी मैत्रीपूर्ण चेहरा नजर न आता। वहाँ इन्तजार करने वाले खनिक नंगे पाँव, हाथ में लैंप लिए, बड़ी-बड़ी अस्थिर आँखों से उसे घूर रहे थे और फिर सिर नीचा कर झेंपते हुए पीछे हट जाते थे। इसमें संदेह नहीं कि वे उसे पहचानते थे और उसके खिलाफ उनके मन में कोई द्रोह नहीं था; इसके विपरीत ऐसा प्रतीत होता था कि वे उससे डरने लगे हैं। वे झेंपते थे कि कहीं वह उनकी कायरता के लिए उन्हें बुरा-भला न कहे। इस रुख से उसका दिल भर आया; वह भूल गया कि इन हतभागों ने उस पर पत्थर बरसाये थे; वह फिर उन्हें नायक बनाने का स्वप्न देखने लगा। वह सोचने लगा कि वह इन्हें तमाम मजदूरों को निर्देशक बना देगा और इस प्राकृतिक शक्ति का, जो अपने आपको निगल रही है, इनके हित में प्रयोग करेगा। एक कटघरा उठा और उसमें बैठकर यह जत्था अन्तर्धान हो गया। जब दूसरा जत्था पहुँचा तो उसने देखा कि उसमें हड़ताल के दौरान का उसका एक मुखिया भी है, एक बहादुर आदमी जिसने की मरने की शपथ ली थी।

'तुम भी!' उसने दुखी दिल से कहा।

अगला व्यक्ति पीला पड़ गया और उसके होंठ काँपने लगे; फिर, एक बहाना उसने बनाया।

'तुम्हारे कौन हैं? मेरे तो पत्नी है।'

अब ओसारे से आने वाली भीड़ में उसने सबको पहचाना।

'तुम भी!—तुम भी!—अरे, तुम भी!—'

और सभी पीछे हटे, दबी जबान में कहने लगे :

'मेरे माँ है'—'मेरे बच्चे हैं—रोटी तो खानी ही है ?'

कटघरा अभी ऊपर नहीं आया था; वे गमगीन बने हुए उसका इन्तजार कर रहे थे। वे अपनी पराजय से इतने दुखी थे कि एक दूसरे से आँख नहीं मिला पाते थे और बलपूर्वक ही कूपक की ओर देखते थे।

'और माहेदी ?, लॉतिये ने पूछा।

उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया। एकने संकेत किया कि वह आ रही है। औरों ने दया से कातर होकर अपनी बाँहें उठाईं। आह ! अभागी औरत ! क्या दुर्भाग्य है ! खामोशी बनी रही और जब लॉतिये ने उससे आखिरी बिदाई लेने के लिए हाथ बढ़ाया तो उन्होंने जोरों से उसे दाबा, मानो वे उनके आत्मसमर्पण के मौन गुस्से को उसमें प्रदर्शित कर बदला लेने की भावना व्यक्त करना चाहते हों। कटघरा वहाँ आ लगा था, वे उसमें बैठ गए और वह खाई में डूब गया।

पेरी कप्तान का लैम्प अपनी टोप के चमड़े में लगाये हुए वहाँ दिखाई पड़ा। पिछले सप्ताह खान के पेंदे पर वह अपने गैंग का मुखिया था। लोग हट गए क्योंकि पदोन्नति ने उसे रोबीला बना दिया था। लॉतिये को देखकर उसे नागवार लगा; फिर भी वह ऊपर आया और जब नवयुवक ने उसे बताया कि वह जा रहा है तब उसे कुछ तसल्ली हुई। वे बातें करने लगे। उसकी औरत अब एस्टेमिनेट-डी-प्रोग्रीस की मालिकन थी। उन सभी महानुभावों को धन्यवाद जो उस पर इतने मेहरबान थे। लेकिन वह रुक गया और फादर माउक्यू पर बुरी तरह बिगड़ने लगा। उससे शिकायत थी कि वह लीद को खान में उतरने के समय पर ही ऊपर भेजता है। वह वृद्ध व्यक्ति गर्दन झुकाये सुनता रहा। तब नीचे जाने से पूर्व, इस झिड़की से खिन्न, उसने भी लॉतिये से उसी प्रेम से हाथ मिलाया जैसे अन्य लोगों ने मिलाया था। उसका हाथ थमे हुए क्रोध से गरम था और भावी विद्रोह की आशा से काँप रहा था। और इस बुड्ढे व्यक्ति से हाथ मिलाने से, जिनसे कि उसे उसके बच्चों की मौत के लिए माफ कर दिया था, लॉतिये इतना प्रभावित हुआ कि वह बिना एक शब्द बोले उसके अदृश्य होने तक बराबर उसे ही देखता रहा।

'तब माहेदी आज सुबह आने वाली नहीं है ?' उसने कुछ समय बाद पेरी से पूछा।

पहले तो पेरी ने बहाना बनाया कि उसने समझा नहीं क्योंकि उसका नाम लेना भी अपशकुन माना जाता था। तब, यह बहाना बनाते हुए कि उसे कुछ हिदायतें देनी है, वह जाते-जाते बोला :

'ओह ! माहेदी ? वह आ रही है।'

वास्तव में माहेदी अपना लैंप हाथ में लिए ओसारे तक पहुँच गई थी। अपनी ब्रिजिस और जाकेट पहने उसने बालों को टोपी से ढँक रखा था। यह कंपनी की मेहरबानी थी कि उसने इस अभागी औरत पर तरस खाकर उसे चालीस वर्ष की उम्र में भी नीचे काम करने की अनुमति दे दी थी और चूंकि कर्षण कार्य उसके लिए कठिन था इसलिए उसे उत्तरी गलियारे में खोले गए एक छोटे संबीजन का काम सौंपा गया था। नीचे चालीस डिग्री तापमान में, वह जलती हुई एक नली के पेन्दे पर दस घंटे तक कमर दुखाते हुए पहिया चलाया करती थी और इससे उसे तीस सूज मिलते थे।

लॉतिये ने मर्दानी पोशाक में उसकी दयनीय दशा देखी—उसकी छाती और पेट कटानों की नमी से फूल आया था। उसे आश्चर्य हुआ। वह शब्द ढूंढ़ने लगा कि वह कैसे उसे बताये कि वह जा रहा है और उससे 'अलविदा' कहने आया है।

वह उसकी ओर देखने लगी और अन्त में आत्मीयता से बोली :

'क्यों ? तुम्हें मुझे देखकर आश्चर्य हो रहा है। यह सच है कि मैंने धमकी दी थी कि मेरे बच्चों में जो भी पहले नीचे जायगा उसकी मैं गर्दन मरोड़ दूंगी; लेकिन अब तो मैं ही नीचे जा रही हूँ, मुझे अपनी ही गर्दन मरोड़नी चाहिए। क्यों मुझे नहीं चाहिए क्या ? आह, अगर मुझे घर पर छोटे बच्चों और बुड्ढे दादा को न देखना होता तो अब तक मैं ऐसा भी कर डालती।'

वह धीमे, थकान भरे स्वर में अपने को भी कोस रही थी। वह सामान्य रूप से वस्तुस्थिति बतला रही थी—कि उनके भूखों मरने की नौबत आ गई थी, तब उसने काम करने का निश्चय किया था ताकि उन्हें बस्ती से भगा न दिया जाय।

'बुड्ढ़ा अब कैसा है ?' लॉतिये ने पूछा।

'वह हमेशा ही बड़ा विनम्र और साफ रहा है। लेकिन उसका दिमाग खराब हो गया है। वह उस मामले के लिए नहीं पाला गया था, तुम जानते हो। उसको पागलखाने में रखे जाने की चर्चा थी, लेकिन मैं सहमत नहीं थी। जो कुछ हो, उसकी कहानी हम लोगों के लिए बहुत बुरी रही है क्योंकि उसे कभी भी पेंशन नहीं मिल पायेगी। उन महानुभावों में से एक ने मुझे बताया कि उसे पेंशन देना अनैतिक होगा।'

'क्या जॉली काम कर रहा है ?'

'हाँ, उन महानुभावों ने उसे भी ऊपर कुछ काम दिया है। उसे बीस सूज मिलते हैं। ओह ! मैं शिकायत नहीं करती; मालिक हम लोगों पर बड़े मेहरबान हैं, जैसा कि स्वयं उन्होंने मुझसे कहा है। उस छोकरे के बीस सूज और मेरे तीस,

पचास हो गए। अगर हम खाने वाले छह प्राणी न होते तो हमारे पास खाने के लिए पर्याप्त होता। एस्टीली भी अब निगलने लगी है और सब से बुरा तो यह है कि अभी चार या पाँच वर्ष और लगेंगे जब कि लीनोरी और हेन्री खान में आने योग्य हो सकेंगे।

लॉतिये अपने दुख के प्रवाह को न रोक सका।

'वे भी ?'

माहेदी के पीले गालों में सुर्खी आ गई और उसकी आँखों से ज्वाला बरसने लगी। लेकिन उसने इस प्रकार कंधे गिरा लिए मानो प्रारब्ध के बोझ के नीचे दब गई हो।

'तुम कर ही क्या सकते हो ? दूसरों के बाद उनकी बारी। वे तो वहाँ मर-खप कर साफ हो गए हैं; अब उनकी बारी है।'

वह चुप हो गई। कुछ ऊपर काम करने वालों के आ जाने से, जो ट्राम ढो रहे थे, उनकी बातचीत रुक गई। बड़ी धूल भरी खिड़कियों से धूप आ रही थी जिससे लैंपों की रोशनी भूरी पड़ गई थी; और इंजन हर तीन मिनट बाद आवाज करता हुआ तारों को खोलता-लपेटता था। कटघरे मनुष्यों को निगलते जा रहे थे।

'जल्दी करो, हरामखोरो, जल्दी करो।' पेरी चिल्लाया। 'बैठ जाओ, आज मालूम पड़ता है यह सिलसिला खत्म ही न होगा।'

माहेदी, जिसकी ओर वह देख रहा था, वहाँ से नहीं हिली। उसने तीन बार कटघरे को नीचे जाने दिया था और वह जागती हुई सी लॉतिये के पहले वाक्य को स्मरण करने लगी।

'तब तुम चले जा रहे हो ?'

'हाँ, आज ही सुबह।'

'तुम ठीक कह रहे हो; अगर संभव हो तो अन्यत्र कहीं भी चला जाना बेहतर है। और मुझे खुशी है कि तुमसे मुलाकात हो गई, क्योंकि अब तुम जान सकते हो कि मेरे दिमाग में तुम्हारे लिए कोई दुर्भाव नहीं है। उस हत्याकांड के बाद, एक क्षण को मुझे इतना क्रोध आया था कि मैंने तुम्हें मार डाला होता। लेकिन फिर जब कोई सोचता है, जब कोई देखता है कि हर कोई उसी बात पर विश्वास करता है, अनुमान लगाने लगता है तो फिर किसी एक को दोष देना गलत है। नहीं, नहीं ! यह तुम्हारा दोष नहीं है, हर आदमी इसके लिए जिम्मेदार है।'

अब वह मृतकों की बातें करने लगी। अपने मरद की, जाचरे की, कैथराइन की; और अलजीरे का नाम लेने मे उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। उसकी शांत,

युक्तिसंगत विचार धारा लौट आई थी और वह समझदारी से चीजों को सोचने लगी थी : 'इतने ज्यादा गरीब लोगों की हत्या से अभिजातवर्ग की कोई भलाई नहीं होगी। इसमें संदेह नहीं कि एक दिन उन्हें इसकी सजा मिलेगी क्योंकि हर काम का लेखा-जोखा होता है। तब वहाँ हस्तक्षेप की जरूरत भी न होगी; स्वतः ही उसमें विस्फोट होगा। सैनिक उसी तरह पूंजीपतियों पर गोली चलायेंगे जिस तरह उन्होंने मजदूरों पर चलाई है और उसकी परम्परा से चली आ रही आत्म-समर्पण और अनुशासन की भावना में, जिसमें वह स्वयं पिस रही थी, स्वतः ही एक दृढ़ आस्था आ गई थी कि अन्याय ज्यादा टिक नहीं सकता और अगर कोई अच्छा देवता वहाँ नहीं बचा है तो गरीबों का बदला लेने के लिए दूसरा प्रकट होगा।'

वह चारों ओर संदिग्ध निगाहें डालती हुई धीमे स्वर में बोल रही थी। तब, जब उसने पेरी को ऊपर आते देखा तो कुछ तेज स्वर में बोली :

'अच्छा, अगर तुम जा ही रहे हो तो तुम हमारे घर से अपनी चीजें लेते जाना ? अब भी वहाँ दो कमीजें, तीन रूमाल और एक जोड़ी पुराने पाय-जामे है।'

लॉतिये ने फेरी वालों से बचाई गई इन चीजों को ले जाने से इन्कार करने की मुख मुद्रा बनाई।

'नहीं वे मेरे काम की नहीं रहीं; बच्चों के काम आ जायंगी। पेरिस में मैं अपने लिए बनवा लूंगा।'

दो कटघरे पुनः नीचे चले गए थे और पेरी ने सीधे माहेदी को टोकने का निश्चय किया।

'मैंने कहा, वे तुम्हारा इन्तजार कर रहे हैं! क्या तुम्हारी थोड़ी सी बात खत्म हो गई ?'

लेकिन उसने अपनी पीठ फिरा ली। वह इतना ईर्ष्यालु क्यों है, यह आदमी जो अपने को बेच चुका है ? नीचे उतरने के काम से उसका क्या प्रयोजन ? उसके स्तर के लोग उससे बड़ी नफरत करते हैं और वह अपना लैंप हाथ में थामे, काँपती हुई वहीं खड़ी रही। लॉतिये या उसे अब बातचीत जारी रखने के लिए शब्द नहीं मिल रहे थे। वे एक दूसरे के सामने खड़े थे और उनके दिल इतने भरे हुए थे कि वे फिर से बातचीत करना चाहते थे।

अन्त में वह कुछ बोलना ही चाहिए इस लिहाज से वह बोली :

'लेवक्यू की औरत के बच्चा होनेवाला है। लेवक्यू अभी जेल में ही है; इस दौरान में बाउटलोप उसकी जगह है।'

'आह, हाँ ! बाउटलोप ।'

'और सुनो ! क्या मैंने तुम्हें बताया ? फिलोमिना चली गई है ।'

'क्या ! कहाँ चली गई ?'

'हाँ, पास-डी-कैले के एक खनिक के साथ चली गई । मैं डर रही थी कि छोकरों को मेरे ऊपर छोड़ जायगी । लेकिन नहीं, वह उन्हें अपने साथ ही लेती गई । वह ? ऐसी औरत, जो हमेशा खून थूकती थी और मालूम पड़ता था कि मानों हमेशा अपनी मूरत देख रही हो ।'

एक क्षण को वह विचारमग्न सी हो गई और फिर कहने लगी :

'मेरे बारे में भी चर्चायें हुईं । तुम्हें स्मरण है वे कहते थे कि मैं तुम्हारे साथ सोई हूँ । ईश्वर ! मेरे मरद की मृत्यु के बाद अगर मैं युवती होती तो यह बहुत संभव हो सकता था । लेकिन अब मुझे खुशी है कि ऐसा नहीं है, क्योंकि, यकीनन हमें इस पर पछताना पड़ता ।'

'हाँ, हमें इस पर पश्चाताप होता ।' सामान्य ढंग से लॉतिये ने कहा ।

बस इसके बाद कोई बातचीत नहीं हुई । एक कटघरा उसका इन्तजार कर रहा था; उसे गुस्से से, जुर्माना कर दिये जाने का डर दिखाते हुए उस ओर ले जाया जा रहा था । तब उसने जाने का निश्चय कर नवयुवक का हाथ दबाया । भावावेश में वह बराबर माहेदी की ओर देख रहा था जो इतनी मलिन और इतनी क्लान्त हो गई थी । उसके नीले चेहरे पर, उसके रंगतहीन बाल नीली टोपी के बाहर निकले हुए थे; उसका शरीर बहुत बच्चे देने वाले जानवर की तरह उसकी जाकेट और पायजामों के नीचे कुरूप और बेढंगा हो गया था । हाथों के इस आँखिरी दबाव में उसे अपने साथियों के लम्बे, मौन दबाव को महसूस किया जो उसे उस दिन की याद दिला दिला रहा था जब कि वे नये सिरे से विद्रोह कर उठेंगे । वह भलीभाँति समझ रहा था । उसकी आँखों की गहराइयों में निश्चित विश्वास था । यह जल्दी ही होगा और उस पर यह अन्तिम प्रहार होगा ।

'बड़ी बेहया है ।' पेरी बोला ।

धकिया कर माहेदी को अन्य चार के साथ एक ट्राम में ठूंस दिया गया । कटघरे के उतरने के संकेत के रूप में संकेत-रज्जु खींची गई, कटघरा खोल दिया गया जोकि रात्रि के अंधकार में विलीन हो गया । तब वहाँ तार की तेज उड़ान के अलावा और कोई नहीं था ।

लॉतिये खान से रवाना हो गया । नीचे, स्क्रीनशेड के नीचे, उसने कोयले के ऊँचे-ऊँचे ढेरों के बीच जमीन में पाँव फैलाये हुए एक व्यक्ति को बैठे देखा । यह जॉली था, जिसे बड़ा कोयला साफ करने के लिए वहाँ नौकरी दी गई थी । वह

कोयले का एक टुकड़ा अपनी रानों के बीच में दबाता और हथौड़े से उसके सिलेटी टुकड़े अलग करता था। उसकी काली धूल से वह इस कदर सराबोर हो गया था कि अगर वह छोकरा अपना बन्दरनुमा चेहरा न उठाता तो लॉतिये कभी भी उसे न पहचान पाता। वह मजाकिया भाव से हंसने लगा और एक झटके से उसने कोयले के टुकड़े पर इस कदर आखिरी प्रहार किया कि वह उससे उठनेवाली काली धूल के बीच अदृश्य हो गया।

बाहर लॉतिये अपने विचारों में लीन थोड़ी देर सड़क पर से गुजर रहा था। हर तरह के विचार उसके दिमाग में घूम रहे थे। लेकिन वह स्वच्छ हवा, खुले आसमान के नीचे गहरी साँसें ले रहा था। सूर्य की स्वर्णिम किरणें क्षितिज के ऊपर अपना प्रकाश फेंक रही थीं और समूचे क्षेत्र में खुशी जागती प्रतीत होती थी। अनन्त तक फैले मैदान में पूर्व से लेकर पश्चिम तक सोना बिखरा हुआ प्रतीत होता था। यौवन के मृदु कंपन में जीवन की उमंग बढ़ रही थी और फैल रही थी, जिसमें धरती की उसासों, चिड़ियों के गीत, पानी की कलकल और जंगलों की सांय-सांय की घरघराहट थी। जीवित रहने में आनंद था और पुरानी दुनियाँ एक वसंत और देख लेना चाहती थी।

और इस आशा से विमोहित होकर लॉतिये की चाल धीमी पड़ गई। उसकी आँखें दाँये-बाँये घूमकर नयी ऋतु के आह्लाद को देख रही थीं। वह अपने बारे में सोच रहा था, अपने को खान के नीचे के अनुभव से तपा हुआ अधिक शक्तिशाली पा रहा था। उसकी शिक्षा-दीक्षा पूरी हो चुकी थी। क्रांति के एक चैतन्य सेनानी की तरह वह अस्त्र-सज्जित होकर दूर जा रहा था। उसने समाज को देखने के बाद समाज के खिलाफ जंग छेड़ी थी और उसे अपराधी ठहराया था। प्लूचर्ड से मिलने की खुशी और उसी की भाँति एक लोकप्रिय नेता होने का आनन्द उसे भाषण कला के लिए प्रेरित कर रहा था। वह शब्दों का तोड़-जोड़ बैठाने लगा था। वह बार-बार विचार करता हुआ अपने कार्यक्रम को बढ़ा रहा था; अभिजातवर्ग की उस शिष्टता ने, जिसने उसे उसके तबके से उठा दिया था, उसके दिल में अभिजातवर्ग के प्रति और भी घृणा भर दी थी। वह मजदूर वर्ग का महत्व बढ़ाने की आवश्यकता महसूस कर रहा था जिसकी दीनता-हीनता की गंध अब स्वयं उसे नागवार गुजरने लगी थी। वह दिखाना चाहता था कि एकमात्र वे ही महान् और निष्कलंक हैं। उन्हीं में वह उदारता और शक्ति है जिसमें मानवता फिर से गोता खा सकती है। वह अपने को जनता का अगुआ बनकर उसे विजय मार्ग पर ले जाता हुआ देख रहा था—वह जनता जो उसे अब तक हजम नहीं कर पायी थी!

चिड़िया के गाने से आकर्षित हो वह आसमान की ओर देखने लगा। हल्के

गुलाबी बादल, रात्रि की ओस के आँखिरी कण, नीले आसमान में घुल रहे थे और सोवरायन और रसेन्योर की धुंधली आकृतियाँ उसके स्मृति-पटल पर आईं। निश्चित ही जब हर कोई व्यक्ति नेता बनने की कोशिश करता है तो हर काम बिगड़ जाता है। इसीलिए इन्टरनेशनल, जिसने दुनिया को नया बना दिया होता, गुमराह होकर निष्फल हो गया और उसकी जबरदस्त सेना अन्दरूनी झगड़ों से टुकड़े-टुकड़े होकर ध्वस्त हो गई है। तब, क्या डारविन सही है और दुनिया एक युद्ध-भूमि है जहाँ कि सशक्त जाति सुन्दरता और अस्तित्व के लिए कमजोर को खाती है? यह प्रश्न उसे परेशान कर रहा था गोकि वह इस प्रश्न को अपनी योग्यता से संतुष्ट व्यक्ति की भाँति तय कर चुका था। लेकिन एक विचार उसके संदेहों को नष्ट कर उसे प्रोत्साहन दे रहा था—कि वह पहली बार जब बोलने को उठेगा तो वह इस सिद्धान्त के अपने-पुराने विश्लेषण को प्रस्तुत करेगा: 'अगर किसी वर्ग को निगलना नितान्त जरूरी ही है तो सर्वहारा वर्ग अब भी तरोताजा और जीवन से ओतप्रोत, आमोद-प्रमोद से थके हुए, मध्य वर्ग को ही क्यों न निगले? नये खून से नये समाज का उदय होगा और असभ्य कहलाये जाने वालों के इस हमले की इस व्याख्या में, नष्ट राष्ट्रों के पुनरोंदय में, क्रांति के आगमन पर उसका विश्वास उसकी आस्था फिर से अटूट होती जा रही थी। यह क्रांति—मजदूरों की क्रांति—वास्तविक होगी और इसकी ज्वाला इस मुल्क के कोने-कोने को उसी प्रकार प्रज्वलित कर देगी जिसे उसने सूर्योदय के समय खून की तरह सुर्ख आसमान में देखा था। वह अब भी स्वप्न देखता हुआ, अपनी काँटेदार छड़ी से सड़क के कगारों पर प्रहार करता हुआ, आगे बढ़ रहा था और जब उसने चारों ओर एक नजर डाली तो उसे बहुत से स्थान चिर-परिचित नजर आये।

उसी स्थान के पास, फुरचे-प्रक्स-ब्यूफ्स में, उसे याद आया, उसने उस दिन प्रातःकाल हड़तालियों का नेतृत्व सँभाला था जब कि खानों को रौंदा गया था। अभी वही पशुवत, मृत्युकारी और कम मजदूरी पर ज्यादा कराया जाने वाला कार्य फिर शुरू हो रहा है। धरती के नीचे, सात सौ मीटर नीचे, उसे ऐसा लग रहा था कि वह धीमे, निरंतर किये जाने वाले प्रहारों को सुन रहा है। यह वही लोग थे जो अभी-अभी नीचे उतरे थे। वही काले मजदूर जो कि मौन गुस्से से अपनी गैंती चला रहे थे। उन्होंने अपने मृतकों और अपनी मजदूरी को खेतों में छोड़ दिया था। इसमें संदेह नहीं कि वे पराजित हो गए थे लेकिन पेरिस वोरो में चलाई गई गोलियों को नहीं भूल सकता और इस नासूर से राष्ट्र का रक्त भी बहेगा। अगर औद्योगिक संकट का अन्त हो रहा है और अगर कारखाने एक के बाद एक खुल रहे हैं तो भी युद्ध की घोषित स्थिति कम नहीं हुई है शांति अब,

भविष्य में, असंभव है। खनिकों ने अपने साथियों का हिसाब लगा लिया है, उन्होंने अपनी शक्ति अजमाली है, अपनी न्याय की पुकार से समस्त फ्रांस के मजदूरों को जगा दिया है। उनकी हार, इसलिए, किसी को भी विश्वास नहीं दिलाती। मोंट्सू का, अभिजात वर्ग, अपनी विजय की खुशी में, हड़ताल के बाद की स्थिति के बारे में अस्पष्ट बेचैनी महसूस कर रहा है और उनके पीछे मुड़कर देखता है कि इस गहरी चुप्पी के पीछे कहीं उनका अनिवार्य अन्त तो नहीं दीखता। वे समझते हैं कि बिना रुके हुए क्रांति, बगावत, फिर होगी। शायद कल हो। आम हड़ताल हो। सभी मजदूर आम कोष की बात समझने लगे हैं। अब वे अपनी रोटी खाते हुए महीनों टिक सकेंगे। इस बार एक नाशवान् समाज को धक्का मात्र दिया गया है लेकिन उन्हें अपने पाँवों के नीचे गड़गडहाट सुनाई दी है और वे अधिक धक्के लगते महसूस करने लगे हैं। अब अधिक धक्के लगते रहेंगे, जब तक कि पुराने भवन गिर न पड़ें और वोरो की तरह धरती के अन्तराल में विलीन न हो जाँय।

लाँतिये ने बाईं ओर जेसली रोड की ओर देखा। उसे याद आया कि उसने यहाँ भीड़ को गेस्टनमेरी की ओर की ओर बढ़ने से रोका था। दूर, स्पष्ट आसमान में उसे कई खानों की बुर्जियाँ दिखाई दीं—दाँई ओर मिराओ, मेडेलेन और क्रेवेक्योर एक दूसरे के अगल-बगल में। सर्वत्र काम जारी था। ऐसा प्रतीत होता था कि वह धरती के एक छोर से लेकर दूसरे छोर तक, उसकी तह में चलाई जाने वाली गेंतियों की आवाज सुन रहा है। एक प्रहार, दूसरा प्रहार, फिर और लगातार पड़ने वाले प्रहार; प्रकाश में हँसने वाले खेतों, सड़कों और गाँवों के नीचे। धरती के नीचे कैद दुर्बोध श्रम चट्टानों के भारी बोझ से इतना कुचल गया है कि उसकी दर्दभरी साँस की आवाज सुनाई नहीं देती। अब वह सोचने लगा था कि शायद हिंसा स्थिति बदलने मे तेजी नहीं ला सकेगी। तार काटना, पटरियाँ उखाड़ना, लैंप तोड़ना, क्या बेकार का काम है। तीन हजार आदमियों के लिए यह कोई अच्छी बात नहीं कि वे हर चीज को विनष्ट करते चले जाँय। वह अनिश्चित अनुमान लगा रहा था कि कानूनी तरीके और जबरदस्त होंगे। उसका ज्ञान परिपक्व हो रहा था। उसने करारा सबक सीख लिया था। हाँ, माहेदी ने बढ़िया बात कही, उसने समझदारी की बात कही कि यह बड़ा करारा प्रहार। होगा चुपचाप संगठन करो। एक दूसरे को जानो। जब कानून उसकी इजाजत दे संघों में संघटित हो जाओ। तब, एक दिन सुबह, जब तुम्हें अपनी शक्ति का अन्दाजा लग जाय तो करोड़ों मजदूर चंद निठल्लों के आमने सामने होंगे। अपने हाथों में सत्ता ले लो और मालिक बन जाओ। आह! सत्य और न्याय का क्या अनूठा पुनर्जागरण

है ! दुबके बैठे हुए देवता को मृत्यु-प्रहार लगेगा । अपने मंडप की गहराई में छिपी हुई भीमकाय देव मूर्ति, जिसे गरीब मजदूर अपना रक्त-मांस पिलाते खिलाते रहे हैं और कभी भी उसे देख नहीं पाये, मृत्यु को प्राप्त हो जायगी ।

अब वरण्डामे रोड छोड़ कर लॉतिये ईंटों वाली गली में आ गया था । दाँई ओर उसे मोंटमू दिखाई दिया जो घाटी में छिपा हुआ था । बाँये बोरो के ध्वंसावशेष थे । इस अभिशप्त छेद से तीन पंप निरंतर पानी निकालते रहते थे । उसके बाद क्षितिज पर अन्य खानें दिखाई दे रही थीं । विक्टियारो, सेंट-टामस, फ्यूट्री कॅटल । जब कि उत्तर की ओर भ्राष्ट भट्टियों की लम्बी चिमनियाँ, कोयले के भट्टों की बैटरियाँ पारदर्शक प्रातःकालीन वायु मे धुंवा दे रही थीं । अगर उसे आठ बजे की ट्रेन पकड़नी है तो उसे जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाने चाहिए, क्योंकि अभी उसे छह किलोमीटर की दूरी और तय करनी थी ।

और उसके पाँवों के नीचे गहरी चोटें, गैंती से किये जाने वाले जोरदार प्रहार बराबर जारी थे । उसके साथी लोग वहाँ थे । हर कदम पर वह उन्हें अनुसरण करते सुन रहा था । क्या चुकन्दर के खेतों के नीचे वह माहेदी नहीं है जो कमर झुकाये, रूक्ष साँसें भरती हुई संबीजन के घूमने के साथ-साथ चक्कर काट रही है ? बांये दाँये, आगे-पीछे, गेहूँ के खेतों, भाड़ियों और छोटे-छोटे पेड़ों के नीचे वह अब लोगों को पहचानता प्रतीत होता था । अब अप्रेल का सूर्य, खुले आसमान में पूर्ण आभा के साथ चमक रहा था और गर्भिता धरती को गरमी पहुँचा रहा था । उसकी उर्वर कोख से नया जीवन स्फुटित हो रहा था, कल्ले हरी-हरी पत्तियों में बदल रहे थे और खेत हरी घास के बढ़ने से लहरा रहे थे हर ओर बीज फूल कर फूटे पड़ रहे थे, गरमी और रोशनी की आवश्यकता से भरे धरती में दरार कर रहे थे । वनस्पतियों के रस की बाढ़ आपस में कानाफूसी करती हुई मिल रही थी । अंकुरों का शब्द जोरदार चुम्बनों में फैल रहा था । फिर-फिर, अधिकाधिक स्पष्ट, मानो वे धरती की माटी तक पहुँच रहे हों । साथी खनिक छेनियाँ चला रहे थे । सूर्य की गरमी प्रदान करने वाली किरणों में वह नवोदत सुबह इस शब्द से भरी हुई प्रतीत होती थी । इंसान जाग रहा था । एक बदला लेने वाली काली सेना परिखा में धीरे-धीरे अंकुरित हो रही थी, अगली शताब्दी की फसलों की ओर बढ़ रही थी और यह प्रस्फुरण शीघ्र ही धरती को उलट-पुलट लेगा ।
